ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित

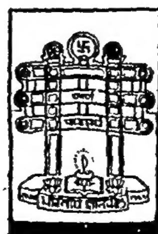
# कथा एक प्रान्तर की

मूल उपन्यास

एस० के० पोट्टेक्काट

रूपान्तर

प्रो० पी० कृष्णन



भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित मलयालम कृति
'ओरु देशत्तिन्ते कथा' उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर



प्रथम संस्करण 1981
द्वितीय संस्करण 1984

लोकोदय: राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला 417

कथा एक प्रान्तर की
(उपन्यास)
एस० के० पोट्टेकाट

मूल्य : 58/-

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
बी/45-47 कनॉट प्लेस,
नयी दिल्ली-110001

मुद्रक
अनिल प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा,
दिल्ली-110032



KATHA EK PRANTAR KI (*Novel*) by S. K. Pottekkatt, Published by Bharatiya Jnanpith, B/45-47, Connaught Place, New Delhi-110001, Printed at Anil Printers, Shahdara, Delhi. Second Edition, 1984. Price Rs. 58/-

# समर्पण

अतिराणिप्पाटं के उन दिवंगत पूर्वजों को, जिन्होंने मुझे शैशव, कौमार्य और यौवन के प्रारम्भिक दिनों में जीवन के अनेक-अनेक रूपों—सच्चाई, बेईमानी, चपलता, कौतुक, विस्मय, मूर्खता, आचार-संहिता और कटु सत्य—की पहचान करायी; और उनको, जिन्होंने इस उपन्यास के लिए त्याग किया।

चन्द्रकांतम्
कोषिक्कोड—4
14 मार्च, 1971

—एस० के० पोट्टेक्काट

# प्रस्तुति

[ प्रथम संस्करण से ]

'कथा एक प्रान्तर की' श्री शंकरनकुट्टि कुन्हीरमन पोट्टेक्काट के विख्यात मलयालम उपन्यास 'ओरु देशत्तिन्ते कथा' का हिन्दी अनुवाद है। भारतीय ज्ञानपीठ का सोलहवें वर्ष का एक लाख रुपये का साहित्य पुरस्कार श्री पोट्टेक्काट को समर्पित हुआ है; और उनकी यह कृति पुरस्कार हेतु विचार-गत कृतियों की श्रेणी में श्रेष्ठ मानी गई है—उनकी उन दो समकक्ष कृतियों के साथ, जिनके शीर्षक हैं—'विषकन्यका' तथा 'ओरु तिन्ते कथा' (कथा एक मोहल्ले की)।

पोट्टेक्काट का जन्म 14 मार्च 1913 को कालीकट में हुआ। कालीकट नाम तो बाद में पड़ा जब वहाँ उद्योग धन्धों का विस्तार होना प्रारम्भ हुआ। इसका पुराना नाम अतिराणिप्पाटं था। पोट्टेक्काट ने 'कथा एक प्रान्तर की' में इसी अतिराणिप्पाटं की अन्तरात्मा की कथा इस पुरस्कृत उपन्यास में वर्णित की है। इसीलिए 'ओरु देशत्तिन्ते कथा' का हिन्दी रूप 'एक गाँव की कहानी' भी कर दिया जाता है, यद्यपि ओरु (एक) देशत्तिन्ते में देश शब्द न प्रदेश के अर्थ में है, न पूरे गाँव के अर्थ में। यह गाँव के छोर पर बसी बस्ती की कथा है—वहाँ के परिवर्तित परिवेश की, वहाँ के निवासियों की जिन्होंने जीवन के अनेक उतार-चढ़ाव देखे, अनेक प्रकार सुख-दुख सहे, अनेक प्रकार के कार्य-कलाप और पारस्परिक व्यवहार से उत्पन्न क्रिया-प्रतिक्रियाओं के, मानवीय उद्वेगों के जो भोक्ता और द्रष्टा रहे। इन पात्रों में स्वयं पोट्टेक्काट हैं, कथा-नायक श्रीधरन के रूप में। गाँव के सदाचारी, सात्विक निश्छल कृष्णन-मास्टर पोट्टेक्काट के पिता के ही प्रतिबिम्ब हैं। शेष पात्र भिन्न-भिन्न नामों के अन्तर्गत बस्ती के ही जीते-जागते व्यक्ति हैं। जिनके बीच पोट्टेक्काट के बचपन, लड़कपन और तरुणाई के दिन बीते। छोटा-सा प्रान्तर, एक पूरा विश्व है। एक-एक पात्र पूरा इतिहास है, एक-एक का जीवन-वृत्त एक-एक उपन्यास है। पचासों पात्र हैं, सैकड़ों घटनाएँ हैं—छोटी-छोटी घटनाएँ, चर्चाएँ, अन्तराल जो जीवन के तानों-बानों को बुनते चलते हैं।

एक गांव। उसके पचास वर्षो का महाकाव्य। कुट्टिमालु जीवन को जिस सहजभाव और निष्ठा से जीती है और अपने परिवार के अधिष्ठान को सँभाले रहती है, वह पोट्टेक्काट की माँ ही तो है। फ़ौज से रिटायर होकर गांव में लौट कर

आया है कुंजप्पु। इतना ज़िन्दा दिल, क्रियाशील व्यक्ति जो अपने अनुत्तरदायी व्यवहार में भी मन को मोहता है। वह गाँव में एक नयी हवा ले आता है। एक दिवालिया और शेख़ीखोर व्यक्ति है कुंजिक्केलु। उसके कारनामें और उसके व्यवहार जगजाहिर हैं, किन्तु वह अपने स्वभाव की धुरी पर निर्बाध घूमता है, घुमाता भी है। एरुमा पोन्नम्मा-जैसी आवारा औरत अपने धन्धे को जिस तेजी से चलाती है, एक मानवी की शक्ति के संदर्भ में वह गति अविश्वसनीय लगती है। कहाँ होता है उसका अन्त ? कैसे ? पटरी पार करते रेल का इंजिन उसके ऊपर से गुज़र जाता है, और वह टुकड़ों-टुकड़ों में टूटकर बिखर जाती है। यह दृश्य स्वयं लेखक का देखा हुआ है। इसकी प्रतिक्रिया का संवेदन उसका भोगा हुआ है।

अपाहिज गोपालन कितना निरीह है! कुछ भी तो कर-धर नहीं सकता। हम उसे जड़-बुद्धि समझते हैं। किन्तु वही जीवन के अन्तिम क्षण में आत्म-मन्थन से उपजे दर्शन का नवनीत श्रीधरन को दे जाता है : "यदि कोई ईश्वर है तो वह तो दूर कहीं भी आकाश में बैठा है। यदि उसे पुकारो तो वह सुनेगा नहीं। किन्तु एक दूसरा ईश्वर भी है—एक महान शक्ति—जो गहरे दुःख के समय तुम्हारी पुकार आसानी से सुन लेती है और तत्काल तुम्हारे कान में आवश्यक आदेश-उपदेश चुपके से कह देती है। जिससे तुम्हारी रक्षा हो सकती है। वह शक्ति तुम्हारे अन्दर है—तुम्हारी अन्तरात्मा। कुछ भी प्रारम्भ करने से पहले उस अन्तरात्मा की आवाज़ सुनो : क्या जो कुछ भी मैं करने जा रहा हूँ, वह मानवीय काम के सिद्धान्तों से समर्पित है ? क्या इस काम से मेरे ऊपर धब्बा तो नहीं आयेगा ?क्या इसका परिणाम मेरे साथी मानवों के लिए अहितकारी तो नहीं होगा ? यह सब अपनी अन्तरात्मा से पूछो। वह ठीक-ठीक तुमसे कान में कह देगी। यदि आत्मा से छल करोगे तो तुम्हें पता भी नहीं लगेगा कि कब तुम्हारी नैया डूब जायेगी। इस संसार के सारे जीवधारी एक महान गतिशील शक्ति के छोटे-छोटे परमाणु हैं। जिस शस्त्र का प्रहार तुम एक साथी मानव पर जानबूझकर करने जा रहे हो, वह अपने लक्ष्य को आहत करे या न करे, वह कभी न कभी तुम्हें खोजता हुआ आयेगा और छाती पर वार करेगा। तुम्हें मालूम नहीं पड़ेगा कि कब वह प्रहार हुआ। आदमी असहाय है—उस चक्रायित और निर्णायक परम सत्ता के आगे।"

जीवन का यह इतना बड़ा सत्य है कि जब मैंने भी पोट्टेक्काट से पूछा कि पुरस्कार समारोह के अवसर पर स्मारिका में प्रकाशित होनेवाले उनके चित्र के साथ उनके जीवन-दर्शन को व्यक्त करनेवाली कौन-सी पंक्तियाँ या उक्ति उद्धृत की जाएँ, तो उन्होंने इसी उद्धरण को सर्वाधिक सार्थक बताया।

पोट्टेक्काट का अत्यन्त कोमल पात्र है गाँव की वह बालिका, जो एक दिन, आँधी-पानी के दिन श्रीधरन से मिलती है—एक कोंपल अंकुरा जाती है। पता भी नहीं उसे इस स्फुरण को क्या कहते हैं। बस, श्रीधरन ने उसे अपनी छतरी दी थी

कि वह बारिश से बच जाये। अगले दिन वह छतरी चुपके से लौटा भी दी गई थी। उसके बाद न मालूम वह मिल पायी या नहीं। लेकिन मन के स्फटिक पर खिंची रेखा क्या कभी मिट सकती है?

लगभग पैंतीस वर्ष बाद श्रीधरन जब लौटता है तो गाँव के स्थान पर एक भारी भरकम शहर को दानव की तरह हाथ-पाँव फैलाये पाता है। उस दानव ने अतिराणिप्पाटं को निगल लिया था, और कालीकट को ला खड़ा किया था। बालिका अम्मुकुट्टि रात को चुपचाप प्रेम के गीत लिखती रही थी—और स्वयं टी. बी. रोग से समाप्त हो गई थी। उसके भाई ने श्रीधरन को वह कापी पकड़ाई थी। कलेजा धक हो गया था। तभी से मौत को श्रीधरन ने जीवन के सत्य के रूप में स्वीकार कर लिया था।

पोट्टेक्काट ने उपन्यास में हर कहीं मृत्यु से निर्भय आँखें मिलाई हैं। आँसू कब मुस्कान बनकर फूटे और मुस्कान कब आँसुओं में बह गई—यह पता ही नहीं चलता। दोनों ही सहज हैं, सम हैं। कभी-कभी मन में प्रश्न उठता है, पोट्टेक्काट इतने क्रूर क्यों हैं कि एक पात्र को ममता से बनाते हैं और निर्ममता से विसर्जित कर देते हैं। किन्तु उत्तर अपने आप प्राप्त हो जाता है कि पोट्टेक्काट ने तो वही लिखा जो देखा-भोगा। जीवन भी तो इसी तरह बनता गुजरता रहता है। मौत कभी-कभी दबे पाँव आ जाती है और प्रायः घुला-घुला कर मारती है। अतिराणिप्पाटं के उन सारे पात्रों में से अनेकों को मौत निगल लेती है। ताड़ी बनानेवाले, छोटे दुकानदार, अखबार बेचनेवाले, संपादक-अध्यापक, ज्योतिषी, बैरा, राजनैतिक नेता, स्वयं-सेवकों के साथ-साथ चोर-डाकू, लफंगे, व्यभिचारी, ठग, बटमार—सभी अदम्य उत्साह से जीवन जीते हैं, उनकी सारी छीना-झपटी, उठा पटक, अतिराणिप्पाटं—कालीकट को क्रिया प्रतिक्रियाओं से जीवन्त रखते हैं। वे सब समाप्त हो चुके हैं, 'ओरु देशत्तिन्ते कथा' उन्हीं को समर्पित है।

पोट्टेक्काट की भ्रमण-वृत्ति तो अपरिहार्य है ही। कमाल की है उनकी स्मरण शक्ति! पात्रों की बातचीत, उनके तमाम सजीव संदर्भ, स्थानीय भाषा के पूरे ओज और मुहावरे के सहजगति से प्रतिध्वनित होती है।

उपन्यास में न पूरी कहानी है, न कुछ सिलसिले बार घटनाक्रम है। पूरा गाँव-देहात है, परिवेश है, वातावरण है, धरती की गंध और पेड़-पौधों की महक है। जैसे यही सब उपन्यास की जीवन-शक्ति बनकर पात्रों को परिचालित कर रहे हैं।

पोट्टेक्काट ने कवि के रूप में साहित्यिक जीवन प्रारंभ किया। 'प्रभात कान्ति' और 'प्रेम शिल्पी' पहली रचनाएँ हैं। फिर कहानी के क्षेत्र में प्रवेश किया तो मलयालम साहित्य को रोमाण्टिक कहानियों की नई शैली दे दी। चौबीस कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनका 13 कहानियों का एक संग्रह रूसी भाषा में अनूदित हुआ तो दो सप्ताह में एक लाख प्रतियाँ बिक गईं। यथार्थ की छाप और

शैली की सहजता ने पाठकों के मन को लुभाया ।

पोट्टेक्काट के दस उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। लेखन के साहस और धीरज की यह स्थिति है कि 'ओरु देशत्तिन्ते कथा' के भागों में 75 अध्याय हैं। 'विषकन्या' इसी प्रकार का बड़ा उपन्यास है जिसमें एक जाति और कबीले ने मलयालम के दुरूह, भयानक प्रदेश को अद्भुत साहस के साथ, झाड़-झंकार हटा कर खूँखार पशुओं और बीमारियों से संघर्ष करके, मनुष्य के कृतित्व और अन्तिम विजय का साक्ष्य प्रस्तुत किया—विजय जिसकी अन्तिम बिसात क्या है, यह दर्शन का विषय बन जाता है, जिसे पोट्टेक्काट खूब समझते हैं और समझाने का प्रयास करते हैं ।

'ओरु देशत्तिन्ते कथा' के इस हिन्दी अनुवाद 'कथा एक प्रान्तर की' को नियोजित करना बहुत कठिन प्रमाणित हुआ। समय कम और उपन्यास बहुत बड़ा। प्रो. पी. कृष्णन, हिन्दी विभाग, श्रीनारायण कॉलिज, कण्णूर (केरल) के हम आभारी हैं कि उन्होंने बहुत थोड़े समय में ही, इतनी विशाल कृति का अनुवाद पूरा कर देने का जो संकल्प किया था उसे बड़ी कुशलता और तत्परता से निबाहा। इस जल्दबाजी में शैली-शिल्प की सुरक्षा नहीं हो सकी है, फिर भी इस दिशा में स्वल्पावधि को ध्यान में रखते हुए यथासंभव प्रयत्न किया गया और अब यह कृति पाठकों को भेंट है ।

यह हिन्दी रूपान्तर लेखक के कृतित्व और उनकी विशिष्टता की एक रूपरेखा है। वास्तविक सुरभि तो मूल मलयालम में ही है।

दिल्ली
18 नवम्बर, 1981

लक्ष्मीचन्द्र जैन
भारतीय ज्ञानपीठ

# 'रिज़र्वायर'

श्रीधरन ने सड़क किनारे के उस कोने की तरफ आँखें फैलाकर देखा। सफेद रंग पुता भारी-भरकम एक पेट्रोल ट्रैंक आसमान में सिर उठाये खड़ा है। ट्रैंक के फूले हुए पेट पर काले अक्षरों में अंकित है—'कैपेसिटी टैन थाउज़ैण्ड गैलन्स'।

यह वही नुक्कड़ है जहाँ अम्मुक्कुट्टि की छप्पर वाली झोंपड़ी खड़ी थी : उसकी युवावस्था के आरम्भ की प्रथम प्रेमिका अम्मुक्कुट्टि !

तिकोन आकृति के उस अहाते की बाड़ के ही निकट एक बड़े बादाम का और एक मदार का पेड़ था—उनकी याद आज भी ताज़ा है। वे पेड़ अब कहाँ गये हैं ! बाड़ की जगह अब सफेद पुती एक ऊँची पत्थर की दीवार नज़र आती है। दीवार के पास लम्बे नुकीले पत्तों और छोटे लाल फूलोंवाला एक नया पौधा लगाया गया है।

पौधे का एक-एक फूल अम्मुक्कुट्टि के नाक के लाल मणि का स्मरण कराता है।

पैंतीस साल पहले श्रीधरन उस देश से बिदा ले प्रवास पर गया था। इन पैंतीस सालों में क्या-क्या परिवर्तन हो गये ! परिवर्तनों का एक लम्बा संघर्ष ही वहाँ हुआ है।

प्रेम-कविता लिखने की प्रथम प्रेरणा उसे अम्मुक्कुट्टि ने ही दी थी। जीवित रहते नहीं, मृत्यु के बाद।

अम्मुक्कुट्टि के छोटे भाई ने वह नोटबुक उसके हाथों में थमा दी थी।

उस शाम की याद अब भी ताज़ा है। उस लड़के ने बताया था, "अम्मुक्कुट्टि दीदी ने यह पुस्तक आपको छिपाकर देने के लिए मुझे दी थी।"

नोटबुक ली और कुछेक पृष्ठ उलट-पलटकर दृष्टि दौड़ायी। सब की सब कविताएँ थीं। ज़रा बायीं तरफ को झुके छोटे अक्षरों में जामुनी स्याही से लिखी गयीं कविताएँ—गीत।

अपनी खुशी प्रकट किये बिना ही मैंने पूछा था, "तेरी अम्मुक्कुट्टि दीदी किस स्कूल में काम कर रही है ?"

लड़के की आँखें भर आयीं थीं। बोला, "अम्मुक्कुट्टि दीदी चल बसी।"

"चल ब स् सस् ई !" हृदय पर बिजली-सी गिरी।

"एक सप्ताह बीत गया। राजयक्ष्मा था।" लड़के ने आँखें पोंछकर कहीं दूर दृष्टि डालते हुए कहा।

उस दिन भर उसने वे कविताएँ बार-बार पढ़ीं। शीर्षकहीन कविताएँ—तड़पते प्राणों के प्रणय गीत—अकृत्रिम आत्मालाप—

चारों ओर घना अन्धकार
बन्द झोंपड़ी में बैठी हूँ मैं
अकेली।
सड़क किनारे के आम से, लो
आधी रात की कोयल भी उड़ गई !
मेरे साथ है मात्र एकान्त
जिसमें सारी दुनिया जम गई है
ऊँघती-ऊँघती।
मेरी करुणाक्रान्त व्यथाएँ, मानो
प्रतिध्वनित हो रही हों अन्धकार में।
पूजनीय प्रिय, तेरी प्रतीक्षा में मैंने
इतनी यह रात काट दी।
तू नहीं आयेगा, नहीं ही आयेगा—
नीहार सिंचित दूब के बिछे
रास्ते से मन्द-मन्द।
तू नहीं आयेगा, नहीं ही आएगा—
नारियल के पत्तों का मेरा द्वार खटखटाकर
पुकारने के लिए मेरा नाम।
तू नहीं आयेगा, नहीं ही आयेगा—
मेरे जूड़े की मल्लिकाओं की सारी
सुगन्धी ही रिस गई है।
नहीं, तू मुझे पुकारेगा नहीं 'प्रिये !'
प्रेम से आर्द्र मेरी संवेदनाएँ हैं व्यामोह,
मेरे मूक प्रणय की आशाएँ हैं व्यर्थ,
यह मैं जान चुकी हूँ।
फिर भी हे देव !
कभी-न-कभी तेरा प्रेम
मेरी झोंपड़ा को बना देगा स्वर्णमहल।

उस दिन आंसुओं से धोकर, पूरे
पदचिह्न तेरे, कहूँगी मैं—
"धन्य हुई आज
सफल हुआ जीवन,
भोर के सोनल तारे से भी
हो गयी ऊँची।"
नाथ ! चूम ले यह मेरी जीवन-लौ
ताकि निराशा न छू पाये उसे।
..........................'

उस नोटबुक की एक कविता श्रीधरन के अन्तस् में गूंज उठी।

अम्मुक्कुट्टि से पहली मुलाकात की वह शाम। कॉलेज की पढ़ाई पूरी करके महज़ म्यूनिसिपिल लाइब्रेरी की किताबों को अपना साथी बनाकर दिन गुजारनेवाला ज़माना।

रेल की पटरियों के नज़दीकवाले विशाल मैदान के रास्ते से ही वह हमेशा लाइब्रेरी से घर वापस आता था। उस दिन वहाँ पहुँचने पर एकाएक बारिश आ गयी। हवा चल पड़ी—ज़ोर की प्रचण्ड हवा, चाँदी के काँटों जैसी, और फूटकर बौछार मारनेवाली वर्षा की बूंदें !

ढेर सारी किताबों को एक हाथ से छाती में दबाये हुए और दूसरे हाथ की छोटी-सी छतरी से बारिश की हवा का सामना करते हुए साड़ी पहने वह लड़की उस मैदान में धीरे-धीरे कदम रखकर आगे बढ़ रही थी। साड़ी का निचला हिस्सा बरसात से भीगने के कारण पैरों में लिपटा था। इस वजह से वह बड़ी मुश्किल से चल पा रही थी। अकस्मात् ज़ोर की हवा आयी। वह छतरी उसके हाथ से छूटकर एक पतंग की तरह आसमान में उड़ गयी।

पुस्तकों के ढेर को दोनों हाथों से संभालते हुए उसने ऊपर की तरफ देखा। छतरी हवा में दो-एक बार नटबाजी कर दस-बीस मीटर दूर ज़मीन पर औंधे मुंह जा गिरी। फिर दो-तीन बार नर्तन-सी करती वह वहाँ से धीरे से उड़कर मैदान के कोने में कोयले के ढेर में अटक गयी।

श्रीधरन ने दौड़ कर कोयले के ढेर से छतरी उठा ली। शैतानी हरकतों के बीच बेचारी छतरी की चार-पाँच पसलियाँ टूट गयी थीं।

अपना नया छाता उसकी तरफ बढ़ाते हुए श्रीधरन ने कहा, "इसे ले लो—बारिश से बचो।"

वह हिचकती रही, उसको ज़रा शक भी हुआ। फिर श्रीधरन के चेहरे की तरफ देखा। छतरी ले ली, फिर भी शंकित हो खड़ी रही—

"कोई बात नहीं। छतरी मुझे कल दे देना !" श्रीधरन ने उसे एड़ी से

चोटी तक एक बार देखने के बाद धीमी आवाज़ में कहा।

वह सिर झुका कर हौले-हौले चली गयी।

उस लड़की को इसके पहले कभी देखा नहीं था। आम्र-पल्लव के रंग की कृशगात्री। लाल-लाल ओठ, खूबसूरत आखें, कान में छोटा-सा गोलाकार कर्णफूल, नाक के छोर पर लाल पत्थर जड़ित टोरा और पैरों में नूपुर। बिलकुल एक देहाती लड़की। एक शेल्फ में आने लायक ढेर सारी पाठ्य पुस्तकें, नोटबुक, ड्राइंग बुक उसने छाती पर ढो रखीं थीं।

लगा कि कोई प्रशिक्षण-छात्रा होगी।

हवा के झटके से टूटी हुई पसलियों वाली छतरी को अपने सिर के ऊपर तान कर श्रीधरन चलने लगा। किस्मत ही समझो कि वहाँ इस घटना को देखनेवाला कोई न था।

बारिश खतम होने पर छतरी को समेटकर बगल में रख लिया।

उस छतरी की मूठ काजू के आकार की थी। उसे स्मरण आया कि काजू के फल में दिखाई देनेवाला दाग-जैसा कुछ उसने उसके गालों पर भी देखा था।

श्रीधरन घर की तरफ नहीं गया क्योंकि पिताजी छतरी देखते ही पूछते : यह औरतों की छतरी किसकी है? यह कैसे तुम्हारे हाथ में आयी? ऐसे ढेर सारे सवाल। पिताजी से वह कभी झूठ नहीं बोला। वे तो सच्चाई के मूर्त रूप हैं।

सीधे मुहल्ले की तरफ गया। गली के छोर पर छतरी की मरम्मत करने वाला एक ऐंची आँखोंवाला मुसलमान था।

मरम्मत के बाद अगले दिन लेने का वादा करके छतरी उसके हवाले कर घर का रास्ता लिया।

दूसरे दिन सुबह नौ बजे मरम्मत हुई छतरी लेकर रेल के मैदान में उसका इन्तज़ार करता हुआ वह खड़ा रहा।

उसके वहाँ पहुँचने पर छतरी की अदला-बदली हुई। श्रीधरन ने सकुचाते हुए पूछा, "आपका शुभ नाम?"

"अम्मुक्कुट्टि।"

"क्या प्रशिक्षण-छात्रा हो?"

"हाँ"

"कहाँ रहती हैं आप?"

उसने जगह का नाम बताया।

"उस घर के मालिक से कोई रिश्ता होगा?"

"उनकी साली हूँ।"

..................

श्रीधरन ने स्मरण किया कि ज़िन्दगी में उन दोनों के बीच केवल इतनी-सी

बातचीत हुई थी

एक अप्रत्याशित घटना ने फिर उनकी मुलाकात में अड़चन पैदा की··· महीनों बाद उसके घर के सामने से कभी-कभी निकलता था। रास्ते में भी जब-कभी उसे देखा—पर, न जाने क्यों, कुछ वार्तालाप करने का साहस नहीं हुआ—शरम और भय के मारे। कोई जान ले तो ?···

यों धीरे-धीरे अनजाने में ही अलग हो गये। लगभग भूल-सा ही गया।··· फिर तीन बरस बीत गये। तभी उसके छोटे भाई ने उसकी वह नोटबुक दी थी···

इस दुनिया में वह क्यों जनमी थी ? ढेर सारी पुस्तकों का बोझ ढोकर प्रशिक्षण स्कूल जाने के लिए और छिपे-छिपे शोकाकुल गीतों का सर्जन कर रोने के लिए ही तो !

परलोक में बसनेवाली उस लड़की के लिए श्रीधरन ने कई प्रेमगीत लिखकर आग में उनकी आहुति दी है। श्रीधरन ने अनुभव किया है कि अनश्वर प्रेम का क्या अर्थ है।

परलोक की तरफ उड़ गयी उस नन्हीं कोकिला के निवास-स्थान पर ही दस हज़ार गैलन का एक बड़ा रिज़र्वायर (पेट्रोल टैंक) उठ खड़ा हुआ है।

महज अम्मुक्कुट्टि ही नहीं, श्रीधरन के कैशोर्य एवं वयःसंधि की कई तरह से मेहमानी करनेवाले कई इनसान इधर अदृश्य हो गये हैं। अर्ध शती के पहले की उस ज़िन्दगी की सौंध और गरमी कुछ और ही थी। जिस देश में जन्म हुआ और जहाँ की मिट्टी में पला, उस देश के प्रति और वहाँ की ज़िन्दगी के नाटक में बखूबी अभिनय करने के बाद मृत्यु के पर्दे के पीछे जा छिपे इनसानों के प्रति अपने एहसानों का श्रीधरन ने स्मरण किया···उनकी कथा अपनी ज़िन्दगी की दास्तान भी होगी···

## खण्ड : एक

1. एक रजिस्ट्री खत, 2. नये रिश्तेदार, 3. कुंजप्पु, 4. सिपाही, 5. वर्षगाँठ की दावत और फ़ौजी अफसाना, 6. इलंजिपोयिल में, 7. तुर्की फ़ौज, 8. अप्पाण्यं, घर का चबूतरा, औरतों का झगड़ा, 9. फिर इलंजिपोयिल में, 10. पेंटर कुंजप्पु, 11. ज्ञान के मूलस्रोत, 12. किट्टन मुंशी, 13. दंगा-फसाद, 14. आसमान का दुश्मन, 15. आयिश्शा, 16. औरत, सोना और पुलिस, 17. हड्डियों का पिंजरा और मौलसिरी की माला, 18. बन्दर और गूर्खास, 19. वेणुगोपाल, 20. अप्पु के खेत में, 21. दंगा दबता है, 22. मौत की गाड़ी.

# 1. एक रजिस्ट्री ख़त

अपने बड़े भाई एवं घराने के मुखिया श्री चेनक्कोतु केलुक्कुट्टि के सम्मुख वरिष्ठ उत्तराधिकारी चेनक्कोत्तु कृष्णन का सादर निवेदन :

मेरी पहली पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरी शादी की बात तय करके पिछले साल आपने ही मंगनी की रस्म पूरी की थी । लेकिन उस औरत को ब्याह कर घर लाने के लिए घराने के मुखिया होने के नाते आपने अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की । अपनी बूढ़ी माँ और छोटे बच्चों की परवरिश का भार मेरी नाक में दम कर रहा है । विवाह के लिए कम-से-कम पचास रुपये खर्च करने की सख्त जरूरत है । चूँकि इतनी रकम मेरे पास नहीं है अतः घराने की परम्परा के अनुसार विवाह का इन्तज़ाम करने का दायित्व आप पर है । यदि आप अपना दायित्व पूरा नहीं करेंगे तो आज से पन्द्रह दिन बाद मैं उक्त रकम किसी और से उधार लेकर ज़रूरी कार्यवाही करूँगा । उस स्थिति में मुझे या साहूकार को उक्त रक़म देने की जिम्मेदारी आपकी होगी । इस नोटिस के ज़रिए मैं आपको इस बात की सूचना देता हूँ ।

भवदीय,
ह० चेनक्कोत्तु
तारीख : 21 फरवरी, 1912

कृष्णन मास्टर का चेनक्कोत्तु घराना उस पुराने शहर के मशहूर चार घरानों में से एक था ।

कृष्णन मास्टर के स्वर्गीय पिता कुंजप्पु ब्रिटिश सरकारी सेवा में थे – एच. एस. कस्टम में एक चपरासी । उस ज़माने में वह अच्छा पेशा माना जाता था । सरकारी मोहरवाली वर्दी, नियमित मासिक वेतन, असामियों से घूस लेने की सुविधा, जहाज़ द्वारा आयात होने वाले सामान में से थोड़ा हड़प लेने की छूट इस पेशे के मुख्य आकर्षण थे ।

कुंजप्पु एक हट्टा-कट्टा, गोरा-चिट्टा नौजवान था । कुंजप्पु की कुल-महिमा और व्यक्तित्व देखकर ही गोरे साहब ने उसे कस्टम के चौकीदार की नौकरी दी थी ।

शराब की लत और औरतों के चक्कर ने कुंजप्पु का व्यक्तिगत जीवन एक-दम असंतुलित कर दिया था। खूबसूरत औरतें—चाहे वे कन्याएं हों, शादी-शुदा हों, विधवा हों या वुढ़ियाँ हों कुंजप्पु की काम-पिपासा का शिकार होती थीं। उसके कुछ वदमाश साथी भी थे। उनसे मुठभेड़ करने का हौसला उस सारे क्षेत्र में किसी को न था।

इसी बीच घराने में पारिवारिक झगड़े सिर उठाने लगे। कुंजप्पु के मन में आशंका उठने लगी कि स्वर्गीय दादा के बेटा और बेटी तथा काकाजी का बेटा एक-जुट होकर उसे, पैतृक घराने का मुखिया होने के नाते, जहर पिलाकर मारने की साजिश कर रहे हैं। इस आशंका ने कुंजप्पु के जीवन को और भी कलुषित कर दिया। घर के भीतर और बाहर दुश्मन। कुंजप्पु खूनी शैतान में बदल गया।

लेकिन घर के जानी दुश्मन भाई-बहनों द्वारा जहर पिलाने से पहले ही एक दिन सुबह कुंजप्पु की लाश एक सुनसान जगह पर अंधे कुएं में दिखायी दी। किसी ने खूब शराब पिलाकर बेहोश करने के बाद उसे कुएं में गिरा कर मार डाला था।

कुंजप्पु की अकाल मौत के बाद चेनक्कोत्तु घराने के मुखिया का पद कुंजप्पु के बड़े भाई के बेटे केलुक्कुट्टि को मिला।

केलुक्कुट्टि की एक वदसूरत जेठी कुमारी वहन थी। नाम था कुंकी। दर-असल घराने के शासन की बागडोर कुंकी के हाथ में थी। कुंकी के कई बदमाश आशिक थे। उसके साथियों ने ही कुंजप्पु को शराब पिलाकर बेहोश करने के बाद अंधे कुएं में फेंक दिया था।

अपने पिता की मृत्यु के बाद कृष्णन मास्टर ने महसूस किया कि उनका घर दुश्मनों का अड्डा बन गया है। शान्त, नेक और ईमानदार व्यक्ति होने के नाते मास्टर ने सब कुछ बरदाश्त कर नौ बरस वहाँ काटे। इस बीच उसने शादी की और दो तीन संतानें भी हो गयीं।

उस पैतृक घर में रहना खतरे से खाली नहीं था। उसे लगा, पिता के लिए लाया जहर बेटे को पिलाया जायेगा। तीन-चार साल पहले से ही कृष्णन मास्टर ने अपने परिवार का चूल्हा अलग कर लिया था और खाना-पीना भी।

कृष्णन मास्टर अपनी माँ, पत्नी और बच्चों के साथ घराने के एक अलग अहातेवाले घर में रहने लगा।

दो साल गुजर जाने पर कृष्णन मास्टर ने घराने के मुखिया केलुक्कुट्टि के नाम इस तरह का एक रजिस्ट्री नोटिस भेजा।

"आप लगभग बारह वर्षों से हमारे घराने का कार्यभार संभाल रहे हैं। हमारे इस संयुक्त परिवार की दो शाखाओं में से एक का सदस्य होने के नाते मैं तथा इस शाखा के अन्य सदस्य जिन सुविधाओं के अधिकारी हैं, अभी तक आपने हम सबको उनसे वंचित रखा है। घराने की सारी आय आप व आपकी शाखा के अन्य सदस्य

लूट रहे हैं ज़मीन-कर अदा किए बिना, चल संपत्ति बेचकर, बाग के फल-वृक्षों को तबाह करके और कुछ कार्यवाहियाँ अपनी मर्जी से रद्द करके आप हम लोगों की आँखों में धूल झोंकने की कोशिशें करते आये हैं। इस तरह घराने की संपत्ति नष्ट होने लगी है। मेरे पिता के बीमार पड़ने के बाद आपने मुझे बहुत कष्ट दिया। कई बार मार-पीट कर घायल भी किया। आप जानते ही हैं कि एक अभ्यस्त शराबी होने के नाते आप किसी न किसी चाल से मेरी हत्या करेंगे ही। इसलिए मैंने अपना चूल्हा अलग जलाना शुरू किया। इसलिए इस नोटिस द्वारा आपको सूचित किया जाता है कि आज से चौथे दिन तक मुझे व मेरी शाखा के अन्य सदस्यों को घराने के जो लाभांश मिलते हैं, वे अदा किए जाएँ। नहीं तो आपके विरुद्ध मुकदमा दायर किया जाएगा और उससे जो नुकसान उठाना पड़ेगा उसके लिए आप जिम्मेदार होंगे। इस नोटिस के जरिए ये सब बातें सूचित की जाती हैं। इससे पहले रजिस्ट्री नोटिस भेजा गया था, वह आपको याद होगा ही।

यह रजिस्ट्री नोटिस आपके छोटे भाई चात्तुक्कोट्टि तथा आपकी शाखा के अन्य सभी सदस्यों को भी दिखाया जाना चाहिए।

भवदीय,

ह०/—चेनक्कोत्तु कृष्णन)

घराने के बँटवारे की धमकी देनेवाला यह पत्र घराने के मुखिया केलुक्कुट्टि को ज़रा भी विचलित करने में कामयाब नहीं हुआ। उनकी प्रतिक्रिया सिर्फ यह थी : "उससे कह दो कि मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक ही है।" अपने रजिस्ट्री नोटिस के विषय में घराने के मुखिया से कृष्णन मास्टर को यही उत्तर नाई रामन द्वारा मिला।

कृष्णन मास्टर मुकदमा दायर करने नहीं गया। सब्र से इंतजार करता रहा।

दो साल और गुज़र गये। कृष्णन मास्टर की एक और संतान-लड़की पैदा हुई। किन्तु वह छह महीने से अधिक जिंदा न रही। इस दुर्घटना के महीनों बाद उसकी पत्नी विष-ज्वर से पीड़ित होकर चल बसी।

बूढ़ी माँ और छोटे बीमार लड़के की देख-रेख के लिए घर में एक औरत की सख्त ज़रूरत थी। इसलिए कृष्णन मास्टर ने दोबारा विवाह करने का निश्चय किया। यह ज़रूरी और न्यायोचित कार्य सम्पन्न करने के लिए घराने के मुखिया को बिना किसी हिचक से पूरी मदद करनी चाहिए थी। लेकिन, उन्होंने ज़हर पिलाने की बात में जो दिलचस्पी दिखायी थी वह अपने भानजे के पुनर्विवाह के मामले में नहीं दिखायी। शायद शादी के खर्च के बारे में सोचकर। यह सब समझ लेने के कारण ही कृष्णन मास्टर ने अपनी ज़रूरतों और अधिकारों की याद दिलाते हुए घराने के मुखिया के नाम वह रजिस्ट्री खत भेजा था।

# 2. नये रिश्तेदार

पता नहीं, केलुक्कुट्टि ने रजिस्ट्री ख़त का कोई जवाब दिया या नहीं। हो सकता है ख़त उन्होंने कूड़े में ही फेंक दिया हो।

कृष्णन मास्टर शहर के अँग्रेजी स्कूल का अध्यापक था। शहर में उपलब्ध सबसे ऊँची अँग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के अलावा उसके पास आशुलिपि के इम्तहान का प्रमाण-पत्र भी था। उन दिनों मलबार में आशुलिपि जानने वाले लोग बहुत ही कम थे। इस योग्यता के कारण उसे उत्तर भारत की एक विदेशी कम्पनी से डेढ़ सौ रुपये माहवार की नौकरी का न्योता भी मिला था, लेकिन अपना परिवार छोड़कर दूर जाने का उनका मन न हुआ और उसने डेढ़ सौ रुपये वेतन की नौकरी को इनकार करके पन्द्रह रुपये की आध्यापकी कर ली।

यह तो बीस साल पहले की बात है। उसके बाद कितनी ही घटनाएँ घटीं। शादी हुई। दो बच्चे हो गये। घर के मुखिया पिता चल बसे। परिवार में दंगा-फसाद शुरू हो गया। घर से कुछ मिलना तो दूर, जान हथेली पर रखकर भटकना भी पड़ा। सच्चाई और ईमानदारी ही उसके जीवन-साथी रहे। लेकिन खानदान के नृशंस मुखिया पर इन बातों का कोई असर नहीं पड़ा। इस नाजुक हालत में एक बीमार छोटे बच्चे और दो बेटों को छोड़कर पत्नी चल बसी।

अब कृष्णन खानदान के सभी रिश्तों को तिलांजलि दे पुनर्विवाह कर एक नयी ज़िन्दगी शुरू करने जा रहा है।

शहर में जन्मा, बड़ा हुआ, अँग्रेजी शिक्षा हासिल की, यूरोप और यूरेशिया के साहबों की संगति में रहकर सम्मान पाया, फिर भी कृष्णन मास्टर का गाँव और ग्रामीण संस्कृतियों के प्रति ख़ास लगाव बना रहा। इसलिए शहर से करीब छह-सात मील दूर पूरब की तरफ के एक पुराने किसान परिवार की नव-विधवा लड़की को कृष्णन ने पुनर्विवाह के लिए चुन लिया।

घराने की चहारदीवारी से दूर अपने लिए एक बिलकुल अलग अहाते का घर खरीदने और शादी करके वहाँ रहने का पक्का इरादा कृष्णन मास्टर कर चुका था। इस तरह ज़मीन की तलाश शुरू हुई।

शहर की दक्षिण-पश्चिम दिशा में अतिराणिप्पाटं नाम से प्रसिद्ध एक नुक्कड़ पर खेत को पाटकर एक अहाता तैयार किया गया था और उसी में छप्पर का एक झोंपड़ा था। कृष्णन मास्टर ने एक मुस्लिम परिवार से वह अहाता और घर ख़रीद लिया।

एक विशाल दल-दल को पाट दिये जाने के कारण ही अतिराणिप्पाटं बस्ती बनी। पुराने ज़माने में एक छोटी-सी नदी इस जगह से बहती हुई एक मील दूर पश्चिम के समुद्र में गिरती थी। सदियों बाद वह नदी सूख गयी और वहाँ दलदल

से भरा नाला बन गया। उस हिस्से को आज भी 'नदी किनारा' कहकर पुकारते हैं। वह नाला भी धीरे-धीरे पटकर दल-दल में वदल गया। दल-दल ज़मीन में बदलती गयी और वहाँ लोगों का आना-जाना शुरू हुआ। मेहनत के निशान प्रकट होने लगे। गन्ने के वाग, तिलहन और अरहर के खेत और बाड़ों से घिरे हुए अहाते भी बनने लगे। धीरे-धीरे खेतों की जगह नये-नये मकान उठ खड़े हुए। पुराने खेतों की मेंड़ों पर नारियल के पेड़ झूमने लगे। तिल के खेतों में अब ताड़ी निकालने वाले नारियल के पेड़ खड़े हैं। अहाते की सीमाएँ मेंहदी की वाड़ों से ढकी हुई हैं।

पुरानी दल-दल के निशान अभी पूरी तरह मिटे भी नहीं थे कि नये अहातों के लिए जहाँ से मिट्टी खोदी गयी थी, वहाँ पगडंडियाँ बन गयी हैं। गर्मी के दिनों में भी इन पगडंडियों में मछली के खून के रंग का गंदा पानी भरा रहता है। बरसात के दिनों में ये पगडंडियाँ पीले रंग के पानीवाले नालों में बदल जाती हैं। आधेक मील दूर पर बहनेवाली नदी की मछलियाँ इन नालों में मेहमान की तरह चली आती हैं। पगडंडियों के दोनों तरफ के अहातों में जाने के लिए डाले गये नारियल के पुल कभी-कभी पानी के ज़ोरदार प्रवाह में बहकर पहले नदी में और फिर समुद्र में पहुँच जाते हैं। समुद्र के क्षुब्ध होने पर उसकी लहरों के गर्जन की आवाज़ अतिराणिप्पाटं में सुनाई देती है।

अतिराणिप्पाटं में बसनेवाले लोग अमीर नहीं हैं। दाने-दाने के लिए मुहताज़ भी नहीं हैं। उनमें अधिकांश लोग नदी-किनारे के काठ गोदामों में चिराई करने वाले मज़दूर और उनके परिवारों के सदस्य हैं। यही उनका पुश्तैनी पेशा है। काठ के पसेब और पसीने से तर चमड़ी की तरह के वदबूदार कमीज़ और धोती पहन-कर ये मज़दूर अकेले और एक जुट होकर सुवह के समय नदी-किनारे के गोदामों की तरफ बढ़ते दिखायी देते हैं।

वहाँ के सभी छोटे अहाते वहाँ के निवासियों के कठिन परिश्रम का परिणाम हैं। ज़्यादातर झोपड़ियाँ हैं। कोई किराये के घर में नहीं रहता। दूसरों के झोंपड़ों में किराये पर रहने की व्यवस्था से वे लोग परिचित नहीं हैं।

"मोइतु मापिला का अहाता और घर किसी ने खरीद लिया है।" यह ख़बर अतिराणिप्पाटं में फैल गयी।

"किसने वह अहाता और घर खरीदा है?" आराकश रामन ने दामु राइटर से पूछा।

"सुना है कि कोई मास्टर है—खूब पढ़ा लिखा एक मास्टर साहब!"

"मुसलमान है?"

"नहीं, हमारा ही आदमी है।"

उसे बड़ी तसल्ली हुई। अतिराणिप्पाटं में सिर्फ एक ही मुसलमान परिवार था, मोइतु मापिला का। अब वहाँ एक संभ्रान्त हिन्दू मास्टर आनेवाला है। ख़ुश-

खबरी है।

एक रविवार की शाम उन लोगों ने मास्टर को निकट से देखा भी। मास्टर अपने अहाते के चारों तरफ बाड़ बँधवाने आया था।

बंद गले का काला कोट और सिर पर काली टोपी पहने, गोरे रंग और नाटे कद का, आँखों पर चश्मा चढ़ाये एक आदमी। हाथ में छतरी और पैर में चप्पल भी हैं। माथे पर चन्दन का टीका भी।

नया मेहमान उनको बहुत पसंद आया। अहाते के चारों तरफ जुड़ आये उस प्रदेश के निवासियों की तरफ देखकर मास्टर प्यार से मुस्कुराया। कुशल समाचार पूछा। बातचीत शुरू होने पर उन्हें मास्टर से कुछ ममता भी हो गयी।

मास्टर ने उस प्रान्तर के बारे में उनसे ढेर सारी बातें पूछीं। साफ शब्दों में पूछे गये सवालों का जवाब उन लोगों ने हाँ-ना में दिया। बातचीत के दौरान मास्टर ने अपना इतिहास भी बता दिया : "नाम है कृष्णन। बड़े भाई से दंगा-फसाद हो, इससे पहले ही घर से गला छुड़ाकर भाग निकलने का निश्चय किया है। कहावत है न : 'तेते पाँव पसारिये जेती लाँबी सौर।' आगे की हमारी जिंदगी आप लोगों के बीच में ही गुज़रेगी। आप लोग ही अब हमारे नये रिश्तेदार हैं।··· मेरा यह अहाता तो बुरा नहीं है। लेकिन घर तो बिलकुल खराब है। नया घर बनाना है। शादी और बारिश के बाद " मास्टर ने हँसते हुए कहा।

मास्टर ने और भी बहुत-सी बातें कीं। फिर, अचानक अपने कोट की जेब से चाँदी की जेबघड़ी निकालकर समय देखा।

लोगों ने इस नयी चीज़ को बड़े ताज्जुब से देखा। उनमें अधिकांश तो ऐसे थे, जिन्होंने समय जानने का यह यंत्र पहली बार देखा था।

"क्या बजा है ?" एक कुबड़े बुजुर्ग ने अपने चेहरे और छाती को आगे करते हुए पूछा।

"छह बजकर पाँच मिनट हो गये।" मास्टर ने घड़ी जेब में डालते हुए बताया। मुझे साढ़े छह बजे मार्टिन साहब के बंगले में पढ़ाने के लिए पहुँचना है।"

मास्टर ने छतरी बगल में दबाकर उनसे विदा ली।

"मास्टर ऊपर की तरफ देखकर चलता है।" कुबड़े वेलु की पत्नी कोच्चि ने अपनी राय जाहिर की। उसने घर की खिड़की के पीछे छिपकर यह सब कुछ देखा-सुना था।

गाँव के स्कूल के पणिक्कर से भी ज्यादा पढ़ा है क्या यह ?"—परंगोटन की पत्नी पेरिच्ची ने शंका की।

"अरी बुद्धू, गाँव के स्कूल का पणिक्कर मास्टर तो हरिश्री और अमरकोश सिखानेवाला है। लेकिन यह मास्टर तो इंगिरीस है। ए० बी० सी० डी०, एक

पैसे की बीड़ी —बूढ़े की दाढ़ी में आग लगी…"

परंगोटन का मज़ाक सुनकर सब लोग ठहाका मार कर हँस पड़े ।

## 3. कुंजप्पु

कृष्णन मास्टर की नयी शादी में भाग लेना अतिराणिप्पाटं के लोगों को नसीब नहीं हुआ। विवाह की रस्म कृष्णन मास्टर के पुस्तैनी घर पर ही सम्पन्न हुई। घराने से अलग होने के लिए तैयार कृष्णन मास्टर इस छोटी-सी बात पर अपनी शान-शौकत मिट्टी में नहीं मिलाना चाहता था ।

शादी के एक हफ्ते बाद ही कृष्णन मास्टर, नयी बीबी और परिवार के अन्य सदस्य अतिराणिप्पाटं वाले घर में रहने आ गये ।

मास्टर के परिवार को देखने के लिए अतिराणिप्पाटं की औरतें कन्निप्परंपु में आने लगीं। नव वधू कुट्टिमालु उन्हें बहुत पसन्द आयी। गोरी-चिट्टी और ज़रा नाटे कद की खूबसूरत युवती। दूसरी शादी होने पर भी नव वधू के चेहरे पर लाज-शरम की झलक थी। कानों में बड़ी-बड़ी बालियाँ, गले में माला, हाथ में लाल पत्थरों के जड़ाऊ भारी कंगन, नाक में लटकती हीरे की नथ। गर्दन के ऊपर बालों के जूड़े में खूबसूरत सोने का फूल, उंगलियों में क़ई सुन्दर अंगूठियाँ— कुट्टिमालु के ये ढेर सारे आभूषण देखकर अतिराणिप्पाटं की औरतों को अचरज भी हुआ और ईर्ष्या भी ।

मास्टर की माँ सत्तर बरस की बुढ़िया है, सफेद बाल और काँपते चेहरेवाली। मास्टर का बड़ा बेटा कुंजप्पु काला-कलूटा और नाटे कद का नौजवान है। चेहरा बन्दर जैसा। दूसरा पुत्र गोरा-चिट्टा और सुन्दर है। उम्र करीब अठारह वर्ष की है। लम्बे बालों को दाहिने कान पर गूँथकर रखता है। कानों में सोने की बालियाँ हैं। तीसरा लड़का सात बरस का है, पोलियो और बवासीर का मरीज़।

बूढ़ी माँ और हमेशा चारपाई पर पेशाब करने वाले इस मरीज छोकरे की शुश्रूषा का भार आज से कुट्टिमालु पर है। नफरत और चख-चख के बिना क्या वह अपना फर्ज़ निभा पाएगी ? अतिराणिप्पाटं के लोगों ने आपस में खुसुर-फुसुर की। देखें, क्या होता है।

लेकिन कुछ ही दिनों में वे समझ गये कि उनका शक बेबुनियाद है। कुट्टि-मालु बड़ी श्रद्धा और अदब से सास से अपनी माता जैसा बर्ताव करती है और सगे बेटे की तरह वात्सल्य और हमदर्दी से मरीज राघवन से बरतती है। पड़ोस की औरतों से भी वह हिल-मिल गयी। उनकी तकलीफों और ज़रूरतों में वह जी जान से हिस्सा लेती।

छाती पर सिर्फ एक अंगोछा लपेटने की अभ्यस्त अपनी देहाती वधू को कृष्णन

ने चोली पहनवायी। बाहर जाने के लिए बाँह और गरदन पर झालर लगी लाल करेशमी ब्लाउज़ भी सिलवा दी।

बचपन से ही गाँव के विशाल और उन्मुक्त वातावरण में पली उस देहाती युवती को शुरू से ही शहर का गन्दा वातावरण और वहाँ की जिन्दगी अखरने लगी। खाने के लिए ताज़े नही, बासे चावल मिलते हैं। नहाने के लिए तालाब और नदी नहीं हैं। पीने का पानी भी पड़ोस के अहाते के कुएँ से लाना पड़ता है। तरकारी और लकड़ी बाज़ार से खरीदी जाती है। मट्ठा और दही मिलते नहीं। सुबह सकारे मुर्गे की बांग नहीं सुनाई देती बल्कि आधी मील दूर की मिल का भोंपू चीखता है। सुबह उठने पर गायें नहीं, पड़ोस के अहाते में मल विसर्जन करनेवाले नंगे चूतड़ ही शकुन में दिखाई पड़ते हैं।

बुनाई और कटाई को देखकर कुट्टिमालु भूली-सी खड़ी रह जाया करती। नये कच्चे तिनकों की गन्ध और चिड़ियों की चहचहाट सुनने के लिए कुट्टिमालु का मन ललचाने लगा। हालांकि धीरे-धीरे वह नये वातावरण और नयी ज़िन्दगी से हिल-मिल गयी।

कुट्टिमालु की इस नयी ज़िन्दगी की राह में पति का ज्येष्ट पुत्र कुंजप्पु एक काँटा था।

कुंजप्पु एक अजीब आदमी था।

पहली सन्तान होने के नाते माँ-बाप ने ज्यादा लाड़-प्यार से उसको खराब कर दिया था। अपने नामधारी दादा के सभी अवगुण उसको मिले थे। पर दादा का असीम हौसला और फक्कड़पन कुंजप्पु को छू तक नहीं पाया। बचपन में स्कूल में भर्ती कराया। लेकिन घर से निकलने पर भी कई दिनों तक स्कूल नही पहुँचा। बाजारू लड़कों के साथ खेलने-कूदने में और नदी तट पर जाकर बंसी से मछली पकड़ने में उसका समय कटता। आखिर शामको थककर वह घर वापस लौट आता। कई दिनों बाद जब पिता को इसका पता लगता तो वह उसको मीठी-मीठी बातें करके पुचकारता और मन पसंद हलुआ खिलाकर धीरे-धीरे थपकियाँ लगाता हुआ स्कूल ले जाता। स्कूल का मास्टर दुर्वासा का अवतार ही था। शरारत करने पर या पाठ को गलत ढंग से उच्चारण करने पर लड़कों को बेंत से खूब मारता था। मार खाने पर कुंजप्पु फिर पुराना कार्यक्रम चालू कर देता। कृष्णन मास्टर फिर नयी कमीज सिलवा देने का प्रलोभन देकर उसको स्कूल में पहुंचाता। इस तरह तीन-चार महीने निकल जाते। कुंजप्पु के कभी-कभी स्कूल जाने के कार्यक्रम के साथ अध्यापक के मारने-पीटने का कार्यक्रम भी निरंतर चलता रहा।

एक दिन एक शरारती दोस्त ने कुंजप्पु को सलाह दी कि बेंत की छड़ी पर पेशाब कर धूप में सुखाने से, मारते समय छड़ी एक दम टुकड़े-टुकड़े हो जायेगी। कुंजप्पु दूसरे दिन सुबह ही सुबह स्कूल पहुँचा। उसने मेज़ पर से मास्टरजी की

छड़ी उठायी और एक कोने में जाकर बैठ गया। छड़ी पर पेशाब करने के ऐन मौके पर ही उसकी पीठ पर जोर की मार पड़ी। कुंजप्पु कूद कर उठ खड़ा हुआ, मुड़कर देखा तो मास्टर जी का विराट रूप सामने था। झट से उसने गुरुजी की छाती पर पेशाब से सने बेंत से तीन-चार जमा दिये। स्लेट और किताबों को फेंककर उस दिन से जो वह स्कूल से निकला तो फिर कभी उसने उस तरफ मुड़कर नहीं देखा।

जब कृष्णन मास्टर को इस घटना का पता चला, तो पुत्रवात्सल्य को दूर फेंककर उन्होंने कुंजप्पु को एक खम्भे से बांध दिया और उसकी धोती हटाकर जांघों और चूतड़ पर छड़ी से खूब मार लगायी।

उस दिन शाम को कुंजप्पु घर छोड़कर कहीं भाग गया। दो दिन तक मारा-मारा फिरने के बाद दूसरे दिन शाम को भूख बर्दाश्त न होने के कारण कुत्ते की तरह दुम दबाये फिर घर में ही लौट आया।

यही कुंजप्पु का पहला इतिहास है।

कुंजप्पु अब भी कोई काम किये बिना मारा-मारा फिरता है। 'कुल का कलंक' बताकर कृष्णन मास्टर ने उसे मनमाना कहके छोड़ दिया है।

कन्निप्परंपु में रहने के लिए आने पर पहले ही दिन कुंजप्पु ने एक कौशल दिखाया। माक्कोता ने ताड़ी निकालने के लिए जो हाँडी नारियल के पेड़ पर लटकायी थी, उस पर कुंजप्पु ने निशाना साधकर एक पत्थर मार दिया। हाँडी के फूटते ही ताड़ी बहकर नीचे गिरने लगी। ऊपर की तरफ आँख और मुँह फाड़ कर कुंजप्पु ने जी भर कर उस अमृत-धारा का पान किया।

कुंजप्पु पत्थर मारने में बड़ा होशियार है। ऊँचे आम्र वृक्ष के आम के गुच्छों में से बीच के किसी भी खास आम पर निशाना बाँधकर वह उसे मार गिराता है। मौका पाते ही वह नारियल के पेड़ से नारियल भी मार गिराता और बाज़ार में जाकर बेच आता। बाँया हाथ उठाकर अर्जुन की-सी भंगिमा से ज़रा दाहिनी तरफ मुड़कर खड़े होने के बाद कुंजप्पु के दाहिने हाथ के पत्थर का भुं···की गंभीर ध्वनि से हवा को चीरते हुए लक्ष्य स्थान को बेधने का दृश्य एकदम अनोखा होता है।

कुंजप्पु का एक और कौशल है, मुँह में उंगलियाँ डालकर सीटी बजाना। कानों को बेधनेवाली सीटी की वह आवाज़ एक-आध मील दूर तक सुनाई देती है।

उसका मनपसंद मनोरंजन केकड़ा पकड़ना है। नारियल के पत्ते से निकाले गये धागे के छोर पर चारा लगाकर वह उसे पानी में डाल देता और नदी-किनारे के लक्कड़ों के ढेर पर केकड़े के ध्यान में बैठा हुआ घण्टों इन्तज़ार करता। बस ऐसे ही समय कुंजप्पु शान्त दिखाई पड़ता।

कृष्णन मास्टर का दूसरा बेटा गोपालन शान्त स्वभाव का है। वह अकलमंद

भी है। लेकिन स्कूल की पढ़ाई से, न जाने क्यों उसे एक प्रकार की विरक्ति है। आठवीं कक्षा तक पढ़ा। फिर पिताजी के निरन्तर दबाव के बावजूद वह स्कूल नहीं गया। सन्तानों को उच्च शिक्षा देकर ऊँचे ओहदों पर पहुँचाने की कृष्णन मास्टर की सारी आशाओं पर पानी पड़ गया। कृष्णन मास्टर ने गोपालन को नदी-किनारे के कुंजाड़ी साहब की लकड़ी की दुकान का हिसाब सीखने के लिए रख दिया।

छोटा लड़का राघवन दो-तीन साल से बीमारी के कारण खाट पर पड़ा है। तमाम इलाज कराये, पर हालत नाजुक ही रही। कुट्टिमालु का प्यार और सेवा-शुश्रूषा ही उसका एकमात्र आधार है।

कुट्टिमालु को घर के काम-काज में मदद करने के लिए उसके पिता ने अपने गाँव से एक नौकरानी भेज दी है।

कुट्टिमालु को जब कै-उल्टी की शुरुआत हुई तो कृष्णन मास्टर के मन में खुशी हुई। लेकिन राघवन की दर्दनाक हालत देखकर अफसोस भी हुआ। तीन-चार महीने बाद कुट्टिमालु प्रसव के समय तक के लिए अपने घर चली जाएगी, फिर राघवन की देख-रेख कौन करेगा ?

खैर, चार महीने गुजरे और कुट्टिमालु को प्रसव के लिए इलंजिपोयिल ले गये।

पत्नी की गैर-हाजिरी में राघवन की तीमारदारी और घर के काम-काज के लिए कृष्णन मास्टर अपनी चचेरी बहन चिरुतक्कुट्टि को ले आया। चिरुतक्कुट्टि ने चार दफा शादी की थी। पर चारों मर्तबा उसकी किस्मत में वैधव्य ही बदा था। तीस वर्ष की चिरुतक्कुट्टि अपने पाँचवें शिकार के इन्तजार में थी।

हाई-स्कूल की पढ़ाई पूरी हो जाने पर कृष्णन मास्टर को दो-तीन ऐंग्लो-इंडियन रेलवे कर्मचारियों के बंगलों पर ट्यूशन लेने जाना पड़ता। इन सब कामों से निपट-कर घर पहुँचते हुए उसे रात के नौ बज जाते।

घर में घुसते ही कुंजप्पु के बारे में चिरुतक्कुट्टि की फरियाद सुननी पड़ती : 'कुट्टिमालु के सन्दूक को एक जाली चाभी से खोलने की कोशिश की'। 'भात के साथ खाने में सब्जी ही है, मछली नहीं है, यह सुनते ही कुंजप्पु ने आंगन की मुर्गी को पत्थर फेंक कर मारा और तुरत ही उसे पकाने की जिद की'। ऐसी कई शिकायतें हर रोज होती थीं। लेकिन अभियुक्त को बुलाकर पूछताछ करना तो तभी सम्भव होता, जब वह कहीं आसपास ढूंढ़ने पर मिलता।

कृष्णन मास्टर बड़ा भक्त है। सुबह जल्दी उठकर संस्कृत में स्तोत्र पाठ करता। फिर नहाकर जप-उपासना कर के जब उठता तो अक्सर पड़ोस का कोई आदमी बरामदे में अपनी दाढ़ी खुजलाता हुआ खड़ा होता। कभी किसी को कोई आवेदन-पत्र लिखाना होता तो कभी किसी बात पर सलाह लेनी होती। (अतिरा-

णिप्पाटं के गरीब और अशिक्षित लोगों के लिए कृष्णन मास्टर ज्ञानी सलाहकार था।) वीच में वे लोग मज़ाक के रूप में मास्टर के बड़े लड़के कुंजप्पु की कुछ करतूतों का भी अवश्य बखान करते : कुंजप्पु ने रात को नारियल के पेड़ पर चढ़ कर ताड़ी चुरा कर पी । औरतों को देखकर भद्दे गीत गाये, सीटी बजायी । ऐसी शिकायतें अक्सर होती थीं । यह सब सुनकर कृष्णन मास्टर के अभिमान को आंच आती । मास्टर का मन यह सोचकर मसोस उठता कि जो अपने बेटे को ठीक रास्ते पर नहीं ला पाया, वही औरों को सलाह दे रहा है। उस समय कुंजप्पु नदी-तट पर के लक्कड़ के ऊपर केकड़ा पकड़ने में ध्यान मग्न बैठा होता।

तीन महीने वीत गये ।

एक दिन खुश-खबरी लेकर इलंजिपोयिल से एक आदमी आ पहुँचा । ओंठ पर सफेद दागवाले सन्देहवाहक चेक्कु ने बताया, "आज प्रभात में प्रसव हुआ । कोई परेशानी नही हुई । लड़का है।"

कृष्णन मास्टर ने झट पंचांग लेकर देखा। चैत्र की पहली तिथि रोहिणी नक्षत्र।

पिता ने चेक्कु को एक नयी धोती और पाँच रुपये इनाम दिया।

तीन महीने और बीत गये ।

कुट्टिमालु अम्मा वच्चे को लेकर कन्निप्परंपु में शान शौकत से रहने लगी । लड़के का नामकरण किया 'श्रीधरन' ।

## 4. सिपाही

अम्मालुअम्मा की गोद में बैठकर चारों तरफ का मुआइना किया ।

बड़ी मुर्गी और उसके चूजे कोई चीज चुग रहे हैं। बड़ी मुर्गी को एक साँप मिला है। साँप मुर्गी की चोंच में तड़प रहा है ।

"अम्मालुअम्मा, इधर देखो, मुर्गी की चोंच में साँप !"

"नहीं चीतरन, वह साँप नहीं है, केंचुआ है—केंचुआ।"

तभी पेड़ के नीचे से कोई जीव धीरे से सरक रहा था। अम्मालुअम्मा ने कहा, "साँप है, साँप !"

"उसके कोई पैर दिखायी नहीं पड़ता। फिर वह कैसे जाता है ?"

सवाल सुनकर अम्मालुअम्मा हँस पड़ी । अम्मालुअम्मा की हँसी देखते ही बनती है। उसके मुँह में एक भी दाँत नहीं है– अम्मालुअम्मा का मुँह रबड़ की फटी गेंद की तरह है। अम्मालुअम्मा ने चीतरन के दोनों पैरों को सहलाते हुए कहा—"मेरे चीतरन के दो ही पैर हैं। साँप के हजारों पैर होते हैं। मिट्टी के कण जैसे छोटे-छोटे पैर।"

"हज़ारों पैर वाले हे साँप —अरे तू कहाँ जा रहा है ?" श्रीधरन ने ऐसी धीमी

आवाज़ में पूछा, जिससे साँप न सुन ले।

"मुर्गी जिसे पकड़कर खा रही है, वह केंचुआ है, तो क्या केंचुआ साँप का बच्चा है?"

सवाल सुनकर अम्मालुअम्मा फिर हँसते-हँसते लोटपोट हो गयी।

"अरे बेटा, केंचुआ तो अन्धा है। वह तो एक बड़ा कीड़ा है।"

हाँ। बड़ी मुर्गी कीड़ा निगल रही है। लेकिन पूरा का पूरा निगल नहीं पाती—मुर्गी के मुँह से कीड़े का एक छोर नीचे लटककर तड़पता है। मुर्गी सिर झुकाकर चोंच इधर-उधर हिलाती है।···मजा आ रहा है—अरे केंचुए तू यों ही तड़पता रह—अरी मुर्गी, तू भी यों ही खाती रह, खाती रह।

यह तमाशा माँ को बुलाकर दिखा दूँ। नहीं—अम्मालुअम्मा की गोद में बैठा देखकर माँ गाली देगी! 'लड़का तो बड़ा हो गया है। अरी बुड्ढी, तू क्यों उसे गोद में लेकर चलती है?'—ऐसा कहकर माँ अम्मालुअम्मा को गाली देने लगेगी।···अम्मालुअम्मा को चीतरन को गोद में लेकर चलने में बड़ा मजा आता है। अम्मालुअम्मा की गोद में चढ़कर चलना श्रीधरन को भी पसन्द है। अम्मालुअम्मा का स्तन पेट तक लटका हुआ है। वह अपने स्तनों को कपड़ों से बांधती नहीं। चीतरन की माँ अपने स्तनों को हमेशा चोली से बांधकर ढक लेती है।

"ल्लाहुला आ आ···"

कान लगाकर ध्यान से सुना—यह एक गीत है न?

किधर से आ रहा है यह गीत?

चारों तरफ देखा। ऊपर भी देखा। नारियल के पेड़ों के ऊपर और आसमान में पीले रंग की धूल छायी हुई है।

खुदा की करामात है।

'लुहाहिला···' गीत फिर सुनाई पड़ रहा है।

"अम्मालुअम्मा, यह गीत कौन गा रहा है?"

अम्मालुअम्मा ने सड़क की तरफ इशारा करके बताया—"एक अन्धा पठान है बेटा।"

पठान सुनने पर खौफ़ हुआ। माँ ने बताया था कि पठान बच्चों को पकड़कर ले जाता है। फिर गुमसुम रहा।

फिर भी यह गीत सुनने में मजा आता है।

सड़क की तरफ देखा—कुछ भी दिखाई नहीं देता। अहाते के साथ मेंहदी की झाड़ियाँ जो लगी हैं।

कभी-कभी कहीं से आनेवाले मुसलमान बच्चे मेंहदी की डालियाँ तोड़कर ले जाते। पत्तों को पीस नाखूनों और हथेलियों को रंगते। अम्मालुअम्मा बता रही थी।

गीत तो सुनाई पड़ता है—क्लीं—छ्लीं की गूँज भी···

"चीतरन गायक को देखना चाहता है," अम्मालुअम्मा के पेट पर मुक्का मारते हुए उसने ज़ोर से कहा।

अम्मालुअम्मा ने टट्टी की मेंहदी की डाली को ज़रा हटा लिया। बीच की जगह से देखा तो गायक दिखाई दिया। अम्मालुअम्मा के पेट पर हलकी-सी थपकी जमाकर उसने फिर देखा।

गायक एक बड़ा आदमी है। लम्बा सफेद कुर्त्ता, (इस ढंग का एक कुर्त्ता चीतरन के पास भी है।) सिर पर एक लाल टोपी, (चीतरन की टोपी तो काली है!) हाथ में एक छड़ी। छड़ी में घूँघरु बंधे हैं। उस छड़ी को ज़मीन पर टेकते समय ही क्लीं, छ्लीं, क्लीं, छ्लीं की आवाज़ निकलती है।

'लाहलाहिलल्ला·····' गीत सुनने पर डर क्यों लगता है? चील की तरह···

साँस रोक कर देखा।

"अम्मालुअम्मा, वह क्या गा रहा है?"

"चीतरन, वह मुसलमानों का गीत है।"

"वह इस तरह क्यों गा रहा है?"

"गाने पर लोग उसको पैसा देंगे।"

"पैसे से वह क्या करेगा?"

"वह तो अन्धा है, बेटा। वह कुछ भी देख नहीं सकता।"

बेचारा पठान! वह कुछ देख नहीं सकता। न तो वह कीड़ों को निगलने वाली बड़ी मुर्गी को देख सकता है और न आसमान में और नारियल के वृक्षों के ऊपर छिड़का पीले रंग की धूल के दृश्य को। अम्मालुअम्मा की गोद में बैठने वाले चीतरन को भी वह नहीं देख सकता।

"अम्मालुअम्मा, उसकी आँखें कहाँ गयी हैं?"

"आँखें फूट गयी हैं, बेटा।"

"वह कैसे?"

"चेचक की बीमारी से फूट गयी होंगी।"

"चेचक क्या बला है?"

"वह तो बड़ी बुरी बीमारी है। शरीर भर में गलित फोड़े हो जाते हैं। आँखों में फोड़ा आ जाय तो आँखें फूट जाती हैं।"

"आँखें फूटने पर क्या कभी दिखायी नहीं देता?"

कोई जवाब नहीं मिला।

अम्मालुअम्मा के चेहरे की तरफ ताका। उस की आँखों से तो आँसू बह रहे हैं।

अम्मालुअम्मा रोना भी जानती है।

"अम्मालुअम्मा, क्यों रोती हो?"

मेरा कोवालन—ह् ड ह् ड ई......

कोवालन तो मेरे चीतरन बेटे की ही तरह था।

अम्मालुअम्मा को रोते देखकर चीतरन भी गला फाड़कर रोने लगा।

"अम्मालुअम्मा—" श्रीधरन की माँ पुकारती है।

अम्मालुअम्मा ने तुरन्त श्रीधरन को गोद से नीचे उतार दिया और अपने चेहरे पर से आँसू पोंछ लिये। श्रीधरन तब भी सिसकियाँ भरकर रो रहा था।

"अम्मालुअम्मा, क्यों बेटे को रुलाती है?" श्रीधरन की माँ ने रसोई घर से ज़ोर से पूछा।

अम्मालुअम्मा का दुख तो दूर हो गया, घबराहट महसूस होने लगी। "मेरे मुन्ने मत रो।" उसने श्रीधरन को तसल्ली देने की भरसक कोशिश की। लेकिन श्रीधरन की रुलाई बन्द नहीं हुई। वह फफक-फफक कर रोता ही रहा...

"मत रो बेटा। अरे, देख इधर सिपाही!"

अम्मालुअम्मा ने दरवाज़े की तरफ इशारा किया।

श्रीधरन को जन्मे पाँच-छह बरस बीत गये। वह माँ की गोद में स्तनपान करता हुआ आँख मूँद-खोल कर अपना विस्मय ज़ाहिर करते हुए, चटाई पर पड़-कर शैशव के अव्यक्त सपनों में डुबकियाँ लगाते हुए, हाथ-पैर चलाकर खेलते हुए, घुटने टेककर रेंगते हुए हौले-हौले चलना सीखते हुए, तथा प्रकृति की विचित्रताओं को उत्सुकता के साथ निहारकर तोतली बोली में अपने भावों को अभिव्यक्ति देते हुए बढ़ रहा था। उसी समय कन्निप्परंपु में, अतिराणिप्पाटं में, प्रान्त में और भारत में ही नहीं, दुनियाँ भर में अनेक घटनाएँ घटीं। कृष्णन मास्टर का बेटा राघवन बीमारी में गल-गलकर आखिर मिट्टी के गढ़े में समा गया। प्रथम विश्व-युद्ध का आरम्भ हुआ। प्रान्तर के प्रमुख घराने के मुखिया केलनचेरि केचु-मेलान की मृत्यु हो गयी। उनके बेटे चन्तुक्कुट्टि मेलान ने घराने के शासन की बागडोर संभाली। भारत के प्रशासन के सुधार के नाम पर मौंटेग-चेंसफोर्ड रिपोर्ट प्रकाशित हुई। कृष्णन मास्टर की बूढ़ी माँ चल बसी। एनी बेसेंट ने हर मोहल्ले में जा-जाकर भाषण दिया।...कुंजप्पु फौज में भर्ती हो गया। और लड़ाई के कई दौर देखने के बाद अन्त में समुद्र को पार कर अरेबिया के मेसोपो-टामिया देश में पहुँच गया।......

लड़ाई के खत्म होते ही कुंजप्पु फौज से अवकाश ग्रहण कर घर वापस आया। उसी की तरफ अम्मालुअम्मा ने श्रीधरन का ध्यान आकृष्ट किया था।

दरवाज़े पर से जूते की आवाज सुनकर श्रीधरन की माँ ने रसोईघर से बरा-मदे में आकर झाँका। वजनदार फौजी जूतों से पट्-पट् आवाज़ करते हुए खाकी

वर्दी और पीकदान-जैसी टोपी पहने हुए एक आदमी हाथ में बेंत की छोटी छड़ी घुमाता हुआ दरवाज़ा पार कर रहा था। सिर और कंधे पर भारी बोझा लादे दो कुली भी उसके पीछे आ रहे थे।

कुंजण्णु बहुत कुछ बदल गया है। पहले से अधिक काला हो गया है। नाक के नीचे बड़ी मूँछें भी रखली हैं।

उसकी कमीज पर इन्द्रधनुषी रंग के एक रेशमी फीते में 'ओवरसीस फौजी सर्विस' के सूचक कुछ पदक चमक रहे हैं।

सन्दूक और ढेर सारे सामानों को बरामदे में रखकर कुलियों ने लम्बी साँस खींच कर अपनी थकावट जाहिर की। माथे से पसीना पोंछने के बाद बड़ी उत्सुकता से उन्होंने कुंजण्णु की तरफ ताका। कुंजण्णु ने खाकी पतलून की जेब से मक्का की मसजिद के चित्रवाला एक छोटा-सा बटुआ निकालकर खोला। उसमें से महारानी विक्टोरिया के सिर की तस्वीरवाले चाँदी के दो रुपये लिये और दोनों के हाथ में एक-एक सिक्का थमा दिया।

सिपाही को देखकर सहमा हुआ श्रीधरन माँ के पीछे छिपकर खड़ा रहा।

कुंजण्णु ने सामानों के ढेर से एक थैली ली और उसमें से एक टीन का डिब्बा बाहर निकाला। उसे हाथ में उठाते हुए पुकारा, "अरे श्रीधरन!"

श्रीधरन माँ के पैरों से लिपटता हुआ छिपकर खड़ा रहा।

"जा बेटा जा—तेरा बड़ा भैया है।" माँ ने श्रीधरन को आगे की तरफ धकेल दिया—"मिठाई है, ले ले।"

माँ की बात और मिठाई के लालच ने श्रीधरन को डिगाया। उसने आगे बढ़कर शरम से सिर नीचा किये ही किये हाथ पसार कर मिठाई का डिब्बा ले लिया।

"अरे, तू तो बड़ा हो गया है।" भैया ने उसके चेहरे को ऊपर उठाकर गालों को प्यार से सहलाया।

फौज में शामिल कुंजण्णु के आगमन का समाचार पाकर [illegible] और [illegible] आ पहुँचे। [illegible] देखा।

और जो अतिराणिप्पाटं के लोगों को तीन महीने तक नाक बन्द करके चलने को विवश भी करें।

## 5. वर्षगाँठ की दावत और फौजी अफसाना

मोहल्ले भर में हलचल मच गयी है। प्रसंग है केलंचेरि चन्तुक्कुट्टि मेनान की वर्षगाँठ का उत्सव।

गरीबों के लिए अन्नदान, आम लोगों के लिए दावत, ब्राह्मणों के लिए भोजन और साथ में दक्षिणा भी।

दावत के लिए तैयार किये गये अन्न के ढेर को सफेद टीले की तरह आँगन के किनारे खड़ा कर दिया गया है। सब्जी बना कर दो खास बड़ी नावों में भरी गयी है। (किले की तरह पत्थर की दीवारों से घिरे हुए केलंचेरि में पश्चिम की दीवार को तोड़कर बनाये गये दरवाजे से होकर ही ये नावें लायी गयी थीं।)

भात और सब्जियों के अलावा बड़ा, पापड़, नमकीन, विशिष्ट केले, कई तरह के पकवान दावत के पत्तों में परोसे जा रहे हैं। जहाँ औरतें और बच्चे बैठते हैं, वहाँ बड़ी भीड़ है। छोटे लड़कों के लिए भी अलग-अलग पत्तों का इन्तजाम है। भात, सब्जी और पकवान पत्तों में परोसे जाने के बाद लोग उसे अंगोछे में लपेट कर अपने घर भी ले जा सकते हैं।

परोसनेवाले के पीछे एक आदमी एक हाथ में ताँबे का बर्तन और दूसरे में एक चम्मच लेकर चल रहा है। सभी भोज्य पदार्थों के परोसे जाने के बाद वह दो चम्मच भर तिल का तेल उन औरतों के सिर पर डाल देता है, जो खाद्य वस्तुएँ घर ले जाने के बाद फिर खाने के लिये आ बैठती थी। यह ऐसी स्त्रियों को पहचानने की एक आसान तरकीब थी।

कुछ ऐसी अकलमन्द बुढ़ियाँ भी थीं, जो चालाकी से अपने एक घुटने पर अंगोछा डालकर उसे एक नन्हीं मुनिया का रूप दे देतीं और उसके सामने एक अलग पत्ता रखकर भोजन का इन्तजार करतीं। जल्दबाजी में सिर और कन्धा हिला-हिलाकर परोसने वालों की दृष्टि अक्सर ऐसी चालाकियों पर नहीं जाती। उनकी आँखें और हाथ ज्यादातर सामने की पत्तल पर ही रहते हैं।

आज इस इलाके में अपने घर में भोजन पकाने वाले लोग अधिक नहीं होते। संभ्रान्त घरों के आदमी और औरतें वर्षगाँठ की दावत खाने नहीं जाते। दावत की विशिष्ट वस्तुएँ केलंचेरि से उनके घरों में पहुँचा दी जाती हैं।

गरीबों के लिए दो-तीन दिन बड़ी समृद्धि के हैं, क्योंकि बचे हुए चावल को वे धूप में सुखाकर खाने के लिए रख लेते हैं।

वर्षगाँठ के दिन दोपहर के बाद भी कभी-कभार लोगों को केलंचेरि से भात

लेकर जाते हुए देखा जा सकता है। केलंचेरि इस इलाके का सबसे पुराना और मशहूर घराना है। पीढ़ियों से सुविख्यात इस घराने का मुखिया एक तरह से यहाँ का बेताज बादशाह ही है।

केलंचेरि घराने के पुराने मुखियों ने दक्षिण-पूर्वी देशों और चीन के साथ जहाज़ों के द्वारा व्यापार किया था। सोने की विदेशी मुद्राएँ और चीन के मर्तबान केलंचेरि के तहखानों में अब भी भरे पड़े हैं। समुद्र-तट के अधिकांश स्थान, उस इलाके के और आसपास के ज्यादातर अहाते, दुकानें, गोदाम आदि केलंचेरिवालों की निजी संपत्ति में शामिल हैं। इनके अलावा पूर्व प्रदेशों में अनेक पहाड़ और जंगल भी हैं।

बारह साल में एक बार दस्तावेजों का नवीकरण होता है। केलचेरिवालों को प्रायः हर रोज़ इस तरह के दस्तावेजों को पंजीकृत करवाना पड़ता है। वे इतनी बड़ी विपुल जायदाद के मालिक जो हैं।

पुराने ज़माने से ही उस जगह का राज-परिवार केलंचेरिवालों से हार्दिक ममता रखता था। शताब्दियों पहले महाराजा ने अपनी खुशी से केलंचेरि के मुखिया को 'मेलान' की पद-प्रतिष्ठा दी थी। विरासत में इस घराने के सभी मुखियों को यह उपाधि मिली है।

केलु मेलान के ज़माने में केलंचेरि का ऐश्वर्य चरम कोटि तक पहुँच गया था। पूर्वार्जित अपार संपत्ति के अलावा अनगिनत ज़मीन-जायदादों से लगान, माल-गुज़ारी की आय और समुद्री व्यापार से होनेवाले मुनाफे से केलंचेरि के मुखिया की दिन-दूनी रात-चौगुनी बढ़ोतरी होती रही। अपने पुरखों की तरह एक जहाज़ खरीदने की केलु मेलान की बड़ी ख्वाहिश थी। लेकिन अपनी योजना को कार्यान्वित करने के पहले ही उसका निधन हो गया।

केलु मेलान की मृत्यु के बाद उसका पुत्र चन्तुक्कुट्टि मेलान घराने का मुखिया हुआ।

चन्तुक्कुट्टि मेलान के रामन, कुंजिक्केलु और शंकरन तीन बेटे और एक बेटी है माधवी। रामन की उम्र तीस की है तो कुंजिक्केलु चौबीस और शंकरन पन्द्रह वर्ष का है। माधवी सत्रह बरस की युवती है।

घराने का मुखिया होने के बाद चन्तुक्कुट्टि मेलान की यह दूसरी वर्षगाँठ है।

केलंचेरि में वर्षगाँठ की दावतें धूम-धाम से परोसी जा रही थीं तो कन्निप्प-रंपु में घर के बरामदे में बैठकर कुंजप्पु फौजी डिब्बों की मछलियाँ, मक्खन और दूसरी चीज़ें चटकारा लेकर चाट रहा था। कुंजप्पु की हरकतों और चेष्टाओं को ललचाई आँखों से ताकता हुआ पड़ोस का कुत्ता भी आँगन में खड़ा सिर और दुम हिला रहा था।

शाम के बाद कुंजप्पु हमेशा पड़ोस के किसी घर में दिखायी देता। ज्यादातर

कठफोड़वा वेलप्पन के घर में।

मेज़-कुर्सी, पलंग आदि लकड़ी का सामान बनवाकर बेचना वेलप्पन का धन्धा है। वात रोग ने बेचारे के दाहिने पैर को जड़ कर दिया इसलिए वह घर से कहीं बाहर नहीं जाता। अतिराणिप्पाटं के लोग वेलप्पन को कठफोड़वा कहकर बुलाते हैं। वेलप्पन को बातचीत के लिए हमेशा कोई आदमी साथ चाहिए। दिन में बढ़ई है। रात में ही तकलीफ होती है। इस मुश्किल से बचाने के लिए माक्कोता, परंगोटन, आराकश वेलु और करप्पन आदि दोस्त शाम के बाद कठफोड़वा के घर पहुँच जाते हैं। लेकिन आजकल वहाँ सिर्फ एक आदमी की आवाज़ ही सुनाई देती है। वह है भूतपूर्व मिलिटरीवाला कुंजप्पु। कुंजप्पु के पास फौजी अफसानों का पूरा एक दस्ता है। उसके सनसनीखेज किस्से वे सब बड़े ताज्जुब से गहरी दिलचस्पी के साथ सुनते हैं।

बिक्री के लिए तैयार रखी लकड़ी की नयी कुर्सी पर बैठकर चैन से बीड़ी पीता हुआ कुंजप्पु किस्सा सुना रहा है।

(दृश्य : मोसापोटामिया की बस्रा। रसोई में तपते बर्तन की तरह जलनेवाले रेगिस्तान में कुंजप्पु की पलटन ने अड्डा जमा लिया है।)

"हम ट्रेंच खोद रहे थे······"

"तिरिंच क्या बला है ?" परंगोटन ने पूछा।

"कुंजप्पु बताएगा।" (छोटे बच्चों की तरह कुंजप्पु 'मैं' के बदले अपने नाम काही प्रयोग करता। 'कुंजप्पु ने ऐसा किया', 'कुंजप्पु ने वैसा किया' इस तरह के शब्द ही उसके मुँह से निकलते।)

"वह गड्ढा होता है, बहुत बड़ा गड्ढा--आसमान से बम गिरते समय छिपकर बैठने का गड्ढा—समझ गये ?"

सब ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया।

कुंजप्पु ने किस्सा जारी रखा : "तभी आसमान में एक गुँऽऽ सुनाई पड़ी।"

कुंजप्पु के गले से भयंकर हुँकार की आवाज निकली— ह्‌ रं ड़् ड़्— ह्‌ रं ड़् ड़्····· आ—हुँकार के साथ उसने अपनी दोनों लाल-लाल आँखें इस तरह ऊपर चलायीं कि माक्कोता, परंगोटन वेलु, करप्पन और कठफोड़वा भी अनजाने ही ऊपर की तरफ देखने लगे।

"शत्रु-विमानों के आगमन की सूचना थी। जर्मन हवाईजहाज़। सबको आदेश मिला कि झट ट्रेंच में जाकर जान बचाओ।

कुंजप्पु एकदम ट्रेंच में कूद पड़ा और औंधे मुँह लेट गया।

पठ ! विस्फोट की आवाज गूंज उठी। साथ ही पठ् पठ् पठ्····· लगातार विस्फोट······लगा कि हज़ारों आतिशबाजियों को एक साथ किसी ने आग लगायी है······जर्मन बमों का विस्फोट······

फिर कुंजप्पु को बिलकुल होश नहीं रहा।······होश में आने पर उसने अपने को बुरी हालत में देखा। कुंजप्पु मिट्टी में दफन हुआ पड़ा था। एक बम कुंजप्पु के सामने गिरा था। गड्ढा पट गया और कुंजप्पु मिट्टी में दफन हो गया। घसाड़े की तरह मिट्टी कुरेद-कुरेदकर हटाते हुए वह बाहर आया। कुंजप्पु ने चारों तरफ का मुआइना किया। एक भी प्राणी वहाँ मौजूद नहीं था। चारों तरफ श्मशान-सा सुनसान। आग की तरह जलती हुई धूप।

तभी दूर पर कुछ परछाइयाँ दीख पड़ीं। माथे पर हाथ की ओट कर कुंजप्पु ने बड़े ध्यान से देखा। समझ गया, कुंजप्पु की रेजीमेंट के ही सिपाही हैं। बमबारी में घायल और मृत सिपाहियों को एक साथ ट्राली में लिटाकर ले जा रहे हैं। मिट्टी में दफनाये जाने के कारण उन्हें कुंजप्पु का पता नहीं लगा था।

कुंजप्पु ने आगे बढ़ने की कोशिश की। लेकिन हिल नहीं सका। शंका हुई कि पैर में कहीं चोट लगी है। लेकिन जांच करने का समय नहीं था। अगर ये सिपाही आँखों से ओझल हो गये तो कुंजप्पु की क्या हालत होगी? चिलचिलाती धूप में पतंगे की तरह रेत में भुनकर मर जायेगा; बस इतना ही।"

"क्या किया?"

"क्या किया?" कुंजप्पु ने वही सवाल फिर दोहराया। सामने बैठनेवालों के चेहरों की तरफ एक-एक कर घूरकर देखा।

क्या किया? कलाल परंगोटन ने आराकश करप्पन के चेहरे को देखा। करप्पन ने कठफोड़वा के चेहरे को देखा। कठफोड़वा ने अपना जानदार बायां पैर हिलाकर दाढ़ी खुजलाते हुए बड़ी देर तक सोचा। आखिर क्या किया?

वेलु ने नाक में ऊंगली डालकर नीचे की तरफ देखकर सोचा : क्या किया?

माक्कोता नाक सिकोड़कर रोता है।(उसने शराब पी ली थी। पीने पर उसका चेहरा करुण रस की झलक देता।) चिलचिलाती धूप में रेगिस्तान में फंस गये कुंजप्पु की लाचारी को याद कर वह रो पड़ा।

कुंजप्पु ज़रा मुस्कराया। सबके चेहरों को बारी-बारी से देखा। फिर रसोई के दरवाज़े की तरफ नज़र घुमायी। (कठफोड़वा की जवान औरत वल्लिकुट्टि कुंजप्पु की रोमांचकारी फौजी कथाएँ दरवाज़े की ओट में खड़ी बड़ी लगन से सुन रही थी।)

कुंजप्पु ने झट मुँह मोड़कर मुँह में उंगलियाँ डालकर सीटी बजायी।

पैर हिलानेवाला कठफोड़वा, रोनेवाला माक्कोता और नाक में उँगलियाँ घुमानेवाला वेलु सीटी की तेज आवाज से होश में आये। वह सीटी अतिराणिप्पाटं में गूंज उठी। जीभ के नीचे दोनों हाथ की दो-दो उँगलियाँ ठूंसकर कुंजप्पु ने जो आवाज़ पैदा की, उसकी गूंज से अतिराणिप्पाटं के लोगों के रोंगटे खड़े हो जाने की घटना को दो-तीन साल गुजर गये थे।

"साथियो!" कुंजप्पु कुर्सी पर बैठ गया। "तब कुंजप्पु ने यही किया था—

सीटी बजायी थी।"

"कुंजप्पु की पहली सीटी पर सिपाहियों ने ध्यान नहीं दिया। कुंजप्पु ने फिर एक बार उससे भी ऊँची आवाज़ की लंबी सीटी बजायी। उससे कामयाबी हुई। पलटन एकदम रुक गयी। कुंजप्पु ने दोनों हाथ हिलाये। फिर तीन-चार दफा हाथ उठाकर उछलते हुए अपनी हालत की सूचना दी।

थोड़ी देर बाद छह-सात सिपाही एक स्ट्रेचर लेकर कुंजप्पु की तरफ बढ़े।"

"वह क्या बला है ?" करप्पन का सवाल था। कुंजप्पु ने व्याख्या की : "घायल सिपाहियों को लिटाकर ले चलनेवाले कपड़े के पलंग को स्ट्रेचर कहते हैं।"

"हाँ, उस ढंग की एक चीज मैंने भी अस्पताल में देखी थी।" परंगोटन ने कहा।

कुंजप्पु ने किस्सा जारी रखा : "उस पलटन के नज़दीक पहुँचने पर कुंजप्पु एकदम दंग रह गया—यह सिपाहियों के आगेवाला कौन है ?······"

"कौन ? कौन था वह ?" वेलु, परंगोटन और कठफोड़वा को जानने की बड़ी इच्छा हुई।

कुंजप्पु ने कठफोड़वा से एक बीड़ी माँगी। कठफोड़वा को अपने पैरों को हौले से खींचकर बीड़ी देने में समय लगेगा, यह सोचकर वेलु ने नाक से ऊँगलियाँ खींचकर गोद से एक बीड़ी निकालकर कुंजप्पु की तरफ बढ़ा दी।

बीड़ी पीकर धुआँ छोड़ता हुआ कुंजप्पु थोड़ी देर तक अपने साथियों की जिज्ञासा को भड़काता रहा।

"बोलो न, कौन था सामने ?" वेलु ने जानी दोस्त की तरफ अनुनय के साथ आग्रह किया।

कुंजप्पु कुर्सी से आगे बढ़कर, गरदन फैलाकर बड़े गौरवपूर्ण रहस्य को प्रकट करता-सा फुसफुसाया : "जानते हो वह कौन था ? ओ०सी०—वह ओ०सी० था।"

"अरे यह आदमी होता है या कोई जानवर ?" करप्पन का सवाल था।

"ओ० सी० का मतलब है कमांडिंग अफसर। पलटन का मुखिया साहब।"

ओ० सी० का भाष्य हो चुकने के बाद कुंजप्पु ने रसोईघर की तरफ ताककर जरा नाक-भौं सिकोड़ी और पूछा : "वहाँ से वह कैसी गंध आ रही है ?"

तब सब नाक चढ़ाकर उस गन्ध को पकड़ने की कोशिश करने लगे। ठीक तो है। किसी जली सूखी चीज़ की गन्ध आ रही है।

कुंजप्पु की कहानी सुनने में तल्लीन वल्लिक्कुट्टि चूल्हे पर पकने के लिए रखी मछली की बात भूल गयी थी। मछली और साथ डाले व्यंजन जलकर एकदम ठठरी हो गये थे।

यह जानने पर कठफोड़वा आपे से बाहर हो गया—"हरामज़ादी ! मर्दों की बातों को उनके मुँह में घुसकर सुन रही थी······!"

कठफोड़वा के हाथ में जो भी आया उसने उठाकर दरवाजे की तरफ दे मारा। उसको इस बात का पता नहीं था कि वह कीलों का पुलिंदा है।

पुलिंदे के कील बम में भरे कांच के टुकड़ों की तरह बरामदे में इधर-उधर बिखर गये।

"बम विस्फोट होने पर इस तरह की जले की गन्ध फैलती है।"

कुंजप्पु ने कठफोड़वा का ध्यान रणभूमि की तरफ खींचा।

"उस आदमी को देखने पर कुंजप्पु ने फिर क्या किया?" परंगोटन ने उतावली दिखाते हुए पूछा।

कुंजप्पु ने कुर्सी से फौरन नीचे कूदकर 'अटेन्शन' में सीधा खड़ा होकर एक सेल्यूट मारा। ओ० सी० सामने ही हो, ऐसी मुद्रा दिखाई।

"तब ओ० सी० ने कुंजप्पु को एड़ी से चोटी तक देखा, फिर दो कदम आगे बढ़कर कुंजप्पु को हाथ दिया। सिर हिलाकर हिन्दुस्तानी में उन्होंने घोषणा की: तुम को वी० सी० मिलने में हम रेकमेंड करेंगे।"

"इसका क्या मतलब है?" कठफोड़वा ने पूछा।

"कुंजप्पु को वी० सी० मिलने के लिए अधिकारियों से सिफारिश करेंगे।"

"यह वीशी क्या बला है?" वेलु ने सवाल किया। कुंजप्पु ने स्पष्टीकरण दिया: "वी० सी० का मतलब है 'विक्टोरिया क्रॉस'। एक सैनिक को उपलब्ध होनेवाली सबसे बड़ी वीर-मुद्रा। लड़ाई में शत्रु-सेना की छीनी हुई तोपों से ही इसका निर्माण किया जाता है।" कुंजप्पु ने नीचे से दो कीलों को उठाकर एक चित्र-सा बनाकर वी० सी० मुद्रा की आकृति दिखाई।

"इस वी० सी० के लिए सिफारिश करने की बात किसने कही थी?" कुंजप्पु ने अपने साथियों की परीक्षा करने के लिए झट से पूछ लिया।

"ओ० सी० ने" कठफोड़वा ने जवाब दिया।

"ठीक है। किससे ओ० सी० ने यह बात कही थी?" परंगोटन की ओर इशारा करके उसने पूछा।

"कुंजप्पु से।" परंगोटन का जवाब भी फौरन मिल गया।

"लान्स नायक कुंजप्पु से।" कुंजप्पु ने परंगोटन की गलती को सुधारते हुए फरमाया।

थोड़ी देर तक खामोशी---

"ओ० सी० की वी० सी० हेतु घोषणा सुनते ही कुंजप्पु बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा था।"

"अरे तू बेहोश होकर क्यों गिर पड़ा था?" करप्पन ने पूछा।

कुंजप्पु ज़ोर से ठहाका मारकर हँस पड़ा।

"साथियो, वह तो कुंजप्पु की एक चाल थी—बेहोशी नहीं थी। कुंजप्पु को

स्ट्रेचर पर सवारी मिलती। सवारी में 'शाक' लगने के नाम पर कई-कई दिनों तक मिलिटरी डाक्टर के इलाज में सुख से रहने को मिलता बढ़िया खाना—पीने के लिए ब्रांडी भी मिलती... "

"कमाल है! कमाल है!" वेलु ने अपनी गांठ से फिर एक बीड़ी कुंजप्पु को भेंट की।

## 6. इलंजिपोयिल में

इलंजिपोयिल एक छोटा-सा खेती-प्रधान इलाका है जो दो समांतर रेखाओं की तरह पूरब से पश्चिम तक फैली हुई पहाड़ियों के बीच एक फर्लांग की दूरी पर बसा हुआ है।

अहाते के सामने की पहाड़ी के किनारों को काटकर उन्हें अच्छे खेतों में बदल दिया गया है। 'पहला खेत', 'दूसरा खेत' इन नामों से खेतों को पहचाना जाता है। छठे नंबर के खेत के ऊपर पहाड़ी की चोटी तक घना जंगल है।

बीच में, 'चट्टानी खेत' नाम का एक खण्ड है, जिसे नंबर नहीं दिया गया है।

इन खेतों के अनेक उपखण्ड भी हैं। मध्य भाग के निचले खेत में इलंजिपोयिल घराना रहता है। छोटा-सा एक घर। उत्तरी भाग में नारियल रखने का एक बड़ा कमरा है, जिसने घर के आधे से ज्यादा भाग पर कब्जा कर रखा है। गोबर से लिपे हुए विशाल आँगन को पार करने के बाद एक बड़ी गोशाला है। उसमें गाय और बैल पागुर करते हैं। आँगन के कोने में सूखी घास के दो-तीन गट्ठर भी रखे हुए हैं।

घर के आस-पास तथा उस पूरे अहाते में नारियल, आम और कटहल के पेड़ों के अलावा चार-पाँच और भी बड़े पेड़ हैं। आँगन के सामने सेमल का एक बड़ा वृक्ष है, जिसकी डालें आसमान से बातें करती हैं और अहाते में हमेशा फूलों की वर्षा होती रहती है।

खेत भर में सब्जियों की खेती है। मूली, भिंडी, बैंगन, अरबी आदि कई तरह की सब्जियाँ। जिन खेतों में अधखुली हरी छतरियों की तरह की कतारें चली गयी हैं, वहाँ सूरज की खेती है। कुछ खेतों में करेले का ओसारा नज़र आता है। एक दूसरे अहाते में पान की झालरें लहलहाती हैं। प्रायः सभी पेड़ों के साथ काली मिर्च की लताएँ हैं। एक-दो बड़े खेतों में धान की खेती भी है।

'चट्टानी खेत' में एक बड़ा शामियाना है। सूत के जाल से बने इस तंबू के अन्दर ही सूखी गरी का खलिहान है। नारियल को सुखाने के लिए फैलाते समय कौओं और अन्य प्राणियों के हस्तक्षेप को रोकने में जाल का यह शामियाना काम आता है।

हुए एक बार देखा था। अप्पु ने बताया कि वह जहरीला नाग है।

अप्पु पेड़ के ऊपर चढ़कर चारों तरफ के दृश्यों का आनन्द लेता। कुछ का वर्णन श्रीधरन से भी करता, 'देख वह हरिजनों का कब्रिस्तान है।' अप्पु दूर दिशा में इशारा करता। श्रीधरन को भी उसे देखने की इच्छा होती। लेकिन उसे पेड़ पर चढ़ना नहीं आता। अप्पु नीचे उतरकर अपना कंधा झुकाकर खड़ा होता—'मेरे कंधे पर खड़े होकर देख लो।' श्रीधरन अप्पु के कंधे पर खड़ा होता और पेड़ से चिपकते हुए ऊपर चढ़ कर देखता। पहाड़ी के ऊपर उस पार जंगली चंपा के पेड़ों से भरा एक खुला मैदान है—वहीं हरिजनों का कब्रिस्तान है। अप्पु ने श्रीधरन को बताया कि एक बार वह वहाँ गया था। वहाँ पत्थर की मालाएँ और काँसे की चूड़ियाँ फिकी हुई पड़ी थीं।

ओठों पर सफेद कोढ़वाला चेक्कु और अप्पु बैलों को नहलाने के लिए जब नदी के किनारे ले जाते तब कभी-कभी श्रीधरन भी उनके साथ जाता। उत्तरी पहाड़ी के उस पार नदी बहती है। उधर पहुँचने के लिए खेतों से होकर, नाला पार करके चक्कर काटकर जाना पड़ता है। पहाड़ी की परिक्रमा करके बहने वाली नदी के घुमाव पर एक बड़ा गड्ढा है जो 'शैतान गड्ढा' कहलाता है। गड्ढे के पास एक बड़ी चट्टान है। असमय में कोई उस गड्ढे के पास नहीं जाता। वहाँ दिन में भी प्रेत होते हैं। पुराने जमाने में राजाओं द्वारा दण्डित अपराधियों को उसी चट्टान पर गला काट कर मारा जाता था। अप्पु बताता, "अपराधी को चट्टान पर खड़ा किया जाता। फिर जल्लाद तलवार घुमाकर एकदम सिर काट देता, और सिर 'शैतान गड्ढे' में।" गड्ढे के पानी का रंग हर बार बदलता रहता। कभी-कभी गहरा लाल हो जाता तो कभी नीला और कभी हल्दी के घोल जैसा। अप्पु कहता कि यह सब शैतानों का इन्द्रजाल है।

नहला चुकने बाद अप्पु बैलों को नदी के उस पार तक तैराता, और फिर उधर से इस पार भी। उसके बाद अप्पु भी नहाता। पानी में एकदम कूद पड़ता—फिर अप्पु दिखाई नहीं देता। श्रीधरन उत्कण्ठा से दम साधे नदी की तरफ ताकता रहता। अप्पु को क्या हुआ ? अचानक वह उस पार की चट्टान के पास दिखाई देता। तब वह चट्टान पर खड़ा होकर ऊँची आवाज में चिल्लाता। उँगलियों से नाक बन्द करते हुए वह फिर चट्टान पर से पानी में कूद पड़ता। गोता लगाते हुए इस पार पहुँच आता। अप्पु चित्त लेटकर भी तैरता। तैरते-तैरते ही मुँह में उँगली डालकर दाँत साफ करता—पानी मुँह में भरकर कुल्ला करता। अप्पु के अभ्यासों को देखकर श्रीधरन ताज्जुब के साथ तालियाँ बजा-बजाकर वाह-वाही करते हुए उसका अभिनन्दन करता।

उस समय चेक्कु वहाँ कहीं दिखायी नहीं देता। चेक्कु कहाँ गया ? श्रीधरन अप्पु से पूछता। 'नहीं मालूम' अप्पु आँख बन्द कर इशारा करता।

एक दिन चेक्कु के बिना ही अप्पु और श्रीधरन बैलों को लेकर नदी पर गये। उस दिन अप्पु ने श्रीधरन से रहस्य खोला : "अगर तू भगवान के नाम पर शपथ ले कि तू किसी से न कहेगा, तो मैं तुझे एक चीज दिखाऊँगा।"

"मैं कसम खाता हूँ कि मैं किसी से न कहूँगा।" श्रीधरन ने सौगन्ध खायी। अप्पु नदी के किनारे की एक चट्टान के पास गया। श्रीधरन ने भी अप्पु का पीछा किया। चट्टान के पीछे एक जगह की मिट्टी हाथों से हटाकर अप्पु ने एक चीज बाहर निकाली। एक बड़ी बोतल का डाट दाँत से खींच कर हटा दिया। बोतल मुँह में लगाकर उसमें से तीन-चार घूंट पिये, फिर चुल्लू-भर नदी का पानी उसमें भर दिया और डाट लगाकर बोतल वहीं दफना दी।

"चेक्कु मामा की शराब है।" अप्पु ने ओंठ पोंछते हुए कहा। (चेक्कु अप्पु का दूर का एक रिश्तेदार है।) श्रीधरन की समझ में कुछ न आया। अप्पु ने विस्तार से सब बता दिया : पहाड़ी ढलान के एक बड़े गड्ढे में चेक्कु नारियल की ताड़ी से शराब चुआता है और इस तरह बनायी गयी वर्जित शराब को बोतलों में भर-कर नदी के किनारे की चट्टान के पीछे बालू में छिपा देता है। शाम के बाद वहाँ से बाहर निकाल कर वही शराब ग्राहकों को बेचता है।

उस दिन बैलों को नहला कर लौटते वक्त अप्पु पूरे नशे में था। उसने मौज में कुछ मनमाने गीत गाये :

"सूरन अहाते की उण्णुलि अम्मा की
पाणन कणारन से प्रीत लगी।
माँड की हाँडी पर दाढ़ी और
देखो आँगन के पेड़ पर मूँछ उगी।"

अप्पु रास्ते में मिले कच्चे तिनके और हलकुशा तोड़कर चबाता रहा ताकि शराब की गन्ध मिट जाये।

पूरब तरफ की नहर में जंगली बत्तखें झुण्डों में आ जाती हैं। उनका केकड़ों और मछलियों की तलाश में पानी में तैरने का दृश्य बड़ा ही दिलचस्प है। आस-पास कहीं कोई भी मनुष्य दिख जाये तो वे झुण्ड की झुण्ड उड़ जाती हैं। जंगली बत्तखों को पकड़ने की विद्या भी अप्पु को मालूम है। वह एक पुराना मिट्टी का घड़ा लेकर उसमें दो छेद करता। फिर घड़े को सिर पर औंधा रखकर सिर को ढक लेता और पानी में उतर कर गले तक डूब जाता। पानी के ऊपर केवल औंधा घड़ा ही दिखायी देता। जंगली बत्तखों को यह पता नहीं चलता कि पास वह आनेवाले घड़े के नीचे अप्पु नाम का एक चालाक छोकरा है। बत्तखों के निकट पहुँचने पर अप्पु मौका देखता और पानी से हाथ निकालकर बत्तख को एकदम पकड़ लेता। यह काम अप्पु इतनी निपुणता से करता कि आस-पास की बत्तखों को भी मालूम नहीं होता कि क्या हुआ है। कभी-कभी एक ही दिन में अप्पु दस पन्द्रह तक बत्तखें पकड़ लेता।

कि गोली लगने पर भी मरे नहीं।" अरबियों के बारे में बड़े जानकार की तरह हाथीपांववाले अय्यप्पन ने राय ज़ाहिर की।

हाथ में जली हुई एक लकड़ी लेकर एक मोटी काली-कलूटी औरत कल्याणी बरांमदे में आ गयी। उसने सब लोगों के चेहरे की तरफ नजरें घुमायीं। अपने सभी मोटे दांतों को निपोरते हुए हँस पड़ी और जलती हुई लकड़ी कुंजप्पु की तरफ बढ़ा दी। कुंजप्पु ने लकड़ी लेकर बीड़ी सुलगायी। कल्याणी के हाथ में लकड़ी वापस देते समय कुंजप्पु ने उसे उंगली से ज़रा छू लिया।

आण्डि ने सब की आँखें बचाकर अपने कमरबन्द से एक बीड़ी खींच कर कल्याणी की लकड़ी से बीड़ी सुलगा ली और कश खींचते हुए सोचने लगा : "वह तरकीब क्या होगी ?"

गपिया परंगोटन ने हाथ से घड़ी उतार कर चावी दी। (रोज़ कई दफा वह अपनी घड़ी को चावी देता है।)

तुर्कियों के मृतसंजीवनी सूत्र पर माथा-पच्ची करने के बाद भी किसी को उसका रहस्य मालूम नहीं हुआ। रसोई-घर की औरतें भी आपस में फुसफुस करने लगीं।

कुंजप्पु ने बीड़ी पीकर ज़रा सिर नीचा करके नाक से धुआँ निकालते हुए (उस समय कुंजप्पु का चेहरा आग लगे युद्ध-विमान के औंधे मुँह गिर पड़ने-जैसा लग रहा था।) उस तरकीब का बखान किया : "तुर्कियों की सेना के ये बारह सिपाही दरअसल सिपाही नहीं थे, फौजी वर्दी पहने हुए रबड़ के पुतले थे। गोली लगने पर बस ज़रा हिलते-डुलते, इतना ही। कप्तान को यह तरकीब बड़ी देर के बाद मालूम हुई। तब तक सभी गोली-बारूद खतम हो चुका था। फिर दुम दबाकर भागने के सिवा और कोई चारा नहीं था।"

यह सुनते ही हाथीपाँववाला अय्यप्पन ठठाकर हँस पड़ा। लगा कि कोरन बटलर के घर की छत तक हिल उठी है।

इस कुंजप्पु की पलटन रेगिस्तान से प्राण लेकर भाग गयी। रात को वे रेगिस्तान के एक और कोने में डेरा डालकर ठहरे।

तभी आण्डि का एक नुकीला सवाल आया—"रात को क्या वे तंबू में ठहरे थे ? दुश्मनों की आँखें बचाकर आसानी से लुक-छिपकर भाग जाने का मौका तो रात को ही था ?"

कुंजप्पु ने आण्डि की तरफ आँखें तरेरकर देखा : "रात को वहाँ सोने के लिए नहीं था तंबू। पूरी बात सुनने के बाद शंका का स्पष्टीकरण माँगो। अरे, यह कोई झूठा दस्तावेज़ लिखना नहीं है, समझे। यह तो लड़ाई है, लड़ाई। 'जर्मन-वार'। कई तरह का दाँव-पेंच करना पड़ता था।"

आण्डि चुप हो गया।

पेटी पर बैठकर कुंजप्पु अपना अफसाना सुना रहा है।

घर का मालिक कोरन बटलर जोसफ ताड़ी पीकर बरामदे के कोने में पड़े एक पलंग पर ताड़ी भरी हांडी जैसी तोंद का प्रदर्शन करता हुआ बेहोश होकर चित्त पड़ा है। कलाल गपिया परंगोटन, हाथीपांववाला अय्यप्पन और अर्जीनवीस आण्डि भी नीचे बरामदे के किनारे पैर लटका कर बैठे हुए हैं और कुंजप्पु का फौजी अफसाना सुन रहे हैं। रसोईघर के दरवाजे के नजदीक तीन-चार औरतें भी बड़े अदब से इस फौजी दास्तान को सुन रही हैं। इनमें बटलर की बीवी कुंजप्पु और बेटी तिरुमाला के अलावा जानु और कल्याणी ये दो भतीजियां भी शामिल हैं।

अर्जीनवीस आण्डि की उपस्थिति पर कुंजप्पु प्रसन्न नहीं है। और लोग तो कुंजप्पु की सारी बातें बगैर बहस के निगल जाते हैं, लेकिन आण्डि वैसा आदमी नहीं है। वह अचानक कुछ ऐसे 'लाजवाब' सवाल पूछता, जिनसे कुंजप्पु की नाकों दम हो जाता। इसलिए आज कुंजप्पु अपनी बड़ी मूछों को मरोड़ता हुआ बड़ी सतर्कता से किस्सा सुना रहा है।

अरेबिया की बसरा ही कथा की पृष्ठभूमि है। रेगिस्तान के कोने में तुर्कियों के साथ घमासान लड़ाई के बाद कुंजप्पु के स्क्वाड्रन को मुंह मोड़ना पड़ा। क्योंकि बारूद बिल्कुल खत्म हो चुकी थी। तुर्की सेना ने एक तरकीब से ब्रिटिश भारतीय सिपाहियों की आँखों में धूल झोंक दी थी।

कुंजप्पु के कप्तान ने खुर्दबीन से देख लिया कि तुर्की फौज ने अपने पड़ाव के सामने कुछ बन्दूकधारियों को खड़ा कर दिया है। अचानक धावा बोलना है। कप्तान ने गोली मारने का आदेश दिया। भारतीय सेना ने लगातार गोलियों की बौछार की। दस 'रौण्ड' गोली मारने पर भी तुर्की पलटन की संख्या में कोई कमी न हुई। फिर दस 'रौण्ड' मारने का हुक्म दिया गया। तुर्की सैनिक गोली खाकर हिलते-डुलते जरूर, लेकिन वहाँ से पीछे न हटते। कप्तान ने उन्हें लगातार निशाना बनाने का हुक्म दिया। कप्तान ने समझा था कि मरहूम तुर्की सैनिकों की जगह नये सैनिक आकर खड़े हो रहे हैं। उन सब को गोली का शिकार बनाकर पड़ाव पर कब्जा करने की कप्तान की योजना थी। लेकिन भारतीय सेना की सभी गोली-बारूदें खाली हो गयीं।

तुर्की पलटन के बारह सैनिक उसी तरह खड़े रहे। क्या थी उनकी तरकीब?

"क्या थी उनकी तरकीब?" आण्डि ने सवाल किया।

कुंजप्पु ने आण्डि से एक बीड़ी माँगी। आण्डि ने गपिया परंगोटन से एक बीड़ी माँगकर कुंजप्पु के हाथ में थमा दी। किसी के पास माचिस नहीं।

"थोड़ी-सी आग" रसोईघर की तरफ देखकर कुंजप्पु ने चिल्लाकर कहा।

"ये अरबी तो बड़े मांत्रिक होते हैं। उन्होंने हाथ में तावीज बाँध रखा होगा

कि गोली लगने पर भी मरे नहीं।" अरबियों के बारे में बड़े जानकार की तरह हाथीपांववाले अय्यप्पन ने राय ज़ाहिर की।

हाथ में जली हुई एक लकड़ी लेकर एक मोटी काली-कलूटी औरत कल्याणी बरांमदे में आ गयी। उसने सब लोगों के चेहरे की तरफ नज़रें घुमायीं। अपने सभी मोटे दांतों को निपोरते हुए हँस पड़ी और जलती हुई लकड़ी कुंजप्पु की तरफ बढ़ा दी। कुंजप्पु ने लकड़ी लेकर बीड़ी सुलगायी। कल्याणी के हाथ में लकड़ी वापस देते समय कुंजप्पु ने उसे उंगली से ज़रा छू लिया।

आण्डि ने सब की आँखें बचाकर अपने कमरबन्द से एक बीड़ी खींच कर कल्याणी की लकड़ी से बीड़ी सुलगा ली और कश खींचते हुए सोचने लगा: "वह तरकीब क्या होगी?"

गपिया परंगोटन ने हाथ से घड़ी उतार कर चाबी दी। (रोज़ कई दफा वह अपनी घड़ी को चाबी देता है।)

तुर्कियों के मृतसंजीवनी सूत्र पर माथा-पच्ची करने के बाद भी किसी को उसका रहस्य मालूम नहीं हुआ। रसोई-घर की औरतें भी आपस में फुसफुस करने लगीं।

कुंजप्पु ने बीड़ी पीकर ज़रा सिर नीचा करके नाक से धुआँ निकालते हुए (उस समय कुंजप्पु का चेहरा आग लगे युद्ध-विमान के औंधे मुँह गिर पड़ने-जैसा लग रहा था।) उस तरकीब का बखान किया: "तुर्कियों की सेना के ये बारह सिपाही दरअसल सिपाही नहीं थे, फौजी वर्दी पहने हुए रबड़ के पुतले थे। गोली लगने पर बस ज़रा हिलते-डुलते, इतना ही। कप्तान को यह तरकीब बड़ी देर के बाद मालूम हुई। तब तक सभी गोली-बारूद खतम हो चुका था। फिर दुम दबा-कर भागने के सिवा और कोई चारा नहीं था।"

यह सुनते ही हाथीपाँववाला अय्यप्पन ठठाकर हँस पड़ा। लगा कि कोरन बटलर के घर की छत तक हिल उठी है।

इस कुंजप्पु की पलटन रेगिस्तान से प्राण लेकर भाग गयी। रात को वे रेगि-स्तान के एक और कोने में डेरा डालकर ठहरे।

तभी आण्डि का एक नुकीला सवाल आया—"रात को क्या वे तंबू में ठहरे थे? दुश्मनों की आँखें बचाकर आसानी से लुक-छिपकर भाग जाने का मौका तो रात को ही था?"

कुंजप्पु ने आण्डि की तरफ आँखें तरेरकर देखा: "रात को वहाँ सोने के लिए नहीं था तंबू। पूरी बात सुनने के बाद शंका का स्पष्टीकरण माँगो। अरे, यह कोई झूठा दस्तावेज़ लिखना नहीं है, समझे। यह तो लड़ाई है, लड़ाई। 'जर्मन-वार'। कई तरह का दाँव-पेंच करना पड़ता था।"

आण्डि चुप हो गया।

कुंजप्पु ने अपनी दास्तान जारी रखी : "कप्तान ने सभी सिपाहियों को बुला कर सामने कतार में खड़ा कर दिया। फिर उन्होंने हाथ में एक बड़ा मानचित्र लेकर उस पर सरसरी नज़र डालने के वाद एक लेक्चर दिया—"हम सव दुश्मनों के किसी पड़ाव के नज़दीक आ पहुँचे हैं। तुर्कियों के पड़ाव इस प्रदेश में ज़रूर होंगे। अगर हम उनमें फंस गये तो गला छूटना मुमकिन नहीं है। हमारे पास माचिस की एक तीली भी नहीं है। इसलिए आगे वढ़ने के पहले हमें इस वात का पता लगाना चाहिए कि दुश्मन ने कहाँ डेरा डाल रखा है। इसके लिए एक गुप्तचर की ज़रूरत है। कौन जाएगा ?"

कोई न हिला न डुला।

तभी कुंजप्पु ने चार-पाँच कदम आगे वढ़कर कप्तान को सलामी दी "मैं तैयार हूँ साहव।"

"ठीक है।" कप्तान ने बधाई देते हुए सिर हिलाया : "तो तुम जाओगे ?"

"जी साऽव" कुंजप्पु ने सिर झुकाया।

"अभी जाओ।"

कुंजप्पु एक पल भी वहाँ नहीं रुका। हाथ मिलाते हुए सीधे रेगिस्तान का रास्ता लिया।

"ठहरो !" कप्तान ने पुकारा।

कंजप्पु ने मुड़कर देखा।

"अरे वेवकूफ ! वन्दूक लिये विना ही जा रहे हो ?"

"वन्दूक में गोलियाँ तो हैं नहीं। फिर क्यों वोझा ढोऊँ ?"

अव वेवकूफ गोरा साहव हो गया।

"वेरी गुड ! यू आर ए क्लेवर मैन !"

यह सुनते ही कुंजप्पु ने सावधान मुद्रा में कप्तान को एक और सलामी दी।

"अच्छा, जाओ। तुम्हारा अभियान सफल हो !" साहव ने शुभकामनाएँ दीं।

श्मशान की तरह सुनसान रेगिस्तान में अकेला निहत्था कुंजप्पु आगे बढ़ रहा है। कहीं भी शोर-शराबा नहीं है। आसमान में टिमटिमाने वाले तारों की हल्की-सी रोशनी रेगिस्तान में फैली हुई है। कुंजप्पु एक नगमा गुनगुनाते हुए आगे वढ़ा।

"क्या मरुभूमि में उत्तर-दक्षिण की पहचान संभव है ? तू किधर चला था ?" आण्डि ने वात काटकर पूछा।

यह सुनकर कुंजप्पु मुस्कराया। उसने इस तरह सिर हिलाया कि आण्डि ने जो कहा वह सोलहों आने सच है। फिर वड़े गर्व के साथ उसने फरमाया : "रेगिस्तान में चलनेवाले सिपाही को अपनी जान के अलावा तीन चीज़ों को और साथ लेकर चलना पड़ता है। वंदूक, पानी की वोतल और कुतुवनुमा। इनमें वंदूक और पानी की वोतल कंजप्पु के हाथ में नहीं थी। लेकिन कुतुवनुमा उसकी जेव में

मौजूद था। वह तो अब भी उसकी जेब में है।"

कुंजप्पु ने जेब से एक चीज़ बाहर निकालकर सबको दिखायी : कुतुबनुमा !

आण्डि ने वह चीज़ पहले भी देखी थी। गपिया परंगोटन और हाथीपाँव वाले अय्यप्पन ने हाथ में लेकर उत्सुकतावश उसकी जाँच की। क्या ही अज़ीब चीज़ ! किसी भी दिशा में मुड़ने पर कुतुबनुमा की सुई उत्तर की ही दिशा में !

कुतुबनुमा मर्दों के हाथ से आखिर रसोई घर की औरतों के पास पहुँचा। (कुंजप्पु को कुतुबनुमा के प्रति इतनी ममता थी कि वह जब चुपचाप बैठता तो उसे जेब से निकाल कर हाथ में रख लेता और कई दिशाओं में घुमाकर उसकी सुई को चलते देखकर मजा लेता।)

कुंजप्पु ने दास्तान जारी रखी :

कुंजप्पु रेगिस्तान से सीधे उत्तर दिशा में दो-तीन मील चला होगा, कि दूर पर एक काला डेरा नजर आया। ध्यान से देखा : काली चट्टान तो नहीं है, दुश्मनों का घेरा होगा। कुंजप्पु ज़रा और आगे बढ़ा। सौ गज नज़दीक पहुँचा। हाँ, शत्रुओं का डेरा ही है।

कुंजप्पु रेत में औंधे लेटकर केंचुए की तरह रेंगता हुआ पड़ाव से पचास गज की दूरी पर पहुँच गया। वहाँ एक बड़ी चट्टान थी। उस चट्टान के पीछे छिपकर कुंजप्पु ने सामने के दृश्य का अच्छी तरह मुआइना किया।

पड़ाव में खामोशी थी। सिपाही अन्दर सो गये होंगे। पड़ाव के दरवाजे पर एक आदमी कंधे पर बंदूक रखे पहरा दे रहा था। उसके सिर पर एक तुर्की टोपी भी थी। तुर्की फौज का डेरा ! अभियान सफल हुआ।

लेकिन कुंजप्पु को लगा कि तुर्कियों को यों छोड़कर चले जाना उचित नहीं है। कुंजप्पु ने मन ही मन अपनी योजना बनायी : पहले इस सुअर पहरेदार को खत्म करना होगा। फिर···

कुंजप्पु ने झुककर मिट्टी में कुछ ढूँढ़ा। थोड़ी देर में आवश्यक चीज मिल गई। एक छोटा-सा शिलाखण्ड !

उस पत्थर का एक हिस्सा चाकू की धार की तरह नुकीला और तेज था।

कुंजप्पु ने चट्टान की ओट में छिपकर निशाना साधा। उस तुर्की सुअर की टोपी के नीचे कान और कन्धे के बीच, गर्दन के मर्मस्थान कर्णनाड़ी पर ही निशाना था।

"अरे सुअर की औलाद, ले तेरे लिए एक इनाम है।" दाँत पीसकर बड़बड़ाते कुंजप्पु ने "भुं···" की आवाज में वह पत्थर खींचकर मार दिया।

मार तो मर्म पर ही लगी। हल्का-सा चीत्कार भी नहीं निकला। तुर्की सुअर, उसकी बंदूक, भाला और टोपी सब नीचे गिर पड़े। कुंजप्पु बिजली की तरह उस पर झपटा। तुर्की की बंदूक से बॉनिट निकालकर उसने उसकी गरदन पर लगातार

तीन-चार दफा आघात किया। तुर्की सुअर दो-चार हिला-डुला, फिर खलास !

पहरेदार सुअर की मौत का निश्चय होने पर कुंजप्पु ने तुर्की की टोपी अपने सिर पर रखी और बंदूक लेकर पड़ाव के अन्दर घुस गया।

तुर्की की टोपी क्यों पहनी थी ?—कुंजप्पु ने इसकी व्याख्या की। तुर्की टोपी दिल्लगी के लिए नहीं पहनी थी बल्कि इसलिए कि उस समय कोई सिपाही जाग उठे तो उसको देखते ही यह न मालूम हो कि मैं उसका दुश्मन हूँ। वह यही समझ कर चैन से सो जाए कि पहरेदार सैनिक ही इधर आया है।

कुंजप्पु ने पड़ाव के भीतर घुसकर चारों तरफ आँखें घुमायीं। एक जलता फानूस तंबू के कोने में लटका हुआ है। तुर्की सैनिक गहरी नींद में मग्न हैं। कुछ तो खर्राटा भी ले रहे हैं। एक दूसरे कोने में बंदूकों, भालों और गोलियों के ढेर हैं।

ये सब सामान वहीं रहे। कुंजप्पु की आँखें तो कुछ और तलाश रही थीं, कुछ खाने को। इधर-उधर के सामानों की जाँच की। एक कोने में तांबे का एक बड़ा बर्तन दिखायी दिया—खजूर के पत्तों की चटाई से ढका हुआ। उसे खोलकर देखा। वाह क्या कहना !

कुंजप्पु ने जीभ को निकालकर ओठों को चाटकर दिखाया। भुने हुए मुर्गे ! उनके सुबह के नाश्ते का बन्दोबस्त था।

कुंजप्पु वहीं बैठ गया। दो मुर्गे फौरन खा गया। चमड़े की थैली से पानी भी पी लिया। अनजाने में ही डकार निकल गयी। हाय राम ! किस्मत ही समझो कि डकार सुनकर कोई जागा नहीं।

फिर उठकर सोचा। बन्दूकों की ज़रूरत नहीं है। बढ़िया जर्मन बंदूकें हैं। लेकिन अब गोलियों की ही ज़रूरत है। पिरोयी हुई गोलियों की माला गले में डाल ली। 'कारटिज मालाओं' के बोझ से गरदन झुक गयी। तांबे के बर्तन से भुने हुए दो मुर्गे लेकर उसने पतलून की जेब में डाल लिये।

फानूस के नीचे मिट्टी का तेलभरा हुआ टिन दिखा। अब कुछ कपड़े चाहिए। तुर्की झंडे एक तरफ पड़े दिखे। झंडों को मिट्टी के तेल में भिगोकर कमरे में डाल दिया। फानूस से एक तीली जलाकर बाहर निकला। फिर तंबू को आग लगाकर कुंजप्पु फौरन वहाँ से रफ़ु हो गया।

सौ गज की दूरी पर पहुँचने पर ज़रा मुड़कर देखा। आसमान में लाल-लाल लपटें उठ रही थीं। तुर्की पलटन के जल-भुनकर तबाह होने का दृश्य !

तंबू के भीतर तुर्की सुअरों के जल-भुनने के दृश्य की याद करके कुंजप्पु ठठ्ठा मारकर हँस पड़ा।

तभी बटलर के रसोईघर से एक दहाड़ सुनायी पड़ी। फिर दो-तीन चीत्कारें भी। हाथीपाँववाला अय्यप्पन, परंगोटन और अर्जीनवीस आण्डि रसोईघर की तरफ दौड़े—पीछे कुंजप्पु भी।

"कल्याणी को अपस्मार का दौरा पड़ा है।" हाथीपाँववाले अय्यप्पन ने चिल्लाकर कहा।

उन्होंने पलंग पर लेटे कोरन बटलर को जगाने की चेष्टा की। बटलर मरे हुए बैल की तरह लेटा है। कोई हरकत नहीं।

कल्याणी रसोईघर की जमीन पर चित्त पड़ी शोर मचा रही है।

हाथीपाँववाला अय्यप्पने तुरन्त ही वैद्य मण्णान शंकरन की तलाश में उसके घर की तरफ दौड़ गया।

## 8. अप्पाण्यं, घर का चबूतरा और औरतों का झगड़ा

अतिराणिप्पाटं के उत्तर की तरफ जानेवाली सड़क को 'नई' सड़क' कहते हैं। वह पश्चिम में समुद्रतट पर खत्म हो जाती है। अतिराणिप्पाटं की पश्चिम सीमा में एक नाला है। 'नई सड़क' जिस पुल के जरिये इस नाले को पार करती है, उस पुल का नाम है 'सैंतालिपुल'।

सैंतालिपुल से लेकर पश्चिम तट तक के इलाके में मुसलमानों का साम्राज्य है। ऊँची-ऊँची दीवारों से घिरी हुई गुप्त किलों की तरह दीखनेवाली पुरानी अट्टालिकाएँ, बाड़ों से घिरे हुए मध्यवित्त परिवारों के अहाते और झोंपड़े, ऊँची मस्जिदें, बड़े-बड़े तालाब, दुकानें, मछली बाज़ार—सब यहाँ मिले-जुले हैं। सहजन और कटहल के पेड़ अहातों को हरियाला बनाते हैं।

'चेंगरा' और 'पेलिक्करा' यहाँ की ज़्यादा आबाद और गंदी बस्तियाँ हैं।

अतिराणिप्पाटं और उसके पूरबी प्रान्तर में रहने वाले लोगों में अधिकांश हिन्दू हैं। उनका रोबदाब और प्रभाव सैंतालिपुल तक ही सीमित है। पुल के उस पार उनके लिए एक तरह से विदेश ही है।

लेकिन चेंगरा और पुलिक्करा की मुसलमान मसज़िदों के त्योहार और मनौतियाँ अतिराणिप्पाटं के लोगों को भी आकर्षित करते हैं। इन त्योहारों का उल्लास नई सड़क पर भी दिखाई देता है।

इस ढंग का एक त्योहार चेंगरा शेख मसजिद का 'अप्पाण्य' (चावल की रोटी की मनौती) है।

उस दिन जुलूस होते, मनौतियाँ होतीं, बाजे बजा-बजाकर जानेवालों की लम्बी कतारें होतीं।

अप्पाण्यं त्यौहार देखने के लिए श्रीधरन गोपाल भैया का हाथ पकड़कर शाम होते ही 'नयी सड़क' के नज़दीक आकार खड़ा हो जाना।

बड़े-बड़े जुलूसों में ललाटपट्ट से सजे हुए हाथी होते। तीखी रोशनी फेंकने वाले बड़े-बड़े गैस के हण्डे जुलूस के साथ-साथ कतार में आगे बढ़ते। समुद्र के किनारे

पर के लाइट-हाउस की आकृतिवाले इन बड़े-बड़े हण्डों को लोग सिर पर ढोते।

अरबी बाजे तुरही एवं ढोल की ध्वनियाँ आसपास के प्रदेशों में हर्ष और उत्साह भर देतीं। सफेद टोपियाँ, हरे रंग की पगड़ियाँ और जरीदार कमीज़ जुलूस के सौन्दर्य में चार-चाँद लगा देते।

आँखों को चुँधियाने वाले आलोक, शोर-शराबे और उमंग भरे वातावरण के बीच चावल की रोटियों से भरी और रंग-बिरंगे नये कपड़ों से ढकी टोकरियों को सिर पर ढोते हुए लोग आगे बढ़ते।

हाथी के ऊपर सज्जित शाही पंखों और लम्बे बाँसों के छोर पर मोरपंख के आकार में कटी हुई रंगपर्णियों के हिलने-डुलने का दृश्य श्रीधरन को सबसे सधिक रोमांचक लगता।

बीच-बीच में छोटे जुलूस भी होते जिनमें एक बाजेवाला होता, रोटियों की दो-तीन टोकरियाँ होतीं और चार-पाँच आदमी होते। अपनी कमी दूसरों से छिपाकर भागनेवालों की तरह वे बहुत जल्दी आगे बढ़ते जाते। ऐसे जुलूस को देखने पर श्रीधरन 'कूय-कूय' कहकर हल्ला मचाता। तब गोपालन भैया उसकी जंघा पर चिकोटी काट लेता।

रात को पिताजी श्रीधरन को उत्सव दिखाने के लिए ले जाते। कैसी भीड़ है! इतनी तादाद में लोग किधर से आये? पिताजी का हाथ कस कर पकड़कर वह दृश्यों को देखता हुआ भीड़ के बीच से शेख के मकबरे के सामने पहुँचता। तब कृष्णन मास्टर जेब से एक चवन्नी लेकर श्रीधरन के हाथ में थमाते हुए उसे 'मनौती की पेटी' में डालने को कहते। श्रीधरन गुपचुप पिता के चेहरे की तरफ दृष्टि डालकर धीमी आवाज़ में पूछता : "यह तो मसजिद है न? हमारा मन्दिर तो है नहीं!"

उस वक्त पिताजी श्रीधरन के चेहरे पर आँखे तरेरकर इस तरह देखते, मानो कह रहे हों कि जो मैं कहता हूँ वह कर। श्रीधरन पैसा तुरन्त उस पेटी में डाल देता। वहाँ से लौटते वक्त कृष्णन मास्टर श्रीधरन को उपदेश देते कि बेटे, यह तो एक सन्त की पुण्यभूमि है। सन्तों के लिए हिन्दू-मुसलमान का कोई भेद नहीं है। उसके लिए सभी इन्सान एक से हैं। सब लोगों को सन्तों का आदर करना चाहिए।

आसपास कई दुकाने हैं। शेख के मकबरे के नज़दीक ही नहीं, चेंगरा भर में सड़क के कोने-कोने में, पगडंडियों तक में कई दूकानें उठ खड़ी हुई हैं। एक तरफ मंच के झूले की आवाज़ और बच्चों का शोर-शराबा है तो दूसरी तरफ हाथी, और ऊँट के ताश खेलनेवालों की पुकार, जयकार, और हो-हल्ला हो रहा है। मनौती में आयी ढेर सारी रोटयाँ बेचने के लिए रखो गई हैं। कई किस्म और रंग की रोटियाँ। लगभग एक सौ किस्म की होंगी। पिताजी श्रीधरन को चार-पाँच किस्म की रोटियाँ खरीद तो देते, लेकिन वहाँ पर उनका स्वाद नहीं लेने देते।

पिताजी का यही आदेश है कि बाहर कुछ नहीं खाना चाहिए। घर में ले जाकर सबको अपना-अपना हिस्सा देने के बाद ही खाना चाहिए।

कई किस्म के पकवान ही नहीं, विविध प्रकार के खिलौने और ढेर सारी विचित्र वस्तुएँ भी बाजार में बेचने के लिए रखी गयी हैं। श्रीधरन एक दुकान के सामने खड़े होकर वहाँ लटके हुए पीकदान के आकारवाले एक बिगुल की तरफ इशारा करता। तब पिताजी उसे वह खरीद देते। पिताजी उसे समझाते कि उसका नाम है ब्युगिल। भीड़ में से एक नौजवान अभिवादन करते हुए कृष्णन मास्टर के नज़दीक आ जाता। वह कृष्णन मास्टर के पुराने शिष्यों में से कोई होता। "बेटा है न?" कहकर वह श्रीधरन का हाथ पकड़कर प्यार प्रकट करता। फिर वह निकट की एक दूकान से एक सेर हलुवा या कोई पकवान खरीदकर श्रीधरन के हाथों में थमा देता। श्रीधरन लेने में संकोच करता। (पिताजी का आदेश है कि कभी किसी से भी कुछ नहीं लेना चाहिए।) श्रीधरन ललचाई आँखों से सहमकर पिताजी के चेहरे की तरफ ताकता। कृष्णन मास्टर ज़रा हँस पड़ते। इस हँसी को 'स्वीकृति सूचक मौन' मानकर श्रीधरन दूसरी चीज़ों के साथ उसे भी पकड़ लेता। यों छाती पर—नाक के ठीक नीचे —ललचानेवाले पकवानों को दबाकर पकड़ते हुए तथा बिगुल बजा-बजाकर मुँह की लार का शमन करते हुए श्रीधरन पिताजी के आगे-आगे चलता हुआ घर वापस आता। उस समय वह नींद के मारे थोड़ा-थोड़ा ऊँघता भी।

कन्निप्परंपु की पश्चिमी सीमा में एक नाला है। नाले के उस पार एक पुराना अहाता है 'पश्चिमी खेत' नाम के उस छोटे-से अहाते के इर्द-गिर्द नाला बह रहा है।

'पश्चिमी खेत' की तरफ देखते समय एक गुफा और एक दाढ़ीवाला स्मृति में रेंगते हुए श्रीधरन के सामने आ जाते। बचपन की हलकी-सी याद मन में आज़ भी ताजा है। गुफा-जैसी एक फूस की छोटी-सी झोंपड़ी का दरवाजा और वहाँ बैठने वाला एक बूढ़ा। गौर वर्णवाला – गोरे साहबों की तरह- एक बूढ़ा। उस बूढ़े की सफेद दाढ़ी का स्मरण खौफ और आशंका पैदा करता है। लगता है कि निकट जाने पर वह पकड़कर निगल जाएगा। कभी-कभी उसके पास एक बुढ़िया भी होती। बूढ़े की दाढ़ी की तरह बुढ़िया के स्तन भी पेट तक लटके हुए होते। श्रीधरन ने एक बार देखा था कि बूढ़ा अपना सिर और दाढ़ी बुढ़िया की गोद में रखकर लेटा है और बुढ़िया उसकी दाढ़ी से जूं निकालकर मार रही है। उस दृश्य की याद आज भी ताजा है।

वह बुड्ढा और बुढ़िया कहीं गुम हो गये। वह झोंपड़ी भी नष्ट हो गयी। किशोरावस्था में खड़े श्रीधरन को इस बीच घटनाओं के बारे में कोई ज्ञान जानकारी नहीं है। उस झोंपड़ी की जगह पर नया मकान बनाने के लिए उस

अहाते के नये मालिक कुट्टाप्पु ने एक चबूतरा बनाया था। सालों से वह चबूतरा ज्यों का त्यों पड़ा है—उन बूढ़े दंपतियों के मकबरे की तरह।

अतिराणिप्पाटं से तीन-चार मील दूर पर ही कुट्टाप्पु रहता है। कभी-कभी वह अपना चबूतरा देखने चला आता। काला-कलूटा और दुबला पतला जिंदा लाश-सा कुट्टाप्पु गले में अँगोछा लपेटकर खंखारते हुए वहाँ खड़ा हो जाता। फिर वह चबूतरे पर बैठकर घासफूस उखाड़कर फेंकते हुए रेंगने लगता। चबूतरा और आसपास की जगह साफ करने के बाद अपने नये भवन का ख्वाब देखते हुए कुट्टाप्पु वहाँ घण्टों टकटकी लगाये खड़ा रहता।

अधूरे कार्यों को सूचित करने के लिए 'कुट्टाप्पु के घर के चबूतरे की तरह'—यह एक नयी उक्ति अतिराणिप्पाटं में प्रचारित हो गयी थी।

श्रीधरन को 'पश्चिमी क्षेत्र' में अकेले जाने में डर लगता। सफेद दाढ़ीवाले बूढ़े की याद से उसको तकलीफ होती। अगर साथ कोई मित्र होते तो वह वहाँ जरूर पहुँच जाता। कुट्टाप्पु महाशय का चबूतरा लड़कों के लिए क्रीड़ास्थल है।

हाथीपाँववाले अय्यप्पन का पुत्र चात्तुण्णि श्रीधरन का प्रधान साथी था। वह हृष्ट-पुष्ट और काले रंग का था।

कुट्टाप्पु लोगों से मेल-जोल न रखनेवाला रूखा आदमी था। लड़कों के प्रति उसको रत्तीभर हमदर्दी नहीं थी। चात्तुण्णि उसको 'शैतान' के नाम से पुकारता था। उस अहाते में उस एक चबूतरे और घास-फूस के अलावा और कुछ नहीं था। न तो वहाँ कोई बाड़ थी, न कोई आड़। उजाड़ होने पर भी अगर कोई उस अहाते में घुसता तो कुट्टाप्पु आग-बबूला हो जाता। लड़कों को अहाते में देखने पर वह पत्थर मार कर भगा देता। इसलिए 'शैतान' के आगमन की आशंका से आतंकित होकर ही श्रीधरन और चात्तुण्णि और कभी-कभी कुछ दूसरे लड़के भी वहाँ खेलते।

उस चबूतरे पर कुट्टाप्पु ने जिस ढंग के भवन निर्माण की कल्पना की थी, उससे कहीं बेहतर एक-सौ-एक मंजिल के भव्य प्रासाद का निर्माण श्रीधरन और चात्तुण्णि ने वहाँ कर डाला—कल्पना में ही। यह वही प्रासाद है, जहाँ राक्षस ने राजकुमारी को चुरा कर रख दिया है। राजकुमारी से प्रेम करनेवाला मंत्रीकुमार राजकुमारी को बचाने के लिए वहाँ आ पहुँचता है। मंत्रीकुमार उस एक-सौ-एक मंजिलवाले मकान की तरफ पतंग उड़ाता है। राजकुमारी दरवाजे से बाहर आकर पतंग को पकड़ती है और उस पर चिपककर लेट जाती। मंत्रीकुमार पतंग की रस्सी हौले-हौले नीचे की तरफ खींचने लगता है। पतंग और राजकुमारी नीचे आने लगते हैं। अचानक राक्षस मंत्रीकुमार पर झपटकर धावा बोल देता है। फिर राक्षस और मंत्रीकुमार के बीच लड़ाई शुरू होती है। इस द्वन्द्व युद्ध में मंत्रीकुमार राक्षस की हत्या कर देता है। भयंकर अट्टहास के साथ राक्षस ज़मीन पर औंधे

मुँह गिर पड़ता है। (एक दफा ओठों पर सफेद दागवाले चेक्कु ने श्रीधरन को यह कहानी सुनायी थी।) इस कहानी का अभिनय श्रीधरन और चात्तुण्णि, कुट्टाप्पु के चबूतरे पर कर रहे हैं। एक-सौ-एक मंजिलवाला मकान और राजकुमारी ही स्मृति-पटल पर छाये हुए हैं। चात्तुण्णि ने एक अच्छी पतंग बनायी है। श्रीधरन ही मंत्रीकुमार है और चात्तुण्णि राक्षस। आँखें तरेरकर दाँत निपोरते हुए जीभ लटकानेवाला एक भीषण मुखौटा चात्तुण्णि कहीं से ले आया है। हरे पत्तों की डालियों को कमर में बाँधकर और वह मुखौटा पहनकर झुरमुटों में लुक-छिपकर बैठनेवाला राक्षस चात्तुण्णि मंत्रीकुमार श्रीधरन पर अचानक आ झपटता है। खींचातानी में अपने को इच्छानुसार मारने-पीटने की पूरी छूट चात्तुण्णि ने श्रीधरन को दी है। श्रीधरन को मारने-पीटने और ठोकर मारने का वह दिखावा मात्र ही करता, श्रीधरन के शरीर को हर्गिज पीड़ा नहीं पहुँचाता। श्रीधरन की लात-मार सहते वक्त चात्तुण्णि को विशेष खुशी महसूस होती। श्रीधरन दुबला-पतला और कमजोर होने पर भी अपनी पूरी ताकत लगाकर साथी के पेट, पीठ और छाती पर मुक्का मारता।

महल की ऊपरी मंजिल से राजकुमारी ने मंत्रीकुमार की पतंग के सहारे अपनी जान बचा ली है। मंत्रीकुमार आहिस्ते-आहिस्ते पतंग को नीचे खींच रहा है। पतंग ज़मीन को छूने ही वाली है। अभी राक्षस मंत्रीकुमार पर झपटेगा कि अचानक खाँसी की आवाज़ सुनकर श्रीधरन ने मुड़कर देखा : पीछे खड़ा था शैतान कुट्टाप्पु !

पतंग और राजकुमारी को वहीं छोड़कर श्रीधरन जान लेकर भाग गया। तभी भयंकर शोर-शराबे के साथ राक्षस चात्तुण्णि निर्धारित स्थान में – शैतान के सामने झपटा।

कन्निप्परंपु के कोने के झुरमुटों में छिपकर पश्चिमी क्षेत्र में निगाह डालने पर श्रीधरन ने चबूतरे के ऊपर शैतान और राक्षस के बीच होने वाली घमासान लड़ाई देखी। शैतान को जमीन पर पटककर राक्षस फरार हो गया। (मुखौटा तो गिर गया। लेकिन कमर में बँधी हरी पत्तियों की डालियाँ वहीं बंधी रह गयी।) शैतान ने झट उठकर एक पत्थर के टुकड़े को राक्षस के पैरों का निशाना बनाया। एक ही मार -- पत्थर चात्तुण्णि के दाहिने पैर की हड्डी पर लगा। चात्तुण्णि गिर पड़ा। फिर फौरन उठकर लंगड़ाते हुए ही दक्षिण दिशा की तरफ दौड़ चला और शैतान की आँखों से ओझल हो गया।

शैतान ने राक्षस का मुखौटा उठाकर रौंद डाला और टुकड़े-टुकड़े करने के बाद नाले में फेंक दिया।

शैतान की मार से पैर में चोट लगी थी, उसमें पैर में सूजन आने के कारण चात्तुण्णि कई दिनों तक बाहर नहीं निकल सका। लेकिन दो महीने के बाद उसने

शैतान से इसका बदला लिया।

जिस दिन शैतान अपने चबूतरे का निरीक्षण करने आनेवाला था, उस दिन चात्तुण्णि ने उस चबूतरे पर एक गड्ढा खोदा। उसमें नुकीले पत्थर और काँटे बिछाये, फिर उसमें मल त्याग किया। गड्ढे के ऊपर हलकी डालियाँ रखकर उनके ऊपर पत्ते बिछाये, ऊपर से मिट्टी डाली और कई तरह की घास-फूस मिट्टी के ऊपर रोपकर चात्तुण्णि इन्तजार करने लगा।

चबूतरे के निरीक्षण के लिए हमेशा की तरह कुट्टाप्पु आ पहुँचा। वह जमीन पर उकड़ूं हुआ घास उखाड़कर फेंकने लगा। कुछ ही दूर चला था कि एकाएक गड्ढे में गिर पड़ा।

"शैतान गड्ढे में गिर पड़ा—हाय ! हाय ! हाय !" पास के अहाते के केलों के बीच में छिपा हुआ चात्तुण्णि हो-हल्ला मचाते हुए दौड़ गया। कन्निप्परंपु के कोने के अमरूद की डालियों में छिपकर श्रीधरन उस दिन बड़ी देर तक ठहाका मारकर हँसता रहा।

कन्निप्परंपु के दक्षिण-पश्चिम कोने में कुछ दूर पर एक छोटा-सा नाला है। उसके किनारे पर कई तरह के हरे पौधे बढ़ आये हैं। नाले के पानी में मछलियाँ भी आकर अड्डा जमाती हैं। दोपहर की धूप में उन छोटी मछलियों को देखने पर लगेगा कि नाले के पानी में किसी ने ताँबे की छोटी कीलें बिछा दी हों। पंख पसारकर एक विशेष ताल में नृत्य करती हुई मछली माँ उनके नजदीक ही पहरा देती होगी।

इस नाले के दोनों तरफ लगभग आमने-सामने एक-एक छप्परवाली झोंपड़ी हैं। उत्तर दिशा के कुछ बड़े घर में आराकश वेलु और वेलु की पत्नी उण्णूलि रहते हैं। (उनके दो बच्चे हैं : बालन और दामोदरन।) दक्षिण दिशा के घर में कलाल माक्कोता और पत्नी अम्मिणि बसते हैं। (उनके कोई सन्तान नहीं है।) माक्कोता का छोटा भाई मानुक्कुट्टन भी उनके साथ ही रहता है।

कभी-कभी शाम को नाले के किनारे से ऊँची आवाज में गालियाँ और चिल्लाहटें सुनाई देतीं। औरतों के दंगे-फसाद की शुरूआत।

कन्निप्परंपु के कोने के अमरूद की डाल पर बैठकर श्रीधरन पौधों की ओट से इन झगड़ों का मजा लेता। उत्तर के घर की उण्णूलिअम्मा और दक्षिण के घर की अम्मिणि-अम्मा के बीच ही जली-कटी बातें हो रही हैं। दोनों औरतें अपने अपने घर के आँगन में नाले के सामने खड़ी होकर एक-दूसरे को गाली-गुफ्तार करती।

उनके दंगे-फसाद का कारण श्रीधरन को मालूम नहीं है। इन औरतों के मुँह से निकलनेवाली फटकारों और गालियों के शब्द और शैली और उनके हाथ की मुद्राओं का मतलब उन दिनों श्रीधरन बिलकुल नहीं समझता था। फिर भी, उसको

नफरत और नारज़गी जाहिर की।

(चार-पाँच साल पहले नारियल की चोरी के मुकदमे में, सन्देह के तौर पर उण्णूलिअम्मा के पति को पुलिस पकड़ ले गयी थी। उस पुरानी बात को ही अम्मिणिअम्मा ने कुरेदकर अब उण्णूलिअम्मा के मुँह पर उछाला था।)

उण्णूलिअम्मा दबने को तैयार न थी। वह नाले के किनारे की तरफ ज़रा हटकर दहाड़ी, "अरी, जेल जाना तो मर्दों के लिए शान की बात है। घर की औरतों की बात बता ! चाचा को अपनी चटाई पर लिटाकर साथ सोनेवाली औरत तो इधर नहीं है।" (ङ् हू ङ् की एक गुर्राहट)

(अम्मिणिअम्मा और माक्कोतो के छोटे भाई मानकुट्टन के बीच के अवैध संबंध की अफवाह अनिराणिप्पाट में फैली हुई थी। उण्णूलिअम्मा ने इसे ही अम्मिणिअम्मा के मुँह पर मारा था।)

अम्मिणिअम्मा अपस्मार रोगी की तरह कांप उठी। वह एकाएक समझ नहीं सकी कि क्या जवाब दे। बस दाँत पीसते हुए खड़ी रही।

तमाम कूड़ा-करकट और रोग के पर्यायवाची अभद्र शब्द अम्मिणिअम्मा के मुँह से निकले। उनसे ज़्यादा नमक-मिर्च लगे शब्दों का प्रयोग कर उण्णूलिअम्मा ने अपने को बेहतर साबित किया।

"रंडी कहीं की—थू···!" उण्णूलिअम्मा ने खंखारते हुए थूक दिया।

अम्मिणिअम्मा आग-बबूला होकर बकने लगी—"अरी, रंडी तो तू ही है। रंडी ··रंडी रंडी हरामजादी ··"

अम्मिणिअम्मा के रंडीमंत्र के अन्त की प्रतीक्षा कर ज़रा सिर झुका कर मुँह को वक्र करके तैयार खड़ी उण्णूलिअम्मा ने अम्मिणिअम्मा का अन्तिम शब्द सुनते ही फटकारा : "फू···!"

फटकारने की तीव्र आवाज़ और हरकतों के फलस्वरूप उण्णूलिअम्मा की गुँथी हुई चोटी के बाल (उसके सिर पर घने बाल हैं) ढीले होकर चारों तरफ फैल गये।

लगा कि अम्मिणिअम्मा के तरकश के सारे तीर खाली हो गये हैं। फिर अनेक प्रकार की हरकतें और कसरतें ही दिखायी पड़ीं। एक औरत अपनी कमर को चक्की की तरह चलाकर दिखाने लगी तो दूसरी अपनी कलाई ऊपर उठाकर फिर नीचे की तरफ मालिश करने की मुद्रा प्रकट करने लगी। बीच-बीच में बकरियों के मिनमिनाने और घोड़ों के हिनहिनाने की-सी विकृत आवाज़ें भी सुनाई दे रही थी।

उण्णूलिअम्मा के स्तनों ने भी ललकार में भाग लिया। थोड़ी देर के बाद दोनों थक गयीं। फिर भी अम्मिणिअम्मा दबने को तैयार न हुई।

एक मिनट के विश्राम के बाद अम्मिणिअम्मा ने नाई से संबंधित एक शब्द का

उच्चारण कर अपनी धोती ज़रा ऊपर उठाकर दिखा दी।

यह देखकर उण्णुलिअम्मा भी खामोश रहनेवाली नहीं थी। उसने घने खुले हुए केशभार को सिर पर बाँधा और फिर दोनों हाथों से धोती उतार कर नंगे शरीर का प्रदर्शन करते हुए तनकर खड़ी रही……।

## 9. फिर इलंजिपोयिल में

श्रीधरन का विद्यारम्भ स्कूल में नहीं हुआ था। दशमी के शुभदिन उस इलाके के प्रसिद्ध पण्डित और ज्योतिषी कुंजन पाणिक्कर को कन्निप्परंपु में बुलाकर श्रीधरन को चावल से लिखवाने के बाद विद्यारम्भ का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। उसके बाद कृष्णन मास्टर ने अपने बेटे को घर में ही पढ़ाया था। हर दिन पाठ पढ़ने के बाद मर्जी के मुताबिक खेलने की अनुमति मिलने के कारण श्रीधरन बड़े उत्साह से अपना सबक याद करता था। इस तरह स्कूल से चार सालों में मिलने-वाली शिक्षा श्रीधरन को सिर्फ दो सालों में घर पर बैठे-बैठे ही प्राप्त हो गयी। फिर, जून महीने में अतिराणिप्पाटं से पौन मील दूर एक हिन्दू स्कूल में वह चौथी कक्षा में भर्ती हो गया।

पहली बार क्लास में जाकर बैठने पर श्रीधरन को बड़ी घबराहट महसूस हुई थी। नया वातावरण। नये चेहरे। लेकिन, वेश-भूषा और शक्ल-सूरत में अपने पिताजी-जैसे लगनेवाले शान्त प्रकृति केहेडमास्टर कृष्णन नायर साहब के वात्सल्य पूर्ण बर्ताव से श्रीधरन ने सुरक्षा अनुभव की।

एक पुराने देहाती विद्यालय के धर्मार्थ स्कूल के रूप में बदल जाने कारण ही यह स्कूल बना था। सिर पर चोटी, बड़ी तोंद और नाक पर रस्सी में बँधा हुआ चश्मा। ऐसा एक बुज़ुर्ग अधपढ़ा देहाती अध्यापक और ताड़ के पत्तों में देखते हुए 'किया — किया — केरा — केरा' का उच्चारण करते हुए एक साथ चिल्लानेवाले छोटे-छोटे बच्चे स्कूल के अहाते के एक कोने के छप्पर में आज भी थे।

चौथी कक्षा में केवल चार ही छात्र थे। पुलिसवाले का बेटा केलुक्कुट्टि, मन्दिर के पुजारी का लड़का अय्यप्पन, रजिस्ट्रार की बेटी कात्यायनी—ये ही श्रीधरन के सहपाठी थे। इनमें केलुक्कुट्टि उम्र, कद और बर्ताव की दृष्टि से चौथी कक्षा के लिए बहुत बड़ा लगता था। नटखट और आलसी केलुक्कुट्टि को इस बात का घमण्ड था कि वह पुलिसवाले का बेटा है। अय्यप्पन पित्त रोग का शिकार था। वह कक्षा में हमेशा ऊँघता रहता। कात्यायनी हँसी-ठिठोली करती रहती। सहपाठियों में उसको श्रीधरन से अधिक लगाव था। कात्यायनी ने मेल-जोल बढ़ाने में श्रीधरन को पहले-पहल शरम आती थी। अपनी उम्र की एक लड़की से मेल-जोल बढ़ाने का यह पहला मौका था। धीरे-धीरे उसका संकोच जाता रहा। स्कूल

के अहाते के आम्र वृक्ष की छाया में बैठकर कात्यायनी और श्रीधरन गुट्टियों से खेलते। दोनों कहानी किस्सा कहकर आनन्द मग्न हो जाते। ओठों पर सफेद रोग-वाले चेक्कु से सुनी हुई सारी कहानियाँ श्रीधरन को याद थीं। कात्यायनी आँखें फाड़कर गुमसुम हो उससे कहानियाँ सुनती रहती।

सालाना इम्तहान के बाद स्कूल बन्द होने पर श्रीधरन ने छुट्टियों को इलंजि-पोयिल में बिताने की इच्छा की। कृष्णन मास्टर ने उसे नहीं रोका। इस तरह खुशी के ख्वाब देखता वह इलंजिपोयिल आ पहुँचा।

वहाँ अप्पु ने बड़े प्रसन्न होकर श्रीधरन का स्वागत किया।

"चलो जंगल में चलें" दोपहर के बाद पहले दिन ही अप्पु ने श्रीधरन को भ्रमण का निमन्त्रण दिया।

"तैयार !" श्रीधरन ने खाकी कोट उतार दिया। फिर जांघिया पहनकर और तौलिया सिर पर बाँधकर अप्पु के साथ जंगल की तरफ रवाना हुआ।

फल, फूल और कोंपलों से हरे भरे जंगल। झाड़ी में लाल बड़े बिन्दुओं की तरह पके हुए जाती के फल लटक रहे हैं। नीले रंग के काँच की गोली-जैसे पके जामुन के फल भी। तोड़-तोड़कर हाथ और खा-खाकर जीभ दुखने लगी। तभी अप्पु ने तुरई का फल दिखा दिया, वह पकने पर भी हरा रहता है। उसे मुँह में डालकर चबाने पर मीठापन नहीं, नशीले खट्टे रस का स्वाद आता है। श्रीधरन को वह फल बेहद पसन्द आया।

"जाती के आठ फल खाने पर फिर एक तुरई का फल।" अप्पु ने एक उक्ति का स्मरण किया।

कच्ची तुरई का छिलका ललाट पर मारकर अप्पु ने 'ठप' की आवाज़ पैदा की। श्रीधरन ने भी उसका अनुकरण किया।

अप्पु ने तुरई फल तोड़कर सारे के सारे एक पत्ते के दोनों में रख लिये थे।

"तू तुरई क्यों नहीं खाता ?" श्रीधरन ने पूछा।

अप्पु ने चुप्पी साध ली।

दोनों जंगल के एक और कोने में गये। वहाँ की चट्टान पर बैठकर पेड़ों के ऊपर सरसरी निगाह डालते हुए अप्पु ने कहा, "एक दिन वह जरूर मेरे हाथ में आएगा"

"कौन ?"

"चकोर का बच्चा।" अप्पु पेड़ों के ऊपर ही ताकता रहा। चकोर के बच्चे को लोहे की जंजीर में बाँधकर चित्रक जड़ी-बूटी को हासिल करने की कोशिश अप्पु ने तभी से शुरू की थी। उसने सभी जंगलों को छान मारा। ऊँचे पेड़ों पर चढ़कर ढूंढ़ लिया लेकिन कहीं चकोर का घोंसला दिखायी न दिया। एक बार एक पेड़ पर चढ़कर एक खोखल में हाथ डालने पर ततैयों ने एक साथ उड़कर अचानक उस पर आक्रमण किया था। फुर्ती से आँखे मूंदकर पेड़ से उतरकर वह

भागा था और सीधे नदी में कूदकर डुबकी लगाते हुए उसने अपने प्राण बचाये थे। यह घटना सुनाने के बाद श्रीधरन को यह उपदेश भी दिया कि ततैयों का आक्रमण होने पर तुरन्त पानी में कूदकर डुबकी मारनी चाहिए।

सुन्दर और सफेद रोमवाले एक फल को लता में लटकते देखकर श्रीधरन ने उसे तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया।

"अरे ! उसे मत छुओ !" अप्पु ने चट्टान पर से गला फाड़कर चिल्लाते हुए कहा, "वह केवाँच है — केवाँच। खुजलाते-खुजलाते तू मर जायेगा।" श्रीधरन ने डर के मारे अपना हाथ खींच लिया। फिर धीरे-धीरे अप्पु के पास चट्टान पर जाकर बैठ गया। जाती, जामु और तुरई के बढ़िया फल खाने को मिले। उसके बाद केवाँच से खुजलाते-खुजलाते मार डालनेवाले ईश्वर को मुँह चिढ़ाने की इच्छा हुई।

"सुन, चित्रक मिलने पर आधा मैं तुझे दूँगा।" अप्पु श्रीधरन के कान में फुस-फुसाया। सुनते ही श्रीधरन अपनी खुशी और कृतज्ञता प्रकट करने के लिए अप्पु के हाथों को सहलाने लगा।

अप्पु चित्रक की महत्ता का बखान करने लगा : "हम मन में चाहे जैसी इच्छा करें, झट वह पूरी हो जाएगी। राजा बनने की बात सोचें तो फौरन राजा बन जायेंगे संपत्ति की तमन्ना है तो संपत्ति मिलेगी। लेकिन एक मुश्किल तो है ही। सिर्फ़ एक ही बार एक ही वर मिलेगा। दूसरी इच्छा बताते ही पहली वस्तु भी हाथ से निकल जाएगी। फिर निराशा ही हाथ लगेगी।"

"नहीं, मैं तो बस एक ही वर माँगूंगा।" कहते हुए श्रीधरन ने इस तरह मुट्ठी बाँध ली मानो चित्रक बूटी उसके हाथ में आ गयी हो।

"तू कौन-सा वर माँगेगा ? कैसा आदमी बनने की तेरी इच्छा है ?" अचानक अप्पु का सवाल सुनकर श्रीधरन निरुत्तर हो गया। उसने इस बात पर अब तक विचार हो नहीं किया था। कौन-सा कैसा आदमी बनना है ? अब इस बात की याद आयी। अप्पु के और निकट बैठकर श्रीधरन उसके कान में यह रहस्य बुद-बुदाया, "मुझे समुद्री-तट के 'लाइट हाउस का साहब' बनना चाहिए।"

उसकी बात अप्पु की समझ में न आयी। समुद्र-तट के 'लाइट हाउस' (दीप-स्तंभ) के बारे में श्रीधरन ने अपने मित्र से बखान किया। समुद्र तट की एक बड़ी मीनार के ऊपर एक अद्भुत दीपक है। उसमें दस हज़ार चुम्बकीय दीपकों की चमक है। वह हमेशा घूमता रहता है। एक बार पिताजी ने श्रीधरन को ले जाकर दिखाया था। उस मीनार के संकरे बरामदे से देखने पर कितना सुहावना दृश्य दिखाई दिया था। आसमान के उस पार—सातवें सागर के उस पार—सूर्य भगवान को डुबकी लगाने के लिए रत्न के पत्थरों से बना एक तालाब दिखाई देता है।

अप्पु सुनकर अचंभे में आ गया।

"उस लाइटहाउस में एक काला साहब है। उसे और कोई धंधा नहीं। वह हमेशा कहानी की किताब पढ़ता हुआ कुर्सी पर बैठा रहता है। तुझे मालूम है, उसकी तनख्वाह कितनी है?—एक सौ रुपये!"

"श्रीधरन, झूठ मत बोल।" अप्पु ने अपना अविश्वास प्रकट करते हुए कहा।

"आँखों की कसम—पिताजी ने कहा था।" श्रीधरन ने शपथ ली।

अप्पु विचारों में डूबने लगा।

अप्पु ने एक दफा समुद्र देखा था। एक साल वह कार्तिक महीने की अमावस्या के दिन नहाने के लिए पिताजी के साथ गया था। रात को ही वे समुद्र के किनारे पहुँचे थे। उस समय समुद्र-तट पर एक बड़े खंभे के ऊपर बार-बार आँखें मूंदता खोलता – यह खेल करने वाला एक अजीब दीपक उसने देखा था। लेकिन यह नहीं समझा था कि उसके अन्दर हमेशा कहानी की किताब पढ़ने वाला एक आदमी बैठा रहता है, जिसे एक-सौ रुपये माहवार तनख्वाह मिलती है।

"चकोर की जड़ी बूटी मिलने दो। तब प्रार्थना करने पर तुम्हें वह नौकरी मिलेगी।" अप्पु ने श्रीधरन को आशीर्वाद दिया।

अब श्रीधरन ने अप्पु से पूछा :

"चकोर की औषधि मिलने पर तू क्या प्रार्थना करेगा?"

अप्पु का चेहरा दुःख से पीला हो गया। उसने श्रीधरन के चेहरे की तरफ बड़े दुख से देखकर कहा : "शीदरन, क्या तुम्हें सचमुच नहीं मालूम कि मैं मात्र एक कार्य की सिद्धि के लिए चकोर की औषधि की खोज में मारा-मारा फिरता हूँ?"

"कौन सा कार्य?" श्रीधरन ने उत्कण्ठा से पूछा।

"अपनी नारायणी की रोग-मुक्ति के लिए।" अप्पु ने ओंठ काटते हुए दूर ताककर लम्बी साँस खीची।

"कौन है नारायणी?" श्रीधरन ने उत्सुकता से सवाल किया।

दूर ताकते हुए अप्पु ने जवाब दिया : नारायणी मेरी बहन है।

उसे क्या बीमारी है?"

"कमर के नीचे जान नहीं— छह साल से उसके दोनों पैर बेजान पड़े हैं। मेरी नारायणी यों ही पड़ी हुई है···।"

बेचारी नारायणी! श्रीधरन को रुलाई आ गयी। वह जंगल में जाकर जाती का फल तोड़कर नहीं खा सकती। न वह चिड़ियों के गाने का मजा ले सकती है। ईश्वर ने क्यों उसकी दुर्दशा की?

श्रीधरन को पता लग गया कि अप्पु के हाथ के तुरई के फल नारायणी के लिए हैं। शाम के धुंधलके से पहले ही वे जंगल से लौट पड़े।

श्रीधरन तब भी अप्पु की बहन के बारे में दयार्द्र होकर सोच रहा था। बेचारी लड़की···वह जंगल में जाकर न तो जातीफल तोड़ सकती है और न चिड़ियों का गाना सुन सकती है···

"देखो, उस पेड़ के नीचे की तराई में ही मेरा घर है।" अप्पु ने चट्टान के एक कोने से इशारा किया।

"तुझे अपने घर नहीं जाना क्या?" श्रीधरन ने पूछा।

"तुझे घर पहुँचाने के बाद मैं लौट जाऊँगा।"

"नहीं, हम अभी चलें। तेरा घर देखने की मेरी बड़ी इच्छा है।" अप्पु की बीमार बहिन को एक दफा देखने की इच्छा से ही श्रीधरन ने ऐसा कहा था।

अप्पु ने विरोध नहीं किया।

दोनों पेड़ की तरफ बढ़ चले।

"तेरे घर में कौन-कौन हैं?" श्रीधरन ने पूछा।

"माँ और नारायणी ही हैं।"

"तेरे पिताजी कहाँ हैं?"

"पिताजी कभी-कभी ही घर आते हैं—चार-पाँच दिन में एक बार।"

"ऐसा क्यों? पिताजी कहाँ जाते हैं?"

"बैलगाड़ी लेकर पूरब दिशा में जाते हैं।"

थोड़ी देर की खामोशी के बाद अप्पु ने श्रीधरन को एक रहस्य और बताया—"पिताजी की एक और औरत है। उसके साथ रहते हैं।"

"वे कुछ पैसे-वैसे नहीं देते?"

"उस बदतमीज औरत को देने के बाद खूब ताड़ी पीने में पैसा खर्च करते हैं। घर आने पर अगर माँ पिताजी से पैसा माँगती है तो माँ को मार खानी पड़ती है।"

"बदमाश!" श्रीधरन ने अपने मन में गाड़ीवान तैयन को कोसा।

"फिर तुम लोगों को खाने को कहाँ से मिलता है?" श्रीधरन ने हमदर्दी के साथ पूछा।

"माँ रेशों की पतली रस्सी बनाकर बेचती है। फिर, हमारे घर में एक बकरी भी है। माँ उसका दूध चाय की दूकान में बेच आती है।···"

वे चट्टान के उस पार की तराई में उतरने लगे। चट्टान और काँटेदार पौधों से भरी खुरदरी जगह पार कर एक अगम वनी पगडण्डी में पहुँचे। बरसात के दिनों में पानी के तेज प्रवाह के कारण कहीं-कहीं उसमें कुछ गड्डे बन गये थे। नुकीले पत्थर, काँटे, पौधों की जड़ें श्रीधरन के पैरों को पीड़ा पहुँचा रही थीं। उसको लगा कि इधर न आना ही बेहतर था।

कुछ दूर चलने पर एक अहाते के कोने में पहुँचे। वहाँ काँटेदार टट्टी की

बाड़ दिखायी दी। "कूदकर हम बाड़ के उस पार चलें—यही हमारा अहाता है।" अप्पु ने काजू के पेड़ के पास खड़े होकर इशारा किया। एक बड़े वृक्ष के नजदीक से श्रीधरन ने अहाते में घुसने की कोशिश की तो अप्पू ने घबराकर उसे रोक दिया, "शोदरन उस पेड़ को मत छुओ।"

"छू लेने पर क्या होगा?" श्रीधरन ने जानना चाहा।

"वह भिलवाँ वृक्ष है, छू लेने से शरीर में सूजन आ जाएगी।"

श्रीधरन ने उस पेड़ को क्रोध भरी दृष्टि से देखा।

"पर उसके लिए एक उपाय है। बहेड़ा वृक्ष। भिलवाँ को छू लेने से सूजन होने पर बहेड़ा छूना काफी है।" अप्पु ने बड़े गर्व के साथ बताया।

इस अप्पु को क्या-क्या बातें मालूम हैं! श्रीधरन को बड़ा ताज्जुब हुआ। भिलवाँ वृक्ष के बीज जमीन पर पड़े थे। अप्पु बीज चुनकर खेलने लगा।

"भिलवाँ के बीज को छूने पर क्या जहर नहीं लगेगा?" श्रीधरन ने पूछा।

अप्पु ने 'नहीं' के अर्थ में सिर हिलाया।

"भिलवाँ के बीज धोबिनें ले जाएँगी। तुम्हें पता है, वे इन्हें क्यों ले जाती हैं?"

श्रीधरन को क्या मालूम!

"भिलवाँ के बीज का रस लेकर कपड़ों पर निशान लगाने के लिए।"

श्रीधरन समझ गया धोबियों का 'मार्किंग इंक'।

बाड़ के नजदीक के एक काजू के पेड़ की डाल पर चढ़कर अप्पु ने श्रीधरन का हाथ पकड़ा और कूदकर बाड़ के उस पार अहाते में उसे भी हाथ देकर उतार लिया। ताड़ और काजू के पेड़ों से भरे अहाते को पार कर वे एक झोंपड़ी में पहुँचे। आँगन में एक जपा वृक्ष था, जिसमें ढेर सारे फूल खिले थे। अत्यन्त ही मनोहर दृश्य। सेमल के फूल आँगन में बिखरे पड़े थे।

झोंपड़ी के बरामदे में बैठकर अप्पु की माँ पाँव-फैलाकर रेशों से पतली रस्सी बना रही थी। उसने एक चीथड़ा ही पहना हुआ था। छाती पर कोई वस्त्र नहीं था।

बेटे के साथ आये हुए लड़के को उस औरत ने घूरकर देखा।

"अरे अप्पु, यह छोकरा कौन है?" उसने जोर से पूछा। अपने बारे में छोकरा संबोधन श्रीधरन को अच्छा नहीं लगा। (हाँ, बैलगाड़ीवान तैयन की मार इसे इसी वजह से मिलती है।)

अप्पु बरामदे में दौड़ा हुआ गया और माँ के कानों में कुछ फुसफुसाया।

"उसको तू साथ क्यों ले आया? उसको देने के लिए इस झोंपड़ी में क्या रखा है?"

उस स्त्री को इस तरह दुख प्रकट करते देखकर श्रीधरन को उसके प्रति अपनी पहली राय में जरा हेर-फेर करना पड़ा।

अप्पू ने वरामदे से श्रीधरन को इशारे से बुलाया। श्रीधरन को हल्की-सी घुटन महसूस हुई। नारायणी को दिखाने के लिए बुला रहा है। उसको देखने की इच्छा थी।

श्रीधरन धीरे-धीरे वरामदे में चढ़ गया। अप्पु उसका हाथ पकड़कर दक्षिण दिशा के कमरे में ले गया।

वहाँ जमीन में एक पुरानी चटाई पर एक लड़की चित्त लेटी थी। सोने का-सा रंग। छाती पर कपड़ा-लत्ता कुछ नहीं है। घुटने के नीचे तक की एक धोती ही पहन रखी है।

तो यही है नारायणी। कमर के नीचे वेजान होकर लेटी हुई नारायणी—श्रीधरन ने बड़ी सहानुभूति से उसको देखा।

इस छोटे कमरे के दरवाजे से छनकर आती हुई धूप उस चटाई पर सुनहरा आलोक फैला रही थी।

श्रीधरन को देखकर नारायणी ने चटाई के दोनों हिस्सों को उठाकर छाती पर समेट लिया। गरदन के नीचे का शरीर उसने इस तरह ढक लिया।

उसके खूबसूरत चेहरे के चारों तरफ काली घुंघराली अलकें बिखरी थीं।

वह मधु मुस्कान बिखेरने लगी : उसके मोती-जैसे सुन्दर चमकदार दांत !

श्रीधरन को लगा कि चेक्कु की कथा की मत्स्य कन्या सामने दीख रही है।

चटाई से ढका शरीर मछली का, और चेहरा राजकुमारी का।

अप्पु ने गोद से तुरई फलों की पोटली लेकर बहिन को सौंप दी। उसने हाथ पसारा -- कच्चे केले के तने का-सा हाथ। उसने पोटली लेकर अपनी चटाई के नीचे रख दी।

पश्चिम से आये श्रीधरन के बारे में उसको सब कुछ मालूम है। अप्पु ने उसके बारे में सब बताया था। उसकी खुशी का ठिकाना न था।

"भैया, हमारे मेहमान को अमरूद तोड़कर दिया है न ?"—उसकी सुरीली आवाज़ !

"अमरूद के पेड़ के पके हुए अमरूदों को चमगादड़ खा गयी है।" अप्पु बड़े दुःख के साथ बोला।

वह तब भी मुसकाती है।

धूप कम हो गयी। कमरे की हलकी रोशनी में उसकी मुसकान फिर प्रकाश बिखेरने लगी।

कुछ कहे बिना श्रीधरन कमरे से बाहर आया। उसके पीछे अप्पु भी।

उस रात सोते समय श्रीधरन की आँखों में कुछ स्वप्न पर बनाने लगे :

राजकुमारी को एक भूत चोरी कर ले गया है। उसने राजकुमारी को जंगल की एक गुफा में रख दिया है। सेनापति के लड़के के साथ वह शिकार खेलने के लिए

निकला है। पड़ौसी राजकुमार गुफा में एक खूबसूरत राजकुमारी को देखता है। राजकुमार राजकुमारी से अपने साथ चलने की प्रार्थना करता है। तभी राजकुमारी दुख से बताती है, "हाय, राजकुमार ! मैं चल नहीं सकती। उस पापी भूत ने मेरे कमर के नीचे हिस्से को बेजान कर दिया है।"

राजकुमारी के पैरों में प्राण फूंकने के लिए क्या किया जाय ?

तभी एक बात सुनायी दी—भुतहा जंगल में आठों दिशाओं में झुके रहनेवाले आठ अंजीर वृक्ष हैं। उनमें दक्षिण-पश्चिम की ओर झुके अंजीर वृक्ष का पता लगाओ। उस पेड़ के नीचे और ऊपर दो बड़े खोखल हैं। नीचे के खोखल में एक काली बाघिन पहरा देती है। काली बाघिन को मौत के घाट उतार कर ऊपर चढ़ना है। ऊपर के खोखल में एक लाल बाघिन पहरा देती है। उसकी हत्या कर खोखल में ढूंढ़ने पर भूत द्वारा छिपाकर रखी हुई मृतसंजीवनी जड़ मिलेगी। उसे ले जाकर राजकुमारी के शरीर से छुआ देने पर उसके पैरों में ताकत आ जाएगी।

सेनापति का पुत्र और राजकुमार जंगल में निकलते हैं। वे दक्षिण-पश्चिम की तरफ झुके हुए अंजीर वृक्ष का पता लगाते हैं। पहले सेनापति का पुत्र अंजीर पेड़ पर चढ़ता है। नीचे के खोखल की बाघिन उसका मुकाबला करती है। सेनापति के पुत्र और काली बाघिन के बीच जब लड़ाई होती है तो राजकुमार अंजीर के वृक्ष पर चढ़कर ऊपर के खोखल की लाल बाघिन से लड़ने लगता है। बाघिनों को मारकर खोखल में ढूंढ़ने पर मृतसंजीवनी की जड़ी-बूटी मिल जाती है।

बाघिनों की हत्या करके मृतसंजीवनी औषधि हस्तगत करने के बाद राजकुमार और सेनापति का पुत्र गुफा में वापस आते हैं। मृतसंजीवनी का स्पर्श पाते ही वह राजकुमारी उठ खड़ी होती है और नाचने लगती है।

अचानक राजकुमारी नारायणी में और राजकुमार श्रीधरन में और सेनापति का पुत्र अप्पु के रूप में बदलने लगते हैं ।

मनोरंजन और दिवास्वप्नों में इलंजिपोयिल के दिन बीत रहे थे कि एक दिन सुबह को अप्पु श्रीधरन के पास दौड़ता हुआ आकर बोला—"शीदरन, तुम्हें घड़ियाल देखने की इच्छा है ?"

"हाँ, जरूर ! कहाँ है घड़ियाल ?" श्रीधरन ने उत्सुकता से पूछा। घड़ियाल नाम के एक प्राणी के बारे में उसने सुना था। पर, अब तक उसे देखा नहीं था।

"तो जल्दी आ। नदी के 'हौआ गर्त' में है।" अप्पु ने उतावली दिखायी।

श्रीधरन अप्पु के साथ खेतों से होकर दौड़ने लगा। 'शैतान गर्त' से कुछ दूर आगे 'हौआ गर्त' है। वहाँ के नदी तट पर लोगों की इतनी भीड़ थी कि तिल धरने को भी जगह नहीं थी। अप्पु ने आसमान की तरफ उंगली से इशारा करते हुए कहा—"अरे देख, घड़ियाल मामा तो इधर है।

श्रीधरन ने ऊपर देखा। एक बाँस के छोर पर एक बड़ा जन्तु लटक रहा था।

"पीट्टक्केलन महाशय ने ही इसे पकड़ा है।" अप्पु ने कहा।

पीट्टक्केलन उस प्रदेश का बड़ा ही मज़ाकिया आदमी है। दुबला-पतला, गोरा-चिट्टा, ऊँचे कद का आदमी। घुटनों तक भी न पहुँचनेवाला एक अँगोछा ही उसका पहनावा है। जंगली-जन्तुओं, चिड़ियों और मछलियों को जाल में फँसाकर पकड़ना, दावतों में सक्रिय रूप से भाग लेकर ज़रूरी मदद करना उसके प्रिय धंधे हैं। वह वैद्य भी है। उसी पीट्टक्केलन ने घड़ियाल को फँसाकर बांस के सिरे पर लटकाया है।

केलन महाशय ने किस तरह घड़ियाल को पकड़ा, इसका किस्सा भी अप्पु ने श्रीधरन को बता दिया।

नदी के 'हौआ गर्त' में एक घड़ियाल कहीं से घुस आया है, यह खबर चारों तरफ फैल गयी थी। बाढ़ में कहीं पूर्वी दिशा से बहकर आया होगा। 'हौआ गर्त' में पहुँचने पर वहाँ से कहीं जाने की उसकी इच्छा नहीं हुई। खाने के लि ढेरसारी मछलियाँ। बसने के लिए एक अच्छी माँद भी। सुख चैन से वहीं रहने की सोच ली। लेकिन पीट्टक्केलन नाम के एक बदमाश आदमी की उपस्थिति का पता इस बेचारे घड़ियाल मामा को नहीं लगा था।

केलन ने 'हौआ गर्त' के नज़दीक जाकर घड़ियाल को पकड़ने की तरकीब सोची। गर्त के तट पर लम्बे बेंत खड़े हुए थे। उनमें से एक अच्छे बेंत के छोर को रस्सी से बाँधा और खींचकर धनुष की तरह मोड़कर, रस्सी एक पेड़ से बाँध दी। फिर पानी में डूबे हुए बेंत के छोर पर एक लोहे का काँटा बाँध उनमें एक बिल्ली को मारकर पिरो दिया। फंदा इस ढंग से लगाया हुआ था कि घड़ियाल द्वारा बिल्ली को निगलते ही बेंत का बंधन ढीला हो जाये और बेंत ऊपर उठ जाये।

अगले दिन सुबह आकरदेखा तो 'हौआ गर्त' का घड़ियाल मामा आसमान में लटक रहा था।

"अरे; देखो ! वही हैं केलन महाशय।" अप्पु ने गर्त के एक कोने की तरफ इशारा करते हुए कहा।

श्रीधरन ने देखा। वहाँ एक चट्टान पर उकड़ू बैठकर पीट्टक्केलन नदी में बंसी डाल रहा है— मानो उसको इन बातों से कोई सरोकार ही नहीं है।

आसमान में अपनी विराट आकृति लिये विवशतावश लटकनेवाले घड़ियाल को श्रीधरन ने ताज्जुब से देखा। बेंत के छोर, लोहे के काँटे और बिल्ली को गले में फंसने के कारण आधा मुँह खोलकर लटकनेवाले घड़ियाल मामा का चेहरा वह पूरी तरह नहीं देख सका। लेकिन उसका फूला हुआ पेट और आरे की तरह पूंछ उसे ठीक-ठीक दिख रही थी। पूंछ कभी-कभी हिल उठती थी।

# 10. पेंटर कुंजप्पु

कुंजप्पु की युद्ध-कथाओं के खतरों की अगर एक सूची ले ली जाय तो उसे कम से कम एक-सौ-एक बार मरना चाहिए था, जबकि उसकी मृत्यु एक बार भी नहीं हुई। ओ० सी० स्क्वाड्रन लीडर, कप्तान आदि कई ऊँचे अफसरों ने कुंजप्पु को वी० सी० प्रदान करने की जोरदार सिफारिश करने का वादा किया था। पर उनके द्वारा वादा न निभाये जाने का कारण हो या उनकी सिफारिशों की परवाह न करने का कारण हो, कुंजप्पु को वी० सी० मिलने की बात तो दूर; 'मिलिटरी डेस्पाच' में 'मेन्शन' भी नहीं मिला। कुंजप्पु कहा करता था कि ये गोरे लोग अहसान फरामोश हैं। कितने गोरों को उसने मौत के मुँह से बाल-बाल बचाया था। लड़ाई जीतने के बाद वे सब कुछ बिसराकर बैठ गये। कुत्ते उनसे ज्यादा एहसानमन्द होते हैं।

पर, कुंजप्पु के बस्रा रेगिस्तान के वीर कारनामों की दास्तान सुनकर अतिराणिप्पाट के लोगों के रोंगटे खड़े हो गये और उन्होंने उसको 'बस्रा कुंजप्पु' की उपाधि प्रदान की। आगे चलकर नाम तो लुप्त हो गया। मात्र 'बस्रा' रह गया— बस्रा अर्थात् झूठ बोलनेवाला।

चार-पाँच महीने बाद बस्रा कुंजप्पु के हाथ के पैसे कम होने लगे। और दो तीन महीने बीतने पर तो जेब बिलकुल खाली हो गयी। अब वह फौज से लायी हुई सैनिक वर्दियों और अन्य सामानों को एक-एक करके बेचने लगा। पहले पहल उसने मच्छरदानी बेच डाली। फिर कमली, खाकी शर्ट, पतलून बेल्ट, किट्ट, कानवास बेग आदि एक-एक कर बिदा होने लगे। आखिर काबा मसजिद की तस्वीरवाला बटुआ भी उसने गपिया परंगोटन को आठ आने में दे दिया।

लम्बी गरदनवाले मिलिटरी जूतों के लिए ग्राहक नहीं मिला। श्रीधरन के दादा एक दफा कन्निप्परंपु में आये तो कुंजप्पु ने वे जूते उन्हें भेंट कर दिये। कुंजप्पु ने कहा, 'कीचड़ भरे खेतों में काम करते समय ये आपके काम आयेंगे।'

आखिर 'ओवरसीस सर्विस' मेडल, बड़ी-बड़ी मूछें और बस्रा की उपाधि ही कुंजप्पु के पास बच गये। फौजी अफसाना सुनने में भी लोग अब आनाकानी करने लगे। बातचीत के लिए सबका स्वागत करनेवाले कठफोड़वा वेलप्पन ने यही कहा, "कुंजप्पु दूसरी कोई बात हो तो बताओ। सुना है कि चावल का दाम दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है। ठीक है?"

कुंजप्पु अपने कुतबनुमा से मनबहलाव करता हुआ घर पर ही रहने लगा।

फौज में सेवा करते समय कुंजप्पु पिताजी के नाम कभी-कभी पैसा भेजता था। अब हाथ नंगा होने पर और सारा सामान बिक जाने के बाद वह हट करने

लगा कि जितना पैसा उसने मिलिटरी से भेजा था, सब का सब उसे अभी वापस मिलना चाहिए। कुंजप्पु में पिताजी के मुँह के सामने कहने का हौसला नहीं था। विमाता के ज़रिए ही उसने पैसा लौटा देने की नोटिस दी थी।

यह सुनकर कृष्णन मास्टर नाराज़ और गमगीन हो उठा।

"अरे, बदमाश, तुझे अपना पैसा वापस मिलना चाहिए न ?" कृष्णन मास्टर ने ज़ोर से पूछा।

अपनी बड़ी मूंछों को मरोड़ते हुए रसोईघर के बरामदे में कुंजप्पु उकड़ूं बैठा था।

"हाँ चाहिए बिलकुल चाहिए—मैंने बन्दूक पकड़कर मेहनत करके ही पैसा कमाया था न ?"

कुंजप्पु ने धीमी आवाज में बड़-बड़ की। (पिताजी से कुंजप्पु हमेशा इसी तरह बोलता था। सभी सवालों का वह जवाब देता—पर, सवाल पूछनेवाले को सुनाई देने के लिए नहीं।)

एक दिन कृष्णन मास्टर के स्कूल जाने के बाद कुंजप्पु ने नारियल के पेड़ पर चढ़कर नारियल का एक गुच्छा काटकर नीचे डाल दिया। कुल मिला कर आठ नारियल थे। दुकान में ले जाकर उन्हें बेच डाला। रेल के फाटक के मकान में जाकर साथियों के साथ ताश खेला। हार गया तो चूतड़ झाड़कर चुपके से वहाँ से घर का रास्ता नापा।

नयी सड़क के रेल फाटक का मकान तब से कुंजप्पु का डेरा बन गया।

घर के झगड़े-फसादों से बदहवास होकर श्रीधरन की माँ अपने पति से एक दो रुपये माँग कर कुंजप्पु को देती थी। यह नित्यकर्म-सा हो गया। मियाद लम्बी होने पर कुंजप्पु अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करता। घर के बर्तनों को वह ज़मीन पर पटक देता—एक्स मिलिटरी वाले अपने सौतेले बेटे की दुष्टता देखकर श्रीधरन की माँ रसोईघर में बैठकर रोती, तब कुंजप्पु शान्त होता। फिर वह उठकर फाटक-घर में जाकर सो जाता। दिन-रात वह सोता ही रहता। कभी-कभी नदी तक जाकर केकड़ा पकड़ने के अपने पुराने शौक में समय बिताता।

कन्निप्परंपु में अशांति की एक और घटना घटी। श्रीधरन का गोपालन भैया ही उसका कारण था।

कृष्णन मास्टर कुछ बातों में बिलकुल रूढ़िवादी था। बाल बनाने की सभ्यता से उसे बड़ी चिढ़ थी। (अपने गंजे सिर के इधर-उधर फैले हुए कुछ सफेद बालों को वह रेशमी धागे की गाँठ की तरह टोपी में सुरक्षित रखता था।)

कुंजप्पु के बाल घने थे। फौज में भर्ती होने पर उन्हें काटा गया था। वापस आने पर बालों की तरफ उसने कोई ध्यान नहीं दिया। गोपालन के सघन केशों पर कृष्णन मास्टर को गर्व था। दाहिनी तरफ साँप की पूँछ-जैसी इन चोटियों

को बाँधते देखना कितना सुन्दर लगता है। पर, गोपालन को यह हास्यास्पद लगने लगा था। मोहल्ले के कई नौजवानों को बार-बार सैलून में जाकर और बालों को सजा-संवार कर बाल बनवाते चलते हुए देखकर उसके मन में हीन भावना पैदा हो गयी थी। वह देहाती नाई रामन से गोलाकार में कटिंग कराने के बाद औरतों की तरह बालों को गूँथ कर चलता था। गोपालन राइटर को यह बिलकुल अच्छा नहीं लगा। कुछ औरतें ईर्ष्या के साथ उसके बालों को देखतीं तो उसका मन मसोस कर रह जाता। नहाते वक्त तेल की भी ज़्यादा ज़रूरत होती थी।

उसने चोटी कटवाने की एक अर्जी मौसी के द्वारा पिताजी के सामने रखी। तब पिताजी ने कहा, "उसको मुंडन करके मुसलमान की तरह चलने की तमन्ना है न ? फिर वह मेरे सामने न दिखे।"

गोपालन राइटर बालों को गाँठ देकर चलने लगा।

एक दिन रात को गोपालन के कमरे से शोर-शराबा सुनकर कृष्णन मास्टर दौड़ता हुआ वहाँ गया। कमरे में बालों के जलने की बदबू ! कुंजप्पु भी कमरे में था।

मेज़ पर मिट्टी के तेल का दिया जलाकर गोपालन एक कहानी की पुस्तक पढ़ता हुआ सो गया था। मेज़ पर टिके सिर के खुले पड़े बालों में आग लग गयी। दिये से बिखरे हुए मिट्टी के तेल ने आग को और भड़का दिया।

कृष्णन मास्टर को लगा कि गोपालन ने जान बूझकर ऐसा किया है। कुंजप्पु ने भी छोटे भाई की सहायता की होगी। हाँ, कुंजप्पु ने ही यह तरकीब सुझायी होगी।

गोपालन की चोटी का अधिकांश भाग जल चुका था। अब 'क्रोप' करके उसे ठीक करना होगा। कृष्णन मास्टर ने कुछ नहीं कहा।

दूसरे दिन सुबह गोपालन राइटर शहर के 'नेशनल हेयर कटिंग सैलून' में गया। बाल और दाढ़ी बनाने के बाद नाई मुत्तु ने उसके चेहरे पर जो पाउडर लगा दिया था, उसे दिखाते हुए वह बाहर आया।

यों कुछ महीने बीत गये।

घर में कभी-कभी झगड़ा-फसाद, केकड़ा पकड़ना, ताश खेलना और कभी रेलवे गेट के मकान में नींद, इन्हीं में बस्रा के दिन बीत रहे थे।

एक दिन दोपहर को अपने हाथ में चार-पाँच डिब्बे और कन्धे पर तीनचार ब्रुश लटकाये कुंजप्पु घर आया। श्रीधरन की माँ ने बाहर आकर देखा। डिब्बों में कई तरह के रंग थे। रंग और तारपीन के तेल की गंध वहाँ छा रही थी।

रंगों के डिब्बे और ब्रुश बरामदे में रखकर, बस्रा अपनी बड़ी मूँछे मरोड़ते हुए बड़ी देर तक चिन्तामग्न खड़ा रहा।

"अरे कुंजप्पु, इन चीज़ों को क्या ज़रूरत पड़ी ?" श्रीधरन की माँ ने जिज्ञासा ज़ाहिर की।

कुंजप्पु ने सारा किस्सा विमाता को सुना दिया।

अतिराणिप्पाटं के कोने में रहने वाले पेंटर स्तेव ने कुंजप्पु से पाँच रुपये उधार लिये थे। दो तीन साल पहले जब कुंजप्पु फौज से अवकाश ग्रहण कर एक अमीर की तरह ज़िन्दगी गुज़ार रहा था तभी उसने उधार दिया था। अब कुंजप्पु को याद आया कि स्तेव को उसने पाँच रुपये उधार दिये थे। स्तेव के यहाँ जाकर उसने पैसे माँगे। "अगले हफ्ते में ज़रूर दूंगा" कहकर स्तेव मियाद को बढ़ाने लगा। यों दो महीने बीत गये। आज भी वहाँ जाकर तकाजा करने पर 'उस ईसाई सुअर' ने अगले सप्ताह कहकर फिर टालने की कोशिश की। तो बस्रा चुप न रह सका और स्तेव के रंग और ब्रुश जबरदस्ती उठाकर ले आया।

अब क्या करे, यही उसकी चिन्ता है।

घर के दरवाज़े और खम्भे गन्दे हो गये हैं। ऐसी हालत में अधिक विचार करने की क्या ज़रूरत है ? कुंजप्पु कमीज उतार सिर्फ़ खाकी पतलून पहनकर रंग के डिब्बे और ब्रुश हाथ में लेकर रंग पोतने लगा।

खिड़कियों और खम्भों पर रंग भर दिया। रंगों को चुनते समय उसने अपना कला-बोध भी प्रकट किया। दरवाज़े की हर-एक सलाई पर अलग-अलग तरह के रंग भर दिये।

खिड़कियों और खम्भों को रंगने का काम तो समाप्त हुआ। अब···? एक पल उसने विचार किया। रसोई में घुस गया। विमाता के रसोईघर के सामानों को रंग देने की इच्छा हुई।

लकड़ी के बने सभी सामानों पर बस्रा के रंग और ब्रुश का आक्रमण होने लगा। और सब कामों के बाद रसोईघर एक अच्छे अजायब घर में परिवर्तित हो गया। लाल ऊखल, पीला मूसल, नीली खुरचनी, हरी चक्की, रंगबिरंगे कर-छुल। इन्द्रधनुष के सात रंगों का एक मुर्गीखाना भी।

सभी काम-काज खतम होने पर शरीर पर तरह-तरह के रंग लग जाने के कारण कुंजप्पु चीते की तरह दिखाई देने लगा।

तभी बाहर से किसी की आवाज़ आयी। रसोईघर के दरवाज़े से झाँक कर देखा तो आँगन में 'ईसाई सुअर स्वेत' खड़ा था। उसके हाथ में पाँच रुपये का नोट भी था।

स्वेत कहीं से पाँच रुपये उधार लेकर अपने रंग-रोगन वापस लेने के लिए उतावला होकर आया था।

बस्रा असमंजस में पड़ गया।

खाली डिब्बे और ब्रुश वहाँ थे। रंग तो खिड़कियों और सामानों पर पुत

गया था।

आखिर बस्रा ने एक तरकीब सोची। रंग के मूल्य के तौर पर पाँच रुपये स्वेत के हाथ में ही रहने दिये और सभी डिब्बे और ब्रुश लौटा दिये।

स्वेत खिन्न होकर लौट गया।

उस दिन, रात को बस्रा को एक नयी अंतर्दृष्टि मिली : क्यों न मैं एक पेंटर बन जाऊँ? और इस तरह कुछ ही घंटों के अन्दर कुंजप्पु के मन में रंगों के प्रति प्रेम पैदा हो गया।

कुंजप्पु अगले दिन विमाता से पाँच रुपये उधार माँग कर बाज़ार जाकर एक ब्रुश और रंग का डिब्बा खरीद लाया।

सुबह चाय पीकर रंग का डिब्बा और ब्रुश हाथ में लेकर कुंजप्पु घर से चल देता। गाँव में रंगनेवालों की बड़ी माँग थी। उस इलाके पर स्वेत ने अपना एकाधिकार जमा लिया था। अब उसके लिए एक प्रतिद्वन्द्वी पैदा हो गया।

यों बस्रा कुंजप्पु पेंटर कुंजप्पु' बन गया।

कुंजप्पु में इस परिवर्तन की दास्तान अपनी पत्नी के मुँह से सुनकर कृष्णन मास्टर को एकाएक भरोसा नहीं हुआ।

विविध रंगों के लेप से बदसूरत बने घर की खिड़कियों और खंभों के दृश्य ने कृष्णन मास्टर को खिन्न कर दिया था। मास्टर को कुछ रंग-बोध तो था ही— लेकिन जब यह सुना कि 'कुंजप्पु ने एक पेशे के तौर पर पेंटिंग को स्वीकार कर लिया है तो उसने खुशी ज़ाहिर की। आखिर उसको अक्ल तो आयी कि कोई काम-काज करना है। पेंटिंग कोई बुरा धंधा नहीं है। हाँ, कोई भी धंधा बुरा नहीं होता।

मास्टर को एक ही संदेह था : वह अपने धंधे को आखिर कितने दिन खींचेगा?

## 11. ज्ञान के मूलस्रोत

श्रीधरन इलंजिपोयिल से एक बैलगाड़ी में ही लौट आया था। सूखी गरी लेकर शहर की तरफ जानेवाली तैय्यन की बैलगाड़ी में ही वह चढ़ गया था।

कन्निप्परंपु में पैर रखते ही घर के रंगबिरंगे दृश्यों को देखकर वह चकित रह गया। बरामदे में देखा तो वहाँ 'अन्दमान' चात्तप्पन मज़े से भात खाता दिखाई पड़ा। पिताजी आराम कुर्सी पर बैठे थे।

पिताजी ने श्रीधरन को नज़दीक बुलाकर गले लगा लिया। फिर हँसते हुए पूछा, "सभी पाठ पढ़ लिये?"

उसने 'हाँ' सूचक गरदन हिलायी। पिताजी ने उपदेश दिया था कि झूठ नहीं बोलना चाहिए। इसलिए वह बोला नहीं।

पिताजी ने श्रीधरन के जाँघिये की जेब टटोली। जेब-भर गुंजा! दूसरी जेब

में कच्चे आम ! (सब कुछ अप्पु का इनाम था।)

पिताजी हँस पड़े। कुछ कहा नहीं। श्रीधरन रसोई घर में दौड़ गया।

माँ ने उसको ऐड़ी से चोटी तक देखा। "अरे, तू तो धूप में काला हो गया है ? रात दिन खेलता कूदता रहता है क्या !"

श्रीधरन रसोई घर की चक्की, खुरचनी आदि पर आँखें गड़ाकर खड़ा था। कितना अजीब है ! नीली खुरचनी, लाल ऊखल···

"सब कुछ तेरे बड़े भाई की करतूत है।" माँ ने बड़े गौरव के साथ बताया।

कुंजप्पु के पेंटर बनने का किस्सा माँ ने विस्तार से सुना दिया।

"अब शाम को आकर बड़ा भाई तुझे भी रंग पोतकर सफेद बनाएगा।" माँ ने चेहरे, कर्णफूल और नाक की नथ को हिला कर हँसते हुए कहा।

माँ ने श्रीधरन को थाली में भात परोस दिया। श्रीधरन को जल्दी-जल्दी भात निगलते देख माँ ने पूछा, "अरे, इतनी उतावली क्यों ?"

"हाँ, कुछ जल्दी है। अन्दमान चात्तपन्न को मेरे भात खाने के बाद पान-सुपारी खाने से पहले ही बरामदे में हाज़िर होना है—अन्दमान चात्तप्पन द्वीप की कथाएँ सुनाएगा।"

घुटनों तक लम्बा मैला अंगोछा पहन कर कमर में एक बड़ा चाकू खोंस कर चलता है दानवरूप चात्तप्पन। ऊँचे कद का शरीर। देखने पर लगता है मानो लकड़ी का बना है।

कृष्णन मास्टर के बचपन का सहपाठी था वह। चात्तप्पन की कथा पिताजी ने माँ से कही थी। तब श्रीधरन ने भी सुनी थी। नौजवान होने पर चात्तप्पन मज़दूरी करने लगा। उसने शादी भी की। एक दिन काम की तलाश में घर से निकल पड़ा। उस दिन कोई काम न मिला। दुपहर घर लौट आने पर चात्तप्पन ने एक खास दृश्य देखा—चात्तप्पन की पत्नी तेली केलु के साथ सो रही है। तुरन्त ही अपनी कमर से चाकू निकालकर उसने केलु का काम तमाम कर दिया। फिर नजदीक से कुछ सूखे नारियल के पत्तों को लेकर एक मशाल बनायी। उसे सुलगा कर हाथ में लिया। अपनी पत्नी को आगे-आगे चलने का आदेश दिया।

दिन दहाड़े मशाल जलाकर बीवी को साथ लेकर पगडंडियों से जा रहे चात्तप्पन को देखकर लोगों ने अचरज से पूछा - "अरे चात्तप्पन, यह क्या ?"

चात्तप्पन मुड़कर खड़ा हो गया। उसने लोगों को सारी बात बतायी—"यह औरत जो मेरी बीवी है ना, इसकी एक खास बीमारी है। दिन में इसकी आँखों से दिखाई नहीं देता—इसलिए धोखे से यह तेली केलु के साथ सोयी। इसकी बीमारी जब तक दूर न हो, तब तक यह अपने घर में ही रहे।"

यह मज़ाक सुनकर लोग ठहाका मार कर हँस पड़े। लेकिन तभी वे हक्के-बक्के से देखते रह गये। केलु का सिर काटने के बाद खून से सना हुआ चाकू

उसको कमर में खुँसा था।

स्त्री को उस के घर में छोड़ कर चात्तप्पन चाकू लेकर पुलिस स्टेशन पर हाज़िर हो गया।

हत्या के अपराध में अदालत ने चात्तप्पन को फांसी की सज़ा सुनायी। फांसी से चात्तप्पन की ज़िन्दगी समाप्त हो थी, पर किस्मत ने ऐसा न होने दिया। अपील होने पर मृत्युदंड को आजीवन कठोर कारावास में बदल दिया गया। चात्तप्पन को अंदमान द्वीप में निर्वासन मिला।

सज़ा की मियाद भर अगर वहीं रहना पड़ता तो वह किसान बन कर शेष ज़िन्दगी वहीं गुज़ारता। लेकिन किस्मत ने अब भी हस्तक्षेप किया। उसे द्वीप में गये पांच बरस ही बीते थे कि उसी साल ब्रिटिश सरकार की वर्षगाठ के उपलक्ष्य में कैदियों के बीच पर्ची डाली गयी तो चात्तप्पन का नम्बर निकल आया। इस तरह चात्तप्पन आज़ाद होकर अपने प्रदेश में लौट आया।

अब वह मोहल्ले भर में मारा-मारा फिरता है।

चात्तप्पन कन्निप्परंपु में अक्सर रविवार को ही आता था। (कृष्णन मास्टर उस दिन घर में ही रहता।) भोजन के समय से पहले ही करीब ग्यारह बजे वह पहुंच जाता।

"चात्तप्पन, क्या समाचार है?" कृष्णन मास्टर अपने सहपाठी से कुशल क्षेम पूछता।

चात्तप्पन चेहरे को नोचता हुआ दांत निपोर देता। फिर गिद्ध की तरह चुपचाप बैठ जाता।

कृष्णन मास्टर पुराने सहपाठी को भोजन का न्योता देता।

केले के बड़े पत्ते में उसके लिए भोजन परोस दिया जाता। वह अकेले ही करीब डेढ़ सेर भात खा जाता। दो किस्म की सब्जियों और कढ़ी के रहने पर भी उसको एक हरी मिर्च और दो टुकड़े नमक की खास ज़रूरत पड़ती। भात का बड़ा-सा लड्डू बनाकर उसे सब्जी में भिगोकर वह अपने मुँह में डाल लेता। चार पांच गोले निगल जाने के बाद हरी मिर्च नमक के साथ चबा लेता।

उस बकासुर के खाने का दृश्य श्रीधरन ताज्जुब से देखता हुआ खड़ा रहता। अपना प्रिय चाकू औरों को दिखाने में उस को बड़ा उत्साह था। कभी-कभी वह उसे कमर से निकाल कर छाती फुलाकर दाँत निपोरता हुआ उससे पीठ खुजलाता। नहीं तो उससे पैर के नाखून ही काटने लगता। चाकू को अच्छी तरह प्रदर्शित करने का मौका भोजन के बाद पान खाने की तैयारी में बैठते समय होता। पान-दान से एक पकी सुपारी उठाकर छीलने के बाद उसके टुकड़े करते हुए वह कुछ कहानियाँ भी सुनाता—अन्दमान द्वीप के निजी अनुभवों की कहानियाँ। चात्तप्पन की कथा शुरू होते ही श्रीधरन नज़दीक आकर खड़ा हो जाता। हज़ारों

मील दूर से जहाज़ से आयी हुई कथाएँ हैं न। आँखे फाड़कर सुनता।

अंदमान. द्वीप में निर्वासन के दिनों के शुरू के पाँच-छह महीनों में एकान्त कारावास और अनगनित यातनाएँ एक इलाज की तरह बर्दाश्त करनी पड़ती थीं। एक बार जंजीरों से पैर में लगे घाव में एक बिच्छु ने काट लिया था और एक दफा प्यास बुझाने के लिए गंदा पानी पीना पड़ा था। ऐसी ढेरों मुसीबतों का बखान चात्तप्पन बिलकुल निर्विकार होकर करता।

एक बार सभी बंदियों को जंगल में पेड़ काटने के लिए ले गये। उनमें चात्तप्पन भी था। शाम को जंगल से वापस आते समय वार्डर ने कैदियों को गिनकर देखा तो दो आदमियों का पता न था। वे कहाँ गये?—भागे नहीं! फिर? वहाँ इन्सानों को पकड़कर खानेवाले जंगली इन्सान हैं। वे लुक छिपकर उन्हें ले गये···

"ये बर्बर हब्शी इन्सानों को कैसे खाते हैं? पकाकर या भूनकर?" श्रीधरन ने जिज्ञासा ज़ाहिर की।

"हऊँ—पकाना और भूनना! क्या उन्हें और काम नहीं है? (चात्तप्पन ने सुपारी के छिलके बाहर फेंक दिये।) मनुष्य के कच्चे मांस को काट-काटकर खाएंगे। (चात्तप्पन चाकू से सुपारी काटने लगा।) जिगर को निकालकर पहले मुखिया को भेंट करेंगे। लिंग काटकर मुखिया के बच्चों को खाने के लिए देंगे। फिर आँख, कान, हाथ-पैर, छाती, नाक के टुकड़े चबा-चबाकर खायेंगे। चात्तप्पन ने पान और सुपारी मुँह में डालते हुए कहा।

उस रात को श्रीधरन नींद में दो-तीन बार भय से चिल्लाया। हबशियों के बच्चे लिंग काटने आ रहे हैं।

कुंजप्पु नियमित रूप से रंग के डिब्बे और ब्रुश लेकर काम करने जाता है। बीच-बीच में घर के लिए बड़ी मछलियाँ और श्रीधरन के लिए मिठाई खरीद लाता है।

श्रीधरन का स्कूल खुल गया। इम्तहान में सब के सब पास हो गये हैं। ऊँघने वाला अय्यप्पन भी।

लेकिन नये दर्जे में जाकर बैठने पर ज़रा बेचैनी महसूस हुई। कात्यायनी कक्षा में नहीं है—उस के उपरजिस्ट्रार पिता का तबादला हो गया है। वे सब उत्तर में कहीं चले गये हैं।

एक नया लड़का दर्जे में भर्ती हो गया है: भास्करन—कम्पाउण्डर का लड़का है। हरा कोट और गले में रेशमी मफ्लर पहने हुए एक गोरा खूबसूरत लड़का, बड़ा आडम्बरी।

श्रीधरन हरे ब्लेसर का कोट पहले-पहल देख रहा है। उत्सुकतावश, आँखें फाड़ कर देखा।

"अरे, क्यों उल्लू की तरह ताक रहा है ?" भास्करन ने नफ़रत से पूछा।

श्रीधरन संकोच से सिकुड़ कर रह गया। श्रीधरन की वेश-भूषा भास्करन को अच्छी नहीं लगी।

(खाकी रंग का एक जाँघिया और एक खाकी कोट—यही श्रीधरन की पोशाक थी।)

उस शेखीवाज को श्रीधरन कुछ जवाब देना चाहता था। लेकिन कुछ कह न सका। हमेशा ऐसा ही होता है। ठीक समय पर कुछ नहीं सूझता—"टिड्डा समझ कर ज़रा देखा था यार !" यों कहना था।

भीतर में गुस्सा था—इस टिड्डे ने मुझे उल्लू कहा ?

वदला लेने का विचार हुआ। हाँ, ठीक है केलुक्कुट्टी के कान भरना ही उचित है। वह टिड्डे को ज़रूर मजा चखाएगा। उसके हरे ब्लेसर कोट की पीठ में एक दफा मारने में भी केलुक्कुट्टी को हिचकिचाहट नहीं होगी। केलुक्कुट्टी का पिता हेडकांस्टेंबिल है। विद्यार्थियों को पानी पीने के लिए मिले छोटे से अवकाश में श्रीधरन केलुक्कुट्टि की तलाश में स्कूल के अहाते के कोने की तरफ गया। केलुक्कुट्टि एक आम के पेड़ की ओट खड़ा होकर वीड़ी पीता हुआ आसमान में धुआँ छोड़ रहा था।

श्रीधरन को देखते ही केलुक्कुट्टी मुड़कर खड़ा हो गया। व्यंग्य से हंसता हुआ बोला, "तेरी 'गिरगिट' चली गयी है न श्रीधरन !"

श्रीधरन को उसका सवाल और हँसना विलकुल पसन्द नहीं आया। कात्या-यानी को ही केलुक्कुट्टी ने 'गिरगिट' कहा था।

हर रोज नये रंग का घाघरा पहन कर कात्यायनी कक्षा में आती थी। वदलते रंगों को देखकर ही केलुक्कुट्टी ने उसे 'गिरगिट' का नाम दिया था। भास्करन से 'उल्लू' सुनकर उसे जितना क्षोभ और वेचैनी हुई थी उससे भी अधिक गुस्सा और दुःख कात्यायनी के वारे में केलुक्कुट्टि से 'तेरी गिरगिट' शब्द सुनकर महसूस हुआ।

"तू वहीं खड़ा रह। तूने वीड़ी पी। मैं मास्टर से जरूर कहूँगा।" श्रीधरन ने केलुक्कुट्टि को धमकी देते हुए कहा।

"अरे पीले मेंढक, जा बता दे मास्टर को !" केलुक्कुट्टि आँखें तरेरकर श्रीधरन के नज़दीक आया। चीदरन मुँह मोड़ कर कक्षा की तरफ दौड़ आया।

"कायर कहीं का !" केलुक्कुट्टी पीछे से ज़ोर से चिल्लाया।

श्रीधरन कक्षा में दुखी होकर बैठ गया। उल्लू के अलावा पीला मेंढक, कायर आदि वातें भी सुननी पड़ीं। आगे किसी से भी कुछ नहीं कहूँगा।

कक्षा में मास्टर नहीं था। वह वेंच के कोने में वैठ कर ऊँघ रहे अय्यप्पन के निकट जाकर वैठ गया। अय्यप्पन ने भी खामोशी साध ली ! वह सिर झुकाए वैठा है। ज़रा झुक कर देखा। उसके फूले हुए गाल हिल रहे हैं। वह कुछ मुँह में डाल

कर चबा रहा है। बेंच पर दो-तीन कच्चे चावल के दाने गिरे पड़े हैं। समझ गया। अय्यप्पन घर से चावल चुराकर जेब में डाल कर लाया है और सबसे छिपा कर खा रहा है। माँ की बातें याद आयीं। माँ ने कहा था कि पित्त रोग के शिकार बच्चे चावल खाते हैं।

शाम को घर पहुँचने पर खेलने के लिए कोई साथी नहीं हैं। चात्तुण्णि इन दिनों ईद का चाँद हो गया है। वह काम करने जाता है। नदी-तट की लकड़ी की मिलों से लकड़ी का चूरा टोकरी में भरकर वह बाहर बेच आता है—फिलहाल यही चात्तुण्णि का काम है। चात्तुण्णि का बाप हाथीपाँव वाला अय्यप्पन वात के बुखार का शिकार है। चात्तुण्णि की माँ चिरुता पश्चिमी नहर के किनारे के अहाते में रहनेवाली अम्मालु के साथ समुद्री तट की कम्पनी में काम करने के लिए जाने लगी है। सब लोग कहते हैं कि अम्मालु एक बुरी औरत है। अम्मालु की एक बेटी है, जिसकी आँखें नीली और बाल ताँबे के रंग के हैं। चात्तुण्णि ने कहा था कि वह कम्पनी के एक गोरे साहब की बेटी है।

कभी-कभी रात को चन्दुमूप्पन की पुराण कथा होती। बड़ा मज़ा आता।

कन्निप्परंपु के पड़ोस में ही चन्दुमूप्पन का घर है।

चन्दुमूप्पन का बाप रामन कुष्ठ रोगी है। कमली के चिथड़े से शरीर ढककर वह घर के आँगन में एक प्रेत की तरह बैठा रहता है। उसके पास से निकलने पर बदबू आती है—मछली बाज़ार की मोरी की बदबू।

रामन के बड़े पुत्र चन्दु ने लम्बे अरसे तक चिराई का पेशा किया था। फिर उसी मिल में मुंशी का काम कर रहा है। उसकी उम्र पचपन वर्ष की है। आरा-कशों का मुखिया होने के कारण सब लोग उसको चन्दुमूप्पन ही पुकारते हैं।

ऊँचे कद का सफेद आदमी। पैर अधिक लम्बे हैं। दुबला है। गालों की हड्डियाँ बाहर दिखाई देती हैं। एक जबर्दस्त नाक और नोकदार चेहरा (उसमें एक टूटा-फूटा चश्मा भी)। बार-बार दांतों को निपोरकर हँसने और तुरन्त ही ओंठ बन्द करने की कोशिश में अनजाने ही वह मुँह बनाकर चलता।

चन्दुमूप्पन एक पूरा भक्त है। मछली माँस कभी छूता भी नहीं। दिन में तीन दफा स्नान करता। आधी-रात तक पुराणों का पारायण, जप-तप का कार्यक्रम रहता। एक बजे खाना खाकर सोने लेटता। ब्रह्म मुहूर्त में जाग उठता। फिर जप, तप और पूजा-पाठ। आठ बजे स्नानकर सूरज को प्रणाम करने के बाद विभूति लगाता और कांजी पीने के बाद दुकान की तरफ रवाना होता। एक लंबी धोती और कमीज़ उसकी पोशाक है। हाथ में एक छतरी लटक रही होती। दुकान से दोपहर को खाना खाने घर आता। तब भी वह स्नान करता, जल्दी-जल्दी कौवे का-सा स्नान।

चन्दुमूप्पन शाम को घर वापस आने पर नहाने के लिए जल्दी से एक तौलिया

लेकर आँगन में उतरता। दो तीन घंटों के अन्तराल पर ही फिर उसका स्नान होता। इसके बाद कन्निप्परंपु जाता—कृष्णन मास्टर के साथ भक्ति विषयक पुराण कथाओं की चर्चा करने। (कृष्णन मास्टर भी भक्त है। जप-तप करता है लेकिन सामने तस्वीर रखकर उपासना नहीं करता।)

रामायण, महाभारत, भागवत आदि पुराणों के कुछ दृश्यों और पात्रों के संबंध में मास्टर और मूप्पन के बीच खूब बहसें होतीं। कृष्णन मास्टर पंडित है। चन्दु-मूप्पन को रामायण और महाभारत कंठस्थ हैं। मीठी आवाज में वह पारायण भी करता। चन्दुमूप्पन की इस भक्ति के बारे में कुंजप्पु के मन में नफ़रत-सी है।

"हमेशा नहाकर कीर्तन गाने पर अगर मोक्ष मिलेगा तो नाले के मेंढक को अवश्य मोक्ष मिलना चाहिए। विभूति लगाने से अगर मोक्ष मिलेगा तो राख में लेटने वाले कुत्ते को ही पहले-पहल मिलना चाहिए।" कुजप्पु इस तरह की दलीलें पेश करता।

कृष्णन मास्टर से भक्ति-विषयक चर्चा करने के लिए कन्निप्परंपु में आने वाले चन्दुमूप्पन की खड़ाऊँ की आवाज़ सुनते ही कुंजप्पु रसोईघर से अपनी यह टिप्पणी करता—"लो, कूद-कूदकर आ रहा है मेंढक स्वामी।"

लेकिन चन्दु मामा की पुराण-कथाएँ, वर्णन आदि श्रीधरन को बहुत पसन्द आते। पिता और चन्दुमूप्पन के बीच की बातचीत को वह ध्यान से सुनता। एक नयी दुनिया उसकी कल्पना में प्रकाशित हो उठती। ऐसा एक अद्भुत प्रसंग जहाँ 'नैमिष्यारण्यं के मुनि श्रेष्ठ' और अम्ब— अम्बिका—अंबालिका आदि विहार करते हैं।

मास्टर मूप्पन के संवाद में ऐसी बातें आ जातीं जिन्हें श्रीधरन समझ नहीं पाता :

"मधुर मोलि कान्तेय च्चिन्दिच्चितप्पोल
नृपवरनु बीजस्खलनमुण्डाय।"

पहली पंक्ति का अर्थ तो वह समझ गया—राजा ने अपनी सुन्दर पत्नी का स्मरण किया। लेकिन उसके बाद राजा किस संकट में पड़ गया, वह तो मालूम नहीं हुआ।

अगले दिन स्कूल जाते समय पगडंडी पर अकस्मात् चात्तुण्णि से भेंट हो गयी। वह अपने सिर पर एक टोकरी लादे आ रहा था।

चात्तुण्णि को रोककर जल्दबाजी में ही उसने कुशल-क्षेम पूछा। फिर 'मधुर मोलि' का गीत गाकर उस को सुनाया, फिर पूछा :

"अरे यार, इसका मतलब क्या है ? सुनते ही चात्तुण्णि बोला, "यह चन्दुमूप्पन की रामायण पाट्टु तो नहीं है ?"

चात्तुण्णि को शिक्षा नहीं मिली, पर उसे अक्ल तो है।

"अरे यार, तुझे यह कैसे मालूम हुआ ?"

"सुनने पर, लेकिन -- समझ में आना बहुत मुश्किल है। बात कुछ टेढ़ी है। तू क्यों नहीं अपने पिता जी से पूछता ?"

"शंका होती है कि यह लड़कों से न कहने लायक कोई बुरी बात तो नहीं।" श्रीधरन ने सिर नीचा करते हुए कहा।

यह सुनकर चात्तुण्णि को ज़रा जोश आ गया। "तू फिर एक बार गा।"

श्रीधरन ने फिर एक दफा 'मधुर मोलि' गाया। पहली पंक्ति का सार भी बता दिया।

यह सुनकर चात्तुण्णि ठट्ठा मारकर हँस पड़ा। सिर की टोकरी हिल गयी। लकड़ी का चूरा उसके चेहरे पर, आँखों पर और कंधे पर बिखर गया।

चात्तुण्णि ने श्रीधरन को दीवार के नज़दीक बुलाकर सब कुछ समझाया-बताया। उसका अर्थ समझाने पर श्रीधरन को नफ़रत और शरम महसूस हुई।

## 12. किट्टन मुंशी

एक दिन सुबह को श्रीधरन स्कूल जाने को तैयार खड़ा था कि देखा, किट्टन मुंशी घर की तरफ आ रहा है। तब श्रीधरन के पिताजी नहाने के बाद बरामदे में आ रहे थे।

"आगे चलकर मास्टर को नहाने और जपने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। अब वे 'नहाकर' छोड़ेंगे · " किट्टन मुंशी ने आँगन से ही बताया।

'अरे, तुम क्यों दिल्लगी की बातें कह रहे हो ? मुझे 'नहाने' कौन आता है ?" कृष्णन मास्टर ने एक चुटकी भस्म लेते हुए पूछा।

"यह दिल्लगी-तमाशा नहीं है। ये मुसलमान 'नहाकर' ही छोड़ेंगे। अरे सुना नहीं ? मुसलमानों का दंगा-फ़साद शुरू हो गया है।" किट्टन मुंशी ने शान से बैठकर बताया।

"सही बात है यह ?" कृष्णन मास्टर का हाथ भस्म के बर्तन में ही रहा।

"दंगा शुरू हुए तीन चार दिन गुज़र गये—सेना और पुलिस उधर गयी है।" किट्टन मुंशी ने अपनी जेब से सुंघनी की डिबिया लेकर उसमें से ज़रा-सी हथेली पर डाल ली और एक चुटकी भर नाक में ठूँस कर सुड़क ली। चेहरे को ज़रा झटक कर बोला, "पुलिस और सेना आसमान में ताककर खड़ी होगी··· पुल को तोड़ दिया गया है···"

दंगा-फसाद। पुलिस और सेना। पुल तोड़ दिया गया है। श्रीधरन ने इतना ही समझा कि कोई महत्त्वपूर्ण बात हुई है।

किट्टन मुंशी दंगाइयों के पराक्रम के बारे में कई किस्से कहने लगा। काफिरों को धर्म परिवर्तन कराने में सबसे पहली विधि होती है 'नहाना'। फिर बैल का मांस खिलाना। मुंडन कराना। सुन्नत कराना और टोपी पहनाना। कोई एतराज करे तो उसे कत्ल कर दिया जाता। उसे एकदम मार नहीं डाला जाता। जिन्दा मनुष्य की खाल निकाल कर खड़े करना उनका बहुत बड़ा मनोरंजन है।

"तू जल्दी स्कूल जा···" किट्टन मुंशी का मुँह ताकने वाले श्रीधरन को कृष्णन मास्टर ने झिड़की दी।

श्रीधरन ने समझा कि ये बातें लड़कों को नहीं सुननी चाहिए। वह किताबें लेकर स्कूल चला गया।

कुछ दूर जाने पर पगडंडी पर बैठा हुआ किट्टन मुंशी का मुखतार तुप्रन दिखाई पड़ा। मन्दिर के काले पत्थर की प्रतिमा-जैसा तुप्रन।

"अरे बेटा, स्कूल मत जा। दंगाई पकड़ कर ले जाएँगे। मोहल्ले में गड़बड़ मची हुई है।" श्रीधरन जरा भयभीत होकर चला गया।

किट्टन मुंशी अच्छा खूबसूरत नौजवान है। वह सफेद मलमल की धोती और रेशमी कमीज पहनकर चलता है। मुंशी नाम महज उसके नाम की शोभा बढ़ाने के लिए जोड़ा गया था। दरअसल वह मुंशी नहीं है। जीवन भर के लिए उसने ऐसा कोई पेशा नहीं चुना है। एक अच्छे खानदान का व्यक्ति है। उसका बड़ा भाई एक कम्पनी का मैनेजर है। किट्टन मुंशी अपना रेशमी कुर्ता पहने (उसमें अमरीकी सोने की पालिशवाले क्रेमेन्स प्लेट बटन और कफलिंग्स चमकते रहते) और क्लीन शेव किये अपने चेहरे पर नकली मुस्कान ओढ़कर हमेशा इधर-उधर घूमता रहता। अच्छे घरों में ही वह जाता। सवेरे की चाय के समय वह किसी के भी घर में घुस जाता। रोचक वार्तालाप से मेजबान को खुश करता। दोपहर को भोजन के समय चले जाने का बहाना करता। "जरा बैठो किट्टन मुंशी। भोजन के बाद चले जाना।" मेजबान निमंत्रण देता।

"एक जगह जाने की बात थी--कोई बात नहीं, बाद में चले जायेंगे।" कहकर वहीं बैठ जाता। फिर भोजन के बाद जरा विश्राम लेकर ही पिंड छोड़ता। लेकिन किसी को भी यह खयाल नहीं आता कि किट्टन मुंशी एक चालाक आवारा आदमी है।

लोगों के मन में किट्टन मुंशी के प्रति हार्दिक ममता है। वे यही समझते हैं कि किट्टन मुंशी अपना ही आदमी है, हितैषी है। अगर किसी घर में मृत्यु हो जाये तो सुनकर सबसे पहले किट्टन मुंशी ही वहाँ पहुँचता। शादीवाले के घर में एक दिन पहले ही वह आ जाता। सिर पर अँगोछा बाँध पंडाल बनाने में और

सजावट करने में वह हाथ बँटाता। दावत में कमर में एक अँगोछा बाँधकर परोसने के काम में भी वह हाथ बँटाता। यों इस इलाके की शादी-ब्याहों में आदि से अंत तक किट्टन मुंशी हाजिर रहता है।

इस इलाके और आसपास के समाचार सबसे पहले किट्टन मुंशी के मुँह से ही फैलते। सब कहीं वह पहुँचता और रहस्य सूँघ लेता। किसी भी विषय पर लम्बा लेक्चर देता। ज़रा धीमी आवाज़ में बीच-बीच में हास्य व्यंग्य भरे शब्दों को जोड़कर मुस्कराते हुए वह घंटों बातचीत करता। सबूत के तौर पर ज़रा सुनें, "कोरुप्पणिक्कर 'आंत्रवृद्धि' की बीमारी से तंग आने के कारण ऑपरेशन करा कर अस्पताल में आराम कर रहा है। कल मैंने जाकर देखा, मिशन शाप के नोमिन साहब के सिगार-जैसा लगा।"

किट्टन मुंशी बीड़ी, सिगरेट, चुरूट कुछ नहीं पीता। शराब का विरोधी है। पर, सूँघनी सूँघता है। किट्टन मुंशी की सूँघनी की डिबिया देखने ही लायक है। वह उसे हमेशा अपनी टेंट में खोंस कर रखता।

किट्टन मुंशी के पीछे चलनेवाला एक इन्सान है तुप्रन। वह उसका सेवक, चेला, अंग-रक्षक और मुखतार है। तुप्रन के बारे में कुंजप्पु कहता था कि वह किट्टन मुंशी का पिट्ठू है। ऊखल शरीर, सूखी गरी का-सा चेहरा, काले पत्थर से बना काला-कलूटा हट्टा-कट्टा इन्सान। जमीन खोदना, दीवार बनाना, टट्टी का निर्माण करना, जुताई करना तुप्रन के कई धंधे हैं। कोई काम-वाम नहीं होता तो किट्टन मुंशी के पीछे चलता। लेकिन सम्मानित घरों में जाते समय मुंशी तुप्रन को साथ लेकर नहीं जाता। कुछ दूर उसे बिठा देता। 'मुंशी मालिक' के लौट आने के इंतजार में तुप्रन घंटों प्रतिमा की तरह वहीं बैठा रहता।

किट्टन मुंशी ने तुप्रन को कैसे ढूंढ़ निकाला यह एक उल्लेखनीय घटना है।

एक दिन सुबह को किट्टन मुंशी ज़रा टहलने निकला। रेल की पटरियों के नज़दीक से चलते समय ठेकेदार उण्णीरि के फाटक के सामने पहुँचा। उस दिन की चाय वहाँ से पीने की साध लिये मुंशी बरामदे में चढ़कर ज़रा खंखारने लगा।

उण्णीरि की पत्नी ने दरवाज़े पर आकर कहा, "घर में नहीं हैं। तड़के ही कहीं निकल गये हैं।"

वहाँ और कोई मर्द नहीं था। किट्टन मुंशी को निराश हो वापस जाना पड़ा। फाटक पर पहुँचने पर हथेली भर सूँघनी ली और नाक में डालकर विचार करने लगा—अब किधर चलूँ? किस घर में जाने से कुछ मिलेगा?

तब कुदाल कन्धे पर रखकर एक कोमल काली आकृति रेल की पटरियों पर चलती हुई दिखाई पड़ी। खुली छाती, सुगठित कन्धे और हाथ। सिर्फ एक अँगोछा पहने अर्धनग्न उस इन्सान को मुंशी ने ध्यान से देखा।

उसके चले जाने पर किट्टन मुंशी को कुछ मनमानी करने का विचार उठा।

दमी को फावड़ा लेकर आँगन में खड़े देखकर उण्णीरि ने

गया है हुजूर।"
झ में नहीं आया।
देख लें।"
आँखें तरेरकर देखा।
तय किया था। आप ज़रा काम देखकर कुछ-न-कुछ दे

करने को कहा था ?"
,

—रेशम का कमीज़ पहने हुए सफेद मालिक। सुबह को
था।"
—किट्टन मुंशी का काम होगा।
, "किट्टन मुंशी इधर आया था क्या ?"
था। यह सुनते ही कि आप यहाँ नहीं हैं वापस चला
मिला।
, उण्णीरि ठट्ठा मार हँस पड़ा।
हक्का-बक्का खड़ा रहा।
और कोई बड़ा मालिक और छोटा मालिक नहीं है।
है। तूने जिस ज़मीन की खुदाई की है, वह रेलवालों
ा है तो स्टेशन मास्टर से जाकर पूछ ले। वहाँ जाकर
भी खानी पड़े…"
ा बेवकूफी मालूम हो गयी। नाराजी से भी अधिक शरम
बदनसीबी को कोसता जल्दी ही वहाँ से चला गया।
में धूल झोंकनेवाले इस रेशमी कमीज़वाले को ढूंढ़ना ही

पर एक शाम पुल के नज़दीक उस आदमी से मुलाकात
से उसकी रेशमी कमीज़ का छोर पकड़ कर खींच

को घुमाकर देखा—तुप्रन ! पहले असमंजस में पड़
खौटा चेहरे पर लगा लिया। बड़े प्यार से कुशल क्षेम
? कोई काम-वाम तो मिल गया है न ? गांव में बीवी-

बड़े प्यार से परिवार का कुशल क्षेम पूछनेवाले मालिक से
मन नहीं हुआ।

फिर किट्टन मुंशी और तुप्रन के बीच बड़ी देर तक बातची
लाप के सम्बन्ध में कुछ भी अंदाज नहीं लगाया जा सकता। ए
मुंशी के घर तक बातचीत करते हुए वे साथ-साथ चले। घर वे
तक तुप्रन किट्टन मुंशी का चेला बन गया था। घर से भी उ
गयी। अगले दिन मुर्गे के बाँग देने से भी पहले किट्टन मुंशी के घ
का वादा करके तुप्रन ने अपने गुरु से विदा ली।

वादे के मुताबिक सुबह ही सुबह चार बजे तुप्रन मुंशी के
गया।

किट्टन मुंशी ने तुप्रन को एक पुरानी कमीज़ पहना दी।
लिए कागज़ का एक बंडल और लोहे की एक बड़ी चाभी दी।

बंडल के अन्दर एक पुराना झाड़ू ही था।

दोनों धुँधलके में सड़क की दक्षिण दिशा में चले। दो
बाद एक ऐसी जगह खड़े रहे, जहाँ कुछ दुकानें थीं।

यह दक्षिण से पान की गाँठों को ढोकर मुसलमानों के
था। दूर से पान की गठरी लिये एक आदमी को आते देखक
कोने में छिपकर तुप्रन को ज़रूरी इशारा किया। तुप्रन तु
आगे बढ़ा। बंडल को खोल कर झाड़ू देने लगा।

पान की गाँठ दुकान के सामने पहुँची। "अरे काका!" तु
गाँठें इस बरामदे में रख लो।"

पानवाले ने अपने सिर से पान की चार गाँठें बरामदे में
की चाभी तो बरामदे में ही रखी थी। दुकान को पहचा
ढोकर वह चला गया।

देहात के पान-व्यापारियों की यही रीति है। सबेरे प
सौंपेंगे। शाम को वापस आते समय उसका पैसा लेंगे।

पानवाले मुसलमान के कुछ दूर पहुँचने पर तुप्रन ने
कागज़ में लपेट लिया और चाभी जेब में डालकर, पान की
कर दूसरी दुकान के सामने चल पड़ा।

किट्टन मुंशी का इशारा मिला। पान की गाँठें ढोये
रहा है।

उसके सिर पर से चार गाँठें नीचे उतार लीं।

यों आधे घण्टे के अन्दर कई दुकानों के आँगन में जा
कर पान की अठारह गाँठें मार लीं।

कुछ भी कहने को
त हुई। उस वार्ता-
ल से लेकर किट्टन
फाटक पर पहुँचने
सको कुछ सलाह दी
र के सामने पहुँचने
घर पर हाजिर हो
हाथ में पकड़ने के
तीन मील चलने के
शहर आने का वक्त
र किट्टन मुंशी ने एक
न्त दुकान की तरफ
प्रन ने पुकारा, "चार
रखीं। दुकान खोलने
न कर बाकी गाँठों को
न की गाँठें दुकान में
को बाँध कर फिर
को कन्धे पर रख
क और आदमी आ
उन्होंने कुल मिला

"सब के कपड़ों को कैसे उतार कर देख सकेंगे ?" कृष्णन ने बताया, पुलिस ने एक आसान तरकीब ढूँढ निकाली है। शक होने पर अनजाने में अचानक एक झापड़ रसीद देती है। चन्दन का टीका लगानेवाला अगर मुसलमान है तो 'अल्ला' ही चिल्लाता है।

एक दिन सुबह को मूँछ कणारन ने दौड़ते हुए आकर बताया, "पलटन पेन्सिल आ पहुँची है।"

"क्या कहा ? पलटन पेन्सिल ?" कृष्णन मास्टर ने ताज्जुब से पूछा।

"हाँ, पलटन पेन्सिल—गोरी पलटन" मूँछ ने ज़ोर देकर कहा।

"पलटन स्पेशल है", कृष्णन मास्टर ने वहाँ इकट्ठे हुए लोगों को मूँछ की बातों का सही अर्थ बताया।

फसादों को दबाने के लिए गोरों की फौज आ गयी है। इस सामाचार ने लोगों को तसल्ली दी। लगातार रेलगाड़ियों में बन्दूकें और भाले लिये सफर करने वाले गोरे बन्दरों-जैसे सैनिकों को अतिराणिप्पाट के मर्द और बच्चे बड़े आश्चर्य और धीरज के साथ देखते रहे। डर के मारे औरतें बाहर नहीं निकलीं। अतिराणिप्पाट में एक यह अफवाह भी प्रचलित हुई कि हथियारों से लैस गोरे सिपाहियों की ये यात्राएँ दंगाइयों को डराने-धमकाने और देशवासियों में सुरक्षा-बोध पैदा करने की एक तरकीब थी। पता नहीं, इस अद्भुत समाचार की सृष्टि किसने की थी ? मूँछ ने उसका प्रचार किया। कई लोगों ने उसका यकीन किया। औरतों ने गाल पर उंगली रखकर आपस में कुछ खुसर-पुसर की।

सिर्फ वेलु की पत्नी उण्णुलि ने ही राय ज़ाहिर की—"झूठी बकवास।"

तब नीलांडन बढ़ई ज़ोर जमाकर बोला, "गोरों के चूतड़ पर ज़रूर पूँछ होगी, छेनी की मूँठ की तरह।"

फौज में गये उसके साले ने ऐसा कहा था।

गोरों की पूँछ को देखने के लिए श्रीधरन और चात्तुण्णि फौज को गाड़ी के इंतजार में रेल की पटरियों के नज़दीक लोहे के बाड़े पर चढ़कर खड़े हो गये। गाड़ी पीछे जा रही थी। काजूफल जैसे मुँहवाले सिपाही पिस्तौल पकड़े बेतरतीब खड़े होकर गा रहे थे।

चात्तुण्णि ने श्रीधरन को धीमे से टहोका और साँस रोककर पीठ फेर खड़े एक सैनिक के चूतड़ की तरफ इशारा करते हुए फुसफुसाया, "अरे ज़रा देख तो ! लपेट कर बाँध रखी है।"

श्रीधरन ने ध्यान से देखा। हाँ ठीक ही है। कुछ लपेटकर बाँध रखा है। पूँछ ही होगी।

उस दिन कृष्णन मास्टर के स्कूल से लौट आने पर श्रीधरन ने हाँफते हुए आकर अजीब समाचार सुनाया।

अतिराणिप्पाटं और उसके आसपास के इलाकों के लोगों को प्रीतिकर यह भद्र महिला है 'रोटीवाली अम्मा'।

पापड़ के आकार की छोटी रोटी का दाम एक पैसा है। दो पैसे देने पर कमल पुष्प की-सी बड़ी रोटी मिलती। अधन्नी देने पर एक पूरे अंडे से वनायी गयी चावल की स्पेशल रोटी मिलती।

यहाँ की 'सफेद रोटी' तो मशहूर है। 'पुट्टु' भी इधर मिलता। केले के पत्तों से बिछे एक दूसरे थाल में गरम पुट्टु भी करीने से रखे होते -- एक टुकड़े के दो पैसे दाम।

इसके अलावा एक बड़ी हाँडी में शक्कर की कॉफी भी तैयार रखी होती। दो पैसे देने पर इच्छानुसार पी सकते हैं।

रोटीवाली अम्मा के यहाँ से सफेद रोटी खरीदकर घर ले जाने के लिए या रोटी, पुट्टु आदि वहीं खाने के लिए कई लोग सुवह से ही आते रहते। कुछ कुलीन घरों से भेजे गये नौकर-चाकर भी रोटियों की प्रतीक्षा में वहाँ बैठे दीखते।

कृष्णन मास्टर के घर में हफ्तेमें दो-एक वार उस अम्मा के यहाँ से रोटी खरीदी जाती थी। जब कभी श्रीधरन को भी भेजा जाता। उस समय श्रीधरन को बड़ा उत्साह होता। खाने के लालच से नहीं, वल्कि सफेद रोटी बनाने के उस वातावरण में थोड़ी देर खड़े रहने और उस अम्मा की आश्चर्यजनक रसोईदारी देखने की इच्छा से ही वह वहाँ जाता। हाँडी में तैयार आटे का घोल कड़ाहियों में डाला जाना, चावल के आटे और ताड़ी के घोल का हाँडी की रासायनिक प्रक्रिया द्वारा ललचानेवाली गन्धों से युक्त रोटी में वदलना और उसके मध्य भाग में सूक्ष्म दानों का उत्पन्न होना---यह सब देखते-देखते श्रीधरन वहाँ बड़ी देर तक समय की चिंता किये विना खड़ा रहता।

कभी-कभी अंगीठी में जलनेवाले नारियल के छिलकों के धुएँ से उसकी आँखों में आँसू आ जाते।

वहाँ मनोरंजन के लिए और वस्तुएँ भी थीं। काला पेण्ट और फटी-टूटी एक खाकी कमीज़ पहन कर कोयल की तरह काला-कलूटा एक आदमी अपने सिर पर पीकदान-जैसी टोपी पहने हिले-डुले विना आँगन की आराम कुर्सी पर धूप में लेटा होता। वह वुड्ढा रोटी वनानेवाली उस अम्मा का आदमी है। जो पहले रिटा-यर हुआ रेल विभाग का फोरमैन। श्रीधरन को लगा कि वेचारा वहां मर जाने के लिए ही लेटा है। उसकी मौत हो गयी है या नहीं, यह जानने के लिए नज़दीक जाने की इच्छा हुई।

उस आँगन में हमेशा चित्रकला का प्रदर्शन होता। अम्मा का बेटा स्नेह पेंटर जो था। पहले घरों में रंग पोतने का धंधा था, आजकल बोर्ड लिख रहा है। नये रंगों और लिपियों के बोर्ड वहाँ सूखने के लिए धूप में रखे होते।

इसके अलावा वहाँ नाचते रहते रंगों का बगीचा भी है। कई रंगों का। गुलाव, डाहलिया, कई रंग के जासौन फूल।

एक दिन सुबह कन्निप्परंपु में कुछ मेहमान आये। श्रीधरन को बुलाकर श्रीधरन की माँ ने हाथ में एक आना रख दिया और धीरे से बोली, "उस अम्मा के यहाँ से जाकर रोटी खरीद ला।"

"एक आने की वारह रोटियाँ।" मन में हिसाव लगाते हुए श्रीधरन रोटी वनानेवाली उस अम्मा की तरफ दौड़ गया।

वहाँ बड़ी भीड़-भाड़ थी। ताश खेलनेवालों की तरह उस अम्मा के हाथ चल रहे थे। ग्राहक अधीर होकर इन्तजार कर रहे थे।

रोटी की प्रतीक्षा में मन मसोसनेवालों को अम्मा ने 'पुट्टु' खाने का निमंत्रण दिया।

पन्द्रह मिनट के वाद श्रीधरन का नम्बर आया। उस अम्मा ने पन्द्रह सफेद रोटियों पर ज़रा-सा नारियल का दूध छिड़कने के वाद केले के झुलसे-से पत्ते में रोटियाँ लपेटकर श्रीधरन को दे दी।

पोटली को दोनों हाथों से पकड़कर श्रीधरन जल्दी-जल्दी चलने लगा। घर में मेहमान इंतजार करते होंगे।

आँगन में, चित्रकार स्तेव के चित्रों के पास पहुँचने पर श्रीधरन की चाल धीमी हो गयी। एक वार देखा। वहाँ पहुँचने पर कुछ मोह मन में उठा— वोर्ड के रंग सूख गये हैं या नहीं। छूकर देखने की इच्छा हुई। रंगों में उँगली डुवोकर लकड़ी की नयी तख्ती पर पेण्टिग करने का मन हुआ। लेकिन वहाँ किसी के आने और देखने की वात स्तेव को विलकुल पसंद नहीं थी। पतलून भर पहने, झुके हुए हाथ में हल्का-सा व्रुश लिये छिलके के रंग में उसे हल्के-से डुवोकर सामने की वड़ी तख्ती पर बड़ी सावधानी से लकीरों, अक्षरों और वाक्यों को चित्रित करनेवाला वदसूरत स्तेव श्रीधरन की परछाईं सामने पड़ने पर 'हट जा, हट जा' वकता हुआ कुत्ते की तरह भौंकने लगा। वोर्ड पर लिखे हुए वाक्य को ठीक से पढ़ा भी नहीं जा सकता। स्तेव सूखने के लिए वोर्ड का सिर उल्टा करके ही रखता। वदमाश ! कोई इसे पढ़ ले तो क्या आसमान इसके सिर पर टूट पड़ेगा ?

श्रीधरन ने मन में ठाना कि उन वोर्डों के कुछ शव्द पढ़े वगैर वह वहाँ से नहीं हटेगा। जासौन के पौधे के नीचे उल्टे सिरवाला एक वोर्ड उसने चुना। उसमें अक्षर कम थे। उससे बातचीत करनी है।

रोटी की पोटली को पीठ की तरफ हटाकर ज़रा झुकते हुए योगाभ्यास के ढंग से निरीक्षण करने पर वह वोर्ड के अक्षर मुश्किल से पढ़ पाया।

"इधर आवेदन पत्र आदि···"कि उसी क्षण श्रीधरन को महसूस हुआ कि उसकी पीठ पर कोई दीवार गिर पड़ी है। चौंकते हुए वह उठ खड़ा हुआ। पंख फड़फड़ाने

की आवाज़ और सिर के ऊपर मँडराती एक चील का विश्वरूप। हाथ की रोटियों की पोटली को चील ने छीन लिया था। पंखों का शोर-शराबा था।

पोटली को छीन लेने की कोशिश में चील ने अपने लम्बे नाखूनों से श्रीधरन को नंगी पीठ और कन्धे को खरोंच लिया था।

पीठ में दर्द महसूस हुआ। श्रीधरन ने पीठ को ज़रा छूकर देखा। खून बह रहा था। ऊपर की तरफ देखा। रोटी की पोटली पैरों में दबाये चील नारियल के पेड़ की ऊँचाई तक पहुँच गयी थी। चारों तरफ देखा। हाथ में ब्रुश लिये सड़े दाँतोंवाला स्तेव हँस रहा था।

रोटी खरीदने के लिए गये बेटे को चाकू खाये की तरह लहूलुहान होते हुए आते देखकर कृष्णन मास्टर बदहवास हो गया।

"रोटी···चील···ले गयी···" श्रीधरन ने रोते हुए कहा।

"जाने दे, कुछ परवाह नहीं।" मास्टर ने बेटे को तसल्ली दी। फिर उसको अच्छी तरह देखते हुए मास्टर ने पूछा —

"तुम्हारी पीठ में चोट कैसे लगी ?"

"चील ने नोच लिया।" श्रीधरन ने ज़मीन पर आँखें गड़ाते हुए कहा।

"क्या रोटी पीट पर रखी थी ?" श्रीधरन की बातों का मतलब न समझकर मास्टर ने कैफियत माँगी।

जवाब नहीं मिला।

शरीर के खून को धोकर दवा मल रही माँ को श्रीधरन ने खुल्लम-खुल्ला सारी बातें बतायीं। नाश्ते के लिए रोटी न मिलने पर भी मेहमानों को हँसाने का अच्छा मौका मिल गया।

उस दिन से श्रीधरन का आसमान में एक जानी दुश्मन पैदा हुआ—चील।

## 15. आयिश्शा

कठफोड़वा के नीलांडन बढ़ई ने श्रीधरन से एक बार अच्छी लकड़ी से एक रेखनी बना देने का वादा किया था। उसके पास बैठने पर वह अपने स्वर्गीय पिता बढ़इयों के मुखिया चेरुकुंजन की वीर कथाओं का बखान करने लगता। चेरुकुंजन बढ़ई ने एक अंग्रेज़ साहब को एक चक्करदार कुर्सी बना दी थी और मोहर्रम के समय मुसलमानों को लकड़ी का एक शामियाना बना दिया था—इस प्रकार स्वर्गीय पिता के बारे में ढेर सारी बातें बताकर वह रेखनी की बात एकदम भूल जाता।

नीलांडन को एक जगह बिठाने के दृढ़ निश्चय के साथ एक दिन शाम को श्रीधरन कठफोड़वा के घर गया। नीलांडन कटहल की एक कुर्सी की मरम्मत कर रहा था। कठफोड़वा अपने उसी कोने में बैठा पंचांग देख रहा था। वह एका-

दशी का व्रत करता है।

श्रीधरन बढ़ई के सामने लकड़ी की एक बड़ी तख्ती पर जाकर बैठ गया। कटहल के सुनहरे रंग की छिपटियों का यहां ढेर बन गया था।

चेरुकुंजन बढ़ई ने गांव के मुखिया को भेंट देने के लिए सोलह दराजवाली चन्दन की एक पेटी बनाकर दी थी। नीलांडन उस किस्से का बखान कर रहा था। तभी पेट को दबाकर रोता हुआ मच्छर गोपालन आता दिखाई पड़ा। बढ़ई और श्रीधरन ने उस तरफ निगाहें घुमायी। मच्छर गोपालन के आंगन में पहुँचने पर मालूम हुआ कि वह पेट के दर्द से नहीं रो रहा था। दरअसल वह रो नहीं, हँस रहा था। हँसी न रोक सकने के कारण उसने पेट दवा रखा था।

गोपालन बरामदे में चढ़ गया। पंचांग देखनेवाले कठफोड़वा के सामने एक वेंच पर औंधे मुँह लेटकर धुमु धुमु - धुमु धुमु — हँसने लगा।

"अरे कोवालन, तुझे क्या अपस्मार की तकलीफ है?" मरक्कोत्तन ने पूछा।

"अपस्मार नहीं गोरा···रा···गोरा" गोपालन पुनः हँसने लगा।

"अरे क्या साव ने पेंट में पेशाव किया है?" कठफोड़वा ने चुटकी ली।

"नहीं तो, नहीं तो···एक गोरा आदमी···केशवन के पीछे दौड़ गया···औरत समझकर···"

कुर्सी बनानेवाले नीलांडन और श्रीधरन ने कान खड़े कर लिये और उसकी बातें सुनने लगे।

बीच-बीच में हँसते हुए मच्छर गोपालन ने इस घटना का ज़िक्र किया : केशवन ने शाम को बाजार से नमक, मिर्च आदि चीजें खरीद कर अंगोछे में बाँध लीं और छाती पर लटका कर चलने लगा। तव शराव के नशे में उन्मत्त एक गोरा सैनिक भीड़ से अलग होकर वहाँ आ पहुँचा। लम्बे बाल लटका कर चलनेवाले केशवन को औरत समझकर गोरा सैनिक उसे पकड़ने के लिए पीछे दौड़ा। पकड़ने के लिए आगे बढ़नेवाले अंग्रेज से 'मैं मुसलमान नहीं···मुसलमान···' चिल्लाकर बेचारा केशवन प्राण हथेली पर रखकर दौड़ने लगा। केशवन और उस गोरे को आगे और पीछे दौड़ते देखकर लोग जोर से हल्ला-गुल्ला मचाने लगे। तव गोरा साहब शैतान बनकर सामने दीख पड़नेवाले लोगों को मारने-पीटने लगा। इतने में एक मिलिटरी लॉरी वहाँ पहुँच गयी और उस कामुक पागल को पकड़ कर ले गयी।

कहानी सुनकर कठफोड़वा बड़ी देर तक हँसी से लोट-पोट होता रहा। श्रीधरन ने कठफोड़वा को हँसते हुए पहली दफा देखा था। आँखें मूंदकर नाक चढ़ा कर चेहरे को ऊपर-नीचे हिलाते हुए कठफोड़वा हँस रहा था। बीच-बीच में उसके गले से कोई विकृत शब्द निकलता।

कठफोड़वा की पत्नी वल्लिक्कुट्टि को रसोई घर के दरवाज़े पर खड़ी होकर

मुँह फाड़ हँसते देखकर मच्छर गोपालन ने मज़ाक में पूछा, "वर्तन में पानी भरने की तरह रसोई से कोई आवाज़ सुनाई दे रही है कि नहीं ?"

तभी गोपालन से नीलांडन वढ़ई ने पूछा, "गोरे लोगों के पूँछ होती है क्या ?"

उसी संदर्भ के बीच मूँछ कणारन आ पहुँचा।

सब लोगों को हँसते देखकर मूँछ को वात पकड़ में नहीं आयी। वह झट छाती पीटते हुए वोला, "मेरे लिए, अव कौन होगा ?"

मूँछ मज़ाकिया है। मुसलमानों की तरह वातचीत करता है। दूसरों की वातचीत ठीक तरह से नकल कर सुनाता है। पति की मृत्यु पर लाश को पकड़कर रोने-धोने और वकनेवाली पत्नी की वह अच्छा नकल कर लेता। दरअसल वही उसका 'मास्टरपीस' था। पति की लाश को सामने पड़ा देख पत्नी की स्वार्थ-चिंता सिर उठाती है—"मेरा अव कौन होगा ?"

लेकिन मूँछ के मज़ाक का उस समय कोई असर नहीं हुआ। उससे भी वड़ा मज़ाक सुनकर ये लोग हँसी से लोट-पोट हो गये थे।

केशवन और गोरे के इश्क की घटना मूँछ को सुनाने पर वह भी अपस्मार रोगी की तरह हो-हल्ला मचाकर आँगन में दौड़ पड़ा। तभी फाटक से एक आवाज सुनायी दी।

"अपस्मार की अगरवत्ती – अपस्मार की अगरवत्ती···"

फिर हल्की-सी धुन में एक गीत भी। इस अगरवत्ती में शामिल एक-से एक दवाओं की एक लम्वी सूची की घोषणा उस गीत में थी।

गायक आँगन में पहुँचा। मेंहदी लगी हुई लम्वी दाढ़ी और तांवे की कटोरी-सा चमकनेवाला गंजा सिर। यह एक मुसलमान वुज़ुर्ग था। उसने लम्वा कोट पहन रखा था। दाहिने हाथ में कपड़े से लपेटी एक वत्ती थी। वायें कन्धे पर एक झोला।

मच्छर गोपालन कठफोड़वा के पास वैठकर उसके कान में कुछ फुसफुसाया। कठफोड़वा ने दवा वेचनेवाले मुसलमान की तरफ आँखें तरेरकर सिर हिलाया।

खामोशी छा गयी।

अपस्मार की वत्ती वेचनेवाला थका-हारा मुसलमान वरामदे में जाकर वैठ गया।

"पीने के लिए कुछ पानी" वूढ़े ने हांफते हुए कहा।

कठफोड़वा ने पीछे की तरफ हाथ हिलाकर इशारा किया - हर्गिज़ मत देना।

मूंछ ने आंगन से उठकर मुसलमान के करीव जाकर कान में वुदवुदाया, "जिहादवाले अव कहां पहुंच गये हैं ?"

सवाल सुनकर वूढ़ा असमंजस मे पड़ गया।

मच्छर गोपालन जोर से वोला—"अरे तुम अपनी वत्तियों को समेटकर फौरन चले जाओ। यही वेहतर है।"

ने उन्हें जड़ी-बूटी नहीं दी थी बल्कि—अच्छा मैं वह बात अभी बताता हूँ।"

कलाल अप्पु ने उसे जो रहस्य बताया था उसने उसे उसके सामने खोल दिया।

अप्पु कुवड़े वेलु के घर के आँगन में शाम को छिलाई के लिए नारियल के पेड़ पर चढ़ा था। कुंजाड़ी फौजी अड्डे से बहन को देखने उस दिन आया था। नारियल के पेड़ से उतरते समय अप्पु ने दरवाज़े से एक अद्भुत दृश्य देखा। कुवड़ा वेलु और आच्चा एक सन्दूक से कुछ निकालकर उसकी जाँच कर रहे हैं। अप्पु ने ध्यान से देखा। उसकी आँखें एकदम पीली पड़ गयी। दरवाजे से रिस आनेवाली धूप में आच्चा के हाथ में लटका बड़ा सोने का हार जगमगा रहा था। जमीन पर पहुँचने पर एक दफा दरवाज़े से झाँककर देखने की अप्पु की इच्छा हुई, लेकिन कुवड़े ने अचानक दरवाज़ा बन्द कर लिया।

मूँछ ने कहा, "अब समझ गये ? कुंजाड़ी अपनी बहन के हाथ में दौलत सौंपकर चला गया था। आच्चा और कुवड़ा रात-दिन उसका पहरा दे रहे हैं।"

"कुंजाड़ी को यह दौलत कहाँ से मिली ?" कठफोड़वा ने अचरज से पूछा।

"ज़मीन के अन्दर से तो नहीं मिली होगी।" मूँछ ने अपना विचार स्पष्ट किया। "विद्रोही मुसलमानों की औरतों को लूटकर या कत्ल करके ले आया होगा। दंगाग्रस्त जगहों से कई लोगों ने सोना जमा किया है।"

"शापग्रस्त सोना होगा।" कठफोड़वा ने ईर्ष्या से कहा।

"सोने पर शाप-वाप कुछ नहीं लगता। जिनका नसीब अच्छा है उनके साथ वह जाएगा।" मच्छर गोपालन ने राय ज़ाहिर की।

रसोई घर से एक लंबी साँस आयी।

"बेचारा वेलु !" मूँछ ने सहानुभूति से कहा : "कुबड़े की मुसीबत ज़रा देखो तो, समुद्र तट की गरी की दुकान में नौकर था। अच्छी तनख्वाह। अब काम पर जाये बिना साले की निधि का पहरा देकर घर में ही भूत की तरह चुपचाप बैठा हुआ है।

"अरे बच्चू, तुझे क्या आज घर नहीं जाना है ?" श्रीधरन से कठफोड़वा ने पूछा।

श्रीधरन ने घर का रास्ता लिया। घर पहुँचने पर ही स्मरण आया कि बढ़ई से रेखनी की बात कहना तो भूल ही गया।

दूसरे दिन सुबह चन्दुमूप्पन के अहाते की उत्तरी पगडंडियों से शोर-शराबा सुनकर श्रीधरन दौड़कर वहाँ पहुँचा। उसने देखा चन्दुमूप्पन और शंकुण्णि कंपाउण्डर के बीच झगड़ा हो रहा है।

"रात को जप-तप और सुबह उठते ही दूसरे की मिट्टी चोरी करना तेरा पेशा है।" शंकुण्णि कंपाउण्डर ने चिल्लाकर चन्दुमूप्पन के हाथ से कुदाल छीनकर

दूर फेंक दी।

चन्दुमूप्पन दाँत निपोर कर मुँह बनाता हुआ चुपचाप खड़ा रहा।

बात श्रीधरन की समझ में आ गयी।

चन्दुमूप्पन के अहाते के नज़दीक उत्तर दिशा में केलु का अहाता है। (लोग उसे कंजूस केलु पुकारते हैं। खाये-पिये बिना उसने पच्चीस बरसों के अन्दर कई खेत और अहाते खरीदे हैं।) केलु का बड़ा लड़का अप्पुण्णि समाज सेवक है और दूसरा लड़का है शंकुण्णि कंपाउण्डर। एक-दो महीने किसी औषधालय में काम कर कंपाउण्डर का बिल्ला हस्तगत कर लिया है। लोगों को लड़वाना और फिर मुखिया बनाकर दोनों पक्षों में समझौता कराकर दोनों से पैसा ऐंठना यही कम्पाउण्डर का पेशा है। सिविल और क्रिमिनल दोनों मुकदमें वह स्वीकार करता। सिविल मुकदमों के सलाहकार के रूप में 'अर्जीनवीस आण्डि' और क्रिमिनल केस के सलाहकार के रूप में रेल-कुली 'गोल केलप्पन' भी हमेशा उसके पीछे रहते। पीला चपटा चेहरा, नाक के नीचे एक छोटी-सी मूँछ और भैंस की आवाज़ वाले इस तगड़े नाटे आदमी का दर्शन उस इलाके के लोगों के लिए हमेशा अपशकुन है। मूँछ कणारन ने उसको 'शकुनि कम्पाउण्डर' का नाम दिया है।

लेकिन चन्दुमूप्पन के साथ के आज के झगड़े में इन्साफ शंकुण्णि कंपाउण्डर के पक्ष में था। चन्दुमूप्पन और कंजूस केलु के अहातों का विभाजन एक छोटी-सी पगडंडी से ही हुआ है। दोनों अहातों के लिए घेराबन्दी नहीं थी। सुबह नहाने जाने से पहले चन्दुमूप्पन थोड़ी कसरत करता, मतलब कुदाल लेकर अहाते में खुदाई। कभी-कभी कसरत का अखाड़ा पगडंडी ही होता। पगडंडी से मिट्टी खोदकर अपनी दीवार पर डालता। लगातार मिट्टी खोदने से पगडंडी की गहराई भी बढ़ने लगी। पगडंडी से मिट्टी मिलने की उम्मीद खत्म होने पर वह कंजूस केलु के अहाते की दीवार से कुछ-न-कुछ मिट्टी खुरचने लगा। कुछ महीनों तक लगातार खुरचने से पगडंडी में कोई कमी नहीं आयी। लेकिन चन्दुमूप्पन का अहाता और पगडंडी एक मीटर उत्तर की तरफ बढ़ गये।

आज सुबह शंकुण्णि कंपाउण्डर ने इस चोरी की प्रक्रिया में चन्दुमूप्पन को कुदाल के साथ रंगे हाथों पकड़ लिया।

"आगे इस पगडंडी में इस ढंग की कार्यवाही देखी तो मैं तुम्हारे हाथ-पाँव काट डालूंगा, समझे—मिट्टी खोदने वाला घूरा संन्यासी।" कंपाउण्डर ने अपनी मूँछ हिलाते हुए कहा।

चन्दुमूप्पन ने कुछ कहना चाहा—तभी हाँफते-हाँफते मूँछ कणारन सामने झपट पड़ा।

"आपने सुना नहीं ?" मूँछ ने बड़े आवेश में कहा, "अतिराणिप्पाट में एक आयिश्शा आ गयी है।"

"आइश्शा ?—कौन आइश्शा ?"

चन्दुमूप्पन ने अपने नुकीले चेहरे को हिलाते हुए पूछा।

मूँछ चन्दुमूप्पन के पास आकर खड़ा हो गया (शकुण्णि को अनदेखा कर दिया।)

"एक आयिश्शा बीबी – बड़े घर की बेटी है। सोने के ढेर सारे आभूषणों से सजी हुई है वह। देखना हो तो कुबड़े वेलु के बरामदे में जाकर देखो।"

चन्दुमूप्पन कुछ समझे बगैर दाँत निपोरकर हँसने लगा।

तब मूँछ ने चन्दुमूप्पन के कान में कुछ खुसफुस की।

"हाय ! क्या कुबड़े वेलु की बीबी आच्चा को पागलपन सवार है ?"

चन्दुमूप्पन अनजाने में ही ज़ोर से पूछ बैठा।

श्रीधरन कुबड़े वेलु के घर की तरफ दौड़ पड़ा।

वहाँ आँगन में भीड़ लगी थी—एक तरफ मर्द—दूसरी तरफ औरतें और बच्चे। सब लोगों ने अचरज के साथ बरामदे में निगाह डाली।

बरामदे के बीचोंबीच सारे शरीर पर सोने के आभूषण पहने एक स्त्री एक तख्त पर बैठी है। उसने मुस्लिम स्त्रियों की तरह जरी से सिर ढक रखा है। वह कभी-कभी मोती-जैसे अपने दाँत दिखाकर हँसने लगती है।

किसी को भी अचानक मालूम नहीं हुआ कि वही आच्चा है।

बरामदे के एक कोने में घटनों के बीच सिर छिपाये कुबड़ा आलसी की तरह बैठा था।

सब लोग डरे हुए ही आँगन में खड़े थे।

तभी बालों को बाँधते हुए आराकश वेलु की पत्नी उण्णूलि दौड़ी आयी।

उण्णूलि सीधे आँगन में पहुँच गयी। आच्चा को एक बार निहारने के बाद कुशलक्षेम के लहजे में पूछ बैठी, "आच्चा यह सब क्या है ?"

आच्चा 'ह—ह—ह—हि-हि—हि-ह—ह' करके हँसने लगी। सिर से घूँघट को खींचकर ठीक कर लिया। फिर आँगन की तरफ आँखें फाड़कर देखने लगी।

उण्णूलि ने आच्चा के एक-एक गहने की जाँच की। सब के सब सोने के ही थे।

"आच्चा, यह सब तुम्हें कहाँ से मिला ?" उण्णूलि ने बड़े प्यार से पूछा।

"हा—हा हि—हि—हि" आच्चा हँसने लगी। फिर खामोशी साध ली।

उण्णूलि कुछ देर वहाँ खड़ी रही। फिर निराशा के साथ सिर झुकाकर आँगन में उतरकर दूसरी औरतों के साथ खड़ी हो गयी।

मुसलमान-औरतों के गहनों से परिचित होने के कारण ओरन बटलर की बीबी कुंजप्पु आच्चा के गहनों की तरफ इशारा करके दूसरी स्त्रियों को उनके नाम बताने लगी।

"ये सब इसे कहाँ से मिले ?" परंगोटन की पत्नी कोच्ची ने दाँतों तले उँगली दबाकर पूछा।

"पुराने कुट्टाप्पु ठेकेदार ने दिये होंगे।" आच्चा के पुराने इतिहास का स्मरण करते हुए माक्कोत्ता की अम्मिणी ने अपना विचार प्रकट किया।

"अरी अम्मिणी, तू तो निरी बुद्धू है।" उण्णूलि ने अम्मु की हँसी उड़ायी।

"ठेकेदार क्या मुसलमानी गहने बनवाता ?"

यह सब सुनती कठफोड़वा की पत्नी वल्लिक्कुट्टि नज़दीक ही खड़ी थी। उससे रहा न गया।

"आच्चा को बड़े भाई कुंजाड़ी ने ये जेवर सौंपे थे।" वल्लिक्कुट्टि ने सबसे लुक-छिपकर धीमी आवाज़ में बताया।

"दंगों के बीच एक बड़े घर की औरत को कत्ल करके ये सब छीन लिये थे..."

यह सुनकर दूसरी औरतें अपनी छाती पर हाथ रखकर दम साधे खड़ी रह गयीं।

"वल्लिक्कुट्टि क्या यह सच है ?" लक्ष्मण ड्राइवर की माँ मोटी अम्मालु ने रोती हुई आवाज़ में पूछा।

"जिसने अपनी आँखों से देखा, उसी ने बताया था," वल्लिक्कुट्टि ने ज़ोर देकर कहा।

"तो मैं कहे देती हूँ। आच्चा पर उस मुसलमान औरत का भूत सवार है।" कोच्ची ने सिर हिलाते हुए कहा।

"मुसलमान का भूत हिन्दुओं को नहीं छूता।" उण्णूलि ने सिर हिलाते हुए कहा।

मोटी अम्मालु ने उण्णूलि की बात की पुष्टि की।

"फिर आच्चा को हुआ क्या ?" कोच्ची ने पूछा।

"पागलपन।" वल्लिक्कुट्टि ने सिर खुजाते हुए बताया।" सोने का पागलपन। इतने ढेर सारे के गहनों को घर की पेटी में बंद कर रखना आच्चा सह न सकी। उन्हें देखकर उस पर पागलपन सवार हो गया। वही हुआ—देखो तो आयिश्शा लग बैठी आच्चा को।

## 16. औरत, सोना और पुलिस

उस दिन अतिराणिप्पाटं में एक लाल टोपी दिखाई पड़ी—एक पुलिस कोन्स्टेबिल।

अतिराणिप्पाटं में लाल टोपी का आना एक अपूर्व घटना है। औरतों ने आँगन

में उतर कर आँखें फाड़कर देखा। बच्चे डरकर घर के अन्दर जाकर छिप गये। आराकशों के दोपहर को भोजन के लिए आने का वक्त था। उनमें कुछ लोग लाल टोपी से कुछ दूर पीछे-पीछे उत्कण्ठा से आगे बढ़ने लगे।

उनके अंदाज के मुताबिक लाल टोपी कुबड़े वेलु के घर में चली गयी।

आच्चा कभी-कभी 'हि हि ह हि' कर हंस देती। वह सभी आभूषणों से सज-धजकर उस समय भी बरामदे में बैठी है। घुटनों के अन्दर सिर झुकाकर एक कोने में कुबड़ा भी चुपचाप बैठा है।

पुलिस के सिपाही कुंजिक्कण्णन नंपियार ने बरामदे में चढ़कर आच्चा को एड़ी से लेकर चोटी तक देखा।

जूतों की आवाज़ सुनकर कुबड़े वेलु का सिर ज़रा ऊपर उठ आया। लाल टोपी को देखते ही कुबड़े का सिर फिर घुटनों के पिंजड़े में छिप गया – घुटने काँपने भी लगे।

पुलिसवाले का हाव-भाव देखकर आच्चा लज्जा और शृंगार भाव के साथ 'ह ह हि हि बकने लगी। उसने अपने सिर का पल्लू खींचकर चेहरे को ज़रा ढक लिया और उसकी ओट से पुलिसवाले को छिपकर देखा।

मुर्गी को देखकर मुर्गे की जो हालत होती है, उसी तरह आच्चा को देखकर पुलिसवाले की दशा हुई।

पुलिसवाला बड़ी अकड़ के साथ वेलु की तरफ मुड़ा। उसके गंजे सिर पर उसने लाठी से दो बार टकोरा।

"अरे, इधर देख।"

वेलु ने चेहरा ऊपर नहीं उठाया। फूटी आँखों से भी नहीं देखा ऊधर। झट पुलिस के पैरों पर गिर पड़ा। "हुजूर, मुझे बचाइए, बचाइए।"

"अरे तू झटपट उठ।" सिपाही ने जूतों से वेलु के चेहरे पर ठोकर दी। "तुझसे कुछ पूछना है।"

वेलु नीचे डालने के लिए रखे हुए सूखी गरी के बोरे की तरह बैठ गया।

सिपाही कुंजिक्कण्णन नंपियार बरामदे में बैठकर एफ. आई. आर. तैयार करने लगा।

तुम्हारा नाम क्या है?

"वेलु" कुबड़े ने ज़मीन पर आँख टिकाये दुख के साथ बताया।

"पिता का नाम ?"

"कट्टुंगोन।"

"घर का नाम ?"

"कुरुक्कनकण्टि।"

"आयु ?"

"अड़तालीस ।"

"पेशा ?"

"समुद्री-तट की एक दुकान में सूखी गरी को तौलना ।"

"तुझे सूखी गरी तौलने पर कितना पैसा मिलता है ? क्या दिन भर में सौ रुपया मिल जाता ?"

दिन भर में सौ रुपये की बात सुनकर सिपाही की मूर्खता पर विचार करता वेलु अनजाने में हँस पड़ा ।

"शट अप !" सिपाही ने जूता ज़मीन पर पटकते हुए कहा ।

"मूर्खों की-सी तेरी हँसी को मैं जल्दी ही भुला दूँगा । पहले सवालों का जवाब दे ।"

"एक रुपया मिल जाता है ।"

"ठीक है, दिन में एक रुपया ।"

वेलु ने सर हिलाया ।

"इधर बैठी औरत से तेरा क्या रिश्ता है ?"

"आच्चा मेरी ब्याही औरत है ।"

"ठीक है । तेरी औरत के शरीर पर जो सोने के गहने दिखाई दे रहे हैं, क्या तूने ही उसे दिये थे ?"

कोई जवाब नहीं मिला ।

"अरे, सुना नहीं ? (जूता फिर ज़मीन पर पटकते हुए) क्या ये सब आभूषण तुमने ही उसे दिये थे ?"

कुबड़ा चुप रहा ।

इस बीच एक और आदमी उधर आ गया । आँगन के एक कोने में खड़े हुए अतिराणिप्पाटं के लोगों ने इस आदमी को ज़रा आशंका से देखा ।

"शंकुण्णि कम्पाउण्डर !"

तोंद और कमीज के ऊपर दुपट्टा लपेट कर मोटा-ताजा शंकुण्णि कम्पाउण्डर उतावली में हिलता-डुलता-सा चलता था । कभी-कभी नाक और मूँछ को सिकोड़-कर कुछ चेष्टाएँ भी दिखाता चलता ।

कम्पाउण्डर ने सीधे बरामदे में चढ़कर नफरत भरी निगाहों से सिपाही को देखा, फिर लाल टोपी से पूछा :

"आप इधर क्यों आये ?"

सिपाही कुंजिक्कण्णन नंपियार ने अधिकार के मद में कम्पाउण्डर को देखा, "यह पूछने वाले तुम कौन हो ?"

"मैं इस इलाके का मुखिया हूँ ।" कहते हुए कम्पाउण्डर ने आँगन में खड़े लोगों की तरफ निगाहें घुमायीं । भीड़ से गपिया परंगोटन ने 'हाँ' सूचक सिर

हिलाया। तब और भी कुछ लोगों ने अपना-अपना सिर हिलाया।

"वर्दीधारी पुलिस इधर क्यों आयी है, मुझे यह जानना ही चाहिए।" कंपाउण्डर ने लोगों को सुनाने के लिए भैंसे की-सी आवाज में गर्जन किया।

सिपाही घृणा से हँस पड़ा, फिर अधिकार भरे स्वर में बोला, "मैं एक मुकदमें की कैफियत लेने आया हूँ।"

"कौन-सा मुकदमा ? कैसी कैफियत ? किस के हुक्म से ?" कम्पाउण्डर हाथ उठाकर चिंघाड़ा।

"सुप्रेण्ड (सुपरिण्टेण्डेण्ट) साब का हुकम है।" सिपाही भी दहाड़ते हुए बोला।

"इसके लिए यहाँ हुआ क्या है ?" कम्पाउण्डर ने लगातार तीन बार अपनी नाक और मूँछ हिलायीं।

"मुझे इन सब बातों को आप से कहने की ज़रूरत नहीं है।" पुलिस ने अपने स्वर और भाव को ज़रा बदलते हुए अपना काम जारी रखा। "फिर भी मैं कहूँगा। उधर बैठी औरत के आभूषणों के सम्बन्ध में जाँच पड़ताल करने मैं इधर आया हूँ।"

"क्या राज्यपाल साब का ऐसा आदेश है कि औरत को आभूषण नहीं पहनना चाहिए ?" कम्पाउण्डर ने चुटकी लेकर पूछा। उसने आँगन में एकत्रित लोगों की तरफ देखा। वे लोग कंपाउण्डर का रसिक सवाल सुनकर उसे मुबारकबाद देते हुए हँस रहे थे।

"औरतें अपना आभूषण पहन सकती हैं। कोई एतराज़ नहीं है।" पुलिस ने स्पष्टीकरण दिया।

"इस औरत का सोना और आभूषण इसका अपना नहीं है, यह आप से किसने कहा ?" कम्पाउण्डर ने पूछा।

पुलिसवाला कुछ देर तक चुप रहा। आँगन में खड़े लोगों ने समझा कि कम्पाउण्डर ने लाल टोपी को बिलकुल पछाड़ दिया है।

तब कांस्टेबिल कुंजिक्कण्णन नंपियार एक लम्बे भाषण की तैयारी कर रहा था :

"मुझे इन सब बातों को आप लोगों से कहने की कोई ज़रूरत नहीं है— फिर भी मैं कहूँगा। फौजी पड़ाव का रसोइया कुंजाड़ी एक बड़े अमीर मुसलमान की बीबी को कत्ल कर उसके सभी आभूषणों को हड़प कर भाग गया था। कुंजाड़ी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।"

"हाय भगवान ! कुंजाड़ी को पुलिस ने पकड़ लिया !" कुबड़ा वेलु छाती पर हाथ रखकर फफक-फफक कर रोने लगा।

आच्चा उस समय भी 'ह-ह हि हि' मंत्र जप रही थी। पुलिस ने उस पर ध्यान नहीं दिया। उसने भाषण जारी रखा : "इन गहनों को कब्जे में लेने के

लिए सुप्रेण्ड साव ने मुझे भेजा है। गहनों को ही नहीं, इस औरत और कुबड़े वेलु को भी गिरफ्तार करके ले जाने का सुप्रेण्ड का हुक्म है···।"

लोग आपस में खुसुर-फुसर करने लगे। कुछ लोगों को दुख हुआ। कुछ लोगों ने राय दी कि आच्चा को ऐसा ही सबक मिलना चाहिए। कुछ औरतों को चोरी के गहने पहननेवाली आच्चा और उसके पति कुबड़े वेलु को गिरफ्तार कर सड़क से जाने का दृश्य देखने की इच्छा हुई।

"आच्चा के हाथ में क्या हथकड़ी पहनाएँगे ?" गपिया पंरगोटन ने मानुक्कुट्टन से पूछा। मानुक्कुटन ने 'हाँ' कहा।

कम्पाउण्डर थोड़ी देर तक चिन्तामग्न खड़ा रहा। फिर कुबड़े की तरफ देखकर बोला, "अरे, वेलु, यह मैं क्या सुनता हूँ ? क्या ये आभूषण साले कुंजाड़ी ने दिये थे ?"

कुवड़ा फूट-फूट कर रोने लगा। उसने कुछ नहीं वताया।

सिपाही कुंजिक्कण्णन नंपियार उठ खड़ा हुआ।

"मुझे तो ऊपर के आदेश का पालन करना है। अरे, अपनी औरत का हाथ पकड़कर पुलिस-स्टेशन की तरफ चल।"

"कम्पाउण्डर मुझे वचाइए···" कुबड़े ने कम्पाउण्डर के पाँव पकड़ लिये।

कम्पाउण्डर वेलु को उठाते हुए वोला, "अरे तू अन्दर आ। कुछ बातचीत करनी है।"

कम्पाउण्डर और कुवड़े ने अन्दर घुसकर दरवाज़ा बन्द कर लिया और एक कोने में खड़े होकर बातचीत करने लगे।

कम्पाउण्डर ने पूछा, "अरे तूने आच्चा को गहनों से लादकर बरामदे में क्यों विठाया ?"

"मैं क्या करूँ कम्पाउण्डर ?" वेलु ने दुखी होकर कहा। "उसने पागल होकर ही यह काम किया था न ? मैंने उसके शरीर से गहनों को हटाने की कोशिश की, तो उसने छुरा लेकर मुझे मारने की चेष्टा की। तख्ते पर आच्चा ने छुरा रख लिया है। उसके पास जाते समय सावधानी बरतने की ज़रूरत है। जब उसे शक होगा कि गहनों को उतारने के लिए कोई आया है तो वह निश्चित ही छुरा भोंक देगी। कम्पाउण्डर जी, हालत यही है।"

कम्पाउण्डर ने सिर हिलाते हुए कहा : "वेलु, ऐसी बातें न कह। स्थिति बहुत ही नाजुक है। पुलिस तुझे और आच्चा को अभी पकड़कर ले जायेगी। पुलिस-स्टेशन पर पहुँचने पर सच कहने पर भी मार ही मिलेगी। फिर तू क्या करेगा ?"

कुवड़े ने सिर पटक कर कहा, "हाय, मेरी फूटी किस्मत !"

"फूटी किस्मत नहीं। सब तेरी ही करतूत है। कम्पाउण्डर ने मूँछ और नाक हिलाते हुए कुबड़े की भर्त्सना की। "मुसलमान औरत की हत्या कर कुंजाड़ी

ने जब चोरी का माल तुझे दिया, तव तूने क्या सोचा था ? अव वचाने के लिए कम्पाउण्डर चाहिए न ?"

"अब तो यह एक गलती हो ही गयी। आगे से कम्पाउण्डर के कहे अनुसार ही करूँगा।" कुबड़ा रो पड़ा।

"हाँ, जो हुआ सो हुआ। गहनों को पुलिस ले जावे। तुझे और आच्चा को पुलिस स्टेशन के दरवाज़े पर न जाना पड़े, इस के लिए कुछ वन्दोवस्त करना पड़ेगा।"

कम्पाउण्डर थोड़ी देर चिंतामग्न खड़ा रहा।

"कम्पाउण्डर जो कहें वही करूँगा" कुवड़े ने फिर दोहराया।

"वह कांस्टेविल एक लालची नंपियार है। उसे कुछ न कुछ देकर काम ठीक करना होगा। तेरे हाथ में कितना पैसा है ?"

कम्पाउण्डर जी, मेरे हाथ में कुछ है ही नहीं। सन्दूक में तलाशने पर मुश्किल से चवन्नी मिलेगी।"

कुबड़े ने सच्ची बात ही कही थी।

"अरे वेलु, ऐसी हालत है तो पुलिस के साथ चला जा।" कम्पाउण्डर ने व्यंग्य किया—"एक तरह से देखें तो वही तेरे लिए अच्छा है। तेरा कूवड़ तो पुलिस ठोक-पीट कर ठीक करेगी ही, कुंजाड़ी ने जिस मुसलमान औरत का कत्ल किया है, उस के लिए तुझ पर मुकदमा भी दायर होगा। फिर जेल में सुख-चैन से रह सकेगा।"

"हाय, ऐसा न कहिये, कम्पाउण्डर।" कुवड़े ने फूट-फूट कर रोते हुए छाती और पेट सहलाया।

"कम से कम दस रुपये इस लालची नंपियार को देना होगा। तभी मैं उससे कुछ कह सकूँगा।" कम्पाउण्डर ने सलाह दी।

कुबड़े ने कुछ देर तक विचार किया। फिर धीमी आवाज़ में कहा, "आच्चा ने अपनी निजी धरोहर ज़मीन में दफना रखी है। लेकिन उसका भेद खुल जाने पर वह मेरी हत्या कर देगी। फिर भी···"

"अरे, फौरन उसे ले आ।" कम्पाउण्डर ने कहा।

आच्चा की बचत रसोईघर के एक कोने में गड़ी रखी थी। निशाना देखकर वेलु ज़मीन खोदने लगा।

कम्पाउण्डर ने भी उसकी मदद की। मिट्टी का एक वर्तन वाहर निकाला। उसमें एक छोटी-सी गाँठ थी। कम्पाउण्ड़र ने गाँठ खोली तो कुछ सिक्के और नोट दिखाई पड़े।

कम्पाउण्डर ने जल्दी से वह गाँठ बाँधी और उसे अपनी धोती के नीचे जांघिये की जेव में डाल ली। अब वह बरामदे की तरफ बढ़ा। मन ही

मन कोसते हुए कुबड़ा भी उसके पीछे चला।

कांस्टेबिल नंपियार तब भी रिपोर्ट तैयार कर रहा था।

कम्पाउण्डर ने कुंजिक्कण्णन नंपियार के पास जाकर, बड़ी देर तक कुछ भेद भरी बातें कीं।

पुलिस ने सिर हिलाते हुए इतनी जोर से जवाब दिया कि बाहर आँगन में खड़े हुए लोग भी सुन सकें।

"सारे गहनों के साथ इस औरत को और चोरी के माल को छिपाकर रखने वाले वेलु को तुरन्त लाने का ही सुप्रेंड का आदेश है। उनके हुक्म के खिलाफ मैं कुछ भी नहीं करूँगा।"

तब कम्पाउण्डर ने बड़े अदब से पूछा, "इन गहनों को आप ले जाइए। आच्चा और वेलु को फिर हाज़िर करने में क्या कोई हर्ज़ है?"

कांस्टेबिल ने इनकार में सिर हिला दिया।

कम्पाउण्डर ने याचना के लहजे में फिर विनती की, "हेड कांस्टेबिल साहब यों हठ न कीजिए—ज़रा रहम कीजिए। औरत पर पागलपन सवार है। वेलु भोला-भाला है। तीन चार दिन से फाकों का मारा है। इस हालत में उसे पकड़-कर ले जाना बड़े दुख की बात होगी····· "

सिपाही ने पेन्सिल दाँतों के बीच दबाकर थोड़ी देर तक सोचा। फिर उसने वेलु और आच्चा पर सरसरी निगाह डाली। आच्चा 'ह ह ··हि हि—'हँसी को दबाकर ज़रा गरिमा के साथ बैठी है। कुबड़ा पुलिस की तरफ हाथ जोड़कर खड़ा है। लगता है कि कांस्टेबिल नंपियार के चेहरे का रौद्र भाव सहानुभूति में बदल गया। वह कम्पाउण्डर को देखकर बोला, "अच्छा, इस औरत और इसके पति को आदेश के मुताबिक स्टेशन पर हाज़िर करने की जिम्मेदारी क्या तुम अपने ऊपर लेते हो?"

"हाँ, वह जिम्मा मेरे ऊपर रहेगा।" कम्पाउण्डर ने अपनी छाती छूते हुए कहा।

"फिर गहनों की······"

कम्पाउण्डर ने एक बंधे बंधाये इशारे से झटपट सूचना दी, "इस विषय में अभी कुछ न कहिए। और छाती सहलाते हुए इसका बंदोबस्त भी स्वयं करने का इशारा किया।

फिर खामोशी छा गयी।

कम्पाउण्डर ने हाथों को पीछे की तरफ रखकर आच्चा के सामने झुकते हुए आभूषणों से दमकती उसकी खूबसूरती को बधाई देने के बहाने चेहरे पर मधुर मुस्कान बिखेर ली।

तब आच्चा के चेहरे पर लाज से सनी हुई मधुर मुस्कान खिल उठी। उसने

सिर के घूँघट से आँखों को ढक लिया। उसी समय मौका पाकर कम्पाउण्डर ने हौले से हाथ फैला कर उसके पीछे के तख्ते पर छिपा हुआ छुरा उठा लिया। कम्पाउण्डर ने चाकू पीछे छिपाकर वेलु को इशारा किया कि आच्चा के गहनों को हटाओ।

कुबड़ा पहले सकपकाया। जब उस को मालूम हुआ कि आच्चा अब निहत्थी है तो धीरे-धीरे आच्चा के पीछे होकर काले नाग को पकड़ने के भाव से उसने उसकी गर्दन की तरफ हाथ बढ़ाया।

आच्चा तिरछी निगाहों से सब कुछ देख रही थी। ज्यों ही कुबड़े के हाथ ने आच्चा की गर्दन छुई, त्यों ही आच्चा का हाथ तख्ते के नीचे की तरफ मुड़ गया। उसने तलाश की, वहाँ छुरा नहीं था।

आच्चा बाघिन की तरह दाँत निकाल कर गुर्रायी। फिर अचानक उसने वेलु का हाथ अपने मुंह में लेकर काट लिया। वेलु की दो-तीन उँगलियाँ आच्चा के मुँह में फँस गयीं। वेलु ने हाथ खींचने की कोशिश की, पर आच्चा ने नहीं छोड़ा।

"हाय बाप रे।" कुबड़ा असहनीय दर्द के मारे चीख पड़ा।

तब कम्पाण्डर ने हौसले के साथ आच्चा की नाक को जबर्दस्ती पकड़कर दबा दिया। दम घुटने पर उस का मुँह खुल गया। यों वेलु की उँगलियाँ बच गयीं।

लहूलुहान उँगलियों और हाथ को झटका देता कुबड़ा रो-रोकर कोसता हुआ वहाँ से हट गया।

उस खतरनाक औरत की करतूत को देखकर सिपाही सामने आया।

कांस्टेबिल कुंजिक्कण्णन नंपियार आच्चा के सामने झुककर लाठी को ऊपर उठाते हुए गरजा "हूँ! जरा हिली-डुली तो पीट कर तेरी···।"

आच्चा ने अचानक उसके चेहरे पर थूक दिया।

कांस्टेबिल नंपियार ने 'छी धत्' कह कर आँख और नाक पोंछी। फिर उसने आग्नेय नेत्रों से आच्चा को देखा।

आच्चा ने जीभ निकाल कर मुंह बनाया। सिपाही ने मदद के लिए कम्पाउण्डर को पुकारा।

कम्पाउण्डर ने हाथ का छुरा दूर आँगन में फेंक कर आच्चा को दबोच लिया। आच्चा हाथ-पांव मारकर जोर से चिल्लाने लगी। उसकी धकापेल पर ध्यान दिये बगैर सिपाही ने उसके सिर की धोती से उसके हाथों को पीछे से बांध दिया।

आच्चा के गर्जन से अतिरणिप्पाटं हिल उठा। उस समय कम्पाउण्डर ने जेब से रूमाल निकालकर आच्चा के मुंह में ठूंस दिया।

उस वक्त आंगन में इकट्ठे हुए लोगों की प्रतिक्रियाएं कई प्रकार की थीं। कुछ लोगों ने 'हाय बेचारी' कहकर हमदर्दी जाहिर की। कुछ लोगों के लिए यह

महज़ एक तमाशा था। कुछ ईर्ष्यालु औरतें दाँत किटकिटा कर अँगूठा दिखाते हुए चिल्लायीं, "अच्छा ही हुआ। आच्चा के साथ ऐसा ही होना था। झूठी कहीं की।"

आच्चा के कान और गले के सभी गहने लाल टोपीवाले ने उतार लिये। तभी एक और मुसीबत का अहसास हुआ। कंगन और चूड़ियाँ उतारने के लिए हाथों को वन्धन मुक्त करना था। बन्धनमुक्त होने पर आच्चा क्या काबू में रहेगी ?

सिपाही ने बड़ी सावधानी पूर्वक आच्चा को बन्धनमुक्त किया। उसका एक हाथ तो कम्पाउण्डर के हाथ में दिया, दूसरा उसने अपनी हिरासत में ही रखा। फिर आच्चा की पीड़ा और कराह को नज़रअंदाज़ करके कंगन और चूड़ियाँ जवर्दस्ती उतार उसे फिर अच्छी तरह बाँध दिया।

वेंच पर गहनों का ढेर रख दिया गया और एक-एक का वज़न देखकर सिपाही कुंजिक्कण्णन उन चीज़ों की सूची तैयार करने लगा, "स्वर्ण हार वजन करीब आठ गिनी।"

"कंगन जोड़ी दो—हर एक का वज़न दो गिनी···।"

इस तरह गहनों के नाम और वज़न आदि की सूची उसने कम्पाउण्डर और वहाँ के उपस्थित दूसरे लोगों को ज़ोर से पढ़कर सुनायी।

कम्पाउण्डर ने सूची और गहनों को मिलाकर देखा : ठीक है। अब गवाहों के हस्ताक्षर चाहिए।

रिपोर्ट के नीचे बाँये कोने में कंपाउण्डर ने 'वेलिक्कल शंकुण्णि' लिखकर अंग्रेज़ी में हस्ताक्षर किये।

"एक और संभ्रांत व्यक्ति झटपट इधर आये और गवाह के हस्ताक्षर दिये।" आँगन में एकत्रित लोगों की तरफ निगाह डालकर कुंजिक्कण्णन नंपियार ने आवाज़ लगायी।

लोगों के बीच से गपिया परंगोटन फौरन आगे बढ़ा। अभी तक परंगोटन को गवाह के हस्ताक्षर करने का मौका नहीं मिला था। आज एक अच्छा अवसर मिला है।

कंपाउण्डर के हस्ताक्षर के नीचे बड़े ध्यान से 'मेल्लुप्पुल्लि परंगोटन' लिख-कर, मकड़ी के जाल की तरह, श्री लिखकर गपिया परंगोटन ने हस्ताक्षर किये।

कुंजिक्कण्णन नंपियार सभी गहनों को एक कागज़ में लपेटकर अपनी जेब में डालकर आँगन में उतरा। उसने ज़रा मुड़कर कम्पाउण्डर को इस बात का स्मरण कराया कि संदेशा भेजने पर तुरन्त इन लोगों को स्टेशन में हाज़िर किया जाए।

"ज़रूर।" कम्पाउण्डर ने अपनी छाती पर हाथ से थपकी देते हुए सिर झुका-कर जवाव दिया।

सिपाही ने एक वार आच्चा को देखा। वह 'ह ह—हि हि—ह ह' की आवाज़ निकाल रही थी। लेकिन वह हँसी नहीं थी, गम का चीत्कार था।

कुवड़े वेलु को तसल्ली देने के लिए कम्पाउण्डर वहीं खड़ा रहा। सिपाही के चले जाने पर आँगन में इकट्ठा हुए लोगों में से हाथीपाँववाले अय्यपन और धोवी शंकरन वगैरह को छोड़कर वाकी सब लोगों ने अपना-अपना रास्ता नापा।

"मैं फिर आऊँगा।" नाक और मूँछ हिलाते हुए कम्पाउण्डर ने विदा ली। वह हाथों को ज़ोर से हिलाते हुए तेज़ी से चला गया।

एक घंटा वीत गया।

कुबड़ा, हाथीपाँववाला और वैद्यर मिलकर अच्चा के उन्माद के इलाज की चर्चा कर रहे थे कि मूँछ कणारन आँगन में प्रकट हुआ। कणारन ने आँगन के बीच खड़े होकर तीन बार 'हूँ हूँ हूँ' की आवाज़ की।

"अरे कणारन, तू किस वजह से यों उल्लू की तरह शोर मचा रहा है !" हाथीपाँववाले अय्यप्पन ने पूछा।

मूँछ ने व्याख्या की, "जिस आदमी ने चोरी की हो उसके चोरी करने के बाद हूँ—हूँ – हूँ वस तीन दफा बोलना काफी है।"

धोबी शंकरण को उसका व्यंग्य समझ में नहीं आया। फिर भी वह इस अर्थ में सिर हिलाकर हँस दिया, मानो उसको सब कुछ मालूम हो गया है।

कुबड़े और मूँछ को इसका मतलब बिलकुल समझ में नहीं आया। उन दोनों ने एक-दूसरे की तरफ घूमकर देखा।

मूँछ वरामदे में जाकर कुवड़े के नजदीक बैठ गया। फिर उसने पूछा, "पुलिस स्टेशन नहीं जाना है ?"

"नहीं तो, कम्पाउण्डर ने जमानत दे दी है।" कुबड़े ने शान से बताया।

"आच्चा के गहने कहाँ चले गये ?"

"एडनशेल (हेड कान्स्टेबिल) सुप्रैंड साव (सुपरिण्टेण्डेण्ट साहव) के सामने हाज़िर करने के लिए ले गये हैं।"

मूँछ ठट्ठा मारकर हँस पड़ा।

"तुम जानते हो, वह बदतमीज नंपियार गहनों को कहाँ पेश करने ले गया है ?"

"कहाँ ?" कुवड़े और अय्यप्पन ने एक ही लहज़े में पूछा।

"रेल के फाटक पर।" मूँछ ने उन्हें लालटोपीवाले द्वारा गहनों को कागज में लपेटकर ले जाने के बाद का किस्सा सुनाया।

'एडनशेल' नंपियार और शंकुण्णि कम्पाउण्डर को वेलु के वरामदे में देखते ही मूँछ को ज़रा शक हो गया था। जव पुलिसवाला आच्चा के शरीर के गहनों को उतारकर कागज़ में लपेटकर चला गया, तभी खुफिया पुलिस की तरह मूँछ ने उनका पीछा किया। नंपियार ने फाटक घर में घुसते ही दरवाजा वंद कर लिया। मूँछ ने नज़दीक की एक दुकान से छिपकर देखा। थोड़ी देर वाद शकुण्णि कम्पाउण्डर

भी फाटक-घर में आ पहुँचा। उसने अन्दर घुसकर बड़ी फुरती से दरवाज़ा बन्द कर लिया। तभी मूंछ को भरोसा हो गया कि वेलु के बरामदे में जो षडयंत्र रचा गया था, उस सबके पीछे नंपियार और शंकुण्णि कम्पाउण्डर की साजिश थी। पुलिसवाले को इधर लानेवाला शंकण्णि कम्पाउण्डर के सिवा और कोई नहीं था।

मूंछ ने फाटक-घर के पीछे जाकर दीवार से सटकर खड़े होने के बाद कान लगाकर ध्यान से सुना। नंपियार और शंकुण्णि आच्चा के शरीर के गहनों का बँटवारा कर रहे थे। जब मूंछ वहाँ से हटने की सोच रहा था कि फाटक-घर की खिड़की से उन्होंने एक पीला कागज़ मोड़कर फेंका। वह कागज़ मूँछ के पास ही गिरा। मूंछ ने जेब से वह पीला कागज निकालकर कुवड़े, धोबी वैद्यर और हाथीपाँववाले को जोर से पढ़कर सुनाया।

स्वर्ण माला। वजन करीब आठ गिनी। कंगन जोड़ी दो—वजन करीब हर-एक का दो गिनी। सोने की करधनी। वजन करीब छह गिनी : गवाह (1) वेल्लिक्कल शंकुण्णि (हस्ताक्षर) (2) मेल्लुप्पुल्लि परंगोटन (हस्ताक्षर)।

कुवड़ा इस तरह गुमसुम बैठा था मानो उस पर बिजली गिर गयी है। उसकी तरफ उस पीले कागज को फेंककर मूंछ ने उपहास किया। "वेलु इसे गिरवीनामे की तरह संदूक में रखो···फिर हूँ···हूँ·· हूँ बोलकर बैठ जाना।"

कुवड़े ने छाती पीटकर ठण्डी साँस खींच ली: "हाय दैया, आच्चा की जो धरोहर बची थी, वह भी खो गयी। ··"

मूंछ वहाँ से चला गया। उसने आँगन से मुड़कर आच्चा की तरफ नज़रें घुमायीं। आच्चा को इस हालत में देखने पर मूंछ ने एक ऊटपटाँग पाट्टु का स्मरण किया। उसने आच्चा को देखकर अपनी कर्कश आवाज़ में गाया—

"पत्थर के बीच के केकड़े  
क्या शादी में नहीं जाना है?  
फिर नहीं जाना है, नहीं जाना है  
क्या जरूरत नहीं कंचन की?  
फिर नहीं चाहिए, नहीं चाहिए  
नहीं चाहिए क्यों?"

## 17. हड्डियों का पिंजरा और मौलसिरी की माला

झगड़ा दबने का कोई लक्षण न था। गोरों की पलटन और मशीनगनों के पहुँचने पर दंगाई नाकों दम होकर जंगलों में फरार हो गये। पुलिस और सैनिक उन लोगों को पकड़कर ले गये, जिन पर दंगाइयों की सहायता करने का अभियोग था। दरअसल वे सन्देह के कारण मोहल्लों में चक्कर लगाकर हिन्दुओं

को भी पकड़कर ले गये । पुलिस अधिकारियों और सरकार की सहायता करने का ढोंग रचनेवाले कुछ बदमाशों को उन लोगों से वदला लेने का अच्छा मौका मिला, जिनसे उनकी पहले की लड़ाई थी। अपने धर्म के प्रतिद्वन्द्वियों को मजा चखाने का मौका वे हाथ से कैसे निकल जाने देते ?

जंगलों में घुसनेवाले दंगाई कभी-कभी भोजन की तलाश में नीचे की वस्तियों में आ जाते। वे आधी रात को जमींदारों के घरों में जाकर उन चीज़ों की माँग करते, जिनमें चावल-माँस वनाने का निषेध होता। दंगाइयों को उनकी माँग के अनुसार सामान देने से आनाकानी करने पर परिवार का नरमेध तुरन्त हो जाता। दंगाइयों की माँग के अनुसार उन्हें सव कुछ दे-देने पर भी मुसीवत न टलती। अक्सर पुलिस और घुड़सवार फौज तुरन्त उस परिवार को आ घेरती और खींचातानी कर जवर्दस्ती सवको उठा ले जाती। जो भी हो, मोहल्लेवालों में सुरक्षा की भावना विलकुल नहीं रही थी। वे झुंड के झुंड शहरों की तरफ वढ़ रहे थे।

दंगाइयों ने शासन छीन लेने की वात करना छोड़ दिया था। उनमें अधिकांश लोग नादान और वेवकूफ किस्म के थे। धर्म के ठेकेदारों ने उन मूर्खों को यह समझा बुझा दिया था कि गोरों ने इस्लाम और मसजिदों का विनाश करने के लिए कमर कस ली है। उन्होंने जिहाद की पुकार की और प्राण हथेली पर रखकर संघर्ष में सक्रिय भाग लिया। मसजिद के मुल्लाओं ने उन्हें समझाया था कि काफिर को कत्ल करने पर उन्हें स्वर्ग मिलेगा। अधिकांश मुखियों की मृत्यु या हत्या हो जाने पर दंगाई नेताओं की कमी हो गयी। उनके अनुयायी जंगलों में भीड़ से अलग होकर दिन गुज़ार रहे थे। उन्हें इस वात की पक्की जानकारी थी कि अगर उन्हें पकड़ लिया गया या हथियार डालकर दवाने का इशारा किया गया तो पुलिस और फौज उन्हें तिल-तिल करके मार डालेगी। इसीलिए मरहूम होने से पहले जितने काफिर मिलें उन सवका कत्ल कर दिया जाये। मज़हव के नाम पर अन्तिम दम तक लड़कर मर जाना है—यही दंगाइयों का कार्यक्रम और कोशिश थी। इस कोशिश को दूसरे शब्दों में कहें तो दंगाई खुद इस्लाम के नाम पर शहादत कवूल करनेवाली एक सेना के रूप में परिवर्तित हो गये थे।

सरकार को इस वात का वोध हो गया कि जंगल में घुसनेवाले दंगाई अधिक खतरनाक हैं। मशीनगनों और वख्तरवन्द गाड़ियों से कोई फायदा नहीं होता।

जंगल में घुसकर विद्रोहियों को पकड़ने और दवाने के लिए वन-युद्धवीरों की गोरखा पलटन भी आ पहुँची।

एक दिन गोविन्दन मुंशी कृष्णन मास्टर से मिलने कन्निप्परंपु में आया। अव वह फौजी पड़ाव के लिए अण्डा और तरकारियाँ वितरण करनेवाला एक छोटा-सा ठेकेदार वन गया था। वह कभी-कभी इधर इसलिए आ निकलता था क्योंकि

उसकी बड़े भाई से सम्पत्ति के बँटवारे को लेकर अनबन थी। और उसके लिए वह कृष्णन मास्टर को पंच बनने की विनती करना चाहता था। कृष्णन मास्टर ने इस बारे में सोच-विचार करने का वादा किया। फिर झगड़े के सम्बन्ध में गोविन्दन मुंशी से पूछा।

"झगड़ा जल्दी खत्म होने की कोई गुंजाइश नहीं है?" सैनिकों और विद्रोहियों की करतूतों के रहस्यों को नजदीक से पहचानने वाले गोविन्दन मुंशी ने कहा, "ये दंगाई जंगलों में चले गये थे। जंगलों में घुसकर उन्हें कत्ल करना बायें हाथ का खेल नहीं है। गोरो की पलटन को तो खाने-पीने और औरतों से छेड़छाड़ करने से ही फुरसत नहीं। जंगलों में जाने से वे कतराते हैं। गुरखा पलटन के उतरने से हालत में कुछ सुधार हो गया है। लेकिन विद्रोहियों को खौफ बिलकुल नहीं है। झगड़ा तब तक खतम नहीं होगा, जब तक एक भी विद्रोही जिन्दा बचता है। वे तो मरने के लिए कमर कसकर खड़े हैं।"

गोविन्दन मुंशी ने बताया कि गुरखा पलटन के अलावा बर्मा राइफल्स और रेगिस्तान में लड़ने के लिए काम में आने वाली खच्चर फौजें, तोपें और बख्तरबन्द गाड़ियाँ बेंगलूर के रास्ते से दंगाग्रस्त इलाकों में पहुँच गयी हैं, ऐसा सुनने में आया है।

कृष्णन मास्टर ने अपनी शंका ज़ाहिर करते हुए पूछा, "आधुनिक युद्ध सामग्री और भली-भांति प्रशिक्षित विदेशी लड़ाकू सैनिकों से विद्रोही कितने दिन तक मुकाबला कर सकते हैं?"

"देखना पड़ेगा।" गोविन्दन मुंशी ने कहा, "ये बदहवास मुसलमान विद्रोही यह सब देखकर भी लोहा मानने वाले थोड़े ही हैं। मौत होने के बाद 'जन्नत' में जाने की तैयारी में ये जान की परवाह किये बिना लड़ रहे हैं। ये कभी-कभी छिपकर तो कभी खुले तौर पर फौज का मुकाबला करते हैं।

दो तीन दिन के बाद 'कु—' मोहल्ले में घटी एक घटना का गोविन्दन मुंशी ने ज़िक्र किया।

जंगल में निकला एक गोरखा फौजी दस्ता रात को एक डेरे में ठहरा था। देशवासियों के नाम पर कुछ विद्रोही भी वहाँ आ पहुँचे। सुबह के झुटपुटे में उन्होंने डेरे में घुसकर अचानक आक्रमण कर दिया। ज्यों ही विद्रोहियों के डेरे में घुसने का समाचार मिला, त्योंही वह दस्ता मशीनगनों और बख्तरबन्द गाड़ियों से लैस होकर धावा बोलने ही वाला था कि मुसलमान विद्रोहियों ने एकाएक तलवारों से एक ब्रिटिश अफसर और दस बारह गोरखा सैनिकों के सिर शरीर से अलग कर दिये। फौज गोली चलाने लगी। और ये विद्रोही तब तक बाघों की तरह लड़ते रहे, जब तक गोली खाकर ज़मीन पर न गिर पड़े। पन्द्रह मिनट के अन्दर सब खत्म हो गए ··। मुस्लिम विद्रोहियों की मैयतें गिनकर देखी थीं।

वहाँ कुल मिलाकर दो-सौ चौंतीस लाशें थीं। इस्लामधर्म की शर्तों के मुताबिक उन्हें दफनाने के बजाय, एक कोने में जमा कर उन पर पेट्रोल डाल कर जला दिया।

गोविन्दन मुंशी ने ज़रा मज़ाक के लहज़े में इतना और जोड़ दिया, "मुसलमानों को यही भरोसा था कि लड़कर मर जाने पर ज़रूर जन्नत मिलेगा। लेकिन अब कयामत के दिन वे उठकर हाज़िर तो हो नहीं सकते क्योंकि उनकी मैयतें गरम राख में बदल गई हैं।"

दो-तीन दिन और गुज़र गये। अफवाह फैल गई कि दंगाई शहरों को रवाना हो गए हैं। उनको जंगल से भी अधिक सुरक्षा आबाद शहरों की भीड़ में मिलेगी। वहाँ तो उन्हें कई दलाल पौर गुप्त सहयोगी भी मिल सकते हैं—इसके अलावा लूटने के लिए अपार धनराशि और सामानों से भरे बाज़ार भी हैं।

एक दिन कृष्णन मास्टर ने अपनी पत्नी को बुलाकर बड़े गौरव के साथ कहा :

"विद्रोहियों के इधर रवाना होने की खबर है। बेहतर यही है कि तुम और श्रीधरन इलंजिपोयिल जाकर रहो, जब तक कि यह झगड़ा खत्म न हो जाए।"

श्रीधरन की माँ ने कहा, "आप लोगों को छोड़कर मैं कहीं नहीं जाऊँगी। मरें तो हम एक साथ मरें—बेटे को इलंजिपोयिल जरूर भेज दो।"

इस तरह श्रीधरन फिर इलंजिपोयिल पहुँच गया।

इलंजिपोयिल में श्रीधरन की अगवानी के लिए जीवन का एक अजनबी क्षेत्र मौजूद था—शरणार्थियों की एक विचित्र दुनिया।

दंगाइयों के पैशाचिक आक्रमण से किसी तरह बचे हुए और विद्रोहियों से डर कर दक्षिण-पूरब की बस्तियों में अपने घर छोड़कर भागे हुए सौ से अधिक परिवार इन इलाकों में आये हुए थे। उनमें से करीब बीस परिवार इलंजिपोयिल में ही टिके हुए थे।

उन लोगों में अधिकांश ऐसे थे, जिन्हें सब कुछ छोड़कर अपने प्राण और पहने हुए कपड़ों के साथ ही निकल आना पड़ा था। कई परिवारों के सदस्यों की निर्मम हत्या हो गई थी। कई लोग जरूरी इलाज के बिना रास्ते में ही मर गये थे। बेइज़्ज़त होने के कारण कुछ औरतों ने आत्महत्या कर ली थी। उन लोगों में बहुत से लोग ऐसे भी थे जो जख्मी हो गये थे।

वे लोग इलंजिपोयिल के आंगन और बाड़े के पीछे, अहाते के पेड़ों की छाया में चूल्हे जलाकर भोजन पकाते थे। इधर-उधर चटाइयाँ डालकर वे अपने नारकीय अनुभवों की याद कर आँसू बहाते हुए दिन काट रहे थे।—बुज़ुर्ग लोग कोनों में गुमसुम स्तब्ध बैठे थे। छोटे बच्चे भोजन मिल जाने के बाद आंगन में खेल रहे थे। शरणार्थी औरतें विद्रोहियों की क्रूर करतूतों की दास्तान औरों को रो-रोकर

सुना रही थीं।

बरामदे के एक कोने में केले के एक बड़े पत्ते पर एक आदमी को लिटाया हुआ था। उसके शरीर पर सिर्फ एक लंगोटी ही थी। उसके चेहरे पर, गरदन में, छाती में—कमर के ऊपर सारे बदन में—मार के जख्म थे। घावों में तेल और दवा भरकर लेटा हुआ वह आदमी ऐसा लगता था, मानो हाँडी में पकाने के लिए मसाला लगाकर रखी हुई वाराल मछली हो। जब श्रीधरन ने रासक्कुट्टि नाम के बुज़ुर्ग से उसकी आपबीती सुनी तो उसके अन्तस् में काले नाग के डसने की-सी पीड़ा और तड़प महसूस हुई।

तीन विद्रोहियों का जत्था अचानक ही आधी रात को रासक्कुट्टि के मोहल्ले में घुस आया था। तीन-चार दिन पहले पुलिस वहाँ से दो मुसलमानों को पकड़कर ले गई थी। दंगाई इस ख्याल से वहाँ टूट पड़े थे कि मोहल्ले वालों ने उनके दो आदमियों को पुलिस के हवाले कर दिया है। बस, वे इसका बदला लेने के लिए वहाँ पहुँच गये थे। फिर विद्रोहियों का संहार-तांडव शुरू हुआ। धर्म-परिवर्तन कराने या बैल का मांस खिलाने का अवकाश ही नहीं था। इस बस्ती के जितने काफिर उनके हाथ लगे, सबको गाजर-मूली की तरह काटकर एक अंधकूप में फेंक दिया। लाशों से कुआँ पट गया। तभी एक केले के नीचे छिपकर जान बचाने की कोशिश करने वाला एक आदमी रासक्कुट्टि दिखा—उसको भी घायल कर उन्होंने कुएँ में फेंक दिया···

रासक्कुट्टि को होश आने पर पहले कुछ भी समझ नहीं आया। बारिश हो रही थी। मैं बारिश में कहाँ लेटा हूँ? शरीर के नीचे से कुछ हरकतें और कराहें ···धीरे-धीरे उसको सब कुछ मालूम हुआ: मैं लाशों की सेज पर लेटा हूँ··· बारिश ने मुझे बचाया है - बरसात के ठण्डे पानी से ही मुझे होश आया है। शरीर भर में गहरा घाव है। धीरे-धीरे हाथ उठाकर छुआ तो अंधकूप के किनारे से टकरा गया। लाशों पर हाथ टेककर बड़ी मुश्किल से किसी तरह ऊपर की सतह तक पहुँचा। सब जगह खामोशी थी। बारिश के बाद की धुँधली चाँदनी। पता ही नहीं चला कि कितनी दूर रेंग गया। किसी तरह नाले के नजदीक पहुँच गया। चेहरे को झुका कर जी भर पानी पिया और वहीं लेट गया·· दूसरे दिन उस रास्ते से गुजर रहा एक शरणार्थी संघ ही रासक्कुट्टि को अपने साथ इधर ले आया था।

श्रीधरन को लगा कि वहाँ का वातावरण बर्दाश्त के बाहर है। पूरब दिशा से आये हुए लोगों में सफाई नाम मात्र को भी नहीं है। न उन्हें कोई लाज-शरम ही है। आँगन में मल और पेशाब की बदबू! बीमारों के चीत्कार—कभी-कभी औरतों के बीच के झगड़े भी···।

अप्पु कहीं नज़र नहीं आया। वह मिले तो जंगल की सैर की जा सकती थी।

दोपहर ढल गई। कुछ देर अकेले टहलने के विचार से श्रीधरन बाहर निकला।

चट्टानी खेत से जाल का शामियाना हटा दिया गया है। सूखी गरी का खलिहान और चारों तरफ बांस की चटाई की टट्टी उसी तरह कायम थे।

आम के पेड़ों के ऊपर निगाहें घुमाईं। आम का मौसम नहीं है।

'क्यें···ङ,' आसमान से शैतान की पुकार! झट ऊपर देखा। एक पपीहा — सिर पर काठ का कटोरा ढोने वाली चिड़िया। उस चिड़िया के सिर पर काठ के कटोरे के आने की कहानी अप्पु ने उससे कही थी। पपीहा ने 'क्यें · ङ' के चीत्कार के साथ तीसरे खेत के नज़दीक तालाब के किनारेवाले ताड़ के पेड़ के ऊपर शरण ली।

श्रीधरन एक-एक दृश्य को देखता और विचार करता आगे बढ़ रहा था। पाँचवें खेत पर पहुँचने पर उसने चारों तरफ का मुआइना किया।

जंगल की सीमा के नुक्कड़ पर किसी की आहट महसूस हुई। गौर से देखा। वहाँ झुका हुआ एक आदमी काँटों से बाड़ बाँध रहा है। नज़दीक आकर देखा तो पहचान लिया। ओठ पर सफेद दागवाला चेक्कु था।

"अरे बेटा, इधर कब आया?" चेक्कु ने कुशल-क्षेम पूछा।

चेक्कु को बाड़ बनाते देखकर श्रीधरन वहाँ खड़ा रहा। पाँचवें खेत की सीमाओं की मेंड़ पर कहीं-कहीं टूट-फूट गई बाड़ की चेक्कु मरम्मत कर रहा था।

उस दीवार के कोने में नीचे के कंकड़ भरे अहाते में, अँगूठी में लाल नग की तरह के कीड़ों ने श्रीधरन का ध्यान खींचा। वे मैथुनरत होकर चूतड़ से चूतड़ चिपका कर चक्कर लगा रहे थे—देखने में बड़ा मजा आता है।

"अरे बेटा, उस मेंड़ के पास मत खड़े रहो।" बाड़ की मेंड़ के बीच से चेक्कु ने टनन् की आवाज़ में पुकार कर कहा।

इन कीड़ों की हरक़त देखते रहने के कारण ही शायद चेक्कु ने ऐसा कहा होगा, इसी ख्याल से श्रीधरन ने झट तीसरे खेत के तालाब के किनारे के ऊपर नज़रें घुमाईं। फिर अबोध बनकर श्रीधरन ने पूछा—"इधर खड़े होने से क्या होगा?"

चेक्कु खामोश रहा। उस ओर देखने पर मालूम हुआ कि चेक्कु ने बाड़ को बाँधने के लिए ताड़ के रेशे अपने मुँह में दबा रखे हैं।

उन कीड़ों की प्रणय-चेष्टाओं की तरफ एक बार फिर सरसरी निगाह डालने के बाद श्रीधरन ने पूछा—"इधर खड़े होने में क्या आपत्ति है?"

"उधर ही चन्दोमन लेटता है।" चेक्कु ने मुँह से रेशा निकालकर बाड़ पर बाँधते हुए फुसफुसाने के ढंग से कहा।

चन्दोमन के लेटने का कोना? श्रीधरन की समझ में कुछ नहीं आया। उसने

शंकित होकर दीवार के उस कोने में देखा।

दीवार की ऊपरी सतह पर कई बाँस खड़े हुए थे। वहाँ बाड़ की ज़रूरत नहीं है। पुरानी दीवार का वह हिस्सा कहीं-कहीं नष्ट-भ्रष्ट हो गया है। बाँस की लम्बी मोटी और पकी जड़ें दीवार की छाती से बाहर दिखाई दे रही थीं। एक पुराना गड्ढा भी वहाँ था, जिसमें साही ने डेरा डाल रखा था। लेकिन किसी के लेटने का कोई चिह्न दिखाई नहीं दिया।

बाड़ बाँधते-बाँधते चेक्कु उस कोने के निकट पहुँच गया था।

"चन्दोमन को वहाँ चैन से लेटने दो, बेटा! उधर मत देखो।"— चेक्कु ने झनकार की-सी आवाज़ में कहा।

सुनकर श्रीधरन भयभीत हो गया।

"तुम वह किस्सा सुनना चाहते हो क्या?" डालियों को बाड़ में बाँधते-बाँधते चेक्कु ने चेहरा घुमाते हुए पूछा।

चेक्कु कहानी कहने के 'मूड' में है। श्रीधरन ने उतावली के साथ 'हाँ' कह दिया।

"तेरे दादा के पिता के ज़माने में उधर वह घटना घटी थी।" चेक्कु ने यों कहकर अपनी कथा शुरू की।

"तेरे परदादा की एक बेटी थी—तिरुमाला। सुना था कि तिरुमाला बहुत सुन्दर थी। ताड़ के गुच्छे की तरह उसके लम्बे बाल थे। तेरी उस दादा माँ की शादी की उम्र थी··। उन दिनों इलंजिपोयिल के बैलों की देख-रेख करने के लिए कहीं सुदूर पूरब से चन्दोमन नाम का एक नौजवान आकर ठहरा था···"

बाड़ बाँधते हुए चेक्कु ने किस्सा जारी रखा: "तिरुमाला और चन्दोमन के बीच मोहब्बत हो गयी···"श्रीधरन ने बड़ी उत्सुकता से ध्यान दिया।

"मोहब्बत का मतलब जानता है?" बाड़ की गाँठ को कसकर बाँधते हुए चेक्कु ने पीली मुस्कान के साथ अपना चेहरा मोड़कर पूछा।

'जानता हूँ' के अर्थ में श्रीधरन ने सिर हिलाया। "फिर क्या हुआ?"

"एक दिन, रात को तेरे परदादा ने उनकी मुहब्बत का पता लगाया। किसकी मुहब्बत?—दुलारी बेटी तिरुमाला और बैल की देख-रेख करनेवाले चन्दोमन की मुहब्बत। तेरे परदादा ने आधी रात में तिरुमाला को उस पशुशाला की तरफ जाते हुए अपनी आँखों से देख लिया, जहाँ चन्दोमन लेटता था·"

अनजाने में ही श्रीधरन के मुँह से 'हाय' की आवाज़ निकल गई।

चेक्कु ने चुप्पी साधकर थोड़ी देर के लिए एक खामोशी पैदा की।

उसने जानबूझ कर ऐसा नहीं किया था। उसके मुँह में ताड़ के रेशे जो थे।

सोने का रंग और ताड़ गुच्छे-जैसी चोटीवाली तिरुमाला-दादी के पास हौले से पशुशाला के दरवाज़े को खोलने का और कानों में बाली और सिर पर

लम्बी चोटीवाले एक स्वस्थ खूबसूरत नौजवान के अपनी प्रेमिका को छाती से लगा लेने का दृश्य श्रीधरन की आँखों में नाच उठा।

चेक्कु ने कथा आगे बढ़ायी : "दूसरे दिन सवेरे चन्दोमन दिखाई नहीं दिया।"

"क्या हुआ ? ···चन्दोमन छिपकर चला गया ?" श्रीधरन ने सहानुभूति से पूछा।

"तेरे परदादा ने सब लोगों से यही कहा था कि चन्दोमन कहीं छिपकर भाग गया है। वह कहीं फरार हो गया है।···लेकिन बात ऐसी नहीं थी।"

चेक्कु ने एक बड़ी लकड़ी उठाकर मेंड पर गाड़ दी और एक काले बड़े पत्थर से उसका सिर ठोकते हुए कहा—"तेरे परदादा ने चन्दोमन को पीट-पीटकर मार डाला था। सहायता के लिए पटिक्कल के चेरुमन को भी बुलाया था। उसके बाद सुबह से पहले ही लाश खेत के इस कोने के गड्ढे में दफ़नाकर उसके ऊपर दीवार बना दी गई।"

चेक्कु ने इशारा करते हुए कहा—"इधर, इधर ही !"

श्रीधरन को लगा कि उसका सिर घूम रहा है।

"इस घटना के बाद दूसरे दिन इलंजिपोयिल में और एक घटना घटी।"

"चन्दोमन का किस्सा खत्म हो गया।" चेक्कु ने कथा जारी रखी, "दूसरे दिन, रात को तेरी तिरुमाला दादी तीसरे खेत के तालाब में कूदकर डूब मरी···।"

चेक्कु ने नीचे के तीसरे खेत की तरफ इशारा किया। श्रीधरन की दृष्टि भी अनजाने में उधर चली गयी।

तालाब के नजदीक फैले हुए ताड़ के गुच्छे तिरुमाला दादी की याद ताजा करते हैं।

(फिर लाश की दीवार को ध्यान से देखने के बहाने श्रीधरन ने उन कीड़ों की प्रणय-क्रीड़ा का दृश्य तिरछी आँखों से देखा, लेकिन वह प्रणय वेदी वहाँ खाली पड़ी थी।)

चेक्कु बाड़ का काम समाप्त कर, बाकी डालियों और ताड़ के रेशों को वहीं डालने के बाद चाकू मोड़कर अपने कमरे में रखकर धीरे से उठ गया।

श्रीधरन अपने ही ख्यालों में खोया सहमा हुआ देख रहा था कि चेक्कु का स्वर सुनाई दिया : "इन घटनाओं को बीते तीस-पैंतीस बरस बीत गये। लेकिन तिरुमाला और चन्दोमन अब भी बिछुड़े नहीं हैं। चाँदनी की कुछ रातों में तिरुमाला पानी टपकाते बालों से तीसरे खेत के तलाब से उठकर छठे खेत की दीवार के नीचे लेटने वाले चन्दोमन के करीब जाती हुई कई लोगों को दिखाई दी है। एक दिन रात को खरगोशों के शिकार के लिए इधर से जाते हुए मैंने बाँस के इस झुरमुट से कुछ सिसकियों और फूट-फूट कर रोने की आवाज़ें सुनी थीं।"

चेक्कु ने अकस्मात् दीवार के कोने में आँखें गड़ाकर देखा।

उस ने इशारा करके बताया "वह उधर पड़ी हुई चीज़ हड्डी तो नहीं है?"

सपनों से चौंक उठकर श्रीधरन की निगाहें दीवार पर टिक गईं। दीवार के भीतर बाँसों की जड़ों के बीच में कटोरे के टुकड़े की तरह कोई चीज़ दिखाई दे रही थी। चेक्कु ने बांस के टुकड़े से वहाँ की थोड़ी-सी मिट्टी हटाई तो हड्डी कुछ अधिक साफ नज़र आने लगी।

"चन्दोमन की पसली है।" निर्विकार होकर चेक्कु ने कहा। फिर ज़मीन से कुछ डालियाँ उठाकर वहाँ ढकने के बाद फुसफुसाया : "दीवार की मरम्मत करने को कहना है।"

शाम ढलनेवाली थी। श्रीधरन चेक्कु के पीछे-पीछे नीचे उतरने की सोच रहा था, लेकिन चेक्कु नदी के किनारे पर जाने लगा — टीलों को लाँघने के बाद तंग पगडंडियों से। (चेक्कु को नदी तट पर गाड़ी गई शराब की बोतलों को लेना है।)

चेक्कु ने पूछा—"बेटा, तुझे अकेले जाने में डर तो नहीं लगता है?"

"नहीं, कोई डर नहीं! मैं अकेले ही जाऊँगा।" श्रीधरन ने हौसला दिखाते हुए कहा।

"तो दौड़ जाओ! मैं इधर से देख रहा हूँ"—चेक्कु भूत की तरह पहरा देने लगा।

खेतों और मेंड़ों को लाँघकर श्रीधरन नीचे की तरफ तेज़ी से चला गया। चट्टानी खेतों की गरी के खाली खलिहान को पार कर तीसरे खेत के नज़दीक पहुँचने पर हृदय में जलन-सी महसूस हुई। लेकिन वह तुरन्त ही शान्त हो गयी। तीसरे खेत में लोगों का शोर सुनाई पड़ रहा था। उधर देखा। शरणार्थी औरतें तालाब में डुबकी मार कर नहा रहीं हैं। ज़रा तसल्ली हुई। तभी दूसरी दिशा से कोई दौड़ता हुआ आया। अप्पु!

"श्रीधरन, मैं तुझे ढूँढता हुआ आया हूँ।" हाँफते हुए अप्पु ने अपनी गोद से केले के पत्ते का दोना लेकर श्रीधरन की तरफ बढ़ाते हुए कहा—"नारायणी ने दिया है श्रीधरन को।"

श्रीधरन ने दोना खोल कर देखा : खुशबूदार मौलसिरी के फूलों की एक माला!

## 18. बन्दर और गूर्खास

मौलसिरी की पुष्पमाला की खुशबू ने श्रीधरन के हृदय में एक अज्ञात विकार के 'आदि सन्देश' को जगा दिया……। साथ ही उसको एक प्रकार के भय,

शरम और पछतावे की अनुभूति भी होने लगी।

उस दिन रात को श्रीधरन चैन से नहीं सो सका। बाहर शरणार्थियों का हो-हल्ला था—बच्चे झिल्लियों की तरह लगातार रो रहे थे—माताएँ उन्हें दुलार रही थीं (स्तनपान करा रही थीं?) फिर भी रुलाई न थमने के कारण नाराज़ होकर खूब पीटती थीं। रुलाई फिर दहाड़ में बदल जाती·· जंगलों से सियारों की चीख भी······

श्रीधरन ने तकिये के नीचे छिपाकर रखी हुई फूलमाल ले ली···

पहाड़ी की तराई की एक गन्दी झोंपड़ी में अपने गतिहीन शरीर को पुरानी चटाई से ढककर चिन्तन, स्वप्न और एकान्त में गुज़ारने वाली नारायणी सुनहरी सर्पिणी की तरह रेंगकर अन्तस् में आ बैठी।

उसने यह श्रीधरन को क्यों पिरोकर भेज दी? 'पश्चिम से आये हुए राजकुमार' को अभी तक नहीं भूली है, क्या इस बात की सूचना देने के लिए ही?

उसके लिए श्रीधरन क्या कर सकता है? जंगल से जाती के फल, जामुन आदि तोड़कर पत्तों के दोनों में लपेटकर दे सकता है।

वह सब उसका अप्पु भैया तो करता ही है।

उसको अप्पु से ज़रा ईर्ष्या हुई। श्रीधरन उसको अच्छी कहानी सुनायेगा? पोन्मला देश के राजकुमार और नीले समुद्र के महल की नागराज कन्या की दास्तान?

पोन्मला देश का राजकुमार अपने दोस्तों के साथ नीले समुद्र में बहुत दूर नैया खेने गया। थोड़ी देर के बाद एक ऊँची लहर ऊपर आयी और उस किश्ती को तोड़ डाला।

वह लहर नहीं थी। फिर क्या थी?—नीले सागर की गहराई के पहरेदार नाग राक्षस का खुला हुआ फण था। राजकुमार के सभी दोस्त समुद्र में डूब मरे। राजकुमार समुद्र के नीचे उतरता-उतरता आखिर नीले रंग की काई में रुक गया। वह नीले रंग की काई न थी, नीले समुद्र की चौथे मंजिल पर नहाने वाली नागराज कन्या की नीली केशराशि थी···।

स्वर्ण नाग के दो बच्चों ने राजकुमार के शरीर को घेर लिया। नागकन्या बेहोश हो गया।

राजकुमार के शरीर को घेरनेवाले वे नाग के बच्चे न थे, बल्कि राजकुमार के सुनहरे हाथ थे।

नागराजकुमारी ने राजकुमार को अपनी नीली अलकों में छिपा लिया और नील रत्नमहल में तैर कर ले गयी···महल के रत्न-खचित कमरे के मुक्ता-पलंग पर रंग-बिरंगी चिकनी सेज पर······

बाहर से जंगली बिल्ली की रुलाई सुनकर श्रीधरन चौंक उठा। बाद में उसे

मालूम हुआ कि वह बिल्ली की रुलाई न थी, बल्कि सारे शरीर में विद्रोही मुसलमानो की मार खाकर जिन्दा लाश बने शरणार्थी रासक्कुट्टि का चीत्कार था।

"क्ययों···ड···"

एक चिड़िया का गीत। श्रीधरन ने कान खड़े कर लिये। चौथे खेत के आँवले के पेड़ के ऊपर से आयी होगी······

नागराजकुमारी और नारायणी पुन: मन में नाच उठीं। एक सपने की तरह देखा कि नागराजकुमारी की दास्तान सुनकर नारायणी की नीलकमल की-सी आँखें आश्चर्य से खुली रह गयी हैं।

(बाहर से एक शिकायत सुनाई दी : "माँ, छोकरे ने मेरे ऊपर पेशाब कर दिया।")

एक नंगे बालक को अपने पास लेटे भैया के शरीर पर पेशाब कर देने के बारे में सोच कर श्रीधरन को हँसी आ गयी···

इस ढंग की अद्‌भुत कथाएँ क्या अप्पु नारायणी को सुना सकता है ?—अप्पु को कुछ नहीं मालूम। चित्रक की मिथ्या जड़ी-बूटी के खोजने की फिजूल कोशिश में सारे पेड़ों पर चढ़ जाना ही वह जानता है—बुद्‌धू कहीं का !

"आ आ···आ आ···मुर्गे आ—मुन्ने आ।

चुग कर खाने चूहे आ—

प्यारे—मुन्ना सो जा – छोटे गीदड़—देखो मत।

एक शरणार्थी माँ अपने बेटे को लोरी गाकर सुला रही थी।···श्रीधरन की आँखें भी लगने लगीं···

श्रीधरन की चिल्लाहट सुनकर नाना जी दौड़े आये। नानाजी के हाथ में तेल से सनी बत्ती जल रही थी। श्रीधरन 'साँप ! साँप' चिल्लाता हुआ एक कोने में छिपकर खड़ा था।

"कहाँ है—कहाँ है ?" नानाजी भय के मारे दरवाज़े की तरफ मुड़ गये।

श्रीधरन ने चटाई की तरफ इशारा किया। अच्छी तरह दिखायी न देने पर भी नानाजी ने झुककर देखा, श्रीधरन की सफेद चटाई पर गोलाकार कोई चीज़ पड़ी थी। नानाजी ने बरामदे में लेटे शरणार्थियों को ज़ोर से पुकारा। उनके बीच से पाच्चु बाँस की एक छड़ी लेकर फौरन दौड़ा आया। साँप तो चटाई पर चुपचाप कुंडली मारकर लेटा था। लगता है, विषैला साँप है।

पाच्चु ने अपना एक पैर दरवाज़े के बाहर और एक दरवाज़े के अन्दर रख ज़रा झुक कर साँप को छड़ी से हिलाने की कोशिश की। वह ज़रा हिला तो, पर सरका नहीं।

पाच्चु ने ध्यान से देखा, फिर छड़ी को नीचे डालकर अन्दर आ साँप को पकड़कर अपने गले में डाल लिया। हँसते हुए बोला : "यह मौलसिरी का काला

नाग है। मौलसिरी का काला नाग…"

नानाजी ने निकट जाकर उसकी जाँच की। मुरझाये हुए मौलसिरी फूलों की माला थी।

इतने में श्रीधरन की नींद की खुमारी दूर हो गयी थी।

शरम के मारे सिर नीचा किये खड़े श्रीधरन का हाथ पकड़कर नानाजी ने कहा : "बेटा, तू यहाँ मत लेट। आज तू नाना के पास लेटेगा।"

दूसरे दिन दोपहर को श्रीधरन चन्तुक्कुंजन के साथ खेल रहा था। शरणार्थियों के बीच श्रीधरन को यह साथी मिला था।

चन्तुक्कुंजन ने श्रीधरन को एक फूंकनली बनाकर दी। एक लम्बे बेंत को छेद कर उसमें कपड़े से लिपटा हुआ एक तीर घुसाने के बाद निशाना साधकर फूंक मारने पर पेड़ पर बैठी चिड़िया या नदी की मछली को मारा जा सकता है।

श्रीधरन ने सलाह दी : "हम जंगल में जाकर कबूतरों का शिकार करें।" दोनों फूंकनी साथ लेकर जंगल की तरफ रवाना हुए। तभी अचानक अप्पु उधर दौड़ा आया।

श्रीधरन डर रहा था कि कहीं अप्पु के हाथ में पत्ते का दोना न हो। अगर दोना है तो अवश्य उसके अन्दर मौलसिरी के फूल भी होंगे। उन फूलों से कल श्रीधरन के नाकों दम हो गया था।

अप्पु के हाथ में दोना नहीं था। अप्पु ने बड़े जोश से श्रीधरन से पूछा— "श्रीधरन, क्या तुझे बन्दर को देखना है? कारोट्ट मन्दिर के चात्तन बन्दर को—?"

श्रीधरन ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखायी। उसने कितने ही बन्दरों को देखा था। फूंकनी लेकर चिड़ियों का शिकार करने की मंशा से श्रीधरन बोला, "मैं बन्दर देखने नहीं जाऊँगा। मैं और चन्तुक्कुंजन कबूतरों को तीर मारकर गिराने के लिए जंगल में जा रहे हैं। तू भी साथ चलेगा?"

अप्पु ने नहीं छोड़ा : "जंगल में फिर जायेंगे। कारोट्ट मंदिर का चात्तन बंदर थोड़े ही दिनों का मेहमान है। बन्दर एक साँप को पकड़कर चार दिनों से बैठा है। लोग चात्तन बंदर को देखने के लिए ही अब मंदिर में जाते हैं—"

सांप को पकड़कर बैठने वाला बंदर! श्रीधरन उत्सुक हो गया : "हम चलकर देखें…" चन्तुक्कुंजन को जोश आ गया।

यों उन्होंने जंगल के कार्यक्रम को स्थगित कर बंदर को देखने के लिए कारोट्ट मंदिर में जाने का निर्णय लिया—फूंकनी को एक केले के नीचे छिपाकर रख दिया।

"जंगल के कबूतरो, तुम लोग और एक दिन ज़िन्दा रहो।" श्रीधरन ने जंगल की तरफ देखकर आश्वासन दिया।

इलंजिपोयिल से ढाई मील पूरब में नदी-घाट के नजदीक एक ऊँची जगह पर कारोट्ट मन्दिर बना है। वह पुराना देवी-मन्दिर है। उसके पास एक छोटा-सा तालाब है जिसका आधा पानी सूख गया है। तालाब के चारों तरफ सागौन, अश्व, कारस्कर के कई बड़े पेड़ किले की तरह खड़े हैं। सौ बरस से भी ज्यादा आयु के इन पेड़ों में कई बड़े बंदर उछल-कूद करते हैं। 'कारोट्ट मंदिर' को लोग 'बंदरों का मन्दिर' कहकर ही पुकारते हैं। मन्दिर में मनौती चढ़ाने के लिए आनेवाले तीर्थ-यात्री यदि इन बंदरों को नैवेद्य का भात, रोटी शक्कर न दें तो ये शरारत करने लगते हैं। लोगों की कमीज़ और धोतियों को कीचड़ उछालकर गन्दा कर डालते हैं और औरतों को लजानेवाली कुछ हरकतें भी करते हैं। अवसर पाकर ये बड़े लोगों के हाथ से भी सामान छीन लेते हैं और वृक्षों पर चढ़कर कूद-कूदकर अपने चूतड़ नोचते हुए उन्हें शर्मिन्दा करते हैं। जब कोई इन्हें पत्थर मारने की कोशिश करता तो झट ये गुरिल्ला क्रान्तिकारियों में बदल जाते। पर मन्दिर की देवी की पूजा होने के नाते कोई भी इन पर आँच न आने देता। इसी कारण से ये बन्दर इतनी बदतमीज़ी करने लगे हैं।

उनमें एक बन्दर ज़्यादा नटखट है। उसकी पहचान बड़ी आसान है। उसका दाहिना कान आधा ही है। न मालूम पैदा होते ही उसके इस कान की ऐसी दुर्दशा हो गयी या उससे भी अधिक किसी नटखट बन्दर ने उसे काट डाला। इस बन्दर को लोग चात्रन के नाम से पुकारते हैं। यह नटखट वानरों का उस्ताद है।

इस चात्रन बन्दर पर ही मुसीबत आ गयी है। अपने साथियों और बच्चों के हाथ से कई चीजें छीन कर खाने के बाद पानी पीने के ख्याल से उस्ताद चात्रन पेड़ से नीचे उतरा था। चारों पैरों को फैलाकर अपनी पूंछ उठाये उस्ताद चात्रन नदी तट की तरफ जा रहा था कि तभी उसे एक साँप कीच में रेंगता दिखाई दिया। बन्दर ने कौतुक से उसकी तरफ देखा और फिर झट से पकड़ लिया।

साँप प्राण-वेदना से तड़प उठा और बन्दर की कलाई पर लिपट गया। बन्दर ने अपनी मुट्ठी की तरफ देखा। हू—हू - हू —!—और इस भयंकर दृश्य को वह दुबारा नहीं देख सका। दाहिने हाथ से आँखें ढक चेहरे को उल्टी दिशा में घुमा-कर बायें हाथ को अपने से दूर फैलाए हुए बैठ गया। चार दिन से बेचारा यों ही बैठा है। न कोई भोज, न जलपान न शोर-शराबा। मुट्ठी को खोले बिना सोये बगैर बेचारा ध्यान मग्न-सा बैठा है।

चात्रन की तपस्या को भंग करने के लिए लोगों ने कई तरकीबें निकालीं। निउड़ा, फल, शक्कर एक पत्ते में उसके सामने रख दिये। पर बन्दर अपने मौन-ध्यान से विचलित नहीं हुआ।

मुट्ठी का साँप सड़ने लगा था। बन्दर को श्रीधरन ने अच्छी तरह देखा। उसने इस तरह चुपचाप बैठा बन्दर पहली बार ही देखा है। वह भी एक विचित्र मुद्रा

में। 'मैं हर्गिज नहीं देखूँगा' का हठ लेकर बायें हाथ को दूर हटा, आँखें मूँद चेहरा मोड़कर बैठनेवाले उस बन्दर को देखकर श्रीधरन के मन में 'सन्तान को न देखूँगा' के हठ में मेनका को इनकार करनेवाले विश्वामित्र मुनि की तस्वीर ताज़ा हो आयी।

"इस बदमाश बन्दर को ऐसा ही फल मिलना चाहिए—मन्दिर की देवी ने सज़ा दी है।" अप्पु पीछे से बड़बड़ाया।

इस बन्दर ने एक बार अप्पु को खरोंच दिया था। साँप को पकड़कर तपस्या करने वाले बन्दर को देखने के लिए लोग तालाब के आसपास जमा हो गये थे। किसी ने भी कारोट्ट देवी की तरफ मुड़कर फूटी आँखों से भी नहीं देखा। उस दिन प्रजाओं को भी भूखों रहना पड़ा।

चन्तुकुंजन ने लोगों की भीड़ देखकर राय जाहिर की: "मैं बीड़ी-सीड़ी, सिगार, शरबत की एक छोटी-सी दुकान खोल लूँ?" (अपने गाँव की दुकान में बीड़ी सिगरेट, सिगार बेचता था चन्तुकुंजन—वहाँ से भी बड़ी संख्या में लोग कारोट्ट मन्दिर के बन्दर को देखने के लिए आ रहे हैं।)

यहाँ के बन्दरों को भी विषाद ने घेर लिया है। कुछ बुजुर्ग बन्दर पेड़ों की डालों पर गम्भीर भाव से बरौनियों को जरा ऊपर उठाकर चूतड़ खुजाते चिंता-मग्न बैठे हैं। उन्हें नहीं मालूम कि उनके साथी चात्रन और भीड़ के लोगों को क्या हुआ है। बच्चों को पेट से चिपकाये कुछ बंदरियाँ इधर-उधर घूम रही हैं। डालों के बीच युवा कपि बकवास कर रहे हैं और बच्चे पूँछ उठाकर उछल-कूद कर रहे हैं।

साँप को भींचकर बैठे हुए बन्दर की तरफ अन्त में एक बार और मुड़कर देखने के बाद अप्पु ने कहा—"जरूर आज रात को चात्रन बन्दर की मृत्यु हो जायेगी। लक्षण से ऐसा ही लगता है।"

तालाब से कुछ दूर की एक झोपड़ी में अप्पु ने सियार को छिपे हुए देखा था। झाड़ी में छिपकर बैठनेवाले सियार को उन प्राणियों की सूँघ मिल गयी होगी, जो मृत्यु के गड्ढे में पाँव रखने जा रहे हैं।

श्रीधरन ने भी उसकी बात पर यकीन किया। आँखें मूँदकर हाथ फैलाने की दशा में ही बेचारे चात्रन बन्दर की जान से हाथ धोकर नीचे लुढ़क जाने, झुटमुट में छिपकर ताक में बैठे सियार के चिल्लाने, जंगल से चिल्लाते हुए आ रहे सियारों द्वारा चात्रन बंदर को चीर-फाड़कर खाने के दृश्य श्रीधरन के मन से होकर गुज़र गये। दूसरे दिन सुबह को तालाब में जाकर देखने पर लोगों को चात्रन की हड्डियाँ और खोपड़ी ही दिखायी देंगी।

तभी चन्तुक्कुंजन ने कहा कि दंगाइयों से डरकर गाँव से भागते समय उसने ऐसी एक लाश रास्ते में देखी थी जिसको सियारों ने खा डाला था और जिसकी

खोपड़ी में बारिश का पानी भर गया था।

श्रीधरन और उसके दोस्त घाट को पार करने के बाद सड़क के रास्ते से ही इलंजिपोयिल वापस आये। जब वे नदी से सड़क पर पहुँचे तब उन्होंने सड़क के किनारे इधर-उधर लोगों की भीड़ देखी। श्रीधरन और उसके साथियों को मालूम नहीं हुआ कि क्यों लोग इधर इकट्ठे होकर खड़े हैं। तब चन्तुक्कुंजन सड़क से पश्चिम की तरफ जानेवाली एक बैलगाड़ी की तरफ इशारा करते हुए आश्चर्य और खुशी से चिल्लाया: 'गूर्खास !'

विद्रोहियों का मुकाबला करने के कारण ज़ख्मी हुए सिपाहियों को चढ़ाकर ये बैलगाड़ियाँ दक्षिण-पूर्वी देहातों से पश्चिम के शहरों की तरफ जा रही थीं। पहले भी कई गाड़ियाँ जा चुकी हैं। गोरखा पलटन है। सड़क किनारे के बरगद के पेड़ के पीछे छिपकर श्रीधरन, अप्पु और चन्तुक्कुंजन ने उन्हें देखा।

ऊपर की तरफ मुड़े कोनेवाली खाकी टोपी पहने एक बन्दूक धारी गोरखा गाड़ी के पीछे बैठकर बाहर की तरफ देख रहा है। (ज़ख्मी सिपाही अन्दर लेटे हुए हैं।

जिन्दगी में पहली बार श्रीधरन ने एक गोरखा देखा है। पीला बन्दर।

श्रीधरन ने गोरखों की खुखरी के बारे में सुना था। हंसिये की तरह का एक हथियार। रस्सी में बाँधकर फेंकने पर दुश्मनों का सिर काटने के बाद खुखरी और रस्सी गोरखा के हाथ में ही लौट आती है। कैसा अद्भुत हथियार है यह उनकी खुखरी !

श्रीधरन ने चन्तुक्कुंजन से धीरे से पूछा: "गोरखा की वह खुखरी कहाँ है ?"

"कमर में लटकी है" चन्तुक्कुंजन ने उसका स्थान बता दिया।

अचानक श्रीधरन को ऐसा महसूस हुआ मानों उसके पेट में तोप का विस्फोट हो गया है। बैलगाड़ी में बैठा वह गोरखा बरगद के पेड़ के पीछे खड़े उन लोगों की तरफ बंदूक से निशाना लगा रहा था। अप्पु वहाँ से झटपट प्राण लेकर भागा। उसके पीछे श्रीधरन भी।

गोली की आवाज़ के बदले बैलगाड़ी से सिपाहियों के ठ्टठा मारकर हँसने की ध्वनि गूंज उठी।

श्रीधरन ने मुड़कर देखा तो चन्तुक्कुंजन बरगद के पीछे ही खड़ा था।

"निरे कायर !" चन्तुक्कुंजन परिहास करते हुए हँस पड़ा: "गूर्खास तो बस दिल्लगी ही कर रहे थे न ? वे हम लोगों को कुछ नहीं कहेंगे— लेकिन मुसलमानों का मुँडा हुआ सिर देखते ही—ठों !" चन्तुक्कुंजन के मुँह से एक गोली छूट गयी।

सिपाहियों को ढोनेवाली आखिरी बैलगाड़ी भी आँखों से ओझल हो गयी।

अप्पु कहाँ है ? चन्तुक्कुंजन ने ज़ोर से पुकारा।

अप्पु प्राण लेकर भाग गया था।

श्रीधरन के पेट का दर्द भी पूरी तरह शान्त नहीं हुआ था। मृत्यु-भय का यह पहला अनुभव था। साँप पकड़े बन्दर को देखने का सारा मजा उस गोरखे की बन्दूक ने किरकिरा कर दिया।

थोड़ी देर बाद नदी की गहराई में एक सिर ऊपर उठता दिखायी दिया। देखा तो अप्पु है।

## 19. वेणुगोपाल

कुल मिलाकर एक वैरागी की तरह ही श्रीधरन इलंजिपोयिल में आ पहुँचा था। गोरखे की बन्दूक के सामने एक पल में अनुभव में आयी प्राण-भीति की तड़प अन्तस् में अब भी लहरा रही थी। कारोट्ट मंदिर में ध्यानमग्न बैठे बन्दर को देखकर हँसी मुश्किल से ही रुकी थी। लेकिन अब उस बन्दर की बदनसीबी का ख्याल कर दुख होता है। रात को जंगली सियार चात्तन का काम तमाम कर देंगे—कोई उसकी जान नहीं बचा सकता······।

इलंजिपोयिल के आँगन और अहाते में तितर-बितर फैले शरणार्थियों की जिन्दगी पर विचार किया—वे सब जान बचाने के लिए अपना घर छोड़ भाग निकले थे······।

आँगन के कोने के बड़े मदार-वृक्ष के सहारे बने गाँज से सटे बैठे श्रीधरन ने ढेर सारी बातों पर विचार किया। मदार की चूड़ा पर लाल फूल हैं। गाँज और मदार को एक साथ देखने पर लगता है कि कोई बड़ा मुर्गा खड़ा है। तभी कुछ दूर के वृक्षों से 'टी—टी—टी' की आवाज़ उठी। साथ ही एक सुरीली पुकार भी। श्रीधरन ने ध्यान दिया। लगातार पुकार की मधुरिमा बढ़ती गयी। कोयलें थीं। चिड़ियाँ क्यों गाती हैं? वे आपस में बातचीत करती होंगी। तमिल नाटकों की तरह गीत में ही संवाद होते होंगे। अचानक स्मरण आया कि एक दफा गोपालन भैया के साथ वह तमिल-नाटक देखने गया था। नाटक का नाम था 'तूक्कु तुक्कि।' बड़े-से हरे रंग के पर्चे पर मोटे अक्षरों में लिखा मजमून आज भी स्मृति में ताजा है। "घमासान लड़ाई! सबका मनोरंजन! दासन मुलक्क की एक्टिंग!"—विदूषक दासन मुलक्क की एक्टिंग देखकर वह हँसी से लोट-पोट हो गया था। उस नाटक की अधिकांश बातचीत गीतों में थी। गोपालन भैया इन गीतों को सुनकर सिर हिलाकर ताल देता था। गोपालन भैया संगीत सीख रहा है। उसे हिन्दुस्तानी संगीत अधिक प्यारा है।

गोपालन भैया की याद आते ही घर का स्मरण भी हो आया। अब कन्निप्प-

रंपु में माँ, बाप और गोपालन भैया क्या करते होंगे ? जब से दंगे की शुरूआत हुई है तब से पिताजी आंग्ल-इंडियन घरों में ट्यूशन के लिए न जाकर स्कूल से सीधे घर आते हैं—शायद वे बरामदे में बैठकर संस्कृत श्लोक बोलते होंगे। गोपालन भैया जिस गोदाम में हिसाब लिखता है, वह फिलहाल इसलिए बंद हो गया क्योंकि उसका मालिक—मुसलमान हाजी फरार है। गोपालन भैया शायद अपने पूरब के कमरे में 'किस्ते-बिस्ते' रटता हुआ हिन्दुस्तानी गाने का अभ्यास करता होगा। माँ रसोई घर में होगी। लेकिन बड़े भाई साहब के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। मूंछ कणारन को माँ से यह कहते सुना था कि बड़ा भाई पेंट करने के धंधे पर न जाकर रात-दिन फाटकघर में बैठकर ताश खेलता हुआ धूप में बाल सफ़ेद कर रहा है। माँ के ही शब्दों में कहूँ तो भैया अब 'फाटकघर' में बैठकर पापड़ बेलता होगा……।"

कौन जाने दंगाई शहर में पहुँच गये हैं या नहीं ? अगर वे अतिराणिप्पाट में घुस गये तो वहाँ की हालत क्या होगी ? इन शरणार्थियों की तरह सब कुछ छोड़-कर क्या प्राण हथेली पर लेकर उन्हें भी फरार होना पड़ेगा ? यह विचार आते ही बड़ा डर महसूस हुआ। बेचारे माँ—बाप…

अचानक आसमान से एक सुरीली आवाज़ गूंज उठी। लेकिन गायक चिड़िया का कोई पता न लगा। चौथे खेत के बड़े आम्र वृक्ष की डाल पर उसकी पुकार और चहचहाट सुनाई पड़ती है। वह तो एक तरह की कोयल है। झट स्मरण आया कि सफ़ेद ओटवाले चेक्कु ने एक बार बताया था कि कोयल आम्रवृक्ष की कोंपलें खाती हैं। इसलिए इतनी सुरीली आवाज़ में गाती हैं।

कोयल को देखने के लिए श्रीधरन ने चौथे खेत की तरफ निगाह घुमायी। आम का पेड़ दिखाई नहीं दिया। तब तीसरे खेत के तालाब के किनारे का ऊँचा ताड़ वृक्ष नज़र आया। ताड़ के पत्तों के बीच से पश्चिमी आकाश की नीलिमा दिखायी पड़ी। जब शाम की कच्ची धूप ताड़ के गुच्छों पर पड़ती है तो ऐसा लगता है कि सोने के कर्णाभूषण पहने एक लम्बी औरत ताड़ के रूप में वहाँ खड़ी है। चेक्कु की कहानी की तिरुमाला दादी की याद आ गयी।……चाँदनी रातों में तिरुमाला दादी के भीगे बालों के साथ तालाब के ऊपर उठने और छठे खेत की दीवार के नीचे लेटे चन्दोमन के नजदीक एक-एक कदम रखकर आगे बढ़ने का दृश्य… इस दृश्य का स्मरण आते ही रोंगटे खड़े हो गये।

'चिक्लि – पिक्लि – चक्लीन'— नजदीक के कोने से आवाज आयी तो उधर देखा। चार-पांच चिड़ियाँ कहीं से उड़कर अहाते में आ गयी हैं। वे सूखे पत्तों को छितराकर उनके बीच कुछ ढूंढ रही हैं। उन बेचारियों को यह बात मालूम नहीं थी कि उनके पास गांज से सटा श्रीधरन नाम का एक नटखट लड़का पांव पसारे बैठा है। शाम के धुंधलके की परवाह किये बिना ये छोटी चिड़ियाँ आराम से।

तलाश में व्यस्त थीं।—श्रीधरन को एकाएक अपनी फूंकनली की याद आयी। गाँज के पीछे एक केले के नीचे रखी थी। हौले से उठकर गाँज की ओट में छिपता-छिपाता वह केले की तरफ चला। फूंकनली हाथ में उठाकर उसकी जांच की। कपड़े से लिपटा तीर उस नली के अन्दर ही है। उसे हाथ में लेकर सामने करते ही गोरखे की बन्दूक याद आ गयी···सिहरकर खड़ा रहा···चिड़ियां तब भी सूखी पत्तियों के बीच उपना आहार टटोल रही थीं···

"गुनाह होगा !" अन्तःकरण ने सुझाया। नली हाथ से छूट गयी···

श्रीधरन ने झट शू शू शू की आवाज़ निकाली। चिड़ियां डर के मारे चूं चूं करती हुई इधर-उधर उड़ गयीं।

श्रीधरन ने फिर एक बार फूंकनली को देखा। फिर उसे उठाकर ऊँचे केले के गुच्छे के निचले हिस्से को पक्षी रूप में निशाना बनाकर फूंक दिया।···तीर 'पक्षी' के शरीर में गड़ गया।

प्राण-वेदना के साथ काँपती, पंख फड़फड़ाकर नीचे गिरती चिड़िया की कल्पना मन में की, तो श्रीधरन का शरीर सिहर उठा।

फूंकनली की तरफ घृणा और द्वेष से देखा। मन में ठाना कि अभी इस नली को नारियल के पेड़ पर मारकर चकनाचूर कर देता हूँ। फिर ऐसा नहीं किया। मन में तुरन्त दूसरा भाव आ गया। एक नये कौतुक से उस नली को दुबारा देखने के बाद मन ही मन बोला : "अप्पु इसे बनाना जानता है।"

चन्तुक्कुंजन के आने के पहले ही इसे बनवाना होगा, क्योंकि उसी ने यह फूंक-नली भेंट की थी। चन्तुक्कुंजन तो रासकुट्टि के लिए दवा खरीदने उण्यप्पुट्टि वैद्य के घर गया है। उण्यप्पुट्टि वैद्य की शक्ल याद आते ही वह हँसी नहीं रोक सका। क्योंकि ललाट, छाती और बाहों पर तीन लकीरों का चन्दन-टीका लगानेवाले उस काले-कलूटे, बड़ी तोंदवाले मोटे वैद्य के बारे में अप्पु ने यह राय ज़ाहिर की थी कि वैद्य पीतल से बँधे लकड़ी के सन्दूक की तरह लगता है।

उसी समय बाहर किसी की बातचीत सुनाई दी। आवाज़ सुनने पर मालूम हुआ कि वह चेक्कु ही है। (दूसरा आदमी ओठ कटा पाच्चु है।) चेक्कु की शराब की बोतलें शरणार्थियों के बीच भी पहुँचने लगी थीं।

श्रीधरन ने फूंकनली को आगे कर चेक्कु से विनती की— "इससे एक बाँसुरी बना दो।"

चेक्कु ने श्रीधरन से नली माँगी। उसने दाहिनी आँख से लगाकर नली की जाँच की। (देखता था कहीं नली टेढ़ी तो नहीं है।) उसने इस अर्थ में अपना सिर हिलाया कि सब कुछ ठीक है। फिर हँसते हुए बोला : "मुन्ने को अभी एक बाँसुरी बना देता हूँ।"

तब वह खुशी के 'मूड' में था। शराब की बदबू आ रही थी।

चेक्कु वहाँ आँगन के किनारे ही बैठ गया। कमर से चाकू निकालकर बाँस की नली को नापकर ठीक से छेदा। फिर उसने श्रीधरन से कहा—"बेटा, एक लोहे की कील तो लाओ।"

श्रीधरन दौड़ता हुआ गया। वह कमरे की दीवार पर से अलगनी की एक कील निकाल लाया और चेक्कु को सौंप दी। आँगन में शरणार्थियों का चूल्हा जल रहा था। गीत गुनगुनाते चेक्कु ने कील को चूल्हे में डालकर तपाया। फिर उसे बाँस की नली के एक हिस्से पर दबा दिया। वहाँ जलकर गोलाकार छेद बन गया। यों चार-पाँच छेद और बना दिये। फिर एक टुकड़ी नली की गरदन में फँसा दी। किसी मरीज़ शरणार्थी के लिए आयी दवाओं में कुछ मोम भी मिल गया। उसे भी सही जगह पर लगा दिया। पन्द्रह मिनट में काम पूरा हो गया।

"पी—पु—पी—पी······" चेक्कु ने छेदों पर अपनी उँगलियाँ फिराकर बाँसुरी बजा दी।

बाँसुरी का अद्भुत नाद! उसके हाथ में आने पर खुशी के मारे श्रीधरन के पाँव ज़मीन पर नहीं पड़ रहे थे। बाँसुरी लेकर मदार वृक्ष पर जाकर बैठ गया।

"पी · पि ··पू·· पु पु पु पों पों पी ··" राग और ताल तो उस गीत से दूर थे। महज़ कई तरह के स्वर ही निकल रहे थे। फिर उसको इस बात का घमंड हुआ कि वह अपनी ही स्वर-सुधा है—पी पि पी— पी पि पुप्पी······

धुँधलका छा रहा था। इलंजिपोयिल की शरणार्थी औरतें नहाने के लिए चलीं। वे एक जुट होकर तीसरे खेत के तालाब में उतरीं। उन्हें अँधेरे में नहाने में ही अधिक सुविधा थी। अँधेरे में नहाते वक्त पहनने के लिए धोती की जरूरत न थी—उनमें कई औरतों के पास बस एक ही धोती थी।

इन औरतों का नंगे होकर तालाब में तैरते हुए नहाने का दृश्य सोचता हुआ श्रीधरन एक वृक्ष के ऊपर चढ़कर बाँसुरी बजाने लगा। तब गोपिकाओं के चीर-हरण की तस्वीर का स्मरण आया······। वृक्ष की डाल पर बैठनेवाला वेणु-गोपाल और जल में नंगी होकर नहाने वाली सुन्दर गोपियाँ···।

## 20. अप्पु के खेत में

चावल की गरम कांजी में घी डालकर उसे कटहल के हरे पत्ते के दोने में पीने का मजा कुछ और ही है। व्यंजन के रूप में भुना हुआ पापड़ और आम का अचार। (कभी-कभी प्याज और कैथनीम के पत्ते मिलाकर बनाया गया अण्डे का रोस्ट भी होता।) यही है इलंजिपोयिल में श्रीधरन का नाश्ता। बढ़िया चावल का भात, कद्दू या ककड़ी की सब्जी, तुरई या चिचिंडे से बना कोई व्यंजन, पापड़, स्वादिष्ट मट्ठा—दुपहर का भोजन होता। कभी-कभी सनाय का व्यंजन होता—

दवा के से हल्के स्वादवाला रतालु श्रीधरन को प्रिय है। अक्सर दोपहर के व्यंजन ही रात को भी होते। कई तरह के कंद वहाँ मिलते थे। भुने हुए कंदों का छिलका निकाल कर उन्हें मिर्च लगाकर खाना बहुत मज़ेदार लगता है। और कुछ नहीं तो भुना कोया ही वह खाता (कोया ज्यादा खायें तो पेट में गड़बड़ी हो जाती है इस-लिए खाते समय थोड़ा सावधान रहना पड़ता है।) पका हुआ कटहल चीनी मिला-कर भूनने के बाद नयी हाँडी में रखा रहता है। कटहल के उस हलुवे को केले के पत्ते में लेकर उंगली से चाटकर खाने में मजा आता है। शहर में ऐसे पकवान सूंघने को भी नहीं मिलते।

लालची न होने पर भी श्रीधरन सभी विशिष्ट खाद्य-पदार्थों को इच्छानुसार थोड़ा-थोड़ा खा लिया करता।

कभी-कभी शाम को धूप कम होने पर श्रीधरन अकेले ही जंगल की तरफ निकल जाता। वह जंगल के भीतर नहीं घुमता। छठे खेत की पूर्वी सीमा के कोने से जंगल का निरीक्षण करता (जहाँ चन्दोमन लेटता है पश्चिम के उस कोने की की तरफ मुड़कर देखने में भी उसे डर लगता था।)

"ठोंख—ठोंख···" जंगल से तांबे पर मारने की-सी एक आवाज़ उठी। पक्षी की आवाज़ है। अप्पु ने कहा था कि इस तरह गाने वाला पक्षी 'कूट्टिकुरुमन' है। "ठोंख—ठोंख—ठोंख······"वह पुकार लगातार गूँजने लगी। पत्तों में छिपकर ही वह चहचहाता है। उसकी यह चहचहाहट सुनकर ऐसा लगता है कि वह अपनी प्रेमिका से ज़ोर ज़ोर से कुछ बात कर रहा है।

गीतों में बात करने वाले पक्षी, दूसरे भी अनेक पतंगों की पुकार और शोर सुनाई पड़ रहा है। लगता है कि जंगल एक नाट्यशाला में बदल रहा है। पर्दा है रंग-बिरंगे बादलों वाला आसमान। 'कुट्टिक्कुरुमन' पक्षी तंबूरा गायक है। सौ से अधिक अभिनेता और अभिनेत्री हैं। विदूषक है पपीहा – सिर पर काठ का कटोरा पहने विचित्र वेशवाला।

अप्पु साथ रहे तो जंगल के भीतर घुस सकता था। जाती, जामुन के फल पक चुके होंगे।

अब अप्पु का साथ नहीं मिलेगा, क्योंकि मट्ठा बेचने वाला कुंजन नायर के छोटे भाई अप्पुण्णि के साथ उसने ककड़ी की खेती शुरु की है। खेती का खर्च अप्पुण्णि उठायेगा। पर, सुबह और रात को दूर के गड्ढे से पानी लाकर सींचने और रात को खेती का पहरा देने का काम अप्पु का है। खेती से जो मुनाफा मिलेगा, उसका दोनों में समान रूप से बँटवारा होगा। दोनों के बीच यही शर्तें थीं।

अप्पु अप्पुण्णि को 'अप्पुण्णिकरुमल' के नाम से पुकारता है। श्रीधरन को अप्पुण्णि के मट्ठा बेचनेवाले बड़े भाई कुंजन नायर की याद आयी:

लम्बा, दुबला और ज़रा टेढ़ा कुंजन नायर घुटनों तक एक अंगोछा पहनकर

मट्ठे की हांडी कंधे पर रखकर हर रोज़ सुबह को शहर की तरफ जाता है। बेचने पर जब हांडी में मट्ठा कम हो जाता तो मौका देखकर कहीं रास्ते से पानी लेकर मिला लेता है ।

एक बार बड़े भाई कुंजन नायर से जो भद्दी भूल हो गयी थी उसे अप्पुण्णि ने अप्पु को गुप्त रूप से बताया था। अप्पु ने वह भेद भरा किस्सा श्रीधरन को बता दिया। उसकी याद कर श्रीधरन को हँसी आ गयी। कुंजन नायर ने शहर के ब्राह्मण वकील के मठ में मट्ठा बेच दिया। ब्राह्मणी ने मट्ठा खरीदने के बाद बर्तन को ज़रा हिला कर देखा। उसके अन्दर कुछ टिमटिमा रहा था। उसे यह सोचकर बड़ी खुशी हुई कि इसके अन्दर शायद नथुनी पड़ी होगी। चम्मच से बाहर निकालने पर देखा, न नथुनी है और न सोना, बल्कि एक ज़िन्दा मछली है। जब कुंजन नायर ने रास्ते में खेत से कुछ पानी लेकर हाँडी में भरा था, तो मछली भी पानी के साथ चली आयी थी। कुंजन नायर फिर मट्ठा बेचने के लिए उस मठ में भूल कर भी नहीं गया ।

एक दिन श्रीधरन अप्पु की ककड़ी की खेती देखने गया। विशाल खेत के एक कोने की थोड़ी-सी जगह को बाड़ से घेर कर खेती की गयी थी ।

अप्पु थोड़ी दूर के कुंड से एक बड़ी हँडिया में पानी लाकर ककड़ी की क्यारी सींच रहा था। श्रीधरन को देखते ही अप्पु की आँखें आश्चर्य और आनन्द से चमक उठीं। बर्तन को क्यारी में औंधा रखकर अप्पु अपने दोस्त की अगवानी को दौड़ा।

वहाँ अहाते के बीच में रखवाली के लिए नारियल के पत्तों और बाँस से बना एक छोटा-सा झोंपड़ा था। दुमंजिला। अप्पु ने श्रीधरन को अपने महल में आने का निमंत्रण दिया। ऊपर चढ़ने के लिए बाँस की एक सीढ़ी रखी थी। बाँस की गाँठ पर पैर रखता हुआ श्रीधरन एक सरकस खिलाड़ी की तरह सन्तुलन खोये बगैर, बिना किसी खतरे के ऊपर पहुँच गया। बाँसों को बिछाकर बनी ऊपरी मंजिल के कोने में एक ताड़ की चटाई रखी थी। वह अप्पु के सोने की चटाई थी। अप्पु ने श्रीधरन को बैठने के लिए वह चटाई बिछा दी। फिर वह नीचे चला गया।

श्रीधरन ने ककड़ी के विस्तृत खेत की तरफ निगाह डाली। एक बड़े बाँस के छोर पर एक कठपुतली लटकायी हुई थी। ऊपर पहुँचते ही इस कठपुतली ने श्रीधरन को अचानक आकर्षित किया था, उत्सुकतावश उसने फिर एक बार उसे देखा। बाँस और सूखी घास से बनायी हुई एक मनुष्य आकृति। चेहरा तो मिट्टी का बर्तन था। सिर पर एक घास की टोपी रखी थी। एक पैन्ट भी पहना दिया गया था - नारियल के पत्ते के डण्ठल के रेशों से बना एक बेल्ट भी। उसकी कमर में हसिये के ढंग का एक हथियार लटका दिया गया था। कन्धे पर ताड़ के डण्ठल की एक तोप भी थी···। श्रीधरन को लगा कि वह एक गोरखे का ही वेश है।

अपनी बढ़िया ककड़ी की खेती को बुरी नज़र न लगने के लिए अप्पु ने नये

गोरखा मॉडल की पुरुषाकृति बनायी थी।

अपने अहाते से तोड़ी हुई चार-पाँच छोटी ककड़ियाँ अप्पु ने एक केले के पत्ते में श्रीधरन को भेंट कीं।

ककड़ी नमक लगाकर ही खानी चाहिए। नमक अप्पु के स्टाक में नहीं था। एक बड़े पत्ते में लपेटकर बरामदे के छप्पर में रखा हुआ था।

ककड़ी को बड़ी रुचि के साथ काट-काटकर खाने के दौरान श्रीधरन ने दूर दृष्टि डाली। पूर्वी क्षितिज में नीले पहाड़ों की चोटी पर डूबते सूरज की धूप सिंदूर की रज छिड़क रही थी। कतारों में खड़े पहाड़ों के वृक्ष, सतह से ऊपर खड़े ताड़ों के वृक्ष ऊँचे पुतले जैसे दिखाई दे रहे थे।

अप्पु ने श्रीधरन के साथ चलने की फुर्सत न मिल पाने का दुख प्रकट किया : "श्रीधरन, तूने मेरा काम देखा है न ?—कुंड से पानी भरते-भरते कमर टूट गयी। अब रात को पहरेदारी भी करनी होगी। नहीं तो सारी ककड़ी सियार खा लेंगे···।"

श्रीधरन ने पूछा - "क्या तू यहाँ अकेला ही सोयेगा ?"

"हाँ अकेला ही।"—अप्पु ने सिर हिलाते हुए कहा, "कुछ दिन तक बढ़ई तामू का छोकरा वेलायुधन भी आ जाता था। लेकिन वह हरामी सियारों से भी बड़ा चोर निकला। सियारों को देखने का बहाना कर अहाते में जाकर, ककड़ी तोड़कर खा लेता—इसलिए उसको अब नहीं बुलाता···"

तब बरामदे में छिपे एक यन्त्र पर श्रीधरन की निगाह पड़ी।

"वह क्या है ?" श्रीधरन ने उत्सुकता से पूछा। अप्पु ने उस यन्त्र को बाहर निकाला। बाँस के टुकड़ों और नारियल के पत्तों के रेशों से बनी एक टोकरी जैसी थी।

"क्या यह चिड़ियों को पकड़ने का फंदा है ?" श्रीधरन ने पूछा।

अप्पु ने हँसते हुए कहा – "यह तो सियारों को डराने-धमकाने की एक तरकीब है।"

अप्पु ने वह तरकीब दिखा दी। यन्त्र की थैली में एक पत्थर रख दिया। फिर यन्त्र को लटकाकर तेजी से हवा में घुमाया "भ् ह् ह् म्-भ् ह् ह् म्-भ् ह् ह् म्···" भयंकर गूँज ! - एक मील दूर पर भी सुनायी पड़े, इतनी भयंकर।

अप्पु ने स्पष्टीकरण दिया : सियार लोगों के शोर से परिचित हैं। लोगों के हल्ले-गुल्ले के बीच भी कोई चालाक सियार ककड़ी को काट-काटकर निगलता रहता। लेकिन इस यन्त्र की हुंकार को किसी भयंकर जन्तु का गर्जन समझकर सियार बदहवास होकर जंगल में ही दफ़ा हो जाता।

इस बात को सोचकर श्रीधरन को हँसी आ गयी कि अप्पु के यन्त्र की आवाज़ सुनकर बेवकूफ़ सियार दुम दबाकर खौफ़ के मारे भाग जायेगा।

चिड़ियाँ पश्चिम दिशा में अपने घोंसलों की ओर झुंड में उड़ रही थीं। श्रीधरन का भी घर जाने का समय हो गया था। अप्पु की सिंचाई अभी खत्म नहीं हुई थी।

श्रीधरन जाने के लिए उठा।

शाम की लाली में जगमगाने वाला आसमान ! दूर पर नीला पहाड़। कितना खूबसूरत है ! अप्पु को पहरे के इस झोंपड़े में बैठकर ककड़ी खाते हुए कहानी की किताबें पढ़ते रहने में कितना मजा आता होगा ! श्रीधरन ने अपने मन में प्रार्थना की कि दंगा कुछ अर्से तक बना रहे।

पहरे के झोंपड़े से नीचे उतरने पर कोई एक बेल श्रीधरन के पैर में लिपट गयी। उसे साँप समझकर श्रीधरन डर गया।

झट अप्पु से पूछा : "अप्पु, क्या यहाँ साँप हैं ?"

"कभी-कभी दिखायी पड़ते हैं, हाल ही में एक विषैला दुष्ट साँप मेंड़ के पास मिट्टी सूंघता हुआ कुंडली मारकर बैठा था। मैं उस पर पाँव रखने ही वाला था कि दिख गया !"

"तूने उसे फिर मार नहीं डाला ?" साँप के प्रति मन का द्वेष बाहर उगलते हुए श्रीधरन ने पूछा।

"नहीं, नहीं, साँप को हर्गिज नहीं मारना चाहिए।" अप्पु ने सिर हिलाते हुए कहा : "अगर साँप को मारेगा तो कुष्ट रोग का शिकार बन जायेगा।"

"वह काट ले तो ?" श्रीधरन ने सवाल किया।

"मारुति मन्दिर में मुर्गी के अंडों की मनौती करना ही काफ़ी है। कोई साँप नहीं काटेगा।" अप्पु ने दृढ़ता के साथ कहा।

श्रीधरन को याद आया, एक बार उसने मारुति मन्दिर के नागों का वह बड़ा किला देखा था। बहुत मोटी लताओं से घिरे हुए वृक्ष-समूह। अन्धकार फैलाने वाला अहाता। नाग के फन की मूर्तिवाले कुछ पत्थर इधर-उधर गाड़ दिये गये हैं···

साँप के बारे में सोचने पर नारायणी की शक्ल-सूरत मन में उभर आयी।

अब नारायणी सुनहरी शाम की धूप को देखती पुरानी चटाई को ओढ़कर अपने आप मुस्कराती उस गुफा में लेटी होगी। बेचारी !

नारायणी के बारे में अप्पु से पूछने के लिए उसकी जीभ नहीं उठी—लाज के मारे।

एक दिन नारायणी को देखने जाना है—श्रीधरन मन ही मन फुसफुसाया।

उसने फिर प्रार्थना की कि दंगा बना रहे। श्रीधरन के इलंजिपोयिल में वापस आते-आते धुँधलका छा गया था।

# 21. दंगा दवता है

इलंजिपोयिल जानेवाली पगडंडी के मोड़ पर पहुँचने पर श्रीधरन के कानों में आर्तनाद सुनाई पड़ा। कारण न जानने से घबराता हुआ वह दरवाज़ा चढ़ गया। सभी शरणार्थी बरामदे के इर्द-गिर्द खड़े थे। अम्मालुअम्मा नाम की एक औरत अपनी छाती पीट-पीटकर, "अरे, मेरे मुन्ना···तू चला गया···" चिल्लाती हुई गला फाड़कर रो रही थी। ज़मीन पर, एक चटाई पर मृत बालक को लिटा रखा है।

अम्मालु अम्मा का पति कुंजिप्पेरच्चन बरामदे के एक कोने में सिर झुकाकर बैठा हुआ अपनी धोती के छोर से आँसू पोंछ रहा है···।

चन्तुक्कुंजन से सारी बातें मालूम हुईं। अम्मालुअम्मा ने छह सन्तानों को जन्म दिया था। सब के सब लड़के थे। चार बरस पहले तक सब ज़िन्दा थे। फिर एक-एक कर मरने लगे। दो सालों के अन्दर तीन अपमृत्यु हो गयीं। सबसे बड़ा लड़का ताड़ पर से गिरने के कारण चल बसा। चौथा लड़का नदी में गिरकर डूब मरा। दूसरे लड़के की मृत्यु साँप के डसने से हुई थी। फिर दो साल पहले दो बेटे तीसरा और पाँचवाँ चेचक की बीमारी का शिकार होकर दो हफ्तों के भीतर मर गये। आखिरी लड़का उण्णिकुट्टि ही ज़िन्दा था। झगड़े के कारण घर छोड़कर आते समय उण्णिकुट्टि को साथ लेकर ही अम्मालु अम्मा और कुंजिप्पेरच्चन इलंजिपोयिल में पहुँचे थे।

दो-तीन दिन पहले से उण्णिकुट्टि दस्त के साथ खून भी जाने लगा था। वैद्य को बुलाकर दिखाया। जब वैद्य ने काढ़ा पिलाने को कहा तो शरणार्थियों में से ही एक बुजुर्ग काना कुट्टाप्पु ने राय ज़ाहिर की कि बच्चे को दवादारू से ज्यादा मन्त्र से ही फायदा होगा। बच्चे को किसी भूत-प्रेत ने काट लिया। झट उस इलाके के मान्त्रिक कोरू को लाया गया। एक धागा बाँधकर पहले-पहल भूत-प्रेत के उप-द्रव को रोक दिया गया। फिर उसके बाद एक होम का बन्दोबस्त हो रहा था कि शाम को उण्णिकुट्टि ने अपनी अन्तिम साँसें छोड़ दीं।

यों अम्मालुअम्मा की अन्तिम सन्तान भी उसके हाथ से निकलकर भगवान के हाथ में पहुँच गयी।

चार-पाँच दिन पहले इस खूबसूरत बालक को श्रीधरन ने एक लाल लंगोटी बाँधे नारियल के पत्ते के डंठल से बने बैल को इलंजिपोयिल के आँगन में चारों तरफ रस्सी से खींचकर खेलते हुए देखा था। वही घुँघराले बालों वाला दुबला सुन्दर लड़का इस चटाई पर मुर्दा होकर पड़ा है।

उस दिन रात को छठे खेत के कोने में चन्दोमन के नज़दीक ही एक गड्ढा खोदकर उसकी लाश दफना दी गयी।

उस दिन लेटने पर आधी रात के बाद भी नींद न आने के कारण अस्वस्थ होकर श्रीधरन कई बातों पर विचार करता रहा। क्या भगवान इतना निष्ठुर है? अम्मालु अम्मा के सभी लड़कों को प्रतिशोध के साथ छीन ले गया!

"माम्पूक्कल कण्टिट्टुम कक्कले काण्टिट्टुम्
मालोकराऱुम् मदिक्केण्टा···"
(आम्रमंजरियों और सन्तानों को देख कोई घमण्ड से फूले ना।)

यह पुराना सुना हुआ गीत उस रात श्रीधरन के मन में उभर आया। श्रीधरन को याद आया कि दूसरे खेत का आम्रवृक्ष पूरा का पूरा फूलकर इतराने लगा था कि तीन-चार दिन में ही सब बौर सूखकर गिर गये और आम्रवृक्ष की शोभा एकदम नष्ट हो गयी। आसमान में जो बादल अचानक छा गया था उसी ने ही इन फूलों को बरबाद कर दिया था। ऐसे ही अम्मालु अम्मा के छह बेटे भी मिट्टी में मिल गये। शायद अम्मालुअम्मा ने भी घमण्ड किया होगा कि उसके छह बेटे हैं। उसी के दण्डस्वरूप अम्मालु अम्मा की यह दुर्दशा हुई होगी। लेकिन हे भगवान! इन बच्चों ने क्या गलती की थी? लाल लंगोटी पहने आँगन में खेलते उस कोमल बालक की तस्वीर फिर से मन में सरक आयी। वही बालक आज छठे खेत के गड्ढे में लेटा है। पर, अकेला नहीं, नज़दीक ही चन्दोमन भी है।

दरवाज़े से चाँदनी कमरे में झर रही है—अहाते और जंगल ज्योत्स्ना में डूब रहे होंगे—आज कौन-सा दिन है?—शुक्रवार है। तिरुमाला दादी तीसरे खेत के तालाब से उठकर जल टपकाती केशराशि के साथ चन्दोमन की तलाश में छठे खेत के कोने में एक-एक कदम रखकर आगे बढ़ती होगी···। आज छठे खेत में पहुँचने पर तिरुमाला दादी रोयेगी नहीं, हँसेगी। उण्णिकुट्टि को देखकर हँसेगी। चन्दोमन और तिरुमाला को एक दुलारा बच्चा मिल गया है।···

"हुव्व-हा···हुव्व-हा···" एक भयंकर चीख। पश्चिमी खेत के पेड़ से आयी थी। अचानक श्रीधरन भयभीत हो उठा। चकोर की पुकार थी। सुना है कि चकोर चीख-चीखकर मृत्यु की सूचना देता है। क्या उण्णिकुट्टि के छठे खेत में समाये जाने की बात उसने नहीं जानी थी? नहीं तो क्या अब और भी कोई गड्ढे में पाँव फैलाये लेटा है?···

हल्के खौफ़ के साथ श्रीधरन सो गया। अगले दिन सवेरे जाग उठा। थोड़ी देर बाद अचानक श्रीधरन को याद आया कि इंलजिपोयिल में करने के लिए कुछ सवाल और पढ़ने के लिए कुछ विशेष सबक कन्निप्परंपु से पिताजी ने दिये थे। अब तक उस तरफ ध्यान ही नहीं दिया। देहाती पकवान खाकर अहातों और खेतों में टहलना और चट्टान पर बैठकर दिवास्वप्नों में डूबना इसी में कितने दिन गुज़र गये, कुछ पता ही नहीं लगा। कर्त्तव्य-निष्ठा से विचलित होने पर पिताजी माफ नहीं करेंगे। चार पाँच बार उनकी बेंत की मार का स्वाद चख चुका है।

कुछ दिन और बाकी है। मन में प्रार्थना की कि दंगा लम्बे अर्से तक जारी रहे। गणित की किताब धूल पोंछकर सामने रखी। स्लेट भी साफ करके सामने रख ली। पेन्सिल भी छीलकर ठीक कर ली। कुछ भी तो समझ नहीं आता। स्लेट पर ऐसी ही कुछ रेखाएँ खींची। सांप का चित्र बन गया। सांप का चित्र आसानी से खींचा जा सकता है। सांप मोलसिरी फूलों की माला में बदल गया तो तब नारायणी की याद आ गयी।

अब तक नारायणी के यहाँ जाकर उसे देख नहीं सका था। फिर प्रार्थना की कि दंगा-फसाद लम्बे अर्से तक बना रहे। दुबारा गणित की तरफ निगाह डाली। बहुत देर तक यों ही बैठा रहा। किसी जादूगर ने ही चिह्न और अंकों को खोज निकाला होगा -- मांत्रिक कोरू के तावीज बनाते समय इस्तेमाल किये जाने वाले अंकों, चक्रों और खानों की भी याद आयी। फिर ऐसा एक शाप दिया कि गणित का आविष्कार करने वाला प्रथम मांत्रिक उस्ताद नरक की आग में झुलस जाय।

उससे भी समस्या का हल नहीं हुआ। फिर प्रार्थना की कि दंगा लम्बे अर्से तक चलता रहे।

श्रीधरन की विनती का असर नहीं हुआ। उसकी मनोकामना पूरी नहीं हुई।

छह महीने तक दावानल की तरह भभकता रहा दंगा धीरे-धीरे थम गया। दंगाइयों में कई लोग मारे गये। हजारों की तादाद में पकड़े गये। बाकी लोग लाचार होकर दब गये। देहातों में शान्ति कायम होने लगी।

हालात की जानकारी के लिए गाँव में गये ओठकटे पाच्चु ने एक दिन शाम को वापस आकर बताया कि दंगा खत्म हो गया है। पुलिस और फौज वापस चली गयी है। अब हम भी वापस जावें।

दूसरे दिन इलंजिपोयिल के शरणार्थी गठरियों और बोझों के साथ अपने गाँवों के लिए रवाना हुए। सामान ढोने के लिए तैयन की बैलगाड़ी का प्रबन्ध किया गया। शरीर के घाव पूरे नहीं भरे थे, फिर भी रासक्कुट्टि उत्साह के साथ रवाना हुआ। वह एक बड़ी धोती लपेटकर बैलगाड़ी में जाकर बैठ गया।

उनमें अधिकांश ऐसे थे जो लाचार और परेशान थे। इलंजिपोयिल से उतर-कर जाते समय उनमें अधिकांश की आँखें गीली हो आयी थीं। यह कृतज्ञता की निष्कलंक अभिव्यक्ति थी।

उनके चले जाने पर श्रीधरन को भी अजीब-अजीब सा महसूस हुआ। उसको चन्तुक्कुन्जन के बिछुड़ने का गम है। चन्तुक्कुन्जन उससे बड़ा एक नवयुवक है। मूँछें निकल आयी हैं। कुछ बड़प्पन भी है। फिर भी वह एक अच्छा मित्र है।

विदा लेते समय चन्तुक्कुन्जन ने अपनी मित्रता की याद के लिए श्रीधरन को एक खूबसूरत लोहे की अँगूठी भेंट में दी। उसमें हाथी की पूँछ का बाल बँधा था। उसने श्रीधरन को अपने वन्य गाँव में एक बार आने का निमंत्रण भी दिया।

चन्तुक्कुंजन ने अपने देहात के बारे में कई अद्भुत किस्से श्रीधरन को सुना रखे थे। लोग गर्मी के मौसम में पेड़ों को काटकर ले जाने के लिए हाथियों को लेकर वहाँ आ जाते। तब अपनी दुकान का बीड़ी-सिगरेट-शरबत का व्यापार बन्द करके वह भी जंगल में काम करने जाता। गाँव के उस पार जंगली हाथियों का विहार स्थल है। लकड़ी ढोने के लिए लाये गये हाथियों को काम के बाद रात को गर्दन में लोहे की जंजीर डालकर चरने के लिए भेज देते। कभी-कभी जंगली हाथी इन पालतू हाथियों से लड़ने आ जाते। पालतू हाथियों के लिए उन जंगली हाथियों से लड़कर जीतना आसान नहीं होता। उस समय काम में आने के लिए ही गले में लोहे की जंजीर डाली जाती है। जंगली हाथी आक्रमण करने के लिए जब नज़दीक आता तो पालतू हाथी अपनी सूंड में लोहे की जंजीर लेकर जोर से घुमाकर मारता है। मस्तक के मर्म पर मार पड़ते ही जंगली हाथी पीड़ा की चिंहाड़ से जंगल को हिलाता हुआ मुँह मोड़कर भाग जाता।

श्रीधरन को उस जंगली गाँव को देखने की बड़ी इच्छा हुई। चन्तुक्कुन्जन ने हाथी की पूँछ के बाल से बँधी इस अँगूठी के महत्त्व को बताते हुए कहा : "इसे उँगली में पहनने पर जूड़ी नहीं होगी—शैतान का उपद्रव भी नहीं होगा।"

इस अँगूठी के बदले श्रीधरन ने चन्तुक्कुन्जन को अपना प्यारा चाकू अर्पित किया। वह आसानी से बन्द किया जा सकता है। श्रीधरन को इन्द्रधनुष के रंगों की मूठ वाले इस अंग्रेज़ी चाकू को कृष्णन मास्टर के किसी पुराने शिष्य ने ही भेंट में दिया था। यह उपहार देखकर चन्तुक्कुन्जन विस्मयविमुग्ध हो गया।

"पश्चिम की तरफ जब भी आओ तो अतिराणिप्पाटं में आकर मुझसे मिलकर जाना।" श्रीधरन ने चन्तुक्कुन्जन के हाथ को दबाते हुए कहा : "कृष्णन मास्टर के घर का पता पूछने पर कोई भी बता देगा।"

चन्तुक्कुन्ज़न ने आने का वायदा किया। एक बार वह नदी से लकड़ी ले जाने वालों के साथ शहर में आया था। अगली बार आने पर अतिराणिप्पाटं में कृष्णन मास्टर के बेटे श्रीधरन से मिले बिना न लौटेगा…

अम्मालु अम्मा अंत में निकली। छठे खेत की तरफ देखकर वह अपनी छाती पर हाथ रख बड़ी देर तक रोती रही। कुदरत का खेल ! उण्णिकुट्टि की मिट्टी यही है…

दोपहर होते-होते इलंजिपोयिल का आँगन और खेत वीरान हो गया। शरणार्थियों के छोड़े हुए कूड़ा-करकट और चूल्हे वहाँ बिखरे पड़े थे। एक पुरानी लंगोटी खेत के मदार वृक्ष से बंधी अलगनी में एक झंडे की तरह फहरा रही थी।

श्रीधरन को एक तरह का अकेलापन महसूस हुआ। अप्पु भी अपने पिताजी की बैलगाड़ी के साथ शरणार्थियों के गाँव गया है।

श्रीधरन ने अपने होमवर्क पर ध्यान दिया। उसने गणित की किताब हाथ में

लेकर खोली। कभी भी वश में न आनेवाला गणित।

चहकती हुई दो-तीन छोटी चिड़ियाँ खेत के कूड़े-करकट को इधर-उधर छितरा-कर आहार चुग रही थीं। ये चिड़ियाँ कितनी सौभाग्यशाली हैं। इन्हें गणित का हिसाब नहीं लगाना है। सबक याद नहीं करना है। खाना और गाना ये ही इनके दो काम हैं।

दोपहर के भोजन के बाद पढ़ने का इरादा करके उसने स्लेट और पुस्तकें वहीं डाल दीं।

## 22. मौत की गाड़ी

श्रीधरन ने सुबह उठकर अपनी पढ़ाई जारी रखी। शुरू होते ही एक नया जोश महसूस हुआ। लेकिन गणित पर पहुँचते उसका आवेश ठण्डा होने लगा।

एक दुकानदार के नारियल के हिसाब में वह उसी तरह फँस गया, जिस तरह रस्सी के जाल में फँसा नारियल। हिसाब लगाकर बताना होगा कि व्यापार में उस व्यक्ति को नुकसान हुआ था या मुनाफा। उसने मन ही मन प्रार्थना की कि उस दुष्ट को नुकसान ही मिले। लेकिन बात तो पकड़ में नहीं आयी।···

तब देखा कि कोई सीढ़ियाँ चढ़कर आ रहा है। सिर उठाकर देखा। हर्ष के मारे उछलते हुए उठ खड़ा हुआ। माँ!

माँ के साथ कन्निप्परंपु के पड़ोस के कलाल माक्कोता की पत्नी अम्मिणि अम्मा और एक मोटा काला लड़का भी है। उस लड़के के सिर की टोकरी में पान की एक गाँठ और ताड़ के पत्तों में लिपटा तम्बाकू दिखाई दे रहा है। एक पुड़िया में हलवा और खजूर होंगे!

आँगन में दौड़ते हुए जाकर माँ की अगवानी की। माँ ने श्रीधरन को एड़ी से चोटी तक देखा।

"अरे, तू तो बिलकुल काला हो गया है रे! धूप में जंगलों और झाड़ियों में घूमता-फिरता रहा। है न?"

माँ का कुशलान्वेषण इसी ढंग का था। माँ कभी ज़ाहिर नहीं करती। वात्सल्य मन में ही छिपाकर रखती है। कितने दिनों के बाद वह अपने बेटे को देख रही है। ज़रा हँस ले तो क्या बिगड़ता है?

"माँ, पिताजी आएँगे?" श्रीधरन ने उतावली से पूछा।

"खैर, तुझे पिताजी को ही देखना काफी है न।" माँ ने ज़रा खिन्न होकर कहा।

सुनकर श्रीधरन हक्का-बक्का हो गया। कुछ पश्चात्ताप भी हुआ। माँ ने जो कहा, वह तो ठीक है। श्रीधरन माँ से भी ज्यादा पिताजी को प्यार करता है।

"यह कौन है ?" श्रीधरन ने विषय बदलने के लिए उस काले लड़के की तरफ इशारा करके पूछा।

"गाँव से हमारे घर आया हुआ छोकरा है।" अम्मिणि अम्मा ने जवाब दिया।

श्रीधरन की माँ, अम्मिणि अम्मा और वह काला-कलूटा लड़का तीनों मुर्गों के बांग देने के मुहूर्त में कन्निप्परंपु से पैदल रवाना हुए थे। वे भुतहे अहाते के रास्ते से वेलालूर खेतों को पार करके इलंजिपोयिल पहुँचे हैं। चलते-चलते बिलकुल थक गये हैं।

"तू ने पिताजी के कहे अनुसार सभी सबक पढ़ लिये हैं न ?"

माँ का सवाल श्रीधरन को अच्छा नहीं लगा। माँ को तो काला अक्षर भैंस बराबर है। ऐसी अशिक्षिता माँ क्यों इन बातों का अन्वेषण करती है ?

श्रीधरन ने इस तरह अपना सिर हिलाया जिसे "हाँ" या "नहीं" दोनों अर्थों में लिया जा सकता है। फिर उसने विषय बदलने के लिए माँ से अतिराणिप्पाटं के समाचार पूछे।

तभी माँ ने एक शोक-समाचार सुनाया: "बेटे, तेरा साथी चात्तुण्णि चल बसा।···

यह मैं क्या सुन रहा हूँ ? चात्तुण्णि मर गया ! माँ मुझ से झूठी बात कह रही होगी। चात्तुण्णि मर नहीं सकता।

श्रीधरन की माँ ने सहानुभूति प्रकट करते हुए सब बता दिया। श्रीधरन अपनी प्रतिक्रिया पर नियंत्रण रख आँखें फाड़कर इस तरह सुनता रहा, जैसे कोई दुखभरी कहानी सुन रहा हो।

चात्तुण्णि एक दिन शाम को लकड़ी का चूरा बेचकर घर में बुखार के साथ ही लौटा था। पैसे माँ के हाथ में देकर अन्दर के कमरे की चटाई पर पड़ गया। फिर वह नहीं उठा। विषम ज्वर था। वह छह दिनों तक यों ही पड़ा रहा। सातवें दिन पिछले शुक्रवार को उसकी मृत्यु हो गयी···।

शुक्रवार की रात को !—उण्णिकुट्टी की मृत्यु भी उसी दिन हुई थी। श्रीधरन को याद आया। उस दिन चकोर ने अपनी पुकार से चात्तुण्णि की मृत्यु की ही सूचना दी होगी।

अब तो अतिराणिप्पाटं पहुँचने पर चात्तुण्णि दिखायी नहीं देगा। इस दुनिया की सारी बातों की जानकारी रखने वाला अक्लमंद चात्तुण्णि अब मिट्टी का ढेर हो गया है। श्रीधरन ने लकड़ी के चूरे की टोकरी सिर पर रख कर पगडंडियों पर बढ़ते, अपने आप मुस्कराते और 'अभी आये जहाज़ में क्या-क्या माल है ? अदरक, सोंठ, सुंपारी आदि कितने नाम गिनावें···' गुनगुनाते हुए चात्तुण्णि के आखिरी मिलन की याद की।

"अभी आये खुदा के जहाज में मृत्यु है—मृत्यु" श्रीधरन ने मन ही मन बताया।

हुई थी। साठ मील दूर तमिलनाडु के एक जेलखाने में ही उन्हें ले जाया गया था। गाड़ी के रवाना होते ही मालगाड़ी के तंग डिब्बे में ठूँस दिये गये मुसलमान गर्मी से बेहद परेशान हुए। गला सूख गया। दम घुटने लगा—हाहाकार शुरू हुआ···

सैनिकों ने परवाह नहीं की। किसी एक स्टेशन पर सिग्नल न मिलने के कारण गाड़ी रुक गयी। तभी भी ये कैदी मरण-विह्वलता के साथ चीत्कार कर रहे थे। 'पानी-पानी' गला फाड़-फाड़कर वे चिल्लाने लगे। बाहर खड़े हुए लोगों ने उनकी पुकार सुनी थी। लेकिन खौफ के मारे कोई भी गाड़ी के नज़दीक नहीं आया। क्योंकि वह फौजी गाड़ी थी सबको दूर रहने का हुक्म था। नज़दीक जाना गुनाह है, बिना किसी चेतावनी के गोली दाग कर मार डालेंगे।

गाड़ी फिर आगे बढ़ी। थोड़ी देर के बाद हो-हल्ला और चीत्कार थम गया। तमिलनाडु के स्टेशन पर गाड़ी पहुँच गयी। कैदियों वाले डिब्बे की मुहर तोड़कर अन्दर झाँकने पर एक अनोखा ही दृश्य दिखाई पड़ा। खून और माँस के टुकड़े वहाँ छितरे पड़े थे। गर्मी, प्यास और घुटन से ये मुसलमान शैतान बन गये थे। उन्होंने खून पीने के लिए एक-दूसरे को दाँतों से काट-काटकर खाया था। कुछ ताकतवर लोगों की काली करतूतें—बाकी सब तड़प-तड़प कर मर गये—गिनकर देखा तो भीतर के नब्बे आदमियों में छियासठ लाशें थीं। बाकी लोग शरीर से थोड़ा-बहुत माँस और खून निकल जाने के कारण विकृत हो सुध-बुध खोकर पड़े थे···।

उस रात श्रीधरन सो नहीं सका। साठ मील की यात्रा के दौरान उस मौत की गाड़ी में हुई भीषण वारदात ने उसके मन को मथ डाला। अदम्य प्यास के कारण खून पीने के लिए आपस में चीर-फाड़ करनेवाले काले इन्सान। और उन्हें उस दुर्दशा में पहुँचाने वाले ये गोरे लोग।

ईश्वर से भी अधिक नृशंस ईश्वर की ही सृष्टि है यह इन्सान।

श्रीधरन को मन में इस मानव जगत से ही नफ़रत हो गयी।



अगले दिन तड़के ही श्रीधरन को लेकर माँ और साथी अतिराणिप्पाट की तरफ लौट गये।

श्रीधरन ने कन्निप्परंपु में पहुँचने पर देखा कि बरामदे में पिताजी और किट्टन मुंशी बातचीत कर रहे हैं। किट्टन मुंशी बरामदे के बेंच पर अनन्तशयन की मुद्रा में लेटा हुआ बातचीत कर रहा है। कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन को अपने नज़दीक बुलाकर बड़े दुलार के साथ छाती से लगा लिया। उसकी पीठ पर थप-थपाते हुए पूछा :

"तू ने इलंजिपोयिल मे क्या-क्या खाया था ?"

श्रीधरन ने सभी पकवानों के बारे में बताया। कृष्णन मास्टर ज़ोर से हँस पड़े।

पकवानों का नाम सुनकर किट्टन मुंशी के मुंह में पानी भर आया होगा, सोचकर श्रीधरन अपने आप हँस पड़ा···।

"किट्टन, मुसलमान कैदी संख्या में कितने थे ?"

कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन को छोड़कर किट्टन मुंशी की तरफ उन्मुख होकर पूछा।

किट्टन मुंशी 'मृत्यु की गाड़ी' की दास्तान बता रहा था···दंगे के बीच की एक दारुण घटना।

श्रीधरन सुनता हुआ नज़दीक ही खड़ा रहा।

"तो किट्टन, वे कितने मुसलमान कैदी थे ?"

किट्टन मुंशी ने सूँघनी अपनी हथेली में लेकर उसे अपनी नाक के दोनों छेदों में डाला, फिर दो सेकण्ड तक एक तरह के निर्वाण की हालत में बैठा रहा। फिर फौरन आँखें खोलकर घोषणा की···

"मुसलमान कैदी लगभग एक सौ थे — ठीक-ठीक बताऊँ तो नब्बे · "

"क्या ये सब फौजी अदालत के मुकदमे में दण्डित थे ?" कृष्णन मास्टर ने पूछा।

नहीं — अधिकांश तो ऐसे थे बेचारे, जो अदालत में मुकदमे के लिए ले जाये जा रहे थे। सिर्फ शक के आधार पर पकड़े गये लोग उनका कसूर यही था कि वे मुसलमान थे। पकड़े गये इन मुसलमानों को दो-दो करके हथकड़ी लगाकर माल-गाड़ी के एक छोटे डिब्बे में ठूँस दिया गया था। डिब्बे में न तो कोई झरोखा था और न हवा के प्रवेश के लिए कोई छेद। दरवाजा बंद कर उस पर ताला लगा दिया गया था। गोरे सेनापति का यह हुक्म था कि मुहरबंद इस डिब्बे को तब तक नहीं खोलना है जब तक गाड़ी निर्दिष्ट स्थान पर न पहुँच जाये। इस डिब्बे के साथ के प्रथम श्रेणी के डिब्बों में बैठे सैनिक गीत गाते मजा लेते जा रहे थे।

दंगाग्रस्त इलाके के नज़दीक के रेलवे स्टेशन से ही वह फौजी गाड़ी रवाना

हुई थी। साठ मील दूर तमिलनाडु के एक जेलखाने में ही उन्हें ले जाया गया था। गाड़ी के रवाना होते ही मालगाड़ी के तंग डिब्बे में ठूँस दिये गये मुसलमान गर्मी से बेहद परेशान हुए। गला सूख गया। दम घुटने लगा—हाहाकार शुरू हुआ···

सैनिकों ने परवाह नहीं की। किसी एक स्टेशन पर सिग्नल न मिलने के कारण गाड़ी रुक गयी। तभी भी ये कैदी मरण-विह्वलता के साथ चीत्कार कर रहे थे। 'पानी-पानी' गला फाड़-फाड़कर वे चिल्लाने लगे। बाहर खड़े हुए लोगों ने उनकी पुकार सुनी थी। लेकिन खौफ के मारे कोई भी गाड़ी के नज़दीक नहीं आया। क्योंकि वह फौजी गाड़ी थी सबको दूर रहने का हुक्म था। नज़दीक जाना गुनाह है, बिना किसी चेतावनी के गोली दाग कर मार डालेंगे।

गाड़ी फिर आगे बढ़ी। थोड़ी देर के बाद हो-हल्ला और चीत्कार थम गया। तमिलनाडु के स्टेशन पर गाड़ी पहुँच गयी। कैदियों वाले डिब्बे की मुहर तोड़कर अन्दर झाँकने पर एक अनोखा ही दृश्य दिखाई पड़ा। खून और माँस के टुकड़े वहाँ छितरे पड़े थे। गर्मी, प्यास और घुटन से ये मुसलमान शैतान बन गये थे। उन्होंने खून पीने के लिए एक-दूसरे को दाँतों से काट-काटकर खाया था। कुछ ताकतवर लोगों की काली करतूतें—बाकी सब तड़प-तड़प कर मर गये—गिनकर देखा तो भीतर के नब्बे आदमियों में छियासठ लाशें थीं। बाकी लोग शरीर से थोड़ा-बहुत माँस और खून निकल जाने के कारण विकृत हो सुध-बुध खोकर पड़े थे···।

उस रात श्रीधरन सो नहीं सका। साठ मील की यात्रा के दौरान उस मौत की गाड़ी में हुई भीषण वारदात ने उसके मन को मथ डाला। अदम्य प्यास के कारण खून पीने के लिए आपस में चीर-फाड़ करनेवाले काले इन्सान। और उन्हें उस दुर्दशा में पहुँचाने वाले ये गोरे लोग।

ईश्वर से भी अधिक नृशंस ईश्वर की ही सृष्टि है यह इन्सान।

श्रीधरन को मन में इस मानव जगत से ही नफ़रत हो गयी।



# खण्ड : दो

1. सत्यं ब्रूयात्, 2. अतिराणिप्पाटं के परिवर्तन, 3. प्रवास, 4. प्राइवेट बुक और जरीदार दुपट्टा, 5. धधकने वाला घराना और दक्षिण से आये लोग, 6. अद्भुत नक्षत्र, 7. शराब और महिला, 8. एक निधि की दास्तान, 9. दल-बदल, 10. विद्यालय और घर में, 11. इम्तहान, 12. यक्षी

# 1. सत्यं ब्रूयात्

श्रीधरन 'पुत्तन हाई स्कूल' में छठे दर्जे में भर्ती हो गया है। नये तजुर्बे हासिल हो रहे हैं।

"पुत्तन हाई स्कूल' उन छात्रों का अच्छा केन्द्र है जो कई बार फेल होने के बाद हमेशा विद्यार्थी ही बने रहना चाहते हैं और जिसमें दूसरे स्कूलों से बाहर निकाले गये अमीरों के शरारती बच्चे हैं।

इस संस्था का व्यवस्थापक हेडमास्टर एक कोंगिणी ब्राह्मण है जो फीस अदा करने को तैयार किसी भी दो पैरोंवाले जानवर को प्रवेश दे देता है।

पहले के कुछ दिनों में श्रीधरन को लगा कि यह हाईस्कूल जानवरों का अजायबघर है। वहाँ के अधिकांश शिक्षक दूसरे हास्यास्पद उपनामों से जाने जाते थे: 'भैंसा पट्टर', 'गैंडा', 'सियार स्वामी', 'घूस' आदि नाम गुरुदक्षिणा के तौर पर उन्हें छात्रों ने दिये थे। छात्रों पर नियन्त्रण और शासन करने वाले कुछ मोटे-ताजे नटखट लड़के थे। दसवीं कक्षा का गणपति ही उनका कमाण्डर-इन-चीफ था। वह उस इलाके के बैंकर का लड़का था। हमेशा हरे रंग का सर्जकोट पहनने वाले दुबले-पतले उस लड़के के दाँत कुछ बाहर दिखाई देते थे। गणपति की आज्ञा का पालन करने के लिए हर दर्जे में एक बदमाश लड़का मुकर्रर था। श्रीधरन के छठे दर्जे के 'ए' डिवीजन का नेता भालू नारायण था। भालू के कहे अनुसार ही सबको काम करना पड़ता था। नहीं तो गड़बड़ हो जाती। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी वह अच्छा नहीं होता। स्कूल में कक्षा आरम्भ होने से लेकर शाम को समाप्त होने के बाद भी शासन की बागडोर इन बदमाशों के हाथों में ही रहती।

उम्र और शक्लसूरत से दर्जे का सबसे छोटा लड़का होने के कारण श्रीधरन को भालू ने पहले दिन से ही अवज्ञा की दृष्टि से देखा था। शायद उस पर जरा हमदर्दी भी हुई होगी। उस दिन शाम को क्लास छूटने के बाद भालू ने श्रीधरन को देखकर कहा: "बेटा, घर में जाकर स्तनपान करके सो जा—बेचारा।"

श्रीधरन शर्मीले स्वभाव का होने के कारण किसी से भी कुछ कहे बिना चुप-चाप बैठा रहता। जब ड्राइंग मास्टर कक्षा में आते तो भालू 'फू फू' शब्द बनाता। यह सुनकर छात्र ठट्ठा मारकर हँसने लगते। श्रीधरन लम्बे अर्से के बाद भालू के

'शश फू' शब्द का अर्थ समझ सका। ड्राइंग मास्टर जाति से धोबी था। वह छोटा-मोटा मान्त्रिक भी था। धागा बाँधते समय जपनेवाला मन्त्र 'शशफू' कहलाता था।

ड्रिल मास्टर पठान से भालू डरता था। वह कुश्ती लड़ने वाले पहलवान की तरह दिखाई देता था। शैतानी करने या कुछ बकवास करने पर यह पठान गरदन पकड़ लेता। उस समय प्राण भी तड़प उठते। एक दफा भालू का मुँह खुला का खुला रह गया था।

स्कूल के दरवाजे में बैठनेवाला छह फुट लम्बा दुबला-पतला मिठाईवाला नामट ही ऐसा एक इन्सान था, जिसने श्रीधरन को आकर्षित किया था। मिठाई भरी हाँडी सामने रखकर वह पित्त रोगी ऊँघने लगता। नारियल के चूरे से बनी उसकी मिठाई मजेदार होती। हलके लाल रंग की मिठाई छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर हाँडी में ढेर बनाकर रखी जाती। देखने में बहुत ही सुन्दर लगती थी। एक पैसे के छह टुकड़े मिलते। श्रीधरन मिठाई खरीदकर उसे मुँह में डाल लेता और पानी पीने के लिए स्कूल के प्याउ पर चला जाता। पानी देनेवाले का आकार मिठाईवाले के आकार से बिलकुल उलटा था। पानी देनेवाला साढ़े तीन फुट लम्बा एक बुजुर्ग ब्राह्मण था। बड़ी तोंद वाला वह आदमी पानी भरे ताँबे के बर्तन से अपनी मोटी तोंद सटाकर इस तरह बैठता मानो एक बड़ा मेंढक पानी में उछलने की तैयारी कर रहा हो। उसको देखने पर श्रीधरन को हँसी आ जाती। ब्राह्मण हमेशा बकवास करता। वह बहुत जल्दी आपे से बाहर हो जाता। श्रीधरन की मज़ाक भरी हँसी देखकर वह बुजुर्ग नाराज़ हो जाता। पीतल के गिलास में दिया हुआ पानी पूरा न पीने पर वह गाली बकने लगता। इस वजह से श्रीधरन पानी वितरण करनेवाले उस मेंढक ब्राह्मण का शिकार हो गया।

एक सुबह जब श्रीधरन स्कूल पहुँचा तो देखा, लड़के बरामदे में इकट्ठे होकर दूर देख-देखकर हँस रहे हैं। पूछने पर एक सहपाठी ने फाटक की तरफ इशारा कर दिया।

वहाँ हरे रंग की एक कार खड़ी थी। दो आदमी एक नाटे कद के बुजुर्ग को पकड़कर कार से नीचे उतरने के बाद स्कूल की तरफ ले जा रहे थे।

छठे दर्जे के 'बी' डिवीजन के चन्दुकुट्टि ने बताया कि केलंचेरी के छोटे मेलान का आगमन हो रहा है। ध्यान से देखने पर मालूम हुआ कि जिसे उसने बुजुर्ग समझा था, वह एक बदसूरत लड़का था। केलंचेरी का छोटा शंकरन मेलान 'पुत्तन हाई स्कूल' का एक छात्र है। उसे मालूम नहीं था कि वह किस कक्षा में पढ़ता है। छठे छमासे ही छोटे मेलान को स्कूल में लाया जाता था। वह बड़ी घटना होती थी।

केलंचेरी से 'पुत्तन हाई स्कूल' सिर्फ एक ही फलांग था। फिर भी शंकरन

मेलान की सैर हमेशा कार पर ही होती थी। उसके बड़े भाई कुंजिक्केलु मेलान ने यह नई कार इंगलैण्ड से खरीदी थी। (कार के कई कोनों में बारह बत्तियाँ थीं। साँड की-सी आवाज़ निकालनेवाला एक बड़ा भोंपू भी था) केलंचेरी का पहला मुख्तार शुप्पुपट्टर और कुंजिक्केलु मेलान का अंगरक्षक लौहपुरुष पोक्कर ये दोनों छोटे मेलान के इर्द-गिर्द रहते। राजाओं की तरह ही वे शान-शौकत से पधारते। बाजों की कमी की पूर्ति साँड के स्वर में बार-बार बजनेवाला भोंपू करता।

देखने में रीछ की तरह बदसूरत बीमार शंकरन मेलान को शुप्पुपट्टरर और लौह-पुरुष पोक्कर स्कूल तक ले जाते। उस समय हेडमास्टर कोंगिणी ब्राह्मण आदर से अगवानी करने वहाँ उपस्थित होते। कक्षा की सबसे पहली सीट पर मेलान को प्रतिष्ठित करने के बाद वे वहाँ से पीछे हट जाते।

हफ्ते में एक दो बार ही छोटा मेलान कक्षा में हाज़िर होता।

एक दिन क्लास शुरू होने से पहले भालू नारायण ने कुर्सी पर चढ़कर यह घोषणा की कि दक्षिण के किसी कालेज से अवकाश प्राप्त एक पंडित इस स्कूल में आया है। वह आज इस कक्षा में पढ़ाने आएगा। हमें पंडित का समुचित ढंग से स्वागत करना होगा। भालू ने कार्यक्रम का बखान करने के बाद उसका रिहर्सल भी प्रस्तुत किया।

काग़ज़ का एक-एक पक्षी बनाकर सबको जेब में रखना होगा।

भालू जब अपने ओठ पर उँगली रखेगा, तब सब को खामोश रहना होगा।

जब भालू गुनगुनाये तब सब को उसी स्वर और ताल में गुनगुनाना होगा।

जब भालू मेंढक का स्वर निकालने लगे तब 'साँप साँप, हाय हाय!' चिल्लाकर सबको बेंच पर कूदकर चढ़ना होगा।

नेता ने इस ढंग का आदेश सबको दे दिया।

दूसरे घंटे में मॉरल इंस्ट्रक्शन था। क्लास लेने पंडित जी आ पहुँचे।

सभी लड़के अदब से चुपचाप उठ खड़े हुए।

ज़मीन पर लटकती मैली धोती और कुर्त्ता पहने बुजुर्ग पंडित को लड़कों ने परिहास से देखा, लेकिन वे हँसे नहीं (क्योंकि भालू अपने ओठ पर उँगली रखे गर्व से खड़ा था।)

कक्षा में श्मशान की-सी खामोशी छा गयी थी।

ढलती उम्र के कारण थकी पलकों को उठाकर नये मास्टर ने कक्षा में सरसरी निगाह डाली।

छात्रों को मालूम हुआ कि पंडितजी की आँखों की दर्शन-शक्ति कम है।

"सिट डाउन", मास्टर ने गम्भीर स्वर में कहा।

सभी बच्चे साँस रोककर बैठ गये। (शायद मास्टर जी ने कक्षा के छात्रों के

अनुशासन की मन ही मन प्रशंसा की होगी।)

मास्टर ने सबक शुरू किया :

"सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्
न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्···"

श्लोक की व्याख्या "सच बोलना चाहिए। लेकिन वह प्रियंकर सच्चाई होनी चाहिए। एक चोर को चोर पुकारना सच तो है ही लेकिन प्रिय सच्चाई नहीं है। इसलिए इस ढंग का अप्रिय सत्य नहीं कहना चाहिए···"

भालू गुनगुनाने लगा···साथ ही कक्षा में ततैयों के झुंड के छत्ते से हिलने की-सी एक गूंज सुनाई पड़ी।

मास्टर ने अपना सिर और पलकों को उठाकर चारों तरफ देखा : खामोशी थी।

उन्होंने समझा कि शायद मेरे कान से ही निकली कोई गूँज होगी। फिर उन्होंने श्लोक दोहराया :

"सत्यं ब्रूयात्, प्रियं ब्रूयात्···"

भालू ज़ोर से गुनगुनाया। कक्षा में आँधी का-सा शोर··

मास्टर ने घबराकर सिर उठाकर देखा।

खामोशी और निश्चलता।

मास्टर को कुछ भी नहीं मालूम हुआ।

"कैसी गूंज थी यह ?" मास्टर ने ज़ोर से पूछा। कोई ज़वाब नहीं मिला। खामोशी छा गयी।

मास्टर ने सबक जारी रखा :

सत्यं ब्रूयात्···

अचानक भालू ने गर्जन किया। साथ ही पचास भालू गरज उठे।

मास्टर कुर्सी से झपटकर खड़े हो गये। कुछ कहने का प्रयास कर रहे थे कि इतने में भालू ने अपनी जेब से कागज़ की चिड़िया निकालकर मास्टर के गंजे सिर की तरफ फेंककर उड़ा दी। उसके साथ पचास सफेद पक्षी हवा में उड़ने लगे। एक-दो पक्षी पंडितजी के सिर पर भी जा गिरे।

"जारज कुत्ते !—" पंडितजी नाराज होकर चीखे। भालू मेंढक की तरह रो पड़ा—साँप के मुँह में पड़े मेंढक की रुलाई।

'साँप, साँप, हाय-हाय।' सभी लड़के एक साथ चिल्लाते हुए बेंच के ऊपर चढ़ गये।

"क्या यह सच है ! माया है या अपने मन की भ्रान्ति है ?" पंडितजी सोचने लगे : क्या मैं भी कुर्सी पर चढ़ जाऊँ। वे शंकित से खड़े रहे।

शोर-शराबा सुनकर हेडमास्टर कोंकिणी ब्राह्मण ने क्लास के बरामदे में

पहुँचकर अन्दर झाँककर देखा।

लड़के बेंचों पर इस तरह बैठे थे मानो वहाँ कुछ भी घटित नहीं हुआ हो।

कागज़ की चिड़ियाँ क्लास में इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं।

हेडमास्टर ने पंडितजी के चेहरे की तरफ देखा।

पंडितजी की आँखों से दो बूँद आँसू गालों पर लुढ़क गये।

पंडितजी कुछ कहे बगैर क्लास से बाहर चले गये।

चुपचाप बैठनेवाले अपराधियों को देखकर हेडमास्टर ने वेदना के साथ कहा : "तुम्हें मालूम है कि आज तुम लोगों ने किसकी हँसी उड़ाकर अपमानित किया है ? हाय हाय ! महान पंडित पारबत्तु देरू नायर को ही तुम लोगों ने आज रुलाकर बाहर भेज दिया है•••।"

## 2. अतिराणिप्पाटं के परिवर्तन

अतिराणिप्पाटं में कई परिवर्तन आ गये थे। प्रमुख घटना है कि कन्निप्परंपु का कुंजप्पु रेलवे की नौकरी पाकर परदेश चला गया है।

उसके पहले की घटना पर ज़िक्र करूँगा :

एक दिन सुबह कृष्णन मास्टर उठकर बरामदे में आये तो अँग्रेज़ी शैली के अभियादन और मिलिटरी सेल्यूट ने उनकी अगवानी की।

"गुडमोर्निंग फादर ••यू बिग मैन•••"

कृष्णन मास्टर ने घूरकर देखा तो सामने कुंजप्पु था। कपड़ा ढीला होकर गिर रहा था और वह पागल की तरह बरामदे के एक कोने में पैर पसार कर बैठा था।

"हाय ! कुंजप्पु को क्या हुआ ?" कृष्णन मास्टर असमंजस में पड़ गये।

तभी कलाल मामुक्कुट्टन आँगन में आ पहुँचा। वह कुंजप्पु को ठीक तरह से देखने के बाद हँस पड़ा।

"मुन्ने को जल्दी ज़रा मट्ठा पिला दो" मानुक्कुट्टन ने मास्टर की तरफ देखकर ज़ोर से कहा।

कुंजप्पु का सिर छाती की तरफ झुक गया था। मुँह से लार गिर रही थी।

मानुक्कुट्टन ने कुंजप्पु के पास जाकर उँगली से इशारा करते हुए क्रोध और परिहास भरे लहजे में खरी खोटी सुनायी : "बच्चू, मेरी ताड़ी यों चुराकर पीने से यही होगा। अब समझ गया ना !•••"

कृष्णन मास्टर को बात तभी समझ में आ गयी थी।

मानुक्कुट्टन ने देखा कि नारियल पर की हाँडी में ताड़ी कम होती जा रही है। कभी-कभी बिलकुल ही न होती। मानुक्कुट्टन ने समझा कि कोई चुराकर पी लेता है। चोर को पकड़ने के लिए उसने बर्तन में धतूरे का फल पीसकर मिला

दिया। सुबह ही सुबह कुंजप्पु ने नारियल के पेड़ पर चढ़कर ताड़ी पी ली। थोड़ी देर बाद उसे नशा चढ़ गया और पागल की तरह वह लोटने लगा।

कृष्णन मास्टर को लगा कि किसी ने उसकी खाल खींच ली है। कितना अपमान है !

उस दिन शाम को कृष्णन मास्टर अपने एक पुराने शिष्य और रेल विभाग के एक बड़े अफसर मार्टिन साहब से मिला। उसने बड़े दुख के साथ एक्स मिलिटरी वाले अपने बेटे को रेल विभाग में कोई नौकरी दिला देने की प्रार्थना की। इस एंग्लो इण्डियन अफसर ने वादा किया कि वह उसे रेल के लोकोशेड में 'फिटर' के प्रशिक्षण के लिए ले लेगा।

अगले दिन कृष्णन मास्टर ने कुंजप्पु को पास बुलाकर पूछा, "रेल विभाग में नौकरी मिलने पर तू करेगा ?"

कुंजप्पु ने "हाँ" में जवाब दिया। अतिराणिप्पाटं की जिन्दगी से वह एकदम ऊब गया था। कर्जदारों से बच भी जाएगा।

यों बस्ता कुंजप्पु—नहीं पेंटर कुंजप्पु, रेल विभाग की वर्कशॉप में फिटर कुंजप्पु बनकर तमिलनाडु पहुँच गया।

दूसरी घटना : अतिराणिप्पाटं के एक कोने में सड़क के नज़दीक कोरन बटलर की दुकान की शुरुआत है।

बचपन से ही कोरन रेल के एंग्लो इण्डियन गार्ड के बंगले में रसोइया था। आखिर उसका नाम भी यही पड़ गया : गार्ड बंगले का कोरन।

जब मालिक नौकरी से अवकाश ग्रहण कर बेंगलूर में रहने लगे तो कोरन बटलर को नौकरी से अलग कर दिया गया। वेतन की बाकी रकम के साथ उसको पुरस्कार के रूप में भी अच्छी रकम दी थी। कोरन ने उस पैसे से अतिराणिप्पाटं में चाय की दूकान खोल ली। गोरे रंग और नाटे कद का कोरन बटलर बड़ी तोंद और गंजे सिर का बुजुर्ग है। उसकी खोपड़ी पर चारों तरफ कुछ सफेद बाल हैं। उसकी पहली पत्नी की मृत्यु हो चुकी है। उससे उसकी तिरुमाला नाम की एक खूबसूरत बेटी है। बटलर की दूसरी पत्नी एक दुबली पतली औरत है— नाम कुंजम्मा—क्षय रोग की शिकार। (मूँछ कणारन के शब्दों में 'देखने में सुन्दर पैन्सिल की तरह' है) कुंजम्मा के दूर के रिश्तेदारों में जानु और कल्याणी दो अनाथ बहनें भी थीं। लम्बी, दुबली-पतली, कुछ भेंडी आँखों वाली जानु विधवा है। काली मोटी कल्याणी सत्रह साल की लड़की है। काली होने पर भी कल्याणी देखने में सुन्दर है। हँसते समय बाहर दिखाई देते उसके दाँतों में एक खास तरह का सौंदर्य होता। चाय की दुकान में चावल पीसना, मिर्च पीसना, पकवान बनाना ये सब काम जानु-कल्याणी बहनें ही करती थीं।

कोरन बटलर तमाशाई भी था। शाम होते ही उसे ताड़ी चाहिए। पीने पर

वह कुंजम्मा के साथ सार्वजनिक रूप से प्रणय-चेष्टाएँ करता। उसका मालिक विलियम साहब शराब पीने के बाद अपनी पत्नी के साथ जिस प्रकार की प्रणय चेष्टाएँ करता था उसी तरह की हरकतें कुंजम्मा के साथ कोरन बटलर भी करता। "ओ माई डारलिंग – माई लिट्टिल बरडी" आदि बकते हुए बूढ़ा अपनी लेडी कुंजम्मा को छाती से लगाकर उसके पीले गालों का चुंबन लेता। फिर उसकी कमर पकड़कर नाचने भी लगता। कुंजम्मा और कोरन बटलर की इन शृंगारिक हरकतों के लिए मूँछ कणारन ने एक नाम दिया है : "ताड़ी की हाँडी और कलछुई के बेंत-बीच का खेल !"

कभी कभी ताड़ी अधिक मात्रा में पी जाने के कारण होशो-हवास खोकर कोरन बटलर चाय की दुकान की बेंच पर धोती लंगोटी के बिना चित लेट जाता। उस समय कुंजम्मा अपने पति को कपड़ों से ढककर नकदी पेटी के पास जाकर खुद बैठती।

कोरन बटलर की बेटी मदिराक्षी तिरुमाला की शादी उत्तर के एक केलन के साथ सम्पन्न हुई है। नारंगी के छिलके का रंग और आँवले जैसी आँखों वाले केलन में गोरों का खून समाया होगा। केलन बहुत ही सुन्दर है। वह पुलक्करा के लकड़ी गोदाम के मालिक पोक्कु हाजी के इक्के का गाड़ीवान है। उड़नेवाला घोड़ा, खूबसूरत गाड़ी, चित्रकारीवाली खिड़कियाँ, अन्दर हरी सेज, नीले रेशम का पर्दा—एक चलता फिरता सिंगारघर है पोक्कु हाजी का इक्का। उसकी घंटी बजने पर फायर इंजिन के आने का शक होता। उस राजसी रथ का सारथी बनना बड़ी शान-शौकत की बात है।

ससुराल में ही केलन रहता है। लेकिन ज्यादातर वह इक्कागाड़ी के सामने सीट पर शहर में इधर-उधर दिखाई देता। उसे घर में देखना मुश्किल है। सुबह ही सुबह समुद्र तट के सामने मालिक के महल में पहुँचना होता। घोड़े को दाना-पानी देने के बाद उसकी मालिश करना, उसे धोना होता।

हाजी को हर रोज़ सुबह समुद्रतट की सड़क से इक्के पर लेना। फिर उसको पुलक्करा के गोदाम में पहुँचाना। अकस्मात् कई जगह जाना भी पड़ता। वहाँ घंटों इंतजार करना होता। हाजी दोपहर को भोजन करने दूसरी बीवी के घर जाता। फिर गोदाम में जाता। शाम को हाजी को महल में पहुँचाने के बाद इक्का और इक्केवान हाजी की औरत के अधीन रहते। घूँघट में ढके उन प्राणियों को प्रायः हर रोज़ मेहमानों के यहाँ कहीं न कहीं घूमने जाना होता। कभी-कभी रातों में हाज़ी की भी कुछ रहस्यपूर्ण यात्राएँ होतीं। इन सबके बाद घोड़े को भोजन देकर उसे अस्तबल में बाँधकर घर पहुँचने तक आधी रात ढल चुकी होती। नवोढ़ा तिरुमाला गाढ़ी निद्रा में लीन हो गयी होती।

कुवड़े वेलु की पत्नी पगली आच्चा को उसका भाई कुंजाड़ी इलाज कराने के

गाड़ी के प्लेटफार्म पर पहुँचने पर चारों तरफ निगाह घुमायी। मोटा केलप्पन एक बड़ी सन्दूक कन्धे पर उठाकर एक जरीदार पट्टर के पीछे चलते हुए दिखाई दिया। उसके दूर पहुँचने पर सोचा कि सामने के डिब्बे में घुसना ही अच्छा है। वह डिब्बा एकदम खाली था। अन्दर झाँककर देखा। गद्दीदार सीट थी। ऊपर पंखा भी घूम रहा था। कोने में एक गोरा साहब मूसल के टुकड़े जैसा सिगार पीते हुए अखबार पढ़ रहा था। हाय रे! गोरों का पहला दर्जा है यह। दौड़कर नज़दीक के तीसरे दर्जे में चढ़ गया।

डिब्बे में भीड़ थी। फिर भी एक कोने में जाकर छिप गया।

गाड़ी रवाना हो गयी। कुछ तसल्ली हुई।

औषधि की गन्ध के साथ एक भाषण डिब्बे में गूँज उठा -- "सिर दर्द, जुकाम, छाती का दर्द, शरीर का दर्द, सबके लिए अत्युत्तम बढ़िया नीलगिरि यूक्लि-प्टिस..."

एक मोटा ताजा मुसलमान बड़ो तोंदवाला आदमी। उसने एक काला ढीला कोट पहन रखा था। उस कोट के नीचे, ऊपर और अन्दर बड़ी-बड़ी जेबें थीं। उसमें शीशियाँ भरी थीं।

उसने जेब से एक शीशी का कार्क हटाकर उसमें से कुछ तेल अपनी उंग-लियों पर उड़ेलकर सामने के मान्य यात्रियों के माथों पर थोड़ा-थोड़ा पोत दिया। 'सिर दर्द और छाती के दर्द' का लेक्चर भी वह करता जाता। श्रीधरन ने भी उठकर अपना चेहरा दिखा दिया।

यूक्लिप्टिस वाले मुसलमान ने श्रीधरन के माथे पर तेल चुपड़ने का नाम-सा कर दिया कि लड़कों को इतना ही काफी है।

माथे को बड़ी राहत महसूस हुई। उस तेल की खास तरह की गन्ध नाक में चढ़ गयी।

"बड़ी शीशी के दो आने छोटी शीशी का एक आना।" वह आदमी सिर दर्द का तेल बेचने लगा।

श्रीधरन ने एक आना देकर एक छोटी शीशी तेल खरीदने का विचार किया। जेब में सवा तीन आने ही थे। इसलिए यही पक्का किया कि न खरीदना ही अच्छा है।

उस वक्त डिब्बे के कोने में शोर-शराबा सुनाई पड़ा। मार-पीट होने लगी— लोग उस कोने में इकट्ठा होने लगे। श्रीधरन ने भी उठकर देखा। दो नौजवान मुसलमानों के बीच मार-पीट हो रही थी। उन्हें दूर हटाने का [illegible] था। दोनों के बीच धक्का-मुक्की होती रही।

श्रीधरन धक्का-मुक्की देखने के लिए [illegible]

एक बुजुर्ग ने बीच-बचाव किया [illegible] दोन[illegible]

तसल्ली हुई। अब कोई पड़ताल नहीं करेगा। सन्दूक, गठरियों को पास में रखे गाड़ी के इन्तज़ार में बैठे हुए यात्रियों को देखता श्रीधरन मज़े से इधर-उधर चक्कर लगाने लगा। कितने वेश हैं! कोंगणी, मुस्लिम, पट्टर आदि सभी जाति-धर्म के लोग वहाँ जमा हैं। मूंछ कणारन कहा करता था, "कई जाति के लोग और पठान भी।"

चार बज गये। साढ़े तीन बजे की गाड़ी अब भी नही पहुँची।

"क्या गाड़ी लेट है?" नियमित यात्री-जैसा बन कर सामने दिखाई दिये एक-दो मान्य व्यक्तियों से पूछताछ की। उन्होंने अनसुना कर दिया। फिर लगा ऐसी बेवकूफी का प्रश्न नहीं करना चाहिए था।

"बेटा एक पैसा दो"

मुड़कर देखा। काँपती हुई एक बुढ़िया लाठी टेके झुकी हुई खड़ी है।

झट जेब टटोली तो पाव आना हाथ लगा। उसे बुढ़िया को दिया। बेचारी भूखों रहती होगी।

हमदर्दी दिखाता हुआ आगे बढ़ा तो अचानक धक्का-सा लगा—मोटा केलप्पन कुली दूर पर दिखाई दिया।

अतिराणिप्पाटं में रहने वाला मोटा केलप्पन बड़ा ही दुष्ट आदमी है। उसकी पत्नी एक नायर स्त्री है। केलप्पन उत्तरी इलाके के किसी बड़े घराने से उसको फुसला कर लाया था।

मोटे केलप्पन ने मुझे देख लिया तो गड़बड़ी हो जाएगी। पूछेगा, बच्चा किधर जाता है? साथ कौन-कौन है? अब उससे झूठ-मूठ बोलने पर भी वह कन्निप्परंपु में जाकर ज़रूर बतावेगा कि उसने रेलवे स्टेशन पर श्रीधरन को देखा था।

केलप्पन की आँख बचाने के लिए श्रीधरन जल्दी से प्लेटफार्म के दक्षिण में बने शौचालय की तरफ गया।

शौचालय के एक सिरे पर पगड़ी पहने एक भैंसवाले का चित्र टंगा था। दूसरे सिरे के बोर्ड पर साड़ी पहने एक औरत का चित्र था। उस बोर्ड के नीचे "केवल औरतों के लिए" लिखा था।

श्रीधरन को लगा कि शुरू में एक शब्द को बदलकर दूसरा जोड़ना है।

मोटे केलप्पन से बचने के लिए श्रीधरन पेशाब की बदबू को बर्दाश्त कर मर्दों के शौचालय में ही खड़ा रहा।

थोड़ी देर बाद घंटी बजने की आवाज़ सुनाई दी। गाड़ी आने का समय हो गया है, प्लेटफार्म पर चला।

प्लेटफार्म के एक कोने में बोरों का ढेर लगा हुआ था। उसकी ओट में छिप-गया।

लिए ले गया। वेलु ने आच्चा से अपना रिश्ता विधिवत् तोड़ दिया। उसने अपनी और घर की देख-रेख करने के लिए एक नयी शादी की है। काली मोटी, कटहल से स्तनोंवाली उस औरत के दस वर्ष का एक लड़का भी है। सिर पर गाय के गोवर की तरह वाल बाँधनेवाली कुट्टिप्पेण्णम्मा को पहली बार देखने पर श्रीधरन को अशोकवाटिका में सीतादेवी के लिए नियुक्त किसी राक्षसी की याद आ गयी। उस औरत का लड़का बहुत शरारती जीव है। अप्पुण्णि नाम का यह वदमाश छोकरा एक दिन अतिराणिप्पाटं के वस्ता कुंजप्पु का रिक्त स्थान ज़रूर ग्रहण करेगा।

'बड़ा गपिया किट्टुण्णि' अतिराणिप्पाटं में अभी-अभी आया है। वह गपिया परंगोटन का छोटा भाई है। परंगोटन अपनी वस्ती से छोटे भाई किट्टुण्णि को अपने सहयोगी के तौर पर लाया है।

किट्टुण्णि स्कूल में छठे दर्जे तक पढ़ा था। कंकाल होने पर भी उसे वड़ी सजधज के साथ चलने का शौक है। गप्प मारते हुए चलने के कारण अतिराणिप्पाटं पहुँचने पर कुछ ही दिनों के अन्दर किट्टुण्णि को 'बड़ा गपिया किट्टुण्णि' उपनाम अतिराणिप्पाटं के जन प्रतिनिधि की हैसियत से केकड़ा गोविन्दन ने दिया था। कुष्ठ रोग से सिकुड़े हाथोंवाला केकड़ा गोविन्दन उस जगह की सभी चुगलियों और मिथ्या अपवादों के कार्यक्रमों का प्रणेता है।

किट्टुण्णि के पास रेशमी कुर्ता है, रिस्टवाच है, पेन है, और चरनिवाली नयी जूतियाँ भी हैं। लेकिन इन सबके साथ वाहर निकलने की फुरसत कहाँ मिलती है? नारियल से ताड़ी निकालने जाते वक्त जूतों को पहनता था। जूतों को पेड़ के पास छोड़कर ऊपर चढ़ जाता। नीचे उतरने पर कभी जूतों में एक दिखाई देता, एक न देता। कुत्ता दवाकर ले गया होगा। इस तरह तीन जोड़े जूतों के नुकसान होने पर फिर किट्टुण्णि ने ताड़ी निकालने जाते वक्त जूते पहनने की आदत ही छोड़ दी।

सुबह होते ही कमर में रेशों की पतली रस्सी से चौड़ी छुरी वाँधकर नारियल से ताड़ी निकालने के लिए वह जाता। फिर ताड़ी का घड़ा लेकर तुरन्त ताड़ी-घर जाना होता। देर होने पर पालटार—आवकारी अफसर—पकड़कर मुकद्दमा दायर कर देता। दोपहर के भोजन के वाद थोड़ी देर का अवकाश मिलता। दोपहर में कहाँ जाता? शाम को फिर ताड़ी निकालने जाना होगा। इन सवके वाद घर वापस आने पर धुँधलका छा जाता। नहाकर भोजन करने के वाद किट्टुण्णि अभिनेता की तरह अपनी सज-धज स्वयं करता। चेहरा पाउडर से चिकना करके रेशमी कुर्ता पहनकर सुनहरे क्लिपवाली कलम जेव में रखकर, रिस्टवाच पहनकर चमकनेवाली जूतियाँ पहनते हुए वह वड़ी देर तक विचारमग्न-सा खड़ा रहता। नौ वज गये, अव कहाँ जाना है? किट्टुण्णि गद्दा विछाकर उसी वेशभूषा में घड़ी वाला हाथ सिर पर रखकर लेटजाता।

अतिराणिप्पाटं का दूसरा नवागत है 'डींगवासु'। वह चन्दुमूप्पन का भतीजा है।

गोरा लम्बा खूबसूरत युवक है वासु। आठवीं कक्षा पास है। अब लेखाकार के रूप में काम कर रहा है। वह अपने मामा चन्दुमूप्पन के साथ ही रहता है। हिसाब लगाने में बड़ा होशियार है। लेकिन उससे बढ़कर डींग हाँकनेवाला व्यक्ति और कोई नहीं होगा। उसे कई कठिन श्लोक मालूम हैं। चुटकुले और ढेर सारी कहावतें भी याद हैं। कहावतों की लड़ी में वह जैसा होशियार है, उसी तरह अक्षरों को आगे-पीछे पिरोकर ढेर सारी पहेलियाँ भी बुझाता है।

"नारंगद पुत्त ताड़ी" – बताओ क्या है ? वासु श्रीधरन से पूछता।

श्रीधरन उसके अक्षरों को मन में उलट फेर कर कई तरह से रखता। फिर कागज पर लिखकर सोचता। लेकिन उसे कुछ समझ में नहीं आता।

"हार गया ?" वासु सवाल करता। 'हार गया' के भाव में श्रीधरन सिर झुका लेता।

"तो सीख ले"—नादापुरत्तंगाड़ी।

अब एक और :

"वलियचात्तु तीण्डि वन्नु"

श्रीधरन उसमें भी हार गया।

उत्तर "चालियत्तु तीवण्डि वन्नु।" [चालियत में रेलगाड़ी आयी।]

और एक जटिल सवाल।

"कुट्टियुण्डो राङ्ङल कुक्कुटि तच्च पोले"

उसे सुनकर श्रीधरन एकदम धराशायी हो गया।

उत्तर सुनने पर वह हँस पड़ा।

"कुण्डोट्टि तंगल राक्कु कुटिच्चपोले।" [जैसे कुण्डोट्टि तंगल ने शराब पी ली हो]

तन्त्रमन्त्रवाले करिश्मे से प्रभावग्रस्त की तरह श्रीधरन डींग वासु का विनीत शिष्य हो गया—उसको वासु की सहायता भी मिली। कक्षा के गणित के सवालों में से जो करना होता, उसे वासु से कराता।

इक्केवान केलन के मालिक पोक्कु हाजी के गोदाम में ही वासु लेखाकार के रूप में काम कर रहा है। माहवार वेतन है पन्द्रह रुपये।

## 3. प्रवास

एक शनिवार की दोपहर श्रीधरन को डींगवासु के घर के सामने की पगडंडी पर वासु मिला। वासु ने अपनी जेब से एक मोटा कागज निकालकर श्रीधरन को

भेंट किया।

श्रीधरन एकाएक समझ नहीं सका कि क्या है ? उस पर छपे शब्दों से अन्दाज लगाया, रेलगाड़ी का तीसरे दर्जे का टिकट है।

वासु ने कहा, "कारक्कुन्निल का टिकट है। तू चाहता है तो सफर कर आ। साढ़े तीन बजे उत्तर दिशा की तरफ एक गाड़ी है।"

वासु कारक्कुन्निल में मौसी के घर से अभी वापस आया है। वह रेलगाड़ी से ही वहाँ गया था। कारक्कुन्नु स्टेशन पर उतरकर चालाक वासु टिकट कलेक्टर की आँखें बचाकर बाहर निकला। इस तरह कमाया हुआ वह टिकट ही उसने श्रीधरन को भेंट किया है—साथ ही कारक्कुन्नु तक रेलगाड़ी में मुफ्त यात्रा करने की सलाह भी दी है।

यह सुनहरा मौका श्रीधरन ने खोना नहीं चाहा।

घर में जाकर खाकी नेकर और जिप्सी से खरीदी हुई चौकड़िया हाफ कमीज़ पहनकर वह माँ से यह झूठी बात कहकर बाहर निकल गया कि होम-वर्क करने के लिए सहपाठी गंगाधरन के घर जा रहा है। जेब में कुल मिलाकर साढ़े तीन आने भर थे।

श्रीधरन दो-तीन बार अमावस्या के दिन नहाने के लिए कारक्कुन्नु समुद्र तट पर गया था। वह पैदल समुद्र तट तक ही गया था। समुद्री किनारे के अलावा उसने वहाँ की कोई और जगह नहीं देखी थी। अकेले आज़ादी के साथ रेलगाड़ी की यात्रा ! उसे गर्व का अनुभव हुआ। साथ ही हल्का-सा भय भी।

स्टेशन पहुँचा। जेब से टिकट निकालकर सीधे भी घुस सकता था। दरवाज़े पर खड़े टोपीवाले को ज़रा देखा। श्रीधरन ने ध्यान दिया कि वह अन्दर घुसने-वाले यात्रियों का टिकट लेकर उसमें एक खास तरह की कैंची से ज़रा-सा काटता है। उसने वासु के टिकट की जाँच की तो देखा कि उसके कोने में अंग्रेज़ी "वी" शक्ल में पहले ही एक निशान था। श्रीधरन छिपकर खड़ा हो गया। दरवाज़े का टोपीवाला अगर उसका टिकट देख ले तो आसानी से समझ जायेगा कि इसके पहले इस टिकट का इस्तेमाल हो चुका है। जाली टिकट से घुसने की कोशिश करनेवाले को पकड़कर पुलिस को सौंप दिया जाएगा।

श्रीधरन को लगा कि वापस जाने में ही खैरियत है।

उसने विचार किया कि किसी तरह प्लेटफार्म पर घुस जाने के बाद वह बच जाएगा।

तभी औरत-मर्द और बच्चों का एक झुंड दरवाज़े पर इकट्ठा होकर खड़ा हो गया। उनके मुखिया ने टिकटों का ढेर टोपीवाले को सौंपा और टोपीवाला इन्हें काट ही रहा था कि इतने में श्रीधरन भीड़ के बीच में होकर प्लेटफार्म पर निकल गया।

तसल्ली हुई। अब कोई पड़ताल नहीं करेगा। सन्दूक, गठरियों को पास में रखे गाड़ी के इन्तजार में बैठे हुए यात्रियों को देखता श्रीधरन मज़े से इधर-उधर चक्कर लगाने लगा। कितने वेश हैं! कोंगणी, मुस्लिम, पट्टर आदि सभी जाति-धर्म के लोग वहाँ जमा हैं। मूंछ कणारन कहा करता था, "कई जाति के लोग और पठान भी।"

चार बज गये। साढ़े तीन बजे की गाड़ी अब भी नहीं पहुँची।

"क्या गाड़ी लेट है?" नियमित यात्री-जैसा बन कर सामने दिखाई दिये एक-दो मान्य व्यक्तियों से पूछताछ की। उन्होंने अनसुना कर दिया। फिर लगा ऐसी बेवकूफी का प्रश्न नहीं करना चाहिए था।

"बेटा एक पैसा दो"

मुड़कर देखा। काँपती हुई एक बुढ़िया लाठी टेके झुकी हुई खड़ी है।

झट जेब टटोली तो पाव आना हाथ लगा। उसे बुढ़िया को दिया। बेचारी भूखों रहती होगी।

हमदर्दी दिखाता हुआ आगे बढ़ा तो अचानक धक्का-सा लगा—मोटा केलप्पन कुली दूर पर दिखाई दिया।

अतिराणिप्पाट में रहने वाला मोटा केलप्पन बड़ा ही दुष्ट आदमी है। उसकी पत्नी एक नायर स्त्री है। केलप्पन उत्तरी इलाके के किसी बड़े घराने से उसको फुसला कर लाया था।

मोटे केलप्पन ने मुझे देख लिया तो गड़बड़ी हो जाएगी। पूछेगा, बच्चा किधर जाता है? साथ कौन-कौन है? अब उससे झूठ-मूठ बोलने पर भी वह कन्निप्परंपु में जाकर ज़रूर बतावेगा कि उसने रेलवे स्टेशन पर श्रीधरन को देखा था।

केलप्पन की आँख बचाने के लिए श्रीधरन जल्दी से प्लेटफार्म के दक्षिण में बने शौचालय की तरफ गया।

शौचालय के एक सिरे पर पगड़ी पहने एक भैंसवाले का चित्र टंगा था। दूसरे सिरे के बोर्ड पर साड़ी पहने एक औरत का चित्र था। उस बोर्ड के नीचे "केवल औरतों के लिए" लिखा था।

श्रीधरन को लगा कि शुरू में एक शब्द को बदलकर दूसरा जोड़ना है।

मोटे केलप्पन से बचने के लिए श्रीधरन पेशाब की बदबू को बर्दाश्त कर मर्दों के शौचालय में ही खड़ा रहा।

थोड़ी देर बाद घंटी बजने की आवाज़ सुनाई दी। गाड़ी आने का समय हो गया है, प्लेटफार्म पर चला।

प्लेटफार्म के एक कोने में बोरों का ढेर लगा हुआ था। उसकी ओट में छिपकर खड़ा हो गया।

गाड़ी के प्लेटफार्म पर पहुँचने पर चारों तरफ निगाह घुमायी। मोटा केलप्पन एक बड़ी सन्दूक कन्धे पर उठाकर एक जरीदार पट्टर के पीछे चलते हुए दिखाई दिया। उसके दूर पहुँचने पर सोचा कि सामने के डिब्बे में घुसना ही अच्छा है। वह डिब्बा एकदम खाली था। अन्दर झाँककर देखा। गद्दीदार सीट थी। ऊपर पंखा भी घूम रहा था। कोने में एक गोरा साहब मूसल के टुकड़े जैसा सिगार पीते हुए अखबार पढ़ रहा था। हाय रे! गोरों का पहला दर्जा है यह। दौड़कर नज़दीक के तीसरे दर्जे में चढ़ गया।

डिब्बे में भीड़ थी। फिर भी एक कोने में जाकर छिप गया।

गाड़ी रवाना हो गयी। कुछ तसल्ली हुई।

औषधि की गन्ध के साथ एक भाषण डिब्बे में गूँज उठा -- "सिर दर्द, जुकाम, छाती का दर्द, शरीर का दर्द, सबके लिए अत्युत्तम बढ़िया नीलगिरि यूक्लिप्टिस..."

एक मोटा ताजा मुसलमान बड़ी तोंदवाला आदमी। उसने एक काला ढीला कोट पहन रखा था। उस कोट के नीचे, ऊपर और अन्दर बड़ी-बड़ी जेबें थीं। उसमें शीशियाँ भरी थीं।

उसने जेब से एक शीशी का कार्क हटाकर उसमें से कुछ तेल अपनी उंगलियों पर उड़ेलकर सामने के मान्य यात्रियों के माथों पर थोड़ा-थोड़ा पोत दिया। 'सिर दर्द और छाती के दर्द' का लेक्चर भी वह करता जाता। श्रीधरन ने भी उठकर अपना चेहरा दिखा दिया।

यूक्लिप्टिस वाले मुसलमान ने श्रीधरन के माथे पर तेल चुपड़ने का नाम-सा कर दिया कि लड़कों को इतना ही काफी है।

माथे को बड़ी राहत महसूस हुई। उस तेल की खास तरह की गन्ध नाक में चढ़ गयी।

"बड़ी शीशी के दो आने छोटी शीशी का एक आना।" वह आदमी सिर दर्द का तेल बेंचने लगा।

श्रीधरन ने एक आना देकर एक छोटी शीशी तेल खरीदने का विचार किया। जेब में सवा तीन आने ही थे। इसलिए यही पक्का किया कि न खरीदना ही अच्छा है।

उस वक्त डिब्बे के कोने में शोर-शराबा सुनाई पड़ा। मार-पीट होने लगी—लोग उस कोने में इक्ट्ठा होने लगे। श्रीधरन ने भी उठकर देखा। दो नौजवान मुसलमानों के बीच मार-पीट हो रही थी। उन्हें दूर हटाने का हौसला किसी में न था। दोनों के बीच धक्का-मुक्की होती रही।

श्रीधरन धक्का-मुक्की देखने के लिए भीड़ के बीच खड़ा हो गया। आखिर एक बुजुर्ग ने बीच-बचाव किया। उसने दोनों को अलग कर दिया। वे नौजवान

फिर छाती फुलाते हुए आगे बढ़े और अपनी मुट्ठी बाँधकर एक दूसरे को धमकी देने लगे।

इतने में गाड़ी सीटी बजाती हुई कारक्कुन्नु स्टेशन पहुँच गयी। वह गति कम करती हुई आखिर प्लेटफार्म पर रुक गयी।

श्रीधरन झट गाड़ी से प्लेटफार्म पर उतर गया। उसने टिकट निकालने के लिए हाथ नेकर की जेब में डाला। जेब खाली थी। नहीं, एक पैसा जेब के कोने में अटका हुआ था।

धक्का-मुक्की के बीच किसी ने श्रीधरन की जेब खाली कर दी थी। तीन आने के साथ ही टिकट भी नदारद।

एड़ी से लेकर चोटी तक सिहरन-सी महसूस हुई। आफिस के दरवाजे की तरफ देखा। यात्री-जन बाहर जाने की उतावली में खड़े थे। टोपीवाला एक-एक टिकट जाँच कर यात्रियों को बाहर जाने दे रहा था।

अगर मुझे पकड़ ले तो यह मेरा क्या करेगा? बिना टिकट गाड़ी में चढ़नेवाला समझकर धकेल देगा। फिर पुलिस को सौंप देगा। जेलखाने में डाल दिया जाएगा। इस तरह सोचता-सोचता वह बेहद परेशान हो गया। इस्तेमाल किया हुआ टिकट देकर लोभ में डालनेवाले बदमाश वासु को कोसा। स्टेशन पर मोटे केलप्पन को देखते ही घर लौट जाना था। फिर रेलगाड़ी की वह मारपीट। समझ गया कि वे धक्का-मुक्की का बहाना कर लोगों की जेब खाली कर रहे थे। अब इन बातों को सोचने से कोई फायदा नहीं है। किसी न किसी तरह प्लेटफार्म से बाहर निकलना है।

गाड़ी स्टेशन से रवाना हुई। काफी देर हो जाने पर भी कुछ यात्री प्लेटफार्म पर ही रुके हुए थे। घंटी बजने की आवाज़ सुनाई दी, मालूम हुआ कि दक्षिण की गाड़ी का समय है।

सभी यात्रियों के चले जाने के बाद श्रीधरन ने दरवाज़े पर खड़े टोपीवाले को टिकटों का ढेर लेकर स्टेशन मास्टर के कमरे की तरफ जाते हुए देखा। मौका पा कर श्रीधरन दरवाज़े से बाहर निकल गया।

सुरक्षा का बोध होने पर एक तरह का हौसला-सा हुआ। कारक्कुन्नु और उसके आस-पास की जगह देखने के बाद पैदल ही शहर लौट जाने का निश्चय किया।

कारक्कुन्नु के ऊपर फौजी बेरिक्स हैं। गोरों की पलटन ही वहाँ आबाद है। काजू-सा चेहरा और सूखी सुपारी के छिलके की तरह के बालवाले ये सिपाही कुछ अकेले तो कुछ एकत्रित होकर सीटी बजाते और गीत गाते हुए पहाड़ियों से नीचे उतरकर आ रहे थे……श्रीधरन नीचे के मैदान के कोने पर मुड़नेवाली एक पगडंडी पर आ पहुँचा। वहाँ कतार में खड़े कमरों और महलनुमा घरों के

सामने खूबसूरत औरतें सज-धज कर रही हैं। कुछ औरतें आँखों में काजल लगा रही हैं, और कुछ टीका लगा रही हैं। रेशमी जाकेट पहननेवाली और महज घाघरा पहननेवाली भी उनमें हैं। नये फैशन की औरतों की दुनिया ! श्रीधरन के मन में अचानक एक गाली उभर आयी 'रंडियाँ'।

कारक्कुन्नु की रंडियों के वारे में स्वर्गीय चात्तुण्णि ने श्रीधरन को कुछ वातें वतायी थीं। ये वेश्याएँ गोरे सिपाहियों को खुश करने की चेष्टा में ही शृंगार कर रही हैं। फिर इन वदतमीज़ औरतों को श्रीधरन उत्सुकता के साथ देखता रहा। वे अपनी सेज पर गोरों की अगवानी करने के लिए सज-धज कर रही हैं। वे नंगी होकर······

"वेहरीज़ चचीरु—ष चचीरु ?" पीछे से एक आवाज़ सुनकर श्रीधरन वदहवास हो गया। शराब पीकर उन्मत्त एक गोरा आदमी। वह रंडी चीरु की तलाश में निकला है। श्रीधरन बड़ी सड़क की तरफ एकदम वढ़ गया।

बड़ी सड़क से शहर की तरफ चला। कारक्कुन्नु से शहर चार मील दूर पर है। रास्ते के दृश्यों को देखकर आगे वढ़ा। शहर के तालाव के नज़दीक के म्युनिसिपल वगीचे के निकट पहुँचने पर पुलिस-स्टेशन से घंटी वजने की आवाज सुनाई दी। छह बजे थे।

बाग के फाटक के दोनों तरफ एक-एक शेर वनाया गया था। मिट्टी की मूर्तियाँ थीं। मुँह खोलकर वैठने वाले केसरी वीर। उनमें दाहिनी तरफ के वीर के मुँह से कई मक्खियाँ भीतर और वाहर उड़ रही थीं। देखने में वड़ा मजा आया। लगता है कि शेर मक्खी को पकड़ने के लिए अभी-अभी मुँह बन्द करेगा।···शेर के चेहरे में ततैयों ने छत्ता बना लिया था।

तालाव से पानी पीकर प्यास बुझाते हुए मैदान की तरफ चला। मैदान के कोने में पहुँचने पर एक गम्भीर गान ने श्रीधरन को रोक दिया। वह उधर मुड़ गया। गायक को घेरकर दस-पन्द्रह आदमी खड़े थे। श्रीधरन भी एक श्रोता वनकर उनके साथ खड़ा हो गया।

लाल लुंगी और सफेद शर्ट पहने सिर पर तुर्की टोपी लगाए एक तमिल भाषी रावुत्तर मौलवी खड़ा था। उस मान्य व्यक्ति के सुन्दर चेहरे और काली दाढ़ी ने श्रीधरन को आकर्षित किया। वह सुवोध तमिल भाषा में भाषण कर रहा था। मजहव की गन्ध के विना कई दार्शनिक वातें कथावाचक की शैली में उसके मुँह से निकल रही थीं—

"आट्टेयुं काट्टेयुं नम्पलाम् अन्त
शेल केट्टिय मातरे नम्पलाम्···"

व्याख्या : गौरैयों पर विश्वास नहीं किया जा सकता। दूर भागने पर भी फसल की तवाही करने कव वे आ जाएँगी, इसका कोई अंदाज नहीं लगा सकता।

हवा का रुख भी उसी तरह है। कब किधर वह निकलेगी, इसका किसी को पता नहीं है। साड़ी पहने औरतें भी वैसी ही हैं— अगर हम चिड़ियों और हवा पर विश्वास कर सकते हैं तो साड़ी वाली औरतों पर भी विश्वास कर सकते हैं···

रावुत्तर मौलवी का दार्शनिक विचार श्रीधरन के मन में जम गया। तमिल की वह पंक्ति कंठस्थ की। धुँधलका छा गया था नहीं तो उस महात्मा के दार्शनिक विचार बड़ी देर तक सुनने के लिए वह वहीं खड़ा हो सकता था।

"आट्टेयुं काट्टेयुं नम्पलाम्— अन्त
शेल केट्टिय मातरे नम्पलाम्···।"

इस पंक्ति को गानेवाले के हावभाव और स्वर को अनुकरण के साथ दुहराते हुए ही श्रीधरन ने कन्निप्परंपु में प्रवेश किया। रसोईघर में पहुँचने पर भी वह गाना दुहरा गया।

"अरे, यह क्या है? कपड़ा बेचनेवाले का गाना गा रहा है?"

श्रीधरन की माँ ने परिहास करते हुए पूछा।

श्रीधरन ने कुछ नहीं बताया। लेकिन मन में सोचा कि किसी महिला पर भरोसा नहीं किया जा सकता—माँ पर भी···

## 4. प्राइवेट बुक और ज़रीदार दुपट्टा

वह दिन श्रीधरन के लिए रोचक घटनाओं से भरा एक स्मरणीय दिन था।

सबेरे स्कूल पहुँचने पर लड़कों को इकट्ठे होकर कुछ न कुछ कहते और हँसते हुए देखा। पूछने पर एक सहपाठी ने बरामदे की तरफ इशारा कर दिया। कमाण्डर-इन-चीफ गणपति शान-शौकत से आ रहा था।

रेशमी पैंट, रेशमी शर्ट और हरा सर्ज कोट पहनकर तथा कोट के ऊपर जनेऊ डालकर गणपति स्कूल आया है। गणपति का सही कहना था—अगर मैं जनेऊ को कमीज़ के अन्दर रखूं तो मैं अपने ब्राह्मणत्व को बाहर कैसे दिखा सकता हूँ? तर्क सुनने पर कोंगिणी ब्राह्मण हेडमास्टर कुछ कह न सके। इस तरह कोट के ऊपर ब्राह्मण-सूत्र को प्रदर्शित कर (इस मैले धागे में एक लोहे की चाभी भी बंधी थी।) गणपति हर दर्जे के सामने गया।

एक लम्बा पैंट और काला कोट पहनकर ललाट पर बरौनियों को भी ढकने वाला चन्दन और एक रुपये के सिक्के जितनी बड़ी सिंदूर की बिन्दी लगाकर मुर्गे की पूंछ का-सा जासौन का फूल रखकर बड़े पुजारी के वेश में भालू नारायण इधर आ पहुँचा है। उसके दादा की श्राद्ध क्रिया का व्रत है।

दोपहर को श्रीधरन मिठाई खरीदने के लिए स्कूल के दरवाजे के खिलाफ नायर के पास गया। तभी उसने लगभग दस गज दूर सड़क के किनारे दाड़िम वृक्ष

की छाया में एक आदमी को बैठे देखा। उसके सामने कई पुस्तकें कतार में रखी हुई थीं। गंजा सिर, गालमें पड़े गड्ढे, लंबा चेहरा और खड़ी-नाक वाला वह दुबला-पतला आदमी एक गिद्ध की तरह दिखाई पड़ता था। उसने माथे पर भस्म लेप किया है। गले में बड़ी रुद्राक्ष की माला भी लटक रही है।

जब उसने देखा कि श्रीधरन उसकी तरफ देख रहा है तो उसने मधु मुस्कान बिखेरते हुए उसे अपने पास आने का इशारा किया। श्रीधरन शंकित-सा वहीं खड़ा रहा। उसने चेहरे की मुस्कान के जरिये फिर श्रीधरन को पुकारा। बात जानने की इच्छा से श्रीधरन उस गिद्ध के निकट गया।

गिद्ध के पास एक टाट पर रखी हुई किताबों पर श्रीधरन ने सरसरी निगाह दौड़ायी। सीता-दुख, पंचांग, ज्ञानप्पाना, भीमन-कथा आदि छोटी-छोटी किताबों के अलावा रामायण, महाभारत, कृष्ण-गाथा आदि मोटी किताबें भी वहां रखी थीं। पुरानी पाठ्य-पुस्तकें दूसरे छोर पर रखी थीं।

गिद्ध ने बड़े प्यार से श्रीधरन का स्वागत कर उसे एक पुराने अखबार पर बैठने का इशारा किया।

उसने श्रीधरन से पूछा कि वह किस दर्जे में पढ़ता है और नाम क्या है?

श्रीधरन ने एक ही शब्द में जवाब दिया तो गिद्ध ने चारों तरफ का मुआइना किया। वहाँ किसी के भी न होने पर हौले से उसने पूछा, "एक प्राइवेट बुक है, तुम्हें चाहिए?"

"कैसी प्राइवेट बुक?" श्रीधरन ने आश्चर्य के साथ पूछा।

उसने आँखें फाड़कर बताया, "और कहीं भी यह किताब नहीं मिलेगी। बेटा, जरूर एक दफा पढ़ लो। अकेले किसी के देखे बिना ही पढ़ो तो बड़ा मजा आएगा···"

श्रीधरन फिर चुपचाप खड़ा रहा। उसको शरम आयी। लेकिन प्राईवेट बुक की बात सुनकर नयी उत्सुकता हुई। यह आदमी मुझे बुलाकर एक उपकार करने की सोच रहा है तब···

"चाहिए? जल्दी बताओ। एक ही प्रति है।" गिद्ध ने चारों तरफ देखकर उतावली जाहिर की।

"उसका मूल्य कितना है?" श्रीधरन ने जमीन पर देखते हुए पूछा।

"एक आना" गिद्ध अपने गले के रुद्राक्ष को पकड़कर फुसफुसाया।

श्रीधरन फिर भी सकुचाता हुआ खड़ा रहा। जेब में सिर्फ एक ही आना है। मिठाई खानी है या प्राइवेट बुक खरीदनी है? यही सवाल था।

दोपहर की क्लास शुरू होने की घंटी बज उठी।

मिठाई का स्वाद तो चख लिया था। लेकिन प्राइवेट बुक का मजा क्या होगा? एक बार जाँच कर देखें तो···?

श्रीधरन ने जेब से एक आना निकाला। गिद्ध ने पास रखे सन्दूक में से एक पुस्तक निकाली और छिपाते हुए श्रीधरन के हाथ में पकड़ा दी।

श्रीधरन ने प्राइवेट बुक की तरफ निगाह घुमायी। 'भीमन कथा' की तरह एक छोटी किताब थी। टाट के रंग का आवरण पृष्ठ—मुख पृष्ठ पर 'मैथुन विधि' नाम छपा हुआ था।

"जल्दी जाओ। कोई उसे न देखे—" गिद्ध ने श्रीधरन को वहाँ से भेज दिया।

प्राइवेट बुक मोड़कर जेब में डालने के बाद श्रीधरन क्लास की तरफ दौड़ गया।

दोपहर का पहला घंटा धोबी मास्टर की ड्राइंग का था।

खाकी कोट पहनने वाले अप्पुण्णि मास्टर बातचीत करते समय हकलाते हैं। घुंघराले बाल और चन्दन का टीका लगाये हुए मास्टर एक चाक लेकर बोर्ड के नज़दीक गये। उन्होंने चाक से कुछ लकीरें बनायीं। और ज़रा तिरछा रखा हुआ एक बर्तन बोर्ड पर बन गया।

ड्राइंग बुक में उस हाँडी के चित्र की नकल करते हुए श्रीधरन का ध्यान जेब में रखी 'प्राइवेट बुक' में लगा था। प्राइवेट बुक की अद्‌भुत दुनिया में विचरण करने की तमन्ना उसके मन में तीव्र होने लगी।

हाँडी का चित्र मिट्टी का ढेला हो गया।

दूसरे घंटे में मलयालम और फिर मॉरल इन्स्ट्रक्शन का क्लास पहाड़ की चढ़ाई जैसा महसूस हुआ। घंटी बजते ही रस्सी छुड़ाए साँड की तरह वह कन्निप्परंपु की तरफ भागा।

कन्निप्परंपु में पहुँचने पर घर के बरामदे में चार-पाँच लोगों को बातचीत करते हुए खड़े देखा। उनमें मूँछ कणारन, अर्जीनवीस आण्डि भी शामिल थे। पिताजी हाथ पीछे की तरफ बाँधे बरामदे में उतावले होकर इधर-उधर टहल रहे थे।

कुछ समझे बिना ही श्रीधरन बरामदे में चढ़ गया। 'प्राइवेट बुक' खरीदने का समाचार जरूर यहाँ किसी ने जान लिया है, आशंका से श्रीधरन काँप गया।

"औरों की चीज़ें अपने घर में रखना मुझे बिलकुल पसंद नहीं है।" कृष्णन मास्टर ने ज़ोर से कहा।

"फिर क्या किया जायेगा?" मूँछ कणारन का सवाल था।

"किसी को दान दे देना चाहिए।" अर्जीनवीस आण्डि ने सलाह दी।

"दूसरों का सामान कैसे दान किया जा सकता है?" कृष्णन मास्टर ने नाराज़ होकर पूछा।...

श्रीधरन को बात पकड़ में नहीं आयी। उसके आने और अन्दर घुसने पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया।

रसोई में कॉफी पीते समय उसकी माँ ने पिताजी के बेचैन होने का कारण विस्तार से बताया।

कृष्णन मास्टर उस दिन स्कूल में थोड़ी देर पहले रवाना हुआ था। आईने की मरम्मत करवाने के लिए बाजार की तरफ चला। वहाँ पहुँचने पर सड़क के किनारे कागज का एक पैकेट पड़ा देखा। उसे उठा लिया। पैकेट खोलने पर उसके अंदर नया कीमती जरीदार दुपट्टा दिखाई पड़ा। वह दुपट्टा किसी के हाथ से नीचे गिर गया होगा। ईमानदार कृष्णन मास्टर ने उस दुपट्टे के मालिक को ढूंढ़ने की उतावली दिखाई। लेकिन कैसे उससे मिलेगा ? और उसे भी कैसे मालूम होगा कि उसकी धोती किसके हाथ में आ गयी है। मास्टर असमंजस में पड़ गया। जरीदार दुपट्टा खो जाने के कारण गली में इधर-उधर देखते-ढूंढ़ते एक गरीब आदमी की तस्वीर मास्टर के मन में तैर गयी। हमदर्दी की पीड़ा से ईमानदारी और सच्चाई के पथ पर उतरना मन की दशा को अवश्य बदल देता है, यह बात मास्टर को मालूम नहीं थी। जिस व्यक्ति के हाथ से दुपट्टा निकल गया था, उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए मास्टर ने दुपट्टा उठाकर शहर की गली के इस छोर से उस छोर तक चार मर्तबा चक्कर लगाने का कार्यक्रम बनाया। वह इस ख्याल से दुपट्टा ऊपर उठाकर चल रहा था कि दुपट्टा देखकर उसका हकदार दौड़ा आवेगा। शर्ट, टोपी, चश्मा और जूता पहने हुए एक शरीफ आदमी को गली में पताका-सी उठाकर नाच करते देखकर लोग मजाक उड़ाते हुए हँस पड़े। मास्टर से परिचित कुछ लोगों को शक हुआ कि कहीं मास्टर को कुछ पागलपन तो सवार नहीं हो गया है !

मास्टर के प्रदर्शन का कोई फायदा नहीं निकला। दुपट्टे के लिए कोई आगे नहीं बढ़ा। मास्टर दुखी हो गया। वह जरीदार दुपट्टा समेट उसे कन्धे पर रखकर घर लौट आया। यही सवाल उसे सता रहा था कि अनाथ दुपट्टा अब वह कहाँ रखे ?

'प्राइवेट बुक' से श्रीधरन भी परेशान हो गया। उसे वह कहाँ रखे ? पाठ्य-पुस्तक के अन्दर रखना खतरनाक है। श्रीधरन का होम-वर्क और अंक सूची देखने के लिए पिताजी कभी-कभी कमरे में आते हैं। अचानक ही ऐसे इंस्पेक्शन होते हैं। तब पाठ्य पुस्तकों के अन्दर से एक प्राइवेट बुक का प्रसव होते वे देखते तो जरूर बेंत से खाल निकाल देते।

लेकिन दुपट्टे की समस्या में लीन होने के कारण मास्टर बेटे की पढ़ाई की जाँच करने नहीं गया। रात की खामोशी : श्रीधरन ने सेज के नीचे रखी हुई मलयालम पाठ्यपुस्तक से प्राइवेट बुक निकाल कर मेज़ की बत्ती के सामने प्रतिष्ठित की। उसका नाम एक बार और दुहराया : मैथुन विधि।

समझ गया कि बात दूसरी ही है।

उतावली के साथ पृष्ठ उलटकर देखा। किलिप्पाट्टु रीति की कविता में

मैथुन विधि का वर्णन था।

पहले पृष्ठ से ही पढ़ना शुरू किया। चार-पाँच पृष्ठ पढ़ चुका। बात ठीक तरह से समझ में नहीं आयी। पलंग पर चढ़ने के दृश्य तक मुश्किल से पहुँचा। फिर क्लिष्टता ही है। यंत्र, इन्द्रिय नाम के कई शब्द पचे नहीं। फिर भी पढ़ाई बन्द नहीं की। एक आना देकर ही यह अमूल्य ग्रन्थ मिला था न। प्राइवेट बुक के मैटर के आठ पृष्ठ पढ़ चुका। अजीर्ण-सा महसूस हुआ। गिद्ध को कोसा। एक आने की बारह मिठाई मिलतीं···

प्राइवेट बुक के नवें पृष्ठ पर पूरा का पूरा विज्ञापन था : 'स्वप्न स्खलन निवारिणी' औषधी का विज्ञापन। नीचे वैद्य की एक सलाह थी।

वैद्य की सलाह पढ़ कर श्रीधरन बेहद थक गया। स्वप्नदोष पर तुरन्त ध्यान न देने पर सिर दर्द, नाड़ी की थकावट, क्षय···फिर मृत्यु !

उस दिन आधी रात के बाद भी आँख न लगने की वजह से कन्निपरंपु में दो आदमी बेहद तकलीफ उठा रहे थे। प्राइवेट बुक के विज्ञापन से डरनेवाला श्रीधरन और ज़रीदार दुपट्टे की समस्या में सिर खपानेवाला ईमानदार कृष्णन मास्टर।

## 5. धधकनेवाला घराना और दक्षिण से आनेवाले

केलंचेरी के चन्दुक्कुट्टि मेलान की मृत्यु होने पर घराने के मुखिया का पद बड़े पुत्र रामन को ही मिलना चाहिए था। लेकिन रामन मेलान पिताजी के जिन्दा रहते ही एक भक्त और विरक्त की ज़िन्दगी गुज़ारता हुआ कहीं दूर जाकर रहने लगा था। घराने की बातों में पिताजी की मदद करनेवाला दूसरा पुत्र कुंजिक्केलु था। चन्दुक्कुट्टि मेलान की मृत्यु हो जाने पर घराने के शासन की बागडोर कुंजिक्केलु मेलान ने अपने हाथ में ले ली—छीन ली कहना ही अधिक संगत है। तीसरा पुत्र शंकरन कम उम्र का नितान्त बुद्धू लड़का था।

दुबला-पतला और नारंगी के छिलके के रंग का एक खूबसूरत युवक था। कुंजिक्केलु। बचपन में चेचक की बीमारी का शिकार होने के कारण बायीं आँख फूट गयी थी। वह अपने चेहरे की विकलांगता को छिपाने के लिए हमेशा काला चश्मा पहनता था।

कुंजिक्केलु मेलान का ओढ़ना-पहनना और बर्ताव एक मान्त्रिक की तरह ही था। रेशमी धोती, रेशमी शर्ट, जरीदार दुपट्टा (धोती और दुपट्टा मेलान के लिए इंगलैण्ड के मानचेस्टर से विशेष आदेश के अनुसार भेजे गये थे।) उसकी उँगलियों में जगमगानेवाली रत्नखचित अँगूठियाँ थीं। शर्ट के लिए हीरे जड़े बटन और उस जमाने में प्राप्य सबसे कीमती घड़ी—इन सब साज-सज्जा से [illegible]

बाहर निकलता था। एक-दो आदमी हमेशा साथ रहते। उनमें प्रधान लौहपुरुष पोक्कर है। पोक्कर कुंजिक्केलु मेलान का निजी सचिव और अंग रक्षक है। लोहे की तिजोरी की तरह की छाती, धँसी हुई आँखें, बड़ी-बड़ी मूँछों वाला वह भयंकर मानव सिर पर एक तौलिये से मुर्गे की पूँछ की तरह पगड़ी बाँधकर, कमर में एक चाकू और दाहिने हाथ में कोई अस्त्र लेकर हमेशा सबके लिए तैयार कुंजिक्केलु मेलान के पीछे खड़ा रहता।

चाहे बालिका हो, शादीशुदा औरत हो, विधवा या प्रौढ़ कुमारी हो, देखने में अगर खूबसूरत है तो उसे कुंजिक्केलु मेलान के मोह-पाश से बचाना मुमकिन नहीं था। उसको हस्तगत करने के लिए वह सभी तरकीबों का प्रयोग करता। अगर कोई उसे बचाने की चेष्टा करता तो लौहपुरुष पोक्कर सामने आ जाता। वह अपनी मुट्ठी के प्रहार से प्रतिद्वन्द्वी को पछाड़ देता। कोई दूसरा चारा न होने पर पोक्कर चाकू बाहर निकाल लेता। पोक्कर के मूसल हाथों ने कई लोगों की गर-दनों को दबोचा था। वह लाश को दफनाने के बाद उसके ऊपर एक केला रोप देता था। कभी-कभी लाश को दीवार से चिपकाकर खड़ा करने के बाद उसके ऊपर नयी दीवार बना देता। ऐसा मौका भी आया है कि लाश को पत्थर से बाँध-कर नदी में डुबाना पड़ा है। सुबह से पहले ही सब कुछ पूरा हो जाता।

पोक्कर के आदेशों का पालन कराने के लिए मेलान बदमाशों के एक गूढ़ संघ को पालता था। कभी-कभी इन बदमाशों की ज़रूरत पड़ जाती थी। तमिल नाटक संघ और सर्कस कम्पनियाँ जब प्रदर्शन करने के लिए शहर में आतीं तो संघ की मशहूर अभिनेत्रियों और खूबसूरत औरतों को उठाकर ये लोग कुंजिक्केलु मेलान के अन्तःपुर में ले जाते। नाटक शुरू होने पर सजी-धजी नायिका दिखाई न देती। नायिका कुंजिक्केलु मेलान के घर की रहस्यपूर्ण जगह में किसी दूसरे ही प्रदर्शन के लिए मजबूर होकर खड़ी होती। सरकस सुन्दरियों के अनुभव भी इसी ढंग के थे। जब देश में मोटर कार महज़ एक सुनी सुनायी बात थी, तब कुंजि-क्केलु मेलान इंग्लैंड से एक कार खरीदकर उसमें सवारी करता था। बड़े-बड़े दीपदान और शोर-शराबे के बीच शादी के जुलूस की तरह ही मेलान कार में रात को सफर करता था।

एक बार इस जुलूस को शहर की गलियों की दस-पन्द्रह बार परिक्रमा लगाते देखकर मेलान के एक मित्र ने कार में बैठे लौहपुरुष पोक्कर से इसका कारण पूछा, तो मेलान की जगह पीछे की सीट पर बैठनेवाले पोक्कर ने अपनी पगड़ी ज़रा ठीक करते हुए जवाब दिया था, "मेलान की शर्ट का एक कफबटन दिखाई नहीं देता। शक है कि सड़क पर कहीं गिर गया होगा। तलाश कर रहा हूँ।"

कुंजिक्केलु मेलान ने अपने खर्च पर चार-पाँच रंडियों को शहर के कुछ कोनों में बसा लिया था। उनमें मेलान की इष्ट देवी ककड़ी कल्याणी नाम की रंभा थी।

एक बार उसने पैसा माँगा तो कुंजिक्केलु मेलान ने उसे एक हरा नोट (एक सौ रुपये का) दे दिया। उसने इस नोट को नगण्य भाव से सरका दिया। कुंजिक्केलु मेलान ने तुरन्त इस नोट को मेज़ के दीपक की लौ में जलाकर दरवाज़े से बाहर इसीलिए फेंक दिया कि वह अपनी प्रेमिका को यह दिखाना चाहता था कि वह नोट उसके लिए उतना ही तुच्छ और नगण्य है जितना कल्याणी के लिए। यह देखकर कल्याणी हँस पड़ी। मेलान भी हँस पड़ा। अचानक मेलान ने अपनी जेब से पाँच हरे नोटों को लेकर अपनी प्रेमिका की छाती में ठूँस दिया।

कुंजिक्केलु मेलान को कोई आर्थिक विषमता नहीं थी। नगद पैसा नहीं है तो भी ज़मीनों के दस्तावेज़ तो हैं न। बड़ा भाई जप-तप के साथ दिन बिता रहा है। छोटा भाई निरा बुद्धू है, कोई पूछनेवाला नहीं है। शराब के नशे में, रंडियों के बाहुपाश में कितने दस्तावेज़ों पर उसने हस्ताक्षर किये थे, इसका पता मेलान को भी नहीं था। हवा में सूखे पत्तों की तरह केलंचेरी घराने के कई दस्तावेज़ उड़ने लगे। उनके बीच प्रथम सलाहकार शुप्पु पट्टर ने भी अपने ब्रह्मसूत्र में थोड़े-बहुत दस्तावेजों को फँसा लिया था।

छह सात बरस पहले दूर स्थित तिरविताँकूर के कोल्लं इलाके से चार-पाँच परिवार शहर में बसने आये थे। वे दस्तकारी में होशियार थे। रेशे की पतली रस्सी से बुनाई करने के सामान के साथ वे इधर आये थे। सब के सब काले-कलूटे और विचित्र नामधारी थे। वे स्वावलम्बी और शिक्षित थे लेकिन शहर के पुराण पंथी समाज ने उनकी उपेक्षा की। बुनाई तो जुलाहा जाति का पुस्तैनी पेशा है। वह तो हमारे समाज के लिए अनुचित है, यही उनकी उपेक्षा का कारण था। रेशे की बुनाई करनेवालों को वे 'कोल जुलाहा' के नाम से पुकारते थे। 'कोल जुलाहे' आगे चलकर 'कोलजुले' में परिवर्तित हो गये। 'कोलजुले' म्लेच्छ का पर्यायवाची शब्द हो गया।

'कोलजुलों' ने शहर में बुनाई की कम्पनियाँ और कपड़े की दुकानें खोलीं। त्वचा का रंग काला होने पर भी वे अपनी वेशभूषा और आचरण में बेहतर थे। उनका मुखिया काला कोट, ज़रीदार पगड़ी, सोने की चेन की घड़ी पहनकर बढ़िया इक्के में सैर करता था। उसके कोट का हर बटन एक-एक अशरफी का था।

लेकिन उनकी इस शान-शौकत से समाज के आम लोग भी नहीं हिले। समाज के प्रभावशाली लोग ही नहीं, आराकश, कलाल आदि सबने कोलजुलों से नफ़रत की।

केलंचेरी के चन्द्रक्कुट्टि मेलान के ज़माने में ही वे आये थे। उनकी वेश-भूषा और वर्ताव मेलान को अच्छा नहीं लगा। मन में ईर्ष्या भी थी। लेकिन मेलान ने इसे बाहर प्रकट नहीं किया। दक्षिण से आये हुए 'कोलजुलों' के खिलाफ़ समुदाय में बढ़ती हुई अस्पृश्यता के मनोभाव को मेलान ने गुप्त रूप से प्रोत्साहन

दिया। जाति के पुरोहित और आचार्य तण्डान से कोलजुलों के खिलाफ अस्पृश्यता की घोषणा करवा दी गयी। उनसे शादी-ब्याह का निषेध भी घोषित किया। आदेश दिया गया कि उनका भात भी नहीं खाना चाहिए। यों दक्षिण से आनेवालों को अलग कर दिया गया।

लेकिन पेशे पर दोषारोपण कर दक्षिण से आये हुए इन जाति-भाइयों को दूर खड़े करनेवालों के खिलाफ विचार रखनेवाले भी कुछ लोग थे। कन्निप्परंपु का कृष्णन मास्टर इस पक्ष का था। कृष्णन मास्टर ने सवाल उठाया था कि हमारे इलाके में एक नयी दस्तकारी का प्रचार करने के लिए आये इन लोगों को घृणापूर्वक बाहर निकाल देने से हमारी जाति को क्या मिलेगा? तब अतिराणिप्पाट के अर्जीनवीस आण्डि ने प्रचार किया था कि कृष्णन मास्टर 'कोलज़ुलों' से घूस लेकर उनकी वकालत करता घूम रहा है।

केलंचेरी के चन्दुमेलान ने तटस्थ रहने का निश्चय किया। दक्षिण से आनेवालों को जाति के सदस्यों के रूप में मान्यता देने के पक्ष में कम ही लोग थे। चन्दुक्कुट्टि मेलान ने यह बात जान ली थी।

कृष्णन मास्टर की कोशिश के फलस्वरूप दक्षिण से आनेवालों के साथ सामूहिक भोजन के कार्यक्रम की योजना बनायी गयी। कृष्णन मास्टर ने केलंचेरी के चन्दुक्कुट्टि मेलान को इस सामूहिक भोजन में भाग लेने का न्योता दिया। मेलान ने कृष्णन मास्टर को आश्चर्य स्तब्ध करते हुए निमंत्रण स्वीकार कर लिया। यह जानने पर कि 'कोलजुलों' को जातिच्युत करने के विरोध की दावत में केलंचेरी चन्दुमेलान भाग लेनेवाले हैं, विरोध पक्ष के कुछ लोग भी सहयोग देने के लिए तैयार हो गये। लेकिन अधिकांश लोग इसके खिलाफ ही खड़े रहे। दक्षिण से आनेवालों के खर्चे से ही दावत की जा रही थी। ऐसे कई व्यंजन तैयार किये गये थे जिन्हें इस इलाके के लोगों ने पहले कभी नहीं देखा था, न चखा था।

निमंत्रित व्यक्तियों में कई नहीं आये—उनमें उस इलाके का तण्डान और कई विशिष्ट व्यक्ति भी शामिल थे। दावत के आयोजकों को डर था कि केलंचेरी के बड़े मेलान भी शायद न आयें। लेकिन ठीक समय पर अपनी गवर्नर स्कारट घोड़ा गाड़ी में केलंचेरी के चन्दुक्कुट्टि मेलान आ पधारे।

दावत में पत्ते बिछाकर भोजन परोसा गया। उसके बाद विशिष्ट व्यंजन और पकवान भी परोसे गये।

तभी तार विभाग का एक चपरासी वहाँ घुस आया। केलंचेरी चन्दुमेलान के लिए एक अर्जेंट तार था। मेलान के निजी सचिव कुंजाड़ी ने हस्ताक्षर करके तार ले लिया। उसे खोल कर मेलान को पढ़ कर सुनाया। कलक्टेर साहब ने तार भेजा था—फौरन आकर मिलने का सन्देश था।

खाने के लिए पत्ते में डाला हाथ खींचकर मेलान ने मेहमानों और मेज़बानों

से माफी माँगी। फिर उठकर अपनी इक्कागाड़ी में चढ़कर चले गये।

दावत में भाग लेनेवालों ने तृप्ति भर भोजन किया। शुभ कामनाएँ देकर वे सब भी चले गये।

अगले दिन तण्डान केलु ने एक आर्डिनेन्स निकाला। कल जिन लोगों ने 'कोलजुलों' के साथ भोजन किया है उन सभी जाति भाइयों को जाति से बाहर निकाल दिया गया है। भविष्य में उनके साथ कोई सामाजिक रिश्ता नहीं रखा जाएगा।

कृष्णन मास्टर को भी जोश आ गया। मास्टर को मालूम हो गया कि यह सब केलंचेरी मेलान के काले कारनामों का नतीजा है। मास्टर ने समझ लिया कि दावत में भोजन आरम्भ होने के समय जो तार आया था उसके लिए मेलान ने ही पूर्व निर्धारित तैयारी की थी। मास्टर ने अंदाज लगाया कि मेलान की गुप्त सलाह के मुताबिक ही अन्य मुखिया जन दावत में शामिल नहीं हुए थे। पुरानी प्रथा का अनुसरण करनेवाला मास्टर उस दिन से प्रगतिवादी हो गया। कृष्णन मास्टर ने घोषणा की कि केलंचेरी मेलान और उस इलाके के तण्डान ने हमें जाति से निकाल दिया है इसलिए हमने भी मेलान और तण्डान को निकाल दिया है। पर, मास्टर के पक्ष में कम ही लोग थे।

अतिराणिप्पाटं में मास्टर और मास्टर के अनुयायियों के खिलाफ गुप्त प्रचार करनेवालों में सबके आगे अर्जीनवीस आण्डि था।

काला दुबला और मध्य वयस्क आण्डि दस्तावेज़ लिखनेवाला, लेखाकार और गायक था। जब आण्डि की उम्र डेढ़ वर्ष की थी तभी उसके पिता एक नारियल के पेड़ से गिरकर मर गये थे। फिर उसकी माँ कालियम्मा ने ही उसका लालन-पालन किया था। कालियम्मा ने उसका पालन-पोषण करने और स्कूल भेजकर शिक्षा देने में खूब तकलीफें उठायी थीं। मज़दूरी करके, भीख माँगकर और भूखों रहकर उस माँ ने अपने बच्चे को आदमी बनाया था। पौने चार फुट लम्बी और एकफील पाँववाली वह माता हमेशा एक ही मंत्र जपती थी : "मेरा बेटा आण्डि"। आण्डि ने आठवीं कक्षा तक अध्ययन किया था। फिर पढ़ाई खतम कर मुलक्करा के काठ के गोदाम में बहीखाते का प्रशिक्षण लिया। कुछ अर्से बाद दस्तावेज़ लिखना भी सीख लिया। इस विद्या में आण्डि का गुरुदेव अष्टवक्रन वेलप्पन नायर था। अष्टवक्रन वेलप्पन नायर झूठे दस्तावेज़ों को लिखने में बड़ा कुशल था। वे सभी तरकीबें उसने अपने शिष्य आण्डि को भी बता दी थीं। अक्षरों को कई प्रकार से लिखने, दस्तावेजों और वचनपत्रों को पुराना दिखाने के लिए उन्हें धुएँ में रख-कर कुछ रासायनिक प्रयोगों से ठीक करने की भी विद्या एक वर्ष के प्रशिक्षण में आण्डि को मिल गयी। उस विद्या में वह अपने गुरु से भी अधिक होनहार निकला। संगीत और नाटकों में अभिनय करने का उसे शौक था। आण्डि ने एक धोबी

बनायी है। अपनी प्रेमिका तिरुमाला को भेंट देने के लिए बिनोलिया व्हाइट साबु
और अमरीकी गोल्ड की हंसनुमा बालियां उसने खरीदी थीं।

उस समय श्रीधरन के मन में एक विचार कौंध गया कि इक्का गाड़ीवान
तिरुमाला से शादी की है। फिर वासु छिपकर उसकी पत्नी से मुलाकात करे
क्या यह सही होगा ? उसे लगा वासु जो कुछ करेगा, वह कभी अनुचित न
होगा। उस पर श्रीधरन ने देर तक विचार नहीं किया। फिर वह सोचने ल
कि वासु के इस निजी कार्य में उसे क्या भूमिका अदा करनी है।

वासु ने इसे भी स्पष्ट कर दिया। वासु और तिरुमाला जब कोरन बटलर
घर चुपचाप मिलें तो श्रीधरन को दरवाज़े के नारियल के नीचे उनका पहरा दे
होगा। अगर कोई आवे तो तुरन्त खतरे की सूचना देकर भीतर के लोगों
बचाना होगा। वासु ने खतरे की सूचना देने की तरकीब भी बता दी। श्रीध
के हाथ में एक लोहे की कील और नयी माचिस रखते हुए वासु ने निर्देश दिया
"लोहे की कील से कोरन बटलर के दरवाजे के पास वाले नारियल के पेड़ में
छेद बनाकर फिर उसमें माचिस की तीलियों का मसाला भरना होगा। उ
बाद एक पत्थर लेकर तैयार रहना चाहिए। अगर उस समय कोई बदतमीज़
पहुँच जावे तो तुरन्त छेद में कील रखकर उसको उस पत्थर से ज़ोर से मा
होगा। 'ठों' की आवाज के साथ धमाका होगा। आवाज सुनकर भीतर के
समझ जाएँगे।

लोहे की कील और माचिस की तीली के मसाले से पटाका छुड़ाने की तरक
श्रीधरन को पहले से ही मालूम थी। विषु के त्योहार में आतिशबाजियों के ख
होने पर वह यही काम करता था। अब तो उस खेल को ज़रूरी कार्य के रू
बदलना है।

तिरुमाला शाम को घर में अकेली होगी। कोरन बटलर ताड़ी पीने के
बेहोश होकर चाय की दुकान के बरामदे की बेंच पर लेटा होगा। कुंजम्मा पैसे
पेटी की पहरेदारी करती होगी। जानु-कल्याणी बहनें दुकान में रसोई का
करती होंगी। केलन इक्कागाड़ी लेकर बाज़ार में समुद्री तट पर घूमता हो
उसी मौके पर वासु ने तिरुमाला से मिलने की योजना बनायी थी।

सारी तैयारियाँ हो गयीं। साबुन और गोल्ड के साथ वासु ने घर के भ
प्रवेश किया। श्रीधरन नारियल के पेड़ में लोहे की कील से छेद बना रहा था
तभी उसने पीछे से क्टों-क्टों की आवाज़ सुनी। श्रीधरन ने मुड़कर देखा :
गपिया किट्टुण्णि था।

किट्टुण्णि कमर में चाकू बाँधकर शाम को ताड़ी निकालने के लिए नि
था। चलते समय चाकू की मूँठ बाँस की नली से टकराने के कारण 'क्टों-क्टों'
आवाज़ हो रही थी।

"अरे ताड़ीवाले नारियल के पेड़ में क्या कर रहा है ?···" किट्टुण्णि के हक भरे लहजे को सनकर श्रीधरन सकपका कर खड़ा रहा ।

बात को ठीक थी । वह किट्टुण्णि का कल्पवृक्ष है । सोलट वालों ने हरे रंग से 112 का नंबर डाल दिया । नंबर के नीचे ही श्रीधरन ने छेद बनाकर मसाला भर दिया था ।

"मैं गोली दागने का खेल खेल रहा हूँ—" श्रीधरन ने ज़रा अपराध-बोध के साथ कहा ।

"अरे, क्या तू अब खेलनेवाला बच्चू रह गया है ?" उसने अपनी जीभ को फैलाकर श्रीधरन के हाथ की कील और पत्थर को तिरछी आँखों से देखा ।

यह तो किट्टुण्णि के स्वभाव की खूबी है । कुछ न कुछ कहते समय उसकी जीभ आधा इंच बाहर निकल आती है ।

किट्टुण्णि की बात और जीभ फैलाकर बातचीत करने के ढंग से श्रीधरन को हँसी आ गयी । किट्टुण्णि की बातें सुनकर ऐसा कौन होगा जो हँसी से लोट-पोट नहीं हो जाता हो ? किट्टुण्णि का एक मामा लंका के कोलंबो शहर में नौकरी करता है उसके बारे में किट्टुण्णि 'मेरा कोलंबु मामा' कहा करता···। लेकिन इन बातों को सोचकर हँसने का समय यह नहीं है ।

किट्टुण्णि ने अदम्य चपलता दिखाकर श्रीधरन के हाथ से पत्थर छीन लिया और कील को नारियल के छेद पर रखकर पत्थर से ज़ोर से ठोक दिया ।

"ठों" आवाज़ गूँज उठी ।

"हाय, हाय धोखा दिया गया !" श्रीधरन के हृदय में भी एक गोली धांय कर उठी ।

किट्टुण्णि ने श्रीधरन को चेतावनी देकर कहा कि आगे से तेरी गोली-बोली यहाँ नारियल के पेड़ में नहीं लगनी चाहिए । उसने पत्थर दूर फेंक दिया और कील अपने पास रख ली । (किट्टुण्णि का ऐसा स्वभाव था कि वह किसी भी उप-योगी वस्तु को देखते ही उसे अपने कपड़े के छोर में बाँध लेता ।) इसके बाद वह नारियल के पेड़ पर फुर्ती से चढ़ने लगा । एक मिनट के अन्दर किट्टुण्णि उस छोटे नारियल के पेड़ के ऊपर पहुँच गया ।

तब कोरन बटलर के घर का दरवाज़ा ज़रा खुला । श्रीधरन ने आधे खुले हुए दरवाज़े से झाँकती तिरुमाला का चेहरा और खुली हुई केशराशि देखी । वहाँ श्रीधरन के अलावा और किसी को न पाकर तिरुमाला आँखें फाड़कर देखने लगी । श्रीधरन ने हाथ उठाकर ऊपर की ओर कुछ इशारा-सा किया और सूचना दी कि ऊपर के आदमी (खुदा नहीं, किट्टुण्णि) ने ही यह हरकत की थी । लेकिन इससे कोई कामयाबी न मिली । तिरुमाला ने बिना किसी शब्द के श्रीधरन की तरफ देखकर नफरत और नाराज़ी ज़ाहिर करने के लिए चेहरा घुमाकर गाली बकने

बनायी है। अपनी प्रेमिका तिरुमाला को भेंट देने के लिए विनोलिया व्हाइट साबुन और अमरीकी गोल्ड की हंसनुमा बालियाँ उसने खरीदी थीं।

उस समय श्रीधरन के मन में एक विचार कौंध गया कि इक्का गाड़ीवान ने तिरुमाला से शादी की है। फिर वासु छिपकर उसकी पत्नी से मुलाकात करे तो क्या यह सही होगा ? उसे लगा वासु जो कुछ करेगा, वह कभी अनुचित नहीं होगा। उस पर श्रीधरन ने देर तक विचार नहीं किया। फिर वह सोचने लगा कि वासु के इस निजी कार्य में उसे क्या भूमिका अदा करनी है।

वासु ने इसे भी स्पष्ट कर दिया। वासु और तिरुमाला जब कोरन बटलर के घर चुपचाप मिलें तो श्रीधरन को दरवाजे के नारियल के नीचे उनका पहरा देना होगा। अगर कोई आवे तो तुरन्त खतरे की सूचना देकर भीतर के लोगों को बचाना होगा। वासु ने खतरे की सूचना देने की तरकीब भी बता दी। श्रीधरन के हाथ में एक लोहे की कील और नयी माचिस रखते हुए वासु ने निर्देश दिया— "लोहे की कील से कोरन बटलर के दरवाजे के पास वाले नारियल के पेड़ में एक छेद बनाकर फिर उसमें माचिस की तीलियों का मसाला भरना होगा। उसके बाद एक पत्थर लेकर तैयार रहना चाहिए। अगर उस समय कोई बदतमीज़ वहाँ पहुँच जावे तो तुरन्त छेद में कील रखकर उसको उस पत्थर से ज़ोर से मारना होगा। 'ठों' की आवाज़ के साथ धमाका होगा। आवाज सुनकर भीतर के लोग समझ जाएँगे।

लोहे की कील और माचिस की तीली के मसाले से पटाका छुड़ाने की तरकीब श्रीधरन को पहले से ही मालूम थी। विषु के त्योहार में आतिशबाजियो के खतम होने पर वह यही काम करता था। अब तो उस खेल को ज़रूरी कार्य के रूप में बदलना है।

तिरुमाला शाम को घर में अकेली होगी। कोरन बटलर ताड़ी पीने के बाद बेहोश होकर चाय की दुकान के बरामदे की बेंच पर लेटा होगा। कुंजम्मा पैसे की पेटी की पहरेदारी करती होगी। जानु-कल्याणी बहनें दुकान में रसोई का काम करती होंगी। केलन इक्कागाड़ी लेकर बाज़ार में समुद्री तट पर घूमता होगा। उसी मौके पर वासु ने तिरुमाला से मिलने की योजना बनायी थी।

सारी तैयारियाँ हो गयीं। साबुन और गोल्ड के साथ वासु ने घर के भीतर प्रवेश किया। श्रीधरन नारियल के पेड़ में लोहे की कील से छेद बना रहा था कि तभी उसने पीछे से क्टों-क्टों की आवाज़ सुनी। श्रीधरन ने मुड़कर देखा : बड़ा गपिया किट्टुण्णि था।

किट्टुण्णि कमर में चाकू बाँधकर शाम को ताड़ी निकालने के लिए निकला था। चलते समय चाकू की मूँठ बाँस की नली से टकराने के कारण 'क्टों-क्टों' की आवाज हो रही थी।

"अरे ताड़ीवाले नारियल के पेड़ में क्या कर रहा है ?…" किट्टुण्णि के हक भरे लहजे को सनकर श्रीधरन सकपका कर खड़ा रहा।

बात को ठीक थी। वह किट्टुण्णि का कल्पवृक्ष है। सोलट वालों ने हरे रंग से 112 का नंबर डाल दिया। नंबर के नीचे ही श्रीधरन ने छेद बनाकर मसाला भर दिया था।

"मैं गोली दागने का खेल खेल रहा हूँ—" श्रीधरन ने ज़रा अपराध-बोध के साथ कहा।

"अरे, क्या तू अब खेलनेवाला बच्चू रह गया है ?" उसने अपनी जीभ को फैलाकर श्रीधरन के हाथ की कील और पत्थर को तिरछी आँखों से देखा।

यह तो किट्टुण्णि के स्वभाव की खूबी है। कुछ न कुछ कहते समय उसकी जीभ आधा इंच बाहर निकल आती है।

किट्टुण्णि की बात और जीभ फैलाकर बातचीत करने के ढंग से श्रीधरन को हँसी आ गयी। किट्टुण्णि की बातें सुनकर ऐसा कौन होगा जो हँसी से लोट-पोट नहीं हो जाता हो ? किट्टुण्णि का एक मामा लंका के कोलंबो शहर में नौकरी करता है उसके बारे में किट्टुण्णि 'मेरा कोलंबु मामा' कहा करता…। लेकिन इन बातों को सोचकर हँसने का समय यह नहीं है।

किट्टुण्णि ने अदम्य चपलता दिखाकर श्रीधरन के हाथ से पत्थर छीन लिया और कील को नारियल के छेद पर रखकर पत्थर से ज़ोर से ठोक दिया।

"ठों" आवाज़ गूँज उठी।

"हाय, हाय धोखा दिया गया !" श्रीधरन के हृदय में भी एक गोली धांय कर उठी।

किट्टुण्णि ने श्रीधरन को चेतावनी देकर कहा कि आगे से तेरी गोली-वोली यहाँ नारियल के पेड़ में नहीं लगनी चाहिए। उसने पत्थर दूर फेंक दिया और कील अपने पास रख ली। (किट्टुण्णि का ऐसा स्वभाव था कि वह किसी भी उपयोगी वस्तु को देखते ही उसे अपने कपड़े के छोर में बाँध लेता।) इसके बाद वह नारियल के पेड़ पर फुर्ती से चढ़ने लगा। एक मिनट के अन्दर किट्टुण्णि उस छोटे नारियल के पेड़ के ऊपर पहुँच गया।

तब कोरन बटलर के घर का दरवाज़ा ज़रा खुला। श्रीधरन ने आधे खुले हुए दरवाज़े से झाँकती तिरुमाला का चेहरा और खुली हुई केशराशि देखी। वहाँ श्रीधरन के अलावा और किसी को न पाकर तिरुमाला आँखें फाड़कर देखने लगी। श्रीधरन ने हाथ उठाकर ऊपर की ओर कुछ इशारा-सा किया और सूचना दी कि ऊपर के आदमी (खुदा नहीं, किट्टुण्णि) ने ही यह हरकत की थी। लेकिन इससे कोई कामयाबी न मिली। तिरुमाला ने बिना किसी शब्द के श्रीधरन की तरफ देखकर नफरत और नाराज़ी ज़ाहिर करने के लिए चेहरा घुमाकर गाली बकने

जैसी कुछ चेष्टा की।

दरवाज़ा फिर बन्द हो गया।

पहरा देने का अच्छा पारिश्रमिक मिला। श्रीधरन ने खुद को कोसा।

ऊपर नारियल की ताड़ी निकालने के कारण थोड़ी-सी मिट्टी श्रीधरन के सिर पर भी गिर गयी।

तभी पीछे से पदचाप सुनायी दी। श्रीधरन ने मुड़कर देखा। चाय की दुकान की जानु—। कुछ दूर टोकरी और हँसिया हाथ में उठाये उसकी बहन कल्याणी भी आ रही थी।

दुकान के पकवान खतम हो जाने के कारण ही आज वे जल्दी घर चल दी होंगी। प्रायः जानु और कल्याणी एक साथ दिल्लगी करती और हँसती हुई ही घर आती थीं। कभी-कभी वे आपस में झगड़ा भी करतीं। (किसी नौजवान के नाम पर ही झगड़ा होता।) ऐसा संदर्भ उठने पर दोनों मुँह फुलाकर अलग-अलग चलने लगती। रास्ते में औरों को देखने पर भी कुछ न बोलतीं। इस समय वैसा ही कोई मौका होगा। नारियल के नीचे खड़े श्रीधरन को एक दफा घूरकर दोनों बड़प्पन दिखाती हुई चली गयीं।

धोखा दिया गया। श्रीधरन छाती पर हाथ रखकर सकपकाकर खड़ा रहा। खतरे की सूचना देने के लिए न तो उसके हाथ में कोई चीज़ है न कोई मसाला। उसने समझ लिया कि अब वहाँ भयंकर घटना घटने की सम्भावना है।

श्रीधरन ने जिस खतरे के बारे में सोचा था, ठीक उसी तरह का शोर-गुल उठ खड़ा हुआ। ज़ोर से गाली बकने की आवाज़ें भी गूंज उठीं।

वासु गोली खाये सूअर की तरह सिर झुकाकर भाग रहा था। श्रीधरन डर के मारे एक कोने में छिपकर खड़ा हो गया।

पल भर में कोई गोलाकार चीज़ उस तरफ से उड़कर नारियल के नीचे आ गिरी, जहाँ से वासु भागा था। उसके नारियल के नीचे गिरते ही किट्टुण्णि भी नीचे उतर आया। उसने उत्सुकता से झुककर वह उठा ली और उसे सूंघा। उस की जीभ दो इंच बाहर आयी— 'विनोलिया व्हाइट रोज़ साबुन'!

किट्टुण्णि ने नारियल के ऊपर देखते हुए कहा, "कौआ कहीं से यहाँ ले आया होगा।"

साबुन को कपड़े में रखकर किट्टुण्णि फाटक पार कर चला गया।

उस दिन आधी रात बीतने पर भी श्रीधरन को नींद नहीं आयी। पराजय की बेचैनी ने उसे आ घेरा: अब उस्ताद वासु को क्या मुँह दिखाऊँगा? वासु ने मुझ पर विश्वास करके ही मुझे यह काम सौंपा था। अचानक आ झपटे उन शैतानों को—बड़े गपिये, ऐंची आँख और बेतरतीब दाँतोंवाली—उन तीनों को श्रीधरन बार-बार कोसता रहा। यह भी तय किया कि उनसे बदला ज़रूर लेना

है। उसने तिरुमाला को कोसते हुए कहा—"चरित्रहीन, हरामजादी रंडी !"

तभी बाहर के बरामदे में शोर और हलचल-सी हुई। रोशनी भी है। मालूम हुआ कि पिताजी सुबह की गाड़ी से जाने की तैयारी कर रहे हैं।

कृष्णन मास्टर एंग्लो-इण्डियन-सर्विस छोड़कर म्युनिसिपल सर्विस में एक शिक्षक हो गये हैं। म्युनिस्पैलिटी की उत्तर सीमा में कारक्कल हायर एलिमेण्टरी स्कूल में ही उनकी नियुक्ति हुई है। हर दिन चार मील जाना और चार मील पैदल आना पड़ता है। चार-पाँच दिन से पैर में एक फोड़ा होने के कारण चलना दूभर हो गया है। छुट्टी लेना भी सम्भव नहीं। इसलिए रेल से स्कूल जाते हैं। सुबह पाँच बजे उत्तर की तरफ एक गाड़ी है। उस पर चढ़कर कारक्कुण्णु जाते। शाम को वहाँ से पाँच बजे की दक्षिण की गाड़ी में लौटते।

सुबह पाँच बजे से पहले स्टेशन पहुँचने के लिए मास्टर तीन साढ़े-तीन बजे उठकर तैयारियाँ करने लगते। श्रीधरन की माँ भी उठकर भात और दूसरी भोजन-सामग्री बनाने के लिए रसोईघर में पहुंच जाती। मास्टर घर पर पत्नी के हाथ के दिये भोजन के अलावा भूखे होने पर भी बाहर होटल आदि का कुछ नहीं खाते। दोपहर का भोजन टिफिन कैरियर में ले जाते हैं।

"कुट्टिमालु, तुझे एक अचरज देखना है तो इधर आ—"श्रीधरन ने ध्यान दिया कि आँगन से पिताजी रसोईघर में कार्य कर रही माँ को ऊँची आवाज़ में पुकार रहे हैं। श्रीधरन को भी जिज्ञासा हुई कि वह अद्‌भुत चीज़ क्या है। जाकर देखा।

माँ-बाप दक्षिण के कोने में खड़े होकर पड़ोस के पाणन के अहाते में देख रहे हैं। उस पड़ोस के अहाते के वृक्षों के नीचे से पिताजी आसमान की तरफ इशारा कर रहे हैं :

"अरे, देख एक विचित्र नक्षत्र।" माँ ने देखा—"क्या वह कच्छ-प्रकाश नहीं है ?" माँ ने अपने देहाती ज्ञान को व्यक्त किया। वह तो ऐसा वैसा तारा नहीं है।"

'मैं यहाँ हूँ' कहता शुक्र तारा पूर्व दिशा के क्षितिज में चमक रहा था।

"यह एक नया तारा है। आग की मशाल की तरह चमक रहा है। आधा चाँद-सा लगता है।"

तब श्रीधरन का गोपालन भैया भी आसमान का यह अचरज देखने को उठकर आ गया।

"वह पुच्छल तारा होगा", गोपालन भैया ने राय जाहिर की।

"इसकी पूंछ और सिर नहीं है इसलिए यह पुच्छल तारा नहीं है।" कृष्णन मास्टर ने गोपालन को समझाया, "पुच्छल तारा अंग्रेजी में 'कॉमेट' कहलाता है। पर, यह कॉमेट नहीं है। स्टार है। इस नये स्टार के बारे में ब्रिटिश वैज्ञानिकों की राय हम जल्दी ही अखबार में पढ़ सकेंगे......"

'क्षितिज में एक नये तारे के प्रत्यक्ष होने की बात पहले पहल खोज निकालने वाले वैज्ञानिक का अभिमान हृदय में रखकर ही कृष्णन मास्टर बोला था ।

तारे को देखते रहने पर रसोई में भात शाक कौन देखेगा ? बुदबुदाती हुई श्रीधरन की माँ रसोई में चली गयी ।

कृष्णन मास्टर नये नक्षत्र के वर्ण, स्थान आदि का निर्णय करने लगा। सप्तर्षियों के संचार-पथ के नज़दीक ·····

तभी मास्टर के पीछे नाखून काटता चुपचाप खड़ा श्रीधरन मुस्कराते हुए बोला—"बाबू जी वह तारा नहीं है कलाल मानुक्कुट्टन का फानूस है ··"

कृष्णन मास्टर को लगा कि उनका सिर किसी ने पछाड़ दिया है। हो सकता है कि यह ठीक ही हो। फिर भी शक दूर नहीं हुआ।

तभी वह विचित्र नक्षत्र आसमान से धीरे-धीरे ज़मीन पर उतरते हुए दिखाई पड़ा।

अतिराणिप्पाटं का कलाल मानुक्कुट्टन—माक्कोत का छोटा भाई एक खास मिज़ाज का आदमी था। उसे शाम को शराब पीने की लत है। पीते-पीते गिर पड़ता है। फिर आधी रात या तड़के उठकर चाकू कमर में बाँध एक फानूस जलाकर ताड़ी लेने निकल पड़ता। ताड़ी वाले नारियल और ताड़ पेड़ों में नीचे से ऊपर तक बाँस की सीढ़ियाँ बँधी होतीं। कन्निप्परंपु के दक्षिण में पाणर के अहाते का ताड़वृक्ष आसमान से बातें करता है। मानुक्कुट्टन और फानूस बाँस की सीढ़ियों से धीरे-धीरे ऊपर जाते। ताड़ के ऊपर पहुँचने पर लालटेन को सामने रखकर उसकी रोशनी में मानुक्कुट्टन ताड़ी लेता।

गुरुवायूर मन्दिर में महीने के अन्त में दर्शन कर दो महीने की मिन्नत-प्रार्थनाओं को एक ही दफा निपटा देनेवाले कुछ भक्तों की तरह मानुक्कुट्टन दो दिन का काम एक सुबह ताड़ी लेकर कर लेता।

आसमान का नया विचित्र तारा कलाल मानुक्कुट्टन के फानूस के रूप में बदल जाने पर कृष्णन मास्टर को कुछ निराशा तो हुई, फिर भी अपने छोटे लड़के की अक़्लमन्दी पर उसे गर्व महसूस हुआ। रसोई में लगी पत्नी से वे चिल्लाकर यों बोले—"कुट्टिमालु, हमारा बेटा अक़्लमन्द है। अरी सुन, हमने जो नक्षत्र देखा था वह ताड़ी लेने वाले कलाल मानुक्कुट्टन का फानूस था। जो बड़े लोगों को भी नहीं सूझा, वह उसे सूझ गया···वह एक दिन बड़ा आदमी बनेगा···।"

पिताजी की हार्दिक बधाई और आशीष ने श्रीधरन में एक नया उन्मेष भर दिया। मैं उतना छोटा आदमी तो नहीं हूँ। आम लोगों में जिस निरीक्षण-पटुता की कमी होती है, वैसी कमी मुझमें तो नहीं है। यह बोध श्रीधरन में ताज़ा हो गया।

# 7. शराब और औरत

केलंचेरी के छोटे शंकरन मेलान की मृत्यु हो गयी।

एक दिन यह समाचार पूरे इलाके में फैल गया। पिछले दिन रात को अचानक ही मृत्यु हो गयी थी।

किसी को भी मालूम नहीं था कि उसकी मृत्यु किस बीमारी से हुई थी।

शंकरन जन्म से ही बीमार जैसा दिखने पर भी खाने-पीने में लालची था। उसने अच्छी बुद्धिमत्ता दिखायी! क्या कहना है! नौजवान होने के पहले ही उसकी मृत्यु हो गयी!

पहले दिन वह पुत्तन हाईस्कूल में हाज़िर था। शाम को केलंचेरी के बरामदे में दोस्तों के साथ खेल-तमाशे में समय बिताया था। रात को अचानक मृत्यु हो गयी। लाश सुबह जला दी गयी।

शंकरन मेलान के सूतक स्नान के उपलक्ष्य में जो दावत दी गई वह केलंचेरी के प्रताप के अनुकूल ही थी। दावत के लिए पाँच बोरा चावल परोसा गया था।

सब कुछ ठीक तरह से सम्पन्न होने पर भी इलाकेवालों के मन में सन्देह पच न सका। क्या शंकरन मेलान की मृत्यु अचानक हो गयी थी? क्या शंकरन मेलान को ज़हर पिलाकर नहीं मार डाला गया?

इन्हीं दिनों किट्टन मुंशी एक रविवार को कन्निप्परंपु आया।

कृष्णन मास्टर ने पूछा—"अरे किट्टन, केलंचेरी में क्या कोई धुआँ उड़ रहा है?"

किट्टन मुंशी ने कमर से सुँघनी की डिबिया लेकर उसमें से ज़रा-सी अपनी नाक में डालकर मस्तिष्क में ताज़गी पैदा की।

"अरे मास्टर, आग है तो धुआँ भी होगा। केलंचेरी में अब आग लगने का समय नहीं आ गया?"

"क्या उस आग में कुछ प्राणी नहीं जलते होंगे?" कृष्णन मास्टर ने हँसते हुए पूछा।

किट्टन मुंशी ने "हाँ" कहा।

"केलंचेरी के शंकरन की मृत्यु कैसे हो गयी, ज़रा बताओ न?"

कृष्णन मास्टर ने सीधे ही बात पूछ ली।

किट्टन मुंशी ने अपने रेशमी कमीज़ के कमन्ट प्लेट कफ बटन को सहलाते हुए मुस्कराकर थोड़ी देर तक चुप्पी साधी। फिर अपने आप फुसफुसाया, "शंकरन मेलान शराब पीकर चल बसा।"

कृष्णन मास्टर ने ताज्जुब से पूछा, "क्या कहते हो? उस छोकरे ने शराब पी

ली थी ?"

किट्टन मुंशी ने अपनी गरदन को खुजलाते हुए कहा, "वह छोकरा अकेला आधी बोतल शराब एक ही बैठक में पी लेता था।"

सुनते ही मास्टर ने अपने दाँतों-तले उँगली दबायी।

"तुम्हें मालूम है कि उसे शराब पीना किसने सिखाया था ?"

(मुंशी ने अपनी नाक में गन्ध खींची। रसोई में मछली भूनने की गन्ध आ रही थी।)

"शायद लौहपुरुष पोक्कर होगा ?" कृष्णन मास्टर ने अन्दाज लगाकर कहा।

"पोक्कर तो नहीं है।" (मुंशी ने फिर रसोई की गन्ध सूँघी। उसने अन्दाज लगाया कि कोई अच्छी मछली है।)

"पोक्कर नहीं तो फिर कौन है ?" मास्टर ने पूछा।

"पट्टर" मुंशी नाक सिकोड़ कर बोला। "केलंचेरी का प्रथम मुख्तार शुप्पु पट्टर···"

"मैं क्या सुन रहा हूँ। क्या पट्टर शराब पियेगा ?" कृष्णन मास्टर ने उतावली जाहिर करते हुए पूछा।

"पट्टर तो शराब नहीं छुयेगा—इस बात में किट्टन मुंशी और शुप्पु पट्टर एक ही गुट के हैं।" मुंशी ने हँसते हुए कहा।

"फिर पट्टर ने क्यों इस झंझट में हाथ डाला ?" भोले भाले कृष्णन मास्टर ने कहा।

"जान-बूझकर ही उसने यह योजना बनायी थी।" मुंशी ने बखान किया। शुप्पु पट्टर केलंचेरी घराने के मुखिया कुंजिक्केलु मेलान का मुख्तार है। वह कुंजिक्केलु मेलान के लिए सब कुछ कर सकता है। उसका छोटा भाई बालिग बनता तो उसके एकाधिकार को धक्का लगता। इसलिए पट्टर ने ऐसा किया।"

"क्या शराब पीने से आदमी की मृत्यु हो जाती है ?" मास्टर ने अपना सन्देह जाहिर किया।

किट्टन मुंशी ने अपनी डिबिया से सूँघनी हाथ में लेकर हँसते हुए कहा—"समझ लो कि शराब में थोड़ी-सी औषधी भी मिलायी होगी···"

"हाय राम !" मास्टर ने लम्बी साँस खींच ली। "क्या यह सब कुंजिक्केलु मेलान के नेतृत्व में ही हुआ था ?"

मुंशी ने कहा, "उस रात कुंजिक्केलु मेलान केलंचेरी में नहीं था। हमारे पुराणों में बताया है कि ब्राह्मण किसी की हत्या करे तो मरनेवाले आदमी को स्वर्ग मिलेगा। पर कोई ब्राह्मण का कत्ल करे तो ब्रह्म-हत्या के पाप के कारण नरक में जाना पड़ेगा। इसलिए अपने छोटे भाई को मोक्ष दिला देने का काम जनेऊधारी को सौंपकर कुंजिक्केलु मेलान लौहपुरुष पोक्कर को साथ लेकर एक ज़रूरी काम

से बाहर चला गया।

"क्या काम था?"

"नाटक की अभिनेत्री को फँसाने की योजना।"

"क्या कहा, अभिनेत्री को फँसाने की योजना?"

कृष्णन मास्टर बात समझे वगैर स्तब्ध हो आँखें फाड़कर खड़े रहे।

इलाके में घटित होनेवाली बुरी करतूतों के मसखरेपन के बारे में बेचारे कृष्णन मास्टर को कुछ भी जानकारी नहीं थी। 'फँसाना' 'विछाना' आदि शब्दों के बारे में भी उन्हें रत्ती भर ज्ञान नहीं था। इसलिए किट्टन मुंशी ने सब कुछ विस्तार से बताया।

उस दिन मदुरै से आये 'मीनाक्षी विलास' तमिल नाटक संघ' के 'कोविलन इतिहास' को शहर में खेलने का आयोजन हुआ था।

नाटक को शुरू हुए एक घंटा वीत गया। कोविलन घुँघरू बाँधकर रंगमंच पर खड़ा हो गया। लेकिन उसका नगमा सुनने के लिए कण्णकी सामने नहीं आयी। (उस समय कण्णकी वारह वल्बवाली कार में कुंजिक्केलु मेलान की हिरासत में कहीं उड़ रही थी)

कण्णकी को न देख पाने के कारण दर्शकों ने हल्ला-गुल्ला मचा दिया। तब मुर्गे की पूँछवाली पगड़ी पहने एक हट्टा-कट्टा आदमी रंगमंच पर सामने आया। उस आदमी को दर्शकों ने आसानी से पहचान लिया। वह और कोई नहीं, लौह-पुरुष पोक्कर ही था।

पोक्कर ने कोविलन को पकड़कर पीछे हटा दिया। उसने शान के साथ खड़े होकर भैंसे के-से स्वर में बताया, "अभिनेत्री को ज़रा चक्कर-सा आ गया है। एक घंटे में ठीक हो जायेगी। तब तक सब चुपचाप वैठें।..."

यह तो एक चुनौती थी।

पोक्कर की चाण्डाल चौकड़ी के लोग इधर-उधर खड़े होकर फुसफुसाते हुए अपने होने की सूचना देने लगे।

श्रोतागण डरे हुए चुपचाप वैठ गये।

पोक्कर के कहे अनुसार एक घंटे के वाद कण्णकी रंगमंच पर आयी। नाटक की शुरूआत हुई।

कण्णकी की रुलाई और अभिनय उस दिन पहले से बेहतर हुए। उस दिन वह असली परेशानी के साथ ही अपनी भूमिका का निर्वाह कर रही थी।

फिर वहुत देर वाद रंगमंच पर राजा के हुक्म के मुताबिक कोविलन की हत्या होने पर केलंचेरी में भी एक आदमी की हत्या हो रही थी!...

किट्टन मुंशी की बातें सुनकर कृष्णन मास्टर चौंककर बैठ गया।

अपना क्रोध दबाते हुए कृष्णन मास्टर ने कहा—"हाय! यहाँ क्या पुलिस

और कानून नहीं है ? गोरों के शासन में भी यहाँ इतनी सारी ऐसी घटनाएँ घट रही हैं ।"

किट्टन मुंशी मज़ाक में हँस पड़ा । "कानून और पुलिस ? आपने नहीं सुना कि पैसे के ऊपर चील भी नहीं उड़ती ? पुलिस अफसरों के हाथ अच्छी रकम आएगी बशर्ते कि वे ज़रा आँखें मूँद लें ।

"इस तरह कितने दिन चलेगा ?"

"यह तब तक चलेगा जब तक केलंचेरी की सारी सम्पत्ति हाथ से निकल नहीं जाती ।" किट्टन मुंशी ने कहा ।

श्रीधरन की माँ ने दरवाज़े से झाँककर कहा कि खाना खाने का वक्त हो गया है ।

खाना खाते समय किट्टन मुंशी ने कुंजिक्केलु मेलान की पागलपन से भरी धूर्तता की ढेर सारी कथाएँ सुनायीं ।

भोग-लालसा से उन्मत्त कुंजिक्केलु मेलान रसिक भी था । एक बार स्थानीय वकीलों के क्लब के वार्षिक समारोह में 'इन्दुलेखा' का मंचीकरण किया गया था । नाटक का टिकट बेचने के लिए दो वकील कुंजिक्केलु मेलान के पास गये । सबसे ऊँचे दर्जे का टिकट लिया गया ।

"टिकट का कितना पैसा है ?" मेलान ने पूछा ।

"दस रुपये ।" वकील ने बताया ।

कुंजिक्केलु मेलान ने टिकट खरीद कर बटुआ खोला और तुरन्त पाँच रुपये दे दिये ।

"ये तो सिर्फ पाँच रुपये ही हैं ?" वकीलों ने समझा कि मेलान से गलती हो गयी है ।

"हाँ, पाँच रुपये काफी हैं ।" मेलान ने कहा, "मैं काना हूँ न ?"

## 8. एक निधि की दास्तान

एक दुपट्टा ओढ़ और पैर में खड़ाऊँ डालकर चन्दुमूप्पन कन्निप्परंपु के बरामदे में बैठकर केलंचेरी के कुंजिक्केलु मेलान के जन्म के पहले के ज़माने की दास्तान कृष्णन मास्टर को सुना रहा था ।

कुंजिक्केलु मेलान के परदादा केलु मेलान का जमाना था । केलंचेरी घराने की सम्पत्ति का कोई पार नहीं था । केलंचेरी घराने की मिट्टी पर पैर रखे बिना कोई भी आधा मील दूर तक इस इलाके में नहीं चल सकता था । समुद्री व्यापार से एक साल में इतनी आमदनी हो जाती थी, जितनी एक जहाज़ खरीदने के लिए पर्याप्त है ।

निधि प्राप्त करना केलंचेरीवालों का साधारण अनुभव था। पूर्वजों ने रत्न, हीरों और सोने के आभूषणों को ताँबे और काँसे के बर्तनों में भरकर वृक्षों के नीचे ज़मीन में गाड़ दिया था। केलंचेरी मुखिया के नजदीक आने पर इन बर्तनों के आभूषण कभी-कभी स्वयं ऊपर उठते-से प्रतीत होते थे। यों केलंचरी का ऐश्वर्य जब दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा था तब एक परदेशी ज्योतिषी ने केलु मेलान की जन्मपत्री का निरीक्षण कर सलाह दी कि आगे निधि न मिलने का खास विचार रखना चाहिए। कुछ अर्से बाद इस घराने को एक शाप ग्रस्त निधि मिलेगी। उससे घराने की तबाही की शुरूआत हो जाएगी।

यह सुनकर मेलान तोंद को सहलाते हुए मुस्कराया। उसने मन में सोचा कि केलंचेरी के क्षय होने पर भी उसकी पूरी तबाही के लिए शताब्दियाँ निकल जायेंगी। व्यापार की तबाही हो सकती है, लेकिन केलंचेरी की अपार भू-सम्पत्ति की गिनती कौन कर सकता है? भूचाल और प्रलय होने पर भी हमेशा रहने वाले इलाके और खेत तो हैं ही। छह-सात पीढ़ियों के बाद चाहे जो भी दुर्घटना हो, फिर भी उसकी तबाही नहीं होगी। कुआँ और तालाब का पानी सूख सकता है, लेकिन केलंचेरी तो एक समुद्र है···पर ज्योतिषी की सलाह विचारणीय है। घराने में इतनी अधिक सम्पत्ति इकट्ठी हो गयी है कि उसके बोझ से घराना दब रहा है। फिर यह ज़मीन के नीचे के निधि-कुओं का बोझ कैसे ढो सकेगा?

केलु मेलान यों सम्पत्ति की अतिशयता की तकलीफों का विचार कर रहा था कि तभी राजमहल के दूत फाटक से आते हुए दिखाई पड़े। महाराजा ने आदेश दिया था कि मेलान तुरन्त उनसे आकर मिलें।

मेलान अपने कुछ साथियों के साथ सजधज कर राजा के निकट पहुँचा। वहाँ राजा, मंत्री और पंडित लोग एक कठिन समस्या को हल करने का उपाय सोच रहे थे।

राजा का प्रिय हाथी केशवन भगवती अहाते के बड़े अन्धकूप में गिर पड़ा था। हाथी कुएँ में फँस गया था। अब बगैर चोट पहुँचाये उसे कैसे बचाया जा सकता है?

"मेलान कुछ कह सकते हो? इधर के लोगों को कुछ सूझता नहीं।" राजा ने विषाद भरे स्वर में कहा।

केलु मेलान ने सिर झुकाकर एक पल सोचा। फिर सिर उठाकर बड़े अदब से कहा, "मैं कोशिश करूँगा।"

मंत्रियों और पंडितों के चेहरों से स्पष्ट हो गया कि मेलान के जवाब से उन्हें कोई खास खुशी नहीं हुई है। लेकिन राजा का चेहरा खिल उठा। मेलान की अक्ल-मन्दी पर राजा को भरोसा था।

केलु मेलान झट केलंचेरी वापस आया। वहाँ पहुँचते ही मुख्तारों और नौकरों

को बुलाकर उसने आदेश दिया कि जहाँ से भी संभव हो, घास-फूस को बड़ी मात्रा में खरीदकर तुरन्त भगवती अहाते में पहुँचाओ।

बैलगाड़ियों, ठेलों और सिरों पर घास-फूस के ढेर भगवती इलाके में आने लगे। मेलान के नेतृत्व में उसके साथी फूस के गट्ठर एक-एक कर कुएँ में डालने लगे। उन गाँठों पर कदम रखते हुए हाथी हौले-हौले ऊपर चढ़ने लगा। आधा घंटा भी नहीं हुआ, तिनकों की सेज पर पैर रखकर केशवन कुएँ से बाहर आ गया और केलु मेलान को देखकर शुक्रिया देता हुआ चिघाड़ा। नज़दीक दौड़े आये महावत की अवज्ञा कर हाथी सीधे राजा के महल की तरफ चला गया।

राजा ने केलु मेलान को रेशमी वस्त्र और कंगन का पुरस्कार दिया। अब चौथी बार केलंचेरी के मुखिया कंजिक्केलु मेलान को राजा की तरफ से रेशम और सोने के कंगन मिल रहे थे।

केलंचेरी में वापस आने पर केलु मेलान ने निधि मिलने के बारे में सावधानी बरतने की सलाह देनेवाले ज्योतिषी को बुलाकर पूछा, "ज्योतिषी, अनजाने में ही मुझे सोने का कंगन मिल गया है। इस सोने के कंगन को एक निधि समझा जाए क्या ?"

"ज़रा सावधानी रखिए।" ज्योतिषी ने उभय अर्थ में कहा।

पाँच-छह महीने बीत गये।

एक दिन शाम को केलु मेलान घराने के कुछ खेतों और अहातों की जाँच करने के बाद वापस आ रहा था। केलंचेरी से कुछ दूर किसी नायर का एक बड़ा अहाता केलु मेलान ने अदालत से नीलाम में खरीद लिया था। उस पुराने अहाते में बाड़ लगाने और जुताई कर खाद डालने के लिए मुख्तारों को उसने आदेश दिया था। उस काम को खुद देखने के लिए मेलान एक पगडंडी से उस तरफ मुड़ गया। तब शाम हो चुकी थी।

मेलान ने अपने नये अहाते के निकट आने पर एक हरिजन युवती को एक गट्ठा अपने सिर पर लादकर उस अहाते से नीचे उतरते हुए देखा।

"अरी, तुझसे बाड़ को हटाकर अन्दर घुसकर घास काटने के लिए किसने कहा ?" मेलान क्रोधभरे स्वर में गरजा।

पगडंडी और अहाते के बीच की काँटेदार बाड़ और पत्थरों के बीच सकपकायी खड़ी उस हरिजन युवती ने घास के गट्ठे के नीचे से मेलान की तरफ आँखें घुमायीं।

"अरी, तू क्यों बिजली गिराती-सी इस तरह खड़ी है ? घास वहीं डाल दे।'

घास के गट्ठे को सिर पर रखे हुए ही वह औरत केलु मेलान को छूती हुई-सी पगडंडियों में कूदकर भागने लगी।

केलु मेलान आपे से बाहर हो गया। "अरी तू इतनी बड़ी हो गयी है ?" दाँत

किड़किड़ाते हुए मेलान उस औरत के पीछे दौड़ने लगा। अपने पकड़े जाने के ख्याल से वह औरत घास का गट्ठा नीचे डालकर प्राण लेकर भाग गयी।

'टच्चिंग' के घंटी-नाद के साथ ही घास का वह गट्ठा एक पत्थर के ऊपर पड़ा था। मेलान ने आश्चर्य से झुककर देखा। मिट्टी के निशानों से भरा एक पुराने ताँबे का वर्तन वहाँ निकला पड़ा था। उसने उसे उठाया। वजनदार था। हिलाया तो कुछ हिलने की आवाज सुनाई दी। खोले बिना ही समझ गया कि निधि है। उस औरत के इस निधि के कुंभ को घास के गट्ठे में छिपाकर भागने के समय ही मेलान वहाँ आ निकला था।

कन्धे पर पड़े दुपट्टे से निधि के कुंभ को ढककर केलु मेलान केलंचेरी में पहुँच गया। तभी केलु मेलान की वहिन कुंजिवकुरुंपी ने वरामदे में आकर एक खुशखवरी दी, "उण्णूलि ने एक सन्तान को जन्म दिया है—लड़का है।"

केलु मेलान के वेटे चन्दुक्कुट्टि की पत्नी है उण्णूलि। पौत्र की पैदाइश से केलु मेलान को विशेष प्रसन्नता नहीं हुई। उसने निधि-कुंभ को कन्धे पर रखे हुए सिर्फ 'अच्छा' कहा।

(कुंजिक्केलु मेलान उस दिन जन्मा शिशु था।)

केलु मेलान उस निधि-कुंभ के वारे में ही सोच रहा था।

ताँबे के कुंभ का मुंह लोहे से वन्द कर दिया गया था। कुंभ के अन्दर का सामान देखने की मेलान को बड़ी उतावली थी। लेकिन तुरन्त इसे खोलने का हौसला नहीं हुआ। मुझे इस निधि की जरूरत नहीं है। फिर क्यों इसे खोलकर देखूं—मेलान ने यों समझाकर मन को शान्त किया।

. बड़ी देर के बाद अँधेरे में मेलान निधि-कुंभ लेकर दक्षिण के अहाते में गया। वहाँ एक ताड़ के पेड़ के नीचे गहराई में एक गड्ढा वनाकर उस कुंभ को गाड़कर लौट आया।

शिशु की जन्मपत्री तैयार करनी है। केलु मेलान ने कुंजिवकुरुंपी को बुलाकर पूछा, "मुन्ने का जन्म किस समय हुआ था?"

कुंजिवकुरुंपी पहले तो कहने से हिचकिचायी। फिर दृढ़ स्वर में बताया—"उदय के बाद साढ़े सत्ताइस नाषिका[1] में ही जन्म हुआ था।"

लेकिन वह ठीक समय नहीं था। पुरानी प्रथा के अनुसार उदय काल में ही थाली में पानी भरकर 'नाषिक वट्टा'[2] रख दिया था। लेकिन पता नहीं कव एक विल्ली ने थाली में झपट्टा मारकर 'नासिक वट्टा' उलट दिया। कुंजिवकुरुंपी ने उसके वारे में किसी से भी नहीं कहा। वच्चे की पैदाइश का समय उसने अपने

---

1. एक घंटे की ढाई नाडिका
2. समय देखने का एक पुराना उपकरण

आप निर्धारित कर बताया था।

ज्योतिषी चन्दुक्कुंजन पणिक्कर ने ही बच्चे की जन्मपत्री बनायी थी। उसने लिखा था कि इस बच्चे को सभी सौभाग्य उपलब्ध होंगे। राजयोग भी है। ज़िन्दगी भर सौभाग्य और दीर्घायु होने के नाते यह एक बड़ी सौभाग्यशाली जन्मपत्री ही है।

पाँच-छह दिन बीत गये। केलु मेलान बेचैन होने लगा। उसको निधि-कुंभ के अन्दर की चीजें जानने की उतावली होने लगी थी। उसके अन्दर सोना-चाँदी, जवाहरात या और क्या सामान होगा? ज़रूरत के लिए नहीं, महज़ एक दफ़ा देखने के लिए।

आखिर एक दिन उसकी जाँच का निश्चय किया। आधी रात को एक कुदाल और चाकू हाथ में उठाकर दक्षिण के ताड़ के अहाते के पास गया। उसने जगह की अच्छी तरह जाँच की।

जब निधि-कुंभ ज़मीन के अन्दर गाड़ा था, तब उसके ऊपर निशान के लिए एक केले का पौधा भी लगा दिया था। अन्धेरे में केले का पौधा चुपचाप नज़र आया। मेलान ज्योंही, कुदाल उठाकर नज़दीक पहुँचा त्यों ही 'फ् ब फ् फ'···फुफकारने की उग्र आवाज़ उठी। फण फैलाए काले नाग का फुफकारना! अर्ध बेहोशी की हालत में केलु मेलान अपनी बैठक में वापस जाकर गिर पड़ा था।

फिर अन्तिम दम तक उस निधि को देखने के लिए वह नहीं गया। उस निधि की याद करते समय उस साँप का फुफकारना वह सुनता और उसकी दृष्टि की चमक वह देखता।

उसी विषैले नाग ने कुंजिक्केलु मेलान को दबोच लिया था। केलु मेलान को उस दिन जिस परदेशी ज्योतिषी ने कुछ बताया था, उसे ज़रूर भुगतना पड़ेगा। केलंचेरी घराने की नींव तक की तबाही करने पर कुंजिक्केलु मेलान तुला हुआ है।

चन्दुमूप्पन उठ खड़ा हुआ। "कथा कहकर समय तो गुज़र गया।" बड़े-बड़े दाँतों को दिखाकर चन्दुमूप्पन ने विदा ली। खडाऊँ से ठक्-ठक् की आवाज़ करता वह चला गया।

श्रीधरन बरामदे के पासवाले कमरे में बैठकर चन्दुमूप्पन की दास्तान को एक शब्द भी छोड़े बिना सुन रहा था।

## 9. दल-बदल

महीनों और सालों बीत जाने पर अतिराणिप्पाट की प्रतिच्छाया भी बदल गयी।

कन्निप्परंपु को ही देखें—पुराने छोटे घर की जगह खुले बरामदे के साथ एक खूबसूरत मकान खड़ा हुआ है। आँगन के कोने में एक अच्छा कुआँ भी है, जो कन्निप्परंपु के आसपास के घरों के लिए वरदान ही है। ताँबे के बर्तन और घड़ों को कमर पर रखकर अतिराणिप्पाटं की लड़कियाँ वहाँ इकट्ठी हो जाती हैं। वे बातें करती हुई खिलखिलाकर हँसने लगती हैं। मकान के बरामदे में बैठा श्रीधरन कुएँ के चारों तरफ ऊपर मणि-लताओं के लिए बँधी हुई बाड़ के ऊपर से उन लड़कियों की रोचक बातचीत और हँसी-ठिठोली को कुछ संकोच के साथ-लेकिन रस लेकर, सुनता है। वह उन लड़कियों को कल्पना में जल देवी का रूप देकर कविता रचने की कोशिश करता है।

अतिराणिप्पाटं के दक्षिण पूर्वी कोने के आराकश करप्पन की झोंपड़ी चार कमरों वाले पत्थरों के एक घर के रूप में तबदील हो गयी है।

करप्पन का पुत्र बालन समुद्रतट की छतरी बनानेवाली कम्पनी से मासिक वेतन पाता है।

कोरन बटलर की चाय की दुकान के निकट उसकी प्रतिस्पर्धा में सूप कण्णन के बेटे कुमारन ने एक और चाय की दुकान खोल ली है। उसका नाम 'भारत-माता टी शॉप' रखा गया है। कुमारन का सहयोगी उत्तर दिशा का कुंजिरामन है जिसे 'गोरा जूँ' के उपनाम से जाना जाता है। वह एक फैशनेबुल नौजवान है।

बढ़ई नीलांडन ने कठफोड़वा बेलप्पन की सेवा से अलग होकर अतिराणिप्पाटं के पश्चिम कोने में स्वयं एक फर्नीचर की दुकान खोली है। सहयोगियों के तौर पर उसके बहनोई माधवन कुट्टप्पन, करुप्पन इन दो बढ़इयों को भी लाया गया था।

आराकश सामी के पड़ोस में एक राजगीर अप्पु के छोटे अहाते में बढ़ई वेला-युधन ने एक झोंपड़ी बनायी थी। उसके मालुक्कुट्टी, चेरियम्मा ये दो पत्नियाँ थीं। ये दोनों बहिनें थीं।

पुराने कुछ नालों और गड्ढों को पाटकर वहाँ कुछ झोंपड़ियाँ खड़ी कीं गयी थीं। सुनार, लुहार जाति के लोग बसने लगे थे। इस तरह अतिराणिप्पाटं में नयी झोंपड़ियाँ बनी। आबादी की वृद्धि हुई। जिन्दगी का स्तर भी ऊँचा होने लगा।

कुट्टाप्पु के घर का चबूतरा और चन्दु पणिक्कर का विद्यालय ज्यों का त्यों था। उनमें किसी तरह का परिवर्तन नहीं हुआ था। कुट्टाप्पु का चबूतरा घास-फूस और छोटे पौधों से भरा था। शायद तबीयत खराब होने के कारण कुट्टाप्पु को अपने घर का चबूतरा देखने आये महीनों बीत गये थे।

अतिराणिप्पाटं के जीवन की साज-सज्जा के ज़माने से ही चन्दुप्पणिक्कर का विद्यालय था। उस इलाके के अधिकांश नौजवानों ने पणिक्कर के विद्यालय में रेत पर और ताड़ के पत्तों में लिखकर पढ़ना सीखा था।

बुजुर्ग चन्दुप्पणिक्कर शिक्षक, ज्योतिषी, वैद्य, मान्त्रिक आदि उपाधियों

के कारण अतिराणिप्पाटं और आस-पास के कई लोगों के लिए आदरणीय थे। अपने विद्यालय को प्राइमरी स्कूल तक ले जाकर उन्होंने उसके व्यवस्थापक का पद भी हस्तगत किया था।

चन्दुप्पणिक्कर का घर चार-पाँच मील दूर था। लेकिन अक्सर वे स्कूल में रहते थे। ज्योतिष देखने, जन्मपत्री की जाँच करने, भूत-प्रेतों को रोकने हेतु धागा बँधवाने के लिए लोग रात को ही पणिक्कर से मुलाकात करने आते थे।

पणिक्कर की कौड़ी की काली थैली करीब बीस वर्ष पुरानी थी।

चन्दुप्पणिक्कर को देखने पर श्रीधरन को हँसी आती थी। इसका कारण पणिक्कर की लम्बी नाक थी। वे सूँघनी का बार-बार इस्तेमाल करते थे। तम्बाकू की बुकनी नाक में सुड़क कर नाक को बार-बार मलते रहने के कारण उनकी नाक के छिद्र विकृत होकर ज़रा नीचे की तरफ मुड़ गये थे, इससे नाक एक टूटे-फूटे नाले के पुल की तरह लगती थी।

आधी रात को गीत गाकर घूमने वाले कुट्टाई के अभाव ने अतिराणिप्पाटं की रातों में एक तरह की उदासी पैदा कर दी थी। कुट्टाई आराकशों के मुखिया के रूप में मैसूर की तरीक्करा में काम करने गया था। वहाँ वह एक कन्नड़ औरत से शादी कर चैन से रहता है।

मूँछ कणारन के पिता पुजारी वेलु की रस्सी से लटककर मृत्यु, शंकुण्णि कम्पाउण्डर का गंधर्व विवाह, पाणन की झोंपड़ी में दिन दहाड़े हत्या, चाप्पुण्णि अधिकारी के नये घर का त्योहार इस बीच घटित ये अतिराणिप्पाटं की मुख्य घटनाएँ थीं।

पहले एक आराकश की ज़िन्दगी गुज़ारने वाला वेलु पलनि भक्तों के मुखिया के रूप में दाढ़ी मूँछ बढ़ाकर, गेरुए कपड़े और गले में रुद्राक्ष माला पहन कर फुल टाइम पुजारी की तरह जीवन बिता रहा था। एक दिन बिना किसी खास कारण के सुबह ही सुबह नहाने के बाद भस्म लगा बहँगी की पूजा करने के बाद वह रस्सी को घर की छत से बाँध उस से लटककर मर गया।

पुजारी वेलु के लटक कर मरने का दृश्य देखने श्रीधरन दौड़ा गया था। गरदन झुकाए, पके दाढ़ी-मूँछवाला पुजारी ज़मीन से कुछ ऊपर लटका हुआ था। ऐसी लटकी हुई लाश को श्रीधरन ने पहली बार देखा था।

"अरे देखा, उसने अपनी जाँघों को नोच डाला है।" पीछे से बढ़ई माधवन ने खुसुर-फुसर की। लटक कर मर जाने वाला आदमी अपनी दोनों जाँघों को यों नोच डालेगा!

कुबड़े बच्चे की तरह लम्बे अर्से तक पुजारी के कन्धे पर सवारी करने वाली पलनी के कोने में रखी बहँगी अपनी मोरपंख आँखों से पुजारी को घूरकर देख रही थी।

एक ओर कोने में बैठकर मूँछ कणारन फूट-फूटकर रो रहा था। पति के निधन पर एक विधवा की रुलाई की हँसी उड़ाकर "अब मेरा कौन है?" कहकर छाती पीटकर रोने वाले कणारन की रुलाई सुनकर श्रीधरन को हँसी आ गई थी।

शंकुण्णि कम्पाउण्डर ने उत्तर के किसी इलाके से एक मैथिली की चोरी कर उसे कुछ दिन तक तो अपने घर में रखा। फिर सार्वजनिक रूप में शादी सम्पन्न हो गयी। धुनिया वेलु के घर में उस दिन एक विवाहोत्सव हो रहा था। दोपहर को पत्ते बिछ गये थे। उस समय आये हुए मेहमानों के दो आदमियों के बीच कुछ बहस हो गयी। बहस बढ़कर—'मैं—मैं—तू—तू' में बदल गयी। फिर एक ने बाप के नाम गाली दी। दूसरे ने तुरन्त झपटकर अपनी कमर से छुरा निकालकर उसकी छाती में भोंक दिया। उसी समय उसकी मृत्यु हो गयी।···धुनिया की झोंपड़ी में औरतों का हाहाकार, हल्ला-गुल्ला—इधर उधर दौड़ना···कुत्तों और कौवों की अच्छी खासी दावत हो गयी···थोड़ी देर के बाद पुलिस की लाल टोपी सामने दीखने लगी।

थोड़े से बाल और गोल-गोल बड़ी आँखोंवाले उस मोटे हत्यारे ने पुलिस को प्रणाम कर उसकी अधीनता मान ली। धुनिया की छाती में चीनी अक्षरों की तरह जो चन्दन की लकीरें थीं, उनमें खून के नक्षत्र इधर-उधर छिटक गये थे।

खून से नहाये आँगन में लेटे धुनिया का शरीर सफेद पड़ गया था। वह दुबला-पतला-सा युवक था। घुँघराले बाल, ललाट पर सिंदूर की बिन्दी, दाहिने गाल के नीचे एक बड़ा मस्सा—सब साफ दिखाई देता था।

छुरे के शिकार एक आदमी के शरीर को और एक असली हत्यारे को श्रीधरन ने पहले पहल वहाँ नजदीक से देखा था।

चाप्पुण्णि अधिकारी ने जो नया भवन बनाया था, उसके उपलक्ष्य में पूजा का प्रबन्ध किया गया था। इलाके वालों और अपने हितैषियों से जो उपहार और भेंट वस्तुएँ वहाँ आ पहुँची थीं उनकी हिफाजत के लिए अधिकारी को एक अलग गृह का निर्माण करना पड़ेगा।

"अधिकारी उस मकान के लिए भी एक पूजा करायेगा।" मूँछ कणारन ने राय प्रकट की।

कुंजिक्केलु मेलान अपने मनोरंजन, भोग लालसा और बाहरी दिखावे के लिए केलंचेरी भंडार पर एक तरह का तांडव नृत्य कर रहा था। दाक्षिणात्य भी चुप नहीं रहे! नये समाज के बीच एक इंच जगह हासिल करने के लिए उन्होंने भी पैसे खर्च किये। क्षेत्रीय मन्दिरों के त्योहारों और आम जरूरतों के लिए उन्होंने उदार होकर पैसे दिये। फिर उन्होंने अपने खिलाफ प्रचार-प्रसार करने वालों को रिश्वत देकर अपने कब्जे में रखने की चेष्टा की। उन्हें इस प्रयास में थोड़ी-बहुत सफलता भी हासिल हुई। पहले पहल आण्डि को ही उन्होंने अपने हाथ में लिया था। उन्होंने

अच्छी तनख्वाह देकर आण्डि को अपने गोदाम के प्रधान लेखपाल के पद पर नियुक्त किया। 'कोल जुलाहों' के खिलाफ रात-दिन प्रचार करने पर आण्डि को किसी से एक कानी कौड़ी भी नहीं मिली थी। अब इन लोगों को वेतनभोगी हो जाने के कारण आण्डि ने चुप्पी साध ली।

अर्जीनवीस आण्डि की सिविल और क्रिमिनल सलाह से दाक्षिणात्यों को बड़ी मदद मिलती थी। आण्डि ने समझाया कि कुंजिक्केलु मेलान के दाक्षिणात्यों को समुदाय में शामिल कराने के वादों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। उसके बाद मन्दिरों के लिए उन्होंने पैसे देने से साफ इनकार कर दिया।

क़र्ज़ के बोझ से दबे परिवारों के अहाते, खेत और मकान केलंचेरी वालों को ही मिलते थे। कुंजिकेलु मेलान को इन संपत्तियों को वेचने के अलावा इन्हें हस्तगत किये रखने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। केलंचेरी के मुख्तार भी इस दिशा में उदासीन रहे। मौका देखकर आण्डि ने उन संपत्तियों को दाक्षिणात्यों को दिला दिया।

झूठे दस्तावेज़ों की निर्माण-कला को आण्डि एकदम नहीं भूल सका था। कुंजिक्केलु मेलान के झूठे हस्ताक्षरों के कुछ दस्तावेज़ों को आण्डि ने लिखकर तैयार किया। आण्डि के गुरु अष्टवक्रन वेलायुधन नायर ने भी उसकी बड़ी सहायता की। वेलप्पन नायर और केलंचेरी के द्वितीय मुख्तार इट्टिरारिश्श मेनोन ने एक रहस्यपूर्ण समझौता किया। केलंचेरी के कुछ छिपे हुए अहातों के सर्वे नम्बर और ज़रूरी सूचनाएँ इट्टिरारिश्श मेनोन ने वेलप्पन नायर को गुप्त रूप से दे दीं। आण्डि ने रात-रात जागकर इन दस्तावेज़ों को बनाया। (आशान वेलप्पन नायर वात रोग से पीड़ित हाथों से कुछ भी लिख नहीं सकता था।) इन दस्तावेज़ों में प्रतिपादित दूसरे आदमी आण्डि के ही नौकर चाकर थे। आण्डि ने उनसे ये संपत्तियाँ फिर दाक्षिणात्यों को दिला दीं। इस प्रकार आण्डि को बड़ा मुनाफा मिला। शराब के नशे और औरतों की आँखों के कटाक्षों में घिरे कुंजिक्केलु मेलान ने केलंचेरी के अहातों को जिन लोगों के नाम लिखा था, उसका पता खुद उसे ही नहीं था। फिर इन बातों पर ध्यान देने का फ़र्ज प्रबन्धकों का था। प्रथम मुख्तार धुप्पुपट्टर और दूसरे मुख्तार इट्टिरारिश्श मेनोन की आँखों के सामने अगर एक थैली रख दो तो फिर केलंचेरी का एक पूरा टीला भी आँखों से ओझल हो जाए, वे नहीं देखेंगे।

इस तरह केलंचेरीवालों की कई सम्पत्तियाँ गूढ़ तरीके से दाक्षिणात्यों के हाथों में आ गयीं।

फिर भी दाक्षिणात्यों की प्रधान समस्या—जाति में प्रवेश करने की—ज्यों की त्यों वनी रही।

चेनक्कोट्टु और कृष्णन मास्टर को दाक्षिणात्यों से सहानुभूति थी। लेकिन खुले तौर पर उनके पक्ष में शामिल होकर लड़ने के लिए उनका आत्मसम्मान अनुमति नहीं देता था। मास्टर को डर था कि अगर वह खुले तौर पर दाक्षिणात्यों के

पक्ष में कुछ कहेगा तो लोग समझेंगे कि मास्टर उनसे घूस लेकर उनकी वकालत कर रहा है। इतना ही नहीं, कृष्णन मास्टर दाक्षिणात्यों के छलपूर्वक केलंचरी की भू-सम्पत्तियों को कब्जे में करने के खिलाफ थे। कुंजिक्केलु मेलान के प्रति सहानुभूति के कारण नहीं, बल्कि इलाके के एक पुराने घराने की तबाही देखकर ही मास्टर को हार्दिक दुख हुआ था।

इस तरह कृष्णन मास्टर और उसके कुछ अनुयायी एक तीसरे ही गुट में अलग खड़े रहे।

आण्डि की सलाह के अनुसार दक्षिणात्यों ने रिश्वत देकर उस इलाके के कवि केकड़ा गोविन्दन को अपने पक्ष में कर लिया।

इसी बीच एक खूबसूरत और शिक्षित मछुआरिन से कुंजिक्केलु मेलान की आँखें चार हुईं। एक पतित जाति की औरत से केलंचेरी मेलान की मुहब्बत को लोगों ने मसखरी के रूप में ही लिया था। लेकिन अर्जीनवीस आण्डि ने इसे एक सुनहला मौका कहकर दाक्षिणात्यों को सलाह दी। दाक्षिणात्यों को जुलाहा कहकर दूर हटाने वाले मेलान ने एक मछुआरिन को सार्वजनिक रूप से अपना लिया है, मेलान का मजाक उड़ाना है।

दाक्षिणात्यों के मुखिया ने चुप्पी साधकर अपनी अनुमति दी। कवि केकड़ा गोविन्दन वेशभूषा का अधिक शौकीन था। दक्षिण से बुनकर तैयार की गई बढ़िया धोतियाँ उसके घर पहुँच गयी थीं।

नयी धोतियाँ पहनकर केकड़ा गोविन्दन ने अपने पाट्टु साहित्य की सृष्टि की। मेलान की शान-शौकत पर प्रहार कर चुभने वाले परिहासमय पाट्टु गा-गाकर उसका प्रचार करने के लिए कुछ देहाती लड़कों को भी नियुक्त कर दिया :

"मछुआरिन माधवी से मुहब्बत कर
मेलान भी मछुआ बना—राम राम राम
बारह बत्तीवाली कार बेचकर—मेलान
एक मछली-नाव खरीद ले—राम राम राम
सागर पर चला जा जालों को लेकर वह
पोक्कर मुसलमान और मेलान
मछुआरिन माधवी से मुहब्बत कर···"

## 10. विद्यालय और घर में

पुत्तन हाईस्कूल में तीन साल पढ़ने के बाद श्रीधरन राजा कॉलेज हाई स्कूल में भर्ती हो गया। वहाँ वह स्कूल की फाइनल क्लास में पहुँच गया है।

श्रीधरन को अध्यापकों के पढ़ाने से भी अधिक सहपाठियों के बीच की शरारतों

ने आकर्षित किया था। दूसरे विद्यालयों में इस ढंग का अनुभव नहीं मिल सकता था। लेकिन राजा कालेज में पहुँचने पर स्थिति एकदम बदल गयी थी। छात्रों की शरारतों पर माफी नहीं मिलती थी। दर्जे में अनुशासन का पालन नहीं करें तो उसी समय छात्र को वाहर निकाल दिया जाता था। लेकिन राजा कॉलेज में भी शिक्षकों को उपनाम से समादृत करने की प्रथा थी। पुत्तन हाईस्कूल में अध्यापकों को देने वाले नाम जानवरों से सम्बन्धित थे। पर, यहां इतना फर्क था कि उन्हें पौधों का नाम ही दिया जाता था। 'भिंडी पट्टर', 'बैंगन स्वामी' आदि। कुबड़ों का इलाज करने वाला एक कुरूप मास्टर था। उसे 'हरा केला' नाम से पुकारा जाता था।

पिताजी की सलाह के मुताबिक श्रीधरन ने हाईस्कूल में मलयालम के बदले ऐच्छिक विषय के तौर पर संस्कृत ली थी। संस्कृत के शिक्षक एक श्रेष्ठ कवि भी थे।

जब कॉलेज मैगजीन में श्रीधरन की एक कहानी प्रकाशित हुई तो संस्कृत के शिक्षक ने दर्जे के छात्रों को श्रीधरन की इस कहानी को पढ़कर सुनाया। अनजाने में ही श्रीधरन को पहले-पहल एक श्रेष्ठ कवि, अपने ही शिक्षक, से हार्दिक बधाई प्राप्त हुई। श्रीधरन को यकीन हो गया कि और छात्रों में वह योग्यता नहीं है जो उसमें है। लेकिन उसने बाहरी तौर पर इस पर कोई घमण्ड नहीं किया।

महाकवि वल्लत्तोल ने ही श्रीधरन की कवि बनने की इच्छा को सबसे पहले बढ़ावा दिया था। राजा कॉलेज की साहित्यिक संगोष्ठी में वल्लत्तोल भाषण देने आये थे। उनका जोर से एक खास लहजे में दिया गया वह भाषण पहली बार श्रीधरन ने सुना था। उन्होंने आसमान में उड़ने वाले बादलों की यह उपमा दी थी : 'किसी सफेद कागज को चीर फाड़ने की तरह'। 'मैं तो अंग्रेजी नहीं जानने वाला एक 'कन्ट्री हूँ' कहने के पीछे उनका जो तीखा व्यंग्य था उसने श्रीधरन को आकर्षित और चकित किया था। श्रीधरन ने मन में सोचा कि अगर मैं वल्लत्तोल की तरह एक कवि बन सकता तो!···

लम्बा कोट और सूट पहनने वाले साढ़े चार फुट ऊँचे किणि मास्टर एक रसिया ही थे। वे दर्जे में रोचक कथाएँ कहते। अक्सर वे मुर्गे के लहजे में धीमी आवाज में ठट्ठा मारकर हँसते। चाय और कॉफी के बारे के अँग्रेजी में 'कविताएँ लिखकर कॉलेज मासिक में प्रकाशित कराते। एक दिन किणि मास्टर कक्षा में नीले सियार की कहानी सुना रहें थे। मारा-मारा फिरने वाला एक सियार अनजाने में ही एक नीले रंग से भरी बाल्टी में जा गिरा। बाहर निकलने पर उसके शरीर भर में नीला रंग पुता हुआ था। उसने दूसरे सियारों से कहा कि मैं खुदा का सियार हूँ। वह उनका मुखिया हो गया। दुर्भाग्य से उस दिन श्रीधरन नीले रंग का एक पाजामा और कुर्ता पहन कर कक्षा में आया था। 'नीला सियार' कहते समय किणि मास्टर श्रीधरन की तरफ देखकर हँस रहे थे। क्लास के छात्र भी हँस पड़ें थे।

उस दिन से श्रीधरन को 'नीला सियार' यह उपनाम मिल गया। कई सहपाठी वह नाम पुकारकर श्रीधरन की हँसी उड़ाते थे। लेकिन वर्दाश्त करने के सिवा वह और कर भी क्या सकता था।

एक दिन शाम को स्कूल से घर वापस जाते समय रास्ते में एक पट्टर के बेटे कृष्णय्यर ने श्रीधरन की तरफ देखकर पूछा, "अरे नीले सियार' क्या समाचार हैं ?" श्रीधरन उसका परिहास बिलकुल सह नहीं सका। वह मुड़कर खड़ा हो गया और फिर उस पट्टर के बेटे के गाल पर एक झापड़ रसीद कर दिया। अन-जाने में ही पिटाई मिली, यह सोचकर बेचारा कृष्णय्यर चुपचाप मुँह फुलाते हुए चला गया। फिर श्रीधरन को लगा कि ऐसा नहीं करना चाहिए था। पट्टर होने के नाते प्रत्याक्रमण नहीं करेगा, इसी विश्वास के बल पर ही तो उसने उसको तमाचा जड़ दिया था। और कोई लड़का होता तो क्या वह उसको पीटने का हौसला करता ? क्या पुत्तन हाईस्कूल का गणपति भी पट्टर नहीं था ? वह बात दूसरी है। वह गणपति तो ऐसा एक बदतमीज था, जो गप्पें मारकर कहता था कि उसका दादा एक महावत नायर का बेटा था।

उस दिन घर पहुँचने पर भी उस तमाचे के बारे में सोचकर उसका मन मसोसता रहा।

कॉफी पीने के बाद श्रीधरन अपने बगीचे में उतरा।

कन्निप्परंपु में कुएँ के बाहर श्रीधरन ने एक नया बाग लगवाया था। पेण्टर स्तेव के बाग ने ही श्रीधरन को प्रेरणा दी थी। इस चमन की एक खास खूबी उस में लगाये हुए कई रंग के जासौन थे। आम तौर पर मुर्गे की पूँछ जैसे जासौन के अलावा सफेद, हलके लाल, गाढ़े-लाल, हलके पीले, गाढ़े नीले आदि कई रंग के फूलों वाले जासौन थे। दो-दो दलों और संयुक्त दलों के फूल भी थे। जासौन के वर्ग का एक और पौधा भी था। बाड़ के नजदीक और मोड़ों पर ये पोधे झुंड के झुंड वर्ण-पुष्पों का प्रदर्शन कर खड़े थे।

बाग में इधर-उधर जुही की लताएँ लहलहाती थीं। शाम को वहाँ रंगों और सुगन्धों का त्यौहार-सा होता था।

आँगन के कोने की छोटी दीवार के ऊपर मिट्टी के गमलों में कई तरह के 'प्रिण्स ऑफ वेल्स' पौधों को लगाया गया। लम्बे, टेढ़े और रंग-बिरंगे निशानों वाले उनके पत्तों के लटककर खड़े होने का दृश्य बहुत ही आकर्षक था। सफेद प्रिन्स ऑफ वेल्स का स्थान ही प्रथम था। उसे देखने पर लगता था कि आँगन में एक जलधारा-यंत्र की स्थापना की गयी है।

श्रीधरन को अपने बगीचे के रंग-बिरंगे दृश्य और अपनी कला देख कर आनन्दमय होने के बीच ही कुछ दूर कंजूस केलु के घर से लगातार ताँबे पर पीटने की-सी आवाज और 'हाय हाय मेरी माँ !' की चीत्कार सुनाई देती। यह कंजूस

केलु के ज्येष्ठ पुत्र—शंकुण्णि कम्पाउण्डर के बड़े भाई अप्पुण्णि की खाँसी और उसकी कराहें थीं। श्रीधरन हमदर्दी के साथ उधर देखा करता।

अप्पुण्णि ईश्वरभक्त और समाज सेवक था। वह काला-दुबला था। उम्र अट्ठाईस के करीब होगी। शादी नहीं की थी।

अप्पुण्णि एक-दो बरस पहले दक्षिण तिरुवितांकूर के वैक्कम मन्दिर सत्याग्रह में भाग लेकर स्वयं सेवक बना था। सत्याग्रह के समय पहरेदारों और ऊँचे कुल में जन्मे बदमाशों की भयंकर मारपीट सहनी पड़ी। आखिर वैक्कम मंदिर सत्याग्रह की जीत हो गयी। लेकिन सत्याग्रह की प्रथम पंक्ति में खड़े होकर मार-पीट सहने के कारण उसकी हड्डियाँ टूट गयी थीं। कई तकलीफें सहने के बाद जब वह अपने घर लौटा, तब उस लाचार बीमार अप्पुण्णि की तरफ मुड़कर देखने के लिए कोई नहीं था। उसके पिता केलु ने भी चेहरा मोड़ लिया था। "छोकरा खुदा के खिलाफ नटखटी करने गया। उसको भुगतने दो।" बेटे का इलाज करने के लिए पैसा खर्च न हो इस लिए कंजूस-मक्खीचूस पिता ने यही तरकीब निकाली थी। "यह वैक्कत्तप्पन का शाप है। उसे स्वयं अनुभव करने दो।"

जब बड़ा भाई राजयक्ष्मा का शिकार हो खून की उल्टी करता, तब छोटा भाई शंकुण्णि नज़दीक के कमरे से अपनी मैंथिली से छेड़ छाड़ करता हुआ ठठाकर हँस पड़ता।

कृष्णन मास्टर ही एक ऐसा आदमी है जो अप्पुण्णि के त्याग के बारे में अभिमान और सहानुभूति के साथ बातचीत करता था। वह कहा करता, "हमारे इलाके में एक ही त्यागी है। वह अप्पुण्णि के सिवा और कोई नहीं है।" पिताजी की ये बातें श्रीधरन के मन में जम गयीं। वैक्कम सत्याग्रह के बारे में पिताजी ने श्रीधरन को बता दिया था। मास्टर को वैक्कम सत्याग्रह के प्रति बड़ी सहानुभूति थी।

यों अतिराणिप्पाटं में एक ही त्यागी था और उसका एक ही हिमायती था।

ताँबे के बर्तन पर पीटने की-सी खाँसी की आवाज और 'हाय मेरी माँ' का चीत्कार श्रीधरन बर्दाश्त नहीं कर सका।

तभी कन्निप्परंपु की दक्षिण-पश्चिम दिशा की एक और आवाज ने श्रीधरन का ध्यान खींच लिया। श्रीधरन दक्षिण के अहाते की तरफ चला। जाते समय बरामदे की तरफ देखा, बाबूजी अँग्रेजी शब्दकोश खोलकर कुछ नकल कर रहे थे। (नये अँग्रेजी शब्दों को नकल कर उन्हें दुहराकर पढ़ना कृष्णन मास्टर का व्यसन है।)

श्रीधरन ने कन्निप्परंपु के दक्षिण कोने के अमरूद के नीचे जाकर देखा (अमरूद का पेड़ कई ऊँची डालों के साथ ऊँचाई पर खड़ा है। उसमें कई फल लगे होते। लेकिन श्रीधरन को कोई फल नहीं मिलता था। क्योंकि रात को चमगादड़ आकर उन्हें हड़प ले जाती थी।)

नाले की उत्तर दिशा के आराकश वेलु के घर से ही यह शोर-शराबा सुनाई पड़ता है। लाल चोली पहने एक औरत पीठ मोड़कर खड़ी थी। चमगादड़ की-सी उसकी कर्कश आवाज़ सुनने पर औरत की पहचान हुई, वह पेण्टर रामन की बेटी चिरुता है। झगड़ालू उण्णूलि अम्मा से ही जली-कटी बातें हो रही थीं।

चिरुता अविवाहित और मोटी काली औरत है। चेचक के निशानों से भरा उसका चेहरा देखने पर लगता है कि माँस को चेहरे पर कहीं-कहीं पिरोकर रख दिया गया है। उसके शरीर के गठन में भी कुछ खामियाँ हैं। लेकिन चिरुता का विचार है कि वह एक खूबसूरत औरत है। तीज-त्योहारों में ही नहीं, जहाँ भीड़-भाड़ और चेंडा का बाजन आदि होता वहाँ चिरुता हाजिर हो जाती। वह भीड़ में मर्दों को धक्का देते हुए आगे बढ़ जाती। फिर गाली देकर कहती—"माँ बेटी नहीं हैं इन बदमाशों के। हरामी-धत् (वह जमीन पर थूक देती) कहीं से भी आऊँ, ये बदमाश, हरामी······।"

अगर कोई परिचित आदमी उससे कहता, 'अरी चिरुता, तू किसे गाली दे रही है' तो वह औरत अनसुनी का बहाना कर फिर गाली बकने लगती—"औरतों को देखने पर मर्दों को एक नस की बीमारी होती है। हाथों को कुष्ठ रोग लगे···।"

चिरुता की शिकायत यह होती कि किसी मर्द ने पीछे से उसे नोचा छुआ है, या फिर उसके शरीर के किसी पवित्र भाग पर हाथ रखा है। दरअसल कोई भी मर्द चिरुता को सामने या पीछे से देखने पर उसकी अवज्ञा ही करता। यह सब कुछ चिरुता की अपनी कल्पना-सृष्टि ही थी। हाँ, इससे मर्दों को गाली देने का उसे अच्छा मौका मिल जाता।

यह चिरुता ही झगड़ालू उण्णूलि अम्मा से उसके घर जाकर झगड़ा मोल लेने के लिए तैयार हो गयी है। चिरुता के इस मुकदमे के अपराधी से उसकी पहचान है। वह उण्णूलि अम्मा का भाई और साइकिल की एक दुकान का नौकर गोपालन है। गोपालन साइकिल पर पगडंडियों से धीरे-धीरे आ रहा था तभी चिरुता से उसकी मुठभेड़ हो गयी। गोपालन ने गीत की कोई कड़ी गाकर चिरुता से कुछ ऊल-जलूल कह दिया था। यही झगड़े की जड़ है।

"तुम्हारे भाई को अगर प्रेम-म्रेम का पागलपन सवार है तो जल्दी एक शादी करवा दो···" चिरुता मशीन की सुई की तरह बोली।

उण्णूलि अम्मा जल्दी से घर के अन्दर घुस गयी। फिर वह एक पुराना झाड़ू लेकर बाहर आयी।

"अरी, रंडी···।" तभी तिनकों के गट्ठर की तरह का एक बड़ा गोला आँगन की तरफ आगे बढ़ा···उण्णुलिअम्मा ने अपनी झाड़ू फेंक दी। चिरुता अपने बालों को संवारते हुए झूमती हुई वहाँ से चली गयी।

रेशों का गट्ठर ज़मीन पर उतरा। उसके पीछे एक लम्बा-सा आदमी। चाँदी कीं एक छड़ी भी प्रत्यक्ष हो गयी।

नारियल के रेशे की पतली रस्सी का मालिक सफेद चन्दू आया था।

सफेद चन्दू अतिराणिप्पाटं के गरीब परिवार की औरतों को रेशे की पतली रस्सी के कुटीर उद्योग से पैसा दिलवाने का अधिकारी था। (सफेद चन्दू को देखने पर पुत्तन हाईस्कूल के दरवाजे पर मिठाई बेचनेवाले जिराफ नायर की याद श्रीधरन के मन में ताज़ा हो जाती है।) वह एक बड़ी गांठ में रेशों को किसी मज़-दूर के सिर पर ढोते हुए चलता। चन्दू अपने शरीर की लम्बाई की चाँदी की एक छड़ी लेकर सप्ताह में एक दफा अतिराणिप्पाटं में प्रयत्क्ष होता। वह हर घर की औरतों को रेशे तौलकर दे देता। अपनी जेब की नोट-बुक में नोट भी कर लेता। अगले सप्ताह रेशे की पतली रस्सी को लेकर उसका पूरा पारिश्रमिक दे देता। उण्णूलिअम्मा का आँगन ही प्रमुख वितरण केन्द्र था।

सफेद चन्दू और रेशों के आने का समाचार पाकर अतिराणिप्पाटं की औरतें अपने हाथों में रेशे की रस्सियों के साथ वहाँ आने लगीं।

इस तरह उण्णूलि अम्मा के आँगन की गाली-गलौज सफेद चन्दू के रेशों के वितरण से टल गई।

अमरूद के पेड़ से श्रीधरन घर की तरफ मुड़ गया। तभी एक आदमी को आते हुए देखा। वेशभूषा से जल्दी ही आदमी की पहचान हो गयी। वह पाणन कणारन था।

अंगोछे को कन्धे पर रखकर सिर झुका आँखें बन्द कर बड़े अदब से अंजलिबद्ध होकर पाणन ने 'हुजूर' कहा।

"अरे यह? कणारन है न?" कृष्णन मास्टर ने शब्दकोश के पृष्ठों में उँगली दबाते हुए पाणन से कहा।

कणारन अंजलिबद्ध होकर नेत्र मूंदे हुए उसी भाव-मुद्रा में चुपचाप खड़ा रहा।

"कणारन, बरामदे में आकर बैठो!" कृष्णन मास्टर ने पाणन को बरामदे में आने का निमन्त्रण दिया।

पाणन आँखें खोल, हाथ जोड़कर और कन्धे से अंगोछा उठाकर कदम रखता हुआ बरामदे में आगे बढ़कर वहाँ के एक कोने में घुटने टेक कर बैठ गया।

"कणारण, तुम्हारी परदेश-यात्रा खतम हुए कितने दिन हो गए?"

शब्दकोश और नोटबुक बन्द कर कृष्णन मास्टर पाणन की तरफ मुड़ कर बैठ गये।

पाणन ने अपनी छाती को हथेली से दबाते हुए आँखें बन्द कर साफ़ शब्दों में बताया, "लोगों की मेहरबानी से यह दास पिछले बुधवार सुबह ही अपनी झोंपड़ी

में सकुशल वापस लौट आया"।

तभी श्रीधरन की माँ सात बत्तियोंवाले जलते दीपक के साथ बरामदे में आयी। चारों तरफ आलोक फैल गया।

पाणन झट उठ खड़ा हुआ। (वह ज़रा सकपकाया। उसने दक्षिण दिशा में दीपक देखा था। 'दक्षिणे न भक्षणं।' कल का फल यही होगा।) आँखे मूँदकर अंजलिबद्ध होकर थोड़ी देर ध्यान मग्न हो खड़ा रहा।

कमर में तौलिया लपेटे (मोटे चमड़े की मियान में चाकू को कमर में रखकर ललाट पर चन्दन की लम्बी लकीरें खींचने के बाद उसके मध्य में सिन्दूर का तिलक और नंगी छाती पर चन्दन लगा कर लम्बे कद का खूबसूरत मध्य वयस्क पाणन कणारन श्रीधरन का एक आराध्य पुरुष था।

कणारन एक अच्छा मांत्रिक भी था। 'जले हुए मुर्गे को उड़ानेवाला आदमी'— कणारन के बारे में इस इलाके के लोग यही कहते थे। (वेलालूर खेतों और पूतप्प-रंपु के बीच नरिमु नामक एक देहात में ही कणारन रहता है।)

कणारन कृष्णन मास्टर का पुराना दोस्त है। कणारन के पिता केलु, कृष्णन मास्टर के चेनक्कोत्तु घराने के देवी मन्दिर के एक पुजारी थे। कणारन अक्सर परदेश की यात्रा किया करता। वह साल में एक वार काशी, ऋषीकेश, कैलास आदि उत्तर भारत के तीर्थों की सैर करता। यह भारत-पर्यटन दो तीन महीने तक रहता। सफर के बाद घर वापस आने पर कणारन सबसे पहले कृष्णन मास्टर से ही मिलने आता। हिमालय के जंगलों के सन्यासियों की कथाएँ सुनने में मास्टर की बड़ी दिलचस्पी है। (कृष्णन मास्टर ने कोयंबतूर के निकटवर्ती पेरनर के उस पार का परदेश नहीं देखा था। पेरनर में भी वह पितरों को पिण्डदान देने के लिए ही गया था।)

शाम के धुँधलके के साथ ही पाणन कन्निप्परंपु में आता था। रात को बड़ी देर तक बैठकर चैन से वह बातचीत करता। संन्यासी, ऋषि-मुनि, परमहंसों के दर्शन के लिए कणारन ने भंयकर जंगलों से जो पदयात्राएँ की थीं, वह उनकी रोमांचक कहानियाँ रात के भोजन के वाद भी सुनाता। (पाणन यह भी कहता कि कन्निप्परंपु में ही मांस-मछली खाकर वह तीर्थयात्रा का व्रत भंग कर रहा है।)

बाकी कथाओं को फिर किसी अवसर के लिए टाल कर रात को ग्यारह बजे के बाद ही वह कन्निप्परंपु से बिदा लेता।

पाणन कणारन के यात्रा-वर्णनों ने श्रीधरन के अन्दर सुदूर जंगलों के जीवन की गतिविधियों और संन्यासी जैसे विचित्र पुरुषों के जीवन की नयी तस्वीरों को प्रत्यक्ष कर दिया। श्रीधरन को कणारन का हौसला देखकर वड़ा ताज्जुव हुआ। आधीरात को, अकेले पूतप्परंपु के रास्ते से नरिमुक्कु में चलना! भूत-प्रेत और यक्षी उछल कूद-कर पूतप्परंपु में क्रीड़ा कर रहे हैं। पाणन को इनसे कोई डर

नहीं है। पूतप्परंपु से कुछ उग्र पिशाचों को उसने पकड़कर बांध लिया था और कुछ प्रेतों को अपने इशारे पर नचाया था। पाणन कणारन ने इन बातों का वर्णन कुछ दिन पहले किया था। श्रीधरन के मन में उसकी याद आज भी ताजा है। पाणन कणारन के सामने भूत-प्रेत तो बिलकुल नालायक कुत्तों की तरह हैं और यक्षी पक्षियों की तरह।

एक अमावस को आधी रात कणारन दूर कहीं कोई पूजा-विसर्जन कर नरि-मुक्कु में लौट रहा था। पूतप्परंपु के दक्षिण कोने में पहुंचने पर कन्धे के तौलिये की गांठ को, जिसमें मुर्गे का मांस और कुछ पूजा का सामान था, पीछे से किसी के द्वारा खींच लेने-जैसा महसूस हुआ। अपराधी को ताड़ लिया गया। वह बदमाश उण्णिच्चात्तन नायर का प्रेत था। उस प्रेत ने उस कोने से कई लोगों को मारकर गिरा दिया था।

पाणन ने प्रेत को धमकी देकर कहा, "उण्णिच्चात्तन नायर, कणारन से नहीं खेलो!" प्रेत ने पाणन की नहीं सुनी। उसने गांठ के साथ कणारन को जबरन पीछे धकेल दिया।

कणारन अचानक कमर से चाकू खींचकर मन्त्र जपकर खड़ा हो गया। उसने चाकू से ज़मीन पर एक चक्र खींच दिया।

"अरे, ठहर जा वहाँ।" मंत्रिक कणारन की आवाज़ गरज उठी। उण्णिच्चा-त्तन चक्र के अन्दर फँस गया। कणारन ने चाकू चक्र के मध्य में गड़ा दिया।

"हाय, हाय!" एक भयंकर चीत्कार पूतप्पुरंपु में गूंज उठी।

बदमाश प्रेत को यों वहीं कीलित कर कणारन अपना सामान लिये नरिमुक्कु चला गया।

उण्णिच्चात्तन नायर तड़के तक वहीं लेटा चिल्लाता रहा।

दूसरे दिन सुबह कणारन ने वहाँ आकर तड़पनेवाले प्रेत से शपथ करायी कि आगे चलकर वह हर्गिज राहगीरों को तंग नहीं करेगा। उसके बाद कणारन ने चक्र से चाकू को ऊपर उठाया। देखने पर क्या मिला? चाकू का धारीदार हिस्सा खून से सना था। कणारन ने बताया कि पूतप्परंपु भगवती मन्दिर, श्मशान और गाँव के सुनसान कोने में ही नहीं, शहर के बीच भी इन प्रेतों को देखा जा सकता है। कणारन ने शहर के गोरों के गिरिजाघर के कोने में एक काप्पिरि को देखा है। कणारन उसकी घटना को भी बताता।

श्रीधरन ने स्कूल में पढ़ा था कि काप्पिरि अफ्रीका का आदि नरवर्ग है। लेकिन पाणन कणारन ने बताता कि काप्पिरि एक दिवंगत आदमी है। काप्पिरि गोरे पादरी का प्रेतज है।

कणारन ने कहा कि काप्पिरि के सान्निध्य की पहचान उसकी गन्ध से ही हो सकती है। पहले तो सिगार के जलने की-सी गन्ध आ-जाएगी। फिर वह बकरों

और भेड़ों की मिली हुई गन्ध की तरह रूक्ष और दुस्सह हो जाएगी। उस समय मुड़कर देखे बिना भाग जाना चाहिए।

एक रात कणारन शहर के काठ के गोदाम के मालिक गोविन्दन के घर से एक भूत-प्रेत को हटाने के बाद, नरिमुक्कु लौट रहा था। गोरों के गिरिजाघर के कोने की सड़क पर पहुँचने पर सिगार की गन्ध महसूस हुई। समझ गया कि वह काप्पिरि है। मुड़कर देखना नहीं चाहिए। लेकिन वह आम आदमियों के लिए ही लागू है। मांत्रिक इसकी परवाह नहीं करता। कणारन ने मुड़कर देखा। फिर क्या कहना था। गिरिजाघर की दीवार पर काली हाँडी की-सी टोपी पहने एक सफेद दाढ़ीवाला काप्पिरि बैठा था। उसके मुँह पर मूसल के टुकड़े की नाईं एक सिगार था।

कणारन ने सोचा कि पादरी प्रेत को ज़रा डराया-धमकाया जाये। वह मन्त्र जपकर चाकू से चक्र खींचकर पादरी को उस पर फँसा सकता था। चाकू भोंक कर पादरी का चीत्कार सुन सकता था। फिर कणारन ने सोचा कि नहीं, उसकी ज़रूरत नहीं। बेचारा पादरी सिगार पीकर उस दीवार पर रात की हवा खाता हुआ बैठा है। अन्य प्रेतों की तरह काप्पिरि खतरनाक नहीं है। वह दूसरे शरीर में घुसता नहीं। बस बदबू निकालकर दूसरों को पास से हटा देता है।

पाणन कणारन सन्ध्या-दीप की प्रार्थना कर अपनी जगह बैठ गया।

श्रीधरन अपने पढ़ने के कमरे में घुसकर दरवाज़े के निकट बैठे कणारन के परदेश-समाचारों को सुनने लगा।

"कणारन, क्या तुमने इस सैर में किसी सन्त को देखा था?" कृष्णन मास्टर ने पूछा।

"काशी विश्वनाथ—महादेवा—देखा था देखा···!"

असली परब्रह्म से मुलाकात होने की भक्ति का अभिनय कर पाणन थोड़ी देर नक खामोश रहा। फिर संन्यासियों, सन्तों और परमहंसों से मुलाकात होने की बातें कहने लगा :

काशी से दो दिनों की सैर कर एक घमासान जंगल में पहुँच गया। वहाँ एक पत्थर पर बैठकर एक संन्यासी तपस्या कर रहा था। संन्यासी पूर्व दिशा की तरफ सूर्योदय देखकर ही तपस्या शुरू करता है। आँखें बन्द किये बिना सूर्य भगवान को ताककर उसकी तपस्या होती है। जैसे-जैसे सूरज आसमान में ऊपर उठता है, वैसे-वैसे संन्यासी का चेहरा और आँखें भी ऊपर उठते हैं। इस तरह सूर्यास्त होने के साथ-साथ संन्यासी की देह धनुष की तरह पीछे की तरफ मुड़ जाती है और सिर जमीन पर टकरा जाता है। हर हर महादेव !

कृष्णन मास्टर के मन में उस सूर्य निरीक्षक स्वामी की अद्भुत तपस्या का चित्र उभर आया और वह श्रद्धानत होकर बैठा रहा। उधर श्रीधरन यह सोचकर

कि बारिश के दिनों में जब सूरज आसमान में दिखाई नहीं देता होगा, ये संन्यासी क्या करते होंगे, थोड़ी देर तक मौन ध्यान में बैठा रहा।

अब और एक तपस्वी की दास्तान : दृश्य हिमालय का घोर जंगल ही है। वहाँ की एक गुफा में एक बूढ़ा संन्यासी अन्न-जल के बिना बगैर नींद के कई सालों से रात-दिन वहीं बैठकर कठिन तपस्या कर रहा है। हाथों को फैलाकर, पद्मासन में ही वह तपस्या कर रहा है। संन्यासी की देह लकड़ी की एक गठरी की तरह हो गयी है। उस सन्त के हाथ का नाखून बढ़ते-बढ़ते गुफा के पेड़ की जड़ में धँस गया है, यह दृश्य भी कणारन ने देखा था—हर हर महादेव !

## 11. परीक्षाएँ

उस दिन दोपहर को दोमंजिले के बरामदे में बैठकर श्रीधरन नीचे के बाग की तरफ देखता हुआ एक कविता लिखने की चेष्टा कर रहा था। तभी नीचे से पिताजी की पुकार सुनाई पड़ी। सीढ़ियाँ उतरकर नीचे पहुँच गया।

कृष्णन मास्टर के चेहरे पर अजीब खुशी लहरा रही थी। ओठों के बीच एक मुस्कान थिरक रही थी।

श्रीधरन के पहुँचने पर श्रीधरन की माँ को भी पुकारा। उसको इस बात का पता नहीं लगा कि बात क्या है ?

माँ के आने पर पिताजी ने एक खुशखबरी सुना दी।

"श्रीधरन की एस० एस० एल० सी० बुक पहुँच गयी है। हैडमास्टर ने कहा है कि वह सभी विषयों में पास हो गया है।"

इम्तहान में विजयी होने का समाचार पाकर श्रीधरन को ज़रा राहत महसूस हुई, पर कृष्णन मास्टर अपने पुत्र की जीत पर खुशी से फूला न समाया।

"अब क्या करने का इरादा है ?" माँ ने पूछा।

"उसे कॉलेज में भर्ती कराना है।" कृष्णन मास्टर ने टोपी और कमीज उतारने के बाद तसल्ली के साथ कपड़े की कुर्सी पर लेटकर अपनी छाती के पके बालों को सहलाते हुए कहा, "उसको पैंतीस रुपये ज़रूर मिलेंगे।"

(उस जमाने में सरकार की सेवा में भर्ती होने की कम-से-कम योग्यता एस० एस० एल० सी० और मासिक वेतन पैंतीस रुपया था।)

कृष्णन मास्टर की आकांक्षा श्रीधरन को बी० ए० पास कराने की थी और फिर सरकारी नौकरी मिलने में अधिक तकलीफ न थी। क्योंकि मुनसिफ, सब-जजी आदि ऊँचे ओहदों पर उनके कई पुराने शिष्य बैठे हुए थे, उनसे एक शब्द कहना ही काफ़ी होगा।

पर, श्रीधरन का मनोभाव दूसरे ढँग का था। कालेज में पढ़ने, बी० ए० पास

होने और सरकार की सेवा करने की श्रीधरन की कोई लालसा नहीं थी। फिर क्या करे ? इस विषय में भी कोई विचार न था। पिताजी के आदेश और इच्छा के विपरीत चलने को भी मन नहीं होता था। श्रीधरन ऐसी एक पीड़ादायक स्थिति में फँसकर परेशान हो रहा था।

अतिराणिप्पाटं में एस० एस० एल० सी० पास होने वाला बुद्धिमान प्रथम छात्र श्रीधरन ही था।

श्रीधरन ने उस दिन शाम को परीक्षा में सफल होने पर खुशी मनाने और भविष्य के बारे में चिन्तन करने के लिए समुद्र-तट पर जाने का निश्चय किया।

परीक्षा के समय उसने एक नया ट्विल शर्ट पहना था। उसे उसने इस्त्री कर ठीक तरह से रख दिया था। एक अच्छी धोती और सफेद ट्विल शर्ट पहनकर हाथ में सोने की रिस्ट वाच बाँधकर (कुछ पुरानी वह घड़ी कृष्णन मास्टर के स्कूल के एक पट्टर अध्यापक ने लाटरी में बेची थी। उसके लिए उन्होंने हर-एक टिकट के लिए एक-एक रुपया वसूल कर कुल पच्चीस टिकटें बेचीं थीं। उनमें एक टिकट श्रीधरन के नाम कृष्णन मास्टर ने खरीदा था। उसी टिकट पर पुरस्कार मिला था।) बालों को सँवार्कर, क्यूटीकूरा पाउडर पोतकर बड़ी शान से वह एस० एस० एल० सी० पास—पैंतीस रुपये तनख्वाह पाने योग्य नौजवान बनकर समुद्र-तट की तरफ रवाना हुआ।

वह नयी सड़क से पश्चिम दिशा में चलकर सेटताली पुल पार कर मुस्लिम साम्राज्य चेंगरा में पहुँच गया।

वह चेंगरा की पगडंडियों के रास्ते से समुद्र-तट पर पुल के नज़दीक हवा खाने को बैठने वाले कोने में आसानी से पहुँच सकेगा, तथा वह पुराने हिन्दु-मन्दिरों की जगह बनी मस्जिदों और तालाबों को देखते हुए चल सकेगा। पगडंडियों के दोनों तरफ कहीं-कहीं मुस्लिम अमीरों के ऊँचे महलों की बड़ी दीवारें खड़ी होंगी। उन दीवारों के नज़दीक ही रसोईघर होगा। कभी-कभी सफेद घूँघटवाली यक्षियों को रसोईघर के दरवाज़ों से देखा जा सकेगा।

भविष्य के अव्यक्त स्वप्नों में डूबकर आगे बढ़ते हुए श्रीधरन को पिचकारी से पानी छिटकने-जैसा कुछ महसूस हुआ। सिर झुकाकर देखा तो शर्ट और धोती पर खून था। बाद में जाँच करने पर मालूम हुआ कि वह खून नहीं है, बल्कि पान खानेवाली का थूक है।

उस समय पत्थर की दीवार के नज़दीक के रसोई-घर से औरतों के कटोरों के गिरने-जैसी ठट्ठाकर हँसने की आवाज़ सुनाई दी।

चेंगरा के रसोइ-घर की बीवियों के मसखरेपन के बारे में श्रीधरन ने सुना था। पान-सुपारी मज़े से खाने के बाद रसोईघर की ये यक्षियाँ लुक-छिपकर यह देखेंगी कि कोई काफिर सज-धजकर इधर से आ रहा है। शिकार के नज़दीक पहुँचते

ही दरवाजे से निशाना चूके बिना ही मुँह की थूक बाहर निकलेगी। फिर ठट्ठा मारकर हँसेगी। ये खून पीने वाली यक्षियाँ नहीं हैं, खून थूकने वाली यक्षियाँ हैं।

रात-दिन उस किले के बन्धन में समय बिताने वाली उन औरतों को किसी मनोरंजन की ज़रूरत है।

रसोई से पान का रसायन देने वाली बीबी युवती है या पूरी औरत ? श्रीधरन को लगा कि वह युवती ही होगी। उसे इस बात का ताज्जुब हुआ कि उस युवती का कितना बड़ा मुँह होगा ! अपनी धोती और कमीज को यों भिगो देने के लिए उस बीबी के मुँह में एक बोतल पानी समायेगा।

श्रीधरन यों किंकर्तव्यविमूढ़ होकर वहीं खड़ा रहा। इस रूप में वह समुद्र-तट पर जाने का विचार भी नहीं कर सकता था। अतिराणिप्पाटं वापस जाने पर सड़क मे जा भी नहीं सकेगा। सबसे पहले कपड़े की थूक को धो लेना चाहिए। उसने सोचा कि मस्जिद के तालाब में उतरकर धोना ही अच्छा है। तालाब के पानी का हरा रंग और बदबू की याद आने पर तय किया कि बीबी की थूक उससे पवित्र है। धोती को शर्ट के ऊपर बाँधकर वह सिर झुकाये लौट चला। तेज़ चलने से खतरा होगा क्योंकि कोई अकस्मात् देखने पर सोचेगा कि यह किसी को चाकू से कत्ल कर फरार हो रहा है। फिर लोगों की भीड़ इकट्ठी होगी। हो-हल्ला मचेगा। इस लिए किसी को सन्देह का मौका दिये बिना ही वह साधारण चाल से चला।

नयी सड़क पर पहुँचने पर एक दो आदमियों ने मुड़कर देखा। सेटताली पुल पार करते समय एक मुसलमान लड़का बात समझकर हँसते हुए पुकार उठा। सब कुछ बर्दाश्त किया। दसवीं कक्षा पास होने के इस पुण्य दिवस पर इस प्रकार की एक झंझट होने से बेहद दुख हुआ। थूकने वाली उस मुसलमान औरत के मुँह में सख्त बीमारी होने का शाप दिया।

अतिराणिप्पाटं में पहले के राजगीर अप्पु के घर गया।

वहाँ केलुक्कुट्टि और गपीला वासु कुछ गुप्त बातचीत कर रहे थे। श्रीधरन के वेश को देखकर केलुक्कुट्टि को घबराहट हुई। उसने सोचा कि किसी कार या बैल-गाड़ी से टकराने से चोट पहुँची होगी और खून में नहाकर ही वह आ रहा है।

घटी-घटनाओं को सुनाने पर केलुक्कुट्टि और वासु हँसी से लोटपोट हो गये। वासु ने कहा, "चेंगरा की पगडंडी से मुझे भी एक बार यह पुरस्कार मिला था। लेकिन शर्ट पर नहीं, चेहरे पर मिला था।"

यह सुनकर केलुक्कुट्टि ने हँसते हुए कहा, "इलायची का दाना मिलाकर ही पान खाती होगी। बीबी के थूक की अच्छी खुशबू होगी।"

केलुक्कुट्टि की माँ उण्णूलिअम्मा ने हमदर्दी के साथ श्रीधरन से कहा, "बेटे वह धोती और शर्ट उतारकर दे दो। मैं थूक को धोकर साफ कर दूँगी।"

उण्णूलिअम्मा की भलमनसाहत पर धन्यवाद देकर श्रीधरन ने शर्ट और धोती

उतार दी। वहाँ पहनने के लिए केलुक्कुट्टि का एक तौलिया ही था। वह तौलिया पहनकर बरामदे में बैठ गया।

वासु और केलुक्कुट्टि ने अपनी बातचीत जारी रखी।

तभी केलुक्कुट्टि का छोटा भाई नारायणन रोते हुए वहाँ आ पहुँचा।

"अरे, तू क्यों रो रहा है ?" केलुक्कुट्टि ने पूछा।

"मदीना होटल के फीलपाँववाले मुसलमान ने मेरे बटुवे को छीन लिया।" नारायणन ने रोते हुए कहा।

"अरे, तू क्यों उस फीलपाँववाले की दुकान पर गया था ?" वासु ने पूछा।

"चाय पीने के लिए।" नारायणन ने कुछ अपराध-बोध के साथ कहा।

"फिर फीलपाँववाले ने तेरा बटुआ क्यों छीन लिया ?"

वासु ने नारायण से कैफियत मांगी। नारायणन ने सभी घटनाओं का वर्णन किया।

पिछले दिन घर में आये हुए बहनोई कुंजुण्णि ने नारायणन को एक छोटा-सा बटुआ और चार आने इनाम दिये थे। नारायणन बटुआ और पैसे लेकर शाम को बाज़ार में टहलने गया। इधर-उधर भटककर कुछ सामान खरीदा और अन्त में अधन्नी लेकर मदीना होटल में चाय और केले के लिए आर्डर दिया। नारायणन चाय पीने के बाद पैसे देने फीलपाँववाले मालिक के सामने पहुँचा और अधन्नी मेज़ पर रख दी। 'पौन आना' दुकान के लड़के ने ज़ोर से कहा। नारायणन चौंक उठा। उसने सोचा था कि हाफ चाय के लिए पाव आना और केले के लिए पाव आना कुल आधा आना। नारायणन ने ऐसा ही हिसाब लगाया था। पर, लड़के ने आधे आने की फुल चाय दे दी थी।

नारायणन ने कहा, "मैंने हाफ चाय का ही आर्डर दिया था।"

"तुमने फुल चाय ही पी है" फीलपाँववाले ने कहा। "पाव आना और रख दे !"

नारायणन ने अपना नया बटुआ खोलकर दिखा दिया। बटुआ खाली था। तभी फीलपाँववाले मालिक ने नारायणन के हाथ से बटुआ छीनकर मेज़ की दराज में रख लिया और कहा, "बच्चू, बाकी पैसे देने के बाद बटुआ ले जाना। अब तू चला जा···।"

कई लोगों के सामने ही नारायणन को उस फीलपाँववाले ने आड़े हाथों लिया था। नारायणन ने यह सब आँसू पोंछते हुए बताया।

केलुक्कुट्टि ने अपनी जेब से पाव आना देकर कहा, "जल्दी जाकर उस फील-पाँववाले से बटुआ ले आ।"

नारायणन पाव आना थाम आँख और चेहरे को पोंछकर मदीना की तरफ चला गया।

उसके चले जाने के बाद केलुक्कुट्टि ने वासु से कहा, "उस फीलपाँववाले से बदला लेना चाहिए।"

"आज ही हम उससे बदला लेंगे," गपिया वासु ने सख्ती से कहा।

"भोजन के बाद अपने दोस्तों को उधर मदीना में ले जावें।"

"हमारे गुट के सभी लोग आज मौजूद नहीं हैं।" वासु ने किसी योजना पर विचार करते हुए कहा। "बढ़ई माधवन देहात चला गया है। सफेद जूँ बुखार से पीड़ित है। हमें आज कम-से-कम छह आदमियों की ज़रूरत है।"

"ऐसी बात है तो हम श्रीधरन को शामिल कर लें।" केलुक्कुट्टि ने अपना विचार प्रकट किया।

तौलिया पहनकर बरामदे में बैठे श्रीधरन की तरफ नफरत भरी निगाह से देखकर वासु ने कहा, "नहीं वह तो माइनर ही है।"

(तिरुमाला की घटना के बाद वासु श्रीधरन से बातचीत नहीं करता था।)

"वह दसवीं कक्षा पास हो गया है न?" केलुक्कुट्टि ने श्रीधरन के पक्ष में कहा।

"वह तो रही स्कूल की बात। हमारे संघ में वह नालायक है, माइनर है।" वासु ने निषेध में अपना सिर हिलाया।

"माइनर और मेजर देखने की क्या ज़रूरत है? हमें तो एक आदमी चाहिए न?" केलुक्कुट्टि ने पूछा।

गपिया वासु थोड़ी देर तक सोचता रहा। फिर उसने पूछा, "श्रीधरन आधी रात को घर से बाहर जा सकता है?"

श्रीधरन ने जोश के साथ कहा, "मैं ज़रूर आऊँगा।"

"तू कैसे आ सकता है?" वासु ने अपना हाथ हिलाते हुए पूछा। "क्या तू ऊपर की मंजिल में नहीं सोता? आधी रात को सीढ़ी से उतरकर पश्चिम की खिड़की खोलकर माँ-बाप के जाने बिना ही बाहर आ सकता है?"

"मैं उनको सूचना दिये बिना बाहर आ जाऊँगा। सीढ़ी उतरकर दरवाज़ा खोले बिना ही आ जाऊँगा।" श्रीधरन ने आत्मविश्वास के साथ कहा।

फिर भी वासु को भरोसा नहीं हुआ।

श्रीधरन ने अपनी तरकीब बतायी। वह ऊपर के बरामदे से दीवार के कोने के पत्थरों पर पैर रखकर बाहर आ सकता है।

श्रीधरन का हौसला और जोश देखकर उस्ताद वासु को फिर विचार करना पड़ा। उसने सोचा, लड़का बुरा तो नहीं है।

"क्या तू पहले कभी ऊपर से नीचे उतरा था?" केलुक्कुट्टि ने सवाल किया।

"दिन में कई बार इसकी जाँच कर चुका हूँ।"

"रात को अन्धेरे में उतर सकता है?" वासु ने पूछा।

"एक बार इसकी भी जाँच कर चुका हूँ।" (श्रीधरन ने कार्यसिद्धि के लिए झूठ कहा।)

"ऐसी बात है तो तू भी आ जा। रात बारह बजे मोटी कुंकुच्चियम्मा के घर पहुँचना है। सिर पर बाँधने के लिए एक तौलिया भी ले आना।"

उस्ताद वासु ने माइनर को आदेश दिया।

श्रीधरन को कन्निप्परंपु में पहुँचते हुए शाम हो गयी थी। धोती और कमीज कहीं-कहीं से भीगे थे। तो भी मुसलमान औरत के थूक का निशान साबुन से धोने से गायब हो गया था।

युद्धवीरों का एक रात्रि-संघ अतिराणिप्पाटं और आस-पास के इलाकों में जो वीरतापूर्ण साहसिक और मज़ेदार कार्यवाइयाँ करता था, उसके किस्से श्रीधरन ने सुने थे। लेकिन नज़दीक जाने की इच्छा होने पर भी उसे इसका कोई अवसर नहीं मिला था।

अतिराणिप्पाटं से आधा मील दूर पर रहनेवाली मोटी कुंकुच्चियम्मा के दो लड़के हैं—लक्ष्मणन और भरतन। ये भाई शहर में एक मोटर वर्कशाप चला रहे हैं। इनमें छोटा भाई भरतन नटखट और रसिक है। बड़ा भाई लक्ष्मणन घर में कम ही आता है। उसका रात का कार्यक्रम वर्कशाप के कोने में पैसे रखकर ताश खेलना था।

भरतन 'सप्पर सफर संघ' नाम के एक गूढ़ संघ का मुखिया था। सप्ताह में दो बार संघ के सदस्य मोटी कुंकुच्चियम्मा के घर में एकत्रित होते। चन्दा लेकर एक 'सफर' की शुरूआत करते।

भोजन के बाद प्रच्छन्न वेश में शहर के कोनों में घूमकर वे कई तरह की मसखरी दिखाते। मारपीट, छीना-झपटी, डकैती, चोरी आदि आक्रमण की हरकतें इस संघ के सदस्य बिलकुल नहीं करते थे। (यह नहीं कहा जा सकता कि चोरी बिलकुल नहीं की। कोरप्पन ठेकेदार के अहाते में कई केले के पेड़ थे। कभी-कभी उनमें से एकाध की चोरी होती। भोजन के बाद टहलते वक्त इच्छानुसार कई प्रायोगिक मनोरंजनों का संगठन होता। यह संघ मोहल्ले के म्युनिस्पिल मिट्टी के तेलवाली बत्तियों की तीलियाँ बढ़ाकर जलाना, सड़क के काम के लिए एकत्रित किये गये गोलाकार पत्थरों का अन्य जगहों में ले-जाकर ढेर लगाना, अगर किसी से दुश्मनी है तो उसके घर के पीछे छिपकर शैतान की तरह पुकारकर घरवालों को डराना-धमकाना, या फिर समुद्र के किनारे खड़े होकर दुश्मनों को खरी-खोटी सुनाना, कुछ भी नहीं करना है तो समुद्र की लहरों को गिनना—इस ढंग की कार्यवाइयाँ करता था। मोटी कुंकुच्चियम्मा भी एक तमाशगीर थी। वह इस गुट के लिए कई मनोरंजक कार्यक्रमों की सलाह देती। वह पाककला में होशियार है। भोजन के लिए घी का भात, बिरियाणी, प्याज का भात ऐसी मज़ेदार चीजें वह

तैयार करती।

गपीला वासु बढ़ई नीलांडन का बहनोई माधवन, कुमारन की चाय की दुकान का कुंजिरामन (सफेद जूं), धोबी मुत्तु (काली बिल्ली), राजगीर केलुक्कुट्टि, छतरियों की मूंठवाली कम्पनी का वालन (छतरी की छड़ी)—ये ही उस्ताद वालन गुट के स्थायी सदस्य थे।

एक बार उन्होंने चाप्पुण्णि अधिकारी का नाकों दम कर दिया था। कंजूस-मक्खीचूस अधिकारी ने देशवासियों का कई तरह से शोषण किया था। इस देश-द्रोही को अच्छा सबक सिखाने का 'सप्पर सफर संघ' ने एक जुट होकर निर्णय लिया था। भोजन के बाद इस संघ के सदस्यों ने अधिकारी के घर के दरवाजे पर बलि चढ़ायी—एक केले के पत्ते में कठपुतली, मसाले और तीलियां तथा भोजन के लिए मारे गये मुर्गे का सिर और खून वहाँ रखकर ये लोग चुपचाप वापस चले गये।

दूसरे दिन सुबह अधिकारी उठकर बरामदे में आया तो बलि के बचे-खुचे सामान को देखकर बदहवास हो गया।

दुश्मनों का पता लगाने के लिए अधिकारी आठ ज्योतिषियों को लाया। अच्छे मांत्रिकों से दोष-परिहार के लिए तीन दिन होम कराया।

इस प्रकार अधिकारी के सौ रुपये खर्च हो गये।

उस्ताद भरतन पिछले महीने में एक नये वर्कशाप का फोरमैन होकर ऊटी चला गया। अब 'सप्पर सफर संघ' का नेतृत्व गपीला वासु ही कर रहा है। संघ के डेरे और भोजन का प्रबन्ध पहले की तरह मोटी कुंकुच्चियम्मा के घर में ही है।

उस दिन खाना खाकर श्रीधरन मकान के अपने कमरे में पुलिस स्टेशन की घण्टी बजने के इन्तज़ार में दत्तचित्त होकर बैठ गया। दस बजे की घण्टी बजी। श्रीधरन चटाई पर बैठा एक-एक पल गिनने लगा। फिर कुछ समय बीत गया। करीब पौने ग्यारह बजे वह एक तौलिया सिर पर बाँधकर बरामदे में आकर बैठ गया।

घर के एक हिस्से में एक नया कमरा बनवाने के लिए दीवार के छोर पर पत्थर सम्हालकर रख दिये गये थे। घर के बरामदे की दीवार पर चढ़कर कोने के पत्थरों पर पैर रखकर दीवार के सहारे वह नीचे उतर सकता है। मनोरंजन के लिए उसने इसकी दो-तीन बार जाँच भी की थी।

पहले छोर के पत्थर पर पैर रखते ही श्रीधरन का कलेजा अकारण ही स्पन्दित हो उठा। आधी रात घर से लुक-छिपकर बाहर भागने की यह पहली कोशिश है। मन में अपराध-बोध हुआ। पिताजी इसे जान लें तो! लेकिन अपने साहसिक मनोरंजन कार्यक्रम के जोश में वह अपराध-बोध नदारद हो गया।

श्रीधरन जब मोटी कुंकुच्चियम्मा के घर के दरवाज़े पर पहुँचा तब बारह बज रहे थे।

उस्ताद वासु, केलुक्कुट्टि और धोबी मुत्तु वहाँ हाज़िर थे। माइनर के पहुँचने पर कुल चार आदमी हो गये। उस्ताद वासु ने हठ करके कहा कि मदीना के शिकार के लिए कम-से-कम छह आदमियों की ज़रूरत है। तभी धोबी मुत्तु जाकर अपने घर के एक मेहमान कण्णप्पन को ले आया।

कुंकुच्चियम्मा ने घी का भात तैयार किया था। बकरे के मांस का एक अच्छा व्यंजन भी।

भोजन के बाद सब लोग तैयार हो गये। छह आदमियों की संख्या पूरी करने के लिए कुंकुच्चियम्मा के नौकर कुंनिक्कण्णन को भी पगड़ी बाँधकर साथ ले लिया।

"चलो मदीना···" उस्ताद ने आज्ञा दी।

शहर में रेल स्टेशन के नज़दीक चौबीस घण्टे खुलने वाला एक मुस्लिम होटल है मदीना। रेल के गुड्स शेड में काम करने वाले नौकर, ठेलेवाले, सेठ की छतरी कम्पनी के मजदूर और सुबह की गाड़ी में सैर करने वाले यात्री और पुलिस के लोग रात को चाय पीने के लिए वहाँ आते हैं। होटल मालिक फीलपाँववाला अवरान कोया काउण्टर के ऊपर एक ऊँची कुर्सी पर बैठकर रात को ऊँघता रहता है।

फीलपाँव वाले मालिक से बदला लेने के लिए उस्ताद वासु ने जो योजना बनायी थी, साथियों को इसका कोई पता न लगा। वासु पहले ही कुछ बताने वाला आदमी नहीं था।

उस्ताद के नेतृत्व में मदीना में घुसने वाले ये छह आदमी एक स्पेशल रूम में जाकर बैठ गये। रसोई के कोने में ऊँघने वाले लड़के ने पास आकर पूछा, "क्या-क्या चाहिए ?"

"छह हाफ चाय और छह 'तकिया खोल'।" उस्ताद ने आर्डर दिया।

(केले, चावल का चून और सुगंधित वस्तुओं को नारियल के तेल में भूनकर यह मधुर पकवान बनता है। आधा आना उसका मूल्य है।)

लड़के ने पहले एक-एक तश्तरी में 'तकिया खोल' रख दी। फिर गिलास में चाय लाकर मेज़ पर रख दी।

'तकिया खोल' खाकर गरम चाय पीने के बाद उठने की तैयारी करने वाले अपने साथियों को रोककर उस्ताद ने अपनी पगड़ी निकाल कर खाली तश्तरी को अपने सिर पर रखकर तौलिये से ठीक तरह से बाँध लिया। उसने साथियों से भी इसी तरह करने का इशारा किया।

सभी सदस्यों ने एक-एक तश्तरी लेकर अपने सिर पर रखी और उसे तौलिये

मिलने गया तो तूने ही सब कुछ बिगाड़कर मुझे अपमानित किया था। तूने आज छह कटोरे भी नष्ट करा दिये। मैंने मोटी कुंकुच्चियम्मा से वादा किया था कि फीलपाँववाले की दुकान से आते समय छह कटोरे साथ लेकर ही आऊँगा। सब कुछ तूने बिगाड़ दिया। भविष्य में मटीना के सामने से चल भी नहीं सकेंगे। अरे, तुझे साथ लेकर मुसीबत है—तू एक जाण्नूस है।"

श्रीधरन ने उसकी बातें बर्दाश्त कीं। वासु को यह ख्याल करना चाहिए था कि वह स्कूल की फाइनल परीक्षा में उत्तीर्ण एक युवक से बातचीत कर रहा है। श्रीधरन ने यह भी सोचा कि अपनी कमज़ोरियों के कारण ही यह सब सुनना पड़ रहा है। जब श्रीधरन को मालूम हुआ कि रात के गुट से उस्ताद मुझे बाहर निकाल देने का ख्याल रखता है तो उसे रुलाई आ गयी।

तब 'छतरी की छड़ी' उठकर आ गया। उसने वासु को सांन्वना देकर कहा, "वासु, जाने दो। वह तो माइनर है न? अनुभव कम है। एक गलती हो गयी। यह पहली गलती है न? जरा सब्र करो। हमें कटोरा न मिलने पर भी उस फीलपाँव-वाले मालिक को तो नुकसान हुआ है न? हमने बदला ले लिया। बस यही काफी है..."

उस्ताद ने एक बीड़ी पीकर थोड़ी देर बड़प्पन से सोचा।

"लेकिन माइनर को एक प्रशिक्षण देना होगा।" काले अरब समुद्र की तरफ आँखें फाड़कर देखते हुए उस्ताद ने फैसला सुनाया।

श्रीधरन को तसल्ली हुई। श्रीधरन 'सप्पर सफर संघ' का सदस्य बनने के लिए किसी भी अग्निपरीक्षा का सामना करने के लिए तैयार था।

तीन बजे ही वे अतिराणिप्पाटं में वापस लौट आये थे।

अगला 'सप्पर सफर' शुक्रवार के लिए तय किया गया।

उस रात बारह बजे के पहले ही श्रीधरन ने मोटी कुंकुच्चियम्मा के घर हाज़िरी दे दी। थोड़ी देर के बाद उस्ताद, 'छतरी की छड़ी' और बढ़ई हाजिर हुए। आखिर 'काली बिल्ली' भी आ पहुँचा।

भोजन तैयार हो गया था।

मुर्गे के मांस का व्यंजन मज़ेदार था। मछली और लहसुन मिलाकर तैयार किया गया कटहल का एक स्पेशल व्यंजन मेजबान की ओर से परोस दिया गया।

भोजन के बाद वे टहलने निकले। बढ़ई के कन्धे पर कुदाल था (इस कुदाल को साथ ले चलने का एक और उद्देश्य था। अगर बीट पुलिस उनसे मिलने पर पूछेगी, "अरे, कौन-कौन है? कहाँ जा रहे हो?" तो ऐसे मौके पर वे बड़े अदब से कहेंगे कि समुद्र-तट पर एक लाश दफनाने के बाद वापस आ रहे हैं।)

कार्यक्रम ठीक समय पर ही निर्धारित होता था।

म्युनिस्पिल लैम्प के नजदीक कान्ति मिस्तरी ने सड़क की मरम्मत करने के लिए कब्र की आकृति में पत्थरों का ढेर लगा दिया था। उस्ताद ने आदेश दिया कि वहाँ से हटाकर उन्हें उसकी विपरीत दिशा में कब्र की आकृति में रख दें।

अपने मित्रों के साथ पत्थर को नयी जगह रखने की कार्यवाई में माइनर ने सक्रिय भाग लिया।

तभी एक बाधा उपस्थित हुई। माइनर के खड़े होनेवाले कोने में पत्थर के ढेर पर एक कुत्ते ने पाखाना कर रखा था।

श्रीधरन सकपकाकर खड़ा हो गया।

ओवरसियर की तरह बीड़ी पीते हुए निकट खड़े उस्ताद ने श्रीधरन को एक बार घूरकर देखा। फिर उससे पूछा, "कल्लटिक्कोलु टीले का मान्त्रिक परय जाति का मुखिया मंत्र-विद्या सीखने के लिए आनेवालों की जाँच कैसे करता है? तूने सुना है?"

श्रीधरन ने बताया "नहीं।"

उस्ताद ने कहा, "गाय की लाश को गोबर में दफनाएगा। गाय की लाश सड़ जाएगी, उस पर कीड़े पैदा हो जाएँगे। उन कीड़ों को पुरानी हाँडी में डालकर काँजी बनाकर शागिर्द को पीने की आज्ञा देगा। नया शागिर्द नाक भौं सिकोड़े तो मुखिया उसका हाथ पकड़कर कहता, "यह विद्या तुम्हें नहीं मिलेगी। जिस रास्ते से आये हो, उसी रास्ते से लौट जाओ।"

उस्ताद के कहने का मतलब माइनर को मालूम हुआ। किसी भी चीज़ से घृणा नहीं करनी चाहिए।

गोबर के कीड़े का किस्सा सुनने पर श्रीधरन को कुत्ते के पाखाने से हुई घृणा निकल गयी।

पत्थर के टुकड़ों की पुनःप्रतिष्ठा के कार्य की समाप्ति के बाद उस्ताद ने हाथ से इशारा कर माइनर को आदेश दिया, "इधर घुटनों तक का एक गड्ढा बनाओ।"

उस्ताद ने गड्ढे में पैर रखकर नाप लिया। गहराई ठीक थी।

अब इस गड्ढे को इस ढंग से पाट दो कि किसी को भी मालूम न हो कि इधर एक गड्ढा है।"

श्रीधरन ने वह काम भी सम्पन्न किया।

"अब उसी दीप-स्तम्भ पर चढ़ जाओ।" उस्ताद ने फिर आदेश दिया।

दीप-स्तम्भ पर चढ़ने के लिए श्रीधरन को बेहद तकलीफ उठानी पड़ी। पैर काँप रहे थे। पैर स्तम्भ से खिसक जाते थे। जाँघों में खून जम गया। पीड़ा भी हुई। एक-दो दफा ज़रा नीचे की तरफ खिसक गया। फिर घोरपड़ का स्मरण कर, किसी तरह चढ़कर स्तम्भ के छोर को छू लिया।

"चिराग की बाती को बढ़ाओ।" नीचे से उस्ताद ने चिल्लाकर कहा।

श्रीधरन ने मिट्टी के तेल डाले दीपक की बाती बढ़ायी। रोशनी चारों ओर फैल गयी। यों श्रीधरन ने अपनी विजय की दीवाली मनायी।

"अब नीचे उतरो।" उस्ताद ने नीचे उतरने का इशारा किया।

उस्ताद की ये सब कार्यवाइयाँ तिरुमाला की पुरानी घटना के प्रतिकार में ही सम्पन्न हो रही थीं। लेकिन श्रीधरन आश्वस्त था कि इसके फलस्वरूप कुछ नयी बातों में उसको प्रशिक्षण मिल गया है।

'काली बिल्ली' और 'छतरी की छड़ी' गुमसुम खड़े थे।

"क्या कठफोड़वा को ज़रा पुकारकर डराऊँ?"

उस्ताद ने 'हाँ' कहा। (बढ़ई की शैतान की पुकार सुनने लायक थी। सुन ले तो असली शैतान भी भाग जाये।)

बढ़ई के साथ 'काली बिल्ली' भी गया।

बाग के कोने में आधी रात शैतान की पुकार सुनकर बरामदे में लेटा कठफोड़वा डर के मारे काँपा होगा, यह दृश्य स्मरण कर श्रीधरन स्वयं हँस पड़ा।

"मुझे नींद आ रही है।" बालन ने जंभाई लेते हुए कहा।

"ऐसी बात है तो 'छतरी की छड़ी,' जाकर सो सकते हो!" उस्ताद ने अनुमति दी।

"चल, हम कुट्टिच्चात्तन को देखने चलें।"

अतिराणिप्पाटं से डेढ़ मील दूर दक्षिण दिशा में रेल की पटरियों के पास एक कुट्टिच्चात्तन कावु था। कावु के आँगन में एक बड़ा पेड़ था। शुक्रवार की आधी रात वहाँ जाकर देखें तो कभी-कभी पेड़ की एक डाल पर सिर नीचे लटकाये कुट्टिच्चात्तन को देख सकेंगे।

उस्ताद उस कुट्टिच्चात्तन के नज़दीक ही श्रीधरन को ले जा रहा था।

कावु से कुछ दूर पहुँचने पर उस्ताद ने एक पेड़ के निकट खड़े होकर श्रीधरन से कहा, "मैं यहाँ खड़ा हूँ। तू अकेले कुट्टिच्चात्तन कावु जाकर उसके सामने के पेड़ को छूकर आ।"

श्रीधरन साहस के साथ आगे बढ़ा तो उस्ताद ने अपनी जेब से लोहे की एक कील निकालकर दी।

श्रीधरन ने सोचा कि अब नयी माचिस देकर उस्ताद कहेगा कि वृक्ष पर एक छेद बनाकर माचिस की तीलियों का मसाला भरकर गोली मार दे। लेकिन उस समय उस्ताद का ऐसा कोई उद्देश्य नहीं था। कुट्टिच्चात्तन का वृक्ष अपने हाथों छू लेने की बात साबित करने के लिए ही उसने कील ठोकने की बात कही थी।

श्रीधरन कुट्टिच्चात्तन कावु की तरफ चला। आधी रात। आसमान की हलकी

रोशनी ही साथी है। चारों तरफ खामोशी। सिर तक लटकनेवाले काले-काले कुट्टिच्चात्तन के नज़दीक ही जा रहा है। छाती धड़कने लगी। लगा कि गरम भाप के बीच पड़ गया है। पाँव में कँपकँपी हो रही है। यह एक परीक्षा थी। अगर वह उसे डरपोक साबित कर दे तो फिर 'सप्पर सफर संघ' से अपना-सा मुँह लेकर निकल जाना पड़ेगा। जो भी हो, हौसले के साथ आगे बढ़ा।···कावु के नज़दीक पहुँच गया।

सांस रोककर वृक्ष पर सरसरी निगाहों से देखा, छाती तड़प उठी। पेड़ की डाल पर एक काला सत्व लटक रहा है। एक नहीं, दो हैं···'क्यांर-क्रिगर' का पैशाचिक स्वर श्रीधरन के कानों से सुनाई दिया।

समझ गया कि चमगादड़ का चीत्कार है।

डाल पर से आये उस मन्त्र ने श्रीधरन के मन का डर और आशंका दूर कर दी। नया हौसला और जोश महसूस हुआ। वह वृक्ष पर कील ठोककर एक गीत गुनगुनता हुआ उस्ताद के सामने लौट आया।

"क्या तू कुट्टिच्चात्तन कावु तक गया?" उस्ताद ने पूछा।

"हाँ, गया।"

"कुट्टिच्चात्तन को देखा।"

"नहीं।" (चमगादड़ की बात नहीं बतायी।)

"पेड़ पर कील ठोक दी?"

"हाँ।"

"तो मेरे साथ आ।"

"उस्ताद श्रीधरन को साथ लेकर कुट्टिच्चात्तन कावु में गया।

उस्ताद ने वृक्ष के नीचे देखा, कील वहाँ भिदी हुई थी। वृक्ष से कील निकाल कर वह कावु में चला। कांवु के चबूतरे के निकट एक पेटी रखी थी। उस्ताद ने पेटी उठाकर एक बार हिलायी। अन्दर कुछ नहीं था। उस्ताद ने मोहल्लेवालों को गाली दी, कुट्टिच्चात्तन की पेटी में पैसा नहीं डालें तो उनके घरों में उपद्रव-पत्थरबाजी, तबाही आदि हो जाएगी—ऐसी धमकी दी गयी थी। पर कौन सुनता है?

श्रीधरन को इसका पता लग गया कि उस्ताद ने क्यों अपने हाथ में कील रखी थी? कुट्टिच्चात्तन की पेटी खोलकर उस्ताद कभी-कभी पैसा उठाकर ले जाता था।

उस दिन कुट्टिच्चात्तन से कोई पैसा मिले बगैर हताश होकर वापस जाना पड़ा। नये अनुभवों के आवेश के साथ श्रीधरन भी कन्निप्पुरंपु लौट आया।

# 12. यक्षी

दूसरे दिन माँ ने ही श्रीधरन को पुकारकर जगाया था। नौ बज चुके थे।

"क्यों इतनी देर तक सोता है?" माँ की आवाज़ दूर से आती-सी प्रतीत हुई।

नींद से जगने पर भी खुमारी आने से चटाई पर लेट गया। पिछले दिन की घटनाएँ सपनों की तरह मस्तिष्क में रिस-रिसकर आने लगीं। यों लेटते हुए अलस होकर नीचे की तरफ निगाहें घुमायीं तो धोती के छोर पर मिट्टी दिखाई पड़ी। रात की सैर के मिट्टी और कीचड़ के निशान पैरों पर दिखाई दे रहे थे। अगर माँ इन्हें देख लेती तो…।

एस० एस० एल० सी० परीक्षा उत्तीर्ण की। पिताजी ने कालेज में भर्ती कराने का इरादा किया था। मुझे पिताजी के लिए यह त्याग करने के लिए तैयार होना चाहिए।

कालेज में भर्ती होने के लिए अभी कुछ दिन बाकी हैं। उसके पहले इलंजिपोयिल जाना है। वहाँ दसवीं कक्षा में उत्तीर्ण होने का समाचार देना है।

देहात के नाद और गन्ध के आस्वादन के लिए महीनों बीत गये।

इलंजिपोयिल जाने की अनुमति माता के ज़रिए पिताजी से मिली। और राह खर्च के लिए एक रुपया भी।

श्रीधरन को रवाना हुए ग्यारह बज गये थे। इलंजिपोयिल के नज़दीक से एक बस चलने लगी है। माँ ने बताया कि बारह बजे की बस में चले जाने पर दोपहर के भोजन के समय इलजिपोयिल में पहुँच सकता है। रुपये का सिक्का जेब में डालकर वह बाहर निकला।

पहले ही सोच लिया था कि बस में जाने की ज़रूरत नहीं है। चन्दुक्कावु की पगडंडियों से जाकर पूतप्परंपु के रास्ते को पार करना होगा। फिर वेलालूर खेत में उतरकर गाँव के दृश्यों को देखते-देखते इलंजिपोयिल पहुँचेगा।

शहर के आसपास के इलाकों को पार कर वह चन्दुक्कावु की पगडंडियों पर पहुँचा। वहाँ के कोरु नायर की चाय की दुकान से चाय और पकवान खाने-पीने के बाद जरा आराम किया। उसके बाद फिर चलने लगा। पूतप्परंपु की पगडंडी पर पहुँचने पर दोपहर हो गयी थी।

पत्थरों और दीवारों से बाहर निकली बड़ी जड़ों से भरी इन पगडंडियों को पार करने के लिए अधिक मेहनत करनी होगी। उस जहन्नुम के गड्ढे को पार कर हाँफते हुए पूतप्परंपु के दक्षिण-पश्चिमी कोने की ऊँची जगह पर पहुँच गया। चारों तरफ का मुआइना कर थोड़ी देर वहाँ खड़ा रहा। सामने एक मायालोक था।

स्मरण किया कि किसी ने कहीं लिखा है कि स्वर्ग का रास्ता कांटों और पत्थरों से भरा हुआ है। जो भी हो जिसने यह बात कही वह जरूर महान है। दूर पूर्व दिशा में नीले पहाड़ों का निशाना मध्याह्न के आवरण में अव्यक्त होकर दिखाई दे रहा था।

दो-तीन मील विस्तृत एक जगह है पूतप्परंपु। मैदानों, घास भरी जगहों कहीं-कहीं झाड़ियों, काली चट्टानों, ताड़ के पेड़ों से हिल-मिलकर रहने वाला पूतप्परंपु उस धूप की ज्वाला में शवदाह करने वाले श्मशान की तरह दिखाई पड़ा।

मुरझायी घास और ककड़ियों से भरी हुई पगडंडी से श्रीधरन उत्तर दिशा की तरफ चला। अचानक श्रीधरन की निगाह अचरज से फैल गयी। एक ओर रंग विरंगी कालीन बिछी होने का-सा मोहक दृश्य—फूलों का विस्तार देख वह मुग्ध हो गया।

वे तो बस्ती के फूल नहीं हैं। विदेशी किस्म के रंग-बिरंगे फूल हैं। सालों पहले किसी गोरे ने विदेश से कुछ बीज लाकर पूतप्परंपु की जमीन में डाल दिये थे। वे उगकर बड़े होने के बाद फूले हैं। इस तरह उस जगह पर ये पौधे बढ़ने और फूलने लगे। गाढ़े नीले रंग के ये मयूर मुस्काते फूल चट्टानों से भरी हुई जमीन पर रंग-बिरंगे दृश्य उपस्थिति करते।

इन कालीनों में क्या यक्षी आराम करती होगी? उसकी संभावना तो नहीं है।

भूतप्रेत और यक्षी। उनकी पुरानी लीलाभूमि नहीं है आज का पूतप्परंपु। चार मील दूर स्थित कारक्कुन्नु बैरक्स के गोरे सिपाही निशाना लगाने का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए पूतप्परंपु में आते थे। एक मैदान के कोने की ऊँची दीवार के पीछे से ऊँचाई पर दिखाई देने वाले बैलों की आँखों को लक्ष्य कर सिपाही तीन-चार सौ गज दूर से जमीन पर लेटकर गोली मारने लगते हैं। गोली मारने की आवाज़ और बारूद की बदबू से तंग आकर ये यक्षी और भूतप्रेत यह जगह छोड़कर चले गये होंगे…। गोरों ने यहाँ एक विनोद-केन्द्र की भी स्थापना की थी। पूतप्परंपु के चारों तरफ सम-दूर में केकड़ों के बिलों की तरह गड्ढा बनाकर उसमें चिड़ियों के अण्डों की-सी गेंद डालते। एक लोहे की छड़ कन्धे पर रखकर उड़ाये गये गेंद के पीछे हौले से चलते गोरों को देखकर हँसी आ जाती। गोरों के इस गेंद के खेल का नाम 'गोल्फ' है।

पर ये सब दिन की कहानियाँ हैं। रात होने पर दृश्य बदलने लगते। पूतप्परंपु फिर भूत-प्रेतों और यक्षियों की लीलाभूमि में बदल जाता। तार के पेड़ों से यक्षी नीचे उतरने लगती। पूतप्परंपु के नजदीक से जाने वाले राहियों को प्रलोभन देकर लाती। फिर बेचारों को ताड़ के पत्तों पर चढ़ाती। (आधी बेहोशी की हालत में इन राहियों को ताड़ के पेड़ महल की तरह ही दिखाई देते।)

दूसरे दिन ताड़ के पेड़ के नीचे एक लाश दिखाई देती···उसका खून यक्षी ने पी लिया होता।

अप्पु की एक कथा की याद श्रीधरन के मन में ताज़ा हो गयी।

एक दिन तड़के ही परंगोटन बढ़ई काम करने जा रहा था। पूतप्परंपु के कोने में पहुँचने पर उसने चीत्कार सुना। चारों तरफ़ का मुआइना किया। कोई भी दिखाई नहीं पड़ा। फिर ध्यान देने पर लगा कि रुलाई ऊपर से ही आ रही है। देखते ही अचरज हुआ। इयंगोट्टुमना का बुजुर्ग शंकरन नंपूतिरि ताड़ के ऊपर सिर्फ़ एक लंगोटी पहनकर बैठा था। उसने अपनी धोती उतारकर ताड़ के पत्तों से अपने को बाँध लिया था। चक्कर खाकर गिरने से बचने के लिए ही उसने ऐसा किया था।

रात को पूतप्परंपु की यक्षी ने ही उसे ऐसी तकलीफ़ दी थी। नंपूतिरि की कमर में एक यन्त्र बँधा था। इसलिए यक्षी उसका शरीर छू नहीं सकी। यों वह भारी खतरे से बाल-बाल बच गया।

पूतप्परंपु के कुख्यात कुट्टिच्चात्तन के बारे में एक दफा पाणन कणारन ने जो कुछ बताया था, श्रीधरन के मस्तिष्क में उसका स्मरण ताज़ा हो गया। एक गोलाकार धागे की तरह वह रास्ते में लेटता। उसके ऊपर कोई पैर से मारे तो उसको सामने की विस्तृत जगह पगडंडी की तरह मालूम देती और वह विशाल पूतप्परंपु के चारों ओर चक्कर लगाने लगता है। छोटी-सी वह वस्तु भी हिल-डुलकर आगे-आगे चलने लगती।

पूतप्परंपु की उन अलौकिक घटनाओं पर विचार करने पर श्रीधरन के मन में एक अज्ञात भय होने लगा। उसको इस बात से भय होने लगा कि वह अकेले ही इस पथ पर पहले-पहल सफर कर रहा है। सुना था कि यक्षी और भूत-प्रेत कभी-कभी दोपहर को भी चलने लगते। धत्! सब कुछ अन्धविश्वास ही है। कुछ अर्सा पहले कुट्टिच्चात्तन का नाम सुनते ही डर लगने लगता था। कल रात उस्ताद वासु के साथ जाने पर कुट्टिच्चात्तन को चमगादड़ के रूप में पहचाना। (झट श्रीधरन के मस्तिष्क में नया विचार पैदा हो गया। दरअसल कल उस पेड़ पर कुट्टिच्चात्तन अपना वेश बदलकर खड़ा हुआ होगा। नहीं, कुट्टिच्चात्तन नाम की कोई वस्तु है ही नहीं। कुट्टिच्चात्तन होता तो क्या अपने पैसे की चोरी करनेवाले वासु को यों हीं छोड़ देता?

कैसी सुनसान जगह है! कोई प्राणी दिखाई नहीं पड़ता—चींटी तक नहीं। हवा भी नहीं है।

लम्बे पैरोंवाली भूसे के-से रंग की एक बदसूरत चिड़िया इधर दिखाई देती थी। उस पक्षी के बारे में अप्पु की कहानी याद की। वह चिड़िया रात में अपने पैरों को ऊपर उठाकर ही सोती है। अचानक आसमान नीचे गिर जाय तो अपने

पैरों से उसे रोकने के लिए ही वह ऐसा करती है। लोग उसे आसमान को रोकने-वाली चिड़िया के नाम से पुकारते हैं।

क्या वह चिड़िया भी पूतप्परंपु की उपेक्षा कर कहीं उड़ गयी है?

घास-फूस, कंकड़ियाँ और बीच-बीच में काली चट्टानों से भरी ऊँची-नीची जगहों को पार कर श्रीधरन तालाब के पास पहुँच गया।

पूतप्परंपु में तालाब किसी इन्सान ने नहीं बनाया था। हज़ारों वर्ष पहले कई भूतों ने एक रात समुद्र को पाटकर पूतप्परंपु बनाया था। सभी जगहों को पाटने से पहले सुबह हो गयी। समुद्र की बची-खुची जगह आज भी तालाब के रूप में दर्शनीय है।

पुराने लोगों का कहना है कि समुद्र की एक-दो मछलियाँ आज भी इस तालाब में रहती हैं।

शताब्दियों से यह तालाब सूखकर कम होता जा रहा है। कई बड़े-बड़े वृक्ष इधर-उधर खड़े हो गये हैं।

वृक्षों के नीचे ठण्डापन है। कड़ी धूप के समय पेड़ों की हरी पत्तियों में अधिक कान्ति दिखाई देती है।

श्रीधरन ने एक वृक्ष के निकट खड़े होकर तालाब की तरफ़ निगाहें घुमायीं। सूखे तालाब का जल आइने की तरह चमक रहा है। गर्मी की ज्वाला और भाप का हल्का-सा पर्दा जल के ऊपर संचरणशील प्रतिभास को जन्म देता है। उसे देखने पर लगता है कि किसी मांत्रिक से फेंकी हुई भस्म इधर-उधर उड़ रही है।

निकटवर्ती किनारे के उस पार के कोने की तरफ़ श्रीधरन ने नज़रें डालीं। वहाँ कमरे के बरामदे में 'एक' बैठी हुई है।

(वह छोटा घर गोल्फ के खिलाड़ियों ने अपने सामान को सुरक्षित रखने के लिए तालाब के पास के ताड़ के जंगल में बनाया था।)

एक गोरा-सा चेहरा। वक्ष पर लटकी हुई केशराशि।

श्रीधरन एकदम सिहर उठा। आँख मूँदकर फिर एक बार चमकने वाले जल के ऊपर से उस तरफ़ दृष्टि दौड़ाई।

उस चेहरे का रंग चाँदनी का-सा था। इस तरह का खूबसूरत चेहरा इस दुनिया में पहले नहीं देखा था। दोनों कन्धों पर खुले छूटे बाल काले-नीले रेशम की तरह चमक रहे थे। जरा झुककर आँखें मूँदने की मुद्रा में वह लेटी है।

दोपहर की गर्मी की शिथिलता के कारण ऐसा लग रहा है या यह आँखों के सामने की सच्चाई है?

लहरों की प्रतिच्छाया की तरह क्या 'वह' स्वयं हिल रही है?

उसने मुझे देखा नहीं होगा। लेकिन संभव है कि अगले क्षण वह तालाब में या ताड़ के ऊपर अन्तर्धान हो जाए।

दोपहर को, सभी प्राणियों से अलग, समुद्र के उस प्राचीन किनारे पर वह अकेली है। मुझे तुरन्त अपने को बचाना है।

उसे फिर एक बार देखने का हौसला नहीं हुआ। सिर झुकाकर कदम पीछे हटाने की चेष्टा की। पैरों में कंपन-सा महसूस हुआ। किसी तरह पैरों को खींचकर चला। नहीं मालूम कि चला या उड़ भागा।

आँखों में धुँधलका छा रहा है। वह अन्धकार पीले में बदलने लगता है। सामने का मैदान, घास-फूस, चट्टान और झाड़ियाँ किसी मांत्रिक के पीले धुएँ में ढकने लगे।

पीछे मुड़कर देखे बिना एक बड़े बोझ को ढोती हुआ-सी वह आगे बढ़ रही है। ज़मीन काँपने लगी। क्या 'वह' भी पीछे आ रही है? फिर मालूम हुआ कि पूतप्परंपु की ज़मीन कहीं-कहीं पैर लगते ही काँपने लगती है। पुराने ज़माने में समुद्र को पाटकर ही इसे बनाया गया था न।

मन में वह दृश्य चुभ गया। चाँदनी के रंग में अतुल सौन्दर्य में ढला हुआ चेहरा! दोनों कन्धों से छाती पर बाल लटक रहे हैं। वह चेहरा और बालों से ढकी छाती के अलावा झुरमुट के कारण उसका निचला भाग दिखलाई नहीं देता।

मेंड़ की उत्तर दिशा के चट्टानों से ढके कोने से वेलालूर की पाताल गुफा के कोने में पहुँचने पर सौ मील दौड़ने-जैसी थकावट और शिथिलता महसूस हुई।

पगडंडियों के बड़े पत्थरों और पानी के कारण बने गड्ढों को पार कर धीरे-धीरे उस पार की पगडंडियों में पहुँचने पर कुछ तसल्ली हुई। जरा मुड़कर देखा। वह मेरा पीछा कर रही है। गौर से देखने पर वह एक गाय में बदल गयी। उस समय राहत नहीं, बल्कि ज्यादा बेचैनी महसूस हुई।

वेलालूर खेत को पार कर इलंजिपोयिल पहुँचने के लिए खेत के रास्ते से डेढ़ मील चलना होगा।

कटाई के बाद का खेत सूखे समुद्र की नाईं सामने असीम होकर फैला हुआ है।

एक बड़ी मछली की हड्डियाँ इधर ही आ रही हैं। नज़दीक पहुँचने पर वे बाँस के टुकड़े हो गयीं। एक हरिजन बाड़ बनाने के लिए बाँस के टुकड़ों और काँटे-दार पौधों को सिर पर ढोकर आ रहा था।

श्रीधरन को उसकी हलकी-सी याद है उसके बाद तो वह इलंजिपोयिल के दरवाजे में पहुँचते ही बरामदे में गिर पड़ा था।

फिर तीन-चार दिन तक उसने जो कहा, जो बीता, उसकी उसे याद नहीं है। पर, कुछ घटनाओं की हलकी-सी याद है। वह इसका अन्दाज नहीं लगा सका कि कुछ दृश्य सपने थे या मात्र कल्पना या फिर वे यथार्थ थे। कठिन ज्वर से पीड़ित इन दिनों में गरम भाप से भरे अँधेरे कमरे में फँसने का-सा अनुभव हुआ था।

फिर इन सब बातों के बारे में अप्पु ने ही श्रीधरन से कहा था। श्रीधरन की

शुश्रूषा में अप्पु हमेशा उसके नजदीक बैठा रहता था। श्रीधरन ने क्या-क्या बकवासें की थीं—अप्पु हँसते हुए कहना शुरू करता :

'ताड़ के ऊपर है। मुझे नीचे उतरने दो।' कहकर ज़ोर से चिल्लाया था। और फिर 'यक्षी-यक्षी' कहकर चटाई से उठकर दौड़ने की कोशिश करने पर अप्पु ने ही उसको रोक लिया था।

कोरुप्पणिक्कर के घर जाकर मामा ने ज्योतिष विद्या पूछी थीं। पणिक्कर ने बताया था कि ब्रह्मराक्षस ही उसे तंग कर रहा है। धोबी कोप्पुण्णि को लेजाकर उसने मन्त्र-जप किया एक धागा बाँध दिया था। रात को फिर होम किया। वेलन शंकरन वैद्य ने जाँच करने के बाद काढ़ा और गोली लिखी। अप्पु ने इन ढेर सारी बातों का वर्णन किया तो श्रीधरन को बड़ी शरम आयी। धोबी ने कलाई मे जो धागा बाँधा था, वह एक शिशु की तरह वहाँ ही पड़ा हुआ था।

"श्रीधरन ने एक बार ज़ोर से 'नारायणी' पुकारा था।" अप्पु ने भर्राई आवाज़ में कहा।

नारायणी! नारायणी! थोड़ी देर उस दृश्य की याद कर मन में कुछ उभर आया :

पूतप्परंपु के महासमुद्र में श्रीधरन एक बड़ी मछली की पीठ पर चढ़कर सवारी कर रहा था। तभी ऊँचे ताड़ के पेड़ों के नज़दीक के नालों में तैरनेवाली एक मत्स्य-कन्या ने अपने मोती-जैसे दाँतों से मुस्कराते हुए श्रीधरन को पुकारा। नजदीक पहुँचने पर देखा कि मत्स्यकन्या नारायणी थी।

उत्कंठा और शरम से भरे लहजे में श्रीधरन ने अप्पु से पूछा, "नारायणी की बीमारी का क्या हाल है?"

अप्पु ने श्रीधरन के चेहरे की तरफ आँखें फाड़कर देखा। एक मिनट की चुप्पी के बाद अप्पु की आँखें भर आयीं। दूर देखते हुए अप्पु ने कहा, "पिछले साल वैसाख में नारायणी चल बसी। श्रावण में माँ का भी निधन हो गया।"

नारायणी की मृत्यु हो गयी—यह सुनकर श्रीधरन चौंका नहीं। उसका मस्तिष्क गरम हो गया। नारायणी एक सोने का सपना थी। वह सपना अन्तर्धान हो गया। सोने के सपनों की मृत्यु नहीं होती है। वे स्मृति में हमेशा जियेंगे।

फिर उसने अप्पु से कुछ नहीं पूछा। बुखार दूर होने के दो-तीन दिन बाद श्रीधरन ने कन्निप्परंपु में लौटने का निश्चय किया।

अपना कर्त्तव्य न निभा पाने के कारण पछतावा और एक अज्ञात अपराध-बोध श्रीधरन के मन को व्यथित कर रहा था। नारायणी को जिन्दगी में सिर्फ एक ही बार देखा था। उस लड़की से मिलने की साध को मन में ही दबाकर रखा था। प्रथम दर्शन से ही मन में यह विचार उठा था कि नारायणी अलौकिक है। किसी यक्षी से मुलाकात करने के क्षण में मन में जिस तरह की सिहरन होती, उसी तरह

की कँपकँपी नारायणी से मुलाकात करने का विचार उठते ही श्रीधरन को होती थी। इसी भय ने श्रीधरन को रोक दिया था। अब यह भय नहीं रहेगा। यह सांत्वना तो मिलती ही कि मृत्यु के बाद वह वहाँ मिलने गया था।

उस दिन शाम को वह अप्पु के साथ टीले की तराई में बने उसके घर पहुँच गया।

आँगन के जासौन में दो-तीन फूल ही थे। पहले तो पौधा फूलों से भरा था! क्या वह सूख रहा है? अहाते में मौलसिरी के फूल गिरे पड़े थे। लेकिन उन्हें एकत्रित कर माला पिरोने के लिए वहाँ कोई नहीं था। लगता है, वहाँ झाड़ू दिये महीनों बीत गये हैं।

कुछ अर्से पहले का उस आँगन के कोनेवाला बकरी का घर कहाँ गया? उस जगह रेशों को डाल दिया गया था।

घर बन्द कर रखा था। अप्पु वहाँ अकेला ही रहता है। उसका बाप बैल-गाड़ीवाला तैय्यन उधर मुड़कर भी नहीं देखता।

अप्पु अपने पिता को 'वह-वह' ही कहता। उसके पिता ने वयनाट की अपनी पुरानी पत्नी को छोड़कर अब पापड़ बनानेवाली एक विधवा चेट्टिच्चि से शादी की है।

अप्पु श्रीधरन को दक्षिणी अहाते में ले गया। अप्पु की माँ का दाहकर्म उस अहाते में ही सम्पन्न हुआ था। नारायणी को वहीं अमरूद के पेड़ के पीछे ही जला दिया था। पेड़ पर स्वर्ण वर्ण के फल लटक रहे थे।

श्रीधरन ने नारायणी की लाश जलाने की जगह पर सहानुभूति से दृष्टि डाली। मिट्टी के उस ढेर में कुछ फूल खिले थे! लगा कि फूलों के बहाने नारायणी ही मुस्करा रही है।

"श्रीधरन को अमरूद चाहिए?" अप्पु ने पूछा।

श्रीधरन ने 'नहीं' के अर्थ में सिर हिलाया। श्रीधरन को लगा कि उस मिट्टी के ढेर से नारायणी की वे मीठी बातें गूंज रही हैं। "अप्पु भैया, हमारे मेहमान को अमरूद तोड़कर दे दो।"

"अच्छा तो दो-तीन तोड़ दो। चख ही लूं जरा।" श्रीधरन ने उस मिट्टी के ढेर से नजरें हटाये बिना कहा।

अप्पु ज्यों ही पेड़ पर चढ़कर फल तोड़ने लगा तो श्रीधरन ने पूछा, "ये सब पककर नीचे गिर जाते थे क्या?"

"नहीं" अप्पु ने कहा। उन्हें तोड़कर टोकरी में भरकर बाजार में ले जाकर बेचता था। पिछले महीने इस पेड़ के अमरूद बेचकर चार रुपये मिले थे। अब एक भी अमरूद चमगादड़ नहीं छूती। नारायणी नीचे पहरा देकर उन्हें भगा देती होगी...।"

झुकी हुई निगाहें !···चिरक्करा का वही सत्व ! बैठने की वही अदा ! लेकिन आज पूरा रूप दिखाई दिया। काली-सी एक धोती पहने थी। सोने के रंग-जैसे पैर साफ दिखाई दे रहे थे।

झोंपड़ी के बरामदे में स्वर्ण विग्रह से आँखें हटाये बिना सकपका कर खड़े श्रीधरन को देखकर हँसते हुए अप्पु ने कहा, "कारक्कुन्नु के गोरों तथा एक हरिजन स्त्री से इसका जन्म हुआ था।"

"अरे, बच्चू, काँजी पी ले।" यक्षी फुसफुसायी।

(आँगन में खेलने वाले कुट्टिच्चात्तन-जैसे एक छोकरे से ही वह कह रही थी। आँखों और चेहरे को हटाये बिना ही उसी 'पोज़' में बैठी वह बाँस के टुकड़ों से टोकरी बना रही थी।)

"इस तरह की एक और युवती यहाँ थी। पिछले साल मद्रास का एक हरिजन युवक उसको ब्याह कर ले गया।" पीछे से अप्पु ने बताया।

'उसने' ज़रा चेहरा ऊपर उठाकर श्रीधरन की तरफ़ देखा। श्रीधरन बेहद डर गया। वह कानी थी। सफेद पत्थर-सी एक आँख ! कैसी पैशाचिक दृष्टि है उसकी !

तभी आँगन के काले-कलूटे उस छोकरे ने कुछ बकते हुए दरवाज़े की तरफ इशारा किया। श्रीधरन ने उधर दरवाज़े की तरफ देखा। एक बड़ी गाय की फूली हुई लाश के पैरों को एक मज़बूत बाँस में बाँधकर कन्धे पर ढोते हुए दो हरिजन बस्ती में आ रहे थे।

"इन लोगों के लिए आज बड़ा त्योहार है।" अप्पु ने नफरत के साथ कहा। "गायों की लाश खाने वाले शैतान !" अप्पु ने घृणा भाव से थूक दिया।

स्मरण करते ही श्रीधरन को भी उबकाई आ गयी। दोनों तेज़ चलने लगे।

हरिजन बस्ती के कोने की मेंड पर चढ़कर दोनों पूतप्परंपु के ऊपर पहुँच गये। चिरक्करा के नाले, ऊँचे ताड़ वृक्ष, गोरों की गोली मारने की दीवारें कुछ दूर पर दिखाई देती थी।

"श्रीधरन, चुप क्यों हो गया ?" पीछे से अप्पु ने पूछा।

चिरक्करा के ताड़ के जंगलों के एक छोटे घर के बरामदे में बैठकर सिर झुकानेवाली यक्षी और झोंपड़ी के बरामदे में टोकरी बनाने और गाय की लाश खानेवाली उस हरिजन युवती के बारे में श्रीधरन सोच रहा था। पूतप्परंपु में गोरों के बीजों से जन्मे कई पौधों के फूलों की कालीन उसकी स्मृति में प्रत्यक्ष हो गयी।

अपने मन में नाचने वाले अद्भुत दृश्यों को कैसे अप्पु को समझाऊँ ? चुप्पी छोड़कर कुछ न कुछ बोलने के ख्याल से श्रीधरन ने अप्पु से पूछा, "अरे, हम चिरक्करा का रास्ता छोड़कर इस टेढ़े मार्ग से क्यों आये ?"

अप्पु ने कुछ निगलने की मुद्रा में आसमान की तरफ ताककर स्वगत की तरह कहा, "चिरक्करा के ताड़ के जंगल उतनी अच्छी जगह नहीं हैं···।"

## खण्ड : तीन

## 1. पंख और सोना

"कैलासेशन पार्वतियेप्पाणिग्रहणं चेटयेन्नाकिल
कैलासायिप्पोय नमुक्कु कण्णीरोप्पुवान······"

श्रीधरन ने इन पंक्तियों को दुबारा पढ़ा। सभी देव ब्रह्मा के पास जाकर अपने दुःख के निपटारे का मार्ग पूछ रहे थे। इन्होंने निर्देश दिया कि शिवजी यदि पार्वती का वरण कर लें तो सारी झंझटों से छुटकारा मिल जायेगा। कविता का नाम पहले ही लिख डाला था 'मदन-विभूति'।

लगा कि उल्लूर की काव्य-शैली का यूक्लिप्टिस तेल ज़रा इस 'कैलेस' (टवल) में लिपट गया है। (उल्लूर का एक काव्य-संग्रह कॉलेज की पाठ्य-पुस्तकों में है।) कोई परवाह नहीं। अगली पंक्ति लिखने लगा।

"दुष्टासुर विक्रियंकल विस्तरिच्चु केट्टनेरं
अष्ट दृष्टि महादेवन·················"

तभी पीछे आइने से दो आँखें इस कविता की नोटबुक के क़रीब आ रही थीं। श्रीधरन आँखें मूँदकर 'अष्ट दृष्टि महादेव' के शेष अंश की रचना करने की उतावली में था।

कृष्णन मास्टर गृहपाठ पढ़नेवाले अपने बेटे को देखने चुपचाप ऊपर की सीढ़ियाँ चढकर बरामदे में आये थे।

ब्रह्मा के बदले पिताजी के प्रत्यक्ष होने पर श्रीधरन सकपकाया। घबराकर उसने अपनी नोटबुक मेज़ पर छिपाने की व्यर्थ कोशिश की।

"अरे, तू गूँगे के गुड़ खाने-जैसा क्या कर रहा है ?" कृष्णन मास्टर ने नोटबुक उठाकर उसके पन्ने उलटे। पूरी कापी में कविताएँ लिखी हुई थीं।

"कॉलेज के पाठों को न पढ़कर क्या यही काम करता रहता है ?" कृष्णन मास्टर ने अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए पूछा। "क्या केकड़ा गोविन्दन बनने की इच्छा है ?"

जली-कटी बातें वह बर्दाश्त कर सकता है। मार भी सह लेता, लेकिन पिताजी का केकड़ा गोविन्दन से उसकी तुलना करना उसे असहनीय लगा।

श्रीधरन की कविता की कापी ज़ब्त करने के बाद मास्टर ने पूछा, "तू अपना

सारा होमवर्क कर चुका ?"

श्रीधरन ने धीमी आवाज़ में 'हाँ' कहा।

"ज़रा अर्थमेटिक होमवर्क तो दिखा !"

श्रीधरन चुप रहा।

"क्यों, चुप रह गया ? ज़रा अपना गणित तो दिखा !"

"गणित नहीं किया।" श्रीधरन सिर झुकाते हुए बोला।

"क्यों नहीं किया ? तूने बताया कि सारा होमवर्क कर लिया है। क्या यह झूठ नहीं है ?"

'झूठ नहीं है। मैथमेटिक्स टैक्स्ट न होने के कारण गणित का कार्य नहीं कर सका था।"

श्रीधरन ने जो कहा वह अप्रिय सत्य है। मैथमेटिक्स टैक्स्ट नहीं खरीदा है। पिताजी को उसे खरीद देने की बात वह जान-बूझकर ही टालता रहा है।

श्रीधरन के दो बड़े दुश्मनों में एक है मैथमेटिक्स। (दूसरी आसमान की चील है।) पुस्तक तो हाथ में नहीं है, इसलिए गणित का हिसाब करने की जरूरत भी नहीं। उसे मालूम है कि यह न्यायसंगत आत्म-वंचना है। लेकिन अपने पक्ष में भी कुछ दलीलें पेश करनी हैं। पिताजी की हठ के कारण ही कॉलेज में फिजिक्स, केमिस्ट्री और मैथमेटिक्स ग्रुप चुन लिया था। इनमें सिर्फ केमिस्ट्री में कुछ ही कुछ दिलचस्पी थी। कॉलेज के गणित-विभाग के प्राध्यापक रंगनाथ अय्यंगर की क्लास में 'टान्त्रण्ट', 'कोट्टांत्रण्टु' का उच्चारण करते समय श्रीधरन को ऐसा लगता था जैसे किसी दुष्ट मांत्रिक के सामने खड़ा हो।

कृष्णन मास्टर थोड़ी देर दाढ़ी सहलाते हुए सोचते रहे। फिर सिर हिलाते हुए कहा, "ऐसी बात है तो तू मेरे साथ आ। आज ही कुनिक्कोरन की दुकान से पुस्तक खरीद दूँगा।"

कृष्णन मास्टर को शहर जाना है। हाषीम मुंशी से कलेक्टर साहब को एक अर्ज़ी लिखानी है।

मास्टर और श्रीधरन के शहर रवाना होते समय श्रीधरन की माँ हाथ में एक पुराने कपड़े की गाँठ लेकर आयी। कृष्णन मास्टर ने हँसते हुए गाँठ ले ली और अपने कोट के अन्दर की जेब में डाल ली।

"जैसी बतायीं, वैसी ही चूड़ी चाहिए।" माँ ने श्रीधरन के पिताजी को स्मरण कराया।

श्रीधरन को बात पकड़ में आ गयी। उस कपड़े की गाँठ में माँ के सोने के पुराने आभूषण थे। पुराने फैशन की जगह नये फैशन के आभूषण बनवाने हैं। माँ ने कई बार पिताजी को इस बात की याद दिलायी थी। पर शहर जाकर वे अब तक वह काम नहीं कर सके थे।

श्रीधरन की किताब, हाषीम मुंशी से पिट्टीशन, कुटीमालु-अम्मा की चूड़ियाँ—इन तीन कार्यक्रमों को मन में रखकर कृष्णन मास्टर श्रीधरन को साथ लेकर चले थे।

'के. के. बुक डिपो' गली का प्रधान पुस्तक-विक्रेता है।

के. के. बुक डिपो का व्यवस्थापक कुंजिक्कोरण का पुराना इतिहास एक बार बाबूजी ने बताया था, उसकी याद श्रीधरन के मन में ताजा है।

बीस साल पहले इलंजिपोयिल की एक नौकरानी मान्नु की एक मात्र सन्तान था कुंजिक्कोरन। मान्नु एक लाचार विधवा थी। इलंजिपोयिल की गायें चराकर, रसोईघर का खा-पीकर ही कुंजिक्कोरन पला था। काला अक्षर भैंस बराबर होने पर भी कुजिक्कोरन अकलमंद था। जब उसकी उम्र बारह की थी; वह नौकरी की तलाश में शहर में जाकर मारा-मारा फिरने लगा था। शहर का एक बुक डिपो एक कोंगिणी का था। बुक डिपो के निकट एक प्रेस भी थी। कोंगिणी की रूलिंग मशीन में उसको नौकरी मिल गयी। दिन में दो आने पारिश्रमिक मिलता था।

कुंजिक्कोरन कोंगिणी की संस्था में काम करने लगा। उसको रूलिंग पहिये से बाइण्डिग सेक्शन में तरक्की मिली। फिर वहाँ से प्रेस में भी। इस तरह पाँच-छह सालों तक वहाँ के सभी कार्यों में उसे अच्छा प्रशिक्षण मिला। इतना ही नहीं, वह कोंगिणी का वफादार सेवक भी बन गया था।

कुछ अर्से बाद गली के पीछे की एक पगडंडी के कोनेवाले एक खाली कमरे में कोमट्टि नाम का एक आदमी आया। उसने कुंजिक्कोरन को प्रभावित कर लिया।

कोंगिणी की पुस्तक की दुकान से बाउण्ड लैजर और पाठ्य-पुस्तकें कोमट्टि के यहाँ गुप्त रूप में पहुँचने लगीं। उसके बाद रूलिंग, बाइण्डिग मशीनों का प्रयाण भी शुरू हो गया। इस तरह एक साल के अन्दर कोमट्टि का कमरा भर गया।

गली के बीच एक नयी किताब की दुकान प्रकट हुई।

व्यापार की तबाही के बाद बेचारा कोंगिणी कहीं चला गया।

कोमट्टि की दुकान शहर की प्रधान दुकान में तबदील हो गयी।

इस तरह तीन-चार बरस बीत गये। धीरे-धीरे कोमट्टि को वहाँ उचित स्थान भी मिल गया। लेकिन बाहर के किसी व्यक्ति को मालूम नहीं हुआ कि वहाँ भीतर ही भीतर क्या घटित हुआ। आखिर कुछ पैसे देकर कोमट्टि को बाहर निकाल दिया गया। वहाँ 'के. के. बुक डिपो' का बोर्ड लटकाया गया। इस संस्था को कुंजिक्कोरन ने अपनाया।

श्रीधरन के पिताजी ने संक्षेप में यह इतिहास इस तरह बताया: "कोमट्टि और कंजिक्कोरन एक साथ मिलकर कोंगिणी को निगल गये। फिर कुंजिक्कोरन

ने कामट्टि को निगल लिया। अब कुंजिक्कोरन को निगलने के लिए कोई और चतुर कहीं छिपा होगा।" जब कृष्णन मास्टर और श्रीधरन के. के. बुक डिपो में चढ़े, तो मालिक कुंजिक्कोरन नुकीली पेन्सिल को अपने कान से हटाकर नीचे रख बड़े अदब से हँस पड़ा।

कुंजिक्कोरन एक हट्टा-कट्टा और काला-कलूटा मध्य वयस्क आदमी है। उसका दाँत निपोरना ऐसा लगता है कि काली हाँडी के बीच से नारियल का एक टुकड़ा बाहर निकाल आया हो।

मैथमेटिक्स टेस्ट बुक उसने श्रीधरन के हाथों में थमा दी। दाम बारह आने था। गिनकर लेने के बाद उसने उसे दिया। फिर कुछ सोचने लगा। (शायद पुराने ज़माने में इलंजिपोयिल में खाये हुए भूसे की याद आ गई होगी।) फिर दो आने लौटा दिये।

नयी छपी हुई पुस्तक हाथ में आने पर उसे खोलकर सूँघने की आदत कालेज में पहुँचने पर भी श्रीधरन ने नहीं छोड़ी थी। सड़क पर पहुँचते ही पुस्तक की गाँठ खोलकर उसने आँखें मुँदकर उसे सूंघा। नये कागज़ और छपाई की स्याही की गंध लेकर तृप्ति हो गयी। फिर उसने यहाँ-वहाँ पृष्ठों को उलटा। उसमें छपे अंकों, चिह्नों, और कुदालों को देखकर— इन सब को रटने की चिन्ता से श्रीधरन को उलटी-सी महसूस हुई।

अदालत के नज़ीदक गली के कोने में पुरानी दुकान के एक कमरे में एक बोर्ड दिखायी दिया—"यहाँ अर्ज़ियाँ तैयार की जाती हैं।"

हाषीम मुंशी के दफ्तर का कमरा था।

हाषीम मुंशी शहर-भर में विख्यात मान्य व्यक्ति हैं। उनको पुरानी नौकरी के इतिहास ने ही इतना मशहूर बना दिया था।

कई वर्षों पहले हाषीम अदालत का नौकर था। वह अपने काम में नेक और ईमानदार था। लेकिन वह अपने अफ़सरों से भी, चाहे वह गोरा कलक्टर ही क्यों न हो, बहस करने लगता जब उसे लगता कि उसकी बातों में सच्चाई नहीं है। उसके कई दोस्तों ने सलाह दी कि इस बर्ताव से नौकरी की तरक्की में ही नहीं, अपने अस्तित्व के लिए भी खतरा पैदा हो जाएगा। हाषीम ने बड़े हौसले से मित्रों को जवाब दिया था—मैं जब तक अपना काम नेकी से करता हूँ तब तक मुझे अधिकारियों से डरने की जरूरत ही क्या है?

ऊँचे अफ़सर ताक में बैठे थे।

एक बार हाषीम द्वारा खज़ाने में अदा की गयी रक़म में एक पैसे की कमी दिखाई दी। सिर्फ़ एक पैसे की ही कमी थी। हिसाब में सौ रुपये की कमी हो, या एक पैसे की वह अपहरण ही समझा जाएगा।

हाषीम के विरुद्ध जाँच करने के लिए उसे नौकरी से मुअत्तल कर दिया गया।

हाषीम बहस करने को तैयार नहीं हुआ। उसने ग़लती कबूल की और लिख दिया कि माफ़ी माँगने की मंशा नहीं है।

इस तरह हाषीम को नौकरी से हाथ धोना पड़ा।

अगले दिन ही हाषीम ने अदालत के निकट गली का एक मकान किराये पर लिया। वहाँ एक बोर्ड लटका दिया। यों वह अर्ज़ी लिखनेवाला हाषीम मुंशी बन गया।

सरकारी नौकर रहते उसको जो तनख्वाह मिलती थी, उससे दुगनी आय अब उसको प्रतिमास होती थी। हाषीम मुंशी द्वारा अँग्रेज़ी में तैयार की गई अर्ज़ियों को पढ़कर अँग्रेज़ कलक्टर भी ताज्जुब में पड़ गया था।

अच्छी शैली में वह सही बातें ही लिखता। अर्ज़ी में एक भी ऐसा शब्द नही होता जो फालतू हो।

अच्छी शैली की अँग्रेज़ी कृष्णन मास्टर भी लिख सकता है। लेकिन अदालत से कोई सम्बन्ध न होने के कारण अदालत के सामने रखी जानेवाली अर्ज़ी का ढंग और प्रतिपादन-रीति उसे मालूम नहीं थी। इसलिए कलक्टर साहब की अर्ज़ी तैयार करने के लिए हाषीम मुंशी की सहायता लेनी पड़ी थी।

सँकरी सीढ़ियाँ चढ़कर कृष्णन मास्टर और श्रीधरन हाषीम मुंशी के मकान में पहुँच गये। मुंशी सामने खड़े एक व्यक्ति की अर्ज़ी तैयार कर रहा था। उसने आगन्तुकों की तरफ़ पहले ध्यान नहीं दिया। वह लिखने में इतना तल्लीन था। फिर कुछ सोच-विचारकर सिर उठाते समय कृष्णन मास्टर को देखा। उसने सिर हिलाकर अभिवादन करने के बाद बैठने के लिए इशारा किया। फिर अपना काम ज़रा गौरवपूर्ण ढंग से जारी रखा।

कृष्णन मास्टर और श्रीधरन एक बेंच पर बैठ गये।

(सिर्फ़ एक पैसे की वजह से सरकारी नौकरी से हाथ धोनेवाले उस विशिष्ट व्यक्ति को श्रीधरन ने एक ऐतिहासिक पुरुष की तरह ग़ौर से देखा। छोटा-सा इन्सान। चेहरे पर पकी हुई नारंगी का रंग। लम्बी नाक। सफ़ेद शर्ट के ऊपर छाती पर लटकती सफेद दाढ़ी। सिर पर नये ताँबे का कटोरा ढकने की तरह लगनेवाला गंजापन।

भारतीय इतिहास की किताब में देखे एक चित्र का स्मरण हो आया। वह चित्र औरंगजेब का था— या अबुल फ़जल का···?

चेहरे और दाढ़ी को ज़रा हिलाकर बड़े गौरव के साथ जल्दबाजी में ही मुंशी लिख रहा था। कलम या स्टीलपेन से नहीं, बल्कि चील के पंख को नुकीला बनाकर ही लिख रहा था। कभी-कभी पंख को दवात में बड़े ध्यान से डुबाता।

मुंशी ने अर्जी तैयार की। फिर उसे देखे बिना ही उस व्यक्ति के हाथ में थमा दी। उसने जो मेहनताना दिया उसे देखे बगैर ही मेज पर डाल दिया। फिर

दाढ़ी हिलाते हुए कृष्णन मास्टर को बुलाया।

आदरणीय कलक्टर साहब के सामने सबमिट करने के लिए एक हंबल पिटिशन की सामग्री और उसकी पृष्ठभूमि कृष्णन मास्टर ने मुंशी को बता दी। मुंशी आँखें मूँदकर बैठ गया। कभी-कभी दाढ़ी हिलाते हुए ध्यान देता। मास्टर की सारी बातें कहने के पहले ही मुंशी एक कागज़ लेकर लिखने लगा। हाषीम मुंशी को अर्ज़ी तैयार करने के बाद दूसरे कागज़ पर नकल करने की ज़रूरत नहीं है। पहला आवेदन ही काफ़ी है। चाहे आवेदन-पत्र हो, चाहे शिकायती पत्र हो, मुंशी मुअक्किल के कहते वक्त ही उसकी ज़रूरी बातें अच्छी अँग्रेज़ी में लिखने लगता। फिर उसमें एक फुलस्टाप की भी ज़रूरत नहीं होती।

स्याही तो मुंशी ही तैयार करता था। वह ब्लाटिंग पेपर का इस्तेमाल नहीं करता था।

मुंशी ने कलक्टर का पिटिशन दस मिनट के अन्दर लिख डाला और उसे कृष्णन मास्टर के हाथ में सौंप दिया।

श्रीधरन ने उस अर्ज़ी पर निगाह डाली। कितनी सुन्दर लिखावट है! हौले से अपने पिताजी से कहा, "बाबूजी, लगता है कि मुंशी को किसी जिन की करामात हासिल है। क्या कोई इनसान इस तरह लिख सकता है?"...

यह सुनकर कृष्णन मास्टर हँस पड़े।

अर्ज़ी लिखने की फ़ीस अदा कर कृष्णन मास्टर ने मुंशी से विदा ली तो मुंशी ने श्रीधरन को वात्सल्य भाव से देखकर पूछ लिया, "क्या, बेटा है?"...

"हाँ, मेरा लड़का है।" कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन को मुंशी के सामने खड़ा कर दिया।

"क्या नाम है?"

"श्रीधरन।" बड़े अदब से ही श्रीधरन जवाब दिया।

"किस दर्ज़े में पढ़ते हो?"

उसके लिए कृष्णन मास्टर ने ही शान से ने जवाब दिया—

"इन्टरमिडियेट में—राजा कॉलेज में।"

"होनहार युवक।" मुंशी ने वात्सल्य के साथ श्रीधरन की पीठ पर थपकियाँ दीं।

तभी कृष्णन मास्टर ने हँसते हुए कहा, "आपकी हैण्डराइटिंग देखकर इसको बड़ा अचरज हुआ है। इसकी शंका है कि मुंशी को जिन की करामात हासिल है।"

यह सुनकर मुंशी हँस पड़ा।

श्रीधरन को भरोसा नहीं था कि इतना गम्भीर व्यक्ति यों हँसने लगेगा।

मुंशी ने श्रीधरन के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा, "अभ्यास से हैण्डराइटिंग ठीक कर सकते हो। क़लम से कभी नहीं लिखना चाहिए। स्टीलपेन का इस्तेमाल

नहीं करना चाहिए। लिखने के लिए पंख ही सबसे बेहतर है। 'पच्ची' का पंख..."

(मुंशी की अँग्रेज़ी अच्छी है। लिखावट भी बेहतर है। लेकिन मलयालम का उच्चारण बहुत बुरा है।)

"समझ गये ?" मुंशी ने श्रीधरन की ठोड़ी को स्नेहपूर्वक छुआ।

श्रीधरन ने सिर हिलाया।

मुंशी ने उपदेश जारी रखा—"हर रोज़ आधे घण्टे तक कुछ न कुछ नक़ल करनी चाहिए। स्लोली एण्ड केयरफुली..."

श्रीधरन ने मुंशी के उपदेशों को ध्यान से सुना। इतना ही नहीं, उसने लिखावट में हाषीम मुंशी को अपना उस्ताद मान लिया था।

मुंशी ने अपने कमरे के छोटे शेल्फ़ में हाथ डाला। (उस शेल्फ़ में एक शब्द-कोश और तीन-चार उर्दू मासिक रखे थे। उसके नज़दीक कागज़ की एक छोटी पेटी भी थी।)

मुंशी ने कागज़ का बाक्स खोलकर उसमें से एक चीज़ निकालकर श्रीधरन की तरफ़ बढ़ाकर कहा, "यह श्रीधर के लिए मेरा पुरस्कार है। इससे लिखकर लिखावट को सुधारना चाहिए।"

मुंशी की भेंट—पक्षी के पंख को श्रीधरन ने बड़े अदब से स्वीकार किया। शुक्रिया अदा करने के बाद उसने उसे जेब में डाल लिया।

मुंशी के कमरे से बाहर आकर सीढ़ी उतरते वक्त कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन से कहा, "बेचारा मुंशी! मुंशी के कोई सन्तान नहीं है। इसीसे लड़कों के प्रति इतना वात्सल्य दिखाता है।"

गली की दक्षिण दिशा में गहनों की एक बड़ी दुकान है। वहाँ एक चटाई बिछाकर एक कोने में एक छोटे सन्दूक के पीछे एक छोटा-सा इन्सान गद्दी पर एक तकिया रखकर पालथी मारकर बैठा है। उस अर्धनग्न दाढ़ीवाले ने चश्मा पहन रखा था।

वह आत्मानन्द स्वामी के गहनों की दुकान है।

आत्मानन्द का नाम लेने पर ज़्यादातर लोगों को तुरन्त मालूम नहीं होगा। 'सुनार मजिस्ट्रेट' ही कहना चाहिए।

सरकारी सेवा से बरखास्त किया गया व्यक्ति था वह। हाषीम मुंशी की तरह अनजाने में हुई एक छोटी सी गलती के कारण गोपालन मजिस्ट्रेट को नौकरी से बरखास्त नहीं किया गया था। विचाराधीन एक क्रिमिनल मुकदमे के बीच अपनी हिरासत में रखे हुए सोने के आभूषणों में एक दो को मजिस्ट्रेट ने हड़प लिया था। इसका सही-सही प्रमाण मिलने के बाद ही नौकरी से हाथ धोना पड़ा था। कारा-वास का दण्ड भी भुगतना था, लेकिन उससे किसी तरह बच गया था।

मजिस्ट्रेट की नौकरी हाथ से निकल जाने पर गोपालन ज़रा भी विचलित

नहीं हुआ। वह एकाएक भक्ति-मार्ग में मुड़ गया। कमीज उतारकर गर्दन में रुद्राक्ष-माला लटका ली। बाल और दाढ़ी फैलाकर एक नया नाम आत्मानन्द स्वीकार कर लिया। फिर वह उत्तर भारत में तीर्थयात्रा करने निकला। काशी से प्रयाग पहुँच गया। 'त्रिवेणी' में डुबकी लगाने से पहले हमेशा की तरह पण्डे ने तीर्थयात्री से कहा, "जिन्दगी में सबसे प्रिय एक वस्तु को त्याग देने की घोषणा करनी है, तभी तीर्थाटन की फलप्राप्ति होगी।" गोपालन ने थोड़ी देर तक सोचा। फिर पत्नी को छोड़ देने की बात की घोषणा की।

तीर्थयात्रा की परिसमाप्ति कर अपनी गली में वापस आने के बाद गोपालन को लगा कि अपने पुश्तैनी पेशे को छोड़ देना धर्म के खिलाफ है। यह सोचकर गली के दक्षिण कोने में उसने एक आभूषण की दुकान खोली। कुछ कवित्व भी उसकी आत्मा में बस गया था। दुकान के पीछे के विस्तृत कमरे में तीन चार सुनार भूसे की आग, फूंकनी, हथौड़ा और चिमटा लिए फूंककर, गलाकर, पीट-कर चिकनाई का काम करते, उस समय आत्मानन्द अपने बरामदे में कोने की मेज पर पालथी मारकर आध्यात्मिक जंगल की सृष्टि करता। अनुष्टुप छन्द में एक सौ एक श्लोकों में 'मोक्ष गवाक्ष' नामक एक लघु काव्य अपने ही खर्च से छपाकर सोने के आभूषणों को खरीदने के लिए आनेवाले ग्राहकों को वह मुफ्त में एक-एक प्रति का वितरण करता था।

फिर उसकी आत्मा से अनहद नाद सुनाई पड़ा, 'पठित शिक्षा को नष्ट नहीं करना चाहिए।' इसलिए उसने बैठने की अपनी जगह के नजदीक बरामदे में ही 'यहाँ अँग्रेजी में अर्जी लिखी जाएगी' का बोर्ड अँग्रेजी और मलयालम में लिखकर लटका दिया। फिर अर्जी भी लिखने लगा।

कृष्णन मास्टर और श्रीधरन के वहाँ पहुँचने पर मालिक आत्मानन्द स्वामी कुछ बालियों को एक-एक करके कसौटी पर कसकर परख रहा था।

गहनों का मालिक देहाती बुजुर्ग, जिसने अपनी चोटी बाँध रखी थी, नजदीक ही अपनी गर्दन फैलाकर खड़ा था।

सुनार मजिस्ट्रेट कृष्णन मास्टर से पहले ही परिचित था। आत्मानन्द ने चश्मे के भीतर से कृष्णन मास्टर की तरफ निगाह घुमाई। उसने मुस्कराते हुए बरामदे में उँगली से इशारा कर बैठने को कहा। 'अभी आया' कहकर फिर बालियों को परखने लगा।

श्रीधरन बरामदे के कोने में ही खड़ा रहा। प्रोप्राइटर की पेटी के ऊपर अपने आप हिलने वाले पीतल के तराजू और बाट, गुंजा आदि को बड़ी उत्सुकता से देखा। फिर आत्मानन्द स्वामी की तरफ नजरें डालीं। बालों से ढके स्वामी के कान मुर्गी के बच्चे के पंखों की तरह दिखाई दे रहे थे। लम्बी दाढ़ी का छोर छाती से ही बाँध लिया था।

तीस बालियों की घण्टियों की जाँच करने के लिए पन्द्रह मिनट का समय लिया गया। फिर सुनार मजिस्ट्रेट ने फ़ैसला सुनाया, "पुराना सोना है, खरा तो नहीं है।"

ग्राहक बुजुर्ग ने सिर झुकाकर फ़ैसला स्वीकार किया। फिर वज़न का पैसा चुका देने के बाद ग्राहक को विदा कर अन्त में कृष्णन मास्टर का मुकदमा स्वीकार किया। कंगनों को आग में डालकर निकालने में थोड़ा समय लग गया।

मास्टर से फैशनेबुल चूड़ियों का नमूना पसन्द कराने के बाद गहना बनाने के लिए सोने को पीछे के कमरे में भेज दिया गया।

"तीन दिन में तैयार होगा।" आत्मानन्द स्वामी ने अपनी दाढ़ी सहलाते हुए कहा। फिर पेटी की दराज खोलकर एक किताब 'मोक्ष गवाक्ष' उठाकर कृष्णन मास्टर को भेंट की।

## 2. कुआँ और कैलेण्डर

अगले दिन शनिवार था।

हाषीम मुंशी ने वात्सल्य के साथ श्रीधरन को जो पंछी का पंख भेंट किया था, वह उसकी जाँच कर रहा था। हाषीम मुंशी की लिखावट इतनी आकर्षक होने का कारण उसकी खास स्याही होगी। स्याही खुद ही बनानी होगी। थोड़ी देर बाद श्रीधरन को शरम महसूस हुई, कि कॉलेज में पहुँचने के बाद अब वह लिखावट सुधारने की कोशिश कर रहा है!

मेरी लिखावट उतनी बुरी तो नहीं है।

पंख को हाथ से सहलाया। कितनी मृदुता है! उसकी नोक से हथेली छुई। कितनी चुभन है! कितनी सावधानी से उसके छोर को ठीक कर दिया गया है! अचानक उसके दिमाग में यह विचार उठा कि वह चील का पंख है। अपनी दुश्मन आसमान की चील का पंख! शत्रु को हाथ से पकड़ लेने की अनुभूति हुई।

उसके पंख से ही उसका काम तमाम कर देने वाली एक कविता लिखनी चाहिए। शुरूआत इसी कविता से ही हो जाए। 'गरुड़ गर्वभंग' नाम से पुराण की एक कथा याद आयी। अपनी इस कविता को 'गरुड़ वध' नाम देना चाहिए। तभी स्याही की बात का स्मरण आया। हर्रे की स्याही बनाने की विद्या पिताजी ने बतायी थी। नई सड़क के पूर्वी कोने पर स्थित धोबी कुन्नुण्णी की औषधी की दुकान से हर्रे खरीदूंगा। स्याही के काढ़े में मिलाने के लिए तूतिया भी वहाँ से ही मिलेगी।

इन्स्ट्रूमेंट बॉक्स खोलकर रेज़गारी गिनकर देखी। कुल मिलाकर पौने तीन आने थे। काफ़ी होंगे।

यों श्रीधरन नई सड़क की तरफ़ चलने लगा।

धोबी कुन्नुण्णी की दुकान के निकट पहुँचने पर उसने लोगों को भागते हुए देखा। वे नज़दीक की भैंसोंवाले की गली की तरफ़ ही भाग रहे थे। श्रीधरन ने भी उत्सुकता से उनका साथ नहीं छोड़ा।

उस गली में एक बड़ा कुआँ था। उसके चारों तरफ़ खड़े होकर लोग कुएँ में झाँक रहे थे।

कान्तम्मा कुएँ में कूद पड़ी थी। वह अहीर गोविन्दन की साली है।

कान्तम्मा! लगा कि श्रीधरन के गाल पर किसी ने झापड़ रसीद कर दिया है।

श्रीधरन ने कई बार कान्तम्मा को देखा था। सोने के रंग की लम्बी-दुबली लड़की। हाथ और ललाट पर गुदना गुदाए वह तेलुगु-भाषी युवती लाल साड़ी से अपनी छाती और कन्धे को ढककर दही-भरी हाँडी को बेंत की टोकरी में सिर पर रखकर कभी-कभी तिरछी आँखों से राहगीरों पर कटाक्ष करती मटकती चलती हुई कई बार देखी थी। वही कान्तम्मा आज कुएँ में है।

भीड़ में अहीर गोविन्दन दिखाई नहीं पड़ा। गोविन्दन की पत्नी छाती पीटकर गला फाड़कर रो रही थी।

दर्शक घबराहट से लाचार होकर खड़े थे। किसी को भी कुएँ में उतरने का हौसला नहीं हुआ। अठारह गज़ की गहराई है। पौने भाग में पानी है। पुरानेपन के कारण कुएँ की सीढ़ियाँ तहस-नहस हो गई थीं।

डूबकर मरनेवाले इन्सान को पानी की गहराई से खींच लाने के लिए बड़ी दक्षता, शक्ति और साहस की जरूरत है। नहीं तो कुएँ में उतरनेवाले की भी दुर्दशा हो जाती है।

"आलि मुस्लिम को बुलाओ! आलि मुस्लिम को बुलाओ···" किसी ने ऊँची आवाज़ में कहा।

(कोई छह फुट लम्बा, हट्टा-कट्टा काला-कलूटा एक भीमकाय मनुष्य है आलि। वह अरबी सन्तान है। पहले समुद्री जहाज़ में ही उसका पेशा था। वह अच्छा तैराक है। अब तिनकों का व्यापार करता है। सड़क के छोर की एक दूकान के छोटे से कमरे में तिनकों का ढेर लगाए पाँव पसारे आलि बैठा होगा। घुटनों तक का एक कपड़ा कमर में बाँधकर अर्द्धनग्न हो हमेशा ऊँघते हुए ही वह बैठता है।)

कान्तम्मा तीसरी बार उभरकर आयी।

"रस्सी लाओ—लाओ रस्सी। किधर है वह?" किसी को कुछ अक्ल सूझी।

कुएँ के किनारे कोई रस्सी नहीं दिखाई पड़ी।

(कुएँ से पानी लेने के लिए हर-एक परिवार अपनी-अपनी रस्सी का इस्तेमाल करता था। पानी लेने के बाद औरतें अपनी रस्सियाँ घर ले जातीं।)

श्रीधरन ने साँस रोकते हुए पानी में झाँककर देखा। कान्तम्मा का खिला हुआ मुख कमल, सोने का-सा बदन, लम्बे बाल स्वच्छ जल में स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। गुदना गुदे हाथ फड़फड़ा रहे थे, या किसी को पुकार रहे थे। मौत की घबराहट से वह हस्तमुद्राएँ दिखाकर जल में नाच रही थी। रस्सी के लाने के समय तक वह नाचते हुए अन्दर जा चुकी थी।

दस मिनट के बाद आलि मुस्लिम कन्धे हिलाता हुआ हाथी की तरह झूमता वहाँ आ पहुँचा।

आलि ने कुएँ में झाँककर देखा। फिर झट कूद पड़ा।

कुआँ ज़रा हिल उठा।

लोग साँस रोककर देखते रहे।

आलि ने गहराई की सतह में पहुँचने की सूचना कुछ बुदबुदों से दी। फिर उसका कोई पता न लगा।

एक-एक पल एक युग की तरह लगा।

गोविन्दन की पत्नी अपस्मार के मरीज़ की तरह चीख रही थी।

फिर, वह ऊपर तैर आया।

वह एक विचित्र दृश्य था! अर्धनग्न कान्तम्मा को एक हाथ से अपनी छाती से लपेटकर दूसरे हाथ से पानी में तैरते हुए आलि ऊपर आ रहा था। कान्तम्मा की अलकावलियाँ पानी में बह रही थीं।

क्या अरबी कथा का दृश्य ही सामने दिखाई दे रहा है? लगा कि समुद्री राक्षस नागकन्या का अपहरण कर ले जा रहा है।

दर्शकों ने एक कुर्सी रस्सी में बाँधकर कुएँ में डाल दी। कान्तम्मा को कुर्सी पर बिठा न पाने के कारण आलि ने उसे कुर्सी के हत्थों पर लिटा दिया।

ऊपर पहुँचने पर कान्तम्मा को ऊखल में लिटाकर प्रथम शुश्रूषा की। कोई नतीजा नहीं हुआ। कान्तम्मा ने अपनी अन्तिम साँस छोड़ दी थी।

तभी कुएँ से एक गर्जन-सा सुनाई पड़ा। आलि का गर्जन था। आलि कुएँ में तैर रहा था। उसकी बात लोग भूल ही गये थे।

दो-तीन रस्सियों को एक साथ एक नारियल के पेड़ में बाँधकर कुएँ में डाल दिया गया। आलि रस्सी को पकड़कर धीरे-धीरे ऊपर आया। फिर पहने हुए कपड़ों को निचोड़ा। हथेलियों से मुँडा हुआ सिर और छाती पोंछे। नीचे रखी हुई कान्तम्मा की मैयत को ग़ौर से देखा। 'लाहिलाहिलाह' मंत्र जपते हुए आलि अपने तिनकों की ढेर के तरफ़ हौले-हौले कदम रखता हुआ चला गया।

श्रीधरन धोबी कुन्नुण्णी की दुकान पर नहीं गया। उसने हर्रे नहीं खरीदे। वह

सीधे कन्निप्परंपु में वापस चला गया।

चील के पंख और 'गरुड़-वध' की बात भूलकर एक अज्ञात दुख से आहत-सा बरामदे की अपनी कुर्सी पर हाथों में सिर थामकर बैठ गया। लाल साड़ी के अंचल से छाती और कन्धों को ढककर, दही की हाँडी सिर पर ढोती हुई, तिरछी आँखों और मधु-मुस्कान के साथ मोहल्ले में घूमने वाली कान्तम्मा और खुले बाल, ऊपर उठी हुई आँखें और पीले चेहरे के साथ हाथ-पैर हिलाकर कुएँ के पानी में मौत का नृत्य करनेवाली कान्तम्मा—दोनों तस्वीरें श्रीधरन के मन में उभर आयीं।

कान्तम्मा के बारे में एक कविता लिखनी है, क्या लिखना है, इसका पता नहीं है। कान्तम्मा के शाश्वत वियोग से मैं क्यों दुखी हो रहा हूँ, मुझे मालूम नहीं। शायद मेरे यौवन के आरम्भिक अनुराग का प्रथम स्फुरण उस ग्वालिन लड़की में अनजाने में ही हुआ होगा। वह ओठों पर मुस्कान और अपनी निराली चाल के साथ मोहल्ले में आती थी।

तभी कन्निप्परंपु के सामने की पगडंडी से कोयल के लहजे में लगातार तीन सीटियों की आवाज़ गूँज उठी। माधवन बढ़ई है। आज रात को 'सप्पर सफर संघ' के सम्मेलन होने की याद दिलानेवाली सीटी है। (माधवन संघ का सचिव है।)

उस दिन रात को मोटी कुंकुच्चियम्मा के घर पहुँचने पर सभी सदस्य वहाँ मौजूद थे। गोरा जूं कुंजिरामन भी हाज़िर था।

कुंकुच्चियम्मा ने नये ढंग का भोजन तैयार किया था। नारियल के दूध को मिलाकर अच्छी कांजी, मछली का एक व्यंजन, अच्छी 'चम्मन्ती' की सब्जी भी।

(माइनर होने के कारण सपर के लिए पैसा न देने की श्रीधरन को छूट दी गयी थी।)

उस दिन 'छतरी की छड़ी' वालन ने टहलते समय एक नया कार्यक्रम शुरू करने की अपील की।

"ऐसी बात है तो हम सभी घरों में जाकर कैलेण्डर की चोरी करें।" 'सफेद जूं' ने राय प्रकट की।

दूसरों के माल की चोरी करने की इस बात पर संघ के सदस्यों के बीच मतभेद था। बढ़ई माधवन और 'सफेद जूं' छोटी-मोटी ही चोरी के पक्ष में थे। 'छतरी की छड़ी' वालन और केलुक्कुट्टि इसके खिलाफ थे। मन में चोरी के पक्ष में होने पर भी उस्ताद वासु ने अपनी राय ज़ाहिर नहीं की। माइनर मतदान नहीं कर सकता था।

कैलेण्डर की चोरी के कार्यक्रम में 'छतरी की छड़ी' और केलुक्कुट्टि ने विरोध प्रकट किया तो 'सफेद जूं' ने अपना कार्यक्रम एक और ढंग से अभिव्यक्त किया, "कैलेण्डर की चोरी, हड़प लेने के लिए नहीं बल्कि एक घर का कैलेण्डर दूर

स्थित दूसरे घर में लटकाना है। फिर वहाँ का कैलेण्डर एक और घर में लटके। कैलेण्डरों का एक टेम्परेरि ट्रान्सफर। क्या वह चोरी है? सुबह को सभी घरवाले चकित होकर पूछेंगे—"यह कैसी माया है!"

गोरा जूँ हँसने लगा। उस तमाशे पर विचार कर मोटी कुंकुच्चियम्मा भी ठट्ठा मारकर हँस पड़ी।

सफेद जूँ के इस कार्यक्रम में एक ताज़गी तो है। चोरी की समस्या भी नहीं आती।

घर की दीवारों पर पिक्चर, कैलेण्डर और आँगन में प्रिन्स आफ वेल्स क्रोट्टण का प्रदर्शन करने के लिए लोग अधिक लालायित थे। अतिराणिप्पाटं में चोरों का खतरा नहीं था। कभी-कभी किसी वस्तु की चोरी होने पर वह दूर से आनेवालों का काम ही समझा जाता था।

यों उस्ताद वासु और उसके साथी कैलेण्डर एकत्रित करने और वितरण करने के मनोरंजन कार्यक्रम के लिए तैयार हो गये। बाहर जाते वक्त उस्ताद वासु मोटी कुंकुच्चियम्मा के पैरों को छूकर आशीष माँगता था।

"सकुशल वापस आ जाना, बेटा!" कहकर कुंकुच्चियम्मा उस्ताद के सिर पर अपने हाथों को छूते हुए दुआ देती।

रवाना होते समय बढ़ई माधवन के कन्धे पर कुदाल नहीं था। उसके बदले उसने रस्सी ही ली थी।

उस्ताद ने पूछा, "यह किस लिए है?"

बढ़ई ने कहा, "अपने को बचाये रखने का नया कार्यक्रम है। बीट पुलिस को देखने पर कहूँगा, घर की रस्सी तोड़कर गाय कहीं चली गयी। हम उसकी तलाश करने जा रहे हैं।"

बढ़ई माधवन को इस तरह की नयी तरकीबें सूझतीं। वह तो पेरंतच्चन का वंशज है न?

'सफेद जूँ' के हाथ में एक बड़ी टार्च थी।

सबसे पहले अतिराणिप्पाटं से एक फर्लांग दूर पर स्थित गोविन्द शेणाय के घर में ही वे घुसे। वहाँ बरामदे में चार कैलेण्डर लटक रहे थे। एक बाँसुरी बजानेवाले बालकृष्ण की बड़ी बहुरंगी तस्वीर थी। दूसरा, पहाड़ को उठानेवाले हनुमान का चित्र था। गुलाबों के बाग का और हिमगिरि की चोटी के भी चित्र दीवार पर शोभित हो रहे थे।

उस्ताद ने हाथों से इशारा किया। केलुक्कुट्टि ने चारों कैलेण्डर दीवार से उतार लिये और वहाँ से चला आया।

फिर दस्तावेज़ आण्डि के घर में गया। आँगन में झाँककर देखा। बरामदे के एक बिस्तर पर वह खुर्राटे ले रहा था। उसने काफी शराब पी ली होगी।

"डरो मत, निकाल लो।" उस्ताद ने इशारा किया।

सफेद जूं ने दीवार पर टार्च से रोशनी की। दीवार पर एक मात्र वीट कैलेण्डर था। वह वहीं रहने दे। वापस जाने के लिए वह मुड़ गया। उस्ताद ने आदेश दिया, "लिखो।"

सफेद जूं की टार्च की रोशनी में श्रीधरन लिखने लगा।

उस्ताद ने कहा, "कोंगिणी—चार—कृष्णन—वन्दर—नाला—हिमगिरि।"

मालिक का नाम, कैलेण्डर का नम्बर और अन्य विवरण जानकारी के लिए लिख डाले।

फिर वहाँ से चले गये।

नजदीक के रामुण्णि मुंशी के घर की दीवार पर सिर्फ एक ही कैलेण्डर था—कमल में खड़ी महालक्ष्मी का। उसे हस्तगत किया।

बढ़ई वेलायुधन के घर जाने पर वहाँ अन्दर से कुछ जली-कटी बातें और रुलाई सुनाई पड़ी। ध्यान देने पर मालूम हुआ कि बढ़ई और उसकी पत्नियों—मानक्कुट्टि और चेरियम्मा—के बीच झगड़ा हो रहा है। मार-पीट की आवाज भी सुनाई दी

"इस बढ़ई को अपनी बीवियों को डराने धमकाने का यही मौका मिला है।" केलुक्कुट्टि ने बढ़ई को कोसते हुए कहा।

भीतर के शोरगुल के बीच वे बाहर से कैलेण्डर की चोरी कर सकते थे। लेकिन बढ़ई की दीवार पर था भी तो कुछ नहीं।

कलाल गपीला परंगोटन की दीवारें कलेण्डरों से भरी थीं। वहाँ से अच्छी कमाई हुई।

सुनार नंपि के दरवाजे पर पहुँचने पर वहाँ का कटखना कुत्ता भौंकता हुआ दौड़ा आया।

"हम फिर देखेंगे," कहकर उस्ताद ने कुत्ते को एक सेल्यूट दिया। फिर वह मुड़कर चला गया।

वे कलाल मानुक्कुट्टन के घर की तरफ बढ़े।

मानुक्कुट्टन के घर के नज़दीक पहुँचने पर वहाँ एक जलता हुआ फानूस देखा। कलाल मानुक्कुट्टन कमर में चाकू बाँधकर ताड़ी लेने के लिए ताड़ और नारियल पर चढ़ने की तैयारी कर रहा था। (सप्पर सफर संघ के रात के कार्यक्रम के लिए वह आदमी खतरनाक साबित हुआ।)

फिर किट्टन ड्राइवर के घर से पाँच कैलेण्डर मिल गये।

कठफोड़वा वेलप्पन के घर में केलुक्कुट्टि को भेजा। थोड़ी देर के बाद वह ठट्ठा मार हँसते हुए वापस आ गया।

केलुक्कुट्टि कुछ कह नहीं सका। बस खिलखिलाकर हँस पड़ता।

"अरे, गधे की तरह क्यों हँसता है ?" उस्ताद ने नाराज़ी से पूछा।

तब केलुक्कुट्टि ने अपनी हँसी को रोककर सब कुछ विस्तार से बताया।

केलुक्कुट्टि धीरे-धीरे आँगन में आया। कठफोड़वा बरामदे में पलंग पर लेटा खुर्राटे ले रहा था। उसने एक चादर से अपने पूरे शरीर को ढक रखा था। केलुक्कुट्टि बरामदे में चढ़ने लगा तो अचानक दरवाज़ा खोलकर एक आदमी बाहर आया। इस काले-कलूटे मोटे आदमी को आँगन में खड़ा देखकर उसने डर के मारे अन्दर घुसकर दरवाज़ा बन्द कर लिया। जानते हो कौन था वह ? कठफोड़वा की खूबसूरत पत्नी वल्लिक्कुट्टि का आशिक चाप्पन चेट्टियार।

इस पर बढ़ई माधवन ने कहा, "चेट्टियार वल्लिक्कुट्टि का प्रेमी है। इस सम्बन्ध में सब कुछ वेलप्पन को भी मालूम है। जानबूझकर ही वह ऐसा करने लगता है। कठफोड़वा वेलप्पन को फर्नीचर का मेहनताना देने के लिए चेट्टियार ही ज़रूरी रकम पेशगी देता है। ब्याज नहीं लेता। ब्याज तो वल्लिकुट्टि के सहशयन से ही चुक जाता है।"

उस्ताद ने यह सुनकर सिर हिलाते कहा, "इस चेट्टियार को अच्छी तरह डराना-धमकाना है। 'सप्पर संघ' का अगला कार्यक्रम वही हो।"

"चेट्टियार आज बेहद डर गया है।" केलुक्कुट्टि ने हँसते हुए कहा। "वह ज़रूर चार दिन तक बुखार में पड़ जाएगा। मुझे देखकर उसने भूत-प्रेत ही समझ लिया।"

वहाँ से वे धोबी शंकरण के घर के नज़दीक पहुँचे। पगडंडियों से ज़रा झाँककर देखा। वहाँ बरामदे में बैठा एक आदमी चक्की में जड़ी-बूटियों को पीस रहा था।

"पीसने के लिए धोबी के बच्चे ने यही समय चुना था, हरामज़ादा !" उस्ताद ने उसे शाप देते हुए कहा।

वे पेण्टर रामन के घर पहुँचे। वहाँ की दीवार पर सिर्फ़ एक रेशे की रस्सी ही लटक रही थी।

"चिरुता के लटककर मरने के लिए ही यह रस्सी बाँधी है।" केलुक्कुट्टि जलन और गुस्से से बोला।

काठ के गोदाम के मालिक भास्करन के घर से पाँच कैलेण्डर मिल गये। उन में दो बढ़िया विदेशी कैलेण्डर थे।

कंजूस-मक्खीचूस केलु के घर के निकट पहुँचने पर उन्होंने उधर मुड़कर भी नहीं देखा।

"उधर नहीं जाना।" बालन ने कहा। क्षयरोग से मरे अप्पुण्णि का घर है। हमारा वहाँ जाना ही पाप है।"

उस्ताद ने भी कहा कि वहाँ नहीं जाना चाहिए। उस्ताद का कारण दूसरा था। वहाँ शंकुण्णि कम्पाउण्डर है। वह तो पक्का शरारती है। कैलेण्डर बदलने या गायब हो जाने से वह अन्दाज़ लगा लेगा कि यह किसकी करतूत हो सकती है। फिर वह पुलिस को सूचना दिये बिना नही रहेगा।

कुली पोर्टर ने मोटे केलप्पन के घर में झाँककर देखा। केलप्पन की नायर वधू माधवीअम्मा दरवाज़ा खोले बरामदे में चिराग के सामने बैठी एक पाट्टु पुस्तक सुरीली आवाज़ में गा रही थी।

बेचारी माधवी अम्मा आधी रात की गाड़ी की प्रतीक्षा में रेलवे-स्टेशन पर गये पति केलप्पन का इन्तज़ार कर रही है।

चुपचाप वहाँ से खिसक गये। फिर तंडान केलु के घर गये। तंडान केलु की बकरी की बदबू पगडंडी से ही नाक में घुस आयी। उसकी दीवार पर रंग-बिरंगे कई कैलेण्डर हैं। बड़ी खुशी हुई। पर, नज़दीक से देखने पर मालूम हुआ कि वे चार-पाँच वर्ष पुराने थे।

"उसको जलाने के लिए ही यहाँ रखे हैं।" केलुक्कुट्टि ने दाँत निपोरते हुए कहा। चलो चलें।

साथियों के आगे बढ़ने पर उस्ताद ने रोका, "हमारे जैसे कुछ मान्य व्यक्ति यहाँ पहुँचे हैं। इसकी सूचना तंडान को देनी होगी।" उसने आदेश दिया कि सभी कैलेण्डर नीचे डाल दिये जायें। सभी नीचे डाल दिये गये। उस्ताद ने इनसे एक कालीन बनायी। 'सफेद जूँ' ने बरामदे में लटकनेवाले तंडान के भस्म के तख्त से ज़रा भस्म लेकर दरवाज़े पर 'ओं' लिख डाला।

केकड़ा गोविन्दन के घर से बारह कैलेण्डर हासिल हुए।

कई घरों में जाने के बाद आखिर चाप्पुण्णि अधिकारी के बड़े भवन के सामने पहुँचे। अधिकारी के घर पर आक्रमण करने की बात पर सदस्यों के बीच एकमत नहीं था। केलुक्कुट्टि ने बताया कि अधिकारी को हमें हर्गिज नहीं छोड़ना चाहिए। उस्ताद ने शंका के साथ कहा, "नहीं। अगर हम कैलेण्डर निकाल लें तो अधिकारी कल सुबह पुलिस स्टेशन पर जाकर शिकायत करेगा। फिर रात को पुलिस सतर्क होगी। हमारी यात्रा मुसीबत में पड़ेगी।"

'सफेद जूँ' और 'छतरी की छड़ी' ने उस्ताद की राय का समर्थन किया। यों अधिकारी को छोड़ दिया गया। शिकार से प्राप्त बण्डलों के साथ वे मोटी कुंकुच्चि-यम्मा के घर लौट आये।

कैलेण्डरों की गिनती हुई। कुल सत्तावन मिले। माइनर के हाथ का रिकार्ड देखकर अलग-अलग घरों में बाँटने का काम ही अगला कार्यक्रम है।

गणित में तेज़ होने के कारण उस्ताद ने सूची तैयार की। "काठ के गोदाम मालिक के पाँच कैलेण्डर गपिया परंगोटन को। गपिया के कैलेण्डर किट्टन ड्राइवर

को। कामुण्णि मुंशी की महालक्ष्मी मूँछ कणारन को।" आखिर हिसाब लगाना मुश्किल हो गया। गणित में प्रवीण उस्ताद उँगली काटता हुआ विचारमग्न हो हो गया।

"मुझे नींद आ रही है। माइनर के हाथ की सूची देखकर गलती किये बिना ही हर घर में लटकाना है।"

उस्ताद वासु ने यों कहकर कैलेण्डरों को लटकाने का भार सफेद जूँ, केलुक्कुट्टि और माइनर को सौंप दिया। वह अपने घर चला गया। बढ़ई, केलुक्कुट्टि, सफेद जूँ 'छतरी की छड़ी', माइनर और रस्सी को कन्धे पर ढोते हुए बढ़ई माधवन भी कैलेण्डर लटकाने निकल पड़े।

पहले-पहल सूची देखकर ही काम शुरू हुआ। थोड़ी देर बाद हाथ आये कैलेण्डरों को अपेक्षित जगहों पर लटकाने लग गये।

उस दिन श्रीधरन तीन बजे कन्निप्परंपु वापस लौटा।

रात की करतूतों की प्रतिक्रिया की ख्वाहिश लेकर श्रीधरन दूसरे दिन सुबह बाहर निकला। गोविन्द शेणायी के घर के नज़दीक गया। सुबह से ही कोंगिणी शेणाय किसी को कोसने और गाली देने लगा था। उसने कैलेण्डर चीर-फाड़ कर आँगन में डाल दिया था। स्मरण करने पर कोंगिणी की नाराज़गी का कारण तो मालूम हो गया। पिछली रात को कैलेण्डर वितरण करते समय एक बड़ी भूल हुई थी। कृष्ण-हनुमान-बाग और हिमगिरि के बदले उस सारस्वत ब्राह्मण के घर में पेण्टर स्तेव के 'वीनस विला' के क्रास में लटकानेवाले ईसा और नंगी नहाती एक औरत की तस्वीर लटका दी थी।

अतिराणिप्पाटं और आसपास के कई घरों में कुट्टिच्चात्तन की शंका पैदा करके उस्ताद और उसके मित्र उस दिन चैन से सोये।

चौथे दिन सप्पर संघ के तत्वावधान में फिर एक बैठक हुई। कैलेण्डर को पुनः लटका देने की बात पक्की हो गयी। उस दिन, रात को उसे ठीक तरह से सम्पन करने कार्यभार छतरी की छड़ी, बढ़ई, सफेद जूँ और माइनर को सौंपकर उस्ताद तीन मील दूर दुश्शासन-वध कथकलि देखने चला गया।

सफेद जूँ और दूसरे साथियों ने घरों में झाँका तो सभी काम गड़बड़ होते दिखाई पड़े। कुछ दिवारों पर कैलेण्डर नहीं थे। (रात को वे घर के भीतर रखते होंगे।) और कुछ घरों के कैण्लडर रिकार्ड के अनुसार नहीं थे। वे बहुत ही पुराने थे। शायद घरवालों ने यह आशा ही होगी कि रात को उनके बदले नये कैलेण्डर लटका दिये जाएँगे। तीन-चार घरवालों ने बड़े हौसले के साथ वे ही कैलेण्डर लटका दिये थे। गोविन्द शेणाय के कृष्ण— हनुमान— फुलवारी—हिमगिरि के कैलण्डर कोरन बटलर के घर से मिले। बटलर के कैलेण्डर केकड़ा गोविन्दा की दीवार पर लटका दिये गये थे। लेकिन केकड़ा ने धोखा दिया।

गोविन्द शेणाय के घर चलें। "कैलेण्डर फाड़ देनेवाले उस कोंगिणी को कैलेण्डर का अब कोई हक नहीं है।" सफ़ेद जूँ ने रास्ते में बताया।

"हमें एक भी कैलेण्डर नहीं चाहिए। किसी को देना चाहिए। ऐसी हालत में, हम कोंगिणी को ही दे दें।" छतरी की छड़ी ने कोंगिणी का समर्थन किया।

शेणाय के बरामदे में रोशनी दिखाई पड़ी।

अक्लमन्द शेणाय ने चोरों को इस भ्रम में डालने के लिए कि घरवाले अभी सोये नहीं, एक फ़ानूस जलाकर बरामदे में लटका दिया था।

दीवारों पर कोई कैलेण्डर नहीं था। छड़ी और माइनर के सकपकाकर खड़े होने पर बढ़ई माधवन ने रस्सी 'छतरी की छड़ी' को सौंपी। उसने 'सफ़ेद जूँ' के हाथ से शेणाय का कैलेण्डर माँगा। साथियों से फाटक पर खड़े होने का इशारा कर वह बरामदे में घुस गया। उण्णिकृष्णन, हनुमान, चमन और हिमगिरि को दीवार पर लटका दिया। फ़ानूस को फूँककर बुझाया। फिर उसे लेकर वह चला आया।

## 3. बुरे समाचार

श्रीधरन को उस दिन सुबह हमेशा की तरह चाय और पकवान नहीं मिले। माँ रजस्वला थी। इन बातों में कृष्णन मास्टर बड़ा शुद्धाचरण रखते। दूसरी स्त्रियों से रसोईघर से भोजन पकवाना भी मास्टर पसन्द नहीं करते थे। कभी-कभी इन दिनों श्रीधरन इस कार्य-भार को सँभालता। चावल पकाने और चक्की से मिर्च और नारियल पीसने और व्यंजन तैयार करने की कला से श्रीधरन परि-चित हो गया था। (माँ बाहर से ज़रूरी सलाह और निर्देश देती रहती।)

कालेज में पहुँचने के बाद माँ के बाहर बैठनेवाले दिनों में शनिवार और रविवार को भी पिताजी श्रीधरन को रसोईघर में जाने की अनुमति नहीं देते थे। उन्हें डर था कि श्रीधरन के कालेज का काम रुक जाएगा। उसे पढ़ने का वक्त नहीं मिलेगा। उन दिनों सब लोग काँजी बनाकर पीते। कन्द को भूनकर खाते। नहीं तो चिउड़ा और केला खरीद कर खा लेते।

इलंजिपोयिल से आये 'चक्कर वरट्टु' और दूसरे पकवान इसी समय बाहर निकलते।

कृष्णन मास्टर ने बटुए में से दुअन्नी लेकर श्रीधरन से कहा, "दूकान से कुछ खरीदकर खा-आओ।"

श्रीधरन इसी अवसर की ताक में बैठा था। घर के मज़ेदार पकवान खाने पर भी श्रीधरन के मन में, माँ के शब्दों में, 'चाय की दूकान में जाकर कुछ-न-कुछ चाटने की इच्छा' बनी रहती थी। पिताजी बाहर से कुछ खाने के ख़िलाफ़ थे। कोई चारा न होने के कारण ही पहली बार उन्होंने इसकी अनुमति दी थी।

दुअन्नी जेब में डालकर वह सीधे कुमारन की 'भारत माता टी शाप' पर गया।

सुबह से बड़ी भीड़ थी। चिराई कम्पनी के मज़दूरों और समुद्र-तट के बोझ उठाने वाले कामगरों की लाइन लगी रहती।

ऐंची आँखोंवाला कुमारन पेटी के सामने बैठा था। उसके दो सहयोगी और भी थे। कुट्टापी चाय बनाता और उण्णीरि वितरण करता।

श्रीधरन एक वेंच पर जाकर बैठ गया। उसने इशारे से नौकर को बुलाकर आर्डर दिया "एक 'कुतिर बिरियाणी' और हाफ चाय।"

'पुट्टु,' चने का व्यंजन, पापड़ आदि का सम्मिश्रण रूप है 'कुतिर बिरियाणी'।

सभी पकवान पहुँच गये। दो टुकड़े बड़े पुट्टु के—दोनों तरफ़ मसाले का व्यंजन जिससे लाल मिर्च के छिलके झरते रहते हैं। बड़े फोफोलेवाले दो बड़े पापड़ भी थे जो हाथी की झालर-से लगते थे।

तभी दूर कोने की एक वेंच पर अकेला बैठा नाश्ता करता छह फुट लम्बा गंजा सिर और लाल-लाल आँखोंवाला कृष्णन दिखाई दिया।

कृष्णय्पर का नाश्ता खास ढंग का था। नौ प्लेटों में तीन सेट 'कुतिर बिरियाणी' और तीन फुल गिलास चाय सामने रखने के बाद ही वह नाश्ता शुरू करता। फिर एक-एक कर सभी सेट चट कर जाता।

अतिराणिप्पाटं के निकट के धोबियों का कोना याद आया। वहाँ एक ही लम्बाई के पेण्ट कई शर्ट, लुँगी, ब्लाउज, रंग-बिरंगे कालीन इधर-उधर लटके हवा और धूप में हिलते हुए बड़े मनमोहक लगते। कभी-कभी पेण्ट के भीतर हवा भरती तो वह नाचती-सी लगती। श्रीधरन ने ताज्जुब के साथ कई बार उसे देखा था।

कास्टिक सोडे और साबुन की गंधवाले गंदे पानी में खड़े होकर धोबी सिमेंट के पत्थरों पर कपड़ों को पीटकर धोते हैं। कपड़ों को पत्थरों पर पीटने की आवाज़ दूर से सुनाई देती है। इन धोबियों के बीच कण्णप्पन भी होता। गन्दे कपड़ों को काठ की बाल्टी में डुबोकर पत्थर पर पछाड़ते समय कणारन 'हों—ह हों' की आवाज़ निकालता। उसकी आवाज़ अलग पहचानी जा सकती है।

श्रीधरन कण्णप्पन को चाहता था। उसका खास कारण भी है। रात की खामोशी में धोबियों के पड़ाव से कुछ अद्भुत गीत सुनाई देते। कन्निप्परंपु के घर के बरामदे के एकान्त में पुस्तक पढ़ते या कविता लिखते वक्त श्रीधरन के कानों में ये गीत स्वर्गीय आनन्द प्रदान करते। भक्ति की गहराई से निःसृत होने वाले ये गीत कीर्तन—दिल को पिघलाने की असीम शक्ति रखते थे। ये ईसाई कीर्तन कण्णप्पन के गले से ही निकलते थे। इसकी पहचान कई महीने बाद श्रीधरन को हुई थी।

क्या कण्णप्पन के कंठ की सुरीली आवाज़ का कारण यह 'कुतिर बिरियाणी' है?

प्लेट को अच्छी तरह चाटकर, चाय पीकर, नाश्ते के पैसे का हिसाब लगा लिया। दो टुकड़े पुट्टु—चार पैसे, चने की सब्जी—दो पैसे, पापड़—एक पैसा, हाफ चाय—तीन पैसे, कुल हुए दस पैसे।

तीन आने देने पर दो पैसे वापिस होंगे। एक सिगरेट पीने की इच्छा हुई। वढ़िया 'हाथी' मार्का सिगरेट माँगी—मूल्य डेढ़ पैसे।

उँगली मोड़कर 'श्शू' की आवाज से उसने वितरक का ध्यान खींचा। उसके मुड़कर देखने पर अँगूठे के इशारे से कहा—'हाथी'।

उस समय दो-तीन वेंचों के उस पार वैठे लोगों की वातचीत में 'कृष्णन मास्टर' का नाम सुनाई पड़ा। उस तरफ ध्यान दिया···।

"हाँ,···कन्निप्परंपु के कृष्णन मास्टर का वेटा गोपालन ही है···"

"क्या गोपालन मुंशी कहीं पूरव के किसी काठ-गोदाम में नहीं है?"

"हाँ,···चन्दुक्कुट्टि मालिक के यहां है। वह अब वीमार होकर वापस लौट आया है।

"कोवालन को क्या वीमारी है?"

"वीमारी···"(एक हँसी)

"खासी वड़ी वीमारी ही लग गई है। अव वह कुष्ठ रोगी की तरह धीरे-धीरे चल रहा है।"

"वेचारा नौजवान है। चरित्रवान है। उस वन्दर कुंजप्पु की तरह नहीं है।"

"क्या चरित्रवान होकर ही उसके लिए गया था?"

"मास्टर, वह भी तो एक मर्द है न?"

"सोने का-सा नौजवान था। अव वह राख से निकले कुत्ते की तरह लगता है···"

"वह कोरनक्कुट्टि वैद्य का तेल पीले—अरे, उसका नाम क्या था?···

"आवी ऑयल।"

"उससे तो वीमारी दूर नहीं होगी।"

····················

वह उठकर चला गया।

श्रीधरन ने कोने में चुपचाप वैठकर सारी वातें सुनीं। ठेला वाले कुट्टाप्पु और चाप्पुण्णि अधिकारी का सहयोगी आण्टिक्कुट्टि ही वातचीत कर रहे थे। कोट और शर्ट पहने तीसरा नौजवान शायद चन्दुप्पणिक्कर के स्कूल का नया शिक्षक वढ़ई केशवन मास्टर होगा।

सिगरेट पीने के वाद श्रीधरन उठ खड़ा हुआ। काउण्टर के सामने खड़े होने पर उण्णीरि ने ज़ोर से कहा, "साढ़े ग्यारह पैसे।"

मालिक कुमारन ने तीन आने पेटी में डाल आधे पैसे के वदले दो वीड़ियाँ

वढ़ाई। श्रीधरन ने नकार में सिर हिलाया। "बाकी फिर दे देना," कहकर वह कुछ अकड़ के साथ वहाँ से चला गया।

श्रीधरन के मस्तिष्क में ठेलेवाले, अधिकारी के सहयोगी और वढ़ई मास्टर की बातचीत ज़हरीली हवा की तरह घुस गयी।

गोपालन भैया को काठ के गोदाम के मालिक चन्दुक्कुट्टि के लेखापाल की नौकरी में एक वरस वीत गया था। अधिकांश दिन वह पूर्वी टीलों के गोदाम में होता। महीने में एक दफा कन्निप्परंपु में आता। आने पर पिताजी को दस रुपये देता है।

पिताजी गोपालन भैया को समझाते, "इस तरह जंगलों और टीलों में पड़े रहने पर तबीयत बिगड़ जाएगी। तन्दुरुस्ती पर ध्यान देना चाहिए।"

यह सुनकर रसोईघर से गोपालन भैया मौसी से मज़ाक में कहता, "हाँ, मैं चन्दुक्कुट्टि मालिक के स्वास्थ्य पर ध्यान देने के लिए ही गया था।"

पिताजी पूछते, "अरे बेटा गोपालन, हफ्ते में तीन बार तेल मलकर नहीं नहाता क्या?"

गोपालन भैया सकपकाकर कहता, "कभी-कभी।"

गोपालन भैया के घर आने पर पिताजी खुद बाजार जाकर अच्छी मछलियाँ खरीद लाते। "उसको जंगल में सूखी मछली भी नहीं मिलेगी। एक दिन के लिए ही सही, वह अच्छा भोजन करे।"

गोपालन भैया आते समय जंगल से अच्छा शहद लाता। एक बार एक हिरण के सींग लाया। उसके लिए वढ़ई माधवन ने लकड़ी का एक अच्छा सिर बना दिया। उसने वह हिरण का सिर घर के बरामदे में श्रीधरन के पढ़ने के कोने की दीवार पर टाँग दिया है।

पिछले महीने गोपालन भैया को घर आने पर पिता के निकट जाने में झिच-किचाहट हुई। उसके शरीर भर में खुजली थी।

पिताजी ने अन्दर आकर गोपालन भैया को नज़दीक खड़ा करके कमीज़ को उठाकर देखा।

"क्या तूने जुलाब नहीं लिया था?"

"उसके लिए अवकाश नहीं मिलता।" गोपालन भैया ने विषाद भरे लहजे म कहा।

"ऐसी बात है तो तू पहले जुलाब ले ले। फिर वैद्य को दिखाऊँगा। बीमारी दूर हो जाने पर ही जाना होगा।"

"वहाँ और कोई नहीं। मुझे कल ही जाना है।"

"अरे सुना नहीं, शक्ति से ही भक्ति होती है—तू मेरे कहे अनुसार एक दो हफ्ते के बाद ही जा सकेगा।"

"मैं कल वहाँ जाकर मालिक से छुट्टी की प्रार्थना कर वापस आ जाऊँगा।"

गोपालन भैया दूसरे दिन पूरव के पहाड़ों पर चला गया। फिर एक सप्ताह तक वह नहीं आया। दस दिन के बाद पहुँच गया। उसका रंग और शक्ल-सूरत एकदम बदल गयी थी। सोने का-सा शरीर ताम्र की तरह हो गया था। औषधि के कुछ मर्तबान भी वह साथ लाया था।

"पनंचिक्कावु के वैद्य को दिखाने पर उसने बताया कि मकड़ी का जहर है। इसके लिए वैद्य ने कुछ औषधियाँ दी हैं।" गोपालन भैया ने मर्तबान की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

गोपालन भैया एक सप्ताह तक बाहर निकले बिना औषधि पीकर घर में ही रहा। पर, बीमारी कम नहीं हुई।

इतने में गोपालन भैया की बीमारी की खबर इलाके-भर में फैल गयी।

वैद्य को दिखाने गोपालन भैया कल फिर पनंचिरा में गया था।

श्रीधरन को मालूम हुआ कि गोपालन भैया की क्या बीमारी है? पिछले हफ्ते केलुक्कुट्टि ने इस 'प्राइवेट बीमारी' के बारे में विस्तार से बताया। इसका खास कारण था।

अतिराणिप्पाटं के पाणन वेलु के घर उसकी पत्नी पाट्टि का एक रिश्तेदार रहता था। अप्पुण्णि नाम का वह व्यक्ति कपड़ा बुनने की कम्पनी में काम करता था। हमेशा सफेद धोती और कमीज़ पहननेवाला वह एक खूबसूरत नौजवान था। एक दिन श्रीधरन ने उसको पगडंडी से देखा। नाभि के नीचे धोती के ऊपरी हिस्से को ज़रा ऊपर उठाकर वह धीरे-धीरे चलता। बैंक का नौकर चंदु विपरीत दिशा से आ रहा था। चंदु को देखने पर अप्पुण्णि ने कहा, "मिल गया—आखिर मिल ही गया।"

बड़ी मुश्किल से तलाश की जा रही एक अमूल्य वस्तु हस्तगत होने की खुशी से ही उसने कहा था। पर चन्दु अप्पुण्णि की तरफ़ आँखें तरेरकर देखते हुए चुप-चाप चला गया।

श्रीधरन ने सोचा, अप्पुण्णि को क्या मिला होगा? किसी रोग को छिपाने का बहाना करके ही वह आहिस्ता-आहिस्ता चलता है।

उस दिन शाम को केलुक्कुट्टि से अप्पुण्णि को देखने की बात कही, "अरे, उसको क्या मिला होगा?"

यह सुनकर केलुक्कुट्टि ठहाका मारकर हँस पड़ा। फिर श्रीधरन के कान में फुसफुसाया—"प्राइवेट बीमारी—वी० डी०।"

बुरी औरतें ही यह बीमारी देती हैं।

गोपालन भैया बुरी औरतों के पास गया होगा, इस पर श्रीधरन को भरोसा नहीं हुआ। गोपालन भैया लजालु है। औरतों को देखने पर सिर झुकाकर चलता है। फिर यह बीमारी कैसे मिल गयी? यों सोचता हुआ वह जा रहा था। विपरीत

दिशा से सियार नाणु को आते हुए देखा।

सिर मुँडाए रोम-भरे नुकीले चेहरेवाला नाणु नयी सड़क पर हमेशा पूर्व और पश्चिम की तरफ़ चलता। चिथड़ी बनियान और मैली धोती पहनकर नाणु अपने हाथ की मुट्टी को बन्द कर ही चलता। वह एक अच्छे घराने का सदस्य है। बदकिस्मती से उसका सिर फिर गया।

नाणु ने अपने बायें हाथ में जिस अमूल्य चीज को पकड़ा था, वह क्या है, इसका पता और किसी को नहीं है। नाणु को ही यह रहस्य मालूम हैं। किसी से भी वह कुछ नहीं बोलता। बीच-बीच में आँखें घुमाता रहता। फिर अचानक रुककर किसी बात की जानकारी हासिल होने के बहाने तीन दफा सिर हिलाते हुए बायें हाथ की मुट्ठी को जबर्दस्ती बन्द कर वापस चला जाता।

नाणु को किसी औरत ने अपनी तरफ़ आकर्षित करने के लिए कुछ ज़हर पिलाया था। मात्रा ज़रा अधिक हो गयी थी। बेचारे को पागलपन सवार हो गया। 'छतरी की छड़ी' वालन ने ही श्रीधरन को ये बातें बतायी हैं।

ये औरतें कितनी भयानक हैं! पुराने ज़माने में मोहल्ले के एक कोने से उठता रावुत्तर मौलवी का वह गीत मस्तिष्क में उभर आया :

'आट्टेयुं काट्टेयुं नंपलाम्—अन्द
शेल केट्टिय मातरै नंपलाम्—"

कन्निप्परंपु में पहुँचने पर पिताजी नहाकर जप-तप के बाद कोट और टोपी पहनकर तीन मील दूर स्कूल को रवाना हो गये थे। आँगन के नारियल के हरे छिलके को देखने पर मालूम हुआ कि पिताजी ने एक कच्चा नारियल पिया था। अहाते के नारियल से ताड़ी लेनेवाले माक्कोता ने दिया होगा।

बेचारे बाबूजी! श्रीधरन ने सोचा। 'भातरमाता' में जाकर एक 'कुतिर बिरियाणी' खाने से क्या बिगड़ेंगे?

माँ के भोजन के बारे में अन्वेषण करने की ज़रूरत नहीं है। पड़ोस की अम्मिणि अम्मा या उण्णूलिअम्मा आकर कुछ पका देती हैं, इसमें कुछ हिस्सा मुझे भी मिल जाता।

उस समय आँगन से 'स्वामी नारायणा' की पुकार सुनायी पड़ी। गेरुआ कपड़े पहने एक हाथवाली पुजारिन भीख माँगने आयी है।

उस माँ का दाहिना हाथ एक घड़ियाल ने काट डाला था। जब कन्निप्परंपु में आती तब वह माँ पुरानी घड़ियाल की कथा कहकर आँसू बहाने लगती। उसकी दुखपूर्ण कथा सुनकर श्रीधरन की माँ को हार्दिक सहानुभूति हो जाती। और फिर उसको माँ कांजी दे देती।

"आज सिर्फ कहानी है—कांजी नही," श्रीधरन हँसता हुआ अपने मन में बुदबुदाया और घर के बरामदे की सीढ़ियाँ चढ़ गया।

नौ बज गये हैं। कालेज जाने को आधा घण्टा बाकी है।

दीवार की तरफ़ ध्यान से देखा। पुरानी किताबों के बण्डल वाली टाँड के कोने की दीवार पर दीमक नयी रेल की पटरियाँ बना रही थी। मिट्टी को झाड़ा-पोंछा, फिर टाँड से कुछ किताबें उठाकर धूल पोंछकर रख दीं। इस बीच पुरानी एस० एस० एल० सी० की पाठ्य-पुस्तक से एक कागज नीचे गिर गया। नीचे झुककर उठाया तो एक पुरानी कविता थी। 'भ्रमर से' शीर्षक में श्रीधरन की लिखी कविता :

"रक्ताभ कमलों का मधु
पान कर घूमते रे भौंरे,
संध्या हुई—संध्या हुई।
क्यों नहीं तू चला जाता ?
काले कचों के भार से गर्वीली—
शर्वरी की भौंहों में बल पड़ेगा।
कमल-बंधु जिबसे नभ-यात्रा में
चल पड़े
तब से
सिंदूर सुन्दर संध्या के मर जाने तक
स्वतन्त्रता की मूर्ति बन
कामी जनों के भीतर
आतंक बढ़ानेवाला मन्त्र गुनगुनाता हुआ…"

कविता पूरी नहीं हुई थी। इतनी-सी बातें सुनने पर भ्रमर दौड़ गया होगा।)

भ्रमर को तसल्ली देनी है। कविता पूरी करनी है। बैठकर थोड़ी देर सोचा; फिर लिखने लगा :

"हे भृंग, भंगिमा के पूर्ण विराम,
फुलवारियों में जहाँ-तहाँ
दिवालक्ष्मी के चारु नयनों-सा
तू मंडराता रहा मौन
गुनगुनाकर वसंत-लक्ष्मी का
शृंगारमय संदेशा वहन कर
थका-माँदा तू अब चला जा
हरियाली की गोद में सोकर
कल तड़के लौट आना
कमलों का करने मधुपान !

समय ढलने की बात मालूम नहीं हुई।

धोती और शर्ट बदलकर कालेज रवाना हुआ।

प्रथम घण्टा रंगनाथय्यर का गणित का था। दर्जे में जाकर एक कोने में छिपकर बैठ गया। (नज़दीक बैठनेवाला वरिष्ठ मित्र नारायणन नंपियार गैरहाज़िर था।)

तभी दक्षिण दिशा के डेस्क के पीछे हरी साड़ी का कम्पन आँखों में दिखाई पड़ा। वह दर्जे के नब्बे लड़कों की आँखों के लिए पीयूषधारा बहानेवाली एकमात्र 'दूसरी सृष्टि' की प्रतिष्ठा दाक्षायणी थी।

दुबली-पतली दाक्षायणी देहात की लड़की है। उसका गोलाकार चेहरा, तारुण्य, लम्बे ताड़ के गुच्छे जैसे बाल, खूबसूरत दाँत उसके नारी-सौन्दर्य को बढ़ा रहे हैं। वह अपने बालों की लम्बाई का प्रदर्शन करने के लिए उन्हें पीछे खुला छोड़ देती है।

दरवाज़े में सफ़ेद पगड़ी दिखाई दी। कक्षा में प्राध्यापक के आते ही सहपाठियों के साथ श्रीधरन भी उठ खड़ा हुआ।

अय्यंगर के हाथों में कागज़ का बण्डल देखकर वह चौंक उठा। त्रैमासिक परीक्षा की उत्तर-पुस्तिकाएँ थीं। वे अंकों को ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने लगे। दाक्षायणी भी सुनेगी। पेट के 'कुतिर बिरियाणी' का पौना अंश झट पच गया।

अय्यंगर मास्टर गणित की उत्तर-पुस्तिकाओं को बाहर निकालकर ज़ोर-ज़ोर से अंक पढ़ने लगे।

के० जयदेवन नेट्टुगाड़ी-55, पी० गोविन्द मेनोन-44, सी०नारायणन-नंपियार 60, पी० राघव मेनोन-39, और वी० बी० कण्णय्यर-95 (श्रीधरन ने उसी पट्टर को झापड़ रसीद की थी।)

सी० श्रीधरन……

(छात्र ध्यान दे रहे हैं कि नहीं? अय्यंगर ने दर्जे भर में निगाह घुमायी—फिर निर्विकार होकर घोषणा की "ज़ीरो" (शून्य)।

## 4: 'कोरमीना'

हरित हय पर चढ़ गगन से
मालती के फूल लाना,
स्वच्छ नीले व्योम में उड़
मौज में मन का विचरना,
बदलियों में छा, ठहाका मार

हासोल्लास करना,
स्वप्न आलोकगृह की
सीढ़ियाँ चढ़ सोनिल ठहरना
चाहता हेमन्त की वह
रात्रि जब भी आ पहुँचती।
चण्ड झंझावात हो ज्यों,
या फिर हरित घोटक
शून्यता के गीत सात्विक
सुन पुलकते कान मेरे······

भावना की कमी से कविता वहीं रुक गयी। श्रीधरन के हरे घोड़े को मालूम नहीं हुआ कि किधर उड़ जाना चाहिए। बेचारा सूनेपन की सैकत में खुर पटकता रहा।

तभी 'हारमोनियम' पर एक गीत की हलकी-सी लहरों ने श्रीधरन के कानों को सहलाया। 'कोरमीना' की सौदामिनी का संगीत है।

श्रीधरन हरे घोड़ों को सूनेपन में चरने को भेजकर कन्निप्परंपु के बरामदे में उतर आया।

हेमन्ती रात की खामोशी में ख्वावों की लहरों को जगाते हुए सौदामिनी के हारमोनियम से संगीत लहरियाँ उठ रही हैं। श्रीधरन ने एक स्वर्गीय अनुभूति में डूबकर उसका आस्वादन किया।

तभी पड़ोस के कुत्ते के भौंकने की आवाज़ सुनायी दी।

सौदामिनी की संगीत-सुधा को उस कुत्ते ने चाटकर पी लिया।

कुत्ता भौंकता ही रहता है। मोहल्ले के कुत्तों को भौंकने के लिए खास कारण की ज़रूरत नहीं है। चाँदनी देखने पर, छाया को निरखने पर, पत्तों के हिलने पर, शान्त आलोक में भी कुत्ता भौंकने लगता। एक बार भौंकना शुरू करता तो फिर वह मुँह बन्द न करता। वैज्ञानिक प्रगति हासिल होने से इन्सान शब्दों पर नियन्त्रण कर सकता है, लेकिन कुत्ते के भौंकने की आवाज़ ऐसी है जिसे कोई वैज्ञानिक, कोई इन्सान कभी भी नियन्त्रित नहीं कर सकेगा। अगर कुत्ते को डाँटो तो मूर्ख कुत्ता यही समझेगा कि वह मालिक की बधाई है। फिर वह अधिक ज़ोर से भौंकने लगता। पत्थर मारें तो कुछ दूर दौड़ने के बाद वह अपने लहजे को ज़रा बदलकर फिर भौंकने लगता। मारने-पीटने पर भी कुछ फायदा नहीं होता। दर्द से ज़रा भौंककर, कुछ देर चुपचाप रहकर, फिर साहस का प्रदर्शन कर और किसी के लिए विलापगान शुरू कर देता। पिटाई के प्रतिशोध के तौर पर कुत्ता बीच-बीच में गान में कुछ गुर्राहट जोड़ लेता।

इस प्रकार कविता लिखने में और हारमोनियम-गान का आस्वाद लेने में

में रुकावट आने पर श्रीधरन अपना बिस्तर बिछाकर सोने लेट गया और सौदामिनी और उसके पिता कोरप्पन ठेकेदार के पूर्व इतिहास का स्मरण करने लगा।

कोरप्पन पूर्वी दिशा में एक देहात के एक बड़े ज़मींदार की गायों को चरानेवाला एक अनाथ छोकरा था। दूसरे चरवाहों के साथ गायों को चराते हुए झुरमुटों और टीलों की तराइयों में वह हँसते हुए खेलता।

ज़मींदार के एक दुलारी बेटी थी। बहुत ही खूबसूरत। लेकिन घमण्डी। एक दिन जब वह तेल लगाकर नदी पर अकेली जा रही थी तो कोरप्पन ने ललचायी आँखों से उसे देखा। उसने प्रेम का एक नगमा भी गुनगुनाया। नगमा सुनकर वह नाराज़ हो गयी। उसने अपने पिता से उसकी शिकायत की। उसने कहा कि कोरप्पन छोकरा मुझसे छेड़छाड़ करने आया था।

ज़मींदार ने कोरप्पन को बुलाया। उसके पहने हुए तौलिये को उतारकर उसे नंगा कर दिया गया। उसी तौलिये से उसके हाथों को बाँधा। फिर गायों को चरानेवाली बाँस की छड़ी से बेरहमी से उस लड़के को मारा। कोरप्पन की अच्छी मरम्मत होते देखकर ज़मींदार की दुलारी बेटी को बड़ी खुशी हुई।

कोरप्पन उसी दिन गाँव से फरार हो गया। वह शहर में आ पहुँचा। दो दिन तक वह इधर-उधर मारा-मारा फिरता रहा। आखिर सड़क के एक ठेकेदार केलु मिस्तरी के यहाँ पहुँच गया। उसने कोरप्पन को मिट्टी ढोने का काम दिया। शाम तक लहू-पसीना एक कर काम करने के बाद चार-पाँच दिन तक वह रात को किसी दूकान के बरामदे में लेटकर सो जाता। एक दिन केलु मिस्तरी को उसके प्रति वात्सल्य उमड़ आया। उसने कोरप्पन की ज़िन्दगी की अब तक की सारी बातें बड़ी सहानुभूति से सुनीं। शाम को वह उसे अपने घर ले गया।

केलु मिस्तरी के कोई सन्तान न थी। उसकी घरवाली के भी कोरप्पन को देखने पर उसके प्रति वात्सल्य भर आया। फिर कोरप्पन को मिट्टी ढोने का काम नहीं करना पड़ा। वह मिस्तरी के घर में ही कुछ न कुछ काम कर रहने लगा। महीनों बीत जाने पर कोरप्पन की होशियारी, ईमानदारी और विनम्रता देखकर केलु-कुंजम्मु दंपती उस पर प्रसन्न हो गये। कोरप्पन बचपन से ही माँ-बाप के प्रेम और वात्सल्य से वंचित लड़का था। उसको नयी ज़िन्दगी अधिक पसन्द आयी। ठेकेदार ने कोरप्पन को कुछ शिक्षा देने का बंदोबस्त किया। एक ट्यूशन मास्टर को लगा दिया गया। मास्टर ने रात को कोरप्पन को लिखना, पढ़ना और हिसाब लगाना सिखा दिया। कोरप्पन गणित में तेज़ था।

सन्तान न होने से दुखी होनेवाले केलु-कुंजम्मु दंपती ने एक साल बाद कोरप्पन को अपने पुत्र के रूप में गोद ले लिया। उसके पहले ही गृहकार्यों के कुछ विभाग कोरप्पन को सौंप दिये गये थे।

यों तेरह साल बीत गये।

केलु मिस्तरी की तवीयत मधुमेह की बीमारी से एकदम बिगड़ गयी। इसी बीमारी की वजह से आखिर वह चल बसा।

मिस्तरी के वसीयतनामे में उसकी जायजाद में (बैंक की मोटी रकम के अलावा कई नारियल के अहाते, मकान आदि भी थे) आधा हिस्सा उसकी पत्नी कुंजम्मु और आधा कोरप्पन के नाम लिखा गया था।

केलु मिस्तरी के सभी कामकाज कोरप्पन ने अपने ऊपर ले लिये।

एक साल बाद धन के लालची एक रिटायर्ड पुलिस इन्स्पेक्टर ने केलु मिस्तरी की विधवा कुंजम्मु से शादी कर ली। कोरप्पन ने फिर वहाँ ठहरना उचित नहीं समझा, इसलिए उसने अपना एक अलग मकान बनवा लिया।

एक बरस बीतते ही कोरप्पन ठेकेदार की प्रगति दिन-दूनी रात-चौगुनी होने लगी। सरकारी ठेकों के अलावा रेलवे के बड़े ठेके भी कोरप्पन को मिले। कई सनद प्राप्त इंजिनियर उसके नीचे काम करने लगे।

आठ वर्ष के अन्दर कोरप्पन ठेकेदार शहर का एक बड़ा अमीर हो गया।

बाईस साल पहले ज़मींदार की मार-पीट बर्दाश्त कर जब देहात छोड़कर भागा था तब उसने प्रतिज्ञा की थी कि ऊँचे घराने की एक खूबसूरत औरत से शादी कर उसको साथ लेकर ही वह भविष्य में वहाँ की मिट्टी में पैर रखेगा।

कोरप्पन को लगा कि उस प्रण को अमल में लाने का मौका आ गया है। उसने अपने लिए वधू को ढूँढ़ने की व्यवस्था की।

पुलिस सुपरिंटेन्डैन्ट दफ्तर के व्यवस्थापक के पद से अवकाश-प्राप्त कुंजबु नायर को कोरप्पन कॉन्ट्रैक्टर ने अपनी संस्था के मैनेजर के रूप में नियुक्त किया था। कुंजबु नायर ने बताया कि पूर्व दिशा में कण्णन मजिस्ट्रेट की एक बेटी है। देखने में खूबसूरत है। कान्वेण्ट में पढ़कर मेट्रिक्युलेशन पास हो गयी है।

कोरप्पन ने कण्णन मजिस्ट्रेट के यहाँ अपनी शादी की बात पर विचार-विमर्श करने के लिए कुंजबु नायर को ही भेजा।

बड़े सरकारी अफसरों और वकीलों से विवाह के प्रस्ताव लगातार उन दिनों आ रहे थे। ऐसे मौके पर ही कोरप्पन ठेकेदार का दूत वहाँ पहुँच गया।

कण्णन मजिस्ट्रेट ने कोरप्पन ठेकेदार को अपने मन के कठघरे में चढ़ाकर उस पर विचार किया। अमीर है—लेकिन पढ़ाई और फैशन नहीं है। ऊँचे समाज में कोई स्थान नहीं होगा। कुल की महिमा भी नहीं। पर अमीर है, बड़ा अमीर।

एक सप्ताह के सोच-विचार के बाद कण्णन मजिस्ट्रेट ने अपना फैसला लिख भेजा। निम्नलिखित शर्तों को अगर वह स्वीकार करे तो शादी की अनुमति दी जाएगी।

एक, प्रतिश्रुत वर प्रतिश्रुता वधू के नाम दस हज़ार रुपये बैंक में जमा करने के बाद उसकी पासबुक प्रतिश्रुता वधू के पिता के हाथ में सौंपे।

दो, वधू को कपड़े-लत्तों के अलावा पचास अशर्फियाँ दे। शादी के दस दिन पहले प्रतिश्रुत को वधू के पिता को ये चीज़ें सुपुर्द करनी होंगी।

तीन, शादी के खर्च में आधा हिस्सा प्रतिश्रुत वर को वहन करना होगा।

इतने प्रतिष्ठित घराने के मजिस्ट्रेट की बेटी को अपनी पत्नी बनाने के लिए कोरप्पन ठेकेदार इन शर्तों से कई गुना अधिक खर्च करने के लिए तैयार था। मजिस्ट्रेट को शर्तों की स्वीकृति की सूचना तुरन्त दे दी गयी।

अपनी निविदा की स्वीकृति की सूचना मिलने पर कोरप्पन ठेकेदार खुशी से फूला न समाया।

इस प्रकार कोरप्पन ठेकेदार और कण्णन मजिस्ट्रेट की बेटी मीनाक्षी की शादी धूमधाम से संपन्न हुई।

बाईस वर्षों के बीच कोरप्पन के पुराने मोहल्ले में कई परिवर्तन आ गये थे। कोरप्पन के पुराने ज़मींदार मालिक की जायदादों को बेच दिया गया था। कई मुकदमों में फँसकर ज़मींदार की जायदादों की तबाही हो गयी थी। ज़मींदार की दुलारी बेटी की शादी नज़दीक के गाँव के अधिकारी के पुत्र से संपन्न हुई। लेकिन वह धूर्त शराबी और शैतान निकला। अधिकारी का विचार करके ही लोग चुपचाप रहते थे, पर अधिकारी की मृत्यु होने पर वहाँ की हालत नाजुक हो गयी। आखिर सभी जायदादों को बेच दिया गया। ज़मींदार के जामाता के तीन बच्चे हैं अब वह होमियोपैथी इलाज कराकर दिन बिता रहा है।

ज़मींदार के जामाता के घर के निकट चट्टानों से भरा एक बड़ा अहाता है। इसे कोरप्पन ठेकेदार के लिए खरीदा गया है।

एक दिन शाम को एक शानदार इक्कागाड़ी उस अहाते में आकर रुक गयी। गहनों से लदी एक खूबसूरत औरत इक्कागाड़ी से नीचे उतरी। पीछे काला कोट और टोपी पहने कोरप्पन ठेकेदार भी उतरा।

हरिजन स्त्रियाँ उकड़ूँ बैठी काले पत्थरों को तोड़ रही थीं। वह काम एकाएक बन्द हो गया। ठेकेदार मालिक के आगमन की सूचना देने के लिए गोलियों का तीन बार विस्फोट किया गया। (डायनामिट वत्तियों में आग लगाकर टीलों को तोड़ने की आवाज थी।)

कान्वेण्ट की शिक्षा प्राप्त होने पर भी मीनाक्षी 'क्यारि' के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी। काले टीलों को तोड़ने, इन पत्थरों को पुनः टूक-टूक करने और फिर सिमेण्ट के साथ मिलाने की प्रक्रिया कोरप्पन ने अपनी प्रियतमा को विस्तार से बतायी। मीनाक्षी ने उसकी बातें ध्यान से सुनीं।

उस समय नज़दीक के अहाते टूटे बाड़ के निकट के दो लड़के आकर खड़े हो गये। इन बच्चों ने सोने के आभूषणोंवाली महिला और कोट और टोपी पहने मालिक को ग़ौर से देखा। छोटा लड़का आम खा रहा था। उसका रस छाती से

नीचे बह रहा था। बड़े लड़के के ओठ के निकट आग लगाने के निशान की तरह कुछ दाग लगा था।

दोनों लड़कों ने मैले पाजामे पहने हुए थे। लगता है कि टाट के टुकड़ों से ही बनाया गया था।

ये दोनों ज़मींदार की दुलारी बेटी के बेटे थे।

अहाते के बड़े महल का बाहरी हिस्सा टूट-फूटकर गरीबी का निशान प्रस्तुत कर रहा था। छत की तबाही भी हो गयी थी। हर कोना पंख पसारकर उड़ने की कोशिश कर रहा था। उस महल के गन्दे कमरे के भीतर से ज़मींदार की दुलारी बेटी छिपकर देखती होगी—कोरप्पन ने यों अंदाज लगाया। हाँ, वह देख ले—अच्छी तरह आँखें फाड़कर देख ले।

उन बदसूरत लड़कों का बुरा हाल देखने और टूटे-फूटे महल को देखने पर भी कोरप्पन के मृदु हृदय में कोई हमदर्दी नहीं हुई। बाईस बरस पहले मुझे नंगा करके बाँस की छड़ी से निर्मम हो मार-पीटकर तड़पाने का दृश्य उस बेटी ने क्या मजे से देखा नहीं था? अब इस दृश्य को देखकर मैं भी मजा उठाऊँ। एकाएक कोरप्पन के मन में विचार कौंध गया कि उस दण्ड के फलस्वरूप ही मैं आज इस हालत में पहुँचा हूँ।

अगर ज़मींदार उस दिन मुझे इस तरह दण्ड नहीं देता तो क्या मैं इस देहात को छोड़कर चला जाता? इसी वजह से मैं आज की हालत में पहुँच गया हूँ। एक तरह से उसी औरत ने ही मुझे तरक्की के रास्ते पर भाग जाने को मजबूर किया था। चिन्ताएँ खतरे की तरह बढ़ती देखकर उसने मुड़कर अपने कोट की जेब से सोने की घड़ी निकालकर समय देखा। उसने अपनी पत्नी से कहा, "ओह! पाँच बज गये। छह बजे रेलवे के मैनेजर साहब से एक अपाइण्टमेंट है। वह तो मैं एकदम भूल गया।"

सफेद घोड़ेवाली नीले रंग की वह इक्का-गाड़ी घण्टी बजाती हुई पश्चिम के शहर की तरफ़ दौड़ गयी।

कोरप्पन किस्मत का धनी है। उसने पैसे का ख्याल किये बिना ही शान-शौकत का ध्यान रख अच्छी रकम देकर अपनी वधू को खरीदा था। अपने दाम्पत्य में पत्नी का प्रतिकरण कैसे होगा, कोरप्पन को इस बात का डर था।

धीरे-धीरे वह समझ गया कि इस प्रकार के भय की कोई ज़रूरत नहीं है। वह एक सामान्य गृहिणी की तरह ही बर्ताव करती है। उसे ज़रा भी घमण्ड नहीं है। नयी छतरी खरीदते समय और नयी वधु को चुनते समय शील-गुण पर अधिक ध्यान देना चाहिए। मीनाक्षी में वह गुण जरूरत से ज़्यादा है।

कोरप्पन-मीनाक्षी के एक सन्तान हुई सौदामिनी।

दो साल पहले कोरप्पन ठेकेदार अतिराणिप्पाटं के एक कोने के अपने पुराने

अहाते में एक बड़ा भवन बनाकर वहाँ रहने लगा था। अपने दाम्पत्य की याद को बनाये रखने के लिए कोरप्पन-मीनाक्षी का नाम जोड़कर उस घर का नाम 'कोरमीना' दिया गया

यह विचित्र नाम केकड़ा गोविन्दन ने ही दिया था।

## 5. नया दुश्मन

गणित का 'होमवर्क' करने के लिए श्रीधरन बीच-बीच में अपने सहपाठी नारायणन नंपियार की मदद लेता। दुबले-पतले हाथों और गड्ढे में पड़ी हुई आँखों एवं लम्बे रोम से भरे कानोंवाले नारायणन नंपियार को मज़ाक में छात्र 'चकवा' उपनाम से पुकारते। चूँकि वह गणित में बड़ा प्रवीण है इसलिए वह कृष्णय्यर को भी हराने की जी तोड़ मेहनत करता!

नंपियार मलयालम में अच्छा न था। गणित के सवालों को कर देने के बदले में श्रीधरन नंपियार को मलयालम निबन्ध लिख देता। इस तरह आपसी सहयोग की योजना शुरू हो गयी। नंपियार के घर से ही अक्सर यह सहयोग चलता। नंपियार की स्मरण शक्ति अजीब है। एक दफा लिखा निबन्ध अगर वह दो बार पढ़ ले तो स्मृति से कुछ भी छोड़े बिना किसी भूल-चूक के वह उसकी नकल कर देता। लेकिन गणित में श्रीधरन की बात ऐसी न थी।

गणित के सवालों का जवाब लिखते समय नारायणन नंपियार मज़ाक से पूछता, "अरे श्रीधरन, परीक्षा-हाल में तेरे निकट नारायणन तो नहीं रहेगा। ऐसी हालत में तेरी दस उँगलियाँ गिनकर खत्म हो जायँ, तो तू क्या करेगा?"

एक दिन शाम को नारायणन नंपियार के घर जाने पर उसने मेज़ पर एक नया मलयालम मासिक देखा। मुखपृष्ट पर 'कवनदर्पणं' (कविता-मासिक) छपा था। श्रीधरन ने उत्सुकता के साथ पृष्ठ उलटे। इसमें सुप्रसिद्ध लोगों की और नये व्यक्तियों की ढेर सारी कविताएँ छपी थीं।

उत्सुकता से मासिक पढ़ते श्रीधरन की तरफ़ देखकर नंपियार ने कहा, "कविता की मैगज़ीन लिये एक महाशय निकले थे। आज सुबह उठने पर उस व्यक्ति का ही शकुन देखा। हाथ में एक थैली लटकाये वह आँगन में खड़ा था। मैंने समझा कि पापड़ बेचनेवाला कोई चेट्टियार है इसलिए अपनी सेठानी को पुकार-कर पूछा, "क्या पापड़ चाहिए हैं?"

उस समय आँगन में खड़े महाशय ने पूछा, "क्या यहाँ मास्टर नहीं हैं?" उसकी आवाज़ सुनकर बड़े भाई बरामदे में आये। थैलीवाले की अदब से अगवानी कर वे उसे अन्दर ले गये। फिर दोनों को कुछ साहित्यिक बातचीत करते सुना। बड़ी देर बाद मैगज़ीन की एक प्रति इधर देकर वार्षिक चन्दा तीन रुपये कबूल

कर थैली लटकाये वे इधर से अपने रास्ते चले गये।

श्रीधरन ने मैगज़ीन में सरसरी निगाह से देखा। प्रथम पृष्ठ पर संपादक का नाम छपा था। कवनदर्पणं—संपादक सी० सी० नंबीशन।

नारायणन नंपियार ने ज़रा ईर्ष्या के साथ जारी रखा, "मैं क्या कहूँ। भैया की एक दिलचस्पी देख लो। वे चमगादड़ की तरह लटकनेवाली एक पुरानी छतरी लेकर ही स्कूल जाते हैं। क्या वे तीन रुपये देकर एक नयी छतरी नहीं खरीद सकते? उस थैलीवाले को देने की ज़रूरत ही क्या थी?"

(नारायणन नंपियार का बड़ा भाई रामुण्णि नंपियार म्युनिसिपल स्कूल का अध्यापक है।)

"अरे, वह संपादक कहाँ रहता है?" श्रीधरन ने अपने उद्देश्य को मन में छिपाते हुए कहा।

"क्या उस थैलीवाले को देखने की इच्छा है?"

नंपियार ने मज़ाक के लहजे में बताया, "ओ, मैं भूल गया। तू भी एक कपि है न? चला जा वहाँ! वह कोविलंक अहाते के मन्दिर के तालाब की पश्चिम दिशा में ही रहता है— उसने भैया को यही बताया था। जाते समय तू वार्षिक शुल्क तीन रुपये जेब में रख लेना।"

"ओ—मैंने तो यों ही पूछा था?" श्रीधरन ने निस्संग होकर कहा।

"क्या तेरे पास तीन रुपये हैं?"

"नहीं तो।"

"हाँ तो हम लॉज में जाकर 'बिरियाणी' खाएँगे। थैलीवाले को देने की ज़रूरत ही क्या है? मेरे पढ़ने के बाद तू पत्रिका यहाँ से ले जा सकता है।"

'चकवा' की तरकीब के बारे में क्या कहना है! कविता का नाम सुनते ही 'चकवा' को जुकाम और खाँसी आने लगती।

"लॉगरितं' और 'पेरम्युटेशन एण्ड कोंबिनेशन' ही गणित में उसके, 'वसंत तिलकं' और 'उपेन्द्रवज्रा' हैं।

नंपियर ने सलाह जारी रखी, "अरे कविता लिखना छोड़ दे। थियोरम पढ़। नहीं तो तेरा भविष्य अंधकारमय हो जाएगा।"

"भविष्य के बारे में कोई भी भविष्यवाणी नहीं कर सकता।" एक दर्शनिक की तरह श्रीधरन ने कहा।

वहाँ से वापस आने पर श्रीधरन के मन में सुदूर भविष्य के बारे में कोई विचार नहीं था। फिलहाल लिखी एक नयी कविता ही उसके मन में उभरी आ रही थी। बारिश के मौसम के बारे में 'पर्जन्य गर्जन' नामक कविता वसंत-तिलकं छन्द में चौबीस श्लोकों में लिख डाली थी। वह 'कवन दर्पण' में प्रकाशित करे तो···

सुबह होते ही संपादक से मिलने जाना है।

उस दिन रात को अतिराणिप्पाटं और कन्निप्परंपु चैन की नींद में मग्न थे।

श्रीधरन ऊपर के बरामदे में मेज़ पर रखे दीपक को जलाकर कुर्सी पर बैठ गया। उसने मेज़ की दराज से फिज़िक्स की नोटबुक बाहर निकाल ली। 'पर्जन्य गर्जन' को उसके अन्दर छिपाकर रखा था।

कविता-कामिनी को पुनः एक दफा सजाने का मोह वह संवरण नहीं कर सका। 'पर्जन्य गर्जन' नामक शीर्षक सेठ की पगड़ी की तरह वज़नदार है। उसे बदलकर 'मेघ गर्जन' रख दिया।

'कवन दर्पण' का संपादक पुरानी पीढ़ी का विद्वान होगा। संस्कृत शब्दों से अधिक मोह होगा। कुम्हड़ा कूष्माण्ड के रूप में देखने पर ही बाल पके कवियों को तृप्ति मिलती है।

पिताजी का पुराना संस्कृत-अंग्रेज़ी शब्द-कोश दीवार की टाँड में रखा था। उसे मेज़ पर रख लिया। फिर 'मेघ-गर्जन' पढ़ने लगा।

शब्दकोश की सहायता से कई मलयालम शब्दों को संस्कृत शब्दों में बदल दिया। यों कविता के बोझ को ज़रा बढ़ा दिया।

तभी धोबियों की गली से कृष्णप्पन के कीर्तन की सुरीली आवाज़ आने लगी

सुबह होते ही 'कवन दर्पण' संपादक के दर्शन करने के लिए 'मेघ-गर्जन' को जेब में डालकर घर से निकला। निकलते समय पिताजी ने पूछा, "अरे, श्रीधरन सुबह-सुबह कहाँ चला ?"

"नारायणन नंपियार के घर।" तुरन्त जवाब दिया।

(संपादक से मिलकर वापस आते समय नारायणन नंपियार के घर जाने का निश्चय किया, ताकि पिताजी से जो झूठ कहा था उसे वह धो सके।)

कोविलंक अहाते की पूर्व दिशा में मन्दिर के कुएँ के नज़दीक पहुँच गया। पश्चिम दिशा में एक घर अलग ही दिखाई दिया। शायद वही संपादक का घर होगा।

तालाब से नहाने के बाद वापस जानेवाले एक लड़के से पूछा, "अरे बिट्टू, 'कवन दर्पण' के संपादक का घर वही है ?"

वह लड़का गुमसुम रहा। वह अपने पिछले हिस्से की शिखा को ज़रा हिला-कर चुपचाप खिसक गया।

फिर किसी से भी पता नहीं लगाया। साहस जुटाकर वहाँ चला गया।

आँगन में इधर-उधर देखा। आधे खुले हुए दरवाज़े में झाँककर अन्दर देखा लगा कि अन्दर एक द्वन्द्व-युद्ध चल रहा है। एक आदमी घुटने टेके, सिर झुकाए उघड़ा बैठा है। एक औरत उसकी पीठ पर कुछ कर रही है। ध्यान से देखने पर

समझ गया कि वह औरत मर्द की पीठ पर तेल मलकर मालिश कर रही है।

समय और संदर्भ का स्मरण किए विना श्रीधरन ने आँगन से पुकारकर पूछा, "क्या यह संपादक जी का घर है ! संपादक जी हैं ?"

मालिश करने वाली औरत ने मुड़कर देखा। (फिर दोनों के वीच कुछ गुप-चुप बातें हुई होंगी।)

औरत ने दरवाज़े की तरफ़ आकर श्रीधरन को देखा।

उसने कहा, "नहाने जा रहे हैं। वरामदे में वैठिए।"

दरवाज़ा वन्द कर वह भीतर गायव हो गयी।

श्रीधरन बरामदे में चढ़ गया। वहाँ एक पुरानी कुर्सी के अलावा और कोई फर्नीचर नहीं था। सम्पादक की कुर्सी वड़ी इज्ज़त के साथ देखकर श्रीधरन बरामदे के तख्त पर जाकर वैठ गया।

मालूम हुआ कि सम्पादक आधे घण्टे में नहाने के वाद आएँगे।

श्रीधरन ने जेव से 'मेघगर्जन' लेकर फिर पढ़ा। कहीं छन्द में कोई गड़वड़ी तो नहीं रह गयी ?

एक-एक पंक्ति के अक्षरों को जपकर आँखें मूँदकर उँगली से गिनने लगा। नहीं, कोई गड़बड़ी नहीं है।

सम्पादक जी स्नान और पूजा के वाद ललाट पर चन्दन का टीका लगाकर कान में तुलसीदल रख बरामदे में आये।

श्रीधरन बड़े अदव के साथ तख्त से उठ खड़ा हुआ।

एक सम्पादक का रक्तमांस-युक्त विग्रह पहलेपहल ही वह नज़दीक से देख रहा था। वह श्रद्धा-भाव से हाथ जोड़कर खड़ा हुआ।

सम्पादक ने श्रीधरन को गौर से देखा। आगंतुक के चेहरे पर हलकी-सी निराशा की झलक आयी। शायद अंदाज लगाया होगा कि कम उम्र का नौजवान होने पर भी अमीर घर का होगा। उसके लिए श्रीधरन का सिल्क शर्ट, हाथ की सोने की घड़ी, जेब से झाँकनेवाली रोल्ड गोल्ड क्लिप की कलम प्रमाण थे।

सम्पादक का सिर देखने पर श्रीधरन को हँसी आ गयी। उस गंजे सिर के चारों तरफ सफेद वालों की लटें थीं। उसे देखने पर लगा कि अतिराणिप्पाटं की धोबिन मालुक्कुट्टि जिस हाँडी में कपड़े उवालकर रखती है, मानो उसके चारों तरफ़ से सफेद धुआँ ऊपर उठ रहा है।

"कौन हैं ? कहाँ से आये हैं ?" सम्पादक ने पूछा।

श्रीधरन को एक सम्पादक से वातचीत करने का ढंग मालूम नहीं था। पहले कुछ सकपकाया फिर कहने लगा :

"मैं—मैं इस शहर में रहता हूँ···'कवन दर्पण' के वारे में ढेर सारी वातें सुनी हैं। सम्पादक जी से मिलने आया हूँ।"

"खैर, 'दर्पण', देखा है ?"

सम्पादक तौलिये से कुर्सी की धूल पोंछते हुए वहाँ बैठ गया।

"कवन दर्पण' का पिछला अंक देखा है।

"कहाँ देखा था ?"

"रामुण्णि मास्टर के घर।"

"हाँ,मास्टर मेरा एक पुराना मित्र है।"

बातचीत आधे क्षण को रुक गयी। फिर कुछ विचार कर सम्पादक ने भाषण जारी रखा :

"फिलहाल मासिक को चलाने में बड़ी तकलीफ़ है। खासकर साहित्य-मासिक को प्रकाशित करने में—इससे भी मुश्किल है एक कविता-मासिक का प्रकाशन करना। कैरली की सेवा में ज़िन्दगी को होम देनेवाले मेरे जैसे लोगों की तकलीफ़ों को जाननेवाला है ही कौन ? (सम्पादक ने गंजे सिर को सहलाते हुए श्रीधरन की तरफ़ देखा) 'दर्पण' का वार्षिक चन्दा अदा करने आये होंगे। सालाना चन्दा सिर्फ़ तीन रुपये है।"

श्रीधरन ज़रा सकपकाया। जो कहना चाहता था उसे उसने अपने आप निगल लिया।

"हाँ, मैं ग्राहक बनूँगा। अभी एक कविता लेकर ही आया हूँ।"

श्रीधरन का हाथ जेब के 'मेघगर्जन' की तरफ़ चला गया।

सम्पादक का चेहरा एकदम पीला हो गया। हाथ की उँगलियाँ गंजे सिर से नीचे आ गयो।

नाक के रोम को नोचते हुए सम्पादक ने पूछा :

"अच्छा, कविता लिखते हो ?"

"कभी-कभी।"

"क्या नाम है ?"

"श्रीधरन।"

"सिर्फ श्रीधरन ?"

"नहीं, सी० श्रीधरन—चेनक्कोतु श्रीधरन।"

सम्पादक ने नाक से रोम खींच लिया। फिर उसको ग़ौर से देखा।

"किसी मासिक में कविता प्रकाशित हुई थी ?" (सवाल रोम से था।)

"मेरी दो-तीन रचनाएँ राजा कालेज मासिक में प्रकाशित हुई हैं।"

सम्पादक नाक का रोम उँगली से दबाकर खामोश रहा।

"मेरी कविता अगर दर्पण में···"

"दे दो, देखूँगा।"

श्रीधरन ने 'मेघगर्जन' को संपादक के हाथ में थमा दिया।

कविता पढ़कर सम्पादक जी बीच-बीच में सिर हिलाने लगे। श्रीधरन ने चेहरे के भाव को ताड़ने की कोशिश की। कुछ अजीब भावों का स्फुरण था।

श्रीधरन छाती फुलाकर खड़ा रहा। उन्नीस वर्ष पूर्व अतिराणिप्पाटं में जन्मे अभिनव श्रीधरन कवि की पहले-पहल पहचान करनेवाले सम्पादक महाशय, भविष्य के इतिहासकार आपको हर्गिज़ नहीं भूलेंगे···

श्रीधरन ने देखा कि सम्पादक की आँखें एक छन्द पर उलझ गयी हैं। झाँककर देखा—हाँ, वही छन्द है। निशाना ठीक जगह ही लगा है।

'उच्चण्ड मारियिलटिच्चोरु वात्ययाले
उच्चालितं वद झटिद्रुलता समूहं···'

छन्द के अंश 'झटिद्रुलता समूहं' पर ही सम्पादक की आँखें लगी थीं। श्रीमान् को शायद झटिद्रु का अर्थ मालूम नहीं हुआ होगा। (झटि = पौधा। द्रु = पेड़। झटिद्रु = पेड़-पौधे।)

सम्पादक कुर्सी से उठकर धीरे-धीरे भीतर चला गया।

शायद शब्दकोश से 'झटिद्रु' का अर्थ निकालने गया होगा।

अरे सम्पादक महोदय, श्रीधरन कवि के पाण्डित्य के बारे में क्या समझते हो?

तभी संपादक की भीतर जाकर झगड़ा करने की आवाज़ सुनाई दी।

"कुछ लिखने की कोशिश करूँ तो चीज़ें जगह पर दिखाई नहीं देंगी। अरी, कहाँ चली गयी मेरी पेंसिल?"

श्रीधरन ने उस ओर ध्यान दिया। संपादक जी शब्दकोश के लिए नहीं, एक पेंसिल लेने के लिए अन्दर गये थे। (एक कलम तो मेरी जेब में है। शायद उसने उस पर ध्यान नहीं दिया होगा।)

आखिर दरवाज़े के एक छोर पर टटोलने से एक इंच लम्बी एक पेन्सिल मिली। उसको लेकर वह वापस लौट आया।

"कलम प्रेस से लेना भूल गया।" श्रीधरन को सुनाने के लिए फुसफुसाते हुए सम्पादक ने पुनः कुर्सी पर बैठकर 'मेघगर्जन, को कुर्सी के हाथ के तख्ते पर रखा। (सम्पादक ने जो पेन्सिल अपनी उँगलियों में ले रखी थी उसका सिरा जूँ के मल की तरह लगता था।)

फिर सम्पादक ने श्रीधरन के कागज़ की कविता के 'झटिद्रुलता समूहं···' के पहले 'द' के नीचे एक छोटे-से कीड़े की तस्वीर खींची। फिर उसके ऊपर 'त' नामक एक तितली को भी खींचा। फिर ज़ोर से घोषणा की "वद नहीं, वत। द नहीं —त—त—त···"

मुँह को एक बड़ी ककड़ी की तरह खोलकर त—त—त—बकनेवाले नंबीशन के मुँह पर झापड़ देने की ख्वाहिश हुई। त—त—त—तेरा बाप···

नंबीशन ने गंजी खोपड़ी को खुजलाते हुए श्रीधरन की कविता का कागज़ हाथ

में पकड़े हुए कहा, "मैं पूरी कविता एक दफ़ा पढ़कर देखूँगा। कल शाम को आ जाओ।" "फिर एक खास बात का स्मरण कराते हुए कहा, 'दर्पण' का वार्षिकचन्दा तीन रुपये है···।"

नंबीशन को एक निस्संग प्रणाम करने के बाद श्रीधरन ने बरामदे से अन्दर की तरफ़ तिरछी आँखों से देखा। वह एकदम पसोपेश में पड़ गया। महज एक कच्छी पहने एक छोटी-सी लड़की दरवाज़े के नज़दीक से ग़ौर से देख रही थी।

दरवाज़े पर पहुँचने पर मुड़कर देखा। उसकी पत्नी सम्पादक की कुर्सी के नज़दीक दिखाई पड़ी। नंबीशन ने कथकलि मुद्रा में इशारा किया कि कुछ भी नहीं मिला।

अगले दिन तीन रुपये लेकर 'कवन दर्पण' के सम्पादक के यहाँ नहीं गया। उसके बदले उसने एक मंगल-श्लोक लिखकर सम्पादक के नाम डाक से भेज दिया :

"कवन दर्पणं !—कैरली देवी तन
चरण सेवनत्तिन्नाय समर्पणं—
कवन दर्पणं—पुत्तन कविकल तन
कवित्त चेर्क्कूवान—मुनकूर वरिप्पणं।"

—सी० श्रीधरन

('कवन दर्पण' कैरली देवी की चरण-सेवा के लिए ही समर्पित है। लेकिन इसमें नये कवियों की कविताएँ प्रकाशित करने के लिए चन्दा अग्रिम देने की जरूरत है।)

साहित्य में ऊँचे स्तर का एक साप्ताहिक शहर से प्रकाशित हो रहा था।

राजा कालेज के निकट एक नंपूतिरि के घर में ही साप्ताहिक का सम्पादक राजा ठहरा था। ज़मींदार वर्ग की अपनी पत्रिका 'वसुन्धरा' का सम्पादक पंडित मूस्सतु भी उस घर में रहता था। नंपूतिरि—राजा—मूस्सतु त्रिमूर्ति के उस घर का नाम 'स्वर्ग मन्दिर' है।

इस बीच श्रीधरन वसुन्धरा गोपालन नायर से परिचित हो गया। गोपालन 'स्वर्ग-मन्दिर' का प्रधान नौकर है। सुबह नंपूतिरि वकील के लोगों पर ध्यान रखना, मूस्सतु को पान-सुपारी खरीदकर देना, 'वसुन्धरा' अखबार के प्रकाशित होने पर रेपर और टिकट चिपकाकर पता लिखने के बाद डाक-घर ले जाकर पोस्ट करना और रात को साप्ताहिक के सम्पादक राजा के प्रेस मैटर की जाँच करते समय पानी देना—ये सब गोपालन नायर के काम हैं। 'वसुन्धरा' अखबार से निकट सम्बन्ध होने के कारण ही गोपालन नायर को 'वसुन्धरा गोपालन नायर' का नाम मिला था।

गोपालन नायर साप्ताहिक के सम्पादक राजा का वैतालिक है। वह प्रतिदिन सम्पादक महोदय के पाण्डित्य, कुलीनता और हास्य-व्यंग्य के बारे में मोहल्ले-भर में पैदल चलकर प्रचार-प्रसार किया करता है।

शाम को दफ्तर से स्वर्ग मन्दिर में लौट आते समय साप्ताहिक के सम्पादक राजा के हाथ में कविताओं, कथाओं और लेखों का एक बड़ा पुलिन्दा होता। रात को बारह बजे से लेकर एक बजे तक वह मैटर पढ़ते। उसे भुनी हुई कुलथी खिलाने और सोंठ का गरम पानी बीच-बीच में पिलाने का फर्ज गोपालन नायर का था। वह कमरे में ही रहता। गोपालन नायर रद्दी की टोकरी से फेंकी कविताओं और कथाओं को चुन-चुनकर पढ़ते हुए मजा लेता और नींद हराम कर साप्ताहिक तंपुरान की सेवा करता।

श्रीधरन ने बीच-बीच में वसुन्धरा गोपालन को चाय पिलायी थी। उसका खास उद्देश्य था। एक छोटी कहानी लिखकर साप्ताहिक में भेजी थी। बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से इस बात की सूचना उसने गोपालन को दी थी। उस कथा के भाग्य के बारे में जानने की तीव्र इच्छा से ही उसने उसे अपना बना लिया था।

एक दिन शाम को कालेज से वापस आते समय रास्ते में अचानक वसुन्धरा गोपालन से भेंट हो गई। गोपालन ने हँसते हुए पूछा, "बाप और बेटा है न?"

श्रीधरन के मन में जहर का कांटा चुभ गया।

साप्ताहिक के लिए वही कहानी भेजी थी—'बाप और बेटा'

तब मेरा साहित्य वहाँ तक पहुँच गया है।

"अरे, गोपालन नायर, प्रकाशित हो जायेगी क्या?"

"श्रीधरन, कुछ नहीं कहा जा सकता। विचाराधीन है।" वसुन्धरा नायर ने जवाब दिया।

वसुन्धरा गोपालन को वह मणि अय्यर के ब्राह्मणाल होटल में ले जाकर पकवान खरीदकर देता।

"गोपालन नायर, क्या वे प्रकाशित करेंगे?"

"अभी तक कुछ नहीं कहा जा सकता। विचाराधीन है।"

हमेशा की तरह का जवाब मिलता। तीन हफ्ते के फिर बाद वसुन्धरा नायर से मिला।

वह पत्रों का बण्डल लेकर साइकिल से डाक-घर जा रहा था।

श्रीधरन को देखते ही वह साइकिल से उतरा। फिर उसे नजदीक बुलाकर, चेहरे पर एक अद्भुत रस लाकर उसने कहा, "श्रीधरन, मैंने तुम्हारी कहानी पढ़ी है।"

श्रीधरन के कलेजे में ज़हर का एक काँटा फिर चुभ गया।

वसुन्धरा नायर के पढ़ने का अर्थ कहानी को रद्दी की टोकरी में फेंक देना है।

श्रीधरन को तसल्ली देने के लिए वसुन्धरा ने जोड़ दिया, "मैंने सम्पादक महाशय से प्रार्थना की थी वह होनहार युवक है। किसी न किसी तरह साप्ताहिक में छपाना है। तो तंबुरान ने पूछा, 'किस कहानी के बारे में कहता है?'

'सी० श्रीधरन की कहानी—बाप और बेटा। तब तंबुरान ने स्मरण किया फिर उन्होंने अच्छी चुटकी लेकर कहा···"

वसुन्धरा नायर सिर ऊपर उठाते हुए मुँह में पानी भरकर हँसी से लोट-पोट होने लगा।

"सम्पादक ने क्या कहा था ?" श्रीधरन ने आशा और निराशा के बीच लाचार होकर पूछा।

हँसी को रोकते हुए वसुन्धरा नायर ने आखिर सम्पादक की बात कह ही दी :

"'बाप और बेटा' है न ?—एक गधा भी चाहिए।"

इस कहानी के उद्भव के इतिहास का श्रीधरन ने स्मरण किया।

एक खूबसूरत गोरा अन्धा था। वह चींटी के समान मोटा सिर और पतले शरीरवाले एक के लड़के साथ भीख माँगने कन्निप्परंपु में आया करता था। उस अन्धे का लड़का था वह कुट्टिचात्तन।

उस अन्धे और लड़के के सम्बन्ध को लेकर एक कहानी लिखने की इच्छा हुई।

पूर्व के मन्दिर के त्योहार में आतिशबाजियों के विस्फोट से आँखें नष्ट होने-वाले एक चात्तु से परिचय था। इस त्योहार के दिन ही चात्तु की पत्नी ने एक मुन्ने को जन्म दिया था। अब वह दस वर्ष का हो गया है।

शहर के एक अस्पताल के प्रसव-वार्ड में घटित ऐसी एक घटना के बारे में किट्टन मुंशी ने जो बात कही थी, उसका स्मरण मन में ताजा था।

एक अमीर नमक-व्यापारी नाटार की पत्नी ने अस्पताल में एक बच्चे को जन्म दिया। प्रथम प्रसव था। बच्चा मर गया था। तभी वहाँ एक और प्रसव हुआ। एक भिखारिन ने एक अच्छे मुन्ने को जन्म दिया। भिखारिन की हालत खतरनाक थी। नाटार मालिक ने नर्सों को घूस देकर अपने मुर्दे बच्चे को और भिखारी के बच्चे को आपस में बदलवा दिया। ये नाटार दंपती दुलारे बच्चे के साथ तमिलनाडु चले गये। भिखारिन की बिमारी कुछ अर्से बाद दूर हो गयी। जब उसे मालूम हुआ कि उसने एक मृत बच्चे को पैदा किया है तो वह बड़ी देर तक रोयी।

इन तीन घटनाओं के घटकों को मिलाते हुए एक नयी कहानी गढ़ने की कोशिश की गयी थी।

कहानी इस प्रकार है। उम्मतु मन्दिर का त्योहार। आधीरात को आतिश-बाजियाँ फूटने लगीं। मन्दिर के निकट के एक अहाते में चन्दोमन ने एक चाय की दूकान खोली थी। आतिशबाजियों के विस्फोटों के बीच चन्दोमन के चेहरे के सामने एक विस्फोट हो गया। इससे चन्दोमन की दोनों आँखें चली गयीं। उसका चेहरा जल गया। उस समय चन्दोमन की पत्नी कुंजिप्पेण्णु प्रसव-पीड़ा से लाचार

हो पड़ी। कुंजिप्पेण्णु की बुरी हालत देखकर मोहल्लेवालों ने उसको अस्पताल में पहुँचा दिया।

अस्पताल के प्रसव-वार्ड में एक अमीर गुजराती सेठ की पत्नी ने एक मुन्ने को पैदा किया। इस बदसूरत बच्चे के नाक, आँख, मुँह आदि बेढंगे थे। देखने में भयावना मालूम होता। बच्चे की शक्ल और तबीयत देखकर उसका बाप चमगादड़ के लहजे में रोया।

उस मुहूर्त में चन्दोमन की पत्नी कुंजिप्पेण्णु ने अपस्मार रोग-सी हरकतें करते-करते मुन्ने को जना था। वह एक खूबसूरत बच्चा था।

सेठ ने नर्सों को घूस देखकर कुंजिप्पेण्णु के बच्चे को छीन लिया। उसके बदले अपने बदसूरत बच्चे को वहाँ रख दिया। सेठ और पत्नी इस सुन्दर बच्चे के साथ बम्बई चले गये।

अन्धे चन्दोमन ने सेठ के कुरूप बेटे को अपना समझकर उसका पालन-पोषण किया।

वह कुरूप बेटा आगे चलकर चन्दोमन के लिए एक अनुग्रह सिद्ध हुआ। चन्दोमन आज उस लड़के का हाथ पकड़े मारा-मारा फिर रहा है। उस अन्धे को और इस बदसूरत लड़के को एक साथ देखकर लोगों को बड़ी हमदर्दी होती है। वे भिखारी को कुछ अधिक पैसे दान देते।

अन्धा चन्दोमन और दस वर्ष का लड़का 'कुंजिमोन' लक्ष्मीविलास बँगले में भीख माँगने आये तो वहाँ का मरीज कृष्णमेनोन चन्दोमन को बिठाकर कुछ सवाल पूछने लगा। दस वर्ष पहले मन्दिर के त्योहार में आतिशबाजी के विस्फोट से उसकी आँखें नष्ट होने, अस्पताल से पत्नी कुंजिप्पेण्णु के अपस्मार रोग से पीड़ित होकर मर जाने के पहले कुंजिमोन को जन्म देने और कुंजिमोन को पाल-पोसकर बड़ा करने की दास्तान चन्दोमन ने कृष्णमेनोन को सुनायी।

कृष्णमेनोन की पत्नी लक्ष्मिक्कुट्टि भी नज़दीक बैठकर अन्धे की कहानी ध्यान से सुन रही थी।

कहानी का पहला हिस्सा इसी प्रकार था। दूसरे भाग में लक्ष्मिक्कुट्टि ही कहानी कह रही है। सेठानी के कुरूप मुन्ने और कुंजिप्पेण्णु की खूबसूरत औलाद को अस्पताल से बदल देने के षडयन्त्र में नर्स लक्ष्मिक्कुट्टि ने एक प्रधान भूमिका अदा की थी। फिर वह कृष्णमेनोन की पत्नी बनकर इस घर में आयी है।

इस कथानक को कई बार लिखकर अपेक्षित संशोधनों के साथ नये वर्णन जोड़कर दस दिन में पूरा किया था। 'बाप और बेटा' शीर्षक से ही इसे सम्पादक को भेजा था।

इस कहानी के बारे में साप्ताहिक के सम्पादक राजा ने यह राय जाहिर की है कि इसमें एक गधे की भी जरूरत है।

श्रीधरन इस मज़ाक को बर्दाश्त नहीं कर सका।

उसी दिन साप्ताहिक राजा के नाम एक पत्र लिखकर भेज दिया।

मान्य महाशय,

मेरी 'बाप और बेटा' कहानी पढ़ने के बाद उसमें एक गधे को भी शामिल करने की राय आपने ज़ाहिर की थी। उस रिक्त स्थान को भरने के लिए आप तो वहाँ हैं ही।

धन्यवाद।

भवदीय,

सी० श्रीधरन।

श्रीधरन के दुश्मनों की गिनती अब तीन हो गयी। चील, गणित और तीसरा (नया शत्रु) संपादक-वर्ग।

## 6. लगान और कविता

श्रीधरन के गोपालन भैया की तबीयत दिन-पर-दिन बिगड़ने लगी। शरीर की खुजली और फोड़ों के फैलने के बाद गोपालन भैया फिर पनंचिरक्कावु के वैद्य को दिखाने गया। वैद्य ने एक बेहतर औषधि दी। उसमें ग्रंथिक के अलावा कुछ और जड़ी-बूटियाँ भी थीं। उसने एक भस्म भी दी। नतीजे से मालूम हुआ कि औषधि का असर कम नहीं था। उसे पीकर कुछ दिनों के अन्दर खुजली कम हो गयी। लेकिन उसके साथ गोपालन भैया की नसें थक गयी थीं। कमर के नीचे का शरीर बलक्षय के कारण सुन्न पड़ गया था।

उस असाध्य गुह्य रोग के इलाज के लिए कोरक्कुटि वैद्य के यहाँ 'उष्ण विनाशिनी ऑयल' (यू० वी० ऑयल) नामक एक औषधि थी। एरंड के तेल में कुछ जड़ी-बूटियों का रस मिलाकर ही इस तेल का निर्माण होता है। उन्हें बोतलों में भरकर यू० वी० ऑइल का लेबल चिपकाकर वह बेचता। गुह्य-रोग से आक्रान्त मरीज उस तेल को खरीदकर उसे पीने के उपयोग में लेता है। लम्बे अर्से के बाद खून का मलिन अंश घटने लगता। लेकिन वह लम्बी अवधि तक चलते रहनेवाले इलाज की योजना है। यदि कोई सुने कि अमुक आदमी यू० वी० ऑइल चिकित्सा में है तो लोग उस आदमी की बीमारी का अन्दाज लगा लेते। इस बीमारी का शिकार होने पर अप्पुण्णि की तरह अतिराणिप्पाटं के अधिकांश लोग उसका ढिंढोरा पीटकर चलनेवाले नहीं थे। इसलिए अतिराणिप्पाटं शैली में 'काटनेवाला ज़हरीला नाग' समझने पर नौजवान लुक-छिपकर एक छोटे वैद्य को दिखाते। शहर के कोने-कोने में खुजली और गुह्य रोगों को शीघ्रातिशीघ्र इलाज कर दूर करनेवाले स्पेशलिस्ट डाक्टरों ने डेरा डाल रखा था। अपनी सामर्थ्य को दिखाने के लिए ये श्रीमन्त

पहले एक प्रभावशाली औषधि देते। इससे रोग का बाह्य लक्षण अचानक गायब हो जाता। रोग के बीज खून में समाकर रह जाते। फिर दूसरे रूप में ही इन विष बीजों का अचानक आक्रमण हो जाता।

गोपालन भैया की हालत भी इसी तरह की थी। पनंचिरक्काव् का वैद्य भी इस ढंग का एक आदमी था।

खुजली बिलकुल दूर नहीं हुई। शरीर काला हो गया। पैर थक गये। लेकिन गोपालन भैया के चेहरे पर बीमारी का कोई चिह्न नजर नहीं आया। इतना ही नहीं, लगता था कि उसके चेहरे पर शरीर कें अन्य भागों के सौन्दर्य और ताजगी ने डेरा डाल दिया है। काले मुलायम बालों को सँवारकर दाहिनी ओर रखकर, विशाल ललाट, सुन्दर आँखें, लम्बी और छोर पर ज़रा मुड़ी हुई नाक, लाल-लाल ओठ, केवडे के फूल का-सा गाल बाहर निकाले, सूखे शरीर और थके पैरों को एक कपड़े से ढककर बरामदे के एक छोर पर दीवार के निकट बिस्तर पर लेटे गोपालन भैया को देखने पर अक्सर मुझे ऐसा लगता था, मानो नारायणी पुरुष का वेश धारण कर आ गयी हो।

पिताजी ने देहात के वैद्यों को लाकर दिखाया। प्रत्येक वैद्य अलग ढंग से रोग के बारे में बताता। उसके अनुसार काढ़ा, गोलियाँ, तेल आदि बनाये गये। कुछ जड़ी-बूटियों की तलाश में श्रीधरन को इधर-उधर चक्कर लगाना पड़ा।

एक वैद्य के इलाज से बीमारी दूर नहीं होती तो दूसरे को लाया जाता। वैद्य पैर में तेल लगाकर मालिश करने की आज्ञा देता। फिर कई दिनों तक यह इलाज जारी रहता।

पिताजी ने इस इलाके के प्रसिद्ध ज्योतिषी उण्णिप्पणिक्कर को लाकर गोपालन भैया की जन्मपत्री की जाँच करायी। पणिक्कर ने कहा, "पूर्वजन्म में एक पुण्य नाग को छड़ी से मार डाला था। उसका पाप फल रहा है। साँप की तरह रेंगना पड़ेगा।"

पणिक्कर ने जो कहा वह ठीक है।

बीमार होने पर भी गोपालन भैया ने अपने अभिमान और लाज-शरम को नहीं छोड़ा। मौसी हमदर्दी के साथ बिना कुछ बोले उसकी सेवा-शुश्रूषा करने को तैयार थी। फिर भी पाखाने के लिए अहाते में ही वह जाता। हाथ को ज़मीन पर टेककर कमर से पैरों को आगे बढ़ाकर साँप की तरह रेंग-रेंग कर ही वह आगे बढ़ता।

उण्णिप्पणिक्कर ने परिहार भी बताया। साँपों की प्रीति के लिए कुछ-न-कुछ करना होगा।

मरुतिक्काव् में एक सौ मुर्गी के अण्डों की मनौती की। साँपों के त्योहार की भी मिन्नत की गयी। अन्य कुछ कावों (मन्दिरों) में चाँदी के नागों की प्रतिमाएँ

दी गयीं।

अवकाश के समय श्रीधरन भैया के नज़दीक जाकर बैठता। गोपालन भैया की बीमारी की शुरूआत के दिनों में मित्रों की बड़ी भीड़-भाड़ थी। फिर उनका आना-जाना कम हो गया। फिलहाल कोई कभी-कभी ही आता।

कालेज लाइब्रेरी से उपन्यास और कविता की पुस्तकें लाकर वह गोपालन भैया को सुनाता। गोपालन भैया को कविता से ही अधिक रुचि थी, खासकर कुमारनाशान की कविताओं से।

"हाय प्यारे फूल ! तुझ पर
भी पड़े यमराज के कर
लो, दयाहीन वे कर !
कर्म जिसका, हनन होता
वह शिकारी भी कभी क्या
भेद करता गिद्ध और कबूतर में ?"

'वीणपूवु' का वह छन्द पढ़ने पर गोपालन भैया की आँखें गीली हो गयी थीं। उस समय श्रीधरन भी कुछ-कुछ भावुक हो आया।

खूबसूरत, सच्चरित्र और स्नेही गोपालन भैया को इस प्रकार मार गिरानेवाला भगवान निष्ठुर है।

कालेज लाइब्रेरी से कुमारनाशान की किताबें लाने लगा। आशान की कविताओं से परिचित होने में श्रीधरन को नया जोश मिलने लगा।

गोपालन भैया को मालूम नहीं था कि श्रीधरन भी कविताएँ रचता है।

एक शनिवार की सुबह श्रीधरन गोपालन भैया के नज़दीक बैठकर आशान की 'नलिनी' पढ़ रहा था। श्रीधरन की-सी व्युत्पत्ति गोपालन भैया में नहीं थी। अतः कुछ काव्यांशों का अर्थ और सार श्रीधरन बताता। श्रीधरन जो कुछ नहीं समझता वह टिप्पणी से समझ लेता।

"निज निज कर्मों के चक्कर में पड़
फिरते रहते जीव करोड़ों सीमाहीन।
बीच-बचाव की गति में आपस में
मिलनेवाले अणु गण हैं हम।"

इस काव्यांश की अर्थ ठीक तरह से व्याख्या करने में श्रीधरन सकपका रहा था। तभी एक आदमी आते हुए दिखाई पड़ा। शंकुण्णि मेनोन था।

श्रीधरन अपने पिताजी के बाद शंकुण्णि मेनोन का भी अधिक आदर करता था। वह म्युनिसिपल लगान वसूल किया करता था।

शंकुण्णि मेनोन की वेशभूषा कृष्णन मास्टर की तरह है। एक धोती, बन्द गले का कोट, काली टोपी, चप्पल, छतरी, चश्मा, ललाट पर चन्दन की तरह का

एक तिलक, कान में एक पेन्सिल और बगल में लगान की एक किताब। लगान वसूल करनेवाली किताबों के बड़े बण्डल को ढोता एक लड़का भी साथ होता।

लगान अदा न करने पर माँ-बाप, भाई और उस आदमी को घर से निकाल कर, दरवाज़ा बन्द कर मुहर लगाने का हक उस सरकारी नौकर शंकुण्णि मेनोन को है—ऐसी एक धारणा बचपन से ही श्रीधरन के मन में थी। अब तो यह डर नहीं रह गया है, पर शंकुण्णि मेनोन के प्रति जो आदर था वह भी कम नहीं हुआ।

शंकुण्णि मेनोन अपने कन्धे की किताब उठाकर उँगली पर थूक लगाकर बीच-बीच में पृष्ठ उलटते और जल्दी से 'कन्निप्परंपु' के घर का कागज फाड़कर दे देते। उस समय उसे स्वीकार करने में श्रीधरन को बड़ा उत्साह होता था। वह उस लगान के कागज़ में लिखी बातों को ध्यान से पढ़ता। सबसे पहले यह कागज़ 'यह रसीद नहीं' की चेतावनी ही देता दिखाई पड़ता। एक विज्ञप्ति है। हर-एक कालम में अदा करनेवाली लगान की रकम और कुल रकम की संख्या इसमें स्याही से लिखी गयी होती। उसमें लिखे हुए एक किस्म के लगान के बारे में श्रीधरन कुछ भी नहीं जान सका। 'पानी और ड्रेनेज का लगान'— एक बार पिता जी से पूछा। कृष्णन मास्टर ने स्पष्टीकरण दिया, "पाइप-वाटर और गन्दे नालों के लिए ही यह लगान वसूल करता है।"

लड़के को फाटक पर रोककर शंकुण्णि मेनोन आँगन में आया।

कृष्णन मास्टर तेल लगाये एक तौलिया पहनकर कुदाल से अहाते में खोद रहे थे।

शंकुण्णि मेनोन अब लगान का पैसा वसूल करने के लिए ही आया है। पैसा अदा करने की मुहलत गुज़र गयी थी।

कृष्णन मास्टर कुदाल नीचे रखकर फुर्ती से आँगन में आये।

"शंकुण्णि मेनोन, अगले हफ्ते आइए। तब पैसे का बन्दोबस्त कर यहीं रखूँगा।" कृष्णन मास्टर ने माफी माँगने के लहजे में कहा।

शंकुण्णि मेनोन ज़रा हिचकिचाकर खड़ा रहा। कृष्णन मास्टर से वह हठ नहीं कर सकता था। लेकिन एक बार कहने पर मास्टर उसका ज़रूर पालन करते।

शंकुण्णि मेनोन ने अपना सिर हिलाया। फिर बरामदे की तरफ़ निगाह घुमायी।

"क्या बेटे की बीमारी दूर नहीं हुई ?"

कृष्णन मास्टर ने विषादभरे स्वर में कहा, "बीमारी में अधिक सुधार नहीं हुआ है।" फिर उन्होंने इलाज करनेवाले वैद्य और पीनेवाली दवाओं के बारे में विस्तार से बताया।

यह सुनकर शंकुण्णि मेनोन ने कुछ विचार कर अपने चेहरे को ज़रा मोड़ा, फिर कहा, "मुरिंगवट्टतु एक वैद्य है — एक मूस्सतु। वात-चिकित्सा के लिए बड़े मशहूर हैं। उन्हें एक बार दिखा दो।"

गोपालन भैया अभी रामुण्णि वैद्य के इलाज में है। चौदह गाँठ का काढ़ा, जड़ी-बूटी का एक पेस्ट भी। सात दिन बीत गये। उसका कोई नतीजा नहीं हुआ। सात गाँठ और भी पीनी होंगी।

कृष्णन मास्टर ने यह किस्सा शंकुण्णि मेनोन को नहीं बताया।

"मूस्सतु के हाथ में एक सिद्ध भस्म है—पक्षवात फौरन दूर हो जावेगा" शंकुण्णि ने मुड़कर देखते हुए कहा।

"जरूर दिखाऊँगा एक बार।" कृष्णन मास्टर ने सिर हिलाया।

"खैर, अगले शनिवार को मिलेंगे।" लगान की बात पुनः एक दफा याद दिलाते हुए शंकुण्णि मेनोन चला गया।

आगामी शनिवार।

श्रीधरन बरामदे में बैठकर एक कविता लिख रहा था।

प्रकृति के प्रतिभासों की प्रशंसा करके एक नयी कविता रची थी। उसकी थोड़ी-बहुत पंक्तियाँ लिखी गयी हैं।

'जहाज़ आया' कविता को शीर्षक दिया।

अपने सिर के बालों को सहलाते हुए वह आखिरी दो पंक्तियों का आशय ढूँढ़ रहा है।

"श्रीधरन, जल्दी जा। नीचे जाकर बता" शंकुण्णि मेनोन आ रहा है, उससे कहो कि पिताजी यहाँ नहीं हैं। जल्दी जाओ। नहीं तो गोपालन सच-सच कह देगा।"

श्रीधरन सकपकाकर खड़ा रहा। जहाज की कविता मेज पर ही थी। अगर पिताजी उसे देखेंगे तो छिपाने की कोशिश करना और भी खतरनाक है।

वह तुरन्त सीढ़ियाँ उतरकर नीचे बरामदे में पहुँच गया। शंकुण्णि मेनोन फाटक से आ रहा था।

श्रीधरन ने गोपालन भैया को इशारा करके बताया कि कुछ भी नहीं कहना है।

रसीद की किताब कन्धे पर लटकाये शंकुण्णि मेनोन आँगन में आकर खड़ा हो गया। "क्या मास्टर नहीं हैं?"

"नहीं, सुबह ही कहीं निकल गये।" श्रीधरन ने बिना झिझक के कहा।

"क्या लगान का पैसा यहाँ रखा है?" मेनोन ने पूछा।

"मुझे नहीं मालूम। माँ से पूछकर अभी बताता हूँ।"

श्रीधरन ने कमरे के दरवाजे की ओट में कुछ देर छिपकर खड़े रहने के

बाद रसीद-बुक फैलाकर खड़े हुए शंकुण्णि मेनोन को बताया, "नहीं, माँ ने कहा कि इधर कुछ भी नहीं रख गये हैं।"

शंकुण्णि मेनोन ठिठककर खड़ा हो गया।

फिर वह ललाट और ललाट की मकड़ी के अण्डे को सिकोड़कर जरा कर्कश स्वर में बोला, "लगान का पैसा अदा करने की मुहलत बीते दो महीने हो गये।"

रसीद की किताब उसने अपने कन्धे पर लटकायी।

"मैं परसों आऊँगा। पिताजी से कहो कि 'हर्गिज नहीं भूलना चाहिए। पैसे यहीं रखकर ही कहीं जायें।"

श्रीधरन ने सिर हिलाया।

शंकुण्णि मेनोन ने बरामदे में देखा।

"क्या मुरिंगवट्टतु मूस्सतु को दिखाया था?"

श्रीधरन ने ही उसका जवाब दिया, "माँ ने कहा है कि पिताजी सुबह वैद्य को लाने के लिए मुरिंगवट्टतु ही गये थे।"

बाबूजी ने शंकुण्णि मेनोन को पिलाने के लिए जिस झूठ का काढ़ा तैयार किया था, उसमें श्रीधरन ने जरा चीनी डाल दी।

शंकुण्णि मेनोन ने उसका आस्वादन कर सिर हिलाया। फिर वह चलने लगा। फिर मुड़कर गोपालन भैया को देखकर जोर से उपदेश दिया, "मूस्सतु के भस्म के लिए पथ्य की प्रधानता है। सुना रे?"

गोपालन भैया के चेहरे पर एक अपूर्व मुस्कुराहट थिरक गयी।

शंकुण्णि मेनोन फाटक से उतरकर पगडंडी से दूर पहुँच गया।

"तेरा अभिनय और बातचीत बढ़िया थे।" गोपालन भैया ने श्रीधरन को बधाई दी।

श्रीधरन शान के साथ हँस पड़ा। फिर अचानक उसका चेहरा मुरझा गया।

पिताजी मेरी 'जहाज' कविता पढ़ते होंगे। पाठ पढ़े बिना फिर कविता का काम शुरू करते देखकर वे अब चुपचाप नहीं रहेंगे।

पिताजी एक बेंत लाये थे। उसकी प्रथम पूजा आज हो जाएगी।

धड़कती छाती के साथ वह सीढ़ियाँ चढ़ गया। बाबूजी एक कोने में छिपकर खड़े थे।

"चला गया?"

श्रीधरन से भी अधिक घबराहट कृष्णन मास्टर के चेहरे पर थी।

कृष्णन मास्टर ने तेल मलकर कुदाल उठाकर व्यायाम करते समय ही शंकुण्णि को दूर से आते देखा था। तभी लगान के पैसे की बात का स्मरण हो आया। महीने का आखिरी सप्ताह है। तनख्वाह नये महीने में ही मिलेगी। गोपालन के इलाज के लिए बहुत अधिक पैसे खर्च करने पड़े। हाथ में पैसे न थे। फिर भी

शंकुण्णि मेनोन की मुहलत की बात की याद करके अपने वादे को निभाने के लिए किसी से उधार माँगता। अब मैं कैसे उसका मुँह देखूँ ?

छिपना ही भला है : बुद्धि ने सलाह दी, लेकिन असत्य का सवाल है। मन ही मन फुसफुसाया।

कोई चारा न था। अपने सत्यव्रत-भंग का जिम्मेदार शंकुण्णि मेनोन को मानकर उसे मन में कोसते हुए मास्टर कुदाल फेंककर दौड़ गये। वह सीधे ऊपर के वरामदे में गये और विवश होकर एक झूठा संदेश अपने बेटे को देकर उसे नीचे भेज दिया। फिर मास्टर घबराकर इन्तजार करते रहे।

"गया — गया—परसों आने को कहा है।" श्रीधरन ने अपने डर और आशंका को छिपाते हुए कहा।

कृष्णन मास्टर ठण्डी साँस खींचते हुए बरामदे से चले। 'कुट्टिमालु के गहनों को गिरवी रखकर भी परसों पैसा देना होगा' स्वगत की तरह फुसफुसाते हुए वह सीढ़ियाँ उतरकर नीचे गये।

श्रीधरन ने भी एक लम्बी साँस छोड़ी।

अन्दर घुसकर देखा। 'जहाज़' कविता वहीं पड़ी थी।

क्या पिताजी ने उसे देखा होगा ?

शायद उन्होंने देखा होगा। फिर क्यों खरी-खोटी नहीं सुनायी ?

श्रीधरन को याद आया कि वाबूजी ने मेरे चेहरे की तरफ़ नहीं देखा था। अपनी जीभ से अपने पुत्र को झूठ कहने की प्रेरणा जिस पिता ने दी थी, वे कैसे उसके चेहरे पर ताकते ?

नहीं, शंकुण्णि मेनोन के प्रश्न की घबराहट के बीच मेज़ की जाँच करने की सुविधा उन्हें नहीं मिली होगी।

जो भी हो, एक बड़ी आँधी से मेरा जहाज़ बच गया है। श्रीधरन ने अपनी अपूर्ण कविता 'जहाज़' को पुनः एक बार पढ़ा :

"काल जलधि में दौड़ लगाती
नील रजनी की नाव
खग विनोद के मंजुल लंगर की
सांकल की रुनझुन के साथ
आ लगती लो, सोनिल ऊषा के नौघर में।
झिलमिलाते दूर कुछ
भुरकुआ, दीपिका-गृह।
उस पार कहीं से इस नाव नौघर में
आ लगी जादू-भरी इस नाव में
हैं तो नये माल, मणि-मणिक ही नहीं,

काजल है, चन्दन है
हिम सा है मंजुल श्वेताम्बर रेशमी ।
भाड़ के भांड़ सपने हैं इसकी
निचली मंजिल में पूरे के पूरे ।"

इतना ही लिखा था। सिर के बालों को पकड़कर उँगलियों से घुमाते हुए सोचा। और फिर कविता की इस प्रकार पूर्ति की —

'हज़ारों करों से लूटते हो क्या—
ये माल, तुम हे नभ-नाथ ?'

## 7. जयमोहन

कालेज जाते हुए, सुबह के समय कभी-कभी उसे रास्ते में दिखाई पड़ती थी।

हरे रंग का घाघरा, सफेद ब्लाउज़, छाती पर ढेर सारी पुस्तकों का बोझ ढोते हुए···

नायक की दृष्टि पहले पैरों को चूमनेवाले घाघरे के निचले हिस्से पर उलझती, फिर क्रमशः अन्य-अन्य हिस्सों पर उठती जाती। अंग्रेज़ी सचित्र मासिक के पृष्ठों को पकड़नेवाले सुन्दर हाथों पर आँखें थोड़ी देर अटकी रहती। उसके दूसरे हाथ में छोटी-सी एक छतरी होती। छतरी की मूंठ आम की गुठली की तरह थी।

मन्दिर के कोने में पहुँचने पर नज़दीक के पट्टर मठ के फाटक पर तनिक खड़ा हो जाता। वहाँ से एक रास्ता कालेज की तरफ़ और दूसरा गर्ल्स हाई स्कूल की ओर मुड़ता।

एक शुक्रवार की सुबह अच्छे मुहूर्त में उसने अतिराणिप्पाटं के कोने से उसका पीछा करने का इरादा किया। उसका पीछा करता वह मन्दिर के कोने तक पहुँच गया। नायिका हमेशा की तरह पट्टर मठ के फाटक पर रुक गयी। उसके साथ ही नायक की गति भी रुक गयी।

कौवों को उड़ानेवाली छड़ी लिये आँगन में एक चटाई पर बिछे अनाज की रखवाली करनेवाली पट्टर मठकी ब्राह्मणी ने (जो सोने की नथुनी पहने हुए एक अधेड़ औरत है) बरामदे से अन्दर झाँककर कहा, "अरी, तंकमणि लीला वंदाच्चु—"

(तंकमणि उसकी सहपाठिनी होगी।)

नायक नज़दीक की एक स्टेशनरी की दूकान के सामने रुक गया।

"क्या पेन्सिल है ? पेरुमाल चेट्टि वायलट पेन्सिल ?"

दूकानवाले बुजुर्ग नायर ने 'नहीं' के अर्थ में सिर हिलाया।

दस सूखे पानों और चार सोडा बोतलों के साथ समय गुज़ारनेवाले उस बूढ़े की दूकान में अच्छा स्टेशनरी का सामान नहीं होगा, यह जानते हुए ही उसने

पूछा था।

पट्टर मठ से हरे घाघरेवाली ने मुड़कर देखा। दोनों की तिरछी आँखें टकरायीं। बस, वह तृप्त हो गया। उद्देश्य पूरा हुआ।

हृदय में एक गीत संजो वह कालेज की ओर चला।

कालेज में पहुँचने पर एक अच्छी खबर मिली। गणित के प्राध्यापक रंगनाथ अय्यंगार छुट्टी पर हैं—चेचक के कारण।

वह लाइब्रेरी में गया।

कालेज लाइब्रेरियन कुन्निकृष्ण मेनन ने मुस्कराते हुए श्रीधरन का स्वागत किया। गोरे-चिट्टे, दुबले-पतले, प्रसन्नचित्त कुन्निकृष्ण मेनन साहित्यिक रुचि भी रखते हैं। श्रीधरन से उन्हें विशेष स्नेह है। कालेज मासिक में प्रकाशित उसकी कविता पढ़कर सबसे पहले श्रीधरन को बधाई देनेवाले मान्य व्यक्ति कुन्निकृष्ण मेनन थे।

"आशान की लीला···" श्रीधरन ने माँगी।

अलमारी खोलकर पुस्तक निकालते समय कुन्निकृष्ण मेनन ने अपना विचार प्रकट किया, "मुझे लीला से भी अधिक नलिनी पसन्द है।"

श्रीधरन की राय भी वही है। लेकिन अभी उसे लीला की ही ज़रूरत है।

> "प्रणय विह्वला तेरे शुभ हो
> उठ जाग, है प्रियतम तेरे एक ठौर में।"

ये पंक्तियाँ दस बार पढ़ीं। रोंगटे खड़े हो गये। क्रान्तिदर्शी आशान को प्रणाम किया।

शाम हुई। मधुर प्रतीक्षा के साथ वह कालेज से बाहर आया। मन्दिर के कोने की पगडंडी के नजदीक पहुँचते ही उसे गति कम करनी पड़ी। कालेज और गर्ल्स हाईस्कूल से मन्दिर के कोने की दूरी बराबर है। उसे लगा वह कालेज से एक खरगोश की तरह दौड़ आया है। फिर कछुवे की तरह हौले-हौले चलने लगा। पगडंडी के दोनों ओर लगे पौधों को निहारते हुए वह मन्दिर के कोने पर पहुँचा तो देखा कि वह पूर्व दिशा से आ रही है।

पश्चिम के सूरज ने उस सड़क पर लाल रेशमी कपड़ा बिछा दिया था।

उसके साथ तंकमणि भी थी। वह साधारण नाक-नक्शवाली पतली देह की लड़की है।

ब्राह्मण लड़की अपनी सखी से ठिठोली करती हँसती हुई मठ के फाटक से चली गयी।

हरे घाघरेवाली सिर नीचा किये पश्चिम दिशा की ओर चलने लगी।

एक कोने में इंतजार करनेवाले नायक को उसने ज़रूर देखा होगा। महाकवि ने ठीक ही लिखा था—

'अपने इष्ट जनों का रूप निहारने
होतीं सूक्ष्म निगाहें ललनाओं की।'

हरे घाघरेवाली के पीछे धड़कता हुआ दिल लिये वह भी चल दिया। इस तरह चलते हुए कटहल के पत्तों के पीछे जीभ हिलाकर चलनेवाली बकरी की तस्वीर की याद ताजा हो आयी। इस पर उसने अपने को कोसा। (अनावश्यक संदर्भों से ही मन में इस तरह के विचार उठते हैं।)

अगर कण्णन को नहीं देखता तो हरे घाघरेवाली के पीछे अनजाने ही अतिराणिप्पाटं की सीमा को पार कर दूर पहुँच जाता।

अतिराणिप्पाटं के मोड़ पर मोटी कुंकुच्चियम्मा के घर का नौकर कण्णन एक ट्रैफिक कांस्टेबिल की तरह खड़ा था।

"स्टॉप !" कण्णन ने हाथ हिलाकर कहा।

"मैं तुम्हें देखने के लिए ही इधर खड़ा हूँ।"

"कुंकुच्चियम्मा ने घर आने को कहा है।"

"क्या कोई खास दावत है वहाँ ?"

"कुंकुच्चियम्मा का भाई कणारन मिस्तरी मोहल्ले से आया है। इस उपलक्ष्य में भोज है वहाँ।"

"प्रीतिभोज में क्या-क्या होगा ?"

"चाय और पकवान···हमारे संघ के सभी लोगों को निमन्त्रित किया है।"

(हमारा संघ ! सप्पर सफर संघ में एक बार ही वह आया था। और कहता है कि हमारा संघ)

"वासु भैया, केलुक्कुट्टि भैया और बढ़ई माधवन भी वहाँ हैं। ये लोग कालेज से तुम्हारे आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"तू चल। मैं अभी आऊँगा।"

"जल्दी आना।"

"हाँ।"

कण्णन दौड़कर चला गया।

पश्चिम दिशा की ओर उसने फिर निगाह डाली। पीछे से आ रही फूस से भरी एक बैलगाड़ी धीमी गति में उस ओर चली गयी। इस गाड़ी ने हरे घाघरेवाली को ओझल कर दिया। फूस की गाड़ी के आने का अपशगुन ! अब उसे एक नज़र-भर देखने के लिए सोमवार तक इंतजार करना होगा।

कन्निप्परंपु पहुँचकर उसने मेज़ पर किताबें रख दीं। फिर कुछ सोचकर एक नोटबुक को उठाते हुए वह सीधा रसोईघर में माँ के पास आया। "मैं नारायण नंपियार के घर जा रहा हूँ।"

"तुझे चाय नहीं पीना है ?" माँ ने पूछा।

"नहीं, नंपियार के घर पी लूँगा।"

हड़बड़ी में वह बाहर आया।

गोपालन भैया पैर में कोई दवा मलकर लेटा है। (अभी गोपालन भैया कुन्न-लवि मास्टर के इलाज में है।)

पिताजी नहीं आये। वे पुलिक्कश कुन्नम्मद हाजी के बच्चों की ट्यूशन करने जाते थे। आठ बजे के बाद ही वापस लौट पाते।

मोटी कुंकुच्चियम्मा के घर तक पहुँचने पर टी-पार्टी शुरू हो चुकी थी।

"माइनर आ रहा है।" श्रीधरन को देखते ही केलुक्कुट्टि ने दरवाजे की ओर इशारा करते हुए कहा।

(उन्नीस वर्ष का होने पर भी सप्पर सफर संघ में श्रीधरन अब भी माइनर ही है। भले ही वह सीनियर इन्टरमीडियेट में पढ़ रहा है।)

मोटी कुंकुच्चियम्मा का भाई कणारन मिस्तरी उत्तर के मुक्कलश्शेरी से आ पहुँचा है। वह अपनी बहन को देखने और मुक्कलश्शेरी के अपने नये घर के लिए शहर से फ़र्नीचर का सामान खरीदने के लिए आया है।

कणारन मिस्तरी की मुक्कलश्शेरी में दर्जी की दूकान है। उस दूकान में तीन सिंगर मशीनों पर चार सिलाईवाले काम करते थे। कणारन मिस्तरी एक दुबला-पतला आदमी है। भाई-बहिन एक साथ खड़े होने पर '10' के अंक की तरह लगते।

वहाँ उस्ताद वासु, बढ़ई माधवन और दामू थे। (बालन कमर में एक फोड़े की वजह से चल नहीं सकता था। विलयम साहब की मेम साहिबा के कुछ कपड़ों पर इस्त्री करने की व्यस्तता होने के कारण 'काली बिल्ली' ने प्रीतिभोज में भाग लेने की अपनी असुविधा की सूचना भिजवा दी थी।) दामू संघ का एक नया सदस्य है। शहर में एक मुसलमान की कपड़े की दूकान में असिस्टेंट का काम करनेवाले दामू को 'बैल' का उपनाम मिला था। क्योंकि दामू कभी-कभी मुस्लिम होटल में जाकर बैल का माँस खाता था।

कुंकुच्चियम्मा ने टी-पार्टी में चार-पाँच पकवान तैयार किये थे। अति-राणिप्पाटं के देशीय पकवान 'छठ नम्बर' (अमरीकन रवे के छोटे पापड़ नारियल के तेल में भूनकर उस पर चीनी डालकर तैयार किया गया पकवान) के अतिरिक्त मुसलमानों का पकवान मण्डा (चावल का पाउडर, रवा, अंगेर, बदाँ, गुड़ आदि को नारियल के तेल में भूनकर बनाया गया), कलन्तप्पं (चावल की एक प्रकार की रोटी), आदि पकवान थाली में परोस दिये गये।

खाते समय कणारन मिस्तरी और दामू किसी चर्चा में मग्न हो गये। इसी सन्दर्भ में श्रीधरन वहाँ आ पहुँचा।

कणारन मिस्तरी कह रहा था, "एक सौ नारियल के फूलों के गुच्छों की तरह

है वह।"

दामू ने जवाब दिया "वह तो अधिकारी का प्यारा जयमोहन है।"

"वह मिले तो···"

"देख लिया मेरे कणारन का मोह। आसमान के चांद को पकड़ना इससे आसान है।" कुंकुच्चियम्मा ने अपना विचार प्रकट किया।

श्रीधरन की पकड़ में बात आयी। चाप्पुण्णि अधिकारी के आँगन के सफ़ेद 'प्रिन्स ऑफ वेल्स' पौधे के बारे में बातचीत हो रही थी।

अधिकारी के आँगन को चार चाँद लगा देनेवाला सफ़ेद प्रिन्स पौधा शहर-भर में मशहूर है। उसकी सुन्दरता देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। एक आदमी की ऊँचाई में पले उस डंठल के चारों ओर समृद्ध लम्बे पत्ते · एक अद्‌भुत दृश्य है। ऐसा लगता कि आँगन में एक बड़ा मोर अपने पंख फैलाकर खड़ा है।

काठ के गोदाम के मालिक हाजी ने एहसानमन्द होकर चाप्पुण्णि अधिकारी को यह पौधा भेंट किया था। एक बड़े पीपे में मिट्टी भरकर उस पौधे को बोया था। उस पीपे के साथ ही इस विशिष्ट पौधे को एक ठेले में चढ़ाकर अधिकारी के घर पहुँचा दिया था। चार-पाँच आदमियों ने उठाकर इसे घर के सामने लगा दिया था। सौन्दर्य के अलावा सौभाग्य के लक्षणवाला यह पौधा पौधों का राजकुमार है। इसके पहुँचने के दस महीने बाद ही अधिकारी के यहाँ एक बेटा पैदा हुआ। (उससे पहले उसकी सात लड़कियाँ थीं।)

पालतू जानवरों को लोग नाम से ही पुकारते हैं। पर, क्या किसी ने पौधों को नाम से पुकारते हुए सुना है? चाप्पुण्णि अधिकारी ने सफ़ेद 'प्रिन्स' को वात्सल्य के कारण 'जयमोहन' नाम दिया है।

इस नाम के पीछे भी एक इतिहास है। लड़का पैदा होने पर उसे 'जयमोहन' के नाम से पुकारने की अधिकारी की ख्वाहिश थी। मगर सफेद प्रिन्स मिलने पर उसने यह नाम इस दुलारे पौधे को दे दिया। फिर दस महीने बाद मुन्ने का जन्म होने पर पौधे से भिन्न नाम बेटे को दे दिया 'वत्स राजन'!

सुबह उठने पर अधिकारी शुभ-शगुन में जयमोहन को देखता। वह तोंद को सहलाते हुए मुस्कराकर कुशल-क्षेम पूछता, "कैसे हो बेटा जयमोहन?" उसकी खूबसूरती देख वह खुशी से फूला न समाता। उसके सफ़ेद मुलायम पत्तों को सहलाता। कहीं पत्ते में कोई धूल न लगे, इस ख्याल से हर पत्ता ध्यान से देखने लगता। अगर कहीं धूल होती तो एक मुलायम कपड़े से उसे बड़ी सावधानी से हटाता।

अगर कोई मज़ाक नहीं करे तो सुबह को पानी सींचने के बदले वह गाय का दूध ढालता।

चाप्पुण्णि अधिकारी के इस प्रिय सफेद प्रिन्स पर ही कणारन मिस्तरी की आँखें लगी थीं। कुंकुच्चियम्मा के कहे अनुसार आसमान का चाँद लाने की कोशिश

करना इससे आसान है।

"टेलर मास्टर सुनो !" रोटी का कौर चबाते हुए उस्ताद वासु ने एक घोषणा की।

कणारन मिस्तरी का कौर मुँह में ही रुक गया।

"दो आने देने पर मैं अधिकारी के पौधे की चोरी करके लाऊँगा।"

मिस्तरी ने समझा कि वासु झूठ बोल रहा है।

"वह···वह मिले तो मैं दो-सौ रुपये देने को तैयार हूँ।"

"दो-सौ और तीन-सौ की ज़रूरत नहीं।" वासु ने कुछ चबाते हुए कहा।

"दो आने काफ़ी हैं, दो आने। समझे ! अधिकारी के जयमोहन को पकड़कर मिस्तरी के सामने पेश करूँगा। नहीं तो मैं 'वालक्कुन्नु वासु नहीं।"

जब मिस्तरी को मालूम हो गया कि वासु मज़ाक में नहीं, गम्भीरता से कह रहा है तो कणारन मिस्तरी को ज़रा जोश आया।

"हाथ मिलाओ !" मिस्तरी ने वासु की ओर अपना हाथ पसारा।

"पहले दो आने दो !" वासु ने भी हाथ मिलाया।

कणारन मिस्तरी ने जेब से दो आने निकालकर वासु की हथेली पर रख दिये।

वासु ने पैसा जेब में डालकर हाथ को नीचे झुकाते हुए तनिक गर्व से कहा, "लेकिन एक शर्त है।"

कणारन मिस्तरी ने उत्कण्ठा से वासु की ओर देखा।

वासु ने कहा, "शर्त यह है कि कल रात अधिकारी के जयमोहन पौधा को इधर पहुँचते ही आधे घण्टे के अन्दर तुम्हें यहाँ से पौधे के साथ तुरन्त नदारद होना है, सुबह साढ़े चार बजे की ट्रेन से सीधे मुक्कलश्शेरी को।"

कणारन मिस्तरी ने यह शर्त भी मान ली।

(टेलर मास्टर पौधा मिलते ही हनुमान की तरह उड़ने को तैयार हो गया।)

"हाथ मिलाओ।" वासु ने हाथ पसारा।

इस तरह उस्ताद वासु और कणारन मिस्तरी ने हाथ मिलाया। उन दोनों को अपनी शर्तों पर अडिग रहते देखकर मोटी कुंकुन्चियम्मा ने कहा, "बेटा, खेलते-खेलते आखिर गुरु की छाती पर सवार होने की सोच रहे हो।"

दरअसल वह खेल खतरनाक ही है। गोरे कलक्टर साहब भी शहर के मुखिया अधिकारी की इज्ज़त करते हैं। अधिकारी अपने प्राणों से भी अधिक प्रिन्स पौधे—'जयमोहन' से प्यार करता है। पत्थर की ऊँची दीवारों के अन्दर ही वह अहाता है। उस दीवार पर एक लोहे का फाटक है। इसके अलावा वहाँ टाइगर नामक एक खूंखार कुत्ता भी है। अपने आगे के पैरों को दीवार पर रखकर चेहरे को विकृत कर एक बार पगडंडियों में जाते समय श्रीधरन की ओर इस खूंखार कुत्ते ने आँखें फाड़कर देखा था। वह दृश्य श्रीधरन अब तक नहीं भूला। सोडा बोतल की

स्फटिक गोटी की तरह उसकी आँखें हैं। विलयम साहब के मेज के चाँदी के काँटों-जैसे उसके दाँत हैं! ताँबे के बर्तन को लोहे की छड़ी से टकराने की-सी उसकी आवाज़ है। उसके रास्ते से हटकर ही जाना पड़ेगा।

क्या यह सब भूल कर उस्ताद ने शपथ लेकर दो आने जेब में डालकर हाथ मिलाया था?

श्रीधरन यह भी नहीं समझ पाया कि इस दो आने की उसे क्या ज़रूरत थी।

चाप्पुण्णि अधिकारी के घर पर आक्रमण करने की योजना में शरीक होने में श्रीधरन को और भी अवरोध थे। कृष्णन मास्टर और चाप्पुण्णि अधिकारी अच्छे मित्र हैं। दाक्षिणात्य बुनकरों, मोहल्लेवालों और केलंचेरी मेलान के बीच के मन-मुटाव में अधिकारी, कृष्णन मास्टर के साथ तीसरे गुट में खड़ा है। इस ढंग के एक प्रमुख व्यक्ति के यहाँ, चाहे वह कितना भी कंजूस और शोषक क्यों न हो, चोरी करने का बन्दोवस्त हो रहा है। अगर इसका भेद खुल जाय तो इलाका छोड़कर कहीं दूर जाने के सिवा और चारा नहीं है।

अधिकारी के घर पर आक्रमण करने के कार्यक्रम के पहले दामू ने कुछ आशंका ज़ाहिर की:

"वासु भैया, इसकी ज़रूरत न थी।" दामू ने अपनी थाली खाली करते हुए कहा।

श्रीधरन ने भी ज़रा प्रोत्साहन दिया, "अधिकारी के घर में बाघ जैसा एक कुत्ता है।"

शक्करभात केलुक्कुट्टि ने बात काटकर कहा, "चाहे बाघ हो या बाघिन, अधिकारी के दाँत तो एक बार खट्टे करने ही हैं।"

शक्करभात सफ़ेद प्रिन्स पौधे की चोरी करने में नहीं, बल्कि अधिकारी की नाक में दम करने में अधिक तत्पर है। इसका खास कारण था।

छह महीने पहले एक दिन केलुक्कुट्टि की गाय दिखाई नहीं पड़ी। कई जगह उसकी तलाश की, लेकिन कुछ पता न लगा। छह-सात दिनों बाद ही मालूम हुआ कि वह अधिकारी के बाड़े में है। रात में किसी के अहाते में घुसकर चरने से किसी ने अधिकारी की पशुशाला में बाँध दिया था। सात दिन भोजन का खर्च और जुर्माना अदा करने के बाद ही गाय को पशुशाला से छोड़ा गया था।

केलुक्कुट्टि का विचार है कि अगर अधिकारी ज़रा मेहरबानी करता तो एक कानी कौड़ी दिये बिना भी वह गाय को ले जा सकता था। इसलिए अब अधिकारी को मज़ा चखाने का यह अवसर वह खोना नहीं चाहता है।

बढ़ई माधवन भी तैयार था। उसका विचार है कि यह अधिकारी के घर पर आक्रमण नहीं, हजूर कचहरी का ख़ज़ाना लूटने का कार्यक्रम है।

सबकुछ सुनकर खामोश रहनेवाले उस्ताद वासु ने आखिर घोषणा की, "कल

रात सप्पर नहीं करेंगे—हमें टहलना ही होगा। हम चाप्पुण्णि अधिकारी के घर चलेंगे। अगर किसी को डर है तो न आओ।"

तब माइनर और बैल के साथ सबने ज़ोर से कहा, "आयेंगे, ज़रूर आयेंगे। हमें डर बिलकुल नहीं।"

अगले दिन शनिवार था।

एक गुप्त सैनिक आक्रमण के सही मौके की प्रतीक्षा में बैठनेवाले लेफ्टिनेंट की सतर्कता के साथ श्रीधरन बारह बजे की घण्टी बजने का इन्तजार करने लगा।

बारह बजे की घण्टी बज उठी।

घर के बरामदे के दरवाज़े पर कोने की पत्थर की सीढ़ी में पैर रखते ही याद आया कि नीचे गोपालन भैया लेटा है।

उस पल पहले-पहल गोपालन भैया से और उसकी बीमारी से नफरत हुई।

गोपालन भैया मुझे आधी रात को चोर की तरह चुपचाप दबे पाँव उतर कर चलते देखें तो मेरे बारे में उनके मन में बुरी धारणाएँ ही होंगी। श्रीधरन को मालूम था कि मोटी कुंकुच्चियम्मा के बारे में कन्निप्परंपु और पड़ोस के लोगों की अच्छी धारणा नहीं थी। इसलिए 'कुंकुच्चियम्मा के घर जाता हूँ' कहने पर इससे शक ही पैदा होगा। इधर ठीक समय पर कुंकुच्चियम्मा के घर में माइनर को न देखने पर उस्ताद कहेगा, 'डरपोक कहीं का।' फिर वे सप्पर संघ से बाहर निकाल देंगे।

एक पल वह ठिठका-सा खड़ा रहा। कहानीकारों के शब्दों में 'एक निर्णायक पल।'

मुँह मोड़ने का सवाल ही नहीं उठता। श्रीधरन ने मन को दृढ़ करते हुए अपने-आपसे कहा, "अब चाहे जो भी हो।"

बिल्ली की तरह वह हौले-हौले पत्थर की सीढ़ी उतरने लगा। घना अँधेरा था। गोपालन भैया की चटाई पर झाँककर देखा। वह कपड़ों में लिपटा गाढ़ी नींद में मग्न था। कहीं कम्पन भी नहीं।

राहत पाने की एक लम्बी साँस छोड़ी। दीवार की ओट से फाटक की तरफ आगे बढ़ा। पगडंडी पर उतरा। दस मिनट के अन्दर वह कुंकुच्चियम्मा के घर पहुँच गया।

वहाँ बढ़ई माधवन और बैल दामू बरामदे में बैठकर कोई काम-काज कर रहे थे। नज़दीक जाकर देखा—वे दो बड़े खाली बोरों को सिल रहे थे।

थोड़ी देर बाद हाथ में एक पैकेट लिये उस्ताद आ पहुँचा। उसके पीछे शक्कर-भात भी। उसके हाथ में भी एक थैला था। उसमें कोई वज़नदार सामान रखा था।

"अरे, यह क्या है?" श्रीधरन ने शक्कर-भात के थैले के अन्दर की चीज़ जानने की इच्छा से पूछा।

"मांत्रिक दण्ड" शक्करभात ने बहाना करते हुए कहा।

"सब तैयार हैं ?" उस्ताद ने पुकार कर पूछा।

"रेडी !" माधवन और दामू ने एक साथ उत्तर दिया।

(कणारन मिस्तरी भात खाकर पहले ही सोने लेटा था। उन्हें सुबह की गाड़ी से मुक्कलश्शेरी जाना है।)

उस्ताद ने हमेशा की तरह कुंकुच्चियम्मा के पैर छुए। "किसी तकलीफ के बिना मेरा बेटा वापस लौट आये !" कुंकुच्चियम्मा ने वासु को आशीर्वाद दिया।

संघ रवाना हो गया।

उस्ताद के हाथ में कागज़ में लिपटा एक बड़ा चाकू और एक गोलाकार चीज़ थी।

बैल के हाथ में एक टार्च था। कन्धे पर लटका बोरे का एक थैला और एक हाथ में रस्सी भी।

शक्करभात के हाथ में 'मांत्रिक दण्ड' था।

माइनर के हाथ में कुछ नहीं था।

पगडंडी से चलकर सड़क पर पहुँचे। सड़क की पहली बत्ती देखने पर उस्ताद ने माइनर को स्तम्भ पर चढ़ने का आदेश दिया—बत्ती बुझाने के लिए।

माइनार ने वह काम ठीक तरह से कर दिया। इस प्रकार अधिकारी के घर की ओर मुड़नेवाली पगडंडी तक कोई चिराग नहीं जल रहा था।

अहाते के दक्षिण-पश्चिम कोने में दीवार के बाहर सब जमा हो गये।

उस्ताद ने हाथ का पैकेट खोला। काला हलुवा था—घटिया किस्म का। उस्ताद ने ऐसा जानबूझकर ही खरीदा।

उस्ताद ने हलुवे का एक गोला बनाकर बाकी बढ़ई माधवन को दे दिया। माधवन ने हलुवा चखते हुए कहा, "दाँत में अटक जाता है, लेकिन स्वादिष्ट है !"

"कुत्ते की तरह भौंको—भौंको !" उस्ताद ने दीवार की तरफ़ इशारा करते हुए हुक्म दिया।

माधवन ने अपनी उँगली चाटी। फिर दीवार पर चढ़ गया। दोनों हाथों को दीवार पर टेककर अहाते में गर्दन फैलाकर भौंका— "भौं—भौं—भौं—"

असली देहाती कुत्तों का भौंकना था।

अचानक देखा, ताँबे के बर्तनों को लोहे के मूसल से पीटने की आवाज में भौंकता हुआ अधिकारी का टाइगर दौड़कर आ रहा है।

माधवन नीचे कूदकर भाग आया। उस्ताद ने हाथ का गोला दीवार के उस पार के कोने में फेंक दिया और वहीं नीचे छिपकर लेट गया।

टाइगर का भौंकना गुर्राटे में तबदील हो गया—फिर आवाज़ नहीं निकली।

"फँस गया है।" उस्ताद ने सिर हिलाकर बताया।

"अरे माधवन, जाकर गेट खोल आ।" उस्तादनेदीवार की तरफ इशारा किया।

माधवन ने खाली बोरा और रस्सी दीवार के उस पार फेंक दिये। फिर दीवार चढ़कर उस पार कूद पड़ा। उसने लोहे का फाटक खोल दिया।

उस्ताद, शक्करभात, बैल और माइनर अन्दर घुस गये।

अधिकारी के जयमोहन प्रिन्स का छतरी लिये आँगन में खड़े होने का दृश्य अँधेरे में भी दिखाई देता था।

प्रिन्स की पीपे की क्यारी पर उस्ताद ने सावधानी से आक्रमण शुरू किया। टॉर्च का मुँह हाथ से ढकते हुए बैल ने थोड़ी-सी रोशनी की। प्रिन्स की डालियों और पत्तों को माधवन ने समेटकर पकड़ लिया। शक्करभात ने रस्सी से उसे बाँध लिया। जब पौधे की जड़ें मिट्टी के साथ एक टाट के टुकड़े में बाँध ली गई तब माईनर ने खाली बोरा खोलकर पकड़ लिया। एक पल के अन्दर ही जयमोहन प्रिन्स बोरे के अन्दर आ फँसे।

इस सारी प्रक्रिया में प्रिन्स के चार-पाँच पत्ते झड़ गये थे। उस्ताद ने इन पत्तों को बोरे में डाल दिया।

"एक भी पत्ता या मिट्टी का एक कण भी आँगन में नहीं दीखना चाहिए।" उस्ताद ने आदेश दिया।

खोदते समय नीचे गिरी मिट्टी समेटकर माइनर ने गमले में ही डाल दी।

तब शक्करभात ने अपनी मांत्रिक-छड़ी की गाँठ खोल दी। अँधेरे में दिखाई नहीं पड़ा कि वह क्या चीज़ है? श्रीधरन ने उसे पकड़कर देखा—'हाय रे' कहकर फौरन हाथ खींच लिया। उसको लगा कि नाग ने डँस लिया है। सामने और कुछ नहीं एक काँटेदार पौधा था। केलुक्कुट्टि ने उस कँटीले पौधे को गमले में लगा दिया।

इस प्रकार अधिकारी से उसने बदला लिया।

तभी माधवन को उस्ताद ने हाथ का चाकू लेकर अहाते में जाते देखा।

"अरे माधवन, यह क्यों?" उस्ताद ने पूछा।

"ज़रूरत है।" माधवन ने यही जवाब दिया। शक्करभात प्रिन्स को सिर पर ढोते हुए चलने लगा।

फाटक पार करने पर उस्ताद ने बढ़ई से कहा, "अरे कुछ शिष्टाचार तो दिखाओ। फाटक तो बन्द कर आओ।"

बढ़ई नारियल के पत्तों का पुलन्दा बैल को सौंपकर अन्दर से फाटक बन्द कर दीवार को पार कर बाहर उतरा।

कुंकुच्चियम्मा के अनुग्रह के मुताबिक किसी तकलीफ के बिना उस्ताद और साथी कुंकुच्चियम्मा के घर वापस आ गये। कणारन मिस्तरी जागकर उत्कण्ठा से देख रहा था। उस्ताद ने बोरे का बंधन खोलकर जयमोहन को एक बार प्रदर्शित किया।

हकलाहट के बढ़ने के कारण कणारन मिस्तरी के मुँह से आवाज़ नहीं निकली। फिर प्रिन्स को बोरे में डालकर बाँधने लगा तो बढ़ई ने रोका। नारियल के पत्तों को बोरे के ऊपर बाँध दिया। उसने कणारन मिस्तरी को सलाह दी कि और कोई पूछे तो कहना कि ये द्वीप के नारियल के पौधे हैं।

(कौन पूछेगा ? लोगों को देखने से मालूम नहीं होगा कि बोरे में नारियल के पौधे हैं ?)

इस प्रकार अधिकारी के जयमोहन प्रिन्स को बोरे की कमीज़ पहनाकर अधिकारी के ही नारियल के पत्तों से सिर पर मुकुट पहनाकर कण्णन ने अपने सिर पर ढोते हुए रेलवे स्टेशन पहुँचा दिया। उस्ताद और मित्र आपस में कन्धों पर हाथ रखकर शान के साथ वह दृश्य देखते रहे।

विदा लेते समय कणारन मिस्तरी ने पहले उस्ताद से, फिर इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी सदस्यों से—माइनर और बढ़ई से भी—हाथ मिलाया।

अगले दिन की सुबह।

चाप्पुण्णि अधिकारी का घर।

अधिकारी ने जागते ही बरामदे में आकर आँगन की ओर देखा।

क्या स्वप्न है, माया है, मतिभ्रम है, इन्द्रजाल है या मांत्रिक का करिश्मा !

जयमोहन दुबले-पतले एक कँटीले पौधे में तबदील हो गया।

अधिकारी की आँखों ने आँगन में टटोला। एक पत्ता या धूल का एक कण भी वहाँ नहीं था।

गेट की ओर देखा : सब सही-सलामत था।

तब अधिकारी को लगा कि पिछले दिन वहाँ एक संन्यासी आया था। कुछ दिये बगैर अधिकारी ने उसको भगा दिया था। शायद उस दिव्य संन्यासी ने शाप दिया होगा कि सफ़ेद प्रिन्स एक कँटीले पौधे में तबदील हो जाय।

फौरन टाइगर की याद आयी। कहाँ है टाइगर ?—टाइगर—टाइगर—

टाइगर का कोई पता न था।

तोंद को सहलाते हुए अधिकारी अहाते में उतरा। अहाते के दक्षिण कोने में किसी मधुर संलाप में डूबा था टाइगर।

उस्ताद ने जो हलुवा फेंका था उसे कुत्ते ने निगलने का यत्न किया। लेकिन फॉर्क से दाँतों में फँस गया। न तो वह उसे निगल सका न बाहर उगल सका। उसके मीठे नशे में वह यों लेट रहा था। कुत्ते के मुँह में उस हलुवे का गोला अभी तक समाप्त नहीं हुआ था।

# 8. मदनोत्सव

उसके टेढ़े बालों में अलक्ष्य रखे
गुलाब की पंखुड़ियों को गिराने नीचे,
बालों को मन्द-मन्द छूकर विहार करते
मन्द पवन से नित प्रार्थना की मैंने
कच्ची धूप से झिलमिल करते बाली के
धवल मणि, प्रतिबिंबित गालों पर
प्रणय नव मृदु हसित किरणों से सज
प्रतिदिन मैंने देखे ढेर सारे सपने।

तिरुवातिरा के दिन।

तिरुवातिरा की रातों का स्वागत करने के लिए अतिराणिप्पाटं सजधज रहा है।

पेड़ की डालों पर और नारियल के पेड़ों के बीच बाँस की ऊँचाई पर हिन्डोले लटक गये। मन्द पवन के झोंकों के वातावरण में तिरुवातिरा गीत बहने लगे।

प्रणय-स्वप्नों को बुनने के लिए चाँदी के धागे के गुच्छे लेकर वृक्षों के ऊपर से और पेड़ों की डालों से उतर आनेवाली चाँदनी को देखते हुए श्रीधरन कन्निप्प-रंपु के घर के बरामदे में बैठता।

पानी में तैरने या खेलने के लिए अतिराणिप्पाटं में और उसके आसपास कोई तालाब नहीं है। औरतें तड़के ही कन्निप्परंपु के घर के बरामदे में एकत्रित होतीं। कुएँ के ठण्डे पानी से नहाते समय औरतें कबूतरों की तरह आवाज़ निकालने लगतीं।

नहाने के बाद कामदेव के तूणीर की मुद्रा की तरह पीली भस्म रगड़नेवाली लड़कियाँ दिखाई देतीं। व्रत के दिनों में ये केवल कंदमूल खानेवाली चिड़ियाँ होती हैं।

(क्या प्रेम की तरह मधुमेह का भी देवता होने के कारण कामदेव को चावलों के भोजन से इतना परहेज़ है?)

किशोरियों को नये तारुण्य का प्रसाद लेकर ही हर तिरुवातिरा आता है। 'मदन' के यशोगान के बीच विरहिणियों की सिसकियों की तरह झूलों की रुलाई भी सुनाई देती—

तिरुवातिरा के दिन आने पर अतिराणिप्पाटं के दर्शन करने के लिए पहले-पहल कुन्नालि माप्पिला ही पहुँचता। साबुन, आईना, ब्लू और चूड़ियों के साथ ही वह आता।

स्टेशनरी सामान से भरी एक बड़ी पेटी सिर पर ढोते हुए प्रत्यक्ष होनेवाला कुन्नालि माप्पिला अतिराणिप्पाटं के प्रधान विक्रय-केन्द्र के रूप में कन्निप्परंपु के

आँगन को ही चुनता। आसपास की औरतें और बच्चे कुन्नालि माप्पिला के आगमन की बात सुनकर वहाँ एकत्रित हो जाते। कनखोदनी से लेकर कपूर तक और नकली बाल से लेकर 'एक डाली पर दो की लाशें' पाट्टु पुस्तक तक--सभी चीज़ें कुन्नालि माप्पिला के सिर पर रखी पेटी में होतीं। कन्निप्परंपु के आँगन में एक छोटा-सा कालीन बिछाकर कुन्नालि माप्पिला पेटी के नये सामान और वस्तुओं का प्रदर्शन करता।

जब औरतें झुककर चीज़ों को देखतीं तो कुन्नालि माप्पिला उन्हें चीज़ों को सरकाकर एक दर्पण में खास कोण से देखा करता है, ऐसा आक्षेप उसके बारे में सुना है। मालूम नहीं कि वह सही है या नहीं। इसकी पहचान करना भी मुश्किल है क्योंकि कुन्नालि भैंगी आँखोंवाला था। वह किस कोने में देख रहा है इसका निर्णय करना मुश्किल है। अतिराणिप्पाटं में नयी पीढ़ी के कुछ नटखट लड़के हैं। मौका पाते ही वे सामान की चोरी कर लेते। इन शरारती लड़कों को भी कुन्नालि माप्पिला का लोहा मानना पड़ा है, क्योंकि उसकी दृष्टि किधर जाती है यह मालूम नही होता था।

अबकी बार कुन्नालि माप्पिला की पाट्टु पुस्तकों में तिरुवातिरप्पाट्टु की प्रतियाँ ही अधिक मात्रा में बिकी हैं। अब तक नौ प्रतियाँ बिक चुकी हैं।

कन्निप्परंपु का व्यापार खतम करके कुन्नालि माप्पिला के चले जाने पर गोपालन भैया ने श्रीधरन से कहा, "क्या तू एक नया तिरुवातिरप्पाट्टु नहीं बना सकता?" (गोपालन भैया ने अब समझ लिया है कि छोटा भाई कविता और पाट्टु बनाता है।)

श्रीधरन हँस पड़ा, लेकिन कोई उत्तर नहीं दिया।

श्रीधरन ने मन में ठाना कि गोपालन भैया को आश्चर्य में डालना चाहिए।

उस रात बैठकर उसने कार्य किया।

कुछ अर्सा पहले पिताजी कविता की जिस नोटबुक को ज़ब्त कर ले गये थे। उसकी 'मदन विभूति' की कुछ पंक्तियाँ और आशय मन में जमे हुए थे। 'कलमोलिमार' की शैली में उसने तिरुवातिरप्पाट्टु रच डाला। उसके लिए 'रतिविलापं तिरुवातिरप्पाट्टु' शीर्षक भी दिया।

पिछले दिन नया खण्ड-काव्य गोपालन भैया को पढ़ सुनाया। गोपालन भैया के अभिनन्दन के बारे में क्या कहना "श्रीधरन, इसे छपाना होगा।"

अच्छी राय थी।

गोपालन भैया ने हिसाब लगाया। एक प्रति के लिए आधा आना। एक हज़ार प्रतियों के लिए साढ़े इकतीस रुपये। छपाई का खर्च—(कह नहीं सकता) दस रुपये से ज़्यादा नहीं होगा। साढ़े इकतालीस हुए। बिक्री का कमीशन काटकर बीस रुपये हाथ में आएँगे। क्या यह बात बुरी है? (यह भी छाप देना चाहिए कि

जिस प्रति में ग्रन्थकर्ता के हस्ताक्षर नहीं, वह नकली है। उस चेतावनी के नीचे हस्ताक्षर की मुहर लगाने के लिए पैसे की ज़रूरत नहीं है। इसे बनाने की कला श्रीधरन को मालूम है।

"गोपालन भैया, इसे कौन छपा देगा ?"

इसके लिए बाबूजी से पैसे माँगें तो जली-कटी बातें सुननी पड़ेंगी।...

श्रीधरन के 'रति विलाप तिरुवातिप्पाट्टु' के बारे में गोपालन भैया को छोड़कर किसी को भी जानने का मौका नहीं मिला।

(माँ को तो काला अक्षर भैंस बराबर ही मालूम होता था।) अतिराणिप्पाटं की लड़कियों को रीतिविलापं गाकर झूला डालने का सौभाग्य नहीं मिला।

बीस रुपये हिसाब से छोड़ने ही पड़े।

नव नलिन दल पर चल-मचलते
विभात हिम-बिन्दु समान
सुन्दरियों के उस सिर-मौर के हृदय में
रागामृत का कोई एक कन
होता इस नव तरुण के लिए।"

तिरुवातिरा की सुबह।

श्रीधरन सबेरे उठकर नीचे उतर आया तो उसने एक बोरा भर सामान को कन्धे पर ढोते हुए एक नौजवान को आते हुए देखा। आँगन में पहुँचने पर आदमी को पहचाना। चन्दुक्कुंनन। दंगा-फसाद के समय इलंजिपोयिल में एक शरणार्थी की ज़िन्दगी गुज़ारने वाला मित्र चन्दुक्कुंनन। जंगली हाथियों के आतंक से भरे एक पूर्वी पहाड़ की तराई के मोहल्ले से ही वह आया है।

दंगा-फसाद के बाद, इलंजिपोयिल से जाने के बाद दो बार कन्निप्परंपु में श्रीधरन को देखने आया था। अब तीसरी बार आया है।

एक बोरा-भर केला, कई किस्म के कंद और तरकारियाँ लेकर ही वह आया है। ये सब चन्दुक्कुंनन की कोशिश का परिणाम था। उसके अतिरिक्त एक बोतल-भर शहद और एक पोटली में अरारूट की बुकनी भी है।

श्रीधरन को यह सोचकर दुःख हुआ कि चन्दुक्कुंनन से शादी कराने के लिए उसकी बहन नहीं है। एक बहन होती तो वह कितना अच्छा बहनोई होता।

श्रीधरन के माँ-बाप को भी चन्दुक्कुंनन के प्रति हार्दिक ममता थी।

चन्दुक्कुंनन अपने देहात से काठ को नदी से ले जानेवालों के साथ रात को निकलकर तड़के ही शहर में पहुँचा है।

"अब इधर का तिरुवातिरा त्योहार देखकर कल जाना।" श्रीधरन ने कहा।

"ऐसा नहीं होगा। मुझे आज ही पहुँचना है।" लाल पत्थर जड़े कुण्डल को ज़रा हिलाते हुए चन्दुक्कुंनन ने कहा। फिर उसने कुछ कहना चाहा। पर, शर्म से

सिर नीचा करके खड़ा रहा।

"क्या तेरी शादी हो गयी है?" माँ ने शंका के साथ पूछा।

चन्दुक्कुंनन ने जरा शरमाकर 'हाँ' में सिर हिलाया। "पिछले महीने हुई थी।"

"हाँ, इसीलिए ही चन्दुक्कुंनन को वापस जाने की इतनी जल्दबाजी है। तिरुवातिरा के अवसर पर सास को एक गुच्छा केला भेंट में देना है। नहीं तो रिश्ता टूट जाएगा।" माँ ने हँसते हुए कहा।

बात ऐसी ही थी।

चाय और पकवान खाकर चन्दुक्कुंनन जाने को तैयार हो गया।

"क्या तुम्हें यह याद है?" अपनी चाभी के गुच्छों में से एक चीज़ छूते हुए चन्दुक्कुंनन ने पूछा।

कई साल पहले दंगा-फसाद के बाद जब चन्दुक्कुंनन अपने गाँव लौट रहा था तब उसने मेरे लिए हाथी की पूँछ से बन्धी एक अँगूठी उपहार में दी थी। उसके बदले मैंने उसे एक चाकू भेंट किया था—इन्द्रधनुष के रंगों का मूँठवाला इंगलैंड-निर्मित चाकू। चन्दुक्कुंनन श्रीधरन का उपहार अब भी सोने की तरह सुरक्षित रखे हुए है। (श्रीधरन को याद नहीं आ रहा था कि चन्दुक्कुंनन की दी हुई अँगूठी कहाँ खो गयी।)

इस तरह प्यार जतानेवाला मित्र शहर में कभी दिखाई नहीं देगा।

"तुम मेरे गाँव में नहीं आओगे, है न?—" चन्दुक्कुंनन ने शिकायत के स्वर में याद दिलाया।

चन्दुक्कुंनन के जंगली गाँव को अभी तक श्रीधरन देख नहीं सका था। वहाँ जाने पर उसका स्वागत-सत्कार कैसे होगा!

"वार्षिक परीक्षा बीतने दो। मैं जरूर उधर आऊँगा।"

"हाँ, आये, जब तो न?"

बीच-बीच में चेहरा घुमाकर मुस्कराते हुए फाटक से निकलनेवाले उस ग्रामीण मित्र को श्रीधरन गीली आँखों से देखता रहा।

तिरुवातिरा की रात आ गयी। कामदेव के छाते की तरह चाँद उभर कर आया।

अतिराणिप्पाटं की औरतों के लिए यह खुशी की एक स्वतन्त्र रात थी। (मर्दों के लिए भी)। चारुचन्द्र की चंचल किरणों से ढके आँगन में, हिंडोलों के नीचे, अहातों के रेतीले स्थानों में औरतें झुण्ड के झुण्ड गीत गाकर 'कैकोट्टिक्कली', 'तंबियुरच्चिल' 'तेरुप्परक्कल' आदि मनोरंजनों में भाग लेकर समय बिताती हैं। कल्याणिक्कुट्टि किधर है? जानु किधर है? ऐसा सवाल ही नहीं। कहीं भी दिखाई देंगी···अतिराणिप्पाटं मनोरंजन-कार्यक्रम के नेपथ्य में तबदील हो गया है।

व्रत के साथ कामदेव की उपासना कर रात भर जागती रहनेवाली औरतों के

मनोरंजन का दायित्व मर्दों का है—पोराट वेश का अभिनय ।

लड़के और बड़े लोग वेश धारण किये आते । वे अकेले और झुण्ड में आते । अधिकांश लोग पैसे के लिए ही चलते हैं और कुछ लोग महज़ तमाशे के लिए । वेशधारियों की पहचान करना आसान नहीं है ।

वेशधारी लोग तिरुवातिरा के दिन सूरज छिपने की प्रतीक्षा करते । फिर प्रच्छन्न वेशधारियों की परेड होती । पंजाबी, हस्तरेखा शास्त्री, संन्यासी, साहब और साहिबा आदि कई वेशधारी आते । ढोल-बाजा बजाकर, बाघ का वेश धारण कर, पेट्रोमैक्स के साथ आनेवाले एक एकांकी नाट्य-संघ के सदस्य हैं। प्रहसन, डान्स और गायक संघ के लोग इधर-उधर घूमते होंगे ।

छोटे लड़के 'वांगित्ता' वेश में आते। चेहरे पर सफेद धूल लपेटे हाथ में एक टिन और गले में एक रस्सी बाँधे एक लड़का आगे चलता और उसके पीछे उसकी गर्दन की रस्सी पकड़े हाथ में छड़ी लेकर दूसरा एक छोकरा चलने लगता । उसके चेहरे पर काला रंग होता । पीछेवाला लड़का ज़ोर से चिल्लाता 'खरीद दो, खरीद दो ।' गोरे-रंग पुते लड़के को पीटने की धमकी भी देता रहता । वह बन्दर की तरह उछल-कूद कर 'खरीद दूंगा, खरीद दूँगा' चिल्लाने लगता । तमिलवालों का घटिया मनोरंजन पूर्व की घाटियों को पार कर इधर आ पहुँचा था । औरतें और लड़के यह सुनकर हँसी से लोट-पोट हो जाते ।

अतिराणिप्पाटं का मूँछ कणारन तिरुवातिरा का एक स्थायी वेशधारी है। वह हमेशा मुस्लिम का वेश रखेगा—मछली की टोकरी सिर पर रखकर "ताजा मछली···" पुकारते हुए मछली बेचनेवाले मुसलमान का वेश । "मैं कोलंबु से आ रहा," कहकर आनेवाला दाढ़ीवाला बूढ़ा मुसलियार या मालिक हाजियार का वेश वह धारण करता । वह मुस्लिम लहजे में ही बातचीत करता । घटिया बातें बकता। वेश और बातचीत के अतिरिक्त उसका अभिनय भी होता । आँगन में एक तौलिया बिछाकर घुटने टेककर हाथ की उँगलियाँ कानों में डालकर 'लायिला यिलल्लो' चिल्लाकर नमाज़ पढ़ने लगता । (औरतों को हँसाने के लिए मज़हब पर व्यंग्य ज़ाहिर करनेवाली कुछ हास्य सूचनाएँ और अश्लील गन्ध से युक्त कुछ आख्यान भी नमाज़ के साथ सुनाने लगता ।)

कणारन की बड़ी मूँछ के कारण औरतें उसे पहचान लेतीं । माप्पिला के हास्य से भी अधिक उन्हें कणारन का 'पति की मृत्यु पर पत्नी का क्रन्दन' और बकवास का अभिनय प्रिय है ।

मुस्लिम की नमाज़ खतम होते ही औरतें कहतीं, "कणारन, तुम उसे ज़रा दिखा दो । मर्द की मौत पर औरत का रोना ।"

अतिरिक्त फीस पेशगी देने पर ही कणारन वह दृश्य दिखाता ।

औरतों से प्राप्त चिल्लर को कानों में रखकर पगड़ी से सिर और चेहरा ढक

कर, छाती पीट-पीटकर वह पुकार उठता : 'हाय मेरा अब कौन है···"

पड़ोस के घरों की औरतों ने बाल-बच्चों सहित कन्निप्परंपु में डेरा डाल दिया है। नाटक मंडली और नाचनेवाले लोग बड़े घरों में ही जाएँगे। कन्निप्परंपु उनकी सूची में शामिल एक घर है। प्रच्छन्न वेशधारियों को पैसे देने से बचने के लिए कुछ घरों के कंजूस लोग घर बन्द कर कन्निप्परंपु में आकर शरण लेंगे। वे मुफ़्त में यह ही सब मनोरंजन देख सकेंगे, इसलिए उन सबको श्रीधरन की माँ ने चन्दुक्कुंनन के केले और कन्द भरपेट खिलाये।

पन्द्रह रुपये की रेजगारी को गोद में रखकर श्रीधरन की माँ प्रच्छन्न वेशधारियों की प्रतीक्षा कर बरामदे में बैठ गयी। पिताजी अन्दर दरवाज़ा बन्द कर सोने लेट गये। (नाट्य-संघ और गायक-मंडल कृष्णन मास्टर को देखने पर अधिक पैसे की अपेक्षा करेंगे।)

एक अच्छी धोती पहनकर गोपालन भैया को बरामदे की एक कुर्सी पर बिठाया है। देखने पर लगेगा कि वह मरीज़ नहीं है।

'लांगित्ता' (खरीद दो) लड़के, साहिब और साहिबा, बाघ वेशधारी, सीता अपहरण नाटक, मन्नं के तंगल का वेशधारी कणारन आदि सभी प्रच्छन्न वेशधारियों के कार्यक्रम खतम हुए। आधी रात होनेवाली थी।

अचानक श्रीधरन के मन में एक विचार उठा। वह कन्निप्परंपु से हौले से उठकर चलने लगा।

बढ़ई माधवन ने कहा था कि वह प्रच्छन्न वेशधारण कर आवेगा। काठ के व्यापारी भास्करन के यहाँ से बाघ के चमड़े का एक पुराना टुकड़ा भीख माँग कर ले जाते हुए केलुक्कुट्टि के भाई नारायणन ने देखा था। शायद बाघ का चमड़ा बाघ का वेश धारण करने के लिए होगा। जाँच करने के लिए वह माधवन के घर की तरफ़ चलने लगा।

वहाँ पहुँचने पर माधवन घर के बरामदे में बैठकर कोई वेश धारण करने की तैयारी में था।

श्रीधरन को देखने पर माधवन ने ताज्जुब के साथ पूछा, "क्यों माइनर साहब, इधर कैसे?"

"वह तो कहूँगा ही। क्या तेरा बाघ का खेल खतम हो गया है?"

"मैं तो बाघ-वाघ का वेश नहीं पहनूँगा। मेरा वेश···" माधवन ने कोने की ओर इशारा किया। वहाँ एक काला कपड़ा रखा था। श्रीधरन ने कपड़े को अच्छी तरह देखा। मुस्लिम औरतों का एक घूंघट था।

"मैं बीबी का वेश धारण कर घूमकर अभी आया।" माधवन ने हँसते हुए कहा।

एड़ी से लेकर चोटी तक ढकनेवाला और चेहरे और मुँह पर एक हलका-सा

जाल बुना हुआ वह काला रेशमी बुर्का एक मुस्लिम मालिक ने धोने के लिए धोबी मुन्तु को दिया था। एक मुस्लिम बीवी के बुर्के का वह वेश अतिराणिप्पाट में नया था। औरतों और मर्दों को वह वेश अच्छा लगा। (बच्चे डर गये।) बुर्का धारण कर, एक पुरानी छतरी लेकर चुपचाप भूत की तरह एक प्राणी कन्निप्परंपु में चढ़ आया था। श्रीधरन ने उस दृश्य का स्मरण किया। उसको औरतों की तरफ़ से ज़्यादा पैसे भी मिले। उस काले शामियाने के अन्दर बढ़ई माधवन छिपा था, यह बात अब मालूम हुई।

"होशियार!" श्रीधरन ने बढ़ई को बधाई दी।

बुर्के के इस वेश से मोहल्ले-भर के घरों में जाने के बाद माधवन एक नया वेश धारण कर उन्हीं घरों में जाने की तैयारी कर रहा था।

नया वेश : संन्यासी।

माधवन वेश धारण करने के लिए एक पैसा भी खर्च नहीं करता। (बुर्का : केलुक्कुट्टि का उपहार था।)संन्यासी का वेश दाढ़ी : नारियल का रेशा। (नारियल की जटाओं को गोबर में गाड़कर, फिर सुखाकर रख दिया।) एक रुद्राक्ष माला। कमर में बाँधने के लिए भास्करन मालिक के बाघ की पुरानी त्वचा और थोड़ी-बहुत राख भी। संन्यासी का कमण्डलु लकड़ी से माधवन ने ही बनाया था।

मुस्लिम औरत का बुरका दिखाते हुए श्रीधरन ने कहा, "क्या मैं भी इस वेश को धारण कर ज़रा घूम-फिर कर आऊँ? महज मनोरंजन के लिए।"

बढ़ई ने टोक दिया, "यह शैतान वेश कम लोगों ने देखा है। एक बार और इस वेश में गये तो मार खानी पड़ेगी।"

बढ़ई ने जो कहा वह सच था।

श्रीधरन ने थोड़ी देर तक विचार किया।

"अरे माधव, हम दोनों एक जोड़ी बनकर प्रच्छन्न वेश धारण कर चलें। मैं संन्यासी—तू शिष्य—क्या?..."

माधवन भी राज़ी हो गया। "जो पैसा मिले वह आधा-आधा"।

"नहीं, पैसे सारे तू ही ले लेना; मुझे सप्पर सफर संघ की तरह महज़ एक तमाशा ही दिखाना है।"

श्रीधरन ने शर्ट और धोती वहीं रख दी। उसने बाघ की खाल कमर में लपेट ली। रस्सी की जटा, रेशे की दाढ़ी और माला पहन ली। माधवन ने श्रीधरन के चेहरे, छाती, पेट-पीठ और पैरों में राख पोत दी।

'मेकअप' के बाद वह बुजुर्ग संन्यासी बन गया। माधवन तब रसोई से वापस आया तो उसके हाथ में एक मुर्गी के अण्डे का छिलका था।

"अरे माधवन, इसकी क्या ज़रूरत है?"

"ज़रूरत है।" माधवन ने संन्यासी की दाढ़ी के अन्दर अण्डे का छिलका छिपा

लिया।

"वह उधर ही रहे।"

श्रीधरन ने मन में कहा कि वहाँ से कोई तरकीब सोची होगी।

शिष्य का वेश शंकराचार्य की तरह था। सिर पर एक गेरुआ तौलिया पहन कर कान के पीछे की ओर बाँध लिया था। चेहरे में सफेद धूल पोत ली थी। कन्धे पर एक थैली थी।

संन्यासी और शिष्य तीन-चार घरों में चले गये। किसी ने भी उन्हें पहचाना नहीं। श्रीधरन की हिम्मत बढ़ी। शिष्य ने संन्यासी के कमण्डलु में गिरे पैसे गिन-कर देखे : दो आने।

"बुर्काधारी बीबी को अकेले जाने पर इससे भी अधिक चार घरों से मिला था।" माधवन बड़बड़ाया। (उसने अपनी पैंट की जेब में उसे रख लिया। "बड़े घरों में जाने पर अधिक मिलेगा।" उसने स्वयं को सांत्वना दी।

धड़कते दिल और हिलते पाँवों के साथ श्रीधरन और माधवन सीढ़ियाँ चढ़-कर एक महल में गये—नायिका के महल का ही रास्ता था।

वहाँ बरामदे में लटका हुआ एक पैट्रोमैक्स प्रकाश बिखेर रहा था। औरतें-बच्चे बरामदे और आँगन में खड़े थे।

"राम-राम—हरे राम···"

"हाँ, पुजारी आ रहा है।" किसी ने पुकार कर कहा।

(बड़े संन्यासी को पुजारी कहकर पुकारना श्रीधरन को अच्छा नहीं लगा।)

संन्यासी को देखने के लिए झूलों से चार-पाँच औरतें दौड़ आयीं।

बरामदे में ध्यान से देखने पर श्रीधरन का कलेजा तड़प उठा।

प्रच्छन्न वेशधारियों को इनाम देने के लिए नायिका बरामदे की कुर्सी पर बैठी थी।

संन्यासी और पीछे शिष्य बरामदे के छोर पर खड़े हो गये।

अर्ध-निमीलित आँखों से गौर से देखा :

धोती और ब्लाउज ही पोशाक है। तिरुवातिरा का व्रत लिया है। ललाट पर हलदी के टीके का आधा अंश नदारद है। व्रत के अनुष्ठान और निद्रा की खुमारी आँखों में छायी है।

(मन में वह यों गा उठा।)

"छोड़ तप जाग उठ ! हे निर्मल नारी
देख यह, सती ! मैं तेरा श्रीधर !"

"हिमालय में पाँच सौ साढ़े आठ वर्ष तक तपस्या करनेवाले मुनि हैं।" शिष्य ने परिचय कराया।

"संन्यासी का नाम क्या है ?" एक बुढ़िया ने पूछा ।

"कुटुकुटानन्दन ।" माधवन ने जवाब दिया । औरतें और बच्चे यह सुनकर हँसी से लोट-पोट हो गये ।

नायिका के ओठ ज़रा खिल उठे ।

शिष्य ने अपना भाषण जारी रखा : "एक ही बैठक में साढ़े सत्ताइस वर्ष कल्लरिक्कोट्टु के पहाड़ में जाकर तपस्या की थी । वहाँ से सीधे इधर ही पधारे हैं । दाढ़ी में पक्षी ने घोंसला बनाया था । लेकिन इन्हें इसका पता नहीं था ।"

माधवन ने संन्यासी की दाढ़ी के नज़दीक मुख फैलाकर 'क्लू-क्ली-क्ली-क्लू-क्लू···" की चिड़िया की चहचहाहट सुना दी । फिर संन्यासी की दाढ़ी में टटोलकर अण्डे का छिलका बाहर निकाल दिया । पक्षी का वह अण्डा वहाँ एकत्रित हुए सब लोगों को, खासकर नायिका को दिखाया ।

संन्यासी जी योगनिद्रा में हैं ।

बढ़ई के मसखरेपन से औरतें और बच्चे ठट्ठा मारकर हँस पड़े ।

नायिका मुँह बन्द कर चिड़िया की तरह चहक उठी ।

उस स्वर ने संन्यासी को योगनिद्रा से जगा दिया ।

संन्यासी ने कमण्डलु आगे बढ़ा दिया ।

नायिका ने उसमें पैसे डालने के लिए अपना सोने-सा हाथ पसारा तो एक उँगली का छोर छू गया । नसों में एक रोमांच की आँधी गुज़र गयी—राम-राम—हरे राम···!

फाटक उतरने पर माधवन ने श्रीधरन के हाथ के कमण्डलु में टटोलकर देखा । कमण्डलु खाली था । (नायिका का अमूल्य पुरस्कार एक आना – एक निधि की तरह श्रीधरन ने हाथ में पकड़ लिया था ।)

"कहाँ हैं पैसे ?" माधवन ने पूछा ।

"वह मैंने ले लिये ।"

"कितना मिला ? मुझे जानना चाहिए ।"

"चवन्नी" (झूठ बोला ।)

"देखने दो ।" बढ़ई देखे बिना नहीं रह सकता ।

"तू अब उसे नहीं देख । मैं पाव रुपया तुझे बाद में दूंगा ।"

(बढ़ई को फिर शक हुआ । उसका ख्याल था कि आठ आने मिल गये होंगे ।)

"अरे यार, ज़रा दिखा दो न ?"

"दिखाने की मर्ज़ी नहीं । क्या मेरी बातों पर यकीन नहीं कर सकते ?"

"क्या वह मुझे दिखाने पर पिघल जाएगा ?"

श्रीधरन ने कुछ नहीं कहा । आना अपने हाथ में ज़ोर से पकड़ लिया । नायिका के स्वर्णिम हाथ से ही वह चवन्नी मिली थी ।

माधवन थोड़ी देर सोचता खड़ा रहा। फिर सिर हिलाते हुए बोला : "हाँ—समझ गया—समझ गया।"

(वह समझ गया था। वढ़ई माधवन है न)

"अरे, क्या समझ गया ?" श्रीधरन ने नाराज़ होकर सख्त आवाज़ में प्रश्न का तीर चलाया।

वढ़ई चुप रहा।

"मैं तेरे साथ आगे चलने को तैयार नहीं हूँ। तू अकेले वेश धारण कर ठोकर खा—" तीर के पीछे गदा की एक मार भी !

वढ़ई काँपकर खड़ा हो गया।

"इस प्रकार कहने के लिए मैंने क्या तुमसे कुछ कहा था ?" वढ़ई ने पश्चाताप के साथ पूछा।

श्रीधरन ने फिर कुछ नहीं बताया।

संन्यासी और शिष्य फिर मौन होकर एक साथ आगे बढ़े।

माधवन के घर के नज़दीक पहुँचने पर श्रीधरन उस ओर मुड़ गया—छाया की तरह माधवन भी।

वढ़ई के कमरे में पहुँचकर रेशे की दाढ़ी, रस्सी की जटा, माला और वाघ की खाल निकालकर दूर फेंक दिये। चेहरे, छाती, हाथ-पैर में पुती राख भीगे कपड़ों से पोंछ ली और शर्ट और धोती पहनकर (भीतर की हँसी को छिपाते हुए) माधवन से कुछ कहे बिना चला गया।

कन्निप्परंपु में पहुँचने पर वहाँ पैट्रोमैक्स का आलोक और नाच-गान।

नाटक संघ है। नाटक समाप्त होने पर प्रधान अभिनेत्री का विशेष काबुली डान्स हो रहा है।

हारमोनियम बजानेवाले के रूप में वरामदे में अर्ज़ीनवीस आण्डी बैठा है। बड़ा गपिया किट्टुण्णि टूटी-फूटी पेटी को थपथपाते हुए 'पे पे पे · ' की स्तुति कर रहा है।

कृत्रिम बाल और स्तन लगाकर सिर पर पीछे की ओर एक रूमाल बाँधकर और चेहरे पर पाउडर पोतकर एक शिखण्डी, हाथ में एक तबला लिये झुककर पीठ हिलाते हुए, उछल-कूद कर रहा है। वही काबुली डान्स है।

आण्डी हारमोनियम बजा रहा है।

नाटक संघ को एक रुपया देने के साथ ही श्रीधरन की माँ के हाथ में कुछ नहीं रहा।

"अब जल्दी दिया बुझाकर लेटना चाहिए।" माँ ने जँभाई ली।

"पतंग और प्रच्छन्न वेशधारी एक समान हैं। रोशनी देखते ही आएँगे।"

तभी लड़कों का शोर सुना—"औषधि बेचनेवाला।"

एक लम्बा पेण्टधारी हाथ में एक सन्दूक लटकाये आँगन में पहुँच गया। अब बचाव नहीं। वह आँगन में एक पुराना कागज़ बिछाकर सन्दूक की औषधियों की शीशियाँ रखता, फिर 'मान्य महाजन !' कहकर भाषण छेड़ता ।

औषधि बेचनेवाला हाथ में पेटी लटकाकर सिर झुकाये आँगन से बरामदे में चढ़ा। फिर वह अन्दर घुस आया।

"अरे यह क्या ? खेल-तमाशा घर के भीतर भी पहुँच गया ?" आराकश वेलु की पत्नी उण्णूलियम्मा ने ज़ोर से पुकार कर कहा।

श्रीधरन की माँ सकपका गयी।

गोपालन भैया कुर्सी से तड़प उठा।

उस संदर्भ में वहाँ श्रीधरन ही था।

"अरे, कौन है ?" चिल्लाते हुए श्रीधरन भीतर की ओर गया।

"क्या है श्रीधरन ?"

भूली-बिसरी लेकिन सुनी हुई आवाज़। आदमी को ध्यान से देखा।

बड़े भाई साहब !

फिटर कुंजप्पु बड़ी देर बाद ही पहुँचा। रात की गाड़ी से ही आया था।

## 9. वापसी

करीब एक साल पहले दक्षिण भारतीय रेलवे कम्पनी में मजदूरों की एक हड़ताल हुई थी। उसमें सक्रिय भाग लेने के अपराध में फिटर कुंजप्पु को रेलवे की सेवा से हटा दिया गया। यह समाचार अतिराणिप्पाटं के नज़दीक रहनेवाले फायर मैन केलन से कृष्णन मास्टर ने जाना। कुंजप्पु के पराक्रम की गवाही देनेवाली कुछ घटनाएँ कृष्णन मास्टर को मालूम थीं।

रेलवे की नौकरी में तमिलनाडु जाने के बाद कुंजप्पु का कन्निप्परंपु से अधिक नाता न था। साल में सिर्फ एक-आध बार वह आता बस। कभी चिट्ठी भी नहीं लिखता। (फिर पैसे भेजने की बात के बारे में क्या कहना !) कृष्णन मास्टर को तसल्ली हुई। कुंजप्पु के लिए एक नौकरी तो है। कहीं भी रहे, लेकिन सुख से रहे। उसका एक पैसा भी इधर नहीं चाहिए।

कृष्णन मास्टर की लड़कियाँ नहीं थीं। वह दुःख उनके मन में था। लड़कियों को मास्टर वात्सल्य से देखते। उन्हें पुकारकर हँसी-ठिठोली की बातें करते। उनके बिदा होने पर ठण्डी साँस लेने लगते।

कन्निप्परंपु में एक नव-वधू के आने का सपना मास्टर देखने लगे। कुंजप्पु की शादी पहले ही करानी थी। लेकिन यह सोचकर चुप रहे कि बिना नौकरीवाले लड़के की क्या शादी ! अब तो उसके पास अच्छा वेतन मिलनेवाली नौकरी है।

इस तरह दिन गुज़ारते समय एक नारियल का बाग खरीदने के उद्देश्य से आठ-नौ मील दक्षिण में एक गाँव में जा रहे एक धनी मित्र के साथ कृष्णन मास्टर को जाना पड़ा। वहाँ एक सम्भ्रान्त व्यक्ति के घर ही उन्होंने दोपहर का भोजन किया। नारियल के बाग, चावल के खेत, नारियल के रेशे का व्यवसाय आदि उस कुलीन परिवार में थे। एक पुराना घराना। गृहस्वामी की बेटी ने ही सारे व्यंजनों का बन्दोबस्त किया।

खूबसूरत और सुशील उस लड़की को देखने पर मास्टर को उसके नाम से एक खास तरह का वात्सल्य हुआ। उसे नज़दीक बुलाकर पूछा :

"क्या नाम है?"

"माधवी।"

कृष्णन मास्टर को लगा कि उनके हृदय के एक कोने में पड़े ग़म की सतह से एक आनन्द का बुलबुला उभर आया है। मास्टर की पहली पत्नी एक बेटी छोड़ गयी थीं। वह सिर्फ छह महीने तक ही ज़िन्दा रही। उसका नाम भी माधवी था। उन्हें लगा, यह माधवी उसका पुनर्जन्म है।

मालूम हुआ कि माधवी मातृ-विहीना है। मास्टर ने मन में तय किया कि उसके भविष्य की जिन्दगी कन्निप्परंपु में ही गुजरेगी।

अगले दिन कुंजप्पु को एक पत्र लिखा कि छुट्टी लेकर दो-तीन दिनों के लिए इधर आ जाये।

दो हफ्ते के बाद भी कुंजप्पु नहीं आया, न ही कोई चिट्ठी का जवाब दिया।

कृष्णन मास्टर ने मन ही मन सोचा कि अगर मैं लड़की देखकर शादी की बात तय करूं तो कुंजप्पु उसके खिलाफ कुछ नहीं कहेगा।

मास्टर ने शादी की बात को आगे बढ़ाने का निश्चय किया। इस तरह अगले रविवार वह माधवी के घर गये। उनके साथ काठ के गोदाम का मालिक भास्करन भी था।

मास्टर ने अपने आगमन का उद्देश्य गृहस्वामी को सही ढंग से बताया। और ज़ोर देखकर कहा कि रेलवे में कुंजप्पु की एक अच्छी नौकरी है।

तभी भास्करन मालिक ने अपनी तरफ़ से कुछ जोड़कर कहा—"और फिर, वर की योग्यता है, चेनक्कोतु कृष्णन मास्टर का बेटा कुंजप्पु है न।"

लड़की के पिता ने 'हाँ' कहा। लड़की के मामा, चाचा और भाइयों से परामर्श लेने के बाद जन्मपत्री देखी गई।

"एक हफ्ते के अन्दर हम उधर आकर सूचना देंगे।"

कृष्णन मास्टर ने उनका इन्तजार किया।

अगले सप्ताह माधवी का एक भाई, (जो वैद्य विद्यार्थी था) और उसका एक मित्र (मेडिकल रेप्रेज़ेण्टेटिव) कन्निप्परंपु आये। उनके चेहरे की मुस्कान और

और होशियारी देखकर कृष्णन फूले न समाये ! बात ज़रूर पक्की हो जाएगी।

भाई ने कहा, "हमें इस बात में एक व्यक्ति की अनुमति की जरूरत है। मास्टरजी ज़रा कोशिश करके उसका बन्दोबस्त करने की मेहरबानी करें।"

इस रिश्तेदारी में बाधा पहुँचाने वाला कौन होगा ? लड़की का मामा है या चाचा ? मास्टर दाढ़ी सहलाते हुए थोड़ी देर तक सोचते रहे।

"अब किसकी अनुमति की जरूरत है ?" मास्टर ने गम्भीर स्वर में पूछा। मैं एक बात कहूँ तो उसकी आनाकानी करनेवाला कोई न होगा, इस तरह का आत्म-विश्वास इस सवाल में अन्तर्निहित था।

"फिटर कुंजप्पु की तमिलभाषी बीवी की सम्मति···" वैद्य विद्यार्थी ने अपने भीतर की हँसी को रोकते हुए कहा।

मास्टर को लगा कि आँधी और भूचाल से उनके पैर के नीचे की ज़मीन खिसक गयी है।

वर से सीधे मुलाकात करने के लिए वे दोनों तमिलनाडु में कुंजप्पु के निवास-स्थान गये थे। इसका किस्सा मेडिकल रेप्रेज़ेण्टेटिव ने बड़े रोचक ढंग से कृष्णन मास्टर को कह सुनाया। लड़की के पिता, चाचा और मामा सुप्रसिद्ध चेनक्कोतु घराने के कृष्णन मास्टर के पुत्र के साथ शादी का रिश्ता जुड़ने में शान ही समझते थे। लड़की के एक मात्र भाई वैद्य विद्यार्थी ने भी इसके खिलाफ कुछ नहीं कहा। लेकिन उसने ज़रा हठ करके कहा कि वर को एक बार देखने के बाद ही विवाह पक्का करना उचित है।

यों लड़की का भाई अपने परम मित्र मेडिकल रेप्रेज़ेण्टेटिव को लेकर तमिल-नाडु के उस शहर में पहुँचे, जहाँ कुंजप्पु नौकरी करके रहता है। एक रविवार की छुट्टी के दिन उन्होंने रेलवे कालोनी से कुंजप्पु के घर का पता लगा लिया। वहाँ के आँगन में पहुँचते ही उन्होंने एक मध्यवयस्क व्यक्ति को एक बच्चा अपनी बाँहों में लिटाकर लोरी गाते हुए देखा।

मेडिकल रेप्रेज़ेण्टेटिव ने मलयालम में पूछा, "क्या यह फिटर कुंजप्पु का घर नहीं है ?"

बच्चे को लोरी गाकर सुनानेवाले आदमी ने आगंतुक की ओर निगाहें घुमायीं। फिर 'हाँ' में सिर हिलाया।

"हाँ, मैं ही फिटर कुंजप्पु हूँ।"

आगन्तुक आँगन में स्तब्ध होकर खड़े रहे।

"आइए। इधर बैठिए।" बरामदे की छत से लटकनेवाले एक कपड़े के झूले में शिशु को लिटाकर पेशाब से भीगे शर्ट के निचले हिस्से को धोते हुए कुंजप्पु ने अपने मेहमानों की अगवानी की।

वैद्य विद्यार्थी शक के साथ खड़ा रहा।

"जाकर बैठें।" मेडिकल रेप्रेज़ेण्टेटिव वैद्य विद्यार्थी मित्र को पीछे से ज़रा नोचते हुए फुसफुसाया।

बरामदे के एक हिस्से के छोटे से कमरे में मेहमान आ गये।

"आप लोगों का परिचय ?" कुंजप्पु ने मुस्कराते एवं अपनी मूँछ को सहलाते हुए पूछा।

"हम करिमणश्शेरी से आ रहे हैं। इधर के बाज़ार से एक भैंस को खरीदने आये हैं ··" मेडिकल रेप्रेज़ेण्टेटिव ने ही जवाब दिया।

"वेरी गुड !" कुंजप्पु ने सिर हिलाकर कहा।

मेडिकल रेप्रजेण्टेटिव ने स्पष्टीकरण दिया कि वे कैसे इधर पहुँच गये। रास्ते में एक बेवकूफ ने बताया कि रेलवे कालोनी में मलयाली फिटर कुंजप्पु के घर के नज़दीक एक फायरमैन रामस्वामी रहता है और वहाँ एक भैंस है। वहाँ जाकर लौटते समय हमने सोचा कि अपने इलाकेवाले फिट्टर कुंजप्पु से ज़रा मुलाकात करें।

"वेरी गुड" कुंजप्पु को बड़ी खुशी हुई। अपनी मूँछ को मरोड़ते हुए कुंजप्पु ने कहा, "इधर सब लोग फिटर कुंजप्पु को जानते हैं।"

(वैद्य विद्यार्थी और मेडिकल रेप्रेज़ेण्टेटिव ने जब फिटर कुंजप्पु के घर का पता लगाया तब एक तमिलभाषी ने कहा कि उनका घर फायरमेन रामस्वामी के बंगले के नजदीक ही है। इधर आते समय फायरमैन रामस्वामी के अहाते में भैंस का बाड़ा देखा।)

"भैंस खरीदी ?"

"नहीं, उन्होंने बेच डाली।"

कुंजप्पु ने अन्दर झाँककर जोर से पुकारा, "मँगम्मा, इँगे वा। घर वान्दिरिक्कुरु पारू—नम्म मलयालन्तु अरुकार·· " (मँगम्मा, इधर आओ। देखो कि कौन आए हैं—हमारे मलयाली बंधु हैं।)

दरवाज़े में एक शक्ल-सूरत दिखाई दी। सींग विहीन एक भैंस : मँगम्मा।

अपने पति के इलाकेवालों का मँगम्मा ने भैंस के दूध की काफी, पुट्टु, केले आदि के साथ बड़ी उदारता से स्वागत-सत्कार किया।

कुंजप्पु ने हठ किया कि दोपहर के भोजन के बाद ही जायें। लेकिन वे ठहरे नहीं। भैंस को खरीदकर शाम की गाड़ी से ही वापस जाना है।

वहाँ से उतरने पर वैद्य विद्यार्थी ने सबकी आँखें बचाकर पाँच रुपये का नोट पुरानी साड़ी के झूले पर बच्चे के निकट पुट्टु, केला और काफी आदि के मेहनताना के तौर पर रख दिया।

मेडिकल रेप्रेज़ेण्टेटिव ने कहानी समाप्त की, कि तभी नए मेहमानों के लिए चाय, पकवान आदि के साथ श्रीधरन की माँ रसोईघर से बरामदे में आ गयी।

"नहीं, नहीं। हम चाय पीकर ही आये हैं।" कहकर वैद्य छात्र और मेडिकल रेप्रज़ेण्टेटिव झट उठ खड़े हुए। वे कृष्णन मास्टर को नमस्कार कर जल्दी से उतरकर चले गये।

कृष्णन मास्टर दो दिन तक स्कूल गये बिना चित्त-भ्रम का शिकार होकर कन्निप्परंपु में ही पड़े रहे। फिर मानसिक विभ्रांति ज़रा कम होने पर उनकी चिन्ताएँ एक अन्य दिशा में मुड़ गयीं। वह लड़की मेरी माधवी का ही पुनर्जन्म है। ऐसी हालत में वह कुंजप्पु की बहिन है। बहिन की भाई से शादी कराना जघन्य पाप है। भगवान ने ही बचाया है। इसमें कोई शक नहीं है।

मास्टर को इससे कुछ तसल्ली मिली।

कृष्णन मास्टर ने फायरमैन केलन से ही कुंजप्पु क बारे में सुना था।

रण्णिग के बाद केलन की उस दिन छुट्टी थी। पुराने मित्र कुंजप्पु से मिलने की इच्छा हुई। सेवा-निवृत होने के बाद कुंजप्पु रेलवे कालोनी छोड़कर मँगम्मा के मामा के घर में, जो ताड़ के पत्तों से ढका एक पुराना घर है, रहने लगा।

केलन ने वहाँ जाने पर आँगन में वह दृश्य देखा। गोद में मुन्ने को बिठाकर मँगम्मा हाथ में एक छड़ी लेकर बैठी थी। सामने की चटाई में मिर्च सुखाने के लिए डाली गयी थी। आँगन के दूसरे कोने में दाहिने हाथ से मूँछ को मरोड़ते हुए बायें हाथ में एक बड़ी छड़ी पकड़कर गौरवमय कुंजप्पु बैठा था। सामने की चटाई में पापड़ सुखाने के लिए पड़े थे।

नज़दीक जाने पर केलन सकपकाकर खड़ा हो गया। कुंजप्पु के सामने की चटाई पर सूखने के लिए रखे गये पापड़ नहीं थे। ये करन्सी नोट थे—पाँच और दस के—ढेर सारे नोट।

"अरे कुंजप्पु यह सब क्या है?" केलन ने आँखें फाड़कर पूछा।

"घर के बारिश में भीगने पर हम लाचार हो गये। पेटी में रखे नोट भी भीग गये यार—सूखने के लिए डाले हैं।"

(सेवा से पदच्युत होते समय प्रोविडेंट फण्ड, ग्रेच्युटी आदि में दो हज़ार रुपये कम्पनी से कुंजप्पु को मिले थे। वही रकम चारपाई पर सूख रही है।)

मँगम्मा के हाथ की छड़ी कौओं को हटाने के लिए थी। अगर कोई पिल्ले का बच्चा इधर फूटी आँखों से देखे तो कुंजप्पु के हाथ की छड़ी उसे मारने के लिए काफ़ी थी।

"अरे सुन, तू इन सब बातों को कन्निप्परंपु में जाकर न बताना।" कुंजप्पु ने केलन से स्नेहपूर्वक कहा।

केलन ने कन्निप्परंपु में आकर कुंजप्पु के नोट सुखाने की कथा कृष्णन मास्टर को सुनायी। यह कहकर कृष्णन मास्टर वटक्कन पाट्टु में कहे अनुसार, एक आँख से हँसने और एक आँख से रोने लगे।

कुंजप्पु अब कन्निण्परंपु में खाली हाथों वापस नहीं आया है। उसके हाथ में एक सन्दूक है। सन्दूक से सिर्फ़ तीन चीज़ें कुंजप्पु ने बाहर निकालीं। यह विमाता के लिए एक जरीदार धोती, गोपालन को एक हरी कमली और श्रीधरन के लिए एक टिन भर मिठाइयाँ थीं। (उसका विचार रहा होगा कि श्रीधरन अब भी एक बच्चा ही है।)

कृष्णन मास्टर ने कुंजप्पु के कन्निण्परंपु में आने की बात से अवगत होने का बहाना तक नहीं किया। विमाता ने कोई वैरभाव नहीं दिखाया। गोपाल ने कुछ नहीं बताया। श्रीधरन तो कुछ पैसा मिलने की प्रतीक्षा में ही था।

एक दिन सुबह हमेशा की तरह पति को शक्कर की काफी ला देने पर (शक्कर की काफी कृष्णन मास्टर का प्रिय पेय था।) कृष्णन मास्टर ने कुंजप्पु के बारे में पूछा, "उसका प्लान क्या है ?"

पत्नी ने हथेली दिखायी, "मुझे कुछ नहीं मालूम।"

"अरे, पानी में रहकर मगर से वैर मोल लेने से किसे लाभ होगा ?"

एक बार कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन से कुंजप्पु को सुनाने के लिए यों कहा था। रेल विभाग की हड़ताल में भाग लेकर नौकरी से पदच्युत होने की बात का इशारा करके ही वे बोले थे।

लेकिन मास्टर की वह कहावत श्रीधरन के लिए भी लागू थी। उस इलाके के संपादक के विरोध में श्रीधरन ने हड़ताल की घोषणा की थी।

उस पर विचार करने पर श्रीधरन के मन में एक नयी बात उभर आयी। ऐसे भी तो तालाब होंगे, जहाँ मगर नहीं रहते।

तिरुवितांकूर के कोल्लं से एक सचित्र साप्ताहिक निकल रहा है। म्युनिसिपल लायब्रेरी से उसके अंक वह हमेशा देखता है और बड़ी तत्परता से पढ़ता भी। वह अच्छे स्तर की एक साहित्यिक पत्रिका है।

तिरुवितांकूर में साधारण जन, साहित्य में ही बातचीत करते हैं, लिखते हैं और चिन्तन करते हैं। वे असली साहित्य की पहचान कर सकते हैं। महान कवियों में कमलासन और परमेश्वर तिरुवितांकूर के ही तो हैं। सिर्फ नारायण को ही मलबार मिला है।

कोल्लं के सचित्र साप्ताहिक को उसने एक कविता भेजने का निर्णय लिया।

नयी कविता की नोटबुक मछली से भरे तालाब की तरह थी। उनमें से एक छोटी-सी मछली—एक प्रेम-कविता—को निकाल कर कोल्लं सचित्र साप्ताहिक के संपादक के नाम प्रेषित किया।

कविता के अगले अंक में प्रकाशित होने की प्रतीक्षा थी। लेकिन उसमें दिखाई नहीं दी। लेकिन फिर अगले अंक में ज़रूर प्रकाशित होने की प्रतीक्षा करते समय एक दिन सुबह दुमंज़िले मकान के अपने कमरे में बैठकर गणित को कोसते

हुए रंगनाथय्यंगर को निवेदन लिखते वक्त नीचे से बाबूजी की पुकार सुनी। सीढ़ियाँ उतरते समय पगडंडी से जानेवाले डाकिये की खाकी कमीज का निचला हिस्सा देख लिया।

बरामदे में पहुँच गया। पिताजी एक खुले हुए पत्र को अपने हाथ में पकड़े खड़े थे। (पिताजी के चेहरे पर एक तरह की नफ़रत थी। पत्र हाथ में थमाते समय थूकने के भाव में उन्होंने आँखें तरेरकर देखा।)

पिताजी ने कुछ कहने की कोशिश की तभी नाई वेलु अपने कन्धे की पेटी को तौलिये से ढककर आता हुआ नज़र आया। (पिताजी हफ्ते में दो बार दाढ़ी बनवाया करते थे। फिर बाबूजी ने कुछ नहीं बताया।)

कोल्लं सचित्र साप्ताहिक के कुत्ते के पाखाने के रंगवाले लिफाफे पर पता तो पूर्णरूप से लिखा गया था :

श्री सी० श्रीधरन,<br>
कन्निप्परंपु हाउस,<br>
समीप नयी सड़क,<br>
अतिराणिप्पाटं

पत्र (सी० श्रीधरन को कविता के बारे में संपादक के अभिनन्दन की संभावना थी।) उलटकर देखा। कोल्लं सचित्र साप्ताहिक के लिए भेजी हुई प्रेम-कविता।

उसके नीचे संपादक की लिखावट में छोटा वाक्य लिखा था : "कविता बिलकुल रद्दी है। वापस भेज रहे हैं।" (डी० पी० का संक्षिप्त हस्ताक्षर भी।)

लगा कि पैर खिसककर मल के गड्ढे में गिर पड़ा है।

पिताजी की वीभत्स दृष्टि का मतलब समझ गया। कालेज की किताबें न पढ़कर कविता लिखनेवाले इस छोकरे का पागलपन अब भी दूर नहीं हुआ है। हे भगवान्! यह छोकरा ऐसी रद्दी रचनाएँ लिख रहा है, जिसकी ज़रूरत किसी को नहीं है।

कोल्लं साप्ताहिक में भेजते समय कविता के साथ ज़रूरी टिकट लिफाफे में नहीं रखा था। (कंजूसी के कारण नहीं, बल्कि कविता प्रकाशित होने के यकीन के कारण ही ऐसा किया था।) करुणामय संपादक ने उसकी निर्मम हत्या कर लाश को कब्र में बन्द कर अपने खर्च से कोल्लं से इधर भेज दिया है।

## 10. इब्राहीम कथाकार

श्रीधरन के कॉलेज जाते समय चौकीदार आण्डिक्कुट्टि कुछ खुसुर-फुसुर करता आ रहा था। मूँछ कणारन भी विपरीत दिशा से आ गया।

"आण्डिक्कुट्टि, तुम क्या बकझक करते चलते हो?" कणारन ने पूछा।

"पणिक्कर के स्कूल में एक बढ़ई मास्टर है न—केशवन, वह साइकल लेकर जा रहा है।" आण्डिक्कुट्टि ने करीब सौ गज दूर साइकल सवार केशवन मास्टर की तरफ इशारा किया।

"उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा?" कणारन ने पूछा।

"मैंने उसके बारे में किसी से कुछ मजाक में कहा था। वह बात उसके कानों तक पहुँच गयी। 'वर्दी पहनकर नौकरी में प्रवेश करते ही तुम्हें चौकीदारी से हटा दूँगा'—बढ़ई ने ऐसी एक ताकीद दी है।"

"हाँ, उससे ज़रा सावधान रहो, आण्डिक्कुट्टि।" कणारन ने बड़प्पन दिखाते हुए बताया। "बढ़ई पुलिस इन्सपेक्टर के ओहदे पर खाकी पेन्ट, कोट और टोपी पहनकर आवेगा तो हमें सड़क पर चलने की उससे अनुमति लेनी होगी—समझ गये न!"

"हाँ—हूँ—आण्डिक्कुट्टि को बुखार आ जाएगा।" आण्डिक्कुट्टि ने जमीन पर थूकते हुए कहा।

दोनों ने विदा ली।

सफेद ट्विल शर्ट, कोट और लिनन धोती पहने नयी सड़क का साइकल सवार केशवन मास्टर खूबसूरत आदमी है, पर वर्ताव में विदूषक है। शरीर के गठन से पुलिस इन्स्पेक्टर बनने की योग्यता है। उसके पाँव ज़मीन पर नहीं पड़ते। 'पुलिस इन्स्पेक्टर' के चुनाव में गया था। नतीजा मालूम नहीं हुआ। पर, केशवन अभी से 'सब पुलिस इन्स्पेक्टर' का भाव, वर्ताव और अभिनय दिखाने लगा है। किसी से भी कुछ मन मुटाव होने पर केशवन अपनी साइकिल से उतरकर धमकी देता, "बच्चू, ज़रा मुझे वर्दी पहनने दो तब मैं दिखा दूँगा।"

केशवन मास्टर की पुलिस-सजावट को देखकर सबसे अधिक बदहवास होनेवाला व्यक्ति स्कूल मैनेजर चन्दुप्पणिक्कर था। केशवन मास्टर से मन-मुटाव होने पर बात बढ़ जाएगी। पुलिस इन्स्पेक्टर हो जाने पर वह ज़रूर बदला लेगा। मैं रात को जब ग्राहकों के सामने थैली से कोड़ियाँ निकालकर ज्योतिष की गणना करूँगा, उस समय यह पुलिस-इन्स्पेक्टर केशवन एकाएक झपटकर कहेगा कि यहाँ चोरी का माल रखने की शिकायत मिली है, तुरन्त जाँच करनी है तो फिर क्या किया जा सकेगा? अहाते के एक कोने में कोई सामान छिपाकर रखने के बाद यहाँ चोरी का माल है—कहकर अगर मुझे गिरफ्तार कर हिरासत में ले लेगा तो मैं भला क्या कर सकूँगा!

पणिक्कर ने केशवन मास्टर के जन्म-नक्षत्र को तरकीब से समझ लिया। उस दिन रात को केशवन मास्टर के नाम ज्योतिष की गणना की तो शुभ लक्षण ही दिखाई पड़ा। पुलिस की नौकरी उसे जरूर मिलेगी···

केशवन मास्टर की प्रार्थना के बिना ही कंजूस मैनेजर चन्दुपणिक्कर ने उसकी

तनख्वाह में पाँच रुपये की वृद्धि कर दी।

उसी बढ़ई केशवन मास्टर ने चौकीदार आण्डि को नौकरी से हटा देने की धमकी दी थी। चौकीदार आण्डि को ही नहीं, उस इलाके के कुछ और लोगों को भी केशवन ने वर्दी में आते ही हमला करने के लिए नोट कर रखा था।

कालेज पहुँचने पर लड़के इधर-उधर जमा होकर फुसफुसाते दिखाई पड़े। कुमार मेनोक्की से इस बात की वजह जाननी चाही। मेनोक्की ने कहा, "ज़रा उस दीवार के पास जाकर देख!"

पाखाने की दीवार पर नजरें घुमायीं। अन्दर की दीवार पर कोयले से बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था : 'कृष्णनुण्णि मास्टर ने शिशु की हत्या कर दफना दिया है।

दो दिन पहले नारायणन नंपियार ने वह किस्सा श्रीधरन को बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से बताया था। अब इस समाचार का पाखाने के दीवार रूपी अखबार में मोटे अक्षरों में विज्ञापन दिया है।

कृष्णनुण्णि नायर उसी कालेज में बॉटनी का अध्यापक है। दुबला-पतला, गोरा और खुबसूरत युवक। घुंघराले बालों का मुकुट सिर पर पहन रखा है। हास्य-व्यंग्य में पटु होने के साथ ही स्नेहशील अध्यापक है। छात्रों को पढ़ाने में बड़ा होशियार है। छात्रों का अत्यधिक प्रिय शिक्षक है। वह बीच-बीच में चुटकियाँ लेकर छात्रों को हँसाता। ड्राइंग मास्टर रामक्किटावु कहा करता है कि कृष्णनुण्णि मास्टर की बॉटनी क्लास हँसी-ठहाके की एक प्रयोगशाला है।

ऐसा कृष्णनुण्णि मास्टर एक खतरे में पड़ गया। कृष्णनुण्णि की शादी हो चुकी थी। उसकी साली संगीत सीखने के लिए अपनी बहिन के यहाँ रहने लगी। एक साल बीत जाने पर मास्टर की पत्नी ने नहीं, बल्कि अविवाहिता साली ने ही पहले एक बच्चे को जन्म दिया। मास्टर ने इस नवजात शिशु को गला घोंटकर मार डाला और एक तालाब के किनारे दफना दिया। लेकिन सियारों ने शिशु की उस लाश को उखाड़कर बाहर निकाल दिया···

इस समाचार का उस इलाके में बड़े गुप्त रूप से प्रचार-प्रसार हुआ। यह सुनकर छात्रों को बेहद गम हुआ। फिर भी कृष्णनुण्णि मास्टर से उन्हें किसी तरह की घृणा नहीं हुई। मास्टर ने उनके दिलों को इतना अधिक प्रभावित जो किया हुआ था।

पाखाने की दीवार पर यह समाचार छात्रों ने नहीं लिखा था। सबको मालूम है कि किसने लिखा था। वह अटेण्डर मुस्तफा था।

पठान-वंशज मुस्तफा बॉटनी प्रयोगशाला का अटेण्डर है। काला-कलूटा और दुबला-पतला एक आदमी, बड़ी-बड़ी मूँछें और लाल-लाल आँखोंवाला।

मुस्तफा समय और अपनी ड्यूटी का ख्याल किये बिना शराब पीने लगता।

स्कूल से चले जाने पर बदतमीजों की चण्डाल-चौकड़ी में ही वह दिखाई देता।

शराब और ताश खेलने की लत उस पर सवार थी।

बॉटनी क्लास के छात्रों को पढ़ाने के लिए कुछ खास पौधों को इकट्ठा कर लाने के लिए कृष्णनुण्णि मास्टर मुस्तफा को तैनात करता। पहले मुस्तफा ताड़ी शॉप में जाता। दो बोतल गटागट पीता। फिर वह उस पौधे का नाम भूल जाता। फिर घीकुंवार नामक पौधे के बदले एरण्ड और अढउल के बदले कोई दूसरा फूल लेकर वह बॉटनी क्लास में जा पहुँचता। कृष्णनुण्णि मास्टर हँसता, साथ ही छात्र भी हँसते।

पहले कुछ दिनों तक मास्टर क्षमा करता रहा। पर, मुस्तफा के चरित्र में कोई खास परिवर्तन नजर नहीं आया। एक दिन मुस्तफा ने ताड़ी पीकर कृष्णनुण्णि मास्टर को खरी-खोटी सुनायीं। कृष्णनुण्णि नायर ने हेडमास्टर से शिकायत की। हेडमास्टर ने अटेण्डर मुस्तफा को ताकीद देकर कहा कि अब यदि एक भी शिकायत तेरे खिलाफ आयी तो तुझे नौकरी से हटा दिया जायेगा। इसी कारण कृष्णनुण्णि मास्टर उल्लिखित खतरे में फँस गया। मुस्तफा ने अपना विरोध पाखाने की दीवार पर विसर्जित किया।

दीवार पर की लिखावट को बॉटनी छात्र शंकरन अडियोडी ने खुरचकर मिटा दिया। लेकिन इतने में कॉलेज के सभी छात्रों ने इन पंक्तियों को कंठस्थ कर लिया था।

श्रीधरन ने इस घटना के बारे में एक कहानी लिखने का निश्चय किया। उसके लिए 'मान्यता प्राप्त लाश का गड्ढा' उचित शीर्षक भी ढूँढ निकाला।

शाम को कॉलेज से घर लौटते समय श्रीधरन 'मान्यता प्राप्त लाश का गड्ढा' के संविधान के बारे में सोच रहा था। वह कहानी में कृष्णनुण्णि मास्टर को विलेन नहीं बनाना चाहता था। मास्टर की पत्नी की निस्सहाय अवस्था को ही कथा का केन्द्र-बिन्दु बनाना चाहिए। एक ओर पति, दूसरी ओर बहिन। वह साध्वी फिर क्या करेगी? सारे अपराधों को संगीत सीखने के लिए आयी हुई बहन के सिर पर ही थोपना चाहिए। इस बात पर सिर खपाते समय 'बैल' दामु सड़क की विपरीप दिशा से आता हुआ नजर आया। उसके हाथ में एक मासिक पत्रिका थी।

"अरे दामु, यह क्या है? तू कब से किसी मासिक का पाठक बन बैठा?" श्रीधरन ने जरा मजाक के लहजे में ही पूछा।

दामु ने श्रीधरन की तरफ़ पत्रिका बढ़ा दी।

श्रीधरन ने उसे लेकर देखा। मासिक नहीं, साप्ताहिक है। राजा की संपादकी में निकलनेवाली मशहूर साप्ताहिक पत्रिका है।

"तू जरा एक बार इसे पढ़ ले। इसमें मेरे मालिक के भतीजे की एक कहानी

है।" दामु ने गर्व से सूचना दी।

"तेरे मालिक का भतीजा कौन है ?" साप्ताहिक के पृष्ठों को उलटते हुए श्रीधरन ने पूछा।

"उसका नाम इब्राहीम है। पुराने ज़माने में वह एक दर्जी था। अब मालिक के कपड़े की दूकान में असिस्टेण्ट मैनेजर की हैसियत से काम कर रहा है। शायद तूने उस लंगड़े को देखा होगा।"

दामु जिस दूकान में काम करता है उसमें श्रीधरन ने एक लँगड़े को देखा था। तुरन्त उसका स्मरण हो आया।

साप्ताहिक के पृष्ठों को उलटकर देखा। बीच के पृष्ठों में ही वह प्रकाशित थी।

"लघु कथा — 'कर्मफल'

(विरिप्पिल इब्राहीम)"

अरे चालाक !

"साप्ताहिक तू ही ले ले।" दामु ने एक बोझ उतार रखने के भाव में कहा। "उस यार ने साप्ताहिक की पच्चीस प्रतियाँ पैसे देकर खरीदीं। हर मित्र को एक-एक प्रति भेंट की। सबके साथ मुझे भी एक प्रति भेंट की। उस लँगड़े की कहानी पढ़ने के लिए मेरे पास अवकाश नहीं है।" दामु मुँह मोड़कर चला गया। श्रीधरन भी कन्निप्परंपु की ओर चला गया।

चाय पीने के बाद घर के कमरे में बैठकर साप्ताहिक की कहानी 'कर्मफल' बड़े ध्यान से पढ़ी। रोचक वार्तालाप और शुद्ध भाषा में कल्पना वैभव के साथ इस काव्य-शिल्प का प्रणयन किया गया था। यह देखकर श्रीधरन को ताज्जुब हुआ। साथ ही, कुछ ईर्ष्या भी महसूस हुई।

"कथाकार विरिप्पिल इब्राहीम से एक दफा मुलाकात करनी होगी" श्रीधरन ने सोचा। कथा लिखने का मर्म उस कृपाप्राप्त कथाकार से समझना है। अगले दिन 'बैल' दामु को देखा।

"तेरे मालिक के भतीजे इब्राहीम से परिचित होने की मेरी इच्छा है।" श्रीधरन ने अपना आग्रह प्रकट किया।

"ओ, तू भी एक कवि है न ! अभी मेरे साथ आ। इब्राहीम को तुझसे इण्ट्रोड्यूस करूँगा। उससे मिलने के लिए जाने पर उस लंगड़े को बड़ा गर्व महसूस होगा।"

दामु के पीछे-पीछे श्रीधरन कपड़े की बड़ी दूकान के सामने पहुँच गया।

"अब तो अच्छा मौका है।" दामु ने सूचना दी : "इब्राहीम का चाचा मालिक कहीं बाहर गया है।"

कैश काउण्टर के पीछे एक सफेद दाढ़ीवाला बैठा था।

दामु ने कहा, "मैनेजर उस्मान कोया है वह।"

"इब्राहीम कहाँ है ?"

दामु ने इशारा किया। दूर एक कोने में कपड़ों से भरी एक बड़ी अलमारी के निकट एक नौजवान सिर झुकाकर बैठा था, वह इब्राहीम है।

इब्राहीम गोद में एक पुस्तक खोलकर पढ़ रहा था।

नज़दीक गया।

दामु ने श्रीधरन का परिचय कराया, "ये हैं हमारे अतिराणिप्पाटं के एक युवा साहित्यकार। नाम है 'श्रीधरन'। इब्राहीम से परिचित होने के लिए आये हैं।"

"एक नया उपासक—ठीक है न ?" इब्राहीम सगर्व मुस्कराया। उसने अपनी गोद की पुस्तक को अलमारी में छिपा दिया।

"साप्ताहिक की 'कर्मफल' कहानी पढ़ी श्रेष्ठ कहानी है।" श्रीधरन ने पहले हार्दिक बधाई दी।

इब्राहीम ने इस तरह अपने ओठों को ज़रा टेढ़ा कर सिर हिलाया मानो ऐसी तमाम बधाइयों से उसके कान परिचित हैं।

"क्या आप कथाओं का प्रणयन करते हैं ?" (लिखने की शैली में ही वह बातचीत करता है।)

"कभी-कभी कुछ लिख लेता हूँ।"

"पब्लिश किया है ?"

"एक-दो कॉलेज मेगज़ीन में प्रकाशित हुई थीं।"

"कई पुस्तकें पढ़नी चाहिए। तभी कथा की रचना कर सकते हैं।" कथाकार इब्राहीम ने सलाह दी।

श्रीधरन ने सिर झुकाकर उसकी बात मानी।

इब्राहीम को कुछ और उपदेश देने की तमन्ना थी। तभी मालिक और एक-दो ग्राहक वहाँ घुस आये।

"एक दिन मेरे घर आयें तो हम विस्तार से बातचीत करेंगे।" कहकर हड़बड़ी में अपने बायें पैर को घसीटता इब्राहीम ग्राहकों से पूछताछ करने के लिए उस तरफ़ चला गया।

"अब जल्दी चलते बनो।" वैल दामु ने आँखों और हाथ से इशारा करते हुए सावधान किया। (मालिक ने एक भेड़िये की तरह सिर ऊपर उठाकर देखा।)

श्रीधरन ने जान लिया कि इब्राहीम असिस्टेंट मैनेजर कहलाने पर भी दामु की तरह ही एक सेल्समैन है। यह दूसरी बात है कि 'कर्मफल' के अनुग्रहीत गल्पकार विरिप्पिल इब्राहीम के प्रति पहले जो आदरभाव था वह कम नहीं हुआ।

श्रीधरन ने चार दिन तक कड़ी मेहनत करने के बाद 'मान्यता-प्राप्त लाश

का गड्ढा' के काम को पूरा किया।

इब्राहीम को कहानी सुनाकर उस सिद्धहस्त लेखक की सलाह के मुताबिक श्रीधरन चाहे तो दुबारा इसे लिख सकता है।

अगले दिन रविवार को इब्राहीम की छुट्टी है। उसके घर पर सुविधानुसार बहस हो सकती है।

इब्राहीम के घर के बारे में दामु ने ज़रूरी सूचना पहले ही दे दी थी। पूपिक्करा में, समुद्र के किनारे श्मशान का एक बड़ा अहाता है। उसकी पूर्व दिशा में बादाम और दो कटहल के पेड़ों से ढके अहाते में एक पुराना छप्पर है। उसके एक हिस्से में एक नयी बैठक भी बनाई गई है।

श्रीधरन दोपहर के भोजन के बाद, 'मान्यता प्राप्त लाश का गड्ढा' के साथ पूपिक्करा की तरफ निकल पड़ा। पूपिक्करा की बड़ी मसज़िद के श्मशान के नज़दीक पहुँचने पर एक बादाम और दो कटहल के पेड़ों को सिर ऊँचा कर खड़े हुए देखा। उस छोटे से अहाते में एक पुराना छप्पर और प्लास्टरहीन दीवारों का एक छोटा-सा कमरा भी दिखाई दिया।

श्रीधरन उधर चला गया। एक मध्य वयस्क मुसलमान औरत आँगन में एक बकरी के बच्चे को कटहल के हरे पत्ते खिला रही थी।

श्रीधरन ने अदब से पूछा, "क्या यही इब्राहीम का घर है ?"

औरत ने आगंतुक को गौर से देखा। उसने सिर का घूंघट ज़रा ठीक किया। फिर 'हां' के अर्थ में चेहरा हिलाया।

"इब्राहीम हैं !"

"इब्राहीम समुद्र के किनारे गया है। अभी आया जाता है। तुम वहाँ बैठो।" उसने बैठक की तरफ़ इशारा किया।"

(कथाकार मलविसर्जन के लिए ही समुद्र-तट की ओर गया था, वायु-सेवन के लिए नहीं।)

श्रीधरन बरामदे में चला गया। बैठक का दरवाज़ा खुल गया था।

श्रीधरन ने कथाकार के कमरे में उत्सुकतावश नज़रें घुमायीं। एक कोने में एक पुरानी अलमारी-भर पुस्तकें थीं। कमरे के बीच लिखने की एक मेज...। मेज़ पर, कुर्सी के हाथ के तख्ते पर और ज़मीन पर भी किताबें। कुछ पुस्तकें खुली हुई थीं। कागज़ के टुकड़ों से पृष्ठों पर निशान लगाए गए थे।

इतने अधिक ग्रंथों को एक ही समय पढ़ डालनेवाले इब्राहीम की ज्ञानतृष्णा का स्मरण कर श्रीधरन दंग रह गया।

इब्राहीम के मनपसन्द ग्रंथों को जानने लिए श्रीधरन ने सरसरी निगाहों से उनकी जाँच की।

'विरुतन शंकु', 'शांतकुमारी', 'इन्दुलेखा', 'सुकुमार कथामंजरी'—ये चार

पुस्तकें मेज़ पर विश्राम ले रही थीं। 'कोमल वल्ली' 'आवल्लात्त नोट्ट' (बुरी नज़र), 'वद्दरुक मुनीर'—ये तीन किताबें कुर्सी के तख्ते पर मुँह खोले पड़ी थीं। 'किस्मत से लड़नेवाले कुछ साहसी' और 'लंदन महल के रहस्य' जमीन पर पड़ी थीं।

दो-तीन कागज़ मेज पर पड़े थे, जिन पर कुछ लिखा हुआ था। शायद इब्राहीम की नयी कहानी होगी। श्रीधरन ने कागज़ पर झाँककर देखा। पढ़ने पर मालूम हुआ कि कहानी नहीं थी। कुछ ऐसी पंक्तियाँ और वाक्य थे, जिनका आपस में कोई सम्बन्ध नही था। कागज के पृष्ठों को उलटकर देखा। सब उसी तरह के हैं। मालूम हुआ कि कई किताबों से उसने नकल कर रखी है। 'इन्द्रलेखा' से कुछ पंक्तियाँ, 'बुरीनजर' से बातचीत की कुछ पंक्तियां। 'कोमलवल्ली' से एक वर्णन। 'विरुतन शंकु' से एक छोटा सा विवरण। इन साहित्यिक मसालों को ही उसने जमा कर दिया है।

एक नये कागज़ पर 'दहेज' मोटे अक्षरों में लिखा था। (नयी कहानी का शीर्षक होगा।)

श्रीधरन को विरिप्पिल इब्राहीम की कहानी गढ़ने की तरकीब मालूम हो गयी।

इब्राहीम पहले एक दर्जी था। कई क़िस्म के कपड़ों के टुकड़ों को जोड़कर एक नयी पोशाक बनाने की कला को इधर भी काम में लाया गया है। इब्राहीम अकिंचन तो नहीं है—कुछ भावना तो है। पढ़ने से कुछ ज्ञान भी प्राप्त कर लिया है। वह कहानी के नये 'प्लाट' को गढ़ता, उस प्लाट के लिए अपेक्षित शब्द-वर्णन, बातचीत आदि घटक हेर-फेर के साथ दूसरे लेखकों की पुस्तकों से चोरी करता। इन सबको ठीक ढंग से जोड़ने की क्षमता भी उसमें है।

राजा के साप्ताहिक की 'कर्मफल' कहानी दूसरों के कपड़ों के टुकड़ों से बुनी हुई एक कमीज़ थी। संपादक-गण 'विरुतन शंकु' और 'कोमल वल्ली' के वाक्यों और वर्णनों की याद करनेवाले नहीं होते।

लंगड़े इब्राहीम को दूर से आते देखकर अचानक श्रीधरन बैठक से बरामदे में जाकर खड़ा हो गया। फिर घर को रवाना होने की मुद्रा में एक पैर बरामदे में और दूसरा आँगन में रखकर खड़ा रहा।

इब्राहीम ने श्रीधरन को गौर से देखा। एकाएक पहचान नहीं हुई। पहचानने पर ज़रा मुस्कराया। उसने खुली हुई बैठक की तरफ़ घबड़ाकर देखा: अपनी करतूतों का रहस्य क्या इस आदमी को मालूम हो गया है?

श्रीधरन ने इब्राहीम के चेहरे की सकपकाहट देखी।

"श्रीधरन को आये ज्यादा देर हो गयी क्या?" इब्राहीम ने अदब के साथ कहा।

"नहीं, अभी-अभी आया हूँ। यह जानने पर कि आप यहाँ नहीं हैं, मैं वापस जाने ही वाला था।"

श्रीधरन ने जान-बूझकर झूठ कहा। बकरी को पत्ते खिलानेवाली वह औरत अहाते के एक कोने में चली गयी थी।

(सिर्फ वही एकमात्र गवाह थी।)

"श्रीधरन, भेंट-वार्ता का समय तो···।" इब्राहीम ने अपनी घबराहट छिपाते हुए पराजय के लहज़े में कहा। "अभी मुझे अपने एक दोस्त की शादी में शरीक होने जाना है·।"

"कोई बात नहीं, मैं फिर आ जाऊँगा।"

इब्राहीम सकपकाया-सा खड़ा रहा। मेहमान को बैठक में न्योता देने का हौसला नहीं था।

"मैं तुरन्त कपड़े बदलकर आता हूँ। हम साथ ही चलेंगे।" मेहमान को निमंत्रण दिए बगैर इब्राहीम बैठक को बंद कर कमरे में घुस गया। अपनी पोशाक बदली। हाथ में एक नयी छतरी लिए वह पाँच मिनट के अन्दर बाहर आ गया।

"हम चाय 'मक्कानी' में पियेंगे···"

अतिथि-सत्कार की मर्यादा का स्मरण इब्राहीम को बड़ी देर बाद ही आया था।

"इब्राहीम, अभी चाय की ज़रूरत नहीं।" श्रीधरन ने सस्नेह उस निमंत्रण को टाल दिया।

दोनों बाहर पहुँचने के बाद महाश्मशान के पास से अलग हो गये। इब्राहीम दक्षिण और श्रीधरन वायु-सेवन के लिए उत्तर के समुद्र-तट की तरफ़ चले गए।

विदा लेते समय इब्राहीम ने सलाह दी, "श्रीधरन, आगे मुझसे मुलाकात करने के लिए आते समय पहले उसकी सूचना दे देना। हमारी दूकान के सेलसमैन दामोदरन से कहना काफ़ी है···"

कथाकार इब्राहीम की बात शिरोधार्य कर श्रीधरन चला गया।

इब्राहीम के कमरे के साहित्यप्रेतों का स्मरण कर हँसते हुए वह चल रहा था।

"फध्धुम्म्म"···एकाएक चौंक उठा। उस भयंकर आवाज़ के साथ हलका-सा भूचाल भी आया।

श्रीधरन ने घबराहट के साथ चारों तरफ दृष्टि डाली। सड़क के नज़दीक के अहाते से ही उस आवाज़ और उस भूचाल की शुरूआत हुई थी।

एक बड़े नारियल के पेड़ का ऊपरी भाग काटकर गिराने की आवाज़ थी। ऊपर की तरफ़ देखा—सिर-कटे नारियल के पेड़ के छोर पर बैठा एक आदमी कटे पेड़ के साथ-साथ हिल रहा था। ध्यान से देखने पर उस आकाशविहारी को पह-

चान गया : किट्टन मुंशी का पुराना शिष्य तुप्रन !

तुप्रन को लकड़हारा बने चार-पांच साल वीत गये। किट्टन मुंशी की सलाह के मुताबिक तुप्रन ने आण्डी के अधीन छह महीने तक एप्रेण्टिस होकर इस पेशे में प्रशिक्षण पाया था। एक कन्धे पर लिपटी हुई मोटी रस्सी (कभी दूसरे कन्धे पर गोलाकार तार भी) और हाथ में एक कुल्हाड़ी लेकर आगे जा रहे तुप्रन को श्रीधरन कभी-कभी रास्ते में देखा करता था। घर की तरफ़ झुककर रहनेवाले नारियल को तारों से खींचकर बाँधता, नहीं तो उन्हें काट डालता। तुप्रन का यही पेशा है। इस पेशे में तुप्रन से प्रतिस्पर्धा करने के लिए अन्य इलाकों में भी और कोई नहीं था। आसमान में इस ख़तरनाक अभ्यास को प्रकट करने का हौसला रखनेवाले कम लोग हैं।

यों कुली मजदूर तुप्रन अब लकड़ी काटनेवाला ठेकेदार है। अब तुप्रन को धन्धे की तलाश में मारे-मारे नहीं फिरना पड़ता। ज़रूरतमंद लोग उसे स्वयं ढूँढ़ते चले आते हैं।

"एक नारियल का पेड़ घर की तरफ़ झुक आया है, तुप्रन, उसे काटना है।"

तुप्रन उस जगह जाकर सरसरी निगाह से देखता। पेड़ की स्थिति, उसका घुमाव, आसपास की स्थिति आदि के बारे में मन में एक तस्वीर खींचता। फिर योजना तैयार करने के विचार से जीभ को ऊपरी ओठ पर मोड़कर ऊपर देखता हुआ बड़ी देर तक खड़ा रहता। फिर पारिश्रमिक के बारे में वह झट से स्पष्ट कहता : "दस रुपये होंगे।"

ज़रूरतमंद लोग उससे पारिश्रमिक कम करने की बात नहीं करते।

कब पेड़ घर के ऊपर गिरेगा इसका अंदाज नहीं लगाया जा सकता। दूसरे लकड़हारे को ढूँढ़कर लाने का वक्त भी नहीं होता, इसलिए तुरन्त अनुमति देनी होती।

अपने पेशे में तुप्रन एक विशेषज्ञ है। बड़ी ऊँचाई से काटी गयी डालों को वह पूर्व निर्धारित जगह पर ही गिराता। घर या अन्य वृक्षों को ज़रा भी चोट पहुँचाये बिना तुप्रन यह काम कर डालता।

सिरे को काटने से हिलने-डुलनेवाला नारियल का पेड़ और उसके छोर पर पेड़ के साथ ही-साथ आसमान में हिलनेवाला तुप्रन ! श्रीधरन को यह एक अद्भुत दृश्य लगा। उसे लगा, जैसे सिर विहीन एक घोड़े की गरदन को पकड़कर आसमान में एक राक्षस सवारी कर रहा हो। श्रीधरन समुद्र तट पर जाकर बड़ी देर तक वायु सेवन करता बैठा रहा। घर लौटते लौटते धुँधलका छा गया था। एकाएक घर के दक्षिण कोने से उसे ज़ोर की बातचीत सुनाई पड़ी। कान खड़े करके सुनने लगा। गोसाईं भाषा में ही बातचीत हो रही थी। 'ठीक है' 'तुम पियो'—'मेहरबानी' 'पीशांकत्ती' (चाकू) पकड़ो'...

हाँ गोसाईं ही है। कमण्डलु, तिलक, लोहे की छड़ी और लोटा लेकर कुछ हिन्दुस्तानी आया करते हैं। कृष्णन मास्टर को उनमें बड़ी दिलचस्पी है। वे श्रद्धा-पूर्वक उनकी अगवानी करते। कभी-कभी मेहमानों की तरह एक दिन घर में उन्हें ठहराते। उन लोगों ने कन्निप्परंपु में डेरा डाला होगा।

श्रीधरन ने हौले से दक्षिण के आँगन की तरफ झाँककर देखा। वहाँ अशोक वृक्ष के नीचे दो आदमी खड़े हैं। उनमें से एक को पहचान लिया—बड़े भाई साहब फिट्टर कुंजप्पु। ध्यान से देखने पर दूसरे को भी पहचान लिया—पाणन कणारन।

पाणन कणारन विदेश-यात्रा पूरी कर कृष्णन मास्टर से मुलाक़ात करने आया है। कृष्णन मास्टर हाजी के घर से ट्यूशन खतम कर अभी तक नहीं आये हैं। इस बीच कणारन थोड़ा-सा गाँजा-बीड़ी पीने आँगन के दक्षिण कोने में चला गया। कटहल के पत्ते के दोने में अंगार और गाँजा तैयार करते समय कुंजप्पु उसकी गन्ध सूँघकर पाणन के सामने पहुँच गया। फिर दोनों बारी-बारी से गाँजा पीने लगे। पाणन ने कहा कि गाँजा पीते समय सिर्फ़ हिन्दुस्तानी में ही बातचीत करनी चाहिए। फिर वातावरण गोसाईंमय हो गया। लम्बे अर्से पहले फौज में रहते हुए कुंजप्पु ने जो हिन्दुस्तानी सीखी थी, उन शब्दों को वह याद कर ही रहा था कि उसे उल्टी होने लगी। तभी वह कणारन से बोला, "ज़रा यह पीशांकत्ति (कतरना) तो पकड़।"

## 11. बरगद के चबूतरे का संन्यासी

गोपालन भैया की बीमारी अधिक नाजुक हालत में पहुँच गयी। वह खोपड़ी की नसों में घुसकर धीरे-धीरे आक्रमण करने लगी।

"श्रीधरन—श्रीधरन—इधर दौड़ आ—जरा यह देख···" गोपालन भैया कोई अद्भुत दृश्य दिखा देने के लिए पुकारता। श्रीधरन दौड़कर नज़दीक जाता। तब गोपालन भैया अपने हाथ से या उँगली के छोर से कुछ नोचकर धीरे-धीरे उसे खींचकर कहता, "अरे देख, ग्रंथिक आ रहा है।"

"गोपालन भैया, कुछ भी तो दिखाई नहीं देता।" असलियत कहें तो उसे नाराज़गी ही होती।

"अरे तेरी दृष्टि क्या इतनी कमजोर हो गयी है? अरे देख ग्रंथिक खिचा आ रहा है···।"

जो औषधियाँ गोपालन भैया ने पी थीं, उनमें ग्रंथिक भी था—रोम के सुफिर से धागे की तरह वह बाहर निकल रही है, ऐसी एक भ्रांति ने उसको दबोच लिया है। मस्तिष्क की नसों का यह माया-प्रदर्शन थोड़ी देर के लिए ही ठहरता है। थोड़ी देर बाद होश आने पर गोपालन भैया अपनी बेवकूफी का जिक्र कर पछताता। शरम और दुःख के कारण उसकी आँखें गीली हो जातीं। बिस्तर पर लेटे दूर तक

ताकते हुए, अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहानेवाले गोपालन भैया को देखने पर श्रीधरन की आँखों में भी पानी भर आता।

"तू 'ज्ञानप्पाना' लेकर ज़रा पढ़" गोपालन भैया अपनी आँखें पोंछकर चेहरे पर खुशी ज़ाहिर करते हुए कहता :

"मालिका मुकलेरिय मन्नंटे तोलिल माराप्पंगेट्टुन्नतु भवान···।"

(राजप्रासाद में विराजमान राजा के कन्धे पर भीख माँगने की झोली ईश्वर ही प्रदान करता है।)

वैद्य, हकीम, डाक्टर, मान्त्रिक आदि ने अपनी क्षमता के अनुसार इलाज किया। लेकिन गोपालन भैया की हालत ज्यों की त्यों थी।

उन्हीं दिनों बरगद के चबूतरे के संन्यासी की चमत्कारों की बात सब ओर फैल गयी थी।

राजा कॉलिज के निकट, मन्दिर के तालाब के किनारे, एक बड़े बरगद के चबूतरे पर एक संन्यासी आ बैठा है। चबूतरे के कोने में एक पर्णकुटीर बनाकर ही उसमें वह संन्यासी और शिष्य ठहरे हैं।

कॉलिज जाते समय श्रीधरन को संन्यासी कभी-कभी दिख जाता था। लंगोटी लगाए एवं सारे बदन में भस्म लेपन किए हुए दुबला-पतला एक व्यक्ति करीब छह फुट लम्बाई होगी। सिर की जटाएँ लटक रही थीं। चेहरे की भौंहों में भी भस्म-लेपन किया गया था। भस्म में से आँखें अँगारों की तरह चमक रही थीं।

संन्यासी बीमारों का इलाज करता है। किसी भी बीमारी को जड़ से उखाड़ फेंकने की जड़ी-बूटी, भस्म, गोलियाँ इस संन्यासी के हाथ में हैं।

बरगद के चबूतरे के संन्यासी की अद्भुत सिद्धियों के बारे में कई कथाएँ और अफवाहें इलाके-भर में फैल गयीं। मरीज और भक्तजन बरगद के चबूतरे के चारों ओर इकट्ठे होने लगे।

अमीर परिवारों के लोग भी संन्यासी को बुलाकर ले जाते। संन्यासी घोड़ा-गाड़ी में ही सफर करता। गोलियों एवं शुष्क जड़ी-बूटियों और भस्म से भरी एक चाँदी की डिबिया और गेरुए कपड़ों की एक गाँठ संन्यासी के हाथ में रहती। बाहर जाते समय हरे रंग की एक कमली को मोड़कर कन्धे पर डालता। जब कभी शिष्य भी साथ होते। इलाज के लिए फीस नहीं लेता था। उसके शिष्य कहा करते, "लेकिन आदमियों को अपनी शक्ति-भर दान देना चाहिए। यह दान स्वामीजी द्वारा हरिद्वार में निर्मित होनेवाले महाकापालिका मन्दिर के लिए खर्च किया जायेगा।"

"बरगद के चबूतरे का संन्यासी ज़रा छू ले तो गोपालन मुंशी की बीमारी दूर हो जाएगी।" कई मित्रों ने, जिनमें काठ के गोदाम का मालिक भास्करन भी शामिल था, कृष्णन मास्टर को सलाह दी।

"बाबूजी, चबूतरे के संन्यासी को कल मैंने स्वप्न में देखा था। संन्यासी ने

मेरा हाथ पकड़कर उठाया और कहा —"चलो।" गोपालन भैया ने पिताजी को ज़रा जोश के साथ बताया।

गोपालन भैया को संन्यासी का दर्शन दिवास्वप्न रहा होगा। लेकिन अपनी बीमारी से छुटकारा पाकर वह उठकर चल सकता है— ऐसा विश्वास गोपालन भैया के मन में अवश्य था।

एक दिन संन्यासी को लेने के लिए स्वयं कृष्णन मास्टर चले गये।

संन्यासी को छीनकर ले जाने की ताकत में वहाँ पहले ही कई बड़े लोग चबूतरे के चारों ओर जमा हो गए थे। उधर पर्णकुटीर के भीतर संन्यासी पूजा कर रहा था। उसी के शिष्यों ने कुछ लोगों को रहस्य की बात बतायी : गेरुए कपड़े की थैली में एक अमूल्य शालिग्राम है, उसे हरिद्वार में बनाए जानेवाले महाकापालिक मन्दिर में प्रतिष्ठित किया जायेगा। उसी शालिग्राम की अब पूजा हो रही है।

पूजा पूरी कर संन्यासी ने वहाँ एकत्रित हुए लोगों को सरसरी निगाहों से देखा। फिर उनमें से अभीष्ट एक व्यक्ति की ओर संकेत कर इक्कागाड़ी की तैयारी करने का आदेश दिया।

शायद कृष्णन मास्टर की योग्यता से अवगत होने के कारण उस दिन संन्यासी ने पहले-पहल मास्टर को ही चुना था। इक्कागाड़ी तैयार की गयी।

चबूतरे के संन्यासी के आगमन की सूचना पाकर अतिराणिप्पाटं और पड़ोस के लोग कंन्निप्परंपु में एकत्रित हो गये। गोपालन भैया अच्छी धोती और कमीज़ पहनकर चबूतरे के संन्यासी के दर्शन और स्पर्शन की उत्सुकता से प्रतीक्षा करता हुआ लेटा रहा।

संन्यासी और शिष्य कन्निप्परंपु में आ पहुँचे।

संन्यासी एक क्षण भी खोये बिना सीधे मरीज के सामने आया। उसने कमीज़ उतारने का आदेश दिया। गोपालन मुंशी ने कमीज़ उतारी। फिर धोती को कमर की तरफ़ हटाते हुए लकड़ी जैसे पैर को दिखा दिया।

संन्यासी ने मन्त्र जपकर चाँदी की डिबिया खोलकर कुछ भस्म लेकर मरीज़ के सिर, छाती और पैर में लगा दी। फिर सात गोलियाँ उठाकर कृष्णन मास्टर हाथ में थमा दीं। फिर हिन्दुस्तानी में कुछ फुसफुसाया।

शिष्य ने उसका अनुवाद किया।

"प्रति दिन एक एक गोली शहद में पीसकर देनी है।"

बरामदे में संन्यासी को घेरे हुए लोगों में से बड़ा गपीला किट्टुण्णि लोगों के बीच से किसी तरह आगे बढ़ा।

सुबह उठते समय से ही किट्टुण्णि को बहुत तेज़ सिरदर्द हो गया था। उसे दूर करने के लिए उसको दवा चाहिए।

संन्यासी ने उसे भी सुबह-सुबह दूध में मिलाकर पीने के लिए कुछ भस्म दे दी।

महाकापालिक मन्दिर-निर्माण की संचित निधि में कृष्णन मास्टर ने दस रुपये दान दिये। संन्यासी पैसे को नहीं छूता था। अतः शिष्य ने ही वह नोट ले लिया था।

इक्कागाड़ी में चढ़कर संन्यासी और शिष्य तुरन्त चले गए।

गोपालन भैया के चेहरे पर एक अपूर्व आनन्द था। "लगता है कि मेरे पैरों में कोई रेंग रहा है। नसों में प्राणों का संचार हो रहा है।" दाहिना पैर उठाने की चेष्टा करते हुए गोपालन भैया ने कहा, "इधर देखिए—मेरे पैर जरा ऊपर उठ रहे हैं!"

कृष्णन मास्टर और वहाँ इकट्ठे हुए लोगों ने झुककर देखा। पैर तो बिस्तर में लकड़ी की तरह वैसे का वैसा ही पड़ा था। औरों को मालूम हुआ कि मात्र उसका दिमागी प्रलाप है।

"गोली पीनी है—गोली पीने पर दूसरा पैर भी ठीक हो जाएगा।" गोपालन भैया ने जोश के साथ कहा।

पूर्व से चन्दुकुंजन जो शहद लाया था वह भी वहाँ सुरक्षित रखा था। श्रीधरन की माँ ने शहद में गोली पीसकर गोपालन को पीने के लिए दी।...

आधे घण्टे के बाद कन्निप्परंपु से लोग चले गए।

कृष्णन मास्टर ने डायरी लेकर खोली। वे चबूतरे के संन्यासी के बारे में कुछ लिखना चाहते थे। (मास्टर हर दिन डायरी लिखते।)

गोपालन भैया को लगा कि उसका बाँया पैर भी हवा में उड़ रहा है। कैसा आश्चर्य है!

तभी एक चमत्कार घटित हुआ।

कन्निप्परंपु में आँधी की तरह कोई हड़बड़ी से आता दिखा।

कौन है?—चबूतरेवाले संन्यासी जी?

कृष्णन मास्टर डायरी दूर फेंककर उठ खड़े हुए।

"हमारी थैली किधर है? लाओ।" एक सिंहगर्जन।

संन्यासी की थैली दिखाई नहीं पड़ी!

संन्यासी को फिर कन्निप्परंपु में पधारते देखकर पड़ोस के लोग झुण्ड के झुण्ड दौड़ आये।

संन्यासी के कन्निप्परंपु से इक्कागाड़ी में चढ़कर जाते समय वह थैली संन्यासी के ही हाथ में सब लोगों ने देखी थी। फिर अब इधर आकर तलाशने की क्या जरूरत है?

"यह हमारी थैली नहीं, यह दूसरी है।"

वह तो संन्यासी की थैली नहीं है। किसी ने उस थैली को कन्निप्परंपु से बदल दिया।

"आपकी थैली में क्या सामान था?" कृष्णन मास्टर ने बड़ी विनय से पूछा। संन्यासी ने इसके बारे में कुछ नहीं कहा।

"बदले में मिली थैली में क्या है?"

उसके बारे में भी संन्यासी ने चुप्पी साध ली।

"अगर मेरी थैली नहीं देते तो मैं इस मरीज को शाप दे दूँगा। इसका पूरा शरीर एकदम ठण्डा हो जाएगा··"

"हाय-हाय! ऐसा न कीजिएगा।" गोपालन भैया ने जोर से चिल्लाते हुए विनम्र प्रार्थना की।

कृष्णन मास्टर सकपकाकर खड़े हो गये।

आम लोगों को एक अच्छा मज़ाक था। संन्यासी की थैली किसी ने बड़ी चतुराई से उड़ा दी थी।

"दस गिनने के पूर्व मेरी थैली सामने नहीं आयी तो मैं इस घर के सभी लोगों को शाप दे दूँगा। ये सब के सब पागल हो जाएँगे।" बड़ी धमकी के साथ चबूतरावाला संन्यासी गिनती करने लगा: एक—दो—तीन···

कोई भी थैली लेकर आगे नहीं बढ़ा।

आम लोगों ने बेसब्री से आपस में एक-दूसरे को गौर से देखा।

"मैं इस इलाके वालों को भी शाप दूँगा।" संन्यासी ने संहार-रुद्र की तरह आँखों से चिनगारी बरसाकर जटा से एक बाल का गुच्छा तोड़कर उसे जपते हुए कन्निप्परंपु के आँगन में फेंक दिया···

तभी अन्दर से एक गर्जना सुनाई पड़ी। लोगों ने आश्चर्यचकित हो उस ओर देखा।

हाथ में एक 'कतरना' उठाए दाँत किड़किड़ाता हुआ कुंजप्पु बाहर झपट पड़ा। वह उस संन्यासी को मारने दौड़ा कि तभी संन्यासी जी प्राण हथेली पर रखकर नौ-दो-ग्यारह हो गये। पीछे से कुंजप्पु भी दौड़ा। संन्यासी इक्कागाड़ी में कूदकर चढ़ गया। उसे लेकर भागनेवाली इक्कागाड़ी के साथ कुछ दूर कुंजप्पु भी दौड़ा। फिर दौड़ और पागलपन को समाप्त कर 'कतरना' को कन्धे पर रखकर शान्त भाव से लौट आया, और रेलवे फाटक-घर के भीतर जाकर ताश खेलने-वालों के साथ बैठ गया।

उस दिन जितनी देर तक कृष्णन मास्टर ठट्ठा मारकर हँसते रहे उतना जिन्दगी में शायद कभी नहीं हँसे थे। कुंजप्पु के पराक्रमों में यही एक ऐसा पराक्रम था जिसकी मास्टर ने उसे हार्दिक बधाई दी थी।

"झूठा संन्यासी!" कृष्णन मास्टर ने दांत किड़किड़ाते हुए कहा, "अपनी

थैली की चोरी करनेवाले को पहचान न कर गगनेवाला बेवकूफ़ !"

मास्टर का अनुमान था कि कुंजप्पु ने ही संन्यासी की थैली की चोरी की होगी, लेकिन उसने किस तरह उसे पार किया था यह श्रीधरन की माँ के कहने पर ही मास्टर को मालूम हुआ। मास्टर फिर एक बार हँसी से लोट-पोट हो गये।

चबूतरे के संन्यासी को कन्निप्परंपु में लाने की बात सुनते ही कुंजप्पु अपनी योजना को कार्यान्वित करने लगा था। एक भवन की तरह चबूतरे के सामने खड़े होकर संन्यासी की थैली का रंग, वजन, आकृति आदि का पता लगा लिया। फिर उसे नाई की दूकानों से कुछ चीजों को कागज में लाते हुए भी लोगों ने देखा था।

संन्यासी के कन्निप्परंपु में मरीज की जांच करते समय उसको घेरकर खड़े होनेवालों के बीच कुंजप्पु भी था। संन्यासी के रोगी की जांच कर भस्म लगाते समय ज़मीन पर रखी हुई थैली को कुंजप्पु ने मैजिक कला-विशारद की तरह गायब कर दिया था और उसकी जगह स्वयं तैयार की हुई इमिटेशन थैली को, जिसके अन्दर के सामान के बारे में न कहना ही भला है, वहाँ प्रतिष्ठित कर दिया था। जिस थैली को उसने संन्यासी से पार किया था, उसे कन्निप्परंपु के दक्षिण भाग की पाखाने की दीवार में छिपा दिया था। संन्यासी के चले जाने पर तुरन्त उसे किसी और जगह में रखने के इरादे से ही उसने उसे वहाँ रखा था।

संन्यासी की थैली एक अद्भुत थैली थी। कुंजप्पु ने जाकर देखा तो पाखाने की दीवार से वह थैली एक मायाजाल की तरह गायब हो गई थी। वह किधर गयी ? कौन ले गया होगा ? कुंजप्पु ने मूंछ को मरोड़ते हुए बड़ी देर तक सोचा। संन्यासी कन्निप्परंपु से उतरने ही वाला था कि म्युनिसिपल का भंगी पाखाना साफ करने आया था। वह उस थैली को लुक-छिपकर ले गया होगा। खैर, जो बीत गयी सो बीत गयी।

इस तरह संन्यासी की थैली के भीतर के सामान और उसका अन्तर्धान होना एक बड़ा रहस्य बन गया।

अगले दिन श्रीधरन ने कॉलेज जाते समय बरगद के चबूतरे के नज़दीक हमेशा की तरह भीड़-भाड़ नहीं देखी। सिर्फ तीन चार जन ही वहाँ खड़े थे।

संन्यासी के पर्णकुटीर की तबाही हो गयी थी।

संन्यासी और शिष्य रात को ही वह जगह खाली कर भाग गये थे—सड़क के निकट की चाय दूकान के बुजुर्ग रामन नायर को बड़े गम के साथ यों कहते सुना। संन्यासी के वहाँ आने के बाद रामन नायर के दिन फिर गये थे। लोग अधिक संख्या में वहाँ आते थे। वहाँ पास में मात्र रामन नायर की ही दूकान थी।

शाम को कॉलेज से वापस आते समय केलुक्कुट्टि के अनुज नारायणन ने श्रीधरन को रोक लिया :

"श्रीधरन भैया, मालूम है ? मोटी कुंकुच्चियम्मा के पुत्र लक्ष्मणन भैया की मृत्यु हो गयी।" यह समाचार सुन श्रीधरन स्तब्ध-सा खड़ा रहा। फिर नारायणन ने उसके कान में फुसफुसाया, "उसको किसी ने मार डाला है। लाश वर्कशाप के निकट के अहाते के कुएँ में पानी में तिर आयी है।"

श्रीधरन उस तरफ़ दौड़ गया। लक्ष्मणन के मोटर वर्कशाप की पूर्व दिशा के खाली अहाते के कुएँ के नज़दीक बड़ी भीड़ थी। श्रीधरन ने भीड़ में से कुएँ के नज़दीक जाकर झाँककर देखा। लाश ऊपर तिर आयी थी। लक्ष्मणन भैया की नीली कमीज, सिर का गंजापन, लेकिन चारों ओर के घुंघराले बाल स्पष्ट दिखायी देते थे। शरीर कमर के नीचे नंगा है। सफेद पैरों के बीच मछलियाँ क्रीड़ा कर रही थीं।

'रात को ताश खेलकर ढेर सारे रुपये कमानेवाले मेकनिक लक्ष्मणन को उसके साथियों में से किसी ने मारकर कुएँ में डाल दिया' ऐसी कुछ अफ़वाह अतिराणिप्पाटं में फैल गयी।

बेचारी कुंकुच्चियम्मा ! उसके दो पुत्र दो राहों पर चले गये। वर्कशॉप मैनेजर होकर ऊंटी में गया पुत्र भरतन वहाँ की एक ऐंग्लो इण्डियन लेडी के जाल में फँसकर उसके हठ से ईसाई बन गया और अब 'मिस्टर ब्रैटन' होकर उससे शादी कर शान से ज़िन्दगी गुज़ार रहा है। दूसरे बेटे लक्ष्मणन ने ताश खेलते खेलते परलोक की टिकट कटा ली ! वह भी चल बसा !

## 12. अण्ड कटाहं

"तारुण्य के मणिमन्दिर में प्रथम बार
किये दर्शन तुम्हारे विग्रह के मैंने !
ताजगी की सुरभि बिखेर रही तेरी-
सुभगता का कर आस्वादन भूल गया मैं खुद को।
मन्द हवा के झोकों में मुकुल ज्यों
तुम्हारा मुख हिला—
इस बार निहारा तुमने द्रुत मुझे
कविता का सन्देश ले खड़े हैं
तुम्हारे श्याम नयन अन्तरंग में मेरे।"

नायिका के लिए एक प्रेम पत्र तैयार करना चाहिए। ज़िन्दगी में पहली बार श्रीधरन ऐसा एक नैवेद्य तैयार करने जा रहा है।

प्रकृति सौष्ठव और खामोश वातावरण ढूँढकर शाम को समुद्र के किनारे से दक्षिण की तरफ चल पड़ा।

दहाने में पहुँच गया। सामने अपने हज़ार हाथों को फैलाकर नदी को छाती

से लिपटाये हुए समुद्र का दृश्य।

समुद्र यक्षियों के क्रीड़ा-महल की तरह सफेद वालू चारों तरफ़ फैली हुई थी।

वह किनारे पर औंधी रखी एक नाव के नीचे जाकर बैठ गया।

(नौका की एक पौराणिक प्रणय गंध है। हज़ारों वर्षों पूर्व पाराशर मुनि का प्रणय एक नैया में ही खिल उठा था।)

जेब से कागज़ निकाला। वायलट स्याही की कलम ली···अनन्त सागर को गवाही में खड़ा कर प्रथम प्रेम-पत्र का प्रथम शब्द लिख डाला :

"जीवितेश्वरी···"

फिर कुछ नहीं सूझा···चारों तरफ़ गौर से देखा।

पूरब के कोने से धुआँ उठ रहा था :

उस सफेद दीवार के घेरे से धुआँ आसमान में उड़ रहा है। वहाँ गुजरातियों का श्मशान है शायद। किसी चिता को आग लगायी गयी है।

रेशमी धोती पहने हुए और जनेऊ धारण किये एक पुरोहित एक लोटे में नदी से पानी ले जा रहा है···

पवित्र प्रेम-पत्र का श्रीगणेश करते समय शवदाह का दृश्य क्या एक अच्छा शकुन है? कुछ देर तक उसने इस पर विचार किया।

'···मिट्टी, शव तथा जलानेवाली आग अक्षत है···' शुभ शकुन का प्रमाण है कि ये तीनों चीजें भी वहाँ होंगी···मरहूम गुजराती सेठ का शुक्रिया···और उसने पश्चिम की तरफ़ दृष्टि घुमायी।

दूर समुद्र में धुआँ उठ रहा है।

धुआँ उड़ाता हुआ वह जहाज कहाँ जा रहा है?

मालूम नहीं।

लहरें अव्यक्त भाषा में कुछ प्रलाप कर रही हैं। लहरों के गले लगकर मुँह मोड़ते समय सैकत-तट हज़ारों पानी के बुलबुलों से अपनी पुलक प्रकट कर रहा है। लहराती हुई मृदु श्वेत शय्या पर रंग-बिरंगा सन्ध्याकाश रेशम बिछा रहा है। सैकत तट की छाती पर वीर तरंगें आ रही हैं···

इधर नदी की तरफ़ झुके एक नारियल के पत्ते के छोर को साँझ की धूप सोना पहना रही है। पत्ते का छोर मंद पवन में उसी प्रकार हिल उठता है जिस तरह प्रियतम के प्रथम प्रेम-लेख को छूते ही नायिका की उँगलियाँ फड़क उठती हैं।

समुद्र-तट की सड़क के मोड़ से एक घोड़ागाड़ी आ रही है।

नीले रंग की वह इक्कागाड़ी काठ के गोदाम के मालिक भास्करन की है। गाड़ी में भास्करन और एक अरबी हैं। अरबी ने सफेद मुस्लिम पोशाक के ऊपर एक पत्थर की माला पहनी है। वह मलबार से लकड़ी खरीदने आया है। भास्करन मालिक की लकड़ी नदी के किनारे एकत्रित है। अरबी उसे देखने जा रहा है।

वह उन काठों को जहाज़ पर चढ़ाकर समुद्र-तट से अरब देशों में ले जायेगा।

भास्करन मालिक की याद आयी।

भास्करन जैसा खूबसूरत व्यक्ति इस इलाके में दूसरा दिखाई नहीं देता। कटहल के पके पत्ते की तरह नारंगी रंग का चेहरा। बायीं तरफ़ की माँग से दाहिनी तरफ़ सँवार कर रखे गये समृद्ध घुँघराले बाल। सिल्क शर्ट, बायें कन्धे पर इस्त्री किया हुआ एक अँगोछा, सोने की घड़ी, हाथ की उँगलियों में सोने की अँगूठियाँ। इत्र की खुशबू···

लेकिन उसका स्मरण करने पर मन में घृणा का भाव ही आ रहा है। कारण उसकी लैंगिक विकृति है।

भास्करन मालिक स्ववर्ग संभोग-प्रिय है। सुन्दर लड़कों को वह अपने कब्जे में रखता। चेंगरा के मुस्लिम अमीरों की दूकानों के क्लबों में ही वह रात बिताता है। उस क्लब में नाच-गान, आतिशबाजी; बिरियाणी की दावत आदि के साथ मर्दों के बीच विवाहोत्सव होता है।

अचानक भास्करन मालिक की साली का स्मरण आया। स्कूल में पढ़ने के लिए नलिनी अपनी दीदी के यहाँ आकर रहने लगी है। वह लड़की काली दुबली तथा ओठों और गालों पर रोम से भरी मछली की तरह लगती है··

समुंद्र में दूर पर धुआँ और जहाज़ दिखाई नहीं पड़ रहे हैं।

चिता का मरहूम शख्स अब भी धुआँ उड़ा रहा है। नर-माँस की गन्ध सूँघकर समुद्री हवा चारों तरफ़ घूमने लगी है। मुर्दे का दाह-संस्कार करने के लिए जितने रिश्तेदार आये थे, वे सब श्मशान की दीवार के बाहर रेत में गोलाकार बैठकर किसी बात पर बहस कर रहे हैं। (शायद ये गुजराती नारियल और काली मिर्च के बाज़ारभाव पर चर्चा करते होंगे।)

सूरज एक सोने के अण्डे की तरह पश्चिम क्षितिज की रेखा को छू रहा है।

वह उस दृश्य को निर्निमेष हो देखता रहा।

वातावरण अन्धकार में धुँधला बन गया।

सन्ध्या-तारा प्रत्यक्ष हो गया।

नाव के ऊपर की जीवितेश्वरी दिखाई नहीं देती (हवा ले गयी होगी।) आसमान के तारे अधिक दिखाई दे रहे हैं···चिन्तन प्रकृति के अद्‌भुत प्रतिभासों की तरफ प्रयाण करते हैं—

> दिन की मुर्गी—गोरी मुर्गी
> दूर पश्चिम के नुक्कड़ पर
> डाल दिया सोने का अण्डा एक (फिर,
> मर गयी आध घण्टे में ही)
> रात की काली मुर्गी—कबरी मुर्गी

आकर, ज्यों सौतेली माँ
दिन के अण्डे के ऊपर हौले-हौले
पंख पसारकर सोने बैठी।
अण्डे से बाहर निकलेगी—कल
मुर्गी की लाड़ली बच्ची इक।
वह बढ़कर विहायस में, फिर
देगी सोने का अण्डा इक।
प्रकृति के अण्ड कड़ाह में
होती रहती यह प्रक्रिया सदा।"

## 13. पाँची

'बैल' दामु घर छोड़कर कहीं चला गया।

पाँची प्रसव केस के कारण ही दामु अचानक फरार हो गया था। नींद में लीन अतिराणिप्पाटं को हिलानेवाली एक भयंकर घटना थी पाँची-प्रसव का मामला।

म्युनिस्पेलिटी में झाड़ू देनेवाले मजदूरों क़े मिस्तरी हरिजन मुत्तोरन की नयी बीवी है पाँची। पाँची के प्रथम प्रसव से संबन्धित कुछ समस्याओं ने उस इलाके में इतिहास का सृजन किया।

मुकदमें के लिए आधारभूत तथ्यों को समझने के लिए एक वर्ष पीछे की बातों की जाँच करनी चाहिए।

मुत्तोरन मिस्तरी की उम्र पचपन साल की थी। पहली—सच कहें तो दूसरी—पत्नी चक्की ने अठारह वर्ष की लम्बी प्रतीक्षा के बाद भी बच्चे को जन्म नहीं दिया था। चक्की के वंध्या होने की बात पक्की हो गयी। एक दिन मुत्तोरन ने एक सन्तान को दुलारने की अपनी ख्वाहिश की सूचना चक्की को भी दी। एक और औरत से शादी करने के सिवा और कोई चारा नहीं था। चक्की के मन में भी वह तमन्ना थी। इसलिए उसने 'हाँ' कहा। लेकिन चक्की को यह मालूम नही था कि पति ने औरत को देखने के बाद ही उसकी अनुमति की प्रार्थना की थी।

ककड़ी के छिलके का रंग, आँवले की सी आँखें, हाथ और पैर में ताँबई रंग के मुलायम रोमों से भरी उन्नीस वर्ष की पाँची एक देहाती लड़की है। स्पष्ट है कि पाँची की त्वचा के रंग और खूबसूरती में कुलीन मुस्लिम खून समाया हुआ है। हरी घास काटकर बाज़ार में बेचना ही उसका पेशा है। पोक्कु हाजी की घुड़शाल में घास का गट्ठा पहुँचाकर वापस आते समय ही मुत्तोरन मिस्तरी ने पहले-पहल पाँची को देखा था। उसको देखकर मिस्तरी ललचा गया। उसने उससे शादी करने का निश्चय किया। पाँची ने पहले शादी करने से इन-

कार कर दिया। शहर की शामों के गूढ़ सुखों को लूटकर आजादी से घूमती वह हरिजन युवती एक बूढ़े से शादी कर चुपचाप घर में रहने के लिए उतनी तत्पर नहीं थी। अपनी खूबसूरती के बाज़ार-भाव को वह अच्छी तरह जानती थी। मुत्तोरन ने उसका पीछा न छोड़ा तो पाँची फिर विचार करने लगी : मुत्तोरन मिस्तरी मासिक तनख्वाह पानेवाला नौकर है। झोंपड़ी में नहीं रहता है। उसका एक छोटा सा अहाता है और एक छोटा सा मकान भी। दूसरी बीवी तो बाँझ है। फिर पहली औरत की अनुमति से ही इस शादी की तैयारियाँ हो रही हैं। झगड़ा करने की नौवत भी नहीं आएगी। एक दफा उसकी जाँच करूँगी। अगर वहाँ रहना दूभर लगा तो छोड़कर आ भी सकती हूँ।

उसने 'हाँ' कह दिया।

शादी सम्पन्न हुई।

मुत्तोरन ने पाँची से एक राजकुमारी की तरह बर्ताव किया। उसके सामने अपने को लायक साबित करने के लिए अपनी वेश भूषा और आचरण में भी उसने सुधार किया। वह शर्ट पहने बिना एक पुराना खाली कोट पहनकर ही काम करने जाता था। नया शर्ट सिलाया। पुराना कोट हरिजन चामी को भेंट किया। एक नया रेडीमेड खाकी कोट भी खरीदा। एक जोड़ा चप्पल खरीदकर पैर में डालीं। लेकिन सिर का गंजा, चट्टान में उगनेवाली पीली घास की तरह के रोम और चेहरे की झुर्रियों ने पुकार कर सूचना दी कि मुत्तोरन बूढ़ा है। उसे पाँची की हास्यास्पद हँसी बर्दाश्त करनी पड़ी।

तड़के ही मुत्तोरन मिस्तरी जागकर कोट और चप्पल डाल म्यूनिस्पिल अहाते की तरफ झाड़ू देनेवालों को ले चलने के लिए रवाना होता। उसे हमेशा डर रहता कि कहीं सेनेटरी इन्स्पेक्टर साइकल पर उड़कर जाँच करने न आ जाएँ।

फिर दोपहर को भोजन के समय ही मिस्तरी घर में वापस आता।

पाँची सुबह को आठ-नौ बजे तक चटाई पर लेटी रहती। फिर उठकर खुशबूदार साबुन से नहाती, पीली रेशमी चोली पहनकर, बालों को बाँधकर, आँखों में काजल लगाकर, माथे पर नीली बिन्दी लगाकर कमरे में आती तो चक्कीमा काँजी परोसकर उसके सामने रख देती।

घर के सभी काम-काज चक्की करती। पाँची पंखा डुलाती बरामदे की बेंच पर बैठकर समय काटती।

दोपहर को पति के आते समय भी पाँची अकेली हिल-डुलकर बरामदे की बेंच पर ही बैठी होती।

मुत्तोरन बाहर दस आदमियों का मिस्तरी है। लेकिन घर आने पर एक गट्ठा घास का मूल्य भी नयी बीवी के बर्ताव और इशारे से उसको हासिल नहीं होता था। मिस्तरी ने इस पर अपनी पराजय ज़ाहिर नहीं की। कर्कश बातें कहने पर

तो वह चिड़िया उड़कर चली जाती। फिर वह क्या करता ?

पाँची को हर रोज़ कोई-न-कोई पकवान खाने में चाहिए। रोटी, हलुवा, जलेबी खाने की ख्वाहिश रहती। बीच-बीच में चाय पीती। अगर चाय नहीं पीती तो सिर दर्द हो जाता।

मुत्तोरन ने कोई बकझक किये बिना पाँची की सभी इच्छाओं और अनावश्यक बातों का निर्वाह किया।

कुंजालि माप्पिला के उस जगह आने पर उसकी पेटी का आधा सामान पाँची उधार में खरीदती। मुत्तोरन मिस्तरी को मेहनताना मिलने के मौके पर कुंजालि फिर आता। उसके सन्दूक में विनोलिया ह्वाइट साबुन, ब्यूटी क्यूरा पाउडर, सेन्ट शीशी, हाथी-दाँत की कंघी -- ढेर सारे सामान होते।

कुंजालि को अच्छा मुनाफा मिलता।

केले का पत्ता काटने अहाते के कोने में जब चक्की आयी तो उसने एक गीत सुनकर झाँककर देखा।

गोरा अय्यप्पन पगडंडी पर खड़ा है, चक्की को देखकर मुस्कराता हुआ।

(चक्की मोटी होने पर भी देखने में बदसूरत न थी।)

चक्की ने गोरे अय्यप्पन को पहले पहल देखा था। नज़दीक से अकेले-अकेले मिलने और बातचीत करने की सुविधा पहले-पहल ही मिली थी।

"केला भगवान को चढ़ाने के लिए नही, बेचने के लिए है।" चक्की ने केले के पत्ते को चीरकर फेंकते हुए हँसकर कहा।

"बेचती है तो मैं खरीदूंगा।" अय्यप्पन ने कहा।

"सुना है कि अय्यप्पन के पास बहुत पैसे हैं। क्यों, मैं जितना बोलूं उतना तुम दे दोगे ?"

"चक्की, यह सब लोगों की झूठी बकवास है। केले का गुच्छा देखने पर लालच आ गया, इसीलिए पूछा था।"

बात चक्की को पकड़ में आ गयी। वह चुपचाप खड़ी रही।

"केले का पत्ता किसके लिए है ?क्या 'अटा' (एक खास रोटी) बनाने के लिए है ?"

"क्या 'अटा' खाने की भी इच्छा है ?

"अय्यप्पन को कई चीज़ों की इच्छा है।"

"यहाँ आकर थोड़ी देर बैठने के बाद जाना।" चक्की ने निमन्त्रण दिया।

"चक्किमा का मिस्तरी नहीं है वहाँ ?"

अय्यप्पन का व्यंग्य सुनकर चक्की ठहाका मारकर हँस पड़ी। वह जानती थी कि मुत्तोरन मिस्तरी और अय्यप्पन के बीच मनमुटाव है।

"मिस्तरी दोपहर को ही आयेगा।"

अय्यप्पन पगडंडी चढ़कर दरवाज़े पर पहुँचा। वह आँगन से बरामदे में पहुँच-

कर वेंच पर वैठ गया।

तव खुले हुए वालों से छाती ढककर पाँची ने वाहर की तरफ़ झाँककर देखा।

चक्की ने पनडव्वा अय्यप्पन के नज़दीक लाकर रख दिया। "मैं पान नहीं खाता।" अय्यप्पन ने जेव से पीले रंग का हाथी मार्क सिगरेट निकालकर दिया-सलाई माँगी।

चक्की ने रसोईघर से माचिस लाकर अय्यप्पन के हाथ में थमा दी। उसने उसकी उँगली पकड़कर जरा दवायी और कुछ खुसुरफुसुर की।

चक्की शरमाकर चुपचाप खड़ी रही। झट उसने पगडंडी की तरफ़ इशारा किया।

अय्यप्पन ने उधर देखा। पगडंडी से कीरन पुजारी आ रहा था।

"पुजारी ने यहाँ मुझे देख लिया तो मुसीवत खड़ी हो जाएगी।" अय्यप्पन जल्दी से उठकर पाँची के कमरे में गया।

चक्की ने भी उसके पीछे जाकर दरवाज़ा वन्द कर लिया।

फिर दोनों के वीच रोचक वार्तालाप शुरू हुआ।

थोड़ी देर वाद अय्यप्पन विदा लेकर उतरा। फाटक उतरने पर दीवार पर किसी जड़ी-वूटी की तलाश करने के वहाने पगडंडी में लुके-छिपे कीरन पुजारी को देखा।

पुजारी ने अय्यप्पन की तरफ़ अर्थ भरी निगाह डाली। अय्यप्पन विना झिझक के पुजारी की तरफ़ अपना चूतड़ खुजलाते हुए चल पड़ा। सफेद अय्यप्पन दस वर्ष पहले अपने इलाके से कहीं चला गया था। अभी-अभी वापस आया था। (उस इलाके में एक और नौजवान हरिजन अय्यप्पन है। इसीलिए नवागत को सफेद अय्यप्पन के नाम से पुकारते हैं।)

सफेद अय्यप्पन विदेश जाकर अपार धन-राशि इकट्ठा करके ही वापस आया था। वह गुप्त रूप से सोने के गहनों के लिए पैसा उधार देता था। रेलवे स्टेशन यार्ड में कोयले की राख लेने का ठेका मोयतु माप्पिला ने ही लिया था। मोयतु माप्पिला सूखी मछली निर्यात करने का एजेंट होकर सिलोन चला गया। सफेद अय्यप्पन ने अव वह ठेका ले लिया है। कई गरीव हरिजन और मुस्लिम स्त्रियाँ अय्यप्पन के नीचे कोयला डालनेवाले मजदूरों की हैसियत से काम करती हैं।

सफेद अय्यप्पन एक फैशनेवुल आदमी है। सफेद शर्ट, कमर में एक हरा वेल्ट रिस्ट वॉच, जेव में कलम, ओठों पर विच्छू की पूँछ-सी मूँछ।

सफेद अय्यप्पन अविवाहित है।

अतिराणिप्पाटं के दक्षिण-पश्चिम कोने में कई पेड़ों से ढका एक पुरातन अहाता और अहाते के कोने में एक चंपा का पेड़ है, जिसके नीचे एक पुराना चवूतरा भी देख सकते हैं। 'चेरुमक्कलुटे कावु' (हरिजनों का मन्दिर) के नाम से ही उस

जगह को पुकारा जाता है। कुछ लोग उसे 'पूवरशु कावु' के नाम से भी पुकारते हैं।

वह तो उस इलाके के हरिजनों का मन्दिर है। मन्दिर की प्रतिष्ठा देवी-देवताओं के लिए नहीं, बल्कि 'तेय्यं' की एक कल्पना मात्र है।

साल में एक बार वहाँ त्योहार मनाया जाता। इलाके के सभी हरिजन और अन्य इलाकों के रिश्तेदार भी 'पूवरशु कावु' में एकत्रित होते। दिन-रात होनेवाले लगातार त्योहारों से अतिराणिप्पाटं गिहर उठता। बाजे बजाना, गीत, 'वेलिच्च पाट्टु,' 'कोलं तुल्लल,' 'तिरा,' 'कुरतियाट्टं' आदि होते।

मर्द अपने सिर पर नारियल के मृदु पत्तों का मुकुट पहनकर चेहरे पर मुखौटा बाँधकर 'कोलं' कूदने लगते। औरतें हिल-डुलकर रेंगने और फिर पालथी मारकर बैठी हुई दायीं-बायीं तरफ डोलतीं। मर्द शराब पीकर आपस में झगड़ते। इस प्रकार वे अपने पुराने वैर का बदला लेते। आपस में झगड़कर आखिर कम से कम एक हरिजन की कुर्बानी होती।

ये सब 'तेय्यं' के लिए मनपसन्द बातें हैं।

कीरन पुजारी पूरवशु कावु का पुरोहित है। वह 'कावु' का पुजारी ही नहीं मांत्रिक, वैद्य, ज्योतिषी, सामाजिक कानून का सलाहकार के रूप में हरिजनों के बीच मुखिया है।

कोटुंगल्लूर देवी मन्दिर के त्योहार के दिनों में वह व्रत लेता और कोटुंगल्लूर देवी के यहाँ जाकर मिन्नत-प्रार्थना करनेवालों को इकट्ठा करता। कमर में लाल कपड़ा बाँधकर, दाहिने हाथ में तलवार और बायें हाथ में हल्दी चूर्ण की थाली लेकर कीरन आगे, और मुर्गों को एक छड़ी में लटकाकर 'होय नट होय नटा' का भक्तिपूर्ण नारा लगाते अन्य हरिजन उसके पीछे चलते हुए कोटुंगल्लूर की तरफ़ आगे बढ़ते। उस जुलूस को सभी स्तब्ध खड़े देखते रहते।

काला, मोटा और नाटा है कीरन। उनकी नसें मजबूत हैं। जीवन में वह एक छिपा बदमाश है। कीरन की कितनी उम्र हुई, इसका निर्णय नहीं किया जा सकता। खोपड़ी में जो खाली हिस्सा है वह पुजारी की तलवार की मार का निशान है या गंजा है, कहा नहीं जा सकता। बाकी जितने बाल हैं उनमें एक भी बाल पका न था। कीरन का मुख्य आहार कच्चा नारियल, चिउड़ा और ताड़ी है। मौका पाते ही वह दूसरों के नारियल के पेड़ पर चढ़कर कच्चे नारियल की चोरी करता। कभी-कभी मार भी खाता। मारने-पीटने पर भी उसको दर्द नहीं होता क्योंकि वह काली बिल्ली खाता था। (विश्वास है कि काली बिल्ली का मांस खाने पर शरीर में कोई चोट नहीं लगती।) अतिराणिप्पाटं और उसके नज़दीक की जगहों में अब एक भी काली बिल्ली दिखाई नहीं देती। (नाम के लिए एक बाकी है तो वह धोबी मुत्तु है।) सब कीरन के पेट में जा चुकी हैं।

"अरे, कीरन आ रहा है।" कहकर कुछ रसिक लोग धोबी मुत्तु को डराने-

धमकाने लगे हैं।

छोटे बच्चे कीरन पुजारी का नाम सुनते ही डर जाते। मुत्तोरन मिस्तरी भी डर जाता क्योंकि कीरन की मांत्रिक शक्ति से वे लोग वाकिफ हैं। 'तेय्यं' शरीर में घुसने पर कीरन सर्वज्ञ बन जाता।

मांत्रिक शक्ति से उसने एक झूठ को प्रमाणित किया था। इस घटना से ही कीरन मशहूर हो गया है।

हरिजन बस्ती की एक शादी में एक हरिजन औरत की माला किसी ने चोरी की। रात को सोने के लिए लेटते समय ही चोरी की गयी थी। अगले दिन इस झोंपड़ी में हल्ला-गुल्ला हो गया। माला खोनेवाली का चीत्कार सुनाई पड़ा। घरवाले दौड़-धूप करने लगे। मेहमान बेज़ार हो गये।

किसी ने कहा, कीरन पुजारी देवता वेश में नाचकर भविष्य बताएगा।

कीरन ने कमरे में लाल रेशमी कपड़ा पहन लिया। वह तलवार हिलाते हुए आँगन में तीन बार इधर-उधर उछला। ज़ोर से चिल्लाकर उसने आज्ञा दी, "भूसा लाओ।"

एक हाँडी भर भूसा सामने पहुँचा।

कीरन पुजारी ने भूसा-मंत्र जपते हुए वहाँ के हरिजनों में हर एक को भूसा देकर आज्ञा दी कि खाओ। फिर आँगन से तीन-चार बार इधर-उधर दौड़कर भूसा खानेवाली औरतों के चेहरों की ओर देखा।

पुजारी ने झट एक औरत की ओर संकेत करके गर्जन किया : तूने ही चोरी की है।

चोरी की माला तुरन्त बाहर न निकालने पर खून की उलटी से मर जाने की धमकी भी दी।

उस औरत ने अपराध कबूल किया। उसने चोरी की हुई माला एक केले के नीचे की जमीन से बाहर निकाल कर 'तेय्यं' के पैरों पर समर्पित की। "रक्षा करें भगवान !" कहकर वह छाती पीटकर जोर से चिल्लायी।

यह दृश्य देखकर वहाँ उपस्थित सभी जन दाँतों तले उँगली दबाकर रह गये। कीरन पुजारी की मंत्र-शक्ति के बारे में क्या कहना !

हरिजन स्त्रियों को मंत्र जपते हुए भूसा देकर चोरी के रहस्य का पर्दाफाश करनेवाले कीरन की दास्तान सुनकर कन्निप्परंपु का कृष्णन मास्टर बड़ी देर तक हँसता रहा। फिर श्रीधरन से कहा, "वह दवा और मांत्रिक बल नहीं, महज एक मनोविज्ञान की बात है। कैफियत तलब करने पर जिसने चोरी की है वह घबरा जाएगी। डर और बेचैनी के बढ़ जाने पर मुँह की लार सूख जाएगी। गला सूख जाने पर फिर भूसा नहीं खाया जा सकेगा। भूसा खाने में तकलीफ़ उठानेवाले व्यक्ति को आसानी से पहचाना जा सकता है। कीरन ने इस तरकीब का ही प्रयोग किया था।"

हरिजनों को मनोविज्ञान की बातें मालूम नहीं हैं। गहनों की चोरी करने वाले व्यक्ति की ओर संकेत कर पकड़ा देनेवाले कीरन पुजारी के मान्त्रिक बल से वे चकित रह गये। उन्हें विश्वास हो गया कि कीरन पुजारी से कुछ भी नहीं छिपाया जा सकेगा।

इस समाज में कीरन के मुखिया पद और शक्ति की कुछ भी परवाह न करने-वाला व्यक्ति सफेद अय्यप्पन था। कीरन ने एक बार रिश्वत माँगी थी तो अय्यप्पन ने बहुत स्पष्ट कह दिया था : "पुजारी ओझागिरी छोड़कर कुछ काम करो। लोहे के मूसल का-सा हाथ जो भगवान ने दे रखा है न? कुदाली चलाओ तो दिन में आठ आने मिल ही जायेंगे।"

अय्यप्पन के परिहास की बातें कीरन ने अपने में दबाकर रखीं। अमीर होने का गर्व और वाक्-पटुता प्रदर्शित करने का अवसर नहीं था तब। अय्यप्पन अपनी जाति का एक सदस्य है। उसके घर शादी करने लायक दो बहिनें हैं। एक बुढ़िया भी है जिसके पैर गड्ढे में लटक चुके हैं। शादी-ब्याह या तेरहवीं की रस्म तो करनी ही होगी उसे। तब देखूँगा—जाति से निकाल देने का मौका होगा या नहीं।

तीन माह तो बीत गये।

मुत्तोरन मिस्तरी की घरवाली पाँची ने गर्भ धारण किया।

मिस्तरी के पाँव ज़मीन पर न पड़ते थे। पहले-पहल वह पिता होने जा रहा था।

झाड़ू देनेवाले मज़दूरों और अपने दोस्तों से वह यह बात बार-बार कहता था : "मेरी पाँची की तबियत जरा खराब है।"

"क्या है मिस्तरी, उसकी बीमारी?"

ऊपर की दन्त-पंक्ति से चार दाँत नदारद थे। वह अपना मुँह खोलकर मूर्ख की तरह हँसने लगता "पैदा करने की बीमारी है। उसके पेट में है।"

एक दिन सेनिटरी इन्स्पेक्टर साहब से कहा, "थोड़ी देर पहले घर जाना है। पत्नी की तबीयत अच्छी नहीं।"

"क्या बीमारी है ?"

"तीन महीने—" मिस्तरी ने शरम से नीचे की ओर दृष्टि करते हुए कहा।

नौ बच्चोंवाले इन्स्पेक्टर स्वामी के मन की हालत भी कुछ ऐसी थी। उसकी पत्नी ने दसवाँ गर्भ धारण किया था।

बधाई और सहानुभूति में भेद न करनेवाला एक संकेत और दृष्टि ही इन्स्पेक्टर साहब की प्रतिक्रिया थी।

पाँची को दोहद बढ़ने लगा :

एक दिन हलुवा।
दूसरे दिन कमलकंद।

फिर चिड़िया का मांस।

मुत्तोरन मिस्तरी ने सारी इच्छाओं की पूर्ति की।

जब पाँची ने कच्चा आम खाने की लालसा व्यक्त की तो देहात में न मिलने के कारण वह सेलम से लाया गया।

छठे महीने की रस्म भी धूमधाम से सम्पन्न हुई।

'पूवरशु कावु' के त्योहार के श्रीगणेश होने के अगले दिन रात को पाँची को प्रसव पीड़ा हुई।

इस इलाके की बुढ़िया औरत और जाति की दाई काली, जो कानी थी, मदद के लिए आ पहुँची।

तोंद हिलाता हुआ मुत्तोरन मिस्तरी इधर-उधर दौड़ने लगा। (उसे देखने पर लगता कि प्रसव-पीड़ा बूढ़े मुत्तोरन को ही हो रही है।)

रात भर पाँची दर्द से कराहती और चीत्कार करती रही। सुबह भी वही हालत थी।

"भूत प्रेत का उपद्रव है। उसे तुरन्त दूर करना चाहिए। कीरन पुजारी को बुलाना चाहिए।" काली ने प्रसूतिका गृह से सिर बाहर निकालकर पुकारते हुए कहा।

पुराने झगड़े और मन-मुटाव को विसारकर मुत्तोरन कीरन पुजारी की झोंपड़ी तक दौड़ा गया।

कमर में लाल रेशमी कपड़ा पहनकर और हाथ में तलवार लेकर कीरन पुजारी उपस्थित हो गया।

पाँची अन्दर प्रसव-पीड़ा से रो रही थी।

कीरन काँपने लगा 'तेय्यं' उसके शरीर में घुस गया।

कीरन तलवार हिलाते हुए आँगन में तीन बार इधर-उधर दौड़ा। फिर पश्चिम दिशा में खड़े होकर तलवार से अपनी खोपड़ी का स्पर्श किया और फिर वह जोर से चिल्लाने लगा।

प्रसूति-गृह की तरफ़ देखकर कीरन कुछ फुसफुसाने लगा।

'तेय्यं' की देववाणी है।

"ह—हो—होय—इस औरत के गर्भ के लिए तीन आदमी और जिम्मेदार हैं। 'तेय्यं' ने सब कुछ देखा है। जिन्होंने अपराध किया उनका नाम बताना होगा। ऐसी हालत में ही बच्चा बाहर निकलेगा।"

पाँची के गर्भ के जिम्मेदार तीन आदमी और हैं। यही 'तेय्यं' ने कहा है। उनका नाम एक-एक कर बताना होगा। (तेय्यं उन पर जुर्माना करेगा। फिर पूवरशु कावु में शुद्धि कलश करना होगा।)

'तेय्यं' की देववाणी धाय काली ने सुनी। बुढ़ियों ने भी सुनी। प्रसव पीड़ा से

तड़पनेवाली पाँची ने सुनी। आँगन में खड़े सभी लोगों ने सुनी।

उत्सव की शुरुआत से ईश्वर जाग उठा है। शरीर में 'तेय्यं' घुसने से ही कीरन यों बताता है : गर्भ के लिए जिम्मेदार तीन व्यक्ति और हैं। मांत्रिक शक्ति से सब कुछ जाननेवाला कीरन पुजारी ही यों बता रहा है।

"पाँची बताओ।" काली ने पाँची से जोर देकर कहा।

"कीरन पुजारी ऐसा-वैसा थोड़े ही कहेंगे।"

सब कुछ जाननेवाली चक्की भी एक कोने में सिर झुकाये बैठी थी। काली की राय के समर्थन में उसने जोर से हाँ में हाँ मिलायी।

कीरन की मांत्रिक शक्ति से पाँची परिचित थी। भूसा देकर चोरी करनेवाली औरत को पकड़ा था न। अपने गुप्त कामुकों में तीन लोगों के नामबताने पर ही बच्चा बाहर निकलेगा।

पाँची दर्द बर्दाश्त नहीं कर सकी।

कीरन ने तलवार हिलाते हुए गर्जन किया—"फौरन बता—"

पाँची ज़रा काँप उठी।

कराह और चीख के बीच पाँची ने गर्भ के अपराधियों में पहले व्यक्ति का नाम बताया "कण्णनकुट्टि।"

कण्णनकुट्टि उस इलाके का एक हरिजन सेवक था। कुछ महीने पहले उसकी मृत्यु हो गयी।

कीरन पुजारी के चेहरे पर निराशा झलक आयी।

कीरन ने सोचा था कि अपराधियों में पहला व्यक्ति सफेद अय्यप्पन होगा।

कीरन तलवार को हिलाते तीन बार इधर-उधर दौड़ा। फिर सिर पर तलवार का स्पर्श किया और चिल्लाया : "कौन है ? बता!" कीरन प्रसूति गृह की तरफ़ देखता बड़े ध्यान से खड़ा रहा।

पाँची दर्द न सह सकी। किसी न किसी तरह प्रसव करने से गला तो छूटे।

अच्छे मुहूर्त में ही कीरन ने कैफियत लेना शुरू किया था।

"चाय की दूकानवाला अप्पूप्पार्यन।"—दूसरा नाम भी बाहर निकला।

(कुमारन की 'भारतमाता टी स्टाल' का नया असिस्टेन्ट था अप्पु। उसका सही नाम प्रसारणी अप्पु था।

लोग हँस पड़े।

कीरन को फिर निराशा हुई। वह अपनी सूची का नाम सुनना चाहता था।

कीरन आँगन में तीन बार फिर इधर-उधर दौड़ा।

प्रसूति-गृह की तरफ देखकर उसने ठाना कि तीसरा आदमी अय्यप्पन ही होगा। कीरन ने दहाड़कर पूछा :

"और कौन है ? जल्दी कह!"

"हाय, हाय !" पाँची जोर से चिल्लायी।

अय्यप्पन के नाम के दो अक्षर कहने के लिए हरामज़ादी पीछे हट रही है। कीरन उसे यों छोड़नेवाला नहीं।

"और कौन है ? बता।" उसने तलवार और ज़ोर से हिलायी।

"हाय—।" पाँची चीत्कार कर उठी।

कीरन उसकी तरफ़ कान लगाकर खड़ा हो गया।

"कपड़े की दूकान का दामोदरन नंपियार···"

वैल दामु।

लोग सकपकाकर खड़े रहे।

कीरन ने बड़ी निराशा के साथ खोपड़ी को तीन बार स्पर्श किया।

नाम तो तीन मिल गये। लेकिन अय्यप्पन फिर भी नहीं आया।

अय्यप्पन ज़रूर होगा।

कीरन आँगन में तीन बार फिर दौड़ा। प्रसूति गृह के सामने ऊपर की तरफ़ ताकता थोड़ी देर खड़ा रहा।

अय्यप्पन को बाहर निकाले बिना नहीं छोड़ेगा। इस हठ से दहाड़कर उसने कहा "हाँ, देखता हूँ—एक आदमी और है जिसने अपराध किया था। सफ़ेद एक आदमी—" (लक्षण भी बता दिया।)

कीरन ने बड़ी उत्कंठा के साथ प्रसूति-गृह की तरफ़ देखा और सिर घुमाकर खड़ा हो गया।

आम लोगों ने साँस रोककर उस ओर ध्यान दिया।

तब अन्दर से अय्यप्पन का नाम नहीं, बल्कि बच्चे की रुलाई ही सुनायी पड़ी।

क्रोध, निराशा और आत्म-निन्दा की उग्र मूर्ति बनकर कीरन तलवार से अपनी खोपड़ी पर चोट करने लगा। चेहरे और छाती से खून की धारा बहने लगी। अगर लोग दौड़कर उसे नहीं रोकते तो वह अपनी खोपड़ी तोड़कर वहीं गिरकर मर जाता।

मुत्तोरन मिस्तरी सब कुछ भूलकर एक गधे की नाईं हँस पड़ा। पिता हो गया है।

कीरन पुजारी विपत्ति में फँस गया। अपराधियों को जुर्माने की सज़ा की घोषणा करानी होगी।

जुर्माने की रकम का एक हिस्सा पति को देना होगा, एक हिस्सा 'पूवरश् काव्' में शुद्धि कलश करने के लिए और बाकी पुरोहित के लिए देना होगा। ऐसी प्रथा है।

जुर्माना अदा करनेवालों में जाति का सदस्य सिर्फ कण्णनकुट्टि ही है। इन सब की पूर्व सूचना पाकर ही शायद वह पहले ही परलोक चला गया था। बाकी चार

की दूकान का अप्पु और कपड़े की दूकान का दामु है। वे दोनों ऊँची जाति के सदस्य हैं। उनके नाम पर कार्यवाही करने का हक कीरन को नहीं है।

कीरन पुजारी को तकलीफ नहीं उठानी पड़ी।

शंकुण्णि कंपाउण्डर और अर्जीनवीस आण्डी मुकद्मों के बिना बड़ी दिक्कत में थे। वे दोनों, पुजारी कीरन की तरफ के वकील बने और पूवरशु कावु के रक्षक भी। केकड़ा गोविन्दन को भी इसका सदस्य बनाकर कमेटी का कार्य आरम्भ हुआ।

कम्पाउण्डर और अर्जीनवीस पहले अप्पु से मिले।

प्रसारणी ने स्पष्ट बताया—"जुर्माना पेशगी अदा करने के बाद ही मैं पाँची के साथ लेटा था। फिर इस मुकदमें में जिन्हें जुर्माना अदा करना चाहिए उन लोगों के बारे में मुझे मालूम है। वे पहले जुर्माना अदा करें।"

कम्पाउण्डर और अर्जीनवीस फौरन वहाँ से चले गये। उन्हें मालूम हुआ कि प्रसारणी किसके बारे में कह रहा है।

अब कपड़े की दूकान के दामोदरन को ही पकड़ना है।

मेरे विरुद्ध लगा सब आरोप सब लोगों को मालूम है, यह सुनते ही उस रात बैल दामु पेटी-बिस्तर उठा गाड़ी से कहीं चला गया। इस तरह कमेटी को एक कानी कौड़ी भी हासिल नहीं हुई। बात बड़ी मुश्किल थी।

तब केकड़ा गोविन्दन ने सलाह दी, "चेरुमन पुजारी का पारिश्रमिक, पूवरशु कावु के शुद्धि कलश का खर्च, कमेटीवालों का यात्रा खर्च और भत्ता देना ही होगा। ये सब घटनाएँ बूढ़े मुत्तोरन हरिजन की मूर्खता के कारण हैं। इसलिए मुत्तोरन को तीनों का जुर्माना अदा करना चाहिए। मुत्तोरन से अपने-अपने हक का हिस्सा लेने के बाद बाकी रकम कमेटी को सौंपनी चाहिए।"

अर्जीनवीस आण्डी ने तुरन्त हिसाब लगाकर कहा "उसे कमेटी को एक सौ तीन रुपये सात आने एक पैसा देना होगा।

मुत्तोरन मिस्तरी के हाथ में पैसे नहीं थे। पाँची को नौ महीने होने तक मिस्तरी एक-सौ पचास रुपये कर्ज़ ले चुका था।

'और भी कर्ज़ लो।" कंपाउण्डर ने सलाह दी।

"कौन देगा कर्ज ?"

"मिस्तरी घर और अहाता रेहन रखे तो मैं पैसे किसी से भी माँग दूंगा।" कम्पाउण्डर ने सहयोग का रास्ता सुझाया।

मुत्तोरन मिस्तरी शैतान और समुद्र के बीच में पड़ गया। पहले का कर्ज डेढ़ सौ रुपये, प्रसव के मुकदमें में जुर्माना एक सौ तीन रुपये सात आने एक पैसा। पाँची के प्रसव के बाद की शुश्रूषा और मुन्ने का नामकरण, दूध पिलाना आदि रस्मों में एक-सौ रुपये और खर्च करना होगा।

इस प्रकार चार सौ रुपये के लिए घर और अहाते को रेहन रखने का निश्चय किया।

अर्जीनवीस आण्डी ने दस्तावेज़ तैयार किये।

रजिस्ट्री कार्यालय में जाने पर ही मुत्तोरन मिस्तरी को मालूम हुआ कि इनका रेहनदार सफेद अय्यप्पन है।

पाँची प्रसव-केस का प्रतिकरण संक्षेप में इस प्रकार था—

मुत्तोरन मिस्तरी बुढ़ापे में बाप बना।

घर और अहाता चार सौ रुपये के लिए रेहन में रखा गया।

बैल दामु इलाका छोड़कर कहीं चला गया।

('सप्पर सफर संघ' का एक प्रमुख सदस्य और जाता रहा।)

'पूवरशु कावु' का त्यौहार गत वर्षों की अपेक्षा अधिक धूमधाम से मनाया गया।

## 14. वापसी—फिर एक बार

शनिवार। प्रातः काल। श्रीधरन डाकिये के आगमन की प्रतीक्षा कर पगडंडी की तरफ़ देखता घर के बरामदे में बैठा था।

नायिका को प्रथम प्रेम-पत्र भेज चुका था। लेकिन एक ग़लती हो गयी थी। जवाब किस तरह भेजना है, इसकी सूचना नहीं दी थी, यहाँ-वहाँ की चिन्ताओं के चक्र में यह बात एकदम भूल गया। नायिका अतिराणिप्पाटं के पत्ते पर जवाब भेजे तो डाकिया सुबह को आता है—नौ और दस के बीच। अगर नायिका का पत्र पिताजी के हाथ में पड़ गया तो।···

डाकिये का खाकी परिधान दूर पगडंडी पर देखते ही नीचे दौड़कर पत्र को हस्तगत करना है···

"चेटी भवन्निखिल खेटी कदंबवनवाटिषु · " कृष्णन मास्टर बरामदे में बैठ कर शंकराचार्य की स्तोत्रकृति के पद्य कण्ठस्थ कर रहे थे। अंग्रेज़ी शब्दकोश से नये शब्दों की नकल कर पढ़ना, अंग्रेज़ी व्याकरण ग्रन्थों से नये मुहावरों, कहावतों और शैलियों को समझना-बूझना, संस्कृत-कीर्तन और श्लोकों को कण्ठस्थ करना—ये कृष्णन मास्टर की छुट्टियों के दिनों का मनोरंजन है। कभी-कभी वे वैद्यक-शास्त्र-ग्रन्थों से परिचित होने की कोशिश करते। कृष्णन मास्टर को गर्व था कि वे इडियोमेटिक अंग्रेज़ी में गोरों की तरह बातचीत कर सकते हैं। एक बार कृष्णन मास्टर का शिष्य इट्टिट रारिश्श मेनोन, हाई स्कूल में प्रवेश लेने गया। हाई स्कूल में अंग्रेज़ी अध्यापक वेंकट राव ने छात्र की जाँच की। अंग्रेज़ी किताब से 'टाइगर' वाला पाठ निकाला।

"ह्वाय डिड द टाइगर ईट दि मेन ?" वेंकट राव का सवाल था।

"टु सेटिसफाय इट्स एपोटाइट" इट्टि रारिच्चन मेनोन ने जवाब दिया।

लड़के का जवाब सुनकर वेंकट राव मुँह खोल देखते रह गये। लड़के की पीठ थप-थपाकर बधाई देते हुए बोले, "हू वाज योर इंग्लिश टीचर ?"

"मिस्टर कृष्णन मास्टर।"

"नो वण्डर।" वेंकटराव ने अपनी सफेद पगड़ी को हिलाते हुए कहा, "आइ हैव हर्ड अबाउट दैट स्कालर।"

कृष्णन मास्टर ने यह बात कई लोगों को बतायी थी। आज़ सुबह से ही वह संस्कृत कीर्तन पढ़ने के मूड में हैं।

"चेटी भवन्निखिल खेटी कदंबवनवाटिपु नाकि पटली···"

श्रीधरन पगडंडी पर गिद्ध की तरह आँखें लगाये प्रतीक्षा करने लगा।

नायिका को बड़ी सावधानी से पत्र लिखकर भेजा था।

श्रीधरन के लिए मंगलवार एक स्मरणीय दिवस था। जिन्दगी का प्रथम प्रेम-पत्र मंगलवार की आधी रात को ही पूरा किया गया था। नायिका का प्रथम दर्शन—उस दर्शन ने सौ-सौ सपनों को हृदय में खिलाया था। उस स्वप्न तरंगिणी से नायिका के पीछे अनजाने में ही आगे बढ़ने की बात···तिरुवातिरा की आधी रात को संन्यासी का प्रच्छन्न वेश धारण कर नायिका की करांगुली स्पर्श करने की बात···सब कुछ ललित गद्य काव्य में लिखा था। अन्त में दो पंक्ति कविता की भी लिखी थीं :

"इतना अधिक प्यार किया मैंने तुझे,
अपराध है तो देवी मेरी क्षमा करें।"

पिछले दिन सुबह वह प्रेम-पत्र राजा कॉलिज के निकट के डाकघर की पेटी में डालना चाहा। तुरन्त स्मरण आया, खतरा है। नज़दीक के डाकघर की मुहर पत्र पर देखने पर क्लास टीचर को शक होगा। नहीं, इसमें नहीं डालना चाहिए। डाकपेटी के सामने से हाथ खींच लिया। शाम को कालेज बन्द होने पर चल पड़ा चार मील दूर कारकुन्नु को। पत्र कारकुन्नु डाकघर की पेटी में डाल गाड़ी से वापस आ गया। गाड़ी में से ही पश्चिम क्षितिज पर चतुर्थी की चन्द्रलेखा को व्यक्त रूप से देखा। चन्द्रदर्शन पल की याद की···

'दिनकर दिवसादौ रात्रिनाथं चन्द्रष्टुर,
सुखजलमृति भीतिर्वित्तकान्ताप्ति रोगा···'

हिसाब लगाया : रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार···बुधवार : भय ! नये चाँद को अनदेखा कर पूर्वदिशा में मुड़कर बैठ गया।

नायिका को बृहस्पतिवार को स्कूल में पत्र मिलेगा। उस दिन नायिका श्रीधरन के प्रेम संदेश का मकरंद पीकर मधु स्वप्नों में सोयेगी। शुक्रवार को जवाब

लिखकर पोस्ट करेगी।

शनिवार को सुबह पत्र डाकिये के हाथ में होगा। वह कन्निप्परंपु में पधारेगा ···शायद उस मनस्विनी के मन में शनिवार को जवाब लिखने का विचार आया हो। ऐसी हालत में मंगलवार तक इन्तजार करना पड़ेगा। देवी, जिन्दगी भर तेरा इंतजार करते बैठे रहने के लिए···

"पाटीरगन्धी कुचशाटी कवित्व परिपाटी···" बरामदे से कीर्तन उठ रहा था।

श्रीधरन के मन में 'मापिल पाट्टु' की दो पंक्तियाँ उभर आयीं :

"बीरान काक्का अत्तर पूशी,
बीवियय्च्चोरु कत्तुण्टु···"

(बीरान काक्का, इत्र लगाकर भेजा हुआ बीवी का एक पत्र है)

पगडंडी से दो आदमी आ रहे हैं—श्रीधरन ने ध्यान से देखा।

वे दरवाज़े पर पहुँचे।

नायिका के पिता जी और नायिका का ट्यूशन मास्टर।

वे फाटक से कन्निप्परंपु में ही आ रहे हैं।

बरामदे का कीर्तन बन्द हो गया।

श्रीधरन के अन्तस् में बिजली कौंध गयी।

घर के बरामदे और नीचे के घर के बीच से झाँककर देखा। नायिका के पिता और ट्यूशन मास्टर अष्टवक्रन उण्णीरि नायर, कृष्णन मास्टर के पास की कुर्सी पर बैठकर कुछ गुप्त बातें कर रहे हैं।

नायिका का पिता कृष्णन मास्टर के हाथ में जेब से एक पत्र निकाल कर देता है।

कृष्णन मास्टर नाक पर चश्मा रखकर पत्र पढ़ते हैं।

नायिका को प्रेषित प्रणयलेख !

कुंजिकुरुवक्काविलम्मा, मुझे बचाओ !

चेनक्कोत्तु घराने की पुरातन देवी कुंजिक्कुरुव भगवती की शरण जाने की जरूरत अचानक ही हुई थी।)

श्रीधरन की यह साहित्य सृष्टि भी लौट आयी है। पिताजी के हाथ में है।

कृष्णन मास्टर के पत्र पढ़ने के बाद नायिका के पिता ने कृष्णन मास्टर से पत्र वापस लेकर अपनी जेब में रख लिया।

अष्टवक्रन उण्णीरि नायर कुछ फुसफुसा रहा था।

थोड़ी देर के बाद दोनों विदा लेकर आँगन में उतर गये। फाटक पर पहुँचने पर अष्टवक्रन ने बदबू से नाक सिकोड़ते हुए की तरह, बरामदे में अपराधी की तरफ देखा। श्रीधरन निडर ही खड़ा रहा।

"श्रीधरन !"

नीचे से पिताजी की गम्भीर पुकार सुनाई पड़ी ।

पिताजी ने मेज़ पर जो बेंत की छड़ी रख छोड़ी थी, उसकी झलक आंखों में पड़ी । श्रीधरन को सजा देने के लिए उस बेंत का इस्तेमाल कम ही होता था। पिताजी गरम मिजाज के नहीं हैं । लेकिन गुस्से से जब तिलमिलाते हैं तो एक संहारमूर्ति ही बन जाते हैं। बेंत की मार से जांघ और चूतड़ की खाल से खून बहने पर भी वे नहीं छोड़ते । इससे पहले एक-दो बार ऐसा हुआ है ।

वह अपमान के मैले बोझ को ढोता हुआ पिताजी के सामने एक गधे की तरह सिर झुकाकर खड़ा हो गया ।

पिताजी ने श्रीधरन का चेहरा पकड़ कर ऊपर उठाया ।

क्रोध और परिहास पिता के चेहरे पर स्फुरित नहीं हुए, बल्कि मनोरंजन भरी एक मुस्कान ही दिखाई पड़ी ।

"अरे बेटे, तू इतना बदतमीज कैसे हो गया ! उस लड़की को स्कूल के पते पर प्रेम-पत्र भेज दिया ?

तब रसोई घर से छाती पीटकर रोने की आवाज आयी । श्रीधरन की मां की आवाज़ है । उसे मालूम हो गया कि बेटे ने परिवार के मुंह पर कालिख लगा दी है । (नाराजी और दुख में श्रीधरन की मां छाती पीटकर रोने लगती है। हाथ से नहीं पीटती, खाना खाने के लिए जिस पटरे पर बैठते हैं उससे अपने को मारने पर ही उसे खुशी होती ।)

श्रीधरन सकपकाकर खड़ा हो गया। पिताजी ने उसके अपराध पर नहीं, उसकी मूर्खता पर ही डाँटा था ।

"आगे कभी यह सुनने का मौका आयेगा कि किसी लड़की को तूने प्रेम-पत्र भेजा है ?" पिताजी ने तीखी आवाज़ में पूछा ।

"नहीं ।" दुनिया की सभी लड़कियों को मन-ही-मन कोसते हुए श्रीधरन ने शपथ ली ।

"ऊँ—जाओ । इम्तहान निकट है न ? जाकर सबक पढ़ो ।"

कैफियत पूरी हुई । मुजरिम को ताकीद देकर छोड़ दिया गया ।

"श्रीधरन ने उस लड़की के नाम एक प्रेम-पत्र भेज दिया तो उसमें इतनी बड़ी गलती क्या हो गयी ?" छोटे भाई की पैरवी करते हुए गोपाल जोर से चीखा ।

पिताजी के चेहरे पर एक नटखट मुस्कान थिरक गयी । उन्होंने कुछ कहना चाहा । इतने में एक आदमी फाटक से आता दिखाई दिया ।

श्रीधरन ने देखा, मछुआ एरप्पन है । उसके हाथ में एक बड़ी मछली लटक रही है।

एरप्पन पुराने जमाने में कृष्णन मास्टर के साथ स्कूल में पढ़ा था । (अन्दमान

चात्तप्पन भी उसी दर्जे में था।) एरप्पन पच्चीसेक मील दूर स्थित मुक्काटी में स्थायी रूप से रहने लगा है। वह तो अब समुद्र पर नहीं जाता। दो हट्टे-कट्टे लड़के हैं, वे ही जाते हैं। छोटे बच्चों को खिलाता हुआ एरप्पन घर पर ही रहता।

तीन-चार महीने में एक बार अपने पुराने सहपाठी कृष्णन मास्टर को देखने के लिए कन्निप्परंपु में मछली लेकर वह आता है।

एरप्पन के पूरे चेहरे पर चेचक के निशान हैं। वह काला और छोटे क़द का है। नुकीले चेहरेवाले एरप्पन के एक ही आँख है। (उसकी जिन्दा आँख गुंजा की तरह लाल है—दूसरी मुर्दा आँख नमक में पड़े आँवले के समान।) पुराने सहपाठी को देखने पर एरप्पन की बातचीत और हँसी खास ढंग की होती। भेंट की मछली को ऊपर उठाए चेहरे को दाहिनी ओर मोड़कर 'की · क्की···क्कीह्' करके थोड़ी देर तक खिल-खिलाकर हँसता रहा।

एरप्पन को पहली बार देखने का स्मरण श्रीधरन के मन में आज भी ताज़ा है।

जब माँ ने अन्दर लेटे पिताजी से कहा कि एरप्पन[1] आया है, तब श्रीधरन ने सोचा कि कोई भिखारी आया होगा। बरामदे में झाँककर देखा तो एक बड़ी मछली को हाथ में लटकाए खड़ा एक आदमी ही नज़र आया।

पिताजी ने उठकर उसके नज़दीक जाकर कुशलक्षेम पूछी, "क्या है एरप्पन ?" तब वह हाथ से मछली को उठाकर चेहरे को इधर-उधर घुमाता हुआ मुस्काने लगा।

माँ बरामदे में आकर उसके हाथ से मछली लेकर रसोईघर में चली गयी।

उसके जाने पर श्रीधरन ने पिताजी से पूछा, "उस भले आदमी को एरपप्न क्यों पुकारते हैं ?"

पिताजी ने बताया कि वह उसका नाम है।

"क्या उसके माँ-बाप को अच्छा नाम नहीं मिला था ?"

पिताजी ने स्पष्टीकरण दिया। वह उसके माँ-बाप का दिया हुआ नाम नहीं है। नीच जाति के लोगों को बच्चा होने पर देहात का मुखिया ही नाम देता है। अगर लड़का है तो 'एरप्पन' (भिखारी), 'पेरुक्की' (निकम्मा आदमी), 'मंकट्टा' (मिट्टी का ढेला), 'कलप्पा' (हल) आदि कोई नाम दिया जाता है। लड़की है तो 'चूलू' (झाड़ू), 'मुरं' (सूप), 'डरलु' (ऊखल) आदि नामों से पुकारा जाता। 'कुदाल' 'कुल्हाड़ी' 'बसूला' आदि हथियारों के नाम भी हरिजनों को दिये जाते हैं···"

सुनकर श्रीधरन को हँसी आयी, साथ ही खीज भी हुई: "उस मुखिया के कान पर एक झापड़ लगना चाहिए।" पिताजी हँसी से लोट-पोट हो गये।

---

1. मलयालम शब्द 'एरप्पन' का अर्थ भिखारी है।

एरप्पन मछुवे का आगमन श्रीधरन को एक त्योहार के समान लगा। उस दिन अच्छी मछली का व्यंजन नसीब होने के कारण ही नहीं, एरप्पन ने अच्छी समुद्री दास्तानें भी बतायी। सब अनुभव की दास्तान थीं : वे तीन-चार दिन तक लगातार समुद्र में इधर-उधर चक्कर खाने पर नाव में संचित पीने का जल खतम हो गया था। जब वह गला सूखकर मरनेवाला था, तब काविलम्मा को पुकारकर रोते हुए मिन्नत-प्रार्थना की। काविलम्मा का दिल पसीज गया। उसने आसमान से स्तनपान कराया। यों बारिश का जल पीकर मृत्यु से अपने बचने की बात वह बड़े मनोयोग से सुनाता।

एक लम्बे आकार की हांगर मछली जाल में फँसी तो जाल और नाव को ही खींचकर ले गयी। फिर समुद्र के बीच चक्कर खाने की उस घटना को भी वह सुनाता कि कैसे जाल को समुद्र में छोड़कर प्राण लेकर वापस आना पड़ा।

"तिमिंगल को देखा करते हो ?" श्रीधरन ने जिज्ञासा के साथ पूछा।

"तिमिंगल-विमिंगल तो समुद्र में नहीं है।" एरप्पन पान खाने के लिए सुपारी काटते हुए सिर हिलाकर बोला। फिर कुछ याद कर पहले कही बात का संशोधन करके उसने बताया, "हाँ मुन्ना, समुद्री हाथी के बारे में ही कह रहे हो न वही तो समुद्र का राजा है—ईमानदार राजा। उसके सिर पर एक नली है। इससे पानी ऊपर छिटकाता है। दूर से ही दीख जाता है।"

क्षणभर चुप रहकर फिर बखान करने लगा—"सफेद छतरी लेकर खड़े समुद्री राजा को देखने पर नाव के लोग तुरन्त उठ खड़े होकर प्रार्थना करते, 'समुद्र के राजा, हमें बचाइए···' यह सुनकर वह सफेद छाता समेटकर झट डुबकी लगा लेता। लेकिन राजा के बारे में हँसी-ठिठोली करें तो राजा को मालूम हो जाता। तब नाव के नीचे आकर वह पिचकारी से पानी उछालने लगता। उस समय नाव और मछुवे कहाँ होते—उधर आसमान में ! एक नारियल के पेड़ की ऊँचाई में फुहार की धारा में लटकते रहते। यह राजा का एक खेल है। मजाक उड़ानेवालों के लिए दण्ड भी। तब नाव के लोग 'समुद्री राजा, माफ़ी दे दीजिए !' रोते हुए मिन्नत— प्रार्थना करते। यह सुनते ही राजा शान्त हो जाता। वह अपना सफेद छाता समेटकर पानी में विलीन हो जाता। एकाएक नाव और मछुवे सीधे पानी में आ गिरते। किसी को भी कोई खतरा नहीं होता। वह तो ईमानदार है। मछुओं को आसमान में तिमिंगल के सफेद छाते पर थोड़ी देर लटकने का अनुभव अवश्य करा देता है।

क्रुद्ध तिमिंगल की अत्युग्र जलधारा में आसमान में नाचनेवाली नौकाओं और उनमें प्रार्थना करते हुए मछुवों की तस्वीर श्रीधरन के मन में नाच उठी।

कृष्णन मास्टर ने एरप्पन से पूछा, "क्या तेरे दूसरे बेटे की शादी हो गयी है ?"

यह सुनकर एरप्पन हँस पड़ा। फिर दूसरे बेटे चन्तप्पन की बात विस्तार से

बतायी।

चन्तप्पन को एक मुस्लिम लड़की से मोहब्बत हो गयी। धर्म-परिवर्तन कर वह मुसलमान बना, टोपी डाली और सेटताली हो गया। उससे निकाह किया। साल भर बाद उस औरत से उसे नफ़रत हो गयी। वह तो रंडी थी। सेटताली ने उसको छोड़ दिया। फिर आर्य समाज में आकर वह हिन्दू बना। विवेकानन्द नाम स्वीकार किया। अब वह अच्छा है। शादी की बात कहने पर चन्तप्पन को — नहीं, विवेकानन्द को गुस्सा आ जाता है···

चन्तप्पन की प्रणय-कथा सुनकर कृष्णन मास्टर हँस पड़े।

"महिला को देखकर मोहित होने पर पुरुष की हालत गधे की तरह हो जाती है···।"

कृष्णन मास्टर हँसते हुए बोले, "मैंने भी एक लड़की से प्यार किया था। वह घटना सुनना चाहोगे ?"

पिताजी के इश्क की कथा सुनने के लिए श्रीधरन कान खड़े कर वहीं बैठा रहा। श्रीधरन को डर था कि पिताजी उसको उठकर चले जाने का आदेश देंगे। श्रीधरन के न सुनने लायक कोई बात होती तो पिताजी श्रीधरन से कहते कि तू अपने कमरे में जाकर सबक पढ़, लेकिन उन्होंने ऐसा कुछ भी नहीं कहा। इतना ही नहीं, श्रीधरन को लगा कि अपने बेटे को सुनाने के वास्ते ही बाबूजी यह कथा कह रहे हैं।

कृष्णन मास्टर की पुरानी मोहब्बत की दास्तान का सार कुछ इस प्रकार था :

कृष्णन मास्टर के टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल में पढ़ने का जमाना। मोहल्ले के एक पुराने घराने की एक सुन्दर युवती से कृष्णन मास्टर की आँखें चार हुईं···उन्होंने उससे शादी करने के इरादे से ऐसा किया था। लेकिन युवती को जरा सन्देह था कि इस दीवाने ने शादी किये बिना ही उसे छोड़ दिया तो···। उसे मालूम हो गया था कि उसकी खूबसूरती पर मास्टर लट्टू हो गये हैं।

वह अनपढ़ थी।

एक दिन शाम को कृष्णन मास्टर ने ट्रेनिंग स्कूल से वापस आते समय एक अजनबी इन्सान को रास्ते में इन्तजार करते हुए देखा। मास्टर को देखने पर उसने बड़े अदब से प्रणाम किया। कृष्णन मास्टर की उस प्रिया ने एक गुप्त संदेश के साथ ही उस नौजवान को भेजा था। वह चार मील दूर मामा के घर जा रही है, कल रात वहाँ आने पर सुविधापूर्वक बातचीत हो सकती है। यही संदेश था। इस प्रेम-संदेश से कृष्णन मास्टर के रोंगटे खड़े हो गये।

"उससे कहो कि कल मिलेंगे।" मास्टर ने जवाब दिया।

घर जाने के बाद उस पर पुनः विचार किया। जरा विवेक का उदय हुआ।

गुप्त-संदेश देनेवाले व्यक्ति के बारे में स्मरण किया। सफेद हट्टा-कट्टा नौजवान। लम्बे बाल, ललाट पर सिंदूर ''उसने गुप्त-संदेश उसी युवक के द्वारा दिया था। ऐसी हालत में इन दोनों के बीच भी गुप्त-सम्बन्ध जरूर होगा।

मास्टर अगली रात उससे मिलने नहीं गये। फिर कभी नहीं गये।

प्रेम करने में ही नहीं, पुरुषों को धोखा देने और अपमानित करने में भी इन महिलाओं को एक खास खुशी महसूस होती है। एक भी महिला पर विश्वास नहीं करना चाहिए। जो पुरुष प्रेम के जाल में फँसा कि बस एक गधा बन जाता है। वह असलियत नहीं जान पाता'''कृष्णन मास्टर ने अपनी पुरानी मुहब्बत की दास्तान यों खतम की।

श्रीधरन के लिए यह कोई तत्वोपदेश नहीं था। वर्षों पहले रावुत्तर मौलवी ने जो गीत गाया था, वह उसके कानों में गूँज रहा था—

"आट्टेयुं काट्टेयु नंपलाम्—अन्त
शेल केट्टिय मातरै नंपलाम्'''"

## 15. कडुवा, खट्टा, तीखा और मीठा

प्रकृति के रंगमंच पर बारिश का नाच शुरू हो गया।

श्रीधरन को बारिश का मौसम पसन्द है। जब पहले-पहल वर्षा होती है तब वह बड़ी उमंग से आँगन में झूम-झूमकर नाच उठता है। बरामदे के सामने जल-बिन्दुओं के नीचे गिरने पर कई आकार के बुलबुले पैदा होते। उनके पैदा होने, रेंगने और फिर एकाएक फूट जाने अर्थात् सृष्टि-स्थिति-संहार लीलाओं को वह उत्सुकता से देखता। हवा में पेड़ों के शिखरों को झूमते और पौधों को नृत्य करते देखकर वह खुश होता। वर्षाऋतु को आधार बनाकर उसने एक कविता भी लिखी है:

"स्वच्छ विभा डूब, कारी बदरियों का
क्रीडांगन हो गया सारा आकाश।
कल-कल ध्वनि में 'बीज खंता' 'बीज खंता'
गाती चिड़ियाँ भी उड़ गयीं कहीं।
रंग बदल सारी धरा ने
कपिल कंचुक ओढ़ा!
सूखी पत्तियाँ उड़ जातीं—
धूल भरी झँझा के झोंके में।
इन्द्रधनुष की रंग-छटा
उदित हुई
शीतल नभ की छाती पर।

चन्द्रमा ने डाल दिया घूँघट
(चाँदनी का सुख हुआ अस्त)
नव वर्षा से आलिंगित मिट्टी की
मदगन्ध पवन में भर गयी।
वर्षा ऋतु के नर्तन में
बज उठे मंडूक ताल
मेघ गर्जन और ठण्डी पुरवैया को ले साथ
ऋषभ मध्य[1] भी आ गया लो।
मूसलाधार वर्षा से घाट डूबे, रास्ते हुए बन्द।
हरियाली ओढ़े आ पहुँची
आर्द्रा[2]-रवि संगम की नव वेला हुई काली
मिर्च की लताएँ फूली फलीं।
खेत-खेत की मेंड़ें, पगडंडियाँ और मिट्टी की दीवारें लाँघ,
बढ़ आया बाढ़ का पानी
घरों के आँगन को पार कर।

बारिश में आँगन की जलधारा में बहाने के लिए कागज़ के बहुरंगी जहाज़ देने वाले गोपालन भैया की भी याद आयी। (वेचारा गोपालन भैया ! अब जीवित शव है। बारिश के समय आँगन की तरफ़ देखता हुआ बरामदे में लेटा है।)

रात को वर्षा-देवता एक बड़ा ऑरकेस्ट्रा शुरू करता। मेंढकों का नगाड़ा, छोटे मेंढकों का मृदंग, झिल्लियों का रव—मूसलाधार वर्षा का शोर भी। युगों के उस पार के ध्वनि-आलोक में श्रीधरन की आत्मा लीन हो जाती···उसमें लीन होकर वह सो जाता।

आज वर्षाऋतु अपने सभी आकर्षक कार्यक्रमों के साथ जारी है तो भी श्रीधरन उस पर ध्यान दिये बिना घर के बरामदे में विषाद-भरे मन से मूक बना बैठा है। छोटी-छोटी चिन्ताएँ वर्षा के पानी के बुलबुले की तरह उठती-फूटती रहती हैं।

इण्टरमीडियेट पब्लिक परीक्षाफल कल अखबार में प्रकाशित हुआ। श्रीधरन का नम्बर नहीं था—इम्तहान में हार गया है।

उस दुष्ट गणित ने ही धोखा दिया होगा।

परीक्षाफल ज्ञात होने पर पिताजी ने डाँटा नहीं, सान्त्वना भी नहीं दी—उन्होंने कुछ नहीं कहा—सिर्फ 'हूँ' की आवाज़ प्रकट की।

---

1. 'ऋषभ मध्य' मानसून की वर्षा जो केरल में बैशाख महीने में शुरू होती है।
2. आर्द्रा में सूर्य की स्थिति खेती शुरू करने की सूचक है।

पिताजी के मूक भाव में न जाने क्या-क्या बातें छिपी होंगी ?

इण्टरमीडियेट पास होने पर पुत्र को बी० ए० पढ़ाने के लिए मद्रास भेजना है या मंगलापुरम्—इस पर पिताजी को माँ से बहस करते हुए श्रीधरन ने सुना था। माँ ने कहा था कि मंगलापुरम् अधिक निकट है। मद्रास की बी० ए० डिग्री के लिए अधिक मान्यता होगी। पिताजी ने श्रीधरन से कोई राय नहीं पूछी। रिजल्ट के आने का इन्तजार कर रहे थे। नतीजा मालूम हुआ फेल हो गया है।

माँ ने खरी-खोटी सुनायी, "अरे बदतमीज, पाठ न पढ़कर लड़कियों को प्रेम-पत्र लिखता बैठा रहा। अब फेल होने का ताज पहन रखा है न ?—किसी चपरासी की नौकरी में चला जा…"

सिर्फ गोपालन भैया ने ही तसल्ली दी थी, "श्रीधरन तू दुखी मत हो। कितने लड़के फेल हो गये होंगे। उनमें तू भी एक है। अब सितम्बर की परीक्षा के लिए रात-दिन पढ़कर एक कर दे। कविता लिखने का काम फिलहाल टाल दे…"

गोपालन भैया की बात हृदय को छू गयी।

(बड़ा भैया फिटर कुंजण्णु तमिलनाडु गया है। दो महीने में एक बार वह अपनी बीवी और मुन्ने को देखने के लिए कोंगनाडु लुक-छिपकर जाता। दो दिन ही वहाँ ठहरता। फिर पूंछ दबाकर कन्निणरंपु वापस चला आता।)

बाहर अच्छी बारिश है। ठण्डी हवा बह रही है।

गोपालन भैया की बात अन्तस् में उभर आयी है। लेकिन अब इम्तहान में बैठने का उत्साह नहीं है। उसको डर है कि गणित एवरेस्ट की चोटी की तरह है। कभी भी उस पर चढ़ नहीं सकेगा। पिताजी के हृदय को पीड़ा पहुँचाने का दुख था। आखिर सितम्बर की परीक्षा के लिए पढ़ने का निर्णय लिया। क्या करना चाहिए ? शेल्फ की काव्यकृतियों और कहानियों की फाइलों की ओर नजर गयी। लगा कि सब कुछ कूड़ा-करकट है। विदेशी वस्त्रों की तरह उन्हें जला देना चाहिए। कई रातों की उपासना और श्रम का नतीजा ही इन पृष्ठों में छिपा है यह जानकर तकलीफ़ हुई। दुखी हो पगडंडी की ओर देखने पर कुबड़े वेलु के नटखट लड़के अप्पूट्टि को स्लेट और पुस्तक सिर पर रखे हुए वापस आते देखा। वह पणिक्कर के स्कूल में ही पढ़ता है। सोचा कि मूसलाधार बारिश के कारण सुबह को ही छुट्टी हो गयी होगी। उस समय उस नटखट लड़के ने जोर से चिल्लाकर कहा कि बढ़ई केशवन मास्टर का निधन हो गया— स्कूल नहीं लगेगा—महात्मा गांधी की जय !

यह समाचार सुनते ही वह चौंक उठा। सोचा कि लड़का बेकार बकवास करता होगा। उसे पुकारकर पूछा, "क्या है अप्पूट्टि ? क्या आज स्कूल नहीं है ?"

"स्कूल नहीं है—केशवन मास्टर का निधन हो गया। विषम ज्वर था। स्कूल बन्द है।"

नयी देशीय प्रबुद्धता के प्रतीक महात्मा गांधी की जय, वन्द,—सत्याग्रह आदि

नारे नयी पीढ़ी को आकर्षित कर रहे हैं…

केशवन मास्टर का स्मरण किया। वह अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनता था। फिर भी अच्छा था। पुलिस इन्स्पेक्टर के चुनाव में गया। नौकरी मिलने के विश्वास पर कई उल्टे कार्य किये। मेंढक के गरदन की थैली को फुलाकर धमकी देने-जैसा ही कुछ उसने किया था। विधि की निष्ठुरता ! हार का मजा चखाने के बाद भी विधाता तृप्त नहीं हुआ। विषम ज्वर का शिकार बनाकर उस बेचारे को मार डाला…कालर शर्ट पहनकर साइकल चलाते, नयी सड़क से जाते हुए उस कोमल युवक की तस्वीर मन से हटती नहीं—वह अब श्मशान में मुट्ठी-भर राख बन गया होगा…

यों कुछ दार्शनिक विचारों में मन बह रहा था कि पगडंडी से एक काला-कलूटा दुबला इनसान कन्धे पर बैग टाँगें घुटनों तक के पानी में आता हुआ दिखायी पड़ा। व्यक्ति को ध्यान से देखा : उससे पुराना परिचय है। साप्ताहिक कार्यालय का चपरासी है।

वह फाटक से कन्निप्परंपु में ही आ रहा है।

हृदय के काले मेघों के बीच बिजली चमक उठी।

साप्ताहिक में मेरी कहानी प्रकाशित हुई होगी।

कथा या लेख साप्ताहिक में प्रकाशित करने पर उसकी एक प्रति लेखक या कथाकार को मुफ्त भेजी जाती है। यही रीति है।

पुराना राजा 'साप्ताहिक' के संपादक पद से इस्तीफा देकर कहीं चला गया। एक देशीय नेता ने ही अब साप्ताहिक के संपादक का काम अपने ऊपर ले लिया है।

श्रीधरन ने इस मौके पर एक कहानी 'बिजली' शीर्षक से भेजी थी। कथाकार का नाम एस. चेनक्कोत्तु था।

सीढ़ियाँ उतरकर नीचे गया।

चपरासी ने साप्ताहिक उसके हाथ में दिया। डिलिवरी बुक खोलकर हस्ताक्षर करने को कहा।

रैपर में

श्री चेनक्कोत्त श्रीधरन,<br>
कन्निप्परंपु हाउस<br>
अतिराणिप्पाटं।

पता तो साफ लिखा है।

डिलिवरी बुक में हस्ताक्षर किये।

"आपका नाम क्या है ?" चपरासी से आत्मीयता के साथ पूछा।

(साहित्य में मेरी प्रथम संतति को वह साज-सँभारकर लाया है। कृतज्ञता

और खुशी प्रकट करने में कठिनाई हुई।)

उसने हँसते हुए कहा—"नन्तुकुट्टि"

धोती बाँधकर डिलिवरी बुक को कन्धे पर रखकर, छाता पकड़े ही वह फाटक से चला गया।

रैपर के पन्ने को आघात पहुँचाये बिना ही साप्ताहिक को बाहर निकाला।

हड़बड़ी में पृष्ठ उलटकर देखा—तेरहवें पृष्ठ पर रचना दिखाई दी।

कहानी : 'बिजली'

—एस० नेनमकोल

लगा कि पृष्ठ की लिपियाँ नाच रही हैं।

देखते-देखते भावमग्न हो गया। 'बिजली' में पतंग नाच रहे हैं।

कुछ कथाएँ और कविताएँ इसके पहले कुछ पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थीं। लेकिन शहर के सुप्रसिद्ध साप्ताहिक में श्रीधरन की यह कहानी पहली बार ही प्रकाशित हुई है।

खुशी छिपा न सका। आत्मगौरव के पंख फड़फड़ाने लगे।

गोपालन भैया को दिखाने के लिए नजदीक गया। गोपालन भैया दवा पीकर खुमारी में लेटा था, उसे कष्ट नहीं देना चाहिए।

ऊपर के अपने कमरे में बैठकर कहानी फिर एक बार पढ़ी। छापे की गलतियाँ होंगी। छापनेवाले पत्नी को पन्नी (सुअर) में तबदील कर देते हैं। सीढ़ी के नजदीक पहुँचने पर रसोईघर से चूड़ियों के टकराने का मृदुल नाद सुनाई पड़ा। ध्यान दिया। जानु होगी। वह कभी-कभी माँ की मदद करने के लिए आती है।

तभी माँ को रसोईघर से आँगन के बाथरूम की तरफ़ जाते हुए देखा।

जानु रसोईघर में अकेली है। मानस में प्रणय-स्वप्न जाग उठा।

(पड़ोस की अम्मिणियम्मा की छोटी बहन है जानु। एक हफ्ते के लिए अपनी विवाहिता बहन के साथ रहने के लिए वह दक्षिण के अपने गाँव से आयी है।)

जानु दुबली-पतली आम की कोंपल की तरह रंगवाली सत्रह बरस की लड़की है। वह मिट्टी का घड़ा लेकर उसमें पानी भरने के लिए कन्निप्परंपु के कुएँ पर आती रहती। तब श्रीधरन अपने दुमंजिले मकान के कमरे के बरामदे में बैठकर पढ़ रहा होता। वह फूलों-भरी लताओं से लिपटी बाड़ के ऊपर दुमंजिले मकान के बरामदे की तरफ़ देखती। आँखों में बिजली-सी कौंधती। मिट्टी के घड़े में पानी भरने पर भी वह वहाँ रुकती। अञ्जलि में पानी भरकर मुंह में डालते हुए कुल्ला करने लगती। बरामदे में बैठे कॉलिज कुमार का हृदय प्रणय की आशंका से झकझोर उठता।

एक बार एक मधुर मुस्कान की भेंट देने का साहस हुआ। जानु ने शरमाते हुए अपना सिर नीचे झुका लिया। इतना ही हुआ था बस। इससे अधिक कुछ नहीं

कर सका।

अब वह रसोईघर में अकेली है। आदिम इन्सान की ललचाई निगाहों से औरतों से मिलने की आकांक्षा ही भीतर से घूँघट निकालकर बाहर आती है।

दूसरी सृष्टि का मांस-गंध का आस्वाद करने के लालच का नशा···

साप्ताहिक और 'बिजली' को वहीं ज़मीन पर डाल वह सीधे रसोईघर की तरफ छिपकर चला गया।

जानु रसोईघर के कोने में घुटने टेककर पीठ मीड़े सिर झुकाए हुए चक्की में मिर्च पीस रही है। उसकी चूड़ियाँ झनक-मनक रही हैं।

पीछे छिपकर बैठते हुए उसकी ठोढ़ी को ज़रा ऊपर उठाया। मिर्च की तरह के उसके ओठों और सफेद दाँतों को चबाकर खाने की कामना से उसके ओठों को जोर से चूम लिया। गुदगुदी की घबराहट से चौंककर उसने अपना हाथ उठाकर रोका। मिर्च में सना हाथ श्रीधरन की आँखों को छू गया।

आँगन से पगध्वनि सुनी। वह पीछे हट गया।

ज़िन्दगी में पहली बार उसको दूसरी सृष्टि-समागम के अनुभव करने का अवसर मिला है। आँखों की जलन और रुलाई ही उसका नतीजा है!

अक्सर विधाता इस तरह की क्रूरता से ही श्रीधरन से बर्ताव करता है।

आँखें मूँदकर गलियारे में घुसने पर किसी चीज़ पर पैर लगा। 'बिजली' का साप्ताहिक—तुरन्त उठा लिया। शोर मचाये बिना हौले से सीढ़ियाँ चढ़कर छज्जे पर जा पहुँचा···मिर्च, नारियल और शहद का स्वाद तब भी मुँह में बह रहा था···आँखों में अश्रुधारा थी।

## 16. काँग्रेस वालण्टियर कुंजप्पु

नयी देशीय प्रबुद्धता की लहरों ने अतिराणिप्पाट को अधिक स्पर्श नहीं किया था। आराकश, कलाल, मजदूर लोग सुबह को काम करने जाते। शाम को वे वापस आते। कुछ लोग रात को घर में चुपचाप रहते। कुछ लोग ताड़ी शाप में समय बिताते। एक तो ताड़ी पीकर घर में हल्ला-गुल्ला मचानेवाले लोग दिखाई देते। दूसरे लोग ताड़ी पीने पर या नहीं पीने पर भी अच्छा सलूक करते।

लेकिन देश में कुछ नयी हरकतें होने लगीं। महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन का आह्वान और ब्रिटिश शासन से भारत को मुक्त करने के अन्य कार्यक्रमों ने कुछ लोगों में जोश पैदा किया था। कुछ लोग उस तरफ आकृष्ट हो गये। तीसरा एक वर्ग था जिसने लड़ाई को अवज्ञा की निगाहों से ही देखा था।

चेनक्कोत्तु कृष्णन मास्टर की जाति के अधिकांश सुशिक्षित और सभ्य लोग शासन करनेवाले गोरों के वैतालिक थे। उनका विचार था कि सवर्णों की प्रभु-

सत्ता से विदेशी प्रभुसत्ता वेहतर है। नौकरी और ऊँची जाति के लोगों को सवक सिखाने के लिए गोरों के पिट्ठु वनने से ही कामयावी मिलेगी। इस ख्याल से वे कोट पैण्ट और पगड़ी पहनकर मिस्टर गाँधी की हँसी उड़ाते हुए राष्ट्रीय आन्दोलन को गाँधी का पागलपन कह मुखिया बनकर विराजमान रहे। खद्दर पहनना, विदेशी वस्त्रों को जला देना, ताड़ी शाप और विदेशी संस्थाओं की पिकेटिंग करना— काँग्रेस के इन प्रतिशोध कार्यक्रमों ने देश में नये जागरण की सृष्टि की थी।

कृष्णन मास्टर दोनों ही पक्षों में शामिल नही थे। ब्रिटिश शासन के प्रति आदर होने की राय एक तरफ, तो महात्मा गाँधी का भक्ति-भाव दूसरी तरफ़। दोनों के बीच पड़कर मास्टर परेशान हो गये।

जब श्रीधरन कॉलेज का छात्र था तव महात्मा गाँधी और अन्य देशीय नेताओं को गिरफ्तार करने के विरोध में उसने कॉलेज की क्लास छोड़कर हड़ताल और जुलूस में जोश के साथ भाग लिया था। यह जानने पर पिताजी के झापड़ का डर भी था, लेकिन घर पहुँचने पर कृष्णन मास्टर ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने इस बात की जिज्ञासा भी नहीं की। आरम्भ में, देशीय स्वातन्त्र्य के विचार से भी अधिक श्रीधरन को विरोध प्रकट करने और इकट्ठा होकर मोहल्ले में हल्ला-गुल्ला मचाकर चलने का जोश था। धीरे-धीरे वह काँग्रेस के आदर्शों से परिचित होने लगा।

गाढ़े-नीले रंगवाली पुलिस वेन से उतरकर लाठीधारी पुलिस ने काँग्रेस सत्याग्रहियों को जिस तरह पागल कुत्तों की तरह मारा, सिर फोड़कर खून वहाया —इस दृश्य को अपनी आँखों से देखने पर श्रीधरन ने गोरों को मन-ही-मन पाँचवें शत्रु के रूप में नोट कर लिया। रेशमी कपड़े को छोड़कर खद्दर पहन लिया। पिताजी ने विरोध नहीं किया। चीनी छोड़ दी। (गोरों ने चीनी को विदेशों से आयात किया था।) ज़मीन पर चटाई पर लेटने का अभ्यास किया। (जेल जाना पड़ा तो?)

इतना होने पर पिताजी ने रोक लगायी, "वस वस, पहले परीक्षा पास करने का प्रयास करो। फिर काँग्रेसी बन सकते हो।"

जोश जरा ठण्डा हो गया। सितम्बर की परीक्षा के लिए मन लगाकर पढ़ने लगा।

उस दिन शुक्रवार था।

श्रीधरन ऊपर बैठकर पढ़ रहा था। कृष्णन मास्टर स्कूल रवाना हो गये। वड़े गपिया किट्टुण्णि ने रास्ते से ही यह अद्भुत खबर सुनायी :

"कृष्णन मास्टर, अपना कुंजप्पु काँग्रेसी टोपी और खद्दर की कमीज पहनकर ताड़ी शाप के सामने पिकेटिंग कर रहा है।"

कृष्णन मास्टर को इस पर भरोसा नहीं हुआ। मास्टर ने श्रीधरन को पुकारकर कहा, "तुम ज़रा जाकर देखो। क्या वह बड़ा भाई ही है?"

श्रीधरन खादी की नयी शर्ट पहनकर नयी सड़क के छोर की ताड़ी शाप की तरफ दौड़ गया।

"महात्मा गाँधी की जय !"
"भारत माता की जय !"
"मद्यनिषेध जिन्दाबाद !"
....................

जय-जयकार और नारे दूर से ही सुनाई पड़ रहे थे। ताड़ी शाप के सामने सड़क पर भीड़ थी। श्रीधरन ने नजदीक जाकर देखा।

घुटनों तक की एक खादी की धोती, खादी की एक बड़ी शर्ट और सिर पर गाँधी टोपी पहनकर हाथ में तिरंगा झण्डा पकड़े सिर घुमाकर ऊँघने की मुद्रा में खड़े नये काँग्रेसी स्वयंसेवक को श्रीधरन ने अच्छी तरह देखा।

"वड़ा भाई ही है।"

कृष्णन मास्टर ने अभिमान को मन में रखकर गाल सहलाते हुए सिर हिलाया।

अतिराणिप्पाटं में इससे पहले एक ही सत्याग्रही था। वैक्कम मंदिर के सत्याग्रह में भाग लेने के कारण मार खाकर क्षय-रोग से पीड़ित हो, प्राण त्यागनेवाला वेलि अप्पुण्णि...अब एक और देशीय योद्धा आ गया है : चेनक्कोत्तु कन्निप्परंबिल कृष्णन मास्टर का पुत्र कुंजप्पु।

बड़ी देर तक विचार करने पर भी कुंजप्पु के हृदय-परिवर्तन का कारण कृष्णन मास्टर को मालूम नहीं हुआ। उनके बुरे दिन गुज़र गये होंगे। बड़े-बड़े अपराधी आगे चलकर ऋषी और त्यागी होते सुने हैं। पुराने जमाने में पुलिस की नौकरी करते समय कई निष्ठुर कर्म करनेवालों को बाद में हृदय-परिवर्तन के कारण महायोगी बनकर श्रेष्ठ शिष्यों का आराध्य होते सुना है। इस तरह कई बातों को सोचते हुए कृष्णन मास्टर स्कूल की तरफ चले।

बड़े भाई साहब का ताड़ी शाप पिकेटिंग अच्छी तरह देखने के लिए श्रीधरन फिर उधर दौड़ गया।

यह ऐसा जमाना था जब काँग्रेस में स्वयंसेवक मिलने में कठिनाई होती थी। खद्दर पहननेवालों को पुलिस पकड़कर मारपीट करती थी। उस समय ही फिटर कुंजप्पु ताड़ी शाप पर पिकेटिंग करने के लिए तैयार होकर काँग्रेस स्वयंसेवकों के दफ्तर में चला गया। उसकी प्रार्थना तुरन्त मंजूर कर ली गयी। वालंटियर को खादी की एक टोपी और पोशाक चाहिए। बुखार से पीड़ित एक मोटे बुजुर्ग आदमी की शर्ट और टोपी मिली। फिर स्वयंसेवक के लिए एक दिन का भत्ता आठ आने है। वह पहले ही अपनी जेब में डालने के बाद कुंजप्पु झण्डा पकड़कर, दो-तीन बार जयकार करने के बाद ताड़ी शाप के सामने खड़ा हो गया था।

ताड़ी शाप पर पिकेटिंग करनेवालों पर पुलिस ज्यादती नहीं करती थी।

लेकिन शाप के मालिक ने काँग्रेस स्वयंसेवकों के खिलाफ परिहास और उपद्रव करने के लिए पुलिस से भी ज्यादा नृशंस बदमाशों को तैनात किया था।

स्वयंसेवक कुंजप्पु ने कच्चे नारियल का पानी लेकर उसे दूर फेंक दिया। फिर झण्डा पकड़कर चुपचाप खड़ा रहा। तब एक आदमी ताड़ी पीने के लिए ताड़ी शाप में आया। श्रीधरन ने आगंतुक को पहचाना। समुद्र-तट पर ठेला खींचनेवाला पेरच्चन—बदमाश पेरच्चन!

स्वयंसेवक कुंजप्पु ने पीने के लिए आये उस आदमी को रोककर विनम्र विनती की, "भाई, ताड़ी नहीं पीनी चाहिए। मद्य जहर है।"

पेरच्चन ने नफ़रत-भरी निगाहों से कुंजप्पु को देखा। फिर चूतड़ खुजलाते हुए ताड़ी शाप में चला गया।

दस मिनट के बाद पेरच्चन भर-पेट पीकर, दो बोतल शराब लिये हुए बाहर आया। शराब की बोतलें दोनों बगलों में दबाये वह डगमगाता हुआ आ रहा था। स्वयंसेवक कुंजप्पु के सामने खड़े होकर उसने गाली बकना शुरू कर दिया। फिर एक लेक्चर झाड़ा, "अरे तू कौन है?—काँगिरस...काँगिरस, धत् तेरी! (ज़मीन पर थूक दिया)। गेरुआ कपड़ा लाठी पर लटकाकर खड़ा होनेवाला काँगिरस—कहता है, ताड़ी नहीं पीनी चाहिए—धत्—अरे, तेरा बाप कौन है?—कान्ति है या चश्मेवाला कृष्णन मास्टर? अरे, बता—बता—"

स्वयंसेवक कुंजप्पु मंत्र जपने की तरह धीरे से फुसफुसाया, "मद्यनिषेध ज़िन्दाबाद..."

"फ! सूअर..." पेरच्चन ने थूका (फिर अश्लील स्वरों की झड़ी लगा दी।) इससे भी नाराज़गी कम न होने के कारण पेरच्चन ने अपनी बगल की मद्य की बोतलें नीचे रख दीं। एक बोतल खोलकर सारी ताड़ी कुंजप्पु के सिर, गाँधी टोपी और खद्दर की शर्ट पर उँडेल दी।

फिर ताड़ी में नहाये कुंजप्पु को देखकर हँस पड़ा।

कुंजप्पु ने ज़ोर से नारा लगाया, "महात्मा गाँधी की जय... !"

कुंजप्पु की सहनशक्ति और क्षमा देखकर दर्शक आश्चर्य-स्तब्ध हो गये। कुछ लोगों ने यह राय प्रकट की कि ताड़ी शापवाला कुंजय्यप्पन पेरच्चन को मुफ्त ताड़ी देकर काँग्रेस स्वयंसेवक के खिलाफ गाली बकने की प्रेरणा दे रहा है। काँग्रेस स्वयंसेवक पर आक्रमण करने के लिए तैयार होनेवाले पेरच्चन से बदला लेने के लिए समुद्र-तट पर ट्रॉली खींचनेवाला चात्तु और रेलवे-पोर्टर काना गोपालन आगे बढ़े। तब काँग्रेस नेता कृष्णन नायर ने आगे बढ़कर हाथ जोड़कर कहा, "भाइयो, क्षुब्ध न हों। अहिंसा ही महात्मा गाँधी का उपदेश है। मृत्यु को गले लगाने को ही हमारे स्वयंसेवक तैयार होते हैं। अहिंसा-मन्त्र जपते हुए पिकेटिंग करनेवाले स्वयंसेवकों को उपद्रव करनेवालों के साथ भी इसी नीति पर चलकर व्यवहार करना ज़रूरी

है।"

पेरच्चन से बदला लेने आये ट्राली चात्तु और पोर्टर गोपालन कांग्रेस नेता के आग्रह पर पीछे हट गये।

पेरच्चन शराब की बोतलों को कन्धे पर रखकर तच्चोलि पाट्टु गाते, लड़खड़ाता हुआ सड़क पर पहुँच गया।

थोड़ी देर बाद एक दूसरा नौजवान हाथ में कच्चा नारियल लिये स्वयंसेवक कुंजप्पु के पास आया। उस नौजवान से परिचित लोगों को बड़ा ताज्जुब हुआ। पेरच्चन का इकलौता बेटा कुंजाड़ी!

पिता कांग्रेस स्वयंसेवक को देखकर क्षुब्ध होता है, और बेटा सेवा-भाव से स्वयंसेवक को कच्चा नारियल प्रदान करता है! एक ही घर में दो दल।

कुंजप्पु ने कच्चा नारियल पीकर छिलका फेंक दिया।

श्रीधरन बड़े भाई की ताड़ी शाप पिकेटिंग देखता हुआ आधा घण्टा वहीं खड़ा रहा। फिर वापस आया। एक दोस्त ने कहा था कि 'अलमिनार' पत्र के दफ्तर के साहित्यकार गोपाल पिल्लै से परिचय करायेगा। भोजन के बाद दो बजे पत्र के दफ्तर को रवाना होना है।

सड़क पर पहुँचकर देखा कि एक लड़का स्वयंसेवक कुंजप्पु द्वारा पीकर फेंके हुए कच्चे नारियल का छिलका ले जा रहा है। उस छोकरे को पहले कहीं देखा था। स्मरण किया। शक हुआ कि वह बदमाश पेरच्चन का छोटा लड़का है।

सड़क के नजदीक पेरच्चन की चाय की दूकान के पास की पगडंडी से जाने पर चार-पाँच अहातों के उस पार ही पेरच्चन का घर है। श्रीधरन ने उस लड़के को, नारियल का छिलका लेकर उस पगडंडी से जाते हुए देखा। उसे कुछ शक हुआ उस लड़के का पीछा किया। छोकरा पगडंडी से चलकर पेरच्चन के फाटक में घुस गया। श्रीधरन थोड़ी देर तक पगडंडी पर शंकित खड़ा रहा। फिर हौले से फाटक पर चढ़कर आँगन में झांका। छप्पर की एक छोटी झोंपड़ी थी।

उसने आँगन और बरामदे में किसी को नहीं देखा। वहाँ चढ़कर देखने की इच्छा हुई। लेकिन घर के लोगों के प्रश्न करने पर तुम कौन हो, क्यों आये, क्या उत्तर देगा, सोचता हुआ खड़ा रहा।

पेरच्चन के घर एक मिट्टी के बर्तन में अरुता का पौधा देखकर मन में विचार उठा। बढ़ई माधवन ने कुछ अर्से पहले सलाह दी थी कि अगर बिना किसी कारण के किसी के घर में घुसना है तो अरुता के पौधे का अन्वेषण करना काफी है। घर के बच्चे को अपस्मार हो गया है। जरा अरुता दीजिए। आपके यहाँ हो तो बड़ा उपकार होगा। क्षमा मांगने के लहजे में पूछताछ करनी चाहिए।

उस विचार को आधार बनाकर वह साहस बटोर वहाँ चढ़ गया।

घर के दक्षिणवाले कमरे में लोगों को काम में लगा देखकर हौले से आंगन

के पीछे से जाकर दरवाज़े से उस कमरे में झाँककर देखा।

कमरे में तीन-चार आदमी हैं। पेरच्चन, पेरच्चन का इकलौता वेटा कुंजाड़ी, ताड़ी-शाप के आँगन में पेरच्चन से जवर्दस्ती करने के लिए आगे वढ़ने वाला पोर्टर गोपालन और कच्चा नारियल ले जाने वाला छोटा लड़का। पेरच्चन वोतल से ताड़ी को कच्चे नारियल में भरता है। कुंजाड़ी उसे लेकर स्वयंसेवक के नज़दीक जाने को तैयार हो जाता है। पोर्टर गोपालन ताड़ी पीकर सुध-वुध खोने के कारण एक कोने में लेटा है।

बड़े भाई कुंजप्पु के कच्चे नारियल पीने के रहस्य से अवगत होने पर श्रीधरन हँसी नहीं रोक सका। कमरे के लोगों ने उसको नहीं देखा था। श्रीधरन धीरे से वहाँ से फाटक पारकर पगडंडी पर आया। उसे वहुत हँसी आ रही थी। मालूम हुआ कि यह सव गोपालन और कुंजप्पु का कुचक्र था।

कुंजप्पु को ताड़ी से नहाने का कारण भी मालूम हुआ। कच्चे नारियल के छिलके से पी गयी ताड़ी की गन्ध पहचान में न आये इसीलिए ऐसा किया था।

पगडंडी से सड़क पर पहुँचने पर लोगों की दूसरी वात ने श्रीधरन को और हँसा दिया : ताड़ी शाप पिकेटिंग करनेवाला काँग्रेसी स्वयंसेवक चक्कर खाकर गिर गिर पड़ा है। लोग उसे काँग्रेस-कार्यालय में ले गये हैं।

'अलमिनार' के साहित्यकार गोपालन पिल्लै की श्रीधरन का मित्र अबूवक्कर वड़ी तारीफ करता था। गोपालन पिल्लै साहित्य-क्षेत्र के मुनिश्रेष्ठ हैं। मलयालम साहित्य के वारे में इतना अधिक ज्ञान और किसी को नहीं है। अँग्रेजी और संस्कृत का अगाध ज्ञान रखने वाले वुजुर्ग हैं पिल्लै। लेकिन गोपालन पिल्लै से मिलनेवाले लोग कम हैं क्योंकि पिल्लै 'अलमिनार' कार्यालय छोड़कर कहीं वाहर नहीं निकलते।

अबुबक्कर के साथ श्रीधरन 'अलमिनार' कार्यालय भवन के दक्षिण कोने के एक कमरे में गया। दीवारों के शेल्फ में कई मासिक और समाचार पत्रों की जिल्दें रखी थीं। अलमारी भर पुस्तकें थीं। उनके वीच वह आदमी को तत्काल नहीं पहचान सका। कोई एक मेज़ के पीछे की कुर्सी पर बैठा था। छोटे कद का एक दुबला-पतला व्यक्ति। वह एक प्रेस मैटर की जाँच कर रहा था। वास्तव में वह एक पुस्तक-कीट है।

अवूवक्कर ने श्रीधरन का परिचय कराया : "एक युवा कवि। कहानियाँ भी लिखते हैं—नाम सी० श्रीधरन।"

गोपालन पिल्लै के चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। केवल 'हाँ' कहा। (इस 'हाँ' का अर्थ होगा कि इस ढंग के कितने युवा कवि और कथाकार इस देश में मारे-मारे फिर रहे हैं।)

हाथ का कागज उठाते हुए गोपालन पिल्लै ने धीरे से मीठी आवाज में गाया :

"इनियुमेत्र समयं कपियण
इननुदिक्कुवान—सत्यं जयिक्कुवान···"

(अब भी बीतना है कितना समय सूरज के उदय होने को—सत्य की जीत होने को)

"कितना महत्त्वपूर्ण आशय है। कितना महत्त्वपूर्ण प्रतिपादन है। कविता इस ढंग की होनी चाहिए। मैं इन पंक्तियों में कवित्व का यथार्थ बीज देखता हूँ।

"यह किसकी कविता है" अवूवक्कर ने पूछा।

"यह 'अलमिनार' के साहित्य स्तंभ के लिए मिली एक कविता है। इस युवा कवि का नाम पहले नहीं सुना था : एम० मुहम्मद कुंजि···।"

फिर असली कविता के लक्षण के बारे में एक लंबा लेक्चर सुनाया।' लगा कि शेक्सपयर, भवभूति, वी० सी० बाल कृष्ण पणिक्कर, कीट्स, इटपल्लि राघवन पिल्लै और ड्राइडन आदि इस कमरे में बैठकर गीत गाते हैं···"

एक घण्टा बीत गया। साहित्यकार गोपाल पिल्लै के कमरे से बाहर निकलते समय श्रीधरन ने अवूवक्कर से कहा : "मित्र, तुमने गोपाल पिल्लै के बारे में जो बात कही, वह बिलकुल सही है। दस पुस्तकें पढ़ने से जितनी जानकारी प्राप्त होती; उससे कहीं बढ़कर एक घण्टे में ही मुझे हासिल हो गयी···

## 17. केलंचेरी का नाग

केलंचेरी के कुंजिक्केलु मेलान के विनोद, सजधज आदि बिना किसी नियन्त्रण के अधिक शक्ति और विविधता के साथ सम्पन्न होने लगे। हमेशा सुरा, सुन्दरी, दावत और शोर-शराबा!

मेलान की कामक्रीड़ा में सुप्रसिद्ध था 'मुंगेली का खेद्दा।' स्थानीय यूरोपियन बैंक के लंदन हेड आफिस से बैंक की जाँच करने के लिए जो मार्क फेरसन साहब आया था उसका स्वागत करने के लिए ही इस कार्यक्रम की शुरुआत की थी।

मैसूर के खेद्दे (हाथियों को पकड़ना) के प्रबन्ध की तरह इस कार्यक्रम की तैयारी और प्रशिक्षण कई दिनों पहले से शुरू हो जाते थे। कुन्जिक्केलु मेलान के अंगरक्षक लौहपुरुष पोक्कर और चौथे मुख्तार कुन्जाड़ी के तत्वावधान में ही सब कुछ संपन्न हुआ था।

सह्याद्रि की तराई के अन्धकारमय जंगल में स्थित मुंगेली कोनाही इस तरह के खेद्दे के लिए चुनी गयी थी। मुंगेली नदी की चट्टानों और जलाशयों से भरे एक कोने में एक ऊँचे वृक्ष के ऊपर उसकी डालों के बीच घास का एक घर बनाया। वहाँ खाने-पीने और विदेशी शराबों का इन्तजाम किया गया। ये सब सामान बड़ी अलुमिनियम पेटियों में बर्फ के अन्दर रखकर एक हाथी पर चढ़ाकर यहाँ

पहुँचा दिये गये थे।

कुन्जिक्केलु मेलान मार्क फेरसन साहब को शिकार करने के लिए उस जंगल में ले गया था। प्राकृतिक सौन्दर्य से भरे जंगल का कोना, नदी के किनारे के वृक्ष, शिखरों पर ही घास की झोंपड़ियाँ और उसके भीतर की सज-धज देखकर साहब चकित रह गया। शराब के साथ हँसी-मज़ाक करते हुए वे वहाँ ठहरे। दोपहर के भोजन के बाद फ्रूट सलाद खाते समय जंगल से दहाड़ की एक आवाज़ सुनायी दी।

"यह शोर कैसा है ?" साहब ने खौफ के साथ पूछा।

"जंगली हाथियों को ले चलने की आवाज़ है।" कुन्जिक्केलु मेलान ने हँसते हुए कहा।

दस मिनट के बाद उस नदी-तट पर एक झुण्ड उतरा···साहब ने गौर से देखा। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। पूर्ण नग्न सात युवतियाँ। उनमें चार तो ग्रामीण थीं गौर वर्ण की और तीन काली जंगली। बालों और गरदन में पहनी हुई मालाओं से जंगली औरतों को आसानी से पहचाना जा सकता है।

चार ग्रामीण युवतियों के साथ तीन वन-कन्याओं को नदी तट पर छोड़कर लौहपुरुष पोक्कर और उसकी चण्डाल चौकड़ी जंगल में अदृश्य हो गये।

काम के पागलपन से मार्क फेरसन साहब और उसके पीछे कुन्जिक्केलु मेलान अक्ष के पेड़ से नीचे कूद पड़े।

मोहल्ले की तरुणियों की सहायता से उन वन-कन्याओं को कब्ज़े में करने का कार्यक्रम हुआ। मुँगेली नदी की चट्टानों पर, किनारे की घास पर—वृक्षों के नीचे—जंगल के निकुंजों में ये काम-क्रीड़ाएँ शाम के धुँधलके तक लगातार चलती रहीं।

मुँगेली खेद्दा समाप्त कर मेलान और उसके साथी केलंचेरी में जब वापस आये तो आधी रात बीत गयी थी। साथियों ने कुन्जिक्केलु मेलान को कार से उठाकर बेडरूम में ले जाकर शय्या पर पटक दिया था।

साथी बिछुड़ गये थे। लौहपुरुष पोक्कर ने केलंचेरी में ही सोने का निश्चय किया। मुर्गे की पूँछ-सी पगड़ी, शर्ट और बनियान उतारकर, ज़मीन पर घास की चटाई बिछाकर वह लेट गया। कन्धे का हरा बेल्ट और कुठार तकिये के नीचे रख लिये।

गरम रात थी। गरम वातावरण। हवा भी चलती नहीं। गर्मी से नींद हराम थी। पोक्कर को बेहद तकलीफ हुई। उसने कई बातों पर विचार किया। उन विचारों में भी अस्वस्थता थी।

मुँगेली का खेद्दा बहुत ही सफल निकला। कुँजाड़ी मुख्तार ने ही इस योजना का आसूत्रण किया था। उससे ईर्ष्या हुई। एक दिन के इस कार्यक्रम में तीन हजार रुपये खर्च हुए। केलंचेरी का बचा हुआ एक टीला बेचकर जो रकम मिली थी। मेलान ने इसके लिए उसकी आहुति की। इससे कुछ प्रयोजन भी सिद्ध हुआ होगा।

मार्क फेरसन साहब ने बैंक से ओवर ड्राफ्ट के तौर पर उसकी मर्जी के अनुसार रकम केलंचेरी कुंजिक्केलु मेलान को देने की सिफारिश की होगी।

दीवारों के पौधों में से रजनीगन्धा की खुशबू आ रही थी। पोक्कर मुँगेली खेद्दा के पीछे की कुछ विचित्र घटनाएँ याद किए बिना नहीं रह सका। उनमें एक जंगली इन्सान की तड़प सबसे महत्त्वपूर्ण थी। उसने कई आदमियों को मार-पीट कर, गला घोंटकर कुठार से मारा था। लेकिन सिर्फ एक दफा ठोकर मारकर एक इन्सान का कत्ल पहले-पहल ही वह कर सका था। मुँगेली खेद्दा के लिए जंगली औरतों को पकड़ने गया था। जंगल की एक झोंपड़ी से एक लड़की को पुकारकर बाहर लाने पर उसके पिता को कुछ शक हो गया। वह जंगली सड़कों से पीछे आया। जाने को कहा तो भी उसने उसकी न मानी। बेटी को छोड़ने का हठ करते हुए उसने उसका पीछा न छोड़ा। अगर उसको नहीं छोड़ता तो वह आक्रमण करता। ऐसी हालत में पोक्कर ने उसकी नाभि पर ज़ोर से लात मारी। वह गिर पड़ा। थोड़ी देर तक तड़पा। फिर जीभ निकालकर प्राण छोड़ दिये। लड़की रोने लगी तो धमकी देकर कहा : तेरा चुप रहना ही भला है। नहीं तो तेरा भी कत्ल हो जायेगा। फिर वह नहीं रोयी। उसके पिता की लाश खींचकर झुरमुट में डाल दी। आज सियारों के लिए सुनहला दिन होगा। लड़की को लेकर मुँगेली नदी तट पर घुसने के बाद उसे पहले-पहल महसूस हुआ कि उसने पाप किया है। लेकिन इस बात से तसल्ली हुई कि उसने हत्या के उद्देश्य से ठोकर नहीं मारी थी।

इस प्रकार विचारों में लीन होकर रजनीगन्धा की खुशबू का आस्वाद कर पोक्कर सो गया। उसको पता नहीं लगा कितनी देर तक वह सोता रहा। लगा कि किसी ने कन्धे पर थपथपाकर जगा दिया है। आधी खुमारी के साथ हौले से आँखें खोलीं। लगा कि ठण्डी मुलायम कोई चीज़ कन्धे पर चिपकी पड़ी है। तिरछी आँखों से देखा। कन्धे पर दो रत्न जगमगा रहे थे। साँप—केलंचेरी का नाग !

साँप ठण्डी चटाई से रेंगकर उसके कन्धे पर चढ़ बैठा है।

कुठार तकिये के नीचे हैं···ज़रा भी हिला तो सब कुछ घटित हो जायेगा···

पोक्कर आँखें मूँदकर साँस रोककर लाश की तरह लेटा रहा।

दायें हाथ में बंधे यंत्र को छूता हुआ नाग हौले से गरदन पर सरक गया। फिर धीरे से हटकर गरदन को लपेटकर बाँये कन्धे की तरफ बढ़ने लगा। पोक्कर सब कुछ व्यक्त रूप से जान लेता है। रोम-कूपों में ठण्डापन है। शरीर की नसें साँप के रूप में तबदील होकर कलेजे में लिपट रही हैं···

साँप कन्धे से मुड़कर छाती पर आकर लेट गया। वह वहीं रुक जाता है। क्या वह छाती की रूक्ष गन्ध का पान कर रहा है? क्या घास की तरह रोम-भरी

छाती पर खड़े होकर फन फैलाकर नाचने जा रहा है? पल-पल युग की तरह बीत रहे हैं।

ज़िन्दगी की बीती घटनाएँ एक फिल्म की तरह पोक्कर के मस्तिष्क के पर्दे पर दौड़ रही हैं। किसी ने कहा था कि मृत्यु के नज़दीक के पलों में मनुष्य के मस्तिष्क में जिन्दगी की तस्वीरें झिलमिलाती हैं। क्या हृदय की धड़कन मौत के पल की सूचना दे रही है?

नाग छाती से नीचे की तरफ़ गया। फिर पोक्कर की तोंद से लिपट गया। पार्श्व भाग से चटाई की तरफ़ सिर घुमाया तो सर्प का शरीर एक रस्सी की तरह पोक्कर के हाथों, छाती, पेट पर मृत्यु के रोमांच को जगाता हुआ रेंग रहा था। हे प्रभु, क्या इसका कोई अन्त नहीं है? पल पुनः युगों में बदलने लगे···

साँप की पूँछ पोक्कर की तोंद को सहलाती हुई चली गयी···

पोक्कर आँखें बन्दकर लेटा रहा। उसे एक तरह की अजीब शांति महसूस हुई। यादें धुँधली हो जाती हैं।

क्या मैं मर गया?

क्या अन्धकारमय गड्ढे में कयामत के दिनों का इन्तज़ार कर लेटा हूँ?···

केलंचेरी के मुर्गों ने ज़ोर से बाँग दी। भूलोक के एक नये दिन की तुरही बजी।

पोक्कर मुड़कर लेट गया।

सुबह को कन्धे पर दस्तावेज़ों का बंडल लेकर शप्पु पट्टर के जाते समय लौह-पुरुष फाटक के नज़दीक के बरामदे में लेटा सो रहा था।

"लाश—ताड़ी पीकर सो रहा है।" पट्टर ने मन में गाली दी।

## 18. दो नाटक

एक दिन शाम को श्रीधरन ने म्युनिसिपल पब्लिक लाइब्रेरी से घर लौटने पर रेलवे यार्ड के पीछे की छतरी की छड़ी बालन की पुकार सुनी। मुड़कर देखा।

"तुझे ही देखना है···" बालन ने नज़दीक आकर कुछ बड़प्पन से कहा।

"अरे, बालन क्या बात है? सप्पर सफर संघ का नोटिस है क्या?"

"संघ की तो अब तबाही ही हो गयी है न? संघ का कार्यक्रम अब तुम्हारा बड़ा भाई कुन्जप्पु और ठेला गाड़ीवान पेरच्चन और कुली पोर्टर···"

बालन ने अचानक कहना बन्द कर दिया। उसने आँखों से इशारा किया। रेलवे कुली पोर्टर काना गोपालन आ रहा था। वह अपने दोनों हाथों को उठाकर एक पहलवान की शान से आ रहा है।

गोपालन के चले जाने पर बालन ने कहा, "इन बातों के बारे में फिर बता-

ऊँगा। क्या अर्जीनवीस आण्डि के नाटक के बारे में तुमने कुछ जाना है ?"

"नहीं तो !"

"तुम इन बातों को जाने बिना गीत और कविता लिखते हुए पुस्तक पढ़कर चुपचाप रहते हो। सार्वजनिक रूप में तुम्हारे पिता का अपमान करने की साज़िश को भी तुमने नहीं जाना ?"

"क्या ?"

श्रीधरन को बात समझ में नहीं आयी।

बालन ने विस्तार से बताया।

अर्जीनवीस आण्डि ने पैसे इकट्ठा करने के लिए एक प्रीतिभोज करने का निश्चय किया है। उस दिन, रात को एक नाटक का अभिनय भी होगा। सामाजिक संगीत नाटक—नाम है 'अम्मालु परिणयं'। नाटक और गीत केकड़ा गोविन्दन ने लिखे हैं। पणिक्कर के स्कूल में रिहर्सल हो रही है। कल रात बालन रिहर्सल देखने गया था।

"अर्जीनवीस आण्डि और उसका साथी नाटक खेलें। इसमें क्या नुकसान है ?" श्रीधरन ने निस्संग भाव से कहा।

"अच्छा खयाल है—तुम्हारे बाप का सार्वजनिक रूप में अपमान करने की बात मज़े के साथ तुम भी देखोगे, यही न ?"

जब छतरी की छड़ी ने नाटक का कथानक बताया तब श्रीधरन को उसकी गंभीरता मालूम हुई। 'अम्मालु परिणय' दाक्षिणात्यों की हँसी उड़ानेवाला एक नाटक है। (केकड़ा गोविन्दन और अर्जीनवीस आण्डि फिर दाक्षिणात्यों के गुट से अलग होकर दूसरे गुट में शामिल हो गये हैं।) दाक्षिणात्यों का नेता—उसका नाम परमन था—अपनी दुलारी बेटी अम्मालु को पाँच हजार रुपये और एक ठेला भर नारियल के रेशों की चटाई दहेज में देकर उस इलाके के मशहूर घराने में जन्मे बुजुर्ग कण्णन मास्टर से शादी कराने और शादी के बाद आनेवाली मुसीबतों और अनमेल विवाह से होनेवाली झंझटों का वर्णन ही मुख्य कथ्य है। कन्निप्परंपु के कृष्णन मास्टर की प्रतिमूर्ति के रूप में ही अम्मालु परिणयं के वर कृष्णन मास्टर को नाटक में चित्रित किया गया है।

"कण्णन मास्टर की भूमिका अदा करने वाले का नाम तुम्हें मालूम है ?"

"नहीं तो। कौन है ?"

"वह बेवकूफ बढ़ई माधवन।"

श्रीधरन को एकाएक भरोसा नहीं हुआ।

काठ के गोदाम का मालिक भास्करन ही आण्डि के नाटक का संरक्षक है। मालिक के कहने पर 'हाँ' कहने के सिवा बढ़ई को और कोई चारा नहीं था।

श्रीधरन ने नख काटते हुए बड़ी देर तक सोचा कि कैसे उसका सामना कर

सकते हैं ?

नाटक के अन्य पात्रों के बारे में भी बालन ने विस्तार से बताया। नायिका अम्मालु की भूमिका बड़ा गपिया किट्टुण्णि ही लेगा। कोरमीना के कोरप्पन ठेकेदार का लेखापाल फलगुनन परम की भूमिका लेगा। चौकीदार आण्डिक्कुट्टि और दर्जी समिक्कुटिट, मूँछ कणारन आदि और अभिनेता भी होंगे। इक्का गाड़ीवाले अवरानकोया की भूमिका मूँछ कणारन करेगा।

"तुम्हारे पिता कृष्णन मास्टर कितने भले आदमी हैं। उन सुयोग्य शिक्षक पर कालिख लगाने और लोगों को हँसाने की कोशिश करनेवाले केकड़ा गोविन्दन के सिर पर मल की बाल्टी उँडेलना ही उचित है। केकड़ा बिल में ही छिपकर रहता। वह बाहर नहीं आता। अर्जीनवीस आण्डि और उसकी अम्मालुकुट्टि को मैं छोड़नेवाला थोड़े ही हूं। तुम देख लो।"

"बालन, तुम्हारी क्या योजना है ?"

"उस नाटक को मैं बदबूदार बनाऊँगा।"

उस बदबू की सूचना श्रीधरन को नहीं हुई।

श्रीधरन के कान में बालन ने फुसफुसाया : "सफेद चन्दु के छिलके के गड्ढे में मैंने छह खराब अण्डों को गाड़ दिया है। जब अगले रविवार को अम्मालुक्कुट्टि रंगमंच पर आवेगी तब अर्जीनवीस आण्डि और उसके मैनेजर को मालूम होगा।"

"बालन, मैं भी तुम्हारे साथ रहूँगा।" श्रीधरन ने ज़रा जोश के साथ कहा।

"खैर, एक अण्डा तुम फेंक देना" छतरी की छड़ी ने सिर हिलाते हुए कहा। फिर कुछ सोच-विचार कर उसने अपनी राय बदल दी "नहीं, तुम वह काम नहीं करोगे। तुम तमाशा देखकर ठट्ठा मारकर हँसना।" इस कार्यक्रम में इस तरह की एक भूमिका मिलने से श्रीधरन को तसल्ली हुई।

"क्या 'काली बिल्ली' को नहीं बुलाया ?" श्रीधरन ने पूछा।

"काली बिल्ली' एक शादी में भाग लेने कोयंबतूर चला गया है। उसने कहा था कि रविवार से पहले वापस आ जाएगा। उस्ताद से मिलकर यह समाचार बताया था। उस्ताद ज़रूर आएँगे।"

"ऐसी हालत में तो यह सप्पर सफर संघ का ही एक कार्यक्रम है।"

"पर, वह सूअर बढ़ई उस गुट में है। जब वह कृष्णन मास्टर का वेश पहन कर आएगा···"

"छतरी की छड़ी' इस बात पर विचार कर हँसता हुआ कुछ कहे बगैर अलग हो गया।

श्रीधरन अपने घर की तरफ़ चल पड़ा। अगले सप्ताह के कार्यक्रम के बारे में ही वह सोच रहा था।

'बल' दामु के चले जाने के बाद सप्पर सफर संघ निर्जीव अवस्था में पहुँच गया था। उस्ताद वासु को भी दिखाई नहीं देता। सुना है कि उस्ताद चेंगरा मर्दों के बीच शादी करानेवाले मुस्लिम पंचायत क्लब का स्थायी सदस्य बन गया है। सप्पर सफर संघ का कार्यक्रम कुंजप्पु-पेरच्चन-चात्तु-गोपालन कम्पनी ने अपने ऊपर ले लिया है। उनका अड्डा पेरच्चन का घर है। ताड़ी पीकर और ताश खेलकर वे रात काटते हैं। सप्पर सफर संघ के लिए अब एक डेरा भी नहीं हैं। मैकेनिक लक्ष्मणन की अपमृत्यु के बाद मोटी कुंकुच्चियम्मा को उसका भाई कणारन मिस्तरी मुक्कलश्शेरी ले गया। उस घर में अब एक सुनार नंबी ही रहता है। सप्पर सफर संघ के पुनरुद्धार का अवसर मिलने पर श्रीधरन को खुशी हुई। बढ़ई माधवन के संघ से अलग होने का ज़रा दुख भी हुआ।

यों इन्तज़ार की वह रात आ गयी।

रविवार की शाम को छह बजे से नौ बजे तक ही पार्टी है। दस बजे से 'अम्मालु परिणयं' नाटक का कार्यक्रम है। नाटक की टिकटें पहले ही बिक चुकी हैं।

पणिक्कर के स्कूल के विशाल आँगन में एक ओर बेंचों से निर्मित रंगमंच के तीन हिस्से नारियल के पत्तों से ढके हैं। केले के पत्तों और वंदनवारों से रंममंच सुन्दर ढंग से सजा हुआ है। गोपियों के चीरहरण के चित्र का एक स्थायी पर्दा लटका हुआ है। (रेलवे फायरमैन और छुट्टियों में तस्वीर खींचनेवाले कुन्जिरामन ने स्कूल की सरस्वती पूजा के कमरे के सामने लटकाने के लिए ही इस पर्दे को बनाया था।)

नीचे पहली कतार में दाहिनी ओर नाटक के संरक्षक भास्करन मालिक और अन्य आदरणीय अतिथियों के बैठने के लिए एक दर्जन कुर्सियाँ डाली गयी हैं। बायीं तरफ़ चटाई बिछी जगह महिलाओं के लिए सुरक्षित है। पीछे कई बेंचें हैं। बेंचों के पीछे बाड़ तक आम दर्शकों के लिए जगह निर्धारित की गयी थी।

ठीक दस बजे श्रीधरन उस जगह हाज़िर हो गया। स्कूल का आँगन दर्शकों से खचाखच भरा था।

सामने बीच की सीट पर भास्करन मालिक आसीन हैं। उनके नज़दीक एक अरबी है। भास्करन मालिक के विशेष निमन्त्रण से ही अरबी नाटक देखने आया है। (हृष्ट-पुष्ट वह अरबी सिर पर एक सफेद मस्लिन कपड़ा डाले, चोटी पर एक छोटी-सी गाँठ रखकर हाथ में मनका लिये बैठा है।) भास्करन मालिक की बायीं तरफ चाप्पुण्णि अधिकारी का भतीजा रेलवे ठेकेदार कृष्णन कुट्टि बैठा है। कृष्णन कुट्टि के निकट शंकुण्णि कम्पाउण्डर। फिर ताड़ी शाप का मालिक कुन्जय्यप्पन। विशिष्ट मेहमानों के पीछे की कुर्सियाँ खाली नहीं थीं।

जगह न मिलने के कारण भीड़ दोनों तरफ़ जमा हो गयी थी।

श्रीधरन ने पार्श्व की भीड़ में छिपकर सभासदों और सहयोगियों की तरफ़

मिलाप गुमगो । 'छतरी की छड़ी,' बालन और उस्ताद वहाँ दिखायी नहीं ।
ओन्ति के संगीत के साथ ही कार्यक्रम की शुरुआत हुई । आण्डि हारमोनि
... गाने लगा । बाजा बजानेवाले और गीत गानेवाले दूसरे कलाकार भी
... दूर से निमन्त्रण देकर बुलाये गये नये संगीतज्ञ थे ।
... आण्डि ने पहले एक कीर्तन गाया :

"शंभो शिव शंभो—
शंकर महादेवा........."

कि ... कीर्तन की परिसमाप्ति पर बाड़ के नजदीक खड़े किसी ने चिल्लाकर 'व
वह ... आण्डि ने अपने कुछ किकरों को 'वन्स मोर' पुकारने के लिए तैर
छोड़ ...

" ... शंभो..." पुनः दुहराया गया । ताली बजानेवालों में भास्क
"उ... कुन्नि कम्पाउण्डर भी हैं । ताड़ी शाप का मालिक कुन्ज
उस ...

श्रीधरन ... के बाद एक मोटा-ताजा भागवतर आगे बैठ गया । उस
मैंने छह खराब ... गिलास से पानी पीकर 'पनि पनि पनि...गाया', फि
रंगमंच पर आवेग ... पहले सुना कि वह त्यागराज कीर्तन है ।

"बालन, मैं भी ... कीर्तन सुनने का परिणाम होगा, रंगमंच के सामने बैठे
कहा । ... में तीन-चार एक साथ गला फाड़कर रोने लगे । उस

"खैर, एक अण्डा ... मिलने के कारण हिलता-डुलता प्रथम कतार में
कहा । फिर कुछ सोच-विचा... जमीन पर आकर बैठ गया । शराबी रामन को
काम नहीं करोगे । तुम तमाशा ... नहीं की । अगर कोई उसे छू लेता तो वह गाली-
तरह की एक भूमिका मिलने से श्र...

"क्या 'काली बिल्ली' को नहीं ... औरतों को

"काली बिल्ली' एक शादी में भाग...
था कि रविवार से पहले वापस आ ज...
बताया था । उस्ताद जरूर आएँगे ।"

"ऐसी हालत में तो यह सप्पर सफर संघ ...

"पर, वह सूअर बढ़ई उस गुट में है । जब ...
कर आएगा..."

"छतरी की छड़ी' इस बात पर विचार कर हँसत...
हो गया ।

श्रीधरन अपने घर की तरफ़ चल पड़ा । अगले स...
ही वह सोच रहा था ।

का पुत्र अप्पूट्टि है। दूसरे छोकरे का पता नहीं लगा ।)

'बालकों का पार्ट करनेवालों ने रंगमंच पर इधर-उधर चलते हुए 'मान्य सभासदों को प्रणाम,' नामक एक गीत गाया। आखिर सभासदों की वन्दना कर पीछे हटने पर सभासदों में 'वन्स मोर' की पुकार गूँज उठी। लड़के आगे बढ़कर फिर अभिनय गान और वन्दना करके पीछे हट गये।

लगातार तालियाँ बजाने की गड़गड़ाहट गूँज उठी।

गोपिका चीर-हरण का पर्दा नीचे गिराया गया। थोड़ी देर के बाद पर्दे के पीछे से सुनाई पड़ा।

"अम्मालु परिणयं—सामाजिक संगीत नाटक—नाटककार यूलिप्परंबिल गोविन्दन मास्टर…"

(श्रीधरन मन में फुसफुसाया अर्थात् केकड़ा गोविन्दन।)

गीत : श्रीमान यूलिप्परंबिल गोविन्दन मास्टर…

(केकड़ा फिर आ रहा है)

फिर अभिनेताओं की लम्बी सूची सुनायी गई।

श्रीधरन ने उधर ध्यान दिया :

"अम्मालु : नेल्लिप्पुल्लि किट्टुण्णि (बड़ा गपिया)

"परमन : चक्कर कंटी फलगुवन।"

(अरे, बढ़ई माधवन, तू जल्दी आ।)

तब श्रीधरन को किसी ने पीछे से नोचा। चेहरा घुमाकर देखा। बड़ी मूँछ वाला। यह कौन है ? अचानक उसे पहचान नहीं। हँसते दाँतों को देखने पर मालूम हुआ : छतरी की छड़ी, बालन ! मूँछ और पगड़ी बाँधकर बालन वेश बदलकर खड़ा है। रंगमंच पर नहीं, दर्शकों के बीच में। उसके कपड़े के आँचल में खराब अण्डे हैं।

"क्या उस्ताद पहुँच गया है ?"

बेंच की कतार के एक छोर पर बैठे बूढ़े की तरफ़ इशारा करके बालन ने कहा, "बन्दर की टोपी पहने उस आदमी को देखो।"

श्रीधरन ने उस तरफ़ निगाहें घुमायीं। सिर और गाल को टोपी से ढककर, हाथ में एक छड़ी टेककर झुककर बैठे 'बुजुर्ग' उस्ताद को देखने पर श्रीधरन हँसी नहीं रोक सका।

"काली बिल्ली कहाँ है" कोयंबतूर से अभी नहीं पहुँचा है ?"

इतने में बालन भीड़ में ओझल हो गया।

नाटक की शुरुआत हुई।

प्रथम दृश्य : परमन का इक्कावाला अवरान कोया (मूँछ कणारन) प्रवेश कर अपने मालिक और घोड़े का यशोगान मुस्लिम जुबान में करने लगता है।

निगाह घुमायीं। 'छतरी की छड़ी,' बालन और उस्ताद वहाँ दिखायी नहीं दिये।

आण्डि के संगीत के साथ ही कार्यक्रम की शुरुआत हुई। आण्डि हारमोनियम बजाकर गाने लगा। बाजा बजानेवाले और गीत गानेवाले दूसरे कलाकार भी थे। उनमें अधिकांश दूर से निमन्त्रण देकर बुलाये गये नये संगीतज्ञ थे।

अर्जीनवीस आण्डि ने पहले एक कीर्तन गाया :

"शंभो शिव शंभो—
शंकर महादेवा·········"

उस कीर्तन की परिसमाप्ति पर बाड़ के नज़दीक खड़े किसी ने चिल्लाकर 'वन्स मोर' कहा। (आण्डि ने अपने कुछ किंकरों को 'वन्स मोर' पुकारने के लिए तैयार किया था।)

'शंभो शिव शंभो···' पुनः दुहराया गया। ताली बजानेवालों में भास्करन मालिक, अरबी और शंकुण्णि कम्पाउण्डर भी हैं। ताड़ी शाप का मालिक कुन्जंय्यप्पन ऊँघ रहा है।

आण्डि के कार्यक्रम के बाद एक मोटा-ताजा भागवतर आगे बैठ गया। उसने 'तन ना' गाया। चाँदी के गिलास से पानी पीकर 'पनि पनि पनि···गाया', फिर एक कीर्तन भी—किसी ने कहते सुना कि वह त्यागराज कीर्तन है।

शायद भागवतर के कीर्तन सुनने का परिणाम होगा, रंगमंच के सामने बैठी औरतों की गोद में लेटे बच्चों में तीन-चार एक साथ गला फाड़कर रोने लगे। उस समय पेण्टर रामन पीछे जगह न मिलने के कारण हिलता-डुलता प्रथम कतार में बैठे भास्करन मालिक के सामने ज़मीन पर जाकर बैठ गया। शराबी रामन को वहाँ से उठाने की किसी ने कोशिश नहीं की। अगर कोई उसे छू लेता तो वह गाली-गलौज बकता।

तब बढ़ई वेलायुधन ने मालक्कुट्टि, चेरियम्मु आदि हरिजन औरतों को स्त्रियों की पंक्ति में बिठाया। दर्शक रंगमंच के नये गायक कोरुण्णी के गीत सुनकर भाव-विभोर हो गये। उन्होंने तालियाँ बजाकर प्रोत्साहन दिया।

विशिष्ट मेहमानों की कुर्सियों पर उस समय दो व्यक्ति आसीन हुए।

श्रीधरन ने ध्यान से देखा। उसका कलेजा अचानक अनजाने में ही काँप उठा। वे दोनों उसकी प्रथम प्रेमिका के पिता और ट्यूशन मास्टर अष्टवक्रन उण्णिरि नायर थे।

एक घण्टे तक संगीत का आयोजन हुआ।

फिर पन्द्रह मिनट विश्राम के लिए दिये गये।

तमिल नाट्य-संघ के अनुसार ही कार्यक्रम की शुरुआत हुई थी। मुँह पर सफेद रंग पोतकर, सिर पर कागज़ की टोपी पहनकर, लम्बा पेण्ट धारण कर दो लड़के रंगमंच पर आये। (श्रीधरन को मालूम हुआ कि उनमें एक तो कुबड़े वेलु

का पुत्र अप्पूट्टि है। दूसरे छोकरे का पता नहीं लगा ।)

'बालकों का पार्ट करनेवालों ने रंगमंच पर इधर-उधर चलते हुए 'मान्य सभासदों को प्रणाम,' नामक एक गीत गाया। आखिर सभासदों की वन्दना कर पीछे हटने पर सभासदों में 'वन्स मोर' की पुकार गूँज उठी। लड़के आगे बढ़कर फिर अभिनय गान और वन्दना करके पीछे हट गये।

लगातार तालियाँ बजाने की गड़गड़ाहट गूँज उठी।

गोपिका चीर-हरण का पर्दा नीचे गिराया गया। थोड़ी देर के बाद पर्दे के पीछे से सुनाई पड़ा।

"अम्मालु परिणयं—सामाजिक संगीत नाटक—नाटककार यूलिप्परंबिल गोविन्दन मास्टर···"

(श्रीधरन मन में फुसफुसाया अर्थात् केकड़ा गोविन्दन।)

गीत : श्रीमान यूलिप्परंबिल गोविन्दन मास्टर···

(केकड़ा फिर आ रहा है)

फिर अभिनेताओं की लम्बी सूची सुनायी गई।

श्रीधरन ने उधर ध्यान दिया :

"अम्मालु : नेल्लिप्पुल्लि किट्टुण्णि (बड़ा गपिया)

"परमन : चक्कर कंटी फलगुवन।"

(अरे, बढ़ई माधवन, तू जल्दी आ।)

तब श्रीधरन को किसी ने पीछे से नोचा। चेहरा घुमाकर देखा। बड़ी मूँछ वाला। यह कौन है ? अचानक उसे पहचान नहीं। हँसते दाँतों को देखने पर मालूम हुआ : छतरी की छड़ी, बालन ! मूँछ और पगड़ी बाँधकर बालन वेश बदलकर खड़ा है। रंगमंच पर नहीं, दर्शकों के बीच में। उसके कपड़े के आँचल में खराब अण्डे हैं।

"क्या उस्ताद पहुँच गया है ?"

बेंच की कतार के एक छोर पर बैठे बूढ़े की तरफ़ इशारा करके बालन ने कहा, "बन्दर की टोपी पहने उस आदमी को देखो।"

श्रीधरन ने उस तरफ़ निगाहें घुमायीं। सिर और गाल को टोपी से ढककर, हाथ में एक छड़ी टेककर झुककर बैठे 'बुजुर्ग' उस्ताद को देखने पर श्रीधरन हँसी नहीं रोक सका।

"काली बिल्ली कहाँ है" कोयंबतूर से अभी नहीं पहुँचा है ?"

इतने में बालन भीड़ में ओझल हो गया।

नाटक की शुरुआत हुई।

प्रथम दृश्य : परमन का इक्कावाला अवरान कोया (मूँछ कणारन) प्रवेश कर अपने मालिक और घोड़े का यशोगान मुस्लिम जुबान में करने लगता है।

मूँछ कणारन की बातें श्रीधरन को बड़ी पसन्द आयीं।

भास्करन मालिक का अरबी मित्र घोड़े की-सी आवाज़ में हँस रहा था।

दूसरे दृश्य में नायिका अम्मालु का वेश बहुत अच्छा लगा। धारीदार दुपट्टे में ढकी एक काली औरत। टीलों पर खिले फूलों के समान कई आभूषण पहने थे। लेकिन नायिका के मुँह खोलते ही गलतियाँ होने लगीं। किट्टुण्णि वार्तालाप को एकदम भूल गया था। रंगमंच के बाँयें कोने में छिपकर रहनेवाले प्रोम्प्टर की ओर देखकर अब क्या कहना है पूछकर किट्टुण्णि का मुँह मोड़कर देखने, नाक सिकोड़ने और प्रोम्प्टर के डायलॉग ज़ोर से बताने का दृश्य सभासदों ने देखा। किट्टुण्णि की झंझट देखकर लोग हँस पड़े। उनके साथ किट्टुण्णि भी हँसने लगा।

एक सन्दर्भ में सुगंधियम्माल (दर्जी सामिक्कुट्टि) के प्रश्नोत्तरों को याद किये बिना अम्मालु किट्टुण्णि के नाक में उँगली रखकर गूँगे की तरह देर तक खड़े होने पर रंगमंच के निर्देशक वेलुक्कुट्टि गुमास्ता को बेहद दिक्कत हुई। आखिर उसे पर्दा नीचे गिराने का आदेश देना पड़ा।

किट्टुण्णि की बेवकूफी के विपरीत था परमन का पार्ट लेने वाले फलगुणन का प्रदर्शन। स्क्रिप्ट में लिखे और प्रोम्प्टर के कहे अनुसार उसके मुँह से बात नहीं निकलती थी, सन्दर्भ से कोसों दूर रहनेवाली खबरें और हास्य व्यंग्य की बातें परमन फलगुनन बकने लगा। पर सभासदों में कुछ ऐसे लोग थे, जिन्हें उसकी बकवास पसन्द आयी। उन्होंने ताली बजाकर 'वन्स मोर' पुकारा।

इस प्रकार दृश्य एक-एक होकर गुज़रने लगे। बीच-बीच में अर्जीनवीस आण्डि के गानालाप और मूँछ कणारन का स्पेशल कामिक भी होता।

विशिष्ट मेहमानों में चाप्पुण्णि अधिकारी का जामाता और ताड़ी शाप का मालिक कुन्जय्यपन उठकर चले गये। अरबी ऊँघने लगा। लहरों में फँसी नाव के मस्तूल की तरह अरबी के मस्लिन कपड़े का छोर कई भागों में हिलता-डुलता था। यह एक रोचक दृश्य उपस्थित करता। छठे दृश्य में बुजुर्ग वर कण्णन मास्टर रंगमंच पर आया।

श्रीधरन निर्निमेष आँखों से देखने लगा।

कण्णन मास्टर के रंगमंच पर आने पर श्रीधरन अनजाने में ही चौंक उठा। क्या पिताजी एकाएक वहाँ आये हैं? छोटे कद का, सोने का रंग, गले को ढकनेवाला कोट, टोपी, चश्मा—कृष्णन मास्टर का ही प्रतिबिम्ब है। मेकअप वाले दामोदरन मास्टर की अजीब करामात के फलस्वरूप ही इस प्रकार हुआ है। लेकिन उसके पीछे बढ़ई माधवन और केकड़ा गोविन्दन की बदतमीजी है। इस पर विचार करते ही श्रीधरन गुस्से से दाँत कटकटाने लगा।

कण्णन मास्टर बाहर जाने की तैयारी में खड़ा है। तब परमन के मुख्तार पंकजाक्षन (चौकीदार आण्डिक्कुट्टि) ने प्रवेश किया। दोनों के बीच थोड़ी देर तक

बातचीत हुई। दृश्य यही था।

"हलो मिस्टर पंकजाक्षन ! प्लीज़ टेक युअर सीट" कण्णन मास्टर ने अतिथि की अगवानी करके बिठा दिया।

बढ़ई का डायलॉग और अभिनय अच्छा था।

पंकजाक्षन आण्डिकुट्टि ने अपनी दाक्षिणात्य शैली में पूछा, "सर, किधर जा रहे हैं ?"

कंण्णन मास्टर ने अपनी दाढ़ी और ओठ को जरा सहलाते हुए ऊपर की तरफ़ देखकर कहा, "मार्टिन साहब के बंगले पर ट्यूशन···"

एक गोलाकार सफेद चीज़ मास्टर की नाक की तरफ़ उड़ती दिखायी दी···

चश्मा अलग हो गया।

बढ़ई माधवन ने चेहरे पर हाथ रखा। आँखों को दिखाई नहीं देता। आँख और गाल से कोई द्रव नीचे बह रहा है। उसे धोकर सूँघा। नाक सिकोड़ ली।

पंकजाक्षन आण्डिक्कुट्टि मुँह फुलाकर खड़ा रहा।

दर्शकों को मालूम नहीं हुआ कि क्या हुआ है। तभी श्रीधरन ठट्ठा मारकर हँस पड़ा—आठों दिशाओं में गूँजनेवाली हँसी।

अकस्मात् एक और अण्डा हवा में आगे बढ़ा। वह पंकजाक्षन आण्डिक्कुट्टि के सिर पर निशाना चूके बिना फूट गया।

अलहम्दुलिल्लाह—अरबी सिर पर हाथ रखकर उठ खड़ा हुआ—उसके साथ भास्करन मालिक भी।

लोग तितर-बितर होने लगे। वहाँ खामोशी छा गयी। असह्य बदबू।

"हाय ! हाय···बचाओ···"

किसी के गला काटने का-सा चीत्कार सुनाई पड़ा। उत्तर के कोने से ही सुनाई पड़ा।

(श्रीधरन को मालूम हुआ कि वह काली बिल्ली का ही चीत्कार है।)

औरतें बदहवास होकर बच्चों को लेकर घूमने लगीं। बच्चे जोर से रोने लगे। क्या है, कौन है का अन्वेषण कर मर्द दौड़ने लगे।

'कुट्टायी'-'वासु'-'नारायणी'-'अम्मुक्कुट्टि'-'चोयिक्कुट्टि' आदि पुकार कई दिशाओं से सुनाई पड़ी।

पाखाने की-सी बदबू चारों तरफ़ फैल गयी। लोग मुँह बन्द कर बाहर की तरफ़ दौड़ने लगे।

उस भीड़ के बीच से बूढ़ा उस्ताद बेंच से उठ खड़ा हुआ। श्रीधरन ने देखा कि बूढ़े उस्ताद ने अचानक जलनेवाले पेट्रोमेक्स को लक्ष्य कर एक पत्थर मार दिया है। पेट्रोमेक्स तहस-नहस हो गया। फिर चारों ओर अँधेरा फैल गया···

इस प्रकार अँधेरे में—चीत्कारों में—पाखाने की बदबू में 'अस्मान् परिषद्'

को खतम होना पड़ा।

पणिक्कर के स्कूल में 'अम्मालु परिणयं' का अभिनय होते समय अतिराणिप्पाटं से एक मील दूर कुछ लोग और एक नाटक का अभिनय कर रहे थे। लेकिन यह किसी को मालूम नहीं था।

इस नाटक का डायरेक्टर एक्स-मिलिटरी—एक्स फिटर—एक्स कांग्रेस स्वयं सेवक—कुंजप्पु था। अभिनेताओं में कुंजप्पु के अलावा ठेला पेरच्चन, ट्रॉली चात्तु, रेलवे पोर्टर काना गोपालन, भारत माता टी शाप असिस्टेण्ट प्रसारणी 'अप्पु, पेरच्चन का पुत्र कुंजाड़ी और कलाल नारायण थे।

दृश्य : तण्डान केलु का घर का आँगन और बकरी का वाड़ा—पगडंडी—पब्लिक रोड—पेरच्चन का घर—रसोईघर।

शराबी तंडान केलु जाति का महापंडित है। उसने उस इलाके की प्रगतिशील और अपनी हँसी उड़ानेवाली नयी पीढ़ी के खिलाफ अकेले लड़ने की घोषणा की है। इलाके में त्योहारों के समय तण्डान को पहले की तरह पैसे नहीं मिलते। रजस्वला कर्म, कण्ठ में मंगलसूत्र बाँधना आदि पुरानी रस्मों का उल्लंघन हो रहा है। मन्दिरों में त्योहार नहीं होते। दाक्षिणात्यों के साथ प्रीति-भोजन के अलावा शादी भी होने लगी है। तण्डान केलु की शिकायतें इस तरफ थीं। लेकिन वह किसे उलाहना दे? केलंचेरी में अब मुख्तारों का शासन हो गया है। उन्हें तो तण्ड़ान से सख्त नफरत है। खासकर चौथे मुख्तार कुंजाड़ी को। कुछ साल पहले केलु मेलान के ज़माने में एक अहाता तंडान के परिवार के लिए दिया गया था। उस अहाते में अब कुंजाड़ी ने कब्जा कर लिया है। इस प्रकार ऊँचे वर्ग के लोगों ने तंडान की उपेक्षा की है। वह किससे फरियाद करता? इसलिए तंडान केलु मिलनेवालों को गाली बकता है।

'चार पैरोंवाला और आसमान देखनेवाला' कहकर उसने मास्टर की हँसी उड़ायी। कुंजाड़ी को 'काल-कलूटा' पुकारा। उसने कन्निप्परंपु के एक्स फिटर कुंजपु, को भी लुक-छिपकर एक दफा गाली दी। नारायणन को एक मर्तबा मारने-पीटने की कोशिश की।

पेरच्चन के घर में रात को शराब पीने और ताश खेलने के लिए आनेवाले कुंजप्पु चात्तु और अप्पु ने मिलकर सोचा कि वे कैसे तंडान को मज़ा चखा सकते हैं? तब पेरच्चन के बेटे कुंजाडी ने सलाह दी कि तंडान के चापप्न की चोरी कर उसे खाना अच्छा है। चाप्पन तण्डान का एक मोटा-ताजा बकरा है।

उस इलाके का मुखिया होने के कारण उसको जो आमदनी मिलती थी वह तो एकदम बन्द हो गयी। अब उसकी आमदनी का एकमात्र आश्रय वह बकरा है। आसपास के इलाकों में उतना अच्छा बकरा न होने के कारण बकरियों को जोड़ा रखाने के लिए लोग तंडान केलु के चाप्पन का ही मुँह ताकते थे। इस

उत्पादन प्रक्रिया में तंडान अधिक पारिश्रमिक वसूल करता। "तंडान को सबक सिखाने के लिए उस बकरे की चोरी कर उसे खाना चाहिए। योजना तो अच्छी है। पर, कैसे इस योजना को काम में ला सकते हैं? वह बकरा खूँखार है। वह किसी पहलवान को भी पछाड़ सकता है। मालिक केलु और अज-सुन्दरियों से ही वह शान्त होकर बर्ताव करता। रात को शोरगुल बिना कौन उसे ले जा सकता है?" पेरच्चन और चात्तु ने सन्देह प्रकट किया।

"उसको मारना चाहिए, मारकर उसे ले जाना चाहिए।" कुंजप्पु ने कहा। बकरे के मांस के स्वाद की कल्पना करता कुंजप्पु मूँछ मरोड़ता हुआ लार टपकाने लगा।

"कुंजप्पु, यह बायें हाथ का खेल तो नहीं है।" पेरच्चन ने कहा, "तंडान के घर से इस माल को कैसे इधर पहुँचा सकेंगे? सड़क से लाना नहीं होगा, बीट पुलिस होगी। उनकी आँखों में पड़ जाय तो···?"

ऐसा एक खतरा ज़रूर है। ट्रालीचात्तु ने भी स्मरण कराया। चाप्पुण्णि अधिकारी की शिकायत के कारण पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब ने खास बीट पुलिस को सब जगह तैनात किया था।

मुसीबत ही है। फिर भी कुछ न कुछ रास्ता ढूँढ़ निकालना चाहिए।

बकरे के मांस का स्वाद और तंडान केलु से दुश्मनी सबके दिल में कसमसा रही थी।

अचानक प्रसारणी अप्पु के मस्तिष्क में एक तरकीब सूझ गयी। उसने सबको अपनी योजना से अवगत कराया।

सुनते ही कुंजप्पु बकरे की आवाज़ में हँस पड़ा। इस उपाय को बतानेवाले प्रसारणी को बकरे के लिंग को काटकर घी में भूनकर इनाम दिया जाएगा, यह राय ट्रोली चात्तु ने ज़ाहिर की। हमेशा शंकाशील पेरच्चन ने अपनी ठुड्डी पर हाथ रखकर सोचा कि इस कार्यक्रम में कहीं कोई खतरा तो नहीं है।

"चाहे जो भी हो—कल रात को तंडान के चाप्पन का काम तमाम कर देना चाहिए।" कुंजप्पु और चात्तु ने एक ही स्वर में कहा। पेरच्चन ने भी 'हाँ' कहा।

इस कार्यक्रम में सहयोग देने के लिए पोर्टर गोपालन और चाकू सहित कलाल नारायण को भी निमंत्रण देने का निश्चय किया गया। पोर्टर गोपालन एक पहलवान है। चाप्पन से कुश्ती लड़ने के लिए इससे बेहतर आदमी इस इलाके में नहीं मिलेगा।

अगला दिन रविवार : समय आधी रात।

सभी तैयारियों के साथ कुंजप्पु और उसके मित्र पेरच्चन के घर से तंडान केलु के घर को रवाना हुए। रास्ते की सड़क पर बीट पुलिस शक की निगाह से

देखेगी, इस वजह से दो-दो आदमी अलग होकर गये।

पहले पेरच्चन का पुत्र कुंजाड़ी और ट्राली चात्तु गये। कुंजाड़ी के कन्धे पर एक चटाई और चटाई के भीतर रस्सी भी है। ट्राली चात्तु के हाथ में एक मिट्टी का बर्तन है।

उसके पीछे कुंजप्पु और पेरच्चन गये। कुंजप्पु के हाथ में कागज की एक गाँठ है। कपड़ों से लदी नारियल के तेल से गीली चार मशालें भी हैं। पेरच्चन के हाथ में एक थैली है। थैली में एक पुराना कपड़ा है।

तीसरे बैच में प्रसारणी अप्पु और कलाल नारायणन हैं। अप्पु के हाथ में एक टार्च है। नारायणन ने चाकू अपनी कमीज़ के अन्दर छिपा रखा है।

आखिर पोर्टर गोपालन हाथ को जरा ऊपर उठाते हुए छाती फुलाकर एक पहलवान की तरह होले-होले चलने लगा।

ये लोग तंडांन के घर के सामने की पगडंडी पर इकट्ठा हो गये। सीढ़ियां चढ़कर कुंजप्पु ने आँगन में झाँककर देखा। सब कहीं खामोशी है। उसने चढ़ने का निर्देश दिया।

आँगन में बकरी की बदबू ने उनका स्वागत किया। आँगन के दक्षिणी हिस्से में ही चाप्पन का बाड़ा है।

पकड़ने के लिए कुछ लोग आये हैं इसकी सूंघ लगने के कारण होगा कि चाप्पन मिमियाने, पैरों से मारने और इधर-उधर टहलने लगा।

"अरे बदमाश चुप रह" कुंजप्पु ने बकरे को गाली दी।

बोरे की थैली, रेशे की रस्सी और चाकू तैयार कर कुंजाडी, पेरच्चन और नारायणन सावधानी के साथ खड़े रहे। प्रसारणी ने टार्च की रोशनी की। पहलवान गोपालन ने हाथों को दबाकर उसका पिंजड़ा खोल दिया। चाप्पन फुर्ती से अपने सींगों को घुमाकर झपट पड़ा। पेरच्चन बोरे को खोलकर खड़ा था। बकरे का मुँह उसमें फँस गया। फिर बोरे और सींग को ज़ोर से दबाया। पहलवान गोपालन ने चाप्पन की पीठ पर औंधे गिरकर धृतराष्ट्र की तरह उसका आलिंगन किया। कुंजप्पु ने रस्सी से चाप्पन के पैरों को बाँध दिया। कुंजाड़ी ने चाप्पन के गले में तार लटका दिया। सब कुछ फुर्ती से सम्पन्न हुआ। चाप्पन साँस घुटने के कारण तड़पने लगा। इस पराक्रम के बीच नारायणन ने नारियल के गुच्छे को काटने की तरह चाप्पन की गरदन में छुरी भोंक दी। खून बहने लगा। ट्राली चात्तु ने हाथों में मिट्टी की हाँडी पकड़कर उसमें खून जमा किया······

यों चाप्पन का कत्ल किया गया।

इस कर्म के बाद पहलवान गोपालन पसीने से भीग गया। बकरे का खून शरीर पर छिटक गया था। अपना शर्ट उतारकर बकरे को ढका। सब कुछ खतम होने के बाद पुरानी चटाई में बकरे को लिटाकर रस्सी से तीन जगहों पर बाँधा।

कुंजाड़ी और गोपालन सामने, और नारायणन और पेरच्चन पीछे खड़े होकर शव को कन्धे पर ढोकर फाटक से उतरे।

पगडंडी पर पहुँचते ही कुंजप्पु ने मशालों को जला दिया।

बकरे के खून से भरी हाँडी एक हाथ में और जलनेवाली मशाल दूसरे हाथ में पकड़कर ट्रॉली चात्तु और दाहिनी ओर तंडान के आँगन से चुराया हुआ कुदाल पकड़कर प्रसारणी अप्पु शव के आगे-आगे चले। शव को कन्धे पर ढोकर कुंजाड़ी, गोपालन, पेरच्चन और नारायणन 'हरे राम हरे राम राम-राम' जोर से जपते आगे बढ़ रहे थे।

उस अज-विलाप यात्रा संघ के सड़क से कुछ दूर जाने पर, सामने थोड़ी दूर पर दो रूप नज़र पड़े। वे दोनों बीट पुलिस वाले थे।

'हाल्ट'! कुंजप्पु ने साथियों को रोका।

"काला नाग और पुलिस एक समान हैं। वे जोड़ी होकर ही चलेंगे।" अपने यारों से मज़ाक-भरे लहजे में फुसफुसाते हुए कुंजप्पु हड़बड़ी से आगे बढ़ा। उसने पुलिस के सामने जाकर विनम्र प्रार्थना की—"चेचक से मरे हुए एक आदमी को इधर से चटाई से बाँधकर ले जा रहे हैं। आप लोग भयभीत न हों।"

यह सुनने पर पुलिस चौंक उठी। उन्होंने सिर्फ़ एक बार ही उधर देखा। फिर मुड़कर दूर ताकते खड़े हो गये।

सामने मशाल उठाए मरहूम व्यक्ति की उदक क्रिया के लिए इस्तेमाल में आने वाली मिट्टी की हाँडी और लाश के गड्ढे को खोदने के कुदाल का प्रदर्शन कर 'राम-राम-राम' मंत्र जप के साथ, शववाहक संघ चला गया।

उसी समय पणिक्कर के स्कूल के आँगन में 'अम्मालु परिणयं' में कण्णन मास्टर का वेश प्रत्यक्ष हुआ और खराब अण्डों से उन्हें मार खानी पड़ी। इसी संदर्भ में श्रीधरन ठट्ठा मारकर हँस पड़ा।

## 19. अम्मुक्कुट्टि

श्रीधरन ने सितम्बर की परीक्षा में बैठने के लिए फ़ीस अदा की। अपनी यात्राएँ टाल दीं। रात दिन बैठकर पढ़ाई की। सहायता करने के लिए कोई न था। पुराना गणित विशारद मित्र 'चकवा' परीक्षा में प्रथम श्रेणी में पास हो गया और अब वह मंगलपुरम में बी० ए० में भर्ती हो गया है। घर से या बाहर से कोई कितनी ही बातें समझाये लेकिन परीक्षा हॉल में प्रश्न-पत्र के सामने अकेले ही लड़ना होगा।

इम्तहान में इस बार जरूर पास होने का आत्मविश्वास दिन-पर-दिन बढ़ने लगा।

धि ने पुनः धोखा दिया।

शुरू होने के पाँच दिन पहले बुखार आ गया। उसने उसकी परवाह न समझा कि वह सरदी का बुखार होगा। काली मिर्च का काढ़ा पीने लगा। पर, बुखार ने छूटने का नाम नहीं लिया। दूसरे दिन सुबह ही पिताजी पड़ोस के घर में रहनेवाले म्युनिसिपल हस्पताल के डाक्टर रामदास को ले आये। डाक्टर ने जाँच करने के बाद मास्टर को गुप्त रूप में बताया, "उस पर अधिक ध्यान देना होगा। मुझे शक है कि टाइफाइड है।"

बीमारी टाइफाइड में बदल गयी।

परीक्षा के दिन श्रीधरन बिस्तर में लेटा इधर-उधर की बकवास कर रहा था। तीन हफ्ते के बाद ही बीमारी से गला छूटा। फिर तबीयत को सुधारने के लिए पोषक आहार, टॉनिक आदि खरीद देने में पिताजी ने कंजूसी नहीं की। चौदह दिन के बाद तबीयत पूरी तरह सुधर गयी।

आगे क्या करना है?

मार्च-परीक्षा में बैठना चाहिए। (बैठना है या नहीं।)

पिताजी ने कुछ नहीं बताया। लेकिन किसी तरह इण्टर पास होकर बेटे को बी० ए० पढ़ाने का मोह मास्टर के मन में था।

घोड़ावाला घोड़े को पानी के निकट ही ला सकता है। जल तो घोड़े को ही पीना पड़ता है।

मार्च-परीक्षा के लिए दिसम्बर में शुल्क अदा करना चाहिए।

दिसम्बर आने पर उस पर विचार किया जा सकता है।

दिनचर्या में परिवर्तन किया।

शाम को म्युनिसिपल सार्वजनिक ग्रन्थालय में अखबार और मासिक पढ़कर थोड़ा समय बिताता। तीन रुपये जमा करके ग्रन्थालय का सदस्य बना। उपन्यास और कथा-पुस्तकों में उतनी रुचि नहीं थी। दर्शन और संचार साहित्य को चुनता। पाश्चात्य दार्शनिक ग्रन्थ पढ़ने पर अधिकांश बातें मालूम नहीं हुई। लेकिन नये दृष्टिकोण का रास्ता खुल गया। ग्रन्थालय का सदस्य किताबों के साथ मासिक के पुराने अंकों को भी ले सकता है। 'वाइड वर्ल्ड' मासिक के पुराने अंकों को भी नियमित रूप से लिया। अंधकारमय अफ्रीका और लाल भारतीयों के मुल्क दक्षिण अमरीका की साहसिक यात्राओं का अनुभव-कथाएँ बड़ी तत्परता से पढ़ीं। रात को उन अद्भुत मुल्कों का सपना देखा।

कुछ शामों में म्युनिसिपल पार्क में जा बैठता। पार्क कमेटी का सचिव एक जर्मन साहब था। वह म्युनिसिपल बाग को बर्लिन नगर के किसी खास पार्क के रूप में बना देने की कोशिश कर रहा था। रंग-बिरंगे कुसुम, लता-कुंज, रंगों से पुते जाल, धारा की तरह इधर-उधर छलकने वाले क्रोटन पौधे, हरी घास आदि

की वह बड़ी कलात्मक रीति से देख रेख करता था। वह चमन आँखों के लिए एक त्योहार ही है।

पार्क के कोने में बीच-बीच में अलसेशियन कुत्ते के भौंकने की तरह एक हँसी सुन सकते हैं। वह 'अदालत का कवि' नाम से प्रसिद्ध पप्पु भैया का अट्टहास होता।

पद्मनाभन कचहरी का हेड गुमास्ता है। वह पंडित, अविवाहित और हृष्ट-पुष्ट बुज़ुर्ग है। तोंद के ऊपर से एक धोती पहनकर, बेल्ट बाँधकर, सफेद शर्ट और कोट पहनकर वह साहित्य चर्चा के लिए हमेशा पार्क में आकर बैठता। पाँच छह श्रोता और उसके पिट्ठू चारों ओर खड़े होते। पप्पु भैया सरस कवि भी है। वह साहित्य समीक्षक और कुमारनाशान का हिमायती भी है। वल्लत्तोल का विरोधी है। वह वल्लत्तोल कविता की खाल निकालकर दिखाता।

'साहित्यमंजरी' के तीसरे भाग में 'रावण का अन्तःपुर गमन' कविता का एक श्लोकार्ध चट्टानों पर छिलका रगड़ने के स्वर में ज़ोर से गाता :

"वीणा की तंत्रियों को झंकृत करती
सुकुमारी एक अपने कोमल कर से
सान के पत्थर से चन्दन
घिस रही है चलश्रोणी एक।"

"छि:, 'चलश्रोणी' याद करते ही उलटी आती है। वह चलश्रोणी महिला गिनोरिया का शिकार होगी···"

सुनकर सभासद हँसकर सिर हिलाते। तब पप्पु भैया गाल फुलाकर आँखें मूँदकर चुप रहता। सभा की हँसी थम जाती तो 'हौ हौ हौ' अट्टहास गूँज उठता। यों पप्पु भैया अलसेशियन कुत्ते के भौंकने की तरह अट्टहास करता।

चलश्रोणी के कपड़े को उतारकर नंगा करने के बाद 'सिर झुकाकर···एक ओर बैठनेवाली सुन्दरी' नायिका को पकड़कर ले जाता। महाकवि के आदेशानुसार सिर झुकाकर बैठने के लिए लाचार नायिका के कुछ सरकस खेलों का विनोद प्रदर्शन होता।

सभासद हँसने लगते।

वल्लत्तोल को उस दिन की चुटकी देने के बाद आखिर ठट्ठा मारकर हँसता। फिर वह अपनी जेब से एक नयी कविता या समीक्षात्मक लेख हौले से बाहर निकालता। गर्व से ज़ोर से पढ़ता। कविता का विषय अक्सर दार्शनिक होता। समीक्षा में इधर-उधर जहरीले काँटे होते। एक बार एक समीक्षात्मक लेख मे कथकलि से संबंधित एक विद्वान को 'हस्तप्रयोग विशारद मान्य' का विशेषण दिया था।

लता निकुंजों की ओट में बैठकर श्रीधरन सब कुछ सुनता। अदालत-कवि की

बातों में कुछ न कुछ रोचक लगता। वल्लत्तोल को इस तरह नीचा दिखाने की आलोचना क्रूर है—श्रीधरन अपने मन में कहता। क्या कुमारनाशान की कविता में इस प्रकार की त्रुटियाँ और कमजोरियाँ नहीं हैं?

"द्युतिमान शरीर ज़रा नग्न शीतातपादि को उसने किया बर्दाश्त।"

इस छन्द में 'शी' रसोईघर की सब्जी पर जले हुए तेल में राई डालने की आवाज़ की तरह लगता। एक बार चकवा नारायणन नंबियार ने ऐसी राय प्रकट की थी। उसका स्मरण ताज़ा हो गया।

पप्पु भैया के उद्यान साहित्य की दावत पर माली पोक्कन मिस्तरी और एक ईसाई उपदेशक बिलकुल ध्यान नहीं देते। पोक्कन मिस्तरी दोनों पैरों में वातरोग से पीड़ित एक बुजुर्ग है। मिस्तरी एक छिलके में कुछ तेल लेकर पैरों में उसे रगड़-कर पहरेदार के घर के बरामदे में रोनी सूरत के साथ बैठता। उपदेशक तालाब के किनारे 'वाटर टैंक' के नीचे ध्यानमग्न हो बैठता।

कचहरी के दफ्तर के कमरे में काम करने के बीच कभी-कभी पप्पु भैया आशु-कविता बनाकर अपने यारों को हँसाता। उसकी 'आडिटर कविता' मास्टर पीस है। एक बार दफ्तर में आडिटर जाँच करने आया। अचानक पप्पु भैया ने हर एक मुंशी के पास जाकर अपनी आशु कविता कान में फुसफुसायी।

"भादों महीने का कुत्ता और
आडिटर एक समान।
लाल-पेन्सिल को नुकीला कर
इधर-उधर लगे करने पलायन।"

आसमान में बादल देखता तो पप्पु भैया फिर बाहर नहीं निकलता। उसे ठण्डक और बारिश से विरोध है। उस दिन पार्क की साहित्य सभा नहीं होती।

उस दिन की शाम बादलों से ढकी हुई थी। शंका के साथ ही श्रीधरन ग्रन्थालय से पार्क की तरफ़ चला था। पार्क में पहुँचने पर अनुमान के अनुसार पप्पु भैया का कोना सूना था। माली पोक्कन मिस्तरी पैर सहलाते ऊपर देखता बैठा है। (बारिश होने पर बाग को सींचने की क्या ज़रूरत?) उपदेशी ईसाई हमेशा की तरह निःशब्द प्रार्थना में संलग्न होकर वाटर टैंक के नीचे खड़ा है।

श्रीधरन ने घर वापस जाने का निश्चय किया। थोड़ी देर के बाद धूल उड़ाती प्रचंड हवा बज उठी। बरसात होने लगी। बूँदाबाँदी अचानक मूसलाधार वर्षा में बदल गयी। नयी छतरी लेकर श्रीधरन जल्दी-जल्दी से चला।

रेल के मैदान के पास पहुँचने पर बारिश कुछ थम गयी। तभी प्रचंड हवा पश्चिमी दिशा में बज उठी। रेल के मैदान के एक कोने में पहुँचने पर पचास गज की दूरी पर एक युवती को देखा। उसके हाथ की छतरी और प्रचंड हवा के बीच खींचातानी हो रही थी। बायें हाथ से ढेर सारी पुस्तकें छाती से दबाए दाहिने

हाथ की छतरी को बचाने के लिए वह हवा से संघर्ष कर रही थी। वह दुबली-पतली सुकुमारी बायें-दायें और नीचे छतरी पकड़ती हुई हवा का सामना करने लगी। फिर भी हवा छोड़ती नहीं। अचानक छतरी उसके हाथ से खिसक गयी। 'बैलून' की तरह वह आसमान में जा उड़ी। फिर हौले-हौले ज़मीन पर आ गिरी। हवा फिर उसे छीनकर ले गयी। छतरी औंधे मुँह एक कोने में गिर पड़ी। वहाँ से वह फिर उड़ गयी। उड़ते-गिरते और फिर उड़ते हुए वह आखिर कोयले के ढेर पर औंधे मुँह जा पड़ी।

श्रीधरन ने आगे बढ़कर वह छतरी पकड़ ली। तार टूटी और कपड़ा लटकी छतरी गोली के शिकार चमगादड़ की तरह हो गयी थी।

नीली साड़ी के छोर से छाती की किताबों को ढककर बारिश से भीगती हुई वह सामने आ पहुँची। चाँदी के काँटों की तरह ही बारिश की बूँदों से उसकी आँखों और नथ के लाल नग की चमक श्रीधरन के कलेजे में चुभ गयी।

प्रचण्ड हवा थम गयी। लगता है कि उसकी छतरी को तोड़ने के एक मात्र कार्यक्रम के साथ ही वह प्रचंड हवा बज उठी थी।

छतरीवाली की तरफ़ निगाह घुमायी। उसने नीले खद्दर की साड़ी पहनी है। छाती पर ढेर सारी पुस्तकों का बोझ है। नथ है; गले में कोई आभूषण नहीं। हाथ में चूड़ियाँ हैं और पैरों में पायल भी। एक देहाती लड़की।

"इसे ले लो।" श्रीधरन ने धीमी आवाज़ में कहा और अपनी नयी छतरी उसकी तरफ बढ़ा दी।

वह झिझक के साथ खड़ी हो गयी। उसे ज़रा शक भी हुआ।

"छतरी कल लौटा देना।" श्रीधरन ने कहा।

उसने छतरी पकड़कर श्रीधरन के चेहरे की तरफ़ देखा। फिर कुछ कहे बिना मुड़कर चली गयी।

हवा और बारिश थम जाने पर भी आसमान बादलों से ढका हुआ था।

हाथ की छतरी की उत्सुकता से जाँच की। काजू के आम की आकृति में उसकी सेल्युलायड की मूठ थी। (उस छतरी की नायिका का चेहरा भी काजू के आम जैसा है। आम के ऊपर का निशान भी उसके गालों में है।। रत्न की तरह उसकी आँखों की चमक और नथ का नग भी मन में चुभ गये।)

छतरी के कपड़े के एक छोर में लाल धागे से के० ए० ये दो अक्षर कढ़े हुए थे। के० इनीशियल होगा। 'ए' अक्षर से शुरू होनेवाला नाम क्या होगा?—आनन्द वल्ली—अंबुजाक्षी—अम्मिणि···और भी कई नामों का स्मरण किया। देहाती लड़की है। अम्मालु होगी?"···

प्रशिक्षण स्कूल की छात्रा होगी। पुस्तकों का ढेर देखने पर ऐसा लगा।

मोहल्ले के कोने में एक दुकान है। उसके बरामदे में छतरी की मरम्मत करने-

वाले एक बूढ़े मुसलमान के नजदीक पहुँचा। वह काना मुसलमान एक छाते को खोलकर उसे बन्दूक की तरह पकड़े हुए उसके अन्दर की जांच कर रहा था।

उस मुसलमान से श्रीधरन वर्षों पूर्व से परिचित था। उसका पूर्व-इतिहास श्रीधरन जानता था। दस-पन्द्रह वर्ष पूर्व वह अतिराणिप्पाट में हमेशा आता था। कई तरह की छड़ियां, कील, हथौड़ा, स्पानर, तार, काला धागा, सुई आदि सामान एक छोटी-सी थैली में भरकर अपने पेशे के चिह्न की तरह एक छतरी का कपड़ा थैली के ऊपर रखकर "पुरानी छतरी की मरम्मत—पुरानी छतरी···" पुकारते हुए कन्निप्परंपु के नजदीक की पगडंडी से जाया करता।

दो-तीन साल बाद उसने निकाह किया। फिर दहेज की रकम से स्टेशनरी की एक दुकान खोली। चार-पांच सालों के अन्दर व्यापार में अच्छी बरकत हुई। चौराहे के निकट की उस दूकान में सभी प्रकार का सामान भरा हुआ था। सड़क से देखनेवालों के लिए यह एक अच्छा दृश्य था। साबुन, दर्पण, थाली, मिठाई की हँडियें, बाल्टी, हरिकेन लैंप आदि ही नहीं, प्रेस्टस प्लेट बटन से लेकर धागा तक—सभी सामान वहां मौजूद था।

उन दिनों श्रीधरन को एक बिगुल खरीदने की इच्छा हुई। मोहल्ले के कोने में काने की दुकान में जाकर पता लगाया। मालिक ने स्वयं उठकर दीवार पर लगी हुई कार्ड बोर्ड की पेटी से चार इंच लम्बा चमकनेवाला एक लोहे का बिगुल निकालकर बजाया 'फई···डंग हलकी-सी गूंज के साथ बिगुल की आवाज़ सुनाई पड़ी। अचानक मुंह से बिगुल लेकर छिपाते हुए काने ने पूछा—उस पुलिसवाले को तुमने मुड़ते हुए देखा है क्या? यह पुलिस का बिगुल है। पुलिस देखने पर पकड़ लेगी। काने मालिक ने जितना पैसा माँगा, उसे तुरन्त दे दिया। श्रीधरन ने उस पुलिस-बिगुल को ले लिया।

वह उसकी स्टेशनरी की दुकान के मोहल्ले में विजय की बिगुल बजाने वाला जमाना था।

कई साल बीत गये। मालिक के अनावश्यक खर्च से या उसकी बदकिस्मती से व्यापार कम होने लगा। सामान भी कम होने लगा। शीशों की अलमारी खाली हो गयी। इस तरह वह दुकान एक दम खाली हो गयी। किराये के लिए मालिक ने उसे दुकान से निकाल दिया और कर्ज़दारों ने उसकी दुकान के सामान को ज़ब्त कर लिया।

काना मालिक बिना हिचक के अपनी पुरानी छतरियों की धूल पोंछकर मोहल्ले के दूसरे कोने की एक दुकान के बरामदे में बैठकर अपना पुराना पेशा—छतरी की मरम्मत—करने लगा।

वह आज भी वही काम कर रहा है।

के० ए० की फटी छतरी को लेकर श्रीधरन उसी पुराने मालिक के यहाँ खड़ा

था।

"इस छतरी की ज़रा मरम्मत करनी है।" पसलियाँ लटकती छतरी को बढ़ाते हुए श्रीधरन ने कहा।

काने ने छतरी को बन्द कर ज़मीन पर रख दिया। फिर श्रीधरन के चेहरे को देखा।

(फई···वर्षों पूर्व की पुलिस बिगुल की पुकार श्रीधरन के अन्तस् में गूँज उठी।)

क्या उसने सड़क या श्रीधरन की तरफ़ नज़रें घुमायी थीं?

उसने छतरी लेकर उसकी जाँच की। हवा ने कपड़े को उतारने के अलावा तीन-चार पसलियों को भी तोड़ डाला था।

"मरम्मत करके यहीं रखना। मैं कल ले जाऊँगा।

काने ने सिर हिलाया। उसने छतरी मोड़कर वहाँ रख दी। फिर वार के तख्ते के ऊपर अन्य विकलांगों के बीच उसे भी रख दिया।

अगले दिन श्रीधरन लाइब्रेरी के लिए कहकर आठ बजे कन्निप्परंपु से रवाना हुआ।

सुहावनी सुबह थी।

मोहल्ले के कोने में पहुँचने पर काने की दुकान खाली देखी। हे प्रभु, क्या उसने धोखा दिया है? कुछ देर तक उसका इन्तज़ार किया। आधे घण्टे के बाद काना आता हुआ दिखाई दिया। सूखे पत्तों के बीच से काजू के आम की तरह की के० ए० की छतरी थैले में से झाँककर देख रही थी। तसल्ली हुई।

मरम्मत का पारिश्रमिक चार आना देकर छाता लिया और उसे दुलराते हुए जल्दी से रेलवे यार्ड की तरफ चल पड़ा। मैदान में पहुँचकर कोयले के ढेर के पीछे इन्तज़ार किया।

दस मिनट बाद दूर से उसे आते हुए देखा। श्रीधरन की धड़कन बढ़ गयी।

पिछले दिन की नीली साड़ी नहीं है। नारंगी रंग के बार्डर की खद्दर की साड़ी है। ब्लाउज नहीं बदला है। लाल नग जड़ी नथ और कर्णाभूषण धूप में चमक रहे हैं। आम्रवृक्ष के कोपल जैसी उसकी त्वचा का रंग कुछ अधिक गाढ़ा होकर काजू के फल-सा बन गया है। माथे पर सिन्दूर की बिन्दी चमक रही है।

क्या उसके लाल ओठों में मधु मुस्कान का सन्देश छिपा हुआ है? नहीं—चेहरे पर प्रसन्नता या उदासी है? समझ नहीं पाता।

नज़दीक पहुँचने पर के० ए० ने चारों तरफ़ का मुआइना किया। (और कोई भी नहीं है। मैदान के मध्य कोयले के किले के नीचे सिर्फ नायक और नायिका ही हैं।)

हाथ की छतरी को बढ़ाया।

श्रीधरन ने असमंजस में अपना नया छाता उसके हाथ से ले लिया और उसके हाथ में काजू दिये।

(लम्बी खूबसूरत उँगलियाँ—लाल काँच की चूड़ियाँ हाथ में पहनी थीं।)

"शुभ नाम?" श्रीधरन ने शर्माते हुए पूछा।

"अम्मुक्कुट्टि।"

"क्या प्रशिक्षण छात्रा हो?"

'हाँ।'

"कहाँ रहती हो?"

कहने में ज़रा संकोच हुआ। आखिर बताया।

"उनकी कोई रिश्तेदार हो?"

"साली हूँ।"

अचानक श्रीधरन की आँखें आशंकित हो गयीं। पोर्टर केलप्पन और सफेद अय्यप्पन मैदान से इसी ओर आ रहे हैं।

अगर केलप्पन उन्हें देख ले तो?

फिर कुछ कहे बिना हड़बड़ी से आगे बढ़ा। एक दफा मुड़कर देखने का भी हौसला नहीं हुआ।

छतरी को खोलकर देखा। प्रतीक्षा थी—कृतज्ञता के लिए छोटा-सा कोई रूमाल उसके अन्दर रखा होगा। लेकिन उसके अन्दर कुछ भी नहीं था।

वह शुक्रिया का एक शब्द भी नहीं बोल पायी थी।

शायद शुक्रिया अदा करने का संदर्भ न मिलने के कारण ऐसा हुआ होगा।

आगे भी इसी मैदान में देखने और बातचीत करने का अवसर मिलेगा।

उस दिन शाम को सिर्फ आधा घंटा ही उसने लाइब्रेरी में खर्च किया। मन रेल के मैदान में घूम रहा था। स्कूल से वापस आने पर अम्मुक्कुट्टि से मिलना चाहिए। सुबह की बातचीत को पूरा करना चाहिए। कुछ न कुछ हास्य-व्यंग्य की बातें कहकर उसे हँसाना चाहिए। उस चेहरे पर थिरकती एक मुस्कान में जो खूबसूरती है, उसे देखने को मन लालायित है।

(क्या हँसते समय उसके गालों में गड्ढा हो जाता है?)

पुस्तकालय से उतरने पर घने बादलों से वातावरण अंधकारमय दिखाई पड़ा। पार्क में जाने का कोई प्रयोजन नहीं है। अदालत के कवि पप्पु भैया की साहित्य संगोष्ठी होने की आज संभावना नहीं है।

पैर अनजाने ही रेल के मैदान की तरफ मुड़ गए।

समझ गया कि रेल कोलोनी के निकट की छोटी सड़क से ही अम्मुक्कुट्टि स्कूल जाती है। दोनों दिशाओं में फूलों से लदे कई पेड़ थे। लाल रंग की मिट्टी की सड़क की तरफ मधुर प्रतीक्षा लेकर धीरे-धीरे चलने लगा।

पम्पिंग मशीन से बँधे रेल के कुएँ के नज़दीक पहुँचा। सतिवन वृक्ष देखने पर खौफ-सा महसूस हुआ। क्योंकि कुएँ के नज़दीक के सतिवन वृक्ष का अपना एक इतिहास है। लोग उसे 'शैतान सतिवन' ही पुकारते हैं। रेल वे कालो नी कानिर्माण करते समय ऊँचे अफसरों के महलों के लिए उस कोने के दूसरे पेड़ों को काट डाला गया। उस सतिवन को यों ही रखा गया था। कहा जाता है कि उस सतिवन वृक्ष में लकड़हारे की कुल्हाड़ी की मार पड़ने पर उस में से खून निकला था और लकड़-हारा वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा था। उस दिन, रात को कोलोनी-निर्माण का मुखिया खून की उल्टी कर चल बसा था। फिर उस सतिवन में कुल्हाड़ी मारने से मज़दूरों ने मुँह मोड़ लिया। 'नेटिव्स का अंधविश्वास है,' कहकर एक गोरे इंजीनियर ने इस पेड़ को काट डालने का निश्चय किया। फिर कुल्हाड़ी मारी गयी। खून बहने लगा। इन्जीनियर की उस दिन खून की उल्टी से मृत्यु हो गयी। रेलवे अधिकारियों को घबराहट हुई। फिर किसी को इसे काटने का साहस नहीं हुआ। सतिवन वहीं रह गया। सतिवन की डालों से पत्तियाँ गिरकर कुएँ के पानी के मलिन हो जाने पर भी उस शैतान पेड़ को वहाँ से काटकर अलग करने का आदेश आज तक किसी इन्जीनियर ने नहीं दिया।

एक बार एक नाग का, मुँह में एक रत्न दबाये उस सतिवन वृक्ष पर उड़कर पहुँचने का दृश्य उस्ताद वासु के स्वर्गीय रामन दादा ने देखा था।

शताब्दियों पहले लकड़हारों ने सतिवन में जो चोट की थी, उसका निशान दो नागों के फणों की तरह आज भी वहाँ मौजूद है। कुछ भक्त लोग मुर्गी का अण्डा, दूध, मालाएँ आदि लाकर उस नाग सतिवन के नीचे पूजा करते हैं।

तकिये के गिलाफ़-सा निशानों से भरा एक फ्राक पहने सफेद बालों की एक एंग्लो इण्डियन महिला उस रास्ते से चली गयी।

रेल के मैदान के कोने में पहुँचने पर एक अजीब दृश्य दिखाई पड़ा। एक रेल गाड़ी का इंजिन जमीन पर उलटा पड़ा था।

मैदान के कोने में छःफुट की गहराई का एक बड़ा कुआँ और उसके पार्श्व में कुछ मशीनें दिखाई पड़ीं। रेलगाड़ी का इन्जिन उठाकर ले जाने का सामान है। कुएँ के मध्य में निर्मित रेल की पटरी में इन्जिन रुक जायेगा। कुएं के पास की मशीन घुमाने पर कुआं हौले से पहिये की तरह घूमता लगेगा फिर उसके साथ ही रेल की पटरी और इन्जिन मुड़कर सीधे हो जाएँगे।

श्रीधरन उत्सुकता के साथ वह दृश्य देखने के लिए वहां खड़ा रहा।

लाल रंग की साड़ी पहने एक कठपुतली-सी औरत ग्वालिन पोन्नमा नज़दीक से चली गयी। काली और ऊँचे कद के ताड़-सी पोन्नमा लाल साड़ी के आँचल ने छाती और कंधे को ढककर ऊखल की आकृति की एक बड़ी टोकरी को सिर पर लाल साड़ी के टुकड़े से ढककर, कुछ सोचती हुई आगे बढ़ रही है। मिट्टी की हांडी

में दूध-दही भरा है। वह तेलुगू भाषी औरत रेलवे कालोनी में दूध-दही बेचकर वापस आयी होगी।

मशीन का कुआँ घूम गया। उत्तर दिशा में मुँह फैलाए इन्जिन दक्षिण की तरफ मुड़कर रवाना हो गया। लोहे के दाँतों के बीच एक बार चीखने और तीन-चार मर्तबा खाँसने की आवाज़ आयी।

साठ गज़ की दूरी पर मैदान का वह रास्ता उस रेल को काटकर चला जाता है। कुएँ से जब इन्जिन बढ़ा तो ग्वालिन पोन्नम्मा उस संधि में पहुँच गयी। लेकिन वह रेल के उस पार न जाकर पटरियों के बीच से सीधे दक्षिण की तरफ़ चलने लगी।

ड्राइवर ने खतरे को समझकर ब्रेक लगाया। इन्जिन जोंक की तरह घिसट कर रुक गया।

श्रीधरन ने देखा कि इन्जिन के पीछे रेल की पटरी पर पोन्नमा तीन टुकड़े होकर तड़प रही है। टोकरी एक ओर उलट गयी है। मिट्टी की हाँडी टूक-टूक हो गयी है। दूध और दही खून की धारा की तरह बह रहे हैं···

श्रीधरन ने अपनी आँखें फाड़कर देखा और फिर झट आँखें बन्द कर लीं।

लगा कि वहाँ खड़े होने पर वह चक्कर खाकर गिर पड़ेगा। किसी तरह रेल को पारकर दूसरी तरफ़ के रास्ते पर आ पहुँचा। उस दिन वह अर्ध बेहोशी की हालत में ही कन्निप्परंपु पहुँचा।

## 20. पोन्नम्मा

श्रीधरन घर के बरामदे की आरामकुर्सी पर थककर लेट गया।

आँखें बन्द करने और खोलने पर सामने वही भयंकर दृश्य दिखाई पड़ता था—सिर मोड़कर खिसक आनेवाला रेलगाड़ी का इन्जिन—रास्ता पार करने की सन्धि में पहुँची पोन्नम्मा को 'देवी, इधर से इधर से—' का इशारा कर रेल की पटरियों में चलने वाले अदृश्य हाथ—खिसककर आगे बढ़ने वाले यन्त्र-राक्षस के दाँतों में और फिर इस्पात के पहियों में फँस कटकर, तड़प-तड़पकर मरने वाली पोन्नम्मा···मस्तिष्क के पर्दे पर एक मूक चलचित्र की तरह इन दृश्यों का प्रदर्शन होने लगा।

इस अपमृत्यु की तस्वीर से भी बढ़कर श्रीधरन के दार्शनिक विचारों को उद्दीप्त करने वाली इस बात की मृत्यु का शिकार ग्वालिन पोन्नम्मा का गत इतिहास है।

ग्वालिन पोन्नम्मा इस इलाके की मशहूर विलासिनी थी। ऊँचे कद की सुघड़ देह। अंजन का-सा कालापन और सिंदूर की लालिमा से युक्त एक अजीब रंग-

मिश्रण से उस तेलुगु-भाषी कोमलांगी की सृष्टि हुई थी। कमर की खूबसूरती, छाती के उभार की मादकता, अंगों के गठन का सौष्ठव देखने पर ऐसा लगता है कि वह अजंता की दीवारों से सजीव उठ आने वाली एक नर्तकी है। उसका चलना नितंबों का तालात्मक तैरना है। उसके कटाक्ष प्रेम की तलवार की शस्त्र-शिक्षा हैं।

शरीर-सौष्ठव में ही नहीं रति-क्रीड़ा की दक्षता में भी वह अजेय थी।

"पोन्नम्मा दस औरतों की काम-लिप्सा रखती है" एक दफ़ा किट्टन मुंशी ने पोन्नम्मा के बारे में यह राय प्रकट की थी। पोन्नम्मा वेश्या न थी—पैसे के लिए वह सब की काम पिपासा की पूर्ति करने के लिए तैयार न थी। प्रेम में उसके अन्दर अहं भावना थी। अच्छे साहसी मर्दों को वह पसन्द करती। उसी प्रकार ऊँचे अफ-सरों और डाक्टरों के सामने अपनी शस्त्र-शिक्षा का प्रदर्शन करने के लिए भी तैयार थी।

यों दिन में दूध, दही की बिक्री और रात को प्रेम के नाटक से अपने नव यौवन का त्यौहार मनाते समय ही उसे कला विशिष्टता दिखाने का अच्छा मौका मिला। चात्तु कम्पाउण्डर की वर्ष गाँठ के समारोह में यह अपूर्व अवसर मिला था।

कुन्नय्यप्पन और चात्तु कंपाउण्डर दो ऐसे आदमी हैं जो इलाके के लोगों को पानी बेचकर अमीर हो गये हैं। कुन्नय्यप्पन ताड़ी की दुकान चलाता है। चात्तु कंपाउण्डर एलोपैथिक औषधियों की दुकान चलाता है। दोनों मित्र हैं और कंजूस-मक्खीचूस भी हैं। आकृति एवं चरित्र में दोनों में काफी फर्क है। कुन्नय्यप्पन छोटे कद, सिमटी गर्दन एवं छोटा-सा सिरवाला है। भेड़-सा लगता है। वह पीला है। छाती और पीठ के मांस की गाँठें उभर आयी हैं।

चात्तु कंपाउण्डर इसके विपरीत काली-कलूटी, दुबली और भूखों मरने वाली एक बकरी-सा लगता है। वह शर्ट के ऊपर धोती पहनकर हमेशा विरेचन की औषधी पीनेवाले का चेहरा लिये अपनी फार्मेसी के काउण्टर के पीछे सुबह से लेकर रात तक छड़ी की तरह खड़ा रहता है।

चात्तु कंपाउण्डर पेट-दर्द से पीड़ित है। शायद बवासीर की पीड़ा है। गुरुवायूरप्पन से कंपाउण्डर यही प्रार्थना करता था कि भगवान की कृपा से ठीक तरह से विरेचन मिलने के बाद ही वह मर जाय। (कंपाउण्डर हर महीने की अन्तिम तारीख में गुरुवायूरप्पन के दर्शन करने अपनी हरे रंग की शेवरलेट कार में जाता और दो महीनों की मनौती-प्रार्थना एक सफर में करने के बाद वह वापस आता।) वह ठोस चीजें नहीं खा सकता। उसकी गरदन में कोई बीमारी है—लगता है कैन्सर हो गया है।

चात्तु कंपाउण्डर सोलह वर्ष पहले अच्छी तबीयत का और सुन्दरता काम-लोलुप आदमी था। पैत्रिक सम्पत्ति का तीन-चौथाई भाग शराब

औरतों से रति-क्रीड़ा करने में बिगाड़ दिया। फिर वह बीमारी का शिकार हो गया। कम्पाउण्डर के चरित्र और आकृति में खास परिवर्तन होने लगा। उसने बाकी पैसों से एक कोंकणी डाक्टर के नाम पर अंग्रेजी औषधालय खोला। उस औषधालय में धीरे-धीरे बरकत होने लगी। उसी प्रकार कंपाउण्डर के पेट की गड़बड़ी, कंजूसी, ईश्वर-भक्ति और पूजापाठ में भी वृद्धि होने लगी।

साल में एक-दो बार एक नस की बीमारी की तरह कंपाउण्डर के मस्तिष्क में पुरानी-भोग लिप्सा का स्मरण उभर आता। ऐसे अवसर पर वह अपने कुछ यारों को न्योता देकर उन्हें एक अच्छा प्रीतिभोज देता। कंपाउण्डर अपने मित्रों को बड़े मजे से भोजन करते समय वहीं बैठता। डिनर के साथ रति-क्रीड़ाओं का भी बंदोबस्त होता।

चात्तु कंपाउण्डर ने अपनी पचासवीं वर्षगांठ पर अति विचित्र दावत दी। लेकिन फिर इलाके-भर में उसकी खूब चर्चा हुई।

उस रात को वर्षगांठ की दावत में कंपाउण्डर ने कुल पन्द्रह आदमियों को निमन्त्रण दिया था—काठ के गोदाम के मालिक भास्करन के अलावा तीन मालिक, तीन डाक्टर (डाक्टर कोंकणी भी उसमें शामिल है), दो क्रिमिनल वकील, दो मेडिकल रिप्रजेन्टेटिव, केलंचेरी का नौका मुख्तार कुंजाली, भास्करन मालिक का इक्केवान, हेड कांस्टेबिल कुमारन, बैंक कैशियर अप्पुण्णि और ताड़ी शॉप का कुन्नय्यप्पन शामिल थे।

इनमें सिर्फ भास्करन मालिक ने प्रीतिभोज में भाग नहीं लिया था।

फार्मेसी के विशाल मकान के एक कमरे में ही दावत का आयोजन किया था।

खाने-पीने के बाद चौदह मेहमान दावत के दूसरे कार्यक्रम में सक्रिय भाग लेने को तैयार हो गये।

तभी ग्वालिन पोन्नम्मा पर्दे के अन्दर से बाहर आयी।

चात्तु कंपाउण्डर ने क्षमा मांगते हुए मेहमानों से फर्माया, "मान्य बन्धुओ, इस दावत में 'भैंस के मांस' के अलावा कोई 'सामग्री' नहीं है।"

कम्पाउण्डर ने निश्चय किया था कि भोजन केले के पत्ते में ही परोसना चाहिए। पन्द्रह केलों के पत्ते एक कोने में रखे थे। फिर एक शय्या और पोन्नम्मा नाम की एक औरत भी।

बिस्तर पर केले का पत्ता बिछाया गया—'सामग्री' को उसमें लिटा दिया।

नाम के पहले अक्षर के क्रम से एक-एक मेहमान को बुलाया गया।

कुन्नयप्पन को चौदहवाँ पत्ता ही मिला। काम-क्रीड़ा के बाद डेढ़ घंटे तक नौका खेने की थकावट को चेहरे पर दिखाये बिना केले के पत्ते में लेटी पोन्नम्मा ने जोर से चिल्लाकर पूछा, "क्या और किसी के आने की संभावना है?"

पोन्नम्मा का सवाल बाहर होहल्ले में सुनाई पड़ जाता था।

अपराध था।

गोपालन भैया की बिमारी दयनीय अवस्था में पहुंच गयी है। धीरे-धीरे गोपालन भैया को भी मालूम हुआ कि इलाज करने से कोई लाभ नहीं होगा। अन्त में पाणन कणारन से एक होम कराया गया।

शरीर का अधिकांश भाग सूख गया था। मस्तिष्क की नसों में कभी-कभी माया-प्रतिभास होने लगता। रोम-कूप से [illegible] का आना बन्द हो गया था। उनके बदले मस्तिष्क और कर्णरन्ध्रों से कुछ जन्तु बाहर आने लगे।—मकड़ी, बिच्छू आदि विषजन्तु। एक बार गोपालन भैया कान के द्वार से निकल आनेवाली किसी वस्तु को गिराकर उसे नफरत और शोक से ताक रहा था तभी श्रीधरन ने पूछा, "गोपालन भैया आप क्या देख रहे हैं?"

"एक बड़ा मकड़ा!" गोपालन भैया ने आँखें फाड़कर इशारा करते हुए कहा, "वह खोपड़ी से उतरकर कान से बाहर आ पड़ा है।"

"गोपालन भैया के रोग का उपाय यह मकड़ा होगा। वह तो अब निकल गया है न? अब जल्दी स्वस्थ हो जाएँगे......" श्रीधरन ने उसे तसल्ली देने की चेष्टा की।

"अरे, आदमी की हँसी उड़ा रहा है? फौरन उधर से हट जा।" गोपालन भैया ने नाराजी जाहिर करते हुए कहा। (इतने में मस्तिष्क में पूर्व-बोध लौट आया।)

इस ढंग की मानसिक विभ्रांति कुछ पल के लिए ही रहती। फिर सारी बातों की याद ताजा हो जाती। उस समय अपनी दुरवस्था पर विचार कर शून्य में आँखे फाड़कर देख रहे गोपालन भैया को देखने पर श्रीधरन की आँखें भर आतीं। बेचारा! कैसी जिन्दगी है!

गोपालन भैया बीड़ी पीने का आदी था। जब से वह बीमार पड़ा तब से पिता को दिखाए बगैर ही बीड़ी पीता था। आगे चलकर पिताजी के घर रहते समय भी बीड़ी पीने लगा। पीठ फेरकर लेटते हुए छिपाकर पीने लगता। पिताजी नहीं देखने का बहाना करते।

फिर गोपालन भैया हर मिनट बीड़ी पीने का व्यसनी हो गया। जब डाक्टरों और हकीमों ने ताकीद दी कि बीड़ी पीने से मस्तिष्क और अधिक खराब होगा तो बाबूजी ने बीड़ी पीने से मना किया। गोपालन भैया ने उनकी नहीं सुनी। बीड़ी भैया को जागरण और उन्मेष देनेवाली मित्र थी। उसे उसने छोड़ना नहीं चाहा। पिताजी ने उस पर नियंत्रण रखने की सलाह दी। दिन में छह बीड़ियाँ देने लगे। आहिस्ता-आहिस्ता कम करते-करते बीड़ी पीना एकदम छोड़ देना होगा।

गोपालन भैया ने मंजूरी दे दी। लेकिन वह इसे अमल में न ला सका। गोपालन भैया ने एक दिन पच्चीस बीड़ियों का एक पूरा बण्डल फूंक दिया।

तब पिताजी ने कहा कि गोपालन के पास बीड़ी नहीं रखनी चाहिए। बीड़ी

ठीक समय पर देने का कार्य माँ को सौंप दिया।

गोपालन भैया और अधिक बीड़ियों के लिए मौसी से मिन्नत-प्रार्थना करता। कभी-कभी एकछोटे बच्चे के समान रो पड़ता। तब श्रीधरन की माँ का दिल पसीज, जाता और वह एक बीड़ी दे देती।

पिताजी ने एक दिन आँगन की बीड़ियों के टुकड़ों को गिन लिया। बारह टुकड़े थे।

माचिस नहीं है तो कैसे बीड़ी पी? माचिस देने में रोक लगा दी थी। ठीक समय पर रसोई से अंगारा देना है। माँ को चेतावनी दी गयी कि छह दफा से अधिक अंगारा नहीं देना चाहिए।

गोपालन भैया झंझट में फँस गया। हाथ में तो हिसाब से अधिक बीड़ियाँ हैं। उन्हें जलाने की कोई सुविधा नहीं है। पिताजी के आदेश का उल्लंघन करने का हौसला माँ में नहीं था। "गोपालन, तुम अपनी बीमारी से शीघ्र स्वस्थ हो जाओगे। फिर इच्छानुसार बीड़ी पी सकते हो।" मौसी ने वात्सल्य के साथ सलाह दी।

इस तरह एक दिन अंगारों को बाहर फेंके बिना गोपालन ने उसे छिपाकर रखने का निश्चय किया। उसने शैय्या के नीचे ही उसे छिपाए रखा। धूम्रपान के बाद एक खुमारी के साथ आँखें मूंद लीं।

माँ ने किसी ज़रूरत के लिए बरामदे में आने पर गोपालन भैया के बिस्तर मे आग और धुआँ उभरते देखा। घबराहट से किंकर्तव्यविमूढ़ होकर ज़ोर मे चिल्लाने पर ही गोपालन भैया खुमारी से जाग गया था। उस समय श्रीधरन भी घर के बरामदे में पोन्नम्मा की घटना पर विचार करते-करते नींद में मग्न था।

## 21. काला और गोरा

अतिराणिप्पाटं की अम्मालु गोरे रंग की खूबसूरत प्रौढ़ा है। अम्मालु की बूढ़ी माँ कुंजिक्कालि भी कुछ अर्सा पहले एक प्रादेशिक मेनका थी। उनका परिवार परम्परा से ही बदनाम था। (कुंजिक्कालि लम्बे अर्से तक सुनार की रखैल थी।) चर्चा भी थी कि अम्मालु का भी एक पति है। अम्मालु समुद्र-तट पर गोरों की कम्पनी में काम करने के लिए जाती। नारियल के तेल से भरे बालों को गरदन के पीछे बाँध कर, आँखों में काजल लगाकर, माथे पर सिन्दूर की बिन्दी लगाकर कन्धे पर एक टोकरी रख हाथी की तरह झूम-झूम कर चलनेवाली अम्मालु को हर कोई एक बार अवश्य मुड़कर देखता। कम्पनी का गोरा साहब अम्मालु को देखने पर उस पर मोहित हो गया। इसके फलस्वरूप अम्मालु के एक संतान हो गयी। पीली आँखें, तांबे के रंग के बाल और नवजात चूहे के बच्चे का सा रंग। अम्मालु के पाँव ज़मीन पर न पड़ते थे। उसे गर्व हुआ कि अपना पति एक गोरा

साहब है। इसका एक अच्छा प्रमाणपत्र—संतान भी उसको हासिल हो गयी है।

मुन्नी को उसने मीनाक्षी के नाम से पुकारा। मीनाक्षी के बड़े होने पर पुरानी कठपुतली के रंग और वेश में कुछ परिवर्तन होने लगा।

जब मीनाक्षी चौदह वर्ष की हुई, तब से वह अतिराणिप्पाटं की अभिनव मेनका के पद पर विराजमान रही।

उस दिन तड़के पगडंडी पर मीनाक्षी को देखने पर उस्ताद वासु अकस्मात् एक पुराना गीत गाने की साध को रोक न सका। उस्ताद ने कुंजाड़ी के कन्धे पर हाथ रखकर ज़ोर से गाया—

> "माँ के लिए सोने का 'काप्पु'[1]—बेटी को स्वर्ण चूड़ी
> बेटी की बिटिया को एक काँच चूड़ी।
> माँ को नथुनियाँ—बिटिया को बालियाँ
> बेटी की बिटिया को छोटी-सी बालियाँ।
> माँ के पठान है—बेटी के साहब
> बेटी की बिटिया के गोरा है साहब।"

कुंजाड़ी ने गीत के ताल में सीटी भी बजायी। अचानक उस्ताद को लगा कि गीत के साथ एक नाच की भी ज़रूरत है। रेलवे क्लब के साहब और साहिबा की तरह आपस में कमर पकड़ते हुए हौले-हौले कदम रखकर हिल-डुल दोनों नाचने लगे······

उस मुहूर्त में ही एक हाथ में पुस्तकों का ढेर और दूसरे में एक छतरी लेकर कुमारी नलिनी उस कोने में पहुँच गयी। उसने गीत और सीटी सुनी। रास्ता रोककर नाचनेवाले नौजवानों को भी देखा।

नलिनी इस तरह चलती थी मानों रास्ते की सभी युवा आँखें उसकी ओर तीर चला रही हैं। वासु और कुंजाड़ी को देखकर वह सकपकाकर खड़ी रही। फिर चेहरा फुलाते हुए मुड़कर घर की ओर वह वापस चली गयी।

बड़ी बहन का पति भास्करन मालिक अपने गोदाम में जाने की तैयारी में था। नलिनी को स्कूल में गये बिना, रोते हुए वापस आते देखकर भास्करन मालिक ने पूछा "अरे नलिनी तुम स्कूल नहीं गयी ?"

"मैं इस पगडंडी से अकेली नहीं जाऊँगी।" नलिनी फफक-फफक कर रोने लगी।

"बात क्या है ?"

"दो बदमाश लड़कों ने गीत गाते हुए सीटी बजाकर मुझे रोका। मैं··· मैं···(गद्गद् कंठ से वह अपना वाक्य पूरा नहीं कर सकी।)

---

1. एक तरह की चूड़ी

"ये छोकरे कौन थे ? तुम्हें मालूम हुआ ?"

"मुझे नहीं मालूम ।"(नलिनी झूठ बोली । वह वासु को जानती है—फर्नीचर शाप में बढ़ई माधवन से मिलने जो कुंजाड़ी आता है, उससे भी वह वाकिफ है ।)

भास्करन मालिक ने अपने फर्नीचर शाप से बढ़ई माधवन को पुकारकर कहा, "माधवन तू फौरन दौड़कर जा । ज़रा देख तो कि ये बदतमीज़ कौन हैं ।"

रुखानी को नीचे डालकर बढ़ई माधवन पगडंडी की तरफ़ दौड़ गया ।

नाच-गान बन्द कर उस्ताद और कुंजाड़ी कुछ भेद भरी बातें करते हुए आगे बढ़ रहे थे। उस्ताद के साथ कुंजाड़ी को देखकर बढ़ई ज़रा सकपकाया—(भास्करन मालिक के फर्नीचर वर्कशाप से माधवन जिन चीज़ों की चोरी करता था उन्हें बेचकर नकद पैसा उसे कुंजाड़ी ही देता था ।)

बढ़ई ने वापस आकर मालिक से कहा, "दोनों को मैं समझ गया। पोक्कू हाजी का लेखाकार वासु—फिर सेठ के कोलंबिया वर्क्स में काम करने वाला बालन भी'''उस दिन हमारे नाटक में गड़बड़ी पैदा करने वाला वही चार—"

भास्करन ने दाँत चबाते हुए अपनी नाराजी प्रकट की ।

नलिनी उस दिन इक्कागाड़ी में ही स्कूल गयी। (फिर वह हमेशा इक्का-गाड़ी में ही स्कूल जाने लगी ।)

उस दिन शाम को भास्करन मालिक ने एक आदमी भेजकर हेड कांस्टेबिल कुमारन को अपने यहाँ बुलाया। फिर उसने उसे सुबह की घटना सुनायी।

"उन दुष्टों को मज़ा चखाऊँगा" कुमारन हेड ने अपनी मूंछ मरोड़ते हुए कहा ।

शहर से कुछ दूर स्थित एक स्टेशन पर कुमारन हेड की ड्यूटी है। इस मुकदमे का अधिकार क्षेत्र कस्बे में है। कस्बे का हेड कान्स्टेबिल पोक्कन कुमारन हेड का एक पुराना साथी है। भास्करन मालिक ने कस्बे के सर्किल इन्स्पेक्टर के नाम एक शिकायती पत्र लिखाया। उसके बाद कुमारन हेड सीधे कस्बा स्टेशन चला गया ।

'छतरी की छड़ी' बालन की कम्पनी में नाइट ड्यूटी थी। रात को अपना काम कर अगले दिन सुबह घर पहुँचने पर दरवाजे पर एक लाल टोपी उसका इंतजार कर रही थी ।

"करप्पन का बेटा बालन तू ही है क्या ?" पुलिस कान्स्टेबिल ने पूछा ।

बालन ने 'हाँ' के अर्थ में सिर हिलाया। "जी, क्या बात है ?"

"दरोगा साब ने तुझे स्टेशन पर बुलाया है। मेरे साथ आ—"

बालन को घबराहट हुई । नींद हराम होने से थकावट थी। सुबह कुछ भी खाया नहीं था। नहाने के बाद भारतमाता में एक 'घोड़ा बिरियाणी' खाकर दोपहर तक सोने का विचार करके ही वह घर वापस आया था ।

शक के साथ खड़े बालन का हाथ पुलिस वाले ने पकड़ लिया। "अरे, तू जल्दी चलेगा नहीं !"

फिर पुलिस से कुछ पूछने का हौसला नहीं हुआ। उसके साथ वह कस्बा पुलिस-स्टेशन चला गया।

एक घंटे के बाद ही पुलिस स्टेशन से बालन को छोड़ दिया गया।

'लॉक अप' में दो पुलिस वालों ने उसे बेरहमी से मारा-पीटा। वहाँ से छूटने पर नाले के पास पेशाब करने बैठा तो खून का ही पेशाब किया। कई दफा पुलिस ने लाठी से उसकी नाभि पर पिटाई की थी। उसे पहले नहीं मालूम हुआ कि क्यों पुलिस उस पर जबरदस्ती कर रही है ? उसने अंदाज लगाया कि अर्जी-नवीस आण्डि के नाटक में गड़बड़ी करने से ही आण्डि के अभिभावक भास्करन मालिक ने पुलिस को रिश्वत देकर मुझ पर ज्यादती करायी है। "अरे, स्कूल में जाने वाली अच्छे घरों की लड़कियों को देखकर अब कभी अपनी कमर घुमा-फिराकर दिखाएगा ?" यों पूछकर ही पुलिस ने उसकी नाभि पर लाठी से वार किये थे।

वह सपने में भी यह बात नहीं जानता था। लाठी से छाती पर भी मारा पीटा गया था।

बाहर से किसी को भी यह दिखाई नहीं पड़ेगा कि उसको भारी चोट लग थी,. इन लोगों ने उसकी छाती और नाभि की ऐसी दुर्दशा की थी। इन राक्षसों ने मुँह में कपड़ा ठूँसकर ही ऐसी नृशंस हरकतें की थीं।

बालन घर लौट आया। उसका बाप आराकश करप्पन मैसूर के जंगल में काम करने गया था। वह ज्वर का शिकार होकर वापस आया है। वह कमरे के एक कोने में लेटकर काँपने बुदबुदाने लगा।

बालन पलंग पर लेटकर खाँसने लगा। मुँह में खून का स्वाद महसूस हुआ।

यों 'बालन नामक बदमाश' को पुलिस ने पकड़कर 'पंक्चर' बनाकर छोड़ दिया। लेकिन पहले अभियुक्त पोक्कु हाजी के लेखापाल वासु को पुलिस नहीं पकड़ सकी। उस्ताद वासु इस इलाके को छोड़कर कहीं दूर चला गया था।

उस्ताद के लुक-छिपकर फरार होने का कारण दरअसल कुमारी नलिनी के परिहास का मुकदमा नहीं था। उस समय उसके खिलाफ ऐसा कोई अभियान था।

अरबी का पैसा हड़प लेने के बाद ही उस्ताद वासु गायब हो गया था।

वासु का मालिक पोक्कु हाजी पश्चिम समुद्र के उस पार के कुवैत, सोमाली आदि मुल्कों से मलबार तट के व्यापार के लिए आने वाले अरबियों से निकट सम्बन्ध रखने वाले काठ के गोदाम का मालिक है।

खजूर, हींग, सुगंधित गोंद आदि चीजों, टोकरियों आदि को जहाज़ में लादकर

अरबी मलबार के तट पर उतरते। उसके बदले वे इधर से सागवान, शीशम लड़की, लकड़ी की चीजें, काली मिर्च, चन्दन, चाय, बीड़ी, सिगार आदि खरीदकर ले जाते। इसके साथ वे अरबी सोने की तस्करी के काम भी करते। खजूरों की बड़ी गाँठों के अन्दर अशर्फियों को छिपाकर रखते। कस्टम्स अधिकारियों की आँखों में धूल झोंककर और कुछ संदर्भों में नौकरों को रिश्वत देकर किनारों पर पहुँचायी जानेवाली ये अशर्फियाँ पोक्कु हाजी जैसे एजेंट गुप्त रूप में बेचकर रुपया अरबियों को सौंपते। इस काले धन को चोरी-छिपे ले जाने में भी वे कई तरकीबों का प्रयोग करते थे।

गले से पैरों तले तक लटकने वाली कमीज़ और मुंड़े सिर पर टोपी पहनकर चलनेवाले अरबियों को बचपन से ही श्रीधरन खौफ़ के साथ देखता था। उसे अरबी की दास्तानों के काले भूत समुद्र से चढ़ आने की प्रतीति होती। वे अकेले या झुंड में समुद्र-तट और कभी मोहल्लों में घूमते फिरते! कोयले का-सा रंग जोंक के जैसे होंठ, ज़रा चिपटी नाक, छ: फुट से अधिक ऊँचा कद, हाथी सा मोटी देह, ताँबे के बर्तन में पत्थर डालने की-सी कर्कश आवाज़! उनमें अधिकांश लोगों का नाम अहमद है।

काले अरबी गुलाम हैं और गोरे अरबी उनके मालिक!

गोरा अरबी यानी मालिक शेख एक सफेद अंगोछा पहनकर, मस्लिन कपड़े से ढके सिर पर काली रस्सियों की छोटी-सी टोपी रखकर, हाथ में माला लिये, उड़ने वाली आलवस्त्रोस चिड़िया की तरह बैठता।

जहाज से सामान उतारने के बाद काले अरबियों को फिर एक-दो महीने तक कोई काम नहीं होता। वे मोहल्लों में घूमते-फिरते। एक आदमी एक केले का गुच्छा खरीदकर हाथ में उठाता। एक-एक केला तोड़कर हर एक शख्स छिलके सहित खाता। फिर वे हिलते-डुलते आगे बढ़ते। उस्ताद बाबु ने एक दफ़ा मुझसे कहा था कि जहाज में महीनों हिलते डुलते रहने के कारण ही किनारे पर भी वे हिलते-डुलते हैं। इस प्रकार हिलने से ही उन्हें सन्तुलन मिलता है। बच्चे और औरतें उन्हें देखकर भागकर कहीं छिप जाते। बच्चों को खौफ़ है कि ये जंगली अरबी उन्हें पकड़कर खा जाएँगे। ये लोग इलाकों से औरतों को छीनकर जहाज़ में छिपाकर अरब ले जाते। उस्ताद का विचार है कि पुराने ज़माने में ही नहीं, नौबत आने पर अब भी ये ऐसी ही शरारत करेंगे।

पर, काले अरबियों को लम्बी यात्रा में रात-दिन लहू-पसीना एक करना पड़ता। चटाई, पलस्तूर आदि बांधना, भोजन पकाना इन कालों का काम है। ये लोग समय पड़ने पर अपने मालिक के लिए प्राण भी न्योछावर कर देते।

उन काले लोगों के बारे में किसी शेख से उस्ताद ने एक कहानी सुनी थी:

अरब की दुबाई से निबर (मलबार) की तरफ़ जानेवाली एक बड़ी नौका समुद्र

के मध्य की चट्टान पर जरा चढ़ गयी। नाव वहाँ की बालू में फँस गयी। बचने का कोई उपाय न था। शेख और उसके गुलाम मकबरा चट्टानों को देखकर दिन गुज़ारने लगे। यों एक दिन नाव के गुलामों में से अहमद ने आगे बढ़कर शेख से बड़े अदब से मिन्नत की, "बघला (बड़ी नाव) अहमद हिलाएगा। बघला के हिलते ही यात्रा शुरू कर दीजिए। फिर अहमद का इंतजार न कीजिए···।"

यह कहते ही अहमद समुद्र में कूद पड़ा। वह नाव के नीचे छिप गया।

थोड़ी देर के बाद नाव जरा हिली और उभर आयी। मजदूरों ने तुरन्त चटाई फैला दी। नाव सागर में पहुँच गयी।

शेख और काले गुलामों ने मुड़कर पत्थर के नजदीक जल में खून को फैलते देखा। बड़ी आदम खोर मछलियाँ वहाँ घूम रही थीं।

पानी में डूबने के बाद अहमद ने अपनी सारी शक्ति लगाकर नाव का निचला हिस्सा अपनी पीठ से उठाकर हिला दिया। इस जान तोड़ कोशिश में उसको कामयाबी मिली। हालाँकि उस कोशिश में उसकी रीढ़ टूट गयी। उसे अपने प्राणों की कुरबानी करनी पड़ी।

अहमद की दुरवस्था पर विचार करते ही शेख की आँखों से आँसू टपक पड़े।

नौजवान अहमद उस नाव का सबसे मजबूत जवान था। उसका भोजन भी अनोखा था। समुद्र की यात्रा में उसका भोजन मछली में भुना खजूर था। अहमद की खुराक भी बहुत अधिक थी। उसके साथी उसे कोसकर कहते, "अरे, खाने-पीने के लिए ही तेरी सृष्टि हुई है।" शेख भी उसे गाली देता, "अरे मूर्ख, क्या ऊँट के समान तेरे दो पेट हैं? अरे नेवर (मलेबार) पहुँचने के पहले सभी खाद्य वस्तुओं को खाकर तू हम लोगों को भूखों मार देगा?"

अहमद का भोजन उस समय वरदान सिद्ध हुआ। नाव उठाने की शक्ति उसके भोजन से ही उसे मिली थी। शेख के प्राणों को बचाने के लिए उस काले गुलाम ने बिना झिझक अपने प्राणों को कुर्बान कर दिया।

मोहल्लों में घूमते अरबियों को देखकर श्रीधरन अहमद की याद करता। अपनी पीठ पर बहुत बड़ी नाव को ऊपर उठानेवाले और टन की मात्रा में मछली और खजूर खाकर हृष्ट-पुष्ट बने अहमद के शरीर को श्रीधरन समुद्र की आदमखोर मछलियों द्वारा काट-काटकर खाने की कल्पना करता।

अरबी मालिक तस्करी के लिए इन गुलामों को ही भेजते थे। ये अशर्फियों को हलकी रबड़ की थैली में बन्द कर मलद्वार में घुसा लेते। पचास सोने के सिक्कों को यों पेट में घुसाकर रखने की क्षमता रखने वाले लोग भी थे।

कभी-कभी माल को अरब से नाव में भेजने के बाद मालिक हवाई जहाज़ में उड़ आता। हवाई जहाज के आते समय भी इनमें से कुछ लोग सोने की तस्करी करते थे।

भास्करन मालिक का अरबी मित्र अब्दुल ताहा एक बार बम्बई में एक हाथ में सन्दूक और दूसरे में एक टिफिन कैरियर लटकाये हवाई जहाज़ से उतरा।

कस्टम अधिकारियों ने शक से अरबी को रोक लिया। उन्होंने पहले सन्दूक की जाँच की। पेटी के कोने में और उसके अन्दर ज़ब्त करने लायक कोई सामान नहीं मिला। फिर टिफिन कैरियर की ओर इशारा करके एक अधिकारी ने पूछा "यह क्या है ?"

"क्या देखने से मालूम नहीं होता ? मेरा टिफिन कैरियर।" अरबी ने जवाब दिया।

"खोलकर दिखाना होगा।" अधिकारी ने आदेश दिया।

अरबी ने बर्तन का ऊपरी हिस्सा खोलकर दिखा दिया।

भुना हुआ एक मुर्गा।

पुरानी प्रथा पर यकीन करनेवाला अरबी बिस्मिल्लाह पुकारनेवाले मुर्गे का मांस ही खाता। होटल में पकाये मुर्गे के मांस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। इसी से घर से ही तैयार कर साथ लाया।

ठीक तो है।

दूसरी प्लेट में 'चपाती' को रख दिया था। मांस के साथ खाने के लिए तैयार की गयी चपाती।

कस्टम अधिकारी के मस्तिष्क में एक चमक हुई। मोटी चपाती के भीतर अशर्फियाँ होंगी।

नौकर ने काँटे से चपाती के कई कोनों और मध्य में गड़ाकर देखा। दूसरी चपाती की भी जाँच की। फिर भी नौकर ने नहीं छोड़ा। उस टिफिन कैरियर की सभी चपातियों की जाँच करने लगा। लेकिन कुछ भी हाथ न लगा।

तीसरे डिब्बे में प्याज़ और हरे पत्तों की एक सब्ज़ी थी।

कस्टम अधिकारियों ने बड़ी निराशा के साथ अपनी जाँच की समाप्ति की।

अपने पवित्र भोजन की अनावश्यक जाँच से अपमानित और परेशान करने-वाले कस्टम अधिकारियों के अविवेक पर अरबी ने अपनी नाराज़ी और नफ़रत ज़ाहिर की। कस्टम की जाँच में असुविधा और परेशानी होने से कस्टम अधि-कारियों ने हमेशा की तरह खेद प्रकट किया। लेकिन उसका कोई मूल्य न था। उन्होंने एक अभिवादन देकर अरबी को जाने दिया।

बीस हज़ार रुपये मूल्य के तस्करी स्वर्ण के साथ ही कस्टम के जाल से अब्दुल ताहा बाहर आया। उसका टिफिन कैरियर शुद्ध स्वर्ण से ही बनाया गया था।

बारिश के पहले ही अरबी लोग अपने देशी मालों से भरी बड़ी नावों के साथ अरब से रवाना होते। वे वापस जाने के दिनों में सामान को जमा करने की जल्द-बाजी में होते। खड़ाऊँ, रेशे की रस्सियाँ, मूसल, बेंत की छड़ी, बीड़ी, सिगरेट आदि

चीज़ों को चुनकर खरीदने के लिए पोक्कु हाजी वासु मुंशी को ही भेजा करता।

काले गुलाम लोग रेत में बैठकर नाव की चटाइयों के नये टुकड़ों को लेकर सिलाई करते हुए एक साथ गाते।

पोक्कु हाजी के अरबी शेख को अरबी सोना बेचकर जो पैसे मिलते थे, उसे छिपाकर ले जाने के लिए वे सिगरेट टिन का ही इस्तेमाल करते थे। बढ़िया विदेशी सिगरेट टिनों को खरीदकर ऊपर के गोलाकार शीशे का टुकड़ा ब्लेड से काट लिया जाता। फिर सिगरेटों को हटाकर उसके बदले सौ रुपये के करेन्सी नोटों के ढेर को उसके भीतर रखकर सीसे को पहले की तरह रख दिया जाता। पचास सिगरेटों के एक टिन में दस हज़ार रुपये के करेन्सी नोटों को रखा जा सकता है। इन टिनों को खास मार्क कर शिकायती सामान के बीच असली टिनों में रख दिया जाता।

पोक्कु हाजी और हाजी के अरबी ग्राहकों बीच छह-सात वर्ष के परिचय से वासु मुंशी ने उनके व्यापारों की सभी गुप्त बातें समझ ली थीं। उसके साथ ही अरबी सोने की तस्करी की तरकीबें भी उसको मालूम थीं।

इस मौसम में अरबियों के सामानों को खरीदकर तैयार करने की जल्दबाजी में वासु मुंशी ने अपनी अक्ल से काम लिया। उसने मार्क किये सिगरेट टिनों में एक को अलग रख दिया। उसके बदले एक नया टिन वहाँ रख दिया।

अतिराणिप्पाटं के नज़दीक की पगडंडी पर गोरी मीनाक्षी को देखकर कुंजाड़ी की कमर में हाथ डालकर जिस दिन उसने नाच-गान किया, उसी रात को उस्ताद नदारद हो गया।

पोक्कु हाजी ने उसका पता लगाया। वासु मुंशी पिछले दिन घर भी नहीं गया था। कुमारी नलिनी के मुकदमे के अभियुक्त को पुलिस ने कई जगहों पर खोजा। लेकिन वासु कहीं भी दिखाई नहीं पड़ा।

इस प्रकार कुवैत के एक शेख को अपनी तस्करी के सोने के हिसाब में दस हज़ार रुपये और पोक्कु हाजी को एक समर्थ लेखपाल, कुमारी नलिनी के मुकदमें में पुलिस को प्रथम अभियुक्त और अतिराणिप्पाटं के सप्पर सफर संघ को अपने नेता को एक ही दिन में खोना पड़ा।

## 22. रथयात्रा

श्रीधरन 'छतरी की छड़ी' बालन को देखने के लिए उसके घर गया। बरामदे के एक पलंग पर बालन परेशान होकर लेटा था। श्रीधरन को देखते ही उसने चेहरे को ज़रा टेढ़ा कर दिया। अचानक चेहरे से मुस्कान का मुखोटा नदारद हो गया।

"बालन तुम्हें क्या हुआ यार ?" श्रीधरन ने पलंग पर बालन के नज़दीक बैठ-

कर उसे एड़ी से-लेकर चोटी तक निहारने के बाद पूछा। इस घटना की पृष्ठभूमि श्रीधरन समझ लेना चाहता था।

"श्रीधरन, पुलिस ने मुझे ले जाकर इस कदर मेरी दुर्गति की···" बालन ने अपने ओठों को चबाते हुए छाती को सहलाकर शून्य में देखते हुए कहा।

पुलिस स्टेशन की मार-पीट के बारे में बालन ने घर में कुछ नहीं बताया था। उसने घरवालों से सिर्फ़ यही कहा था कि मेरी तबियत ठीक नहीं है। वह छाती और नाभि को सहलाते हुए आँसू पीकर चुपचाप बिस्तर पर लेट गया था।

अन्दर से कराह सुनाई दी। बालन का पिता करप्पन मलेरिया के ज्वर से कराह रहा था। बेचारा म्युनिसिपल दफ्तर से दी गयी कुनैन की गोलियों को निगल कर काँपता पसीने से तर हो रहा था। बीच-बीच में गरम पानी पीते हुए मैसूर के जंगलों को कोस रहा था।

"बालन, तुझ पर पुलिस ने ज्यादती क्यों की थी?" बड़ी सहानुभूति से श्रीधरन ने पूछा।

बालन ने सारी बातें विस्तार में बतायीं। पुलिस के पैशाचिक जुल्मों के बारे में अनुभवी मित्र से सुनने पर श्रीधरन की आँखें गीली हो गयीं। बालन का दुबला पतला कोमल शरीर इस तरह मार-पीटकर तवाह करने का विचार कैसे उन्हें हुआ?

इन्सान का इन्सान-जैसा
निर्दय शत्रु है ही नहीं।
मर्दन वैभव इस ढंग का
नहीं है क्रुद्ध जानवरों में भी।

श्रीधरन के मन में तभी इस तरह का विचार उठा। अचानक इसे बालन को सुनाने की इच्छा हुई। लेकिन उसे नहीं सुनाया क्योंकि वह सोचता कि जब वह दर्द से तड़प रहा है, इसे यह गीत गाने की झूझी है।

"बालन, क्या तुम्हें मालूम है कि किसने तुम्हें पुलिस से पिटवाया था?"

"भास्करन मालिक के सिवा और कौन होगा? उस दिन पणिक्कर के स्कूल के नाटक में पत्थरबाज़ी करने और खराब अण्डों को फेंटकर बदबूदार बनाने के लिए ही उसने यह बदला लिया है।" बालन ने सिर हिलाते हुए कहा।

"भास्करन मालिक ने ही ऐसा कराया था। लेकिन नाटक को बदबूदार करने के कारण नहीं।"

"फिर किस वजह से?"

"भास्करन मालिक की साली नलिनी की हँसी उड़ाकर गीत गाने की वजह से ही तुम्हें दण्ड दिया गया है।"

"क्या मैंने? क्या कहते हो? उस गपिया नलिनी को मैं दुलारने गया था?···"

एक मज़ाक सुनने की तरह बालन दांत निपोरते हुए हँस पड़ा।

"तू हँस ले—बात यही है—भास्करन मालिक के एक आदमी ने झूठी बात कही थी।"

"किसने कही थी ?"

"बदतमीज बढ़ई माधवन ने।"

यह सुनते ही बालन आँखें फाड़कर बैठ गया। श्रीधरन ने विस्तार से बताया—"दरअसल उस्ताद वासु और कुंजाड़ी ने ही उस दिन पगडंडी पर नाच-गाना किया था। नाच गाना नलिनी को देखकर नहीं किया था। अम्मालु अम्मा की लड़की वह सफेद जूं है न ?—मीनाक्षी—उसी को देखने पर उस्ताद को जोश आया था। नलिनी ने भास्करन मालिक से शिकायत की। मालिक ने उन नटखट युवकों का पता लगाने के लिए बढ़ई माधवन को भेजा। माधवन ने अपने नये मित्र और कुंजाड़ी को वहाँ देखा। कुंजाड़ी को बचाने और तुमसे बदला लेने के लिए बढ़ई ने झूठ बताया। उसने कहा कि उस्ताद के साथ सेठ के कोलंबिया वर्कशाप का बालन था। बदमाशों को एक सबक सिखाने के लिए भास्करन मालिक ने कुमारन हेड कान्सटेबिल से विनती की। उस्ताद तो दिखाई नहीं पड़ा! उस्ताद का दण्ड भी तुम्हें ही भुगतना पड़ा !

बालन थोड़ी देर सकपकाकर चुप रहा। फिर उसने लम्बी साँस छोड़ी। पूछ लिया "श्रीधरन, तुम्हें यह सब कैसे मालूम हुआ ?"

"कुंजाड़ी ने ही कहा था। कुंजाड़ी ताड़ी पीने गया तो कलाल माक्कोता से बोला। माक्कोता ने अपनी पत्नी को बताया। अम्मिणी ने कन्निप्परंपु में आने पर माँ से कहा। माँ को पिताजी से कहते हुए मैंने सुना।"

बालन खामोश रहा।

"अब तुम्हें मालूम हुआ कि यह सब बढ़ई माधवन की करतूत है। बढ़ई को ऐसे ही नहीं छोड़ना चाहिए। उसे ज़रूर एक सबक सिखाना है ?"

बालन श्रीधरन की बातें सुनकर मुस्कराया।

"बालन तुम क्यों हँस रहे हो ?"

"खैर, मैं सोच रहा था" बालन ने अपनी दाढ़ी सहलाते हुए कहा, "हमारे सप्पर सफर संघ की बदकिस्मती तो जरा देखो। पहले सफेद जूँ कुंजिरामन चला गया। फिर बैल दामु हमें छोड़कर चला गया। मोटी कंकुच्चियम्मा हमारा पड़ाव छोड़कर गयी। बढ़ई दलबदलू हो गया। अब उस्ताद वासु भी चला गया। और मैं भी इस हालत में इधर पड़ा हूँ..."

"तुम्हारी तबीयत ठीक हो जाएगी। चिन्ता न करो" तसल्ली देते हुए श्रीधरन ने कहा "तुम मालिश करा लो। फिर चौदह दिन तक मुर्गे का काढ़ा पीना होगा।

"मालिश-वालिश !" बालन ने आँगन की ओर नज़र डालते हुए कहा, "मेरे

लिए खर्च करने को पैसे कहाँ है? जिस दिन मैं काम करने न जाऊँ उस दिन परिवार को भूखों रहना पड़ता है।

श्रीधरन कुछ भी कह न सका।

बालन एकाएक खड़ा हुआ। उसे ज़रा जोश आया। उसने दृढ़ स्वर में कहा, "श्रीधरन, हमारे संघ की तबाही नहीं होनी चाहिए।"

"मेरा भी यही आग्रह है।" श्रीधरन ने कहा।

"संघ की एक संकटकालीन बैठक बुलानी चाहिए।

"कौन बैठक-ऐठक बुलाएगा? सचिव तो बढ़ई माधवन है न? वह तो दुश्मनों के गुट में शामिल हो गया है। उस्ताद वासु इलाका छोड़कर चला गया। केलुक्कुट्टि ने कोरमीना के केलप्पन ठेकेदार के साथ तमिलनाडु में डेरा डाल दिया। फिर काली बिल्ली धोबी मुत्तु ही है। उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। बैठक के लिए निमन्त्रण देने पर वह 'हाँ' कहेगा। लेकिन आयेगा नहीं। उसे रात-दिन अर्जेन्ट काम है। उसने लम्बे अर्से के अन्दर संघ के कार्यक्रम में शरीक होकर सिर्फ़ एक ही सेवा की थी। 'अम्मालु परिणयं' नाटक पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए 'हाय रे' चिल्लाकर उसने लोगों को भयभीत किया था। लेकिन उसने इलाके भर में इस बात का प्रचार किया कि उस दिन 'हाय रे' का चीत्कार मैंने किया था।···छतरी की छड़ी बालन बाहर जा भी नहीं सकता। सिर्फ मैं ही एक मात्र सक्रिय कार्यकर्ता हूँ। श्रीधरन ने अन्दाज़ लगाया कि बालन का भी यही विचार होगा।

"हमें एक नये नेता का चुनाव करना चाहिए।" छाती को सहलाते हुए बालन ने कहा।

"सप्पर सफर संघ का नया उस्ताद अब बालन ही है।" श्रीधरन ने अपना विचार प्रकट किया।

"श्रीधरन, मैं उठ भी नहीं सकता। ऐसी हालत में उसके लिए अयोग्य हूँ।" बालन ने अपना सिर हिलाते हुए कहा।

"ऐसी हालत में हम संघ को भंग करें।" श्रीधरन ने कहा।

बालन ने थोड़ी देर तक विचार किया: "भंग करने की ज़रूरत नहीं। आगे श्रीधरन माइनर नहीं, मेजर ही होगा। संघ का नेतृत्व श्रीधरन को ग्रहण करना होगा।"

यह बात सुनने पर श्रीधरन को थोड़ा-सा अभिमान हुआ। हाँ, कुछ आशंका भी हुई—विपत्ति के समय संघ को बचाना मेरा फर्ज है।

अहाते के पौधों को देखते हुए श्रीधरन विचारमग्न हो गया।

"श्रीधरन' क्या सोच रहे हो?" बालन ने पूछा।

"हम एक बात करें। अन्तिम कार्यक्रम के बाद हम संघ को भंग कर दें।" श्रीधरन ने अपनी राय जाहिर की।

"वह कार्यक्रम क्या है।"

"बढ़ई पर आक्रमण करना ही अगला कार्यक्रम है।"

बालन ने खामोशी साध ली।

श्रीधरन ने सहानुभूति के साथ बालन के चेहरे की ओर देखा। श्रीधरन के पिता कृष्णन मास्टर को सार्वजनिक रूप में अपमानित करने से रोकने के वास्ते बालन ने ही 'अम्मालु परिणयं' में रुकावट पैदा की थी। दरअसल उस दिन की हरकत के कारण ही उसे पुलिस की मार-पीट बर्दाश्त करनी पड़ी। आज वह एक ज़िन्दा लाश बन गया है। बढ़ई ही इसका ज़िम्मेदार है। ज़रूर बदला लेना होगा। सप्पर सफर संघ के झंडे के नीचे ही वह काम सम्पन्न करना होगा।

"काली बिल्ली' की मदद नहीं मिलती तो अकेले श्रीधरन को ही वह काम करना पड़ेगा।" बालन ने चेतावनी दी।

"हाँ, मैं तो तैयार हूँ।" श्रीधरन ने बालन से हाथ मिलाया।

अगले रविवार की आधी रात को सप्पर सफर संघ की अन्तिम बैठक बालन के घर पर करने का निश्चय किया गया। श्रीधरन ने बालन से बिदा ली।

यह गुप्त समाचार सिर्फ एक मात्र अनुपस्थित सदस्य काली बिल्ली धोबी मुत्तु को ही देना है।

श्रीधरन के कन्निप्परंपु में वापस आते समय माँ ने कहा, "उस पट्टर ने तुझे बुलाया था।"

श्रीधरन की माँ ने धर्मराज अय्यंगर को ही पट्टर बताया था जो कन्निप्परंपु के पड़ोस में कोरमीना के कोरप्पन ठेकेदार के नये मकान में किराये पर ठहरता था। धर्मराज अय्यंगर रेलवे ट्राफिक सुपरिन्टेन्डेन्ट दफ्तर का नौकर है। वह त्रचिनाप्पल्लि से बदली होकर यहाँ आया है। उसके अलावा बूढ़ी माँ और युवती बहन भी परिवार में थीं। धर्मराज अय्यंगर अविवाहित है।

कन्निप्परंपु के सभी सदस्य उस नये परिवार से परिचित हो गये। उस नौजवान अफसर के प्रति कृष्णन मास्टर के मन में 'इज्जत' का भाव है। धर्मराज अय्यंगर बी० ए० आनर्स प्रथम श्रेणी में पास हुआ था। उच्चारण ज़रा खराब होने पर भी वह अँग्रेज़ी में अच्छी तरह बातचीत करता है। त्रचिनाप्पल्लि के गोरे पादरियों के कालेज से ही उसने मुहावरेदार अँग्रेज़ी सीखी थी। कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन को बताया कि इसी कारण वह अँग्रेज़ी इतने सुचारु ढंग से इस्तेमाल कर सकता है। (इन्टर पास होने पर बी० ए० पढ़ाने के लिए त्रचिनाप्पल्लि में श्रीधरन को भेजने का ख्याल कृष्णन मास्टर के मन में था।)

धर्मराज अय्यंगर की बहन सरस्वती अम्माल एक खूबसूरत युवती है। सोने का रंग, खुला छोड़ने पर पैरों तक लटकते लम्बे बाल, पूर्ण चन्द्र की तरह प्रशान्त ज्योति बिखेरने वाला चेहरा, शरीर पर कोई आभूषण नहीं। सरस्वती अम्माल

विधवा है। पन्द्रहवें वर्ष में उसकी शादी हुई थी । सोलहवें वर्ष में वह विधवा हो गयी। सरस्वती अम्माल की ज़िन्दगी की यही दास्तान है।

दफ्तर से आने पर धर्मराजय्यंगर पुस्तकें पढ़ता। कोननडॉयल, मेरी कोरेली, रैडर होमगार्ड आदि कथाकारों की कृतियाँ रेलवे इन्स्टिट्यूट लाइब्रेरी से लाता। कुछ पुस्तकें श्रीधरन को भी लाकर देता। यों श्रीधरन की अंग्रेज़ी उपन्यास पढ़ने की उत्सुकता बढ़ने लगी। श्रीधरन अय्यंगर के घर नित्य जाता रहता।

एक दिन अय्यंगर ने श्रीधरन से कहा, "श्रीधरन, हर दिन मुर्गी के दो अण्डे चाहिए। बहन के बालों में मलने वाले एक तेल के लिए।

श्रीधरन ने 'हाँ' के अर्थ में सिर हिलाया।

कन्निप्परंपु में श्रीधरन की माँ पाँच-छह मुर्गियाँ पालती है। नित्य चार-पांच अण्डे मिल जाते। उनमें दो सरस्वती अम्माल के कुन्तलों के तेल के लिए रख देती।

श्रीधरन को विश्वास हो गया कि सरस्वती अम्माल के समृद्ध बालों की बढ़ोतरी और चिकनेपन का कारण उन अण्डों के तेल का प्रयोग है। एक दिन श्रीधरन अपनी पढ़ी हुई किताब रैडर होमगार्ड की 'किंग सोलमन्स माइण्ड' वापस करने के लिए गया तो अय्यंगर रसोईघर में था। रसोई से अण्डा भूनने की महक आ रही थी। श्रीधरन ने दरवाज़े में जाकर अन्दर की तरफ़ झाँककर देखा। टर्किश बाथ टावेल लपेटे, जनेऊ पहने एक अर्धनग्न ब्राह्मण अँगीठी के बर्तन में आमलेट पका रहा था। श्रीधरन को देखने पर धर्मराज ज़रा हँस पड़ा। फिर उसने सच्ची बातें खुल्लम-खुल्ला कहीं। वह मुर्गी का अण्डा खाने के लिए खरीदता है। उसे नाश्ते के लिए एक आमलेट अनिवार्य है। सब्ज़ीमंडी से एक पट्टर को अण्डे खरीदते देखकर लोग मज़ाक उड़ाते इसीलिए वह श्रीधरन से मँगाता है।

एक दिन सरस्वती अम्माल ने भी श्रीधरन से एक प्रार्थना की, "कोंच पू कोटुक्कुमा" (ज़रा फूल दे दो)।

फूल सरस्वती अम्माल के बालों में गूँथने के लिए नहीं, बल्कि पूजा करने के लिए थे।

"ज़रूर लाऊँगा" कहकर वह अपने घर की तरफ़ चल दिया।

कन्निप्परंपु में श्रीधरन का बगीचा फूलों से भरा था। कई रंगों के गुलाब, कई रंगों के जासौन, चमेली, मालती आदि खिले हुए थे। वह फूलों को तोड़कर केले के पत्ते के दोने में भरकर सरस्वती अम्माल को हमेशा भेंट करने लगा।

दूसरी मंजिल पर सरस्वती अम्माल का पूजा का कमरा है। (कन्निप्परंपु के दुमंजिले मकान में खड़े होने पर सरस्वती अम्माल पूजा करती दिखाई देती।) धर्मराज जब रसोईघर में आमलेट बना रहे होते हैं, सरस्वती अम्माल ऊपर के कमरे में फूलों से ईश्वर की अर्चना कर रही होती है।

भगवान के चरणों में अर्पित फूलों को सरस्वती अम्माल बालों में

गूँथती है।

श्रीधरन पहले की तरह म्युनिसिपल पुस्तकालय में जाने लगा। अब वह रेलवे कम्पाउण्ड के तंग रास्ते से नहीं जाता। सड़क और पगडण्डी से एक मील का चक्कर लगाकर भ्रमण करता। रेलवे यार्ड से जाने पर उस दिन मरी पोन्नम्मा के माँस के टुकड़े और खून की धारावाले रास्ते को पारकर ही जाना पड़ेगा। उस जगह पर पहुँचने पर सिर चक्कर खाकर गिरने का डर था। रेलगाड़ी की मशीन का शोर और खाँसी सुनने पर मस्तिष्क की नसों में गोलाकार पहिये घूमते से दिखाई पड़ते। अम्मुक्कुट्टि की याद करने पर नथुनी और काँच की चूड़ियों की याद ताज़ा होती। लेकिन इन यादों को पोन्नम्मा का बलिदान एकदम निगल जाता। इन यादों को कुछ पल के लिए ही सही, दूर करने के लिए एक उपाय ढूँढ़ निकाला है: सरस्वती का चेहरा—पूर्णचन्द्र-सा वह चेहरा—शुद्धि, शाँति और दिव्य तेज़ का वह चेहरा—स्त्री तारुण्य के सौन्दर्य को स्वाभाविक रूप में मन में अंकुरित करता। मोह विकार नहीं है। सरस्वती अम्माल को देखते और स्मरण करते समय श्रीधरन के मन में पूर्णमासी के चन्द्रमा को देखने का-सा आनन्द आता। पूर्णिमा तो श्मशान को भी सुन्दर बनाती है।

रविवार की रात आ गयी।

सप्पर सफर संघ की अन्तिम रात! बढ़ई माधवन पर धावा बोलने के लिए निर्धारित एक रात।

बारह बज चुके है।

श्रीधरन उठकर बैठ गया। शर्ट पहनकर सिर पर एक तौलिय बाँध लिया। फिर कटार को कमर में छिपाकर घर के बरामदे में खड़ा रहा।

बाहर अच्छी चाँदनी थी।...पूनम की रात है।

अहाते के नारियल के झुंडों के बीच से चाँदी की-सी ज्योत्स्ना घर के कोनों में बह रही है। उस कोने से ही श्रीधरन को उतरना था।

अचानक श्रीधरन ने सोचा। बरामदे के दूसरे कोने में गोपालन भैया जाग उठा तो...

कुछ दिनों से गोपालन भैया की बीमारी के लिए बड़ा आश्वासन मिल रहा था। अव मस्तिष्क से हिंस्र जन्तु बाहर नहीं निकलते थे।

उसके पैर मुर्दे की हालत में होने पर भी बाकी अंग ठीक तरह से काम कर रहे थे। रुचि के साथ भोजन करता। रात को चैन से सोता। चेहरे का तेज़ भी बढ़ गया था। उस समय अचानक सरस्वती अम्माल की याद आ गयी। तरुणा, खूबसूरत एवं स्वस्थ उस अय्यंगर युवती की ज़िन्दगी ईश्वर की पूजा के लिए ही अर्पित थी... अगर सरस्वती विधवा नहीं होती...गोपालन भैया एक मरीज नहीं होता तो...! गोलापन भैया सरस्वती अम्माल से शादी कर कन्निप्परंपु में खुशी के साथ

ज़िन्दगी गुजार रहा होता पर, यह सब बेसिर-पैर की बातें हैं। गोपालन भैया और सरस्वती अम्माल की बीमारी एवं वैधव्य से छुटकारा पाने पर भी शादी करने के लिए समाज में प्रचलित जाति-व्यवस्था क्या रुकावट पैदा नहीं करती ?···

दुनिया भर में आज़ाद ज़िन्दगी के रिश्तों को बिगाड़ने के लिए ईश्वर और इन्सान एक जुट होकर क्रूर विनोद से षड्यंत्र रचते हैं—सुन्दरी-रत्न सरस्वती अम्माल को वैधव्य से युक्त करने वाला ईश्वर—कोमल शरीर वाले गोपालन भैया को बीमारी से गिरानेवाला निष्ठुर ईश्वर—निरपराधी बालन को मार-पीटकर ज़िन्दा लाश बनानेवाला खूँखार इन्सान···

श्रीधरन सरस्वती अम्माल को अपनी बड़ी बहन की तरह प्यार करता है। श्रीधरन की ज़िन्दगी में कोई बहन नहीं है। जब वह सरस्वती अम्माल के लिए रोज़ कन्निप्परंपु से फूलों को तोड़ने लगता तब एक बहन के लिए सेवा अर्पण करने की खुशी और चरितार्थता का अनुभव करता···

श्रीधरन ने एक कोने के पत्थर पर पैर रखा—फिर वह हक्का-बक्का रह गया —चाँदनी उस कोने में टार्च की सी रोशनी बिखेर रही थी···। चाँदनी को कोसा···ज्योत्स्ना के बारे में लम्बी कविताएँ रचनेवाले श्रीधरन ने चाँदनी को शाप दिया—अब लगा कि जो चाँद कवियों के प्रियंकर है वह प्रेमियों और चोरों के लिए डरावना है।···पूनम के चाँद को देखने पर सरस्वती अम्माल के चेहरे का स्मरण हो आया।

बालन श्रीधरन के इन्तजार में पल गिन रहा होगा।

दीवार पकड़कर सीढ़ियों से हौले से उतरकर बरामदे में पैर रखा···

"श्रीधरन—श्रीधरन—चोर—चोर—!" गोपालन भैया का चीत्कार सुनाई पड़ा।···

बिजली की कौंध की तरह श्रीधरन ठिठक गया।···

बीड़ी पीता गोपालन भैया जागकर बैठा गया। तभी उसने दीवार को पकड़कर उतरते एक 'चोर' को देखकर जोर से शोर-गुल मचाया।

वह निर्णायक पल था। अब गोपालन भैया की शरण लेने के सिवा खतरे से बचने का और चारा न था।

"गोपालन भैया डरो मत—यह मैं हूँ।"

कौन···? तुम ?—श्रीधरन···?"

गोपालन भैया की पुकार सुनकर भीतर से पिताजी की "अरे क्या है गोपालन ? घबरायी हुई पुकार और दरवाजा खोलने की अवाज सुनाई पड़ी।

"जल्दी उस तरफ जाकर छिप जाओ···" बीड़ी का टुकड़ा आँगन में फेंककर गोपालन भैया ने सचेत किया।

श्रीधरन रसोईघर के पीछे के आँगन-की तरफ़ दौड़ गया।

"गोपालन, तुम चिल्लाये क्यों थे ?" बरामदे में पिताजी पूछ रहे थे।

श्रीधरन रसोईघर की दीवार के निकट से कान खड़ा कर सुनने की कोशिश कर रहा था। गोपालन भैया क्या कहेंगे ?—श्रीधरन का कलेज ज़ोर से धड़कने लगा।

"गोपालन चोर को देखकर ही चीखा था न ? चोर कहाँ है ?" माँ की धीमी आवाज़ सुनाई पड़ी। (पिताजी के पीछे माँ भी बरामदे में पहुँच चुकी थी।)

"मैं नींद में कुछ देखकर डर गया था—" गोपालन भैया का मृदु स्वर सुनाई पड़ा।

श्रीधरन ने तसल्ली के साथ छाती को सहलाते हुए एक लम्बी साँस छोड़ी। ईश्वर ने मुझे बचा लिया।

नहीं, पूरी तरह नहीं बच पाया है। अगर घर के बरामदे में सोये श्रीधरन को पिताजी पुकारें तो···? यह चीत्कार और शोर-शराबा सुनकर भी छोकरा उठा क्यों नहीं ?

पुकारने पर वह नहीं सुनेगा। वहाँ जाकर देखने पर बिस्तर पर दिखाई भी नहीं देगा। श्रीधरन नाजुक स्थिति में था।

पिताजी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर के बरामदे में आकर श्रीधरन के बिस्तर को खाली देखें फिर··· पिताजी को रात की सैर का भेद मालूम हो जायगा। श्रीधरन सोच भी नहीं सकता। मार-पीट खाने का तो अधिक खौफ़ नहीं है लेकिन पिताजी को गलतफहमी हो जाएगी। कुंजप्पु की तरह क्या यह छोकरा भी बदमाश लड़कों के साथ ताड़ी पीने और किसी की झोपड़ी में घुसने लगा है ? अगर पिताजी के मन में कोई गलत विचार आ जाय तो उसे दूर करना आसान नहीं है।

किसी न किसी तरह ऊपर के बरामदे में पहुँचकर अपने को बचाना है।

कमर में छिपाये चाकू को लेकर बंद रसोईघर के द्वार से चाकू को घुमाया। निचले हिस्से को छूकर कुंडी को ऊपर उठाया।

उस्ताद वासु ने एक बार इस तरकीब को बता दिया था। पहली बार वह इसकी जाँच कर रहा है। परीक्षण में सफलता हासिल हुई। दरवाज़ा हौले से खुल गया।

(दरवाज़ा खोलते समय दरवाज़े की चरमर न सुनाई दे इसके लिए दरवाज़े के नीचे थोड़ा-सा पानी छिड़कने की बात भी उस्ताद ने कही थी।)

रसोई से दहलीज में जाकर बिल्ली की तरह चुपचाप सीढ़ियाँ चढ़कर कुण्डी हटा सीढ़ी के दरवाजे को खोल वह बरामदे में पहुँच गया। शर्ट और तौलिया बिस्तर पर फेंक जोर से पुकारने लगा, "माँ, माँ सीढ़ी का दरवाज़ा खोल दो !"

माँ ने आकर दरवाज़ा खोल दिया।

"गोपालन भैया क्यों चीखे थे ?" श्रीधरन ने आँखें पोंछते हुए पूछा ।

"गोपालन नींद में चोरों को देखकर डरने के कारण चीखा था ।" माँ ने जवाब दिया ।

बरामदे में जाने पर पिताजी को नहीं देखा । वे फानूस जलाकर संदेह दूर करने के लिए अहाते का कोना-कोना देख रहे थे । हाथ में एक छड़ी भी पकड़ रखी थी ।

पिताजी के इस भोलेपन पर श्रीधरन को हँसी आ गयी । गोपालन भैया भी मुस्कराने लगा ।

"तुम लोग यों हँसी-मज़ाक न करो ।" माँ ने ज़रा बड़प्पन दिखाते हुए कहा, "तीन-चार दिन पहले ही अम्मिणि के आँगन में रखे एक ताँबे के बर्तन की चोरी हुई है ।"

पिताजी को कोई नहीं मिला । वे फानूस और छड़ी लेकर बरामदे में लौट आये ।

"श्रीधरन तू आज गोपालन के साथ बरामदे में लेट जा ।" पिताजी ने आदेश दिया ।

श्रीधरन ने ऊपर के कमरे से बिस्तर, तकिया आदि लेकर बरामदे में गोपालन भैया के नज़दीक बिछा लिया ।

फानूस को ज़रा नीचे कर गोपालन भैया के सिरहाने रख दिया । माँ-बाप ने अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया ।

श्रीधरन लेट गया ।

खतरा पूरी तरह टला न था । गोपालन भैया मुकदमे की कैफियत तलब करेगा । एक ही तसल्ली है । थोड़ी देर पहले माफी देकर मुझे गोपालन भैया ने ही बचाया था ।

"श्रीधरन !" गोपालन भैया की माधुर्य-भरी आवाज़ ।

"क्या है भैया ?"

"तुम कैसे ऊपर पहुँच गये ?"

चाकू से कुण्डी को हटाकर रसोईघर का दरवाज़ा खोलकर भीतर घुसने का किस्सा श्रीधरन ने विस्तार से कह सुनाया ।

"इस तरह की हरकतें तुमने कब सीखी थीं ?"

श्रीधरन ने चुप्पी साध ली ।

"ज़रा वह चाकू दिखाओ ।"

श्रीधरन ने वह चाकू गोपालन भैया को दिया । गोपालन भैया ने उसे अपने पास रख लिया ।

"रात की यह सैर शुरू हुए कितना अर्सा हो गया ?"

श्रीधरन ने कुछ भी छिपाकर नहीं रखा। 'सप्पर सफर संघ' के माइनर के रूप में शामिल होने की बात बतायी। आखिरी कार्यक्रम के बारे में चुप्पी साध ली।

"तुम ऊपर से उतर रहे थे न ? मैंने सोचा था कि तुम शिकार के बाद लौट रहे थे..."

गोपालन भैया के 'शिकार' शब्द के प्रयोग में बुरा अर्थ स्फुरित हुआ था।

थोड़ी देर तक खामोशी छा गयी।

"श्रीधरन, क्या तुमने इस बात पर कभी विचार किया कि इन सफरों के कारण तुम्हारी ही जिन्दगी की तबाही होगी ?

भैया, मैं हमेशा रात को इस तरह बाहर नहीं निकलता। दो-तीन महीनों में सिर्फ एक बार..."

गोपालन भैया ज़रा कराहने लगा।

शायद गोपालन भैया ने समझा होगा कि सदाचार के विपरीत कुछ करने के लिए ही श्रीधरन इस तरह रात को छिपकर जाता है। पर उसने कुछ नहीं पूछा। कुछ पूछे बिना गोपालन भैया से कुछ कहने पर गलतफहमी होगी, इसलिए श्रीधरन चुपचाप रहा।

आँगन और अहाते में चाँदनी छिटकी हुई थी। शौचालय के नज़दीक के पौधों का झुरमुट चाँद का अभिवादन कर रहा था।

अचानक श्रीधरन ने 'छतरी की छड़ी' बालन का स्मरण किया। बेचारा श्रीधरन की प्रतीक्षा में छाती सहलाते हुए बरामदे के पलंग पर लेटा होगा।

"श्रीधरन !" गोपालन भैया ने पुकारा।

गोपालन ने अपराध-बोध से लेटे अनुज को वात्सल्य के साथ फिर पुकारा।

"क्या है भैया !"

"श्रीधरन, पथभ्रष्ट होने और जिन्दगी की तबाही के लिए अधिक गलतियाँ करने की ज़रूरत नहीं होती। जब कभी एक ही गलती बड़ी हो जाती है। अविवेकी होकर मैंने एक दफा जो गलत काम किया था, उसी के फलस्वरूप मुझे लम्बे अर्से से इतनी अधिक तकलीफें उठानी पड़ रही हैं। यौवन की शुरूआत में सनसनीखेज़ कार्यवाइयाँ करने की तमन्ना होती है। विकारों को बुझाने के लिए किसी भी अग्नि-परीक्षा का सामना करने के लिए नौजवान तैयार होते हैं। नए पंख मिलने पर कीड़े भी पतंगे बन जाते हैं। ये पतंगे दीपक की तरफ़ फूल समझकर आगे नहीं बढ़ते बल्कि एक बार लड़ने के घमण्ड से वे अग्निज्वाला से भिड़ंत करते हैं। और फिर जलकर मर जाते हैं..."

गोपालन भैया की बातें श्रीधरन ने ध्या[illegible] नीं। अचानक उसने श्रीधरन के चाकू को अपने हाथ में लेकर एक स[illegible] क्यों यह चाकू अपने हाथ

में लिया था ?"

श्रीधरन जरा सकपकाया। उस हथियार से वह सब कुछ करता। टूटी पसलियों से अकर्मण्य पड़े दुर्दशाग्रस्त 'छतरी की छड़ी' बालन का दुबला-पतला कोमल शरीर और उसकी दुरवस्था का जिम्मेदार बढ़ई माधवन मानस में उभर आया। बढ़ई की गरदन में मैं यह चाकू भोंकता—गोपालन भैया को यह कैसे सुनाऊँ।

आखिर श्रीधरन ने कहा, "आत्मरक्षा के लिए।"

"क्या कहा ? आत्मरक्षा के लिए ?" भैया हँस पड़ा। झट उन्होंने एक सवाल पूछ लिया, "क्या तुझे ईश्वर पर विश्वास है ?"

जवाब देने में श्रीधरन ज़रा सकपकाया। 'हाँ' या 'नहीं' कह न सका।

गोपालन भैया ने जवाब देने की प्रेरणा नहीं दी। उसने शान्त स्वर में कहा, "श्रीधरन, तुम्हारी आत्मरक्षा का हथियार तुम्हारे ही भीतर है···"

वह थोड़ी देर तक खामोश रहा।

"ईश्वर है तो वह आकाश के भी पार कहीं दूर रहता है। तुम्हारे पुकारते ही वह नहीं आ जाता लेकिन आपदा में तेरी पुकार को तुरत ही सुन लेनेवाली और तेरी रक्षा के लिए तुरत मार्गदर्शन करने वाली एक महाशक्ति तेरे ही भीतर है—तेरी अन्तरात्मा। कोई भी कार्य हो, उसे करने के पूर्व तुम अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ सुनो। मैं जो काम करता हूँ क्या वह मेरी ज़िन्दगी को मलिन तो नहीं बनाता ? क्या इससे किसी दूसरे को कष्ट तो नहीं पहुँचता ? अन्तरात्मा को धोखा देने पर पता नहीं कब तुम्हारी तबाही हो जाए। हालाँकि तुम्हें उसका आभास भी नहीं होगा। इस प्रपंच के सभी प्राणी गतिशील चिन्मय शक्ति के ही अणु हैं। एक सहजीवी का अहित करने के मनोभाव से तुम जिस अस्त्र को चलाओगे वह लक्ष्य में लगकर, या न लगने पर भी, घूम-फिर कर कभी तुम्हारी ही छाती से आ टकराएगा। लेकिन तुम्हें इसका बोध नहीं होगा—उस अज्ञात गतिशील नियामक शक्ति के आगे मानव असहाय है।"

श्रीधरन आश्चर्यस्तब्ध हो गया। क्या गोपालन भैया ही ऐसी बातें कह रहा है ! आठवीं कक्षा में फेल हो जाने के बाद लकड़ी का हिसाब लगाने जंगलों और टीलों में सालों तक भटकने वाला कन्निप्परंपु का गोपालन मुंशी ही एक दार्शनिक की भाँति ऐसा लेक्चर झाड़ रहा है !

फानूस की हल्की रोशनी में श्रीधरन ने गोपालन भैया को ध्यान से देखा। लगा कि शरीर-भर में भस्म लेपन करनेवाले एक नये संन्यासी को ही वह सामने देख रहा है। उस चेहरे में कितनी चमक है ! उन शब्दों में कितना आकर्षण है ! उनके आशयों में कितना गांभीर्य है ! बिच्छू, जुगनू, मकड़ी आदि निकृष्ट प्राणी जिसके मस्तिष्क से बाहर निकलते रहे उसी के मस्तिष्क से ये दार्शनिक रत्न बाहर निकल रहे हैं !

गोपालन भैया के निर्देश तथा उनकी दार्शनिक विचारधारा से श्रीधरन के युवा हृदय में एक नया आलोक भर गया। गोपालन भैया ऐसी बातें कर रहा है जिसे किसी भी पुस्तक में पढ़ा न था, किसी भी आचार्य के उपदेश में सुना न था, लम्बे अर्से की बीमारी की सुदीर्घ तपस्या से दबी हुई विरक्ति में—आत्मध्यान में—स्वयं जो ज्ञान उसने ग्रहण किया था वही इन धर्म-सूक्तों में मुखर हो उठा है··· गोपालन भैया अनजाने में ही परमहंस हो चुका है।

भैया की बातों को पागुर करते हुए श्रीधरन ने आँगन के उस पार के बाग की तरफ़ आँखें फाड़कर देखा। ···ज्योत्सना, छायाएँ और गले मिले घास-फूसों से भरे अहाते ने आँखों में मायामयी तस्वीरें खींच दीं—खामोशी को भंग करते झुरमुटों से कोई शोर मचाने लगा। मालूम हुआ कि चिड़ियों के पंख फड़फड़ाने की आवाज़ है। किसी एक प्राणी को—चूहा होगा—झपटकर एक बड़ा उल्लू, चाँदनी में शोर मचाता हुआ उत्तर के अहाते के कटहल के ऊपर उड़ गया।

श्रीधरन ने कटहल के पेड़ पर निगाहें घुमायीं। वह उल्लू अब चूहे को अपने पैरों के नखों से पकड़कर चोंच से काट-काट कर खा रहा होगा।

दो बजे का समय हुआ होगा।

कटहल के ऊपर से श्रीधरन का ध्यान 'छतरी की छड़ी' बालन की तरफ़ पंख पसारकर मुड़ गया।

बालन 'सप्पर सफर संघ' का आखिरी भोजन तैयार कर प्रतीक्षा कर रहा होगा। वह सोचता होगा कि आखिर श्रीधरन ने भी संघ को छोड़ दिया है! इन्सान के इरादों और मोहों को ज़माने का व्यंग्य एकदम उलट देता है! श्रीधरन के घर के ऊपर के बरामदे से नीचे पहुँचने के उस मुहूर्त में गोपालन भैया एक बीड़ी नहीं पीता तो!···

"श्रीधरन, क्या तुम आजकल कविता नहीं लिखते?"

गोपालन भैया के अचानक के इस सवाल ने श्रीधरन को दार्शनिक विचारों से जैसे जगा दिया। उस सवाल का वह जवाब दे न सका। वह हक्का-बक्का हो गया। 'क्या तुम ईश्वर पर विश्वास करते हो' की तरह का ही एक और सवाल है यह। 'हाँ' या 'नहीं' कह न सका।

गोपालन भैया के चेहरे पर विषादपूर्ण बड़प्पन दिखाई पड़ा।

"श्रीधरन, तुम्हें नियमित रूप से कविताएँ लिखनी चाहिए—कुछ अर्से बाद तुम मशहूर हो जाओगे—लेकिन वह दिन देखने के लिए गोपालन भैया—इधर नहीं होगा···"

गदगद कण्ठ से गोपालन भैया ने जो बात कही, उसे सुनकर श्रीधरन को दुस्सह वेदना हुई और वह ज़रा उत्तेजित हो गया। उसके भविष्य के बारे में इस प्रकार के प्रोत्साहन से भरी आशीष किसी ने भी अब तक नहीं दी थी। गोपालन भैया के

तपोमय चेहरे से ही सबसे पहले सुनी थी। इस सन्दर्भ में क्यों इस तरह का विचार प्रकट किया ?···श्रीधरन की आँखें गीली हो आयीं।

किसी पक्षी का कूजन लगातार गूँज रहा था। शायद कटहल के पेड़ की चोटी से आ रहा था।

आसमान से बातें करनेवाला वह कटहल अतिराणिप्पाट्टं के पेड़ों में बुज़ुर्ग है। उससे गिरनेवाले कई फलों को श्रीधरन ने खाया था। उसके सूखे पत्तों को वह जलाता। उसके धुएँ की एक खास गन्ध है।

रात को कटहल के ऊपर क्या-क्या घटित होता है ? चूहों की हत्या —चिड़ियों के गीत भी···

चाँदनी में गन्धर्व-लोक की तरह उस कटहल का दृश्य विस्मयकारी था।

गोपालन भैया ने शान्ति से ही मृत्यु का आलिंगन किया।

अन्तिम समय में पिताजी, माँ और श्रीधरन उसके नजदीक ही थे। (बड़ा भाई कुंजप्पु तमिलनाडु में था।)

श्रीधरन ने जो तीर्थजल उसके मुँह में डाला, उसे पीकर झट आँखें खोलकर पिताजी, मौसी और श्रीधरन के चेहरे को बारी-बारी से देखकर आँखें मूँदकर प्राण छोड़ दिये थे।

गोपालन भैया की आँखों से दो बूँद आँसू टपके थे। वे गालों पर लुढ़क आये थे। उन आसुओं की ओर इशारा करके पिताजी फफक-फफक कर रोये।

"मेरे गोपालन भैया चल बसे···" श्रीधरन गला फाड़कर चिल्लाया।

(श्रीधरन, ईश्वर तो बहुत दूर है। तुम्हारे बुलाने पर शायद वह सुनेगा नहीं। पर, तुम्हारी पुकार को आसानी से सुननेवाली एक महाशक्ति तुम्हारे भीतर बसती है। तुम्हारी अन्तरात्मा···इस ढंग के उपदेश देने वाले भैया की आवाज़ आगे नही सुन सकेगा।)

मौसी का चीत्कार सुनकर पड़ोस के लोग दौड़े आये।

यों जीवन और यौवन के स्वप्नों में पड़ी हुई रोगशय्या से गोपालन भैया मृत्यु की छाती से लिपट गया।

दो बूँद आँसुओं से जीवन के लिए उदक क्रिया करने के बाद वह भौतिक शरीर निश्चल हो गया।···एक परमहंस का निधन हो गया।

पहले सफेद रेशम में, फिर सूखे गोबर और तिनको के ढेर में लिटाये गये उस को मलविग्रह को श्रीधरन ने आग दे दी थी।

चिता जल रही थी।

आसुओं के आईने से वह चिताग्नि सारे प्रपंच में फैलकर एक उज्ज्वल चित्र प्रस्तुत कर रही थी :

धधकती चिता को निहारते

क्यों दिल भी यों धड़कता ?
लाश जलने की चिता है नहीं यह
भुवन जीवन का महोत्सव देख
परलोक को लौटनेवाले
मानव की अन्तिम रथयात्रा है यह
सुगढ़ता से उड़ जाने वाली
अनल ज्वालाएँ, जय-पताकाएँ;
और अनिल लीला में उड़नेवाला यह धुआँ
दिलाता है याद जन्म मृत्यु स्वप्न की।
मृत्युसैन्धव को खींचकर दौड़नेवाला
रत्नरथ तो दूर-दूर जा रहा।
वह छोटा होता
दृष्टि-पथ से हौले-हौले ओझल हो जाता
विदा लेते समय मनुष्य की बचत
यहाँ ज़रा-सी धूल और राख रह जाती।

## 23. नया प्रेमलेख

समय : आधी रात।

कुंजिक्केलु मेलान और मज़दूर केलन निधि की तलाश में केलंचेरी घराने के महल के तहख़ाने की खुदाई कर रहे हैं।

केलंचेरी के सभी अहाते और खेत हाथ से निकल गये थे। सिर्फ़ महल ही बाक़ी है। किसी को इसे बेचने का हक नहीं है। बेचने के लिए कुछ और सामान न होने के कारण कुंजिक्केलु मेलान के सामने बड़ा आर्थिक संकट आ गया। सुना था कि केलंचेरी में एक पुरानी निधि है। वह कहाँ गाड़ी गयी थी किसी को ठीक-ठीक पता नहीं है। मेलान उसका पता लगा रहा है।

घर के मुखियों ने तहखानों में जो पुरातन वस्तुएँ और देखने लायक सामग्री को रखा था वे सब अदृश्य हो गयी हैं। तहखाना खाली है। मेलान ने अन्दाज लगाया कि तहखाना खोदने पर निधि जरूर मिलेगी। अकेले खोदकर उसे हस्तगत करना है। और किसी को इसकी सूचना नहीं मिलनी चाहिए। मित्र तो धोखा दे जाते हैं। जिन लोगों से उधार लिया था वे भी सब इधर दौड़ आयेंगे। इसलिए वह अकेले इसकी खोज करने लगा था। बेचारा बेहद थक गया है। कुदाल उठाने और खोदने की ताकत अब नहीं रही। कुछ करने के लिए पहले शराब पी लेनी चाहिए। नहीं, पी लेगा तो फिर उठ नहीं सकेगा। स्वास्थ्य वैसे ही ठीक नहीं

है। बाँयें पैर का पीलिया बढ़ रहा है। एक ही आंख है। शक्ति-क्षय के कारण उसे काला चश्मा छोड़ देना पड़ा। उसने अपने वफ़ादार नौकर केलन को बुलाया है। अगर निधि मिलेगी तो एक अच्छी रकम केलन को देने का वादा भी किया है। केलन को मालूम था कि मेलान की बातों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। पर केलन ने सुना था कि केलंचेरी में निधि है। वह इस ख्याल से ही वहाँ आया है कि मेलान की आँखों में धूल झोंककर निधि में से कुछ न कुछ वह भी हड़प लेगा।

शराब की बोतल नजदीक रखकर मेलान एक कोने में बैठ गया। वह नज़दीक रहकर केलन के कुदाल का किसी खजाने से टकराने की ध्वनि का इन्तजार कर रहा है।

"केलन···!"

"क्या है मेलान ?"

"निधि मिलने की बात तू किसी और से तो न कहेगा ?"

"नहीं मेलान, एक बच्चे से भी नहीं कहूँगा।"

"अगर तू किसी से कहेगा तो मैं तेरी आँखें निकाल लूँगा। समझे ?"

धमकी सुनकर केलन नाराज़ हो गया। वह भी मेलान पर भभक पड़ा,

"मेलान, चुप रहिए। इस तरह फुसफुसाने से खजाना ओझल हो जायेगा—बड़ों ने कहा है कि निधि को चुपचाप खोदकर ही उठाना चाहिए।"

मेलान ज़रा खामोश हो गया।

तहखाना कमर तक खोदा गया। पर मिले सिर्फ मिट्टी के ढेले।

"खजाना पश्चिम के कमरे में ज़रूर होगा।" मेलान ने ज़ोर देकर कहा।

केलन पश्चिम के कमरे की खुदाई में जुट गया।

उस कमरे के कोने से सिर्फ एक यन्त्र ही मिला—एक पुराना यन्त्र। ताँबे का यन्त्र खोलने पर उसके अन्दर ताँबे के पत्र नज़र आये। उनमें मन्त्राक्षर और चक्र खींचे गये थे।

मेलान ने अनुमान लगाया कि जहाँ से यन्त्र मिला वहाँ नजदीक ही खजाना गड़ा होगा।

केलन ने फावड़ा और कुदाली से कमरे की एक-एक इंच ज़मीन गहराई तक खोद डाली।

कुछ भी हासिल नहीं हुआ।

"मेलान, निधि तो गायब हो गई है।"

"अब क्या होगा ?"

"मेलान !"

मेलान ने चुप्पी साध ली।

केलंचेरी कुंजिक्केलु मेलान तीन बोतल शराब पी चुका था। वह बेहोश हो

गया। पीलियाग्रस्त बायें पैर को बाहर निकालकर, आधा मुँह खोले ही वह एक ओर ज़रा मुड़कर पड़ा रहा।

मेलान को उसी हालत में अकेला छोड़, फावड़ा और कुदाली को एक कोने में रख, अपने को शाप देता हुआ केलन अपने घर की ओर चल दिया।

केलंचेरी नाग हिल गया। हौले से पश्चिम के कमरे में सरक आया। चबूतरे तक खोद डाली गयी पुरानी मिट्टी की गन्ध सूँघकर ही वह उस कमरे में आया था। ···उसने शराब की बोतल को सूँघा।

साँप ने एक बार मेलान को घेर लिया। फिर वह मिट्टी पर सरकने लगा··· उसने फण उठाया···हौले से छपकोंवाले फन को चमकाते हुए कमरे भर में सरसरी निग़ाहों से देखा···और फिर नाचने लगा···।

गरीबों को अन्नदान देकर गोपालन भैया की मृत्यु से संबंधित रस्में पूरी हुईं। रिश्तेदार, मित्र और पड़ोसी वापस चले गये।

श्रीधरन ऊपर के बरामदे की आराम-कुर्सी में विचारमग्न लेटा हुआ था : गोपालन भैया से सम्बन्धित सभी रस्में पूरी हो गयीं। दाने-दाने को मोहताज लोग दावत खाकर चले गये। अहाते के नारियल के नीचे फेंके हुए पत्तों को चाटते कुत्ते और अन्न को चुन-चुनकर खाने वाले कौवे भी वहाँ से नदारद हो गये हैं।

आँगन के दक्षिण भाग में गोलाकार जगह पर गोबर पुता हुआ बलिपिण्ड चढ़ाने का पत्थर दिखाई दे रहा है।···एक-दो दिन में मृत्यु का वह प्रतीक भी अप्रत्यक्ष हो जाएगा···

क्या मृत्यु के साथ मनुष्य का सब कुछ समाप्त हो जाता है? कुछ भी समझ में नहीं आता···प्रियजनों का स्मरण किया···नारायणी···चात्तुण्णि···आखिर गोपालन भैया भी। ये सब कहाँ चले गये?···प्रपंच और काल की अनन्तता में वे हमेशा के लिए अन्तर्धान हो गये हैं। उनके पहले भी अनन्त लोग जा चुके हैं। उनका पीछा करते ये भी चले गये···कभी भी तो समाप्त होनेवाला नहीं है यह प्रवाह···!

कॉलेज में पढ़ी हुई एक अँग्रेजी पाठ्य-पुस्तक के एक निबन्ध का आशय मस्तिष्क में उभर आया। दिवंगत दोस्तों की याद को ताज़ा करने के लिए साल में एक दिन सुरक्षित रखें। किसने कहा था यह? चार्ल्स लाँपो, डा० जॉन्सन?··· किसी ने भी कहा हो वह तो एक श्रद्धाभरी उक्ति है···शुरू से ही याद करूँ··· नारायणी···!

तभी साड़ी पहने एक औरत पगडंडी से फाटक पर चढ़कर कन्निप्परंपु में आयी। ध्यान से देखा। कोरमीना की मीनाक्षीअम्मा!

मीनाक्षीअम्मा अब क्यों कन्निप्परंपु में आ रही है? गोपालन भैया की मृत्यु के दिन, और उसके बाद और एक दिन, वह संभ्रांत महिला समवेदना प्रकट करने

के लिए कन्निप्परंपु में आयी थी। गोपालन भैया की मृत्यु के बाद दसवें दिन एक भोज हुआ था। उसमें दो केलों के गुच्छों को उन्होंने भेंट के रूप में भिजवाया था··· अब उनके यहाँ आने का मतलब ?

पिताजी बरामदे की आराम-कुर्सी में गोपालन भैया के वियोग में आँसू पीकर लेटे हैं···

मीनाक्षी अन्दर नहीं गयी। बरामदे में खड़ी होकर पिताजी से कुछ बातचीत करने लगी है। लगा कि व्यर्थ की बातचीत नहीं है। वह कुछ भावपूर्ण वार्तालाप कर रही है।

करीब पन्द्रह मिनट बाद नीचे से पिताजी की पुकार सुनाई पड़ी :

"श्रीधरन ···!"

वह महज़ एक पुकार नहीं थी, सिंहगर्जन था वह।

सुनते ही सीढ़ियाँ उतरकर बरामदे में गया।

मीनाक्षी पिता के नजदीक की एक कुर्सी के निकट स्वाभाविक मधुर मुस्कान के साथ खड़ी थी।

(मीनाक्षी के गाल में मुस्कान की एक चिड़िया हमेशा छिपी रहती होगी।)

बाबूजी का चेहरा लाल फूल की तरह रक्ताभ हो रहा था। पिताजी ने अपने हाथ में एक कागज़ पकड़ा हुआ था।

"क्या तुमने कोरमीना की लड़की के नाम पत्र भेजा था ?"

पिताजी की गरदन, हाथ और कागज़ काँप रहे थे।

यह मैं क्या सुन रहा हूँ ? क्या देख रहा हूँ ?

श्रीधरन को लगा कि दम घुट रहा है।

"तू···तू···तूने तो मुझे अपमानित कर डाला।"

पिताजी की आँखों की क्रोधाग्नि अचानक दुख के प्रलय के रूप में परिणत हो गयीं···गालों से आँसू वह पड़े थे।

श्रीधरन सकपकाकर खड़ा रहा। कुछ भी मालूम नहीं हुआ। निस्सहाय होकर चारों ओर आँखें फाड़-फाड़ कर देखा। बरामदे के पश्चिम कोने में आँखें जम गयीं···गोपालन भैया का कोना था। अब खाली है। पिताजी के आँसू और उस खाली जगह को देखने पर श्रीधरन स्वयं को नहीं सम्हाल पाया और फूट-फूट कर रो पड़ा।

बाबूजी शून्य की तरफ देख रहे थे। श्रीधरन को लज्जा और पाश्चात्ताप हुआ। "विपत्ति के संदर्भ में तुम्हें अपनी अन्तरात्मा ही बचाएगी।" गोपालन भैया का उपदेश अन्तरात्मा में गूँज उठा।

बाबूजी के हाथ से पत्र लेकर पढ़ा।

अपनी लिखावट का ही पत्र है, मेरे ही वाक्य हैं इस पर भरोसा भी नहीं

होता। क्या मैं सपना देख रहा हूँ ?

पत्र को बड़े ध्यान से देखा। मालूम हुआ कि यह नक़ली है। इस ढंग का नक़ली पत्र लिखने की क्षमता रखने वाला एक ही आदमी अर्जीनवीस आण्डि है।

कुछ-एक घटनाएँ श्रीधरन के मन में प्रतिभासित हुईं। आण्डि के 'अमालु परिणयं' नाटक का अभिनय होने के बीच खराब अण्डों की मार हुई थी। उस समय श्रीधरन ठहाका मार कर हँस पड़ा था। उस दिन इस तरह ठट्ठा मारकर हँसनेवालों को रुलाने के लिए ही आण्डि ने यह तरकीब निकाली थी। उसका निशाना अचूक रहा। पत्र की लिखावट मेरी नहीं है कहने पर क्या पिताजी इस पर भरोसा करेंगे ?

कोरमीना की मीनाक्षी बेचैन होकर श्रीधरन के चेहरे की ओर आँखें फाड़कर देख रही थी।

श्रीधरन के फफक-फफक कर रोने से उसे बेहद अफ़सोस हुआ। कृष्णन मास्टर के आँसू देखकर वह और अधिक दुखी हो गयी।

श्रीधरन ने पहले नायिका के नाम जो पत्र लिखा था, उस प्रेमपत्र के वाक्यों को उसी तरह नकल किया गया था। तारीख और सम्बोधन ही बदले थे।

मीनाक्षी ने कृष्णन मास्टर से शिकायत कुछ देर से की थी क्योंकि कन्निप्प-रंपु में मृत्यु के बाद की रस्में खतम नहीं हुई थीं।

"मैंने किसी को भी पत्र नहीं लिखा था। यह पत्र मैंने नहीं लिखा।" श्रीधरन ने दृढ़ स्वर में बताया।

ईमानदार कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन के चेहरे की ओर बड़े ग़म के साथ देखा : 'श्रीधरन' यह तुम्हारी ही लिखावट है।"

"नहीं, मेरी लिखावट की नक़ल की गयी है। उण्णीरि नायर मास्टर ने जिस लड़की की ट्यूशन की थी, उसके नाम मैंने जो खत पहले भेजा था उसी की नक़ल की गयी है। अर्जीनवीस आण्डि ने ही यह हरकत की है। उस दिन उसके नाटक में हमने जो बाधा उपस्थित की थी, उसके प्रतिशोध में ही उसने यह पत्र भेजा है। उस पुरानी चिट्ठी का इस्तेमाल करने के लिए उस लड़की के पिता ने अर्जीनवीस आण्डि को अनुमति दे दी होगी···।" श्रीधरन ने एक जासूसी विशारद की तरह उस नये प्रेम-लेख की पृष्ठभूमि का पर्दाफ़ाश किया।

लेकिन वह कैसे प्रमाणित कर सकेगा ?

"यह पहले भी इस तरह के एक मुकदमें में फँस गया था।" पिताजी मुद्दई कोरमीना की मीनाक्षी के पक्ष में कैफ़ियत तलब कर रहे थे।

अचानक श्रीधरन की दृष्टि पत्र के सम्बोधन पर अटक गयी। 'प्रिय सौधामिनी' ही लिखा था।

आत्मरक्षा का एक नया हथियार मिल गया।

(नये पत्र में आण्डि ने सिर्फ एक ही शब्द बदलकर लिखा था। वह ग़लत साबित हुआ। सौदामिनी सौधामिनी हो गयी है।)

श्रीधरन ने मीनाक्षीअम्मा को उस अक्षर की ग़लती दिखा दी। कॉलेज शिक्षा प्राप्त—एक युवा साहित्यकार—श्रीधरन क्या एक लड़की का नाम ठीक तरह से नहीं लिख सकता ?

मीनाक्षीअम्मा की मुस्कान की चिड़िया पंख फड़फड़ाकर उड़ गयी। उन्हें सारी स्थिति स्पष्ट हो गयी। वह तो मजिस्ट्रेट की बेटी है न ?

श्रीधरन के चेहरे को देखकर मीनाक्षी अम्मा के चेहरे पर एक शरारती हंसी थिरक गयी। मानो वह कह रही हो कि जो बीत गयी सो मजाक ही समझ लो।

मीनाक्षी ने श्रीधरन के हाथ से उस 'सौदामिनी के पत्र' को लेकर टुकड़े-टुकड़े कर अहाते की तरफ़ फेंक दिया।

कृष्णन मास्टर के चेहरे पर पश्चात्ताप की रेखाएँ देख मीनाक्षी ने कहा, "सर, आई बेग योर पार्डन फॉर क्रियटिंग दिस सीन, इन योर प्रेजन्ट स्टेट ऑफ बेरीवुमेण्ट। प्लीज़ फॉरगेट एबाउट इट। दि बॉय इज इन्नोसेन्ट। सम बडी हैज प्लेड ए डर्टी ट्रिक···"

यह कहती मीनाक्षी श्रीधरन की माँ को देखने के लिए भीतर चली गयीं।

श्रीधरन ने एक लम्बी साँस ली। उसने अर्जीनवीस आण्डि का स्मरण किया : 'आण्डि महाशय, तू अतिराणिप्पाटं में जन्म लेने के बजाय अगर अमेरिका में पैदा हुआ होता तो जाली चेक और ड्राफ्ट लिखकर करोड़पति बन गया होता।'

तभी फाटक में एक पगड़ी दिखायी दी। कौन है वह ? किट्टन मुंशी है ?

"हाँ, किट्टन मुंशी ही है। सूखकर काँटा हो गया है वह।

किट्टन मुंशी को क्या हुआ था ? उसे देखते ही श्रीधरन को हँसी आ गयी। किट्टन मुंशी को लोग 'किट्टन मजिस्ट्रेट' ही पुकारते हैं। उसके इस नये नाम के हासिल होने के पीछे की कथा का स्मरण हो आने पर ही श्रीधरन को यह हंसी आयी थी।

एक दिन सुबह किट्टन मुंशी शहर से कुछ दूर के चेम्मण्णूर के एक दोस्त से मिलने के लिए रवाना हुआ। चेम्मण्णूर पहुँचने के लिए एक नदी पार करनी थी। एक नाव पर चढ़ा। नाव पर और कोई आदमी नहीं था। घाट पर उतरने ही वाला था कि किट्टन मुंशी ने बड़े गौरव से मल्लाह से यों कहा, "अरे, अगर कोई तुझसे यह पूछे कि क्या मजिस्ट्रेट नाव में थे तो यही कहना कि नहीं थे। सुना ?"

उसकी बातें सुनकर मल्लाह चौंक उठा। मुँह पर हाथ रखते हुए परंगोटन ने बड़े अदब से 'हां' कहा।

पारिश्रमिक के बारे में उसने चुप्पी साध ली।

छाती और हाथों पर कमीज के सोने के बटन चमक रहे थे। सिर पर पगड़ी बँधी थी। आदमी को देखते ही परंगोटन ने अंदाज लगाया कि वह एक बड़ा सरकारी अफ़सर होगा।

यह जानने पर परंगोटन को बड़ा अचंभा हुआ कि वे मजिस्ट्रेट हैं। उसे जरा आत्मगौरव का अनुभव भी हुआ। एक मजिस्ट्रेट उसकी नाव में अभी-अभी चढ़े थे। परंगोटन चुप नहीं रह सका। राहगीरों को बुलाकर वह यह समाचार गुप्त रूप से देता रहा : मजिस्ट्रेट साहब मेरी नाव पर चढ़कर उस तरफ़ तशरीफ़ ले गये हैं।

मोहल्लेवालों की जिज्ञासा जग गयी। उनमें अधिकांश लोगों ने किसी मजिस्ट्रेट को अब तक नहीं देखा था।

"वे किसी मुकदमे के अन्वेषण के लिए आये होंगे।" उन्होंने आपस में खुसुर-फुसुर की।

"मजिस्ट्रेट साब' को जरा देख लेने के बाद ही चलेंगे।" कुछ लोग वहीं ठिठक गये।

किट्टन मुंशी के अपने मित्र से मुलाकात कर घाट पर वापस आने तक गाँव के लोग ललचाई निगाह से बड़े अदब के साथ उनका इंतजार कर रहे थे।

किट्टन मुंशी ज़रा हक्का-बक्का हो गया।

तभी लोगों के बीच से एक अपस्वर सुनाई पड़ा, "अरे, यह तो किट्टन मुंशी हैं न?"

किट्टन मुंशी से अधिक परिचित बुजुर्ग कुंजुण्णि वैद्य ने पूछा, "अरे किट्टन, तुझे मजिस्ट्रेट की नौकरी कब से मिल गयी?"

किट्टन मुंशी ने बगल से सुँघनी की डिबिया लेकर, उससे चुटकी-भर सुँघनी अपनी हथेली पर डाल, अपनी नाक में सुड़क ली। फिर वैद्य से पूछा, "किसने कहा कि मैं मजिस्ट्रेट हूँ।"

"अरे तू ने ही इस मल्लाह परंगोटन से कहा था न कि तू मजिस्ट्रेट है।"

"मैंने इतना ही कहा था कि अगर कोई पूछे कि क्या मजिस्ट्रेट नाव में थे तो बताना कि वे नहीं थे।

"हाँ, इसी प्रकार बताया था।" परंगोटन को भी अपना सिर हिलाकर मानना पड़ा।"

किट्टन मुंशी शान से खड़ा रहा : "हाँ, मैंने जो कहा वह तो ठीक है—मजिस्ट्रेट नाव में नहीं गये थे।"

किट्टन मुंशी ने ज़रा-सी सुँघनी फिर से नाक में ठूँस कर सुड़क लेने के बाद चेहरे को घुमाया। फिर उसने वैद्य और उस बेवकूफ मल्लाह की ओर नफ़रत-भरी निगाहों से देखा।

किट्टन मुंशी की वाकपटुता के कारण उस दिन तो वह बच गया, लेकिन आम लोगों ने उसे नहीं छोड़ा।

'बेंच मजिस्ट्रेट' कहने की तरह वे किट्टन मुंशी को 'नाव मजिस्ट्रेट' के नाम से पुकारने लगे।

वरामदे की वेंच पर वैठे किट्टन मुंशी को देखने पर श्रीधरन को बड़ी हमदर्दी हुई। वह दुवला-पतला हो गया है। पगड़ी हटाने पर मुंडा हुआ सिर ही दिखाई पड़ा।

वह टाइफाइड बीमारी का शिकार होकर लम्बे अर्से तक घर पर ही था। गोपालन की मृत्यु होने पर अब तक कन्निप्परपु में इसी वजह से वह आ नहीं सका था। अब भी हौले-हौले ही चल सकता था।

गोपालन के अन्तिम क्षण के बारे में जब कृष्णन मास्टर ने बड़े दुख के साथ सुनाया तो मुंशी ने एक दार्शनिक की तरह कहा, "मास्टर, गोपालन मुंशी एक नित्यरोगी थे। वह मरे नहीं हैं। उन्हें तो मोक्षप्राप्ति ही हुई है।"

कृष्णन मास्टर ने एक लम्बी साँस छोड़कर उस दार्शनिक विचार का समर्थन किया।

"पर—" किट्टन मुंशी ने भर्राई आवाज़ में कहा, 'हाथी से भिडंत होने पर भी जो निडर रहते हैं, ऐसे नौजवानों को ईश्वर उठा लेता है—आखिर कैसे सहन किया जाय ?"

मास्टर ने पूछा, "तुम किसके बारे में कह रहे हो किट्टन ?"

किट्टन मुंशी कुछ कहे विना आसमान में ही ताकता रहा। फिर अपने निचले होंठ को काटकर सिर हिलाते हुए गद्‌गद स्वर में बोला, "मेरा तुप्रन !"

तुप्रन की मृत्यु की खवर किट्टन मुंशी ने विस्तार से सुनायी।

किट्टन मुंशी के अहाते में एक ऊँचे नारियल का पेड़ सूखने लगा था। उसे काटना था। तुप्रन को दूसरे कई कामकाज होने पर भी मुंशी से उसकी सूचना पाते ही वह जल्दी से कुल्हाड़ी और रस्सी लेकर जा पहुंचा।

नारियल के पेड़ पर चढ़कर ऊपर वैठ गया। उसका ऊपरी भाग काटने लगा। नारियल का मध्य भाग एकदम सूख गया था। ऊपरी भाग को काटकर गिराते ही नारियल का पेड़ मध्य भाग से टूट गया। झट पेड़ और तुप्रन एक पत्थर की दिवार पर जा गिरे। तुप्रन का कन्धा और छाती टूक-टूक हो गये। यों तुप्रन वहीं ढेर हो गया।

ये सारे दृश्य श्रीधरन के मन में अब भी ताज़ा हैं: रेलवे-गाड़ी के इंजन से हताहत होनेवाली ग्वालिन पोन्नम्मा के दारुण अन्त का दृश्य ! अपनी पीठ से नाव को उठाकर आदमखोर मछलियों के लिए आहार वननेवाले रीढ़-टूटे अहमद की करुण कथा ! उन दोनों की तरह ही तुप्रन भी पत्थर की दीवार पर औंधे मुंह

गिरकर वहीं ढेर हो गया। कथाकार विरिप्पिल इब्राहीम के घर से वापस आते समय एक बड़े नारियल के पेड़ पर आकाश में विहार करनेवाले तुम्रन को आखिरी बार देखा था। श्रीधरन को वह घटना भी स्मरण हो आयी।

गुरु और अभिभावक 'मुंशी हुजूर' के सामने ही तुम्रन एकाएक ढेर हो गया था। विधि की इस विडंबना पर विचार कर कृष्णन मास्टर हँस पड़े। छोटे भाई ओतेनन की मृत्यु के बारे में बड़े भाई कोमक्कुरुणु ने चाप्पन से जो शब्द कहे थे (वरक्कन पाट्टु से) उसे मास्टर ने गाकर सुनाया :

"चाप्पन, तू ही उसे ले चला
उसे मरवा डाला भी तूने ही !"

## 24. सौभाग्यशाली

"श्रीधरन, यू मस्ट लर्न शार्टहैण्ड—टाइप राइटिंग—इट विल हेल्प यू टू गेट ए गुड जॉब आफ्टर वर्ड्स……"

धर्मराजय्यंगर की सलाह थी।

इण्टर परीक्षा में पास होने के बाद कामर्शियल विषयों में प्रशिक्षण प्राप्त करना भविष्य के लिए अच्छा है। अय्यंगर की यह सलाह कृष्णन मास्टर को भी पसन्द आयी।

यों श्रीधरन गोपालकृष्ण कामर्शियल इन्स्टिट्यूट की सांयकालीन कक्षा में भर्ती हो गया।

(कृष्णन मास्टर ने तीस वर्ष पूर्व आशु लिपि की परीक्षा पास की थी। प्रमाण पत्र प्राप्त होते ही उन्हें उत्तर भारत की एक विदेशी कम्पनी में डेढ़ सौ रुपया मासिक वेतन की एक नौकरी मिली। पर उन्होंने उसका तिरस्कार किया, क्योंकि परिवार छोड़कर जाने के लिए उसका मन नहीं हुआ। वे दस रुपये तनख्वाह पर एक अध्यापक का पेशा ग्रहण कर अपने इलाके में ही रहे। यह सब श्रीधरन भली-भाँति जानता था।)

शाम को इन्स्टिट्यूट में जाकर टाइप राइटर को चलाना, इन्स्ट्रक्टर के डिक्टेशन पर ध्यान देना, लाल लकीरों वाली चिकनी नोट-बुक में एक नुकीली पेंसिल से आशु लिपि की रेखाएँ खींचना—सभी प्रकार का अभ्यास किया। इण्टर परीक्षा में फिर एक बार बैठने का निश्चय भी कर रखा था। अनुत्तीर्ण विषयों में इम्तहान देना ही काफी नहीं था, तीनों पार्टों में इम्तहान देना होगा—तभी बी० ए० में प्रवेश मिल सकेगा।

सभी परीक्षाओं के लिए फीस भर दी गयी।

अँग्रेज़ी, संस्कृत और मलयालम उसके लिए समस्या न थीं। गणित में

धर्मराजय्यंगर से ट्यूशन पायी। फिज़िक्स और केमिस्ट्री बाकी रह गये थे···

एक दिन शाम को इन्स्टिट्यूट से टाइपिंग क्लास के बाद नीचे उतर गया। नज़दीक के 'महालक्ष्मी विलास' होटल में काफ़ी पीने गया। काफ़ी पीते समय एक गोरा-चिट्टा युवक मुस्कराते हुए सामने आकर बैठ गया।

"आप मिस्टर चेनक्कोत्तु श्रीधरन हैं न ?" युवक ने पूछा।

"हाँ, पर आपको मैंने नहीं पहचाना।

उसने हँसते हुए सिर हिलाया। पर, कोई जवाब नहीं दिया।

तभी गले में रुद्राक्ष माला पहने काले-कलूटे एक प्रौढ़ व्यक्ति ने आकर इस युवक से परिचय करा दिया।

"क्या नहीं जानते ? उपन्यासकार गोविन्द कुरुप—पश्चिम के कायल पुलिक्कल कोतक्कुरुप का भानेज—"

नाम बताने पर श्रीधरन को नायक की पहचान हो गयी। शहर से पन्द्रह मील पूर्व में स्थित एक मोहल्ले के प्रसिद्ध ज़मींदार घराने का एकमात्र हक़दार और भतीजा है गोविन्द कुरुप। चार दफ़ा एस० एस०एल०सी०में असफल होने के कारण पढ़ाई छोड़ दी। अब घर के कार्यकलापों की देखभाल कर रहा है। उसका मामा कोतुक्कुरुप पक्षाघात से पीड़ित है। हज़ारों बोरे चावल की आमदवाले लहलहाते खेत, टीले और हाथी हैं। गोविन्द कुरुप चाहता तो इन सबकी देखभाल कर आराम की जिन्दगी बिता सकता। शायद जन्मपत्री ऐसी थी कि वह एक उपन्यासकार बनने की महाव्याधि से ग्रस्त हो गया।

गोविन्द कुरुप ने देहात और वहाँ के पुराने भवन को साहित्य प्रवर्तन के लिए प्रतिकूल समझा। दो महीने में एक बार वह शहर में साहित्यिक तीर्थयात्रा करता। शहर के बढ़िया होटल 'महालक्ष्मी विलास' में एक कमरा किराये पर लेता। वहां पाँच दस दिन ठहरता और उपन्यास लिखने लग जाता।

ठहरने की सभी सुख-सुविधाएँ और शान्त वातावरण मिल जाता है वहां। बलागुलूच्यादि तेल, आम का अचार आदि वह घर से ले आता। मुख्तार, पिट्ठू और अपने साथी कुंजन नायर भी साथ लाता।

शहर में पहुँचने पर सबसे पहले पुस्तकें खरीदने बुक स्टाल पर जाता। सभी उपलब्ध उपन्यास और कहानी संग्रह खरीदकर होटल के कमरे में रखता। फिर शराब बिकने की जगह जाता। व्हिस्की, ब्रांडी, वाइन आदि विदेशी शराबों को खरीदकर, पेटी में बंद कर पुस्तकों के नज़दीक रख लेता। तीन-चार डिब्बे गोल्ड फ्लेक्स के भी ले आता।

सुबह बलागुलूच्यादि तेल मलकर नहाता। फिर बढ़िया नाश्ता करके थोड़ी देर तक उपन्यास के लेखन में लग जाता। फिर माथा-पच्ची करता। प्रेरणा मिलने के लिए बीच-बीच में ब्रांडी पीने लगता। सिगरेट पीता। और फिर तीन-

चार पंक्तियाँ लिख डालता। जो कुछ वह लिखता उसे औरों को सुनाने की उसकी बड़ी इच्छा होती। फिर वह नीचे के होटल में चाय पीने के लिए आनेवाले लोगों में कुंजन नायर के माध्यम से साहित्यकार, अध्यापक या किसी अच्छे पाठक की तलाश करवाता। वहाँ किसी के भी न मिलने पर कुंजन नायर दसवें कमरे में स्थायी रूप से रहनेवाले विश्वविख्यात हस्तरेखा विशेषज्ञ पी० टी० रामप्पणिक्कर को पकड़ लाता।

संभ्रांत मेहमान को पीने के लिए क्या चाहिए? ब्रांडी, व्हिस्की, काफी या चाय?···खाने के लिए माँस या तरकारी? और विशेष कुछ चाहिए तो बाहर से मँगा देता। मेहमान अपनी मर्जी के अनुसार कह सकता है···

इस तरह मेहमान को ठीक तरह खिला-पिलाकर संतृप्त करने के बाद, गोविन्द कुरुप अपना साहित्यिक विभव परोसने लगता। चार पंक्तियां पढ़ता और फिर पूछता, कैसा लगता है?"

भोजन पर आये आगन्तुक को शुक्रिया अदा करने का सुअवसर जो मिला है—'बेहतर' 'बहुत अच्छा'। चन्दुमेनोन का 'इन्दुलेखा' उपन्यास इस नयी साहित्यिक कृति के आगे काई-जैसा सारहीन लगता है।

इस प्रकार पश्चिम के कोयल पुलिक्कल गोविन्द कुरुप नामक भावी उपन्यासकार के शहर में निवास करने के कार्यक्रम के बारे में श्रीधरन ने कई लोगों से सुना था। लेकिन उस दिन पहली बार ही उसे देखा था। "मिस्टर श्रीधरन, प्लीज मेरे कमरे में आइए।"

श्रीधरन जानता था कि इस ढंग के निमंत्रण का मतलब क्या है? गोविन्द कुरुप को साहित्यिक काढ़ा पिलाना होगा। श्रीधरन ने मन में सोचा कि वह एक अनुभव होगा। इसके अलावा एक घंटे तक लगातार कामर्शियल इन्स्टिट्यूट की ठक-ठक की आवाज़ से कानों में जो ऊब महसूस हुई थी, साहित्य के स्वर से युक्त कोई भी चीज इस समय तसल्ली ही देगी।

इस प्रकार श्रीधरन गोविन्द कुरुप के साथ होटल के प्रथम नम्बर के कमरे में जा पहुँचा।

"मिस्टर श्रीधरन, पीने के लिए व्हिस्की?—ब्राण्डी?"

"कुछ भी नहीं चाहिए। अभी-अभी हमने काफ़ी पी है न?"

"नहीं, नहीं—ऐसी बातें छोड़ो यार। कुछ पीना ही चाहिए। (कुंजन, ज़रा उस छोकरे को पुकारो, सोड़ा ले आये।)

"नहीं मिस्टर कुरुप! मैंने आज तक शराब नहीं पी है।"

"तब तो आज यहाँ से श्रीगणेश हो जाए।"

"मुझे मजबूर न करें।"

"पहली दफा पीते समय सबके मन में डर, शंका और शरम होती है। आप

तो एक साहित्यकार हैं न ? आपकी लिखी कविताएँ, कहानियाँ मैंने पढ़ी थीं। वह 'बिजली' नामक छोटी कहानी भी मैंने पढ़ी थी। उस 'बिजली' ने मेरे मानस में सचमुच एक बिजली ही पैदा कर दी थी। 'काहल' में प्रकाशित आपकी कविता 'बेटे' को मारनेवाली शराब' की कुछ पंक्तियों को मैंने कंठस्थ किया था। सुनोगे ?

"पिनांकु से आज लौट आनेवाला बाप
अपने मुन्ने को······हर ! हर ! हर !······"

उस हर—हर—हर प्रयोग के लिए व्हिस्की और ताड़ी की एक बोतल होनी चाहिए।

"मद्यपान के खिलाफ ही मैंने वह कविता लिखी थी" श्रीधरन ने उन्हें स्मरण कराया।

"क्या वह बात मुझे नहीं मालूम ? बचपन में देश से चला गया बेटा जो वर्षों के बाद एक मोटी रकम के साथ घर वापस आता है। उसका पिता तो पक्का शराबी है। वह ताड़ी की दुकान से कुछ जल्दी ही आने पर क्या देखता है ? पत्नी के कमरे में एक अजनबी इन्सान लेटा है। उसने न आव देखा न ताव, झट कमर से चाकू निकालता और पत्नी के 'जारज' का काम तमाम कर देता। कविता का कथ्य कुछ इसी तरह का नहीं था ?···"

श्रीधरन को आश्चर्य हुआ, साथ ही गौरव भी महसूस किया। उसकी साहित्य सृष्टि उसने मन में स्मरण कर रखी है। अब तक अज्ञात एक आराधक का पता लग ही गया।

गोविन्द कुरुप से आत्मीय संबंध जैसी अनुभूति हुई।

सेण्डो बनियान पहने एक लड़का दो सोड़ा बोतल लिये भीतर आया।

"अरे, कुंजन नायर···"गोविन्द कुरुप ने इशारा किया।

कुंजन नायर ने दीवार की अलमारी खोली। अलमारी में कई तरह की शराब की बोतल रखी थीं। वहीं नज़दीक में पुस्तकों का ढेर भी था।

"चलो यार व्हिस्की ही ले लो।" गोविन्द कुरुप ने कहा।

व्हिस्की की बोतल और दो गिलास मेज़ पर आ गये। फिर कुँजन नायर ने अलमारी के कोने से एक पत्ते का दोना उठाकर मेज़ पर रख दिया।

चिकन फ्राइ।

कुंजन नायर ने सोडा बोतल भी खोल दीं।

गोविन्दन कुरूप ने व्हिस्की की बोतल खोलकर एक गिलास में उड़ेली। बोतल नीचे रखकर उसने पूछा, "सोडा कुछ ज़्यादा लोगे ?"

"नहीं, कम ही रहे—"

श्रीधरन ने यह बात सामान्य मर्यादा का ख्याल करके ही कही थी।

यह सुनकर गोविन्द कुरुप हँस पड़ा।

पहले हठ करने पर भी न पीने के दृढ़ निश्चय के साथ बर्ताव किया था। फिर एक बार इस पर विचार किया—एक लखपति, वह भी मेरा आराधक और साहित्य-रसिक ! उदारमना एक मेज़बान; खुशी के साथ देने पर कैसे उसका तिरस्कार किया जा सकता है। पिताजी का स्मरण किया। दिवंगत गोपालन भैया की याद की। फिर अन्तरात्मा से भी पूछा···

फिर 'नहीं के निर्णय पर ही पहुँचा।

"मिस्टर कुरुप मैं नहीं पीऊँगा। मैंने शराब पीने के खिलाफ कविता लिखी थी। मैं खुद अपने आदर्शों को यों कैसे तिलांजलि दे दूँ···"

गोविन्द कुरुप ने मज़ाक सुनने के लहजे में हँसते हुए सिर हिलाया···"

"मिस्टर श्रीधरन, कवि और साहित्यकार कई आदर्श और सदुपदेशों को लिखते हैं। अपनी जिन्दगी में कितने लोग उसका अनुकरण कर सके हैं ?

भीमघातक गर्दन काटते समय
राम राम करुण रुदन से
ज़मीन पर तड़पते मुर्गे को देख
क्या नहीं टूटता इनसान का दिल ?

बढ़िया मुर्गे का मांस दोपहर के भोजन के साथ खाकर डकार मारते हुए दाँतों के बीच में अटके माँस के टुकड़ों को एक माचिस की तीली से हटाकर हँसते हुए ही महाकवि ने वह 'कुक्कुट विलाप' श्लोक लिखा होगा।

विदेशी बटलर कत्ल कर
खाल हटाकर नंगा कर
हा ! मसाले में पके हुए मुर्गे को
देख किसका जी नहीं ललचाता ?

गले तक सोडा डालकर व्हिस्की का गिलास श्रीधरन के हाथ में दिया। गोविन्दकुरुप की हँसी में श्रीधरन भी शामिल हो गया।

थोड़ी देर बाद गोविन्द कुरुप ने कुंजन नायर की ओर देखकर कुछ इशारा किया।

कुंजन नायर ने अलमारी से एक बड़ी किताब निकाली और गोविन्द कुरुप के हाथ में थमा दी।

अच्छे चिकने कागज़ की किताब। पुस्तक के बाहर लाल अक्षरों में लिखा गया था :

'नन्दिनी' (नया उपन्यास)। लेखक : पी० के० पी० गोविन्द कुरुप।

"मिस्टर कुरुप, इस नये उपन्यास को लिख रहे हैं ?" श्रीधरन ने व्हिस्की की चुस्की लेते हुए गिलास मेज़ पर रखकर एक अद्भुत रस का प्रदर्शन करते

हुए पूछा।

कुँजन नायर ने ही उसका जवाब दिया, "हाँ, कुरुप जी की पहली कृति है यह।"

"नन्दिनी—नाम तो अच्छा ही है।" श्रीधरन ने बधाई देते हुए कहा।

"इस उपन्यास को 'नन्दिनी' नाम देने का कारण आपको मालूम है ?" गोविन्द कुरुप ने गोल्ड फ्लेक सिगरेट का डिब्बा श्रीधरन की ओर बढ़ाते हुए पूछा।

श्रीधरन ने एक सिगरेट लेकर अपने होठों में लगा ली। गोविन्द कुरुप ने माचिस की सलाई रगड़कर सिगरेट सुलगायी।

"इस नाम के पीछे शायद आपके पुराने इश्क की दास्तान छिपी होगी !" श्रीधरन ने धुआँ छोड़ते हुए कहा।

"नहीं। मैं अपने उपन्यास में अपने प्रेम-व्यापार की नकल नहीं करता। मेरा 'नन्दिनी' उपन्यास कल्पना की ज़ारज सन्तान है।"

कल्पना की जारज संतान ! यह व्याख्या श्रीधरन को बड़ी पसंद आयी।

"एक ऐतिहासिक सत्य ने ही मुझे यह नाम देने को मजबूर किया था।" गोविन्द कुरुप ने बड़े अहंभाव के साथ कहा।

"क्या कहा ऐतिहासिक सत्य ?" चिकनफ्राइ का पंख अलग कर उसे चबाते हुए श्रीधरन ने पूछा।

"कुन्दलता—इन्दुलेखा—चन्दुमेनोन—इतिहास-प्रसिद्ध इन शब्दों का केन्द्र-बिन्दु क्या है ?—न्द—चन्दुनेनोन की इन्दुलेखा —उसी तरह भविष्य में भी और कुछ रचनाएँ प्रकाशित होंगी।

"गोविन्द कुरुप की नन्दिनी—" कुंजन नायर ने घोषणा की।

(कुंजन नायर शराब नहीं पीता। बीच-बीच में पान खाता है। मुलायम पान, बेहतर तम्बाकू, सुगन्ध मूलिका से तैयार किया गया सुपारी का मसाला आदि रखकर वह चाँदी का पानदान अपने साथ लाता है।)

कुंजन नायर एक पान उठाकर अपने नाखून से खरोंचने लगा।

"कुंजन नायर की पान में एक खास रुचि है।" गोविन्द कुरुप ने हँसते हुए कहा।

"वह क्या ?" श्रीधरन ने पूछा।

"कुंजन ही बतायेगा।"

"यह रागी पान है।" कुंजन नायर ने पान को उठाकर सिर हिलाते हुए बताया।

"क्या कहा, रागी पान ? क्या ऐसा भी कोई पान है ?"

"रागी में रखा गया पान —" नायर ने स्पष्टीकरण दिया।

"रागी में डालकर सुरक्षित रखें तो पान खराब नहीं होगा। उसे एक खास

सुगंध भी मिलेगी।"

एक नयी जानकारी हासिल हुई।

कुंजन नायर 'रागी पान' चबाते हुए गोविन्द कुरुप की फिर इन्दुलेखा और चन्दुमेनोन की बड़ाई करने लगा : "कुन्दलता —इन्दुलेखा —चन्दुमेनोन।

"नन्दिनी—गोविन्द कुरुप···" कुंजन नायर ने मंत्र जाप किया।

"अब हम उपन्यास शुरू करें।" गोविन्द कुरुप ने बड़े अहंभाव से कहा।

"हाँ—सुनेंगे।"

"प्रथम अध्याय का आरम्भ दिन के वर्णन से है।"

"कर्मसाक्षी धर्मरश्मि बिखेरनेवाले निर्मल दिवस में······" यह वर्णन इस तरह चलता है। दो पृष्ठ तक यही वर्णन है।

बीच-बीच में व्हिस्की की चुस्की लेते हुए श्रीधरन ने ध्यान से सुना। तीसरे पृष्ठ में कथा शुरू हो रही थी।

"अप्पुण्णि नायर दूर स्थित ससुराल को दिन ढलने के पूर्व ही रवाना हुआ···"

वहाँ तक ही पहुँचा था।

"कैसा लगा ?" मेजबान ने पूछा।

लगा कि कह दूं कि काढ़े का चूर्ण है। पर, कैसे यहाँ कहता ? गोविन्द कुरुप कितने ही खेतों, मकानों और हाथियों का मालिक है। एक करोड़पति जमींदार। उसने जो व्हिस्की और चिकन फ्राइ दिया था 'उसे खानेवाले' मुँह से काढ़े के चूर्ण को स्वीकार न करने से ज़रा तक़लीफ महसूस हुई। सत्य कहने का सिद्धान्त भी रुकावट ही पैदा करता है।

'आपदि किं कर्तव्यम् ? बहुत पहले सुना हुआ एक संस्कृत श्लोक याद आया। वर्षों पहले पुत्तन हाईस्कूल के नये शिक्षक ने क्लास में जो सारोपदेश सुनाया था उसकी भी याद ताज़ा हो आयी।

"सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्
न ब्रूयात् सत्यमप्रियं···"

अप्रिय सत्य नहीं कहना चाहिए।

काढ़े का चूर्ण एक अप्रिय सत्य है।

फिर क्या करूँ ? किं कर्तव्यम् ? व्हाट टु डू ?

"बताइए श्रीधरन, मेरा उपन्यास आपको कैसा लगा ?"

गोविन्द कुरुप छोड़नेवाला न था। गिलास में फिर व्हिस्की लेकर 'नन्दिनी' पर बधाई सुनने के लिए मन आतुर हो उठा था।

"मिस्टर कुरुप, मैंने अभी उपन्यास की शुरुआत की कुछ पंक्तियाँ ही सुनी थीं। पढ़ने के बाद ही अपनी राय जाहिर कर सकूँगा।"

"आपने जितनी सुनी उसके बारे में आपकी राय क्या है ?"

"कुरुप जी, उस दिन का वर्णन तो कुछ अधिक लम्बा हो गया है न ?"

गोविन्द कुरुप शेष व्हिस्की एक ही घूँट में पी गया और गिलास को मेज़ पर ज़ोर से पटककर ठहाका मारकर हँस पड़ा।

"हाँ, ऐसी आलोचनाएँ होने दो।"

कुंजन नायर ने कुछ और व्हिस्की गोविन्द कुरुप के गिलास में डाल दी।

"मिस्टर श्रीधरन, आपने एक बात पर ध्यान नहीं दिया। उसके प्रारम्भ में एक जगह 'मेषवासर' (चैत का दिन) लिखा गया है। चैतमास के दिन लम्बे होते हैं।

"मेषादौ पकलेरीटुं रात्रोऽन्नत्र कुरन्निटुं—यही प्रमाण है।" (चैत में दिन का वक्त जितना अधिक होगा, रात का समय उतना ही कम होगा।) यह कुंजन नायर की दलील थी।

"ऐसी बात है तो ठीक है।" श्रीधरन ने स्वीकार किया।

"और कुछ विकलता देखी ?" कुंजन नायर ने पूछा।

"दूर की ससुराल को दिन ढलने के पूर्व ही रवाना हुआ—इस प्रयोग के बारे में आपकी क्या दलील है ?"

श्रीधरन ने बाहर की ओर आँखें फाड़कर देखा। धुँधलका छा गया था। सूर्यास्त हुए काफी समय बीत चुका था। तभी सच्चाई का बोध हुआ।

"आप चुप क्यों हो गये ?" कुंजन नायर ने पूछा।

"प्रयोग तो ठीक ही हुआ है।" कहते हुए श्रीधरन उठ खड़ा हुआ।

"बड़ी देर हो गई मिस्टर कुरुप···फिर और कभी आपसे मुलाक़ात करूँगा।

"ज़रूर आइए। ज़रूर आना चाहिए। आपके साथ लम्बी साहित्यिक चर्चा करने के एक अवसर की मैं प्रतीक्षा करूँगा।"

"थैंक्यू मिस्टर कुरुप, एण्ड थैंक्यू यू स्पेस्ली फॉर योर सुपर्ब ट्रीस्ट—" मुहावरेदार अँग्रेज़ी में श्रीधरन ने धन्यवाद दिया। फिर मुड़कर खड़े हुए कुंजन नायर से एक सन्देह का निवारण करना चाहा।

"पान को खराब होने से बचाने के लिए आपने एक चीज़ के बारे में बताया था, क्या है वह···शारिबा ?"

"शारिबा नहीं, रागी।" ऊपर की ओर देखकर मुँह से थूक को ज़रा बाहर निकालते हुए कुंजन नायर ने बताया।

"ठीक है रागी—अँग्रेज़ी में भी 'रागी' ही कहेगा। यह विधि माँ को बतानी चाहिए। पान रागी में रखने से खराब नहीं होगा—बीटल लीव्ज़ टु बी प्रिज़र्व्ड इन रागी···"

सीढ़ी उतरकर नीचे पहुँचा। फिर सड़क की ओर मुड़ गया।

एकाएक घर की याद आयी। देर से आने पर पिताजी नज़दीक बुलाकर पूछेंगे : "श्रीधरन, अब तक तू कहाँ था?···

"क्या बताऊँगा?"

पिताजी के नज़दीक जाने पर शराब की बदबू निकलेगी। तब वे शक से मुँह पकड़कर सूँघेंगे तो? श्रीधरन ने शराब पी है। जघन्य अपराध करने पर पिताजी पीटेंगे नहीं। वे कुछ कहे बगैर सिर ऊपर उठाकर आँसू बहायेंगे—ये आँसू सल्फ्यूरिक एसिड की तरह श्रीधरन के हृदय को जला देंगे। माँ वैसी न होगी। रसोईघर में भोजन करते समय जिस पटरे पर बैठते हैं उसे उठाकर अपनी छाती पीटने लगेगी। फिर गला फाड़कर रोकर कहेगी : "लड़का शराब पीने लगा है। हाय दैया अब मैं क्या करूँ?"

गड़बड़ ही है। कैसे इन सबका मुकाबला करूँ? चापलूसी करके शराबी पिलानेवाले ज़मींदार गोविन्द कुरुप को कोसा। उसकी एक 'नन्दिनी'—कर्मसाक्षी धर्मरश्मि बिखेरनेवाला दिन भी—मिट्टी का ढेला!···ब्लडी फूल···लगा कि शीघ्र वहाँ जाकर सीढ़ियाँ चढ़कर ज़ोर से गाली बकने लग जाऊँ : अरे' महावत उपन्यासकार कुरुप, तुम ने जो-जो लिखा है वह हाथी के मल के सिवा कुछ नहीं है।' लेकिन अब जल्दी घर पहुँचना होगा। आगे स्थिति आने पर उस सच्चाई को स्पष्ट करूँगा। हाँ, यह श्रीधरन बताएगा। ईमानदार चेन्नक्कोत्तु कृष्णन मास्टर का बेटा है श्रीधरन। पश्चिमी कायल पुलिक्कल गोविन्द कुरुप को यह मालूम नहीं है···

रास्ते की एक दुकान में खड़ा रहा। पाव आने का लहसुन खरीदा। मुँह में डालकर चबा लिया। शराब की बदबू दूर हो जाय तो अच्छा है। यों लहसुन को खाकर चलते समय एक गीत गाने की मंशा हुई—

"खुशबूदार गुलाब का फूल
तू मुरझाये बगैर सूख जा
तू मुरझाये बगैर सूख जा।···"

कन्निप्परंपु के सामने की पगडंडी पर पहुँचते ही पैर काँपने लगे। तीन-चार सीढ़ियाँ चढ़कर झाँककर देखा। क्या बरामदे में दो बत्तियाँ जलाकर रखी हैं?··· हमेशा की तरह बरामदे की आरामकुर्सी में पिताजी को नहीं देखा। ज़रा तसल्ली हुई। आँगन में एक आदमी खड़ा था—बाबूजी न थे···

साहस बटोरते हुए फाटक से आँगन में पहुँचा।

"हाँ! श्रीधरन तो आ गया है···" हाथ में एक कागज़ फैलाते हुए बड़ा गपिया किट्टुण्णि खड़ा था।

"किट्टुण्णि, अरे तुम क्यों रो रहे हो?"

"एक तार आया है—कोलंब (श्रीलंका) से होगा—ज़रा पढ़िए।"

किट्टुण्णि का ख्याल यह है कि तार तभी भेजा जाता है जब किसी की मृत्यु हो जाय।

श्रीधरन ने दीपक के निकट जाकर तार का संदेश पढ़ा। कोलंबो से ही था।

"सीरियसली इल। युवर प्रेज़ेन्स रिक्वायर्ड अरजेन्टली। स्टार्ट इमीडियेटली। सेण्डिग टू हण्ड्रेड—पंगन।"

किट्टुण्णि के कोलंबो (श्रीलंका) के मामा का तार है। तार का समाचार सुनाया: सख्त बीमारी है—किट्टुण्णि को झट पहुँचना चाहिए। फौरन रवाना होना चाहिए। दो सौ रुपये भेजे हैं···लगा कि तार की सूचना मिलने पर किट्टुण्णि की दायीं आँख से आँसू और बायीं आँख से हँसी निकल रही है।

किट्टुण्णि का पंगन मामा अठारह साल पहले कलाल बनकर कोलंबो गया था। उसने अपनी कोशिश से ढेर सारे रुपये जमा किये। धीरे-धीरे वह एक आबकारी ठेकेदार के रूप में तबदील हो गया। अब चार-पाँच ताड़ी की दुकानें हैं। एक सिंघल औरत से शादी की थी, पर कोई औलाद नहीं है।

किट्टुण्णि कोलंबो जाने की लम्बे अर्से से चाह कर रहा था। पर, कोलंबो का मामा अनुमति नहीं दे रहा था।

अब तो वहाँ जाने का अनुरोध और पैसे आ पहुँचे हैं। उसका भाग्य खुल गया है।

"मेरे कोलंबो पहुँचने के पहले मामा मर जाय तो···?" किट्टुण्णि ने अपना शक ज़ाहिर किया।

"किट्टुण्णि मरेगा, नहीं-नहीं।" श्रीधरन ने दृढ़ता से कहा, "कल ही गाड़ी से चले जाओ। वहाँ जाने के बाद मामा की ताड़ी की दूकान, जायदाद, फिर वह सिंघल औरत को भी हथिया लेना। समझे···"

यह सुनकर किट्टुण्णि गधे की तरह हँस पड़ा। तार माँगकर उसने अपनी कमर में खोंसा और कुछ कहे बगैर चला गया।

"माँ, बाबूजी कहाँ गये?" श्रीधरन ने पूछा।

माँ ने रसोईघर से कहा, "तुम्हें नहीं मालूम?" और फिर ज़ोर से बोली, "शाम को मूलिप्परंबिल गोविन्दन मास्टर की मृत्यु हो गयी है। बाबूजी उधर ही गये हैं।"

केकड़ा गोविन्दन चल बसा!

श्रीधरन ठट्ठा मारकर हँस पड़ा।

मौत की बात सुनकर नहीं हँसा था। केकड़ा की मृत्यु के क्षण पर विचार करके ही हँस पड़ा था। ज़िन्दा रहते हुए उस इन्सान ने हर किसी के साथ दुर्व्यवहार ही किया था। मरते समय उसने बस, एक पुण्य कार्य किया। श्रीधरन के पहले-पहल शराब पीकर आने के मुहूर्त में ही उसकी मृत्यु हुई है।—केकड़ा, तुझे

ज़रूर स्वर्ग मिलेगा। (हँसी) खाने लिए कई स्वर्ण मछलियोंवाले तालाब के किनारे की गुफा में भगवान तुझे एक जगह देगा (हँसता है) तूने ज़िन्दगी में एक ही पुण्य किया—उसके फलस्वरूप। समझे···(हँसता है)।

"अरे, तू क्यों शराबियों की तरह बकझक कर हँस रहा है?" माँ ने रसोईघर से ज़ोर से पूछा।

यह सुनने पर श्रीधरन फिर ठट्ठा मारकर हँस पड़ा।

## 25. नशे में

अगले दिन सुबह जब श्रीधरन जागा तो उसे अपने शरीर में एक अजीब आलस्य और खोपड़ी में सफेद धुएँ की तरह एक धुँधलापन महसूस हुआ। थोड़ी देर बाद मालूम हुआ कि गोविन्द कुरुप की ह्विस्की की करामात है।

नीचे के बरामदे में पिताजी किसी से ज़ोर से बातचीत कर रहे थे।

"आप लोगों को मालूम है कि मूलिप्परंबिल गोविन्दन ने अपनी मृत्यु तक मुझसे वैर-भाव से ही बर्ताव किया था लेकिन मुझे उससे कोई वैर या घृणा नहीं है। मैं जानता हूँ कि दूसरों की नुक्ताचीनी करना ही उसका पेशा था। वह तो मन की एक बीमारी है। गोविन्दन की मृत्यु का समाचार पाकर सबसे पहले मैं ही वहाँ गया था। लोगों को समझाकर वहाँ से जल्दी वापस नहीं आ गया था, गोविन्दन को म्युनिसिपल श्माशान में ले जाते समय भी मैं साथ गया था। उसकी चिता में आग लगाते वक्त तक मैं वहीं था। शवदाह के बाद कल यहाँ वापस आने पर आधी रात बीत गयी थी···

"पिताजी, केकड़ा गोविन्दन के जलकर राख होने तक आपने वहाँ इन्तज़ार किया। अच्छा ही किया।" श्रीधरन बिस्तर पर ही अपने आपसे बोल रहा था। वह अकेले ही हँस पड़ा···"

"श्रीधरन···"

पड़ोस के घर के बरामदे से धर्मराज्य अय्यंगर की पुकार थी। पाँच दिन पहले सरस्वती अम्माल ने कहा था कि अब चार दिनों के लिए फूलों की ज़रूरत नहीं है। समझ गया था कि वह रजस्वला होगी।

बिस्तर से उठकर, नीचे जाकर मुँह धोया। बाग से कुछ फूलों को तोड़कर केले के दोनों में रख दिया। माँ से छह अण्डे लेकर एक पुरानी फूलों की टोकरी में रखे। फिर अय्यंगर के घर की तरफ़ चला।

अय्यंगर ने बरामदे से ही अण्डे की टोकरी ले ली: "गो अपस्टेयर्स श्रीधरन, सरस्वती इज़ वेटिंग फॉर योर फ्लावर्स टु ऑफर पूजा" कहते हुए पट्टर रसोईघर की तरफ़ चले गये।

सरस्वती अम्माल ऊपर सीढ़ी के नजदीक इन्तजार कर रही थी। ऋतु-स्नान के बाद शुद्धि और खूबसूरती के कारण बगीची की तरह शोभायमान सरस्वती अम्माल को देखकर श्रीधरन की आँखें भ्रमर बन गयीं···भीतर में एक गूंज हुई। एक ठण्डी साँस खींचकर ही फूलों को उसके दोनों हाथों में दे दिया था।

फूलों का दोना लेती हुई सरस्वती अम्माल अचानक मुँह सिकोड़कर श्रीधरन की ओर जुगुप्सा भाव से देखती वहीं सकपकाती खड़ी रही।

श्रीधरन हक्का-बक्का रह गया।

श्रीधरन समझ गया कि शराब की गन्ध ने ही सरस्वती अम्माल के मन में नफ़रत पैदा की है। ठण्डी साँस के साथ ही वह बदबू बाहर निकल गयी थी। बारह घण्टे भर बाद भी ह्विस्की की बदबू गले से हल्के-फूलके रूप में निकल रही थी। शायद सरस्वती अम्माल की लम्बी नाक की घ्राण शक्ति ही हो कि वह बात ताड़ गयी। गोविन्द कुरुप की ह्विस्की के करिश्मे के बारे में फिर क्या कहना है! भाग्य से पिताजी और चालाकी से माँ से मद्यपान का रहस्य छिपा रहा आया था। पर, एक भद्र महिला की नाक के सामने उसका भेद खुल गया।

सरस्वती अम्माल ने कुछ नहीं कहा। हालांकि उसके मौन भाव और उसकी जुगुप्सा-भरी नज़र ने एक लानत-मलामत महाकाव्य के भाष्य की रचना कर डाली थी।

साँस रोककर झट सीढ़ी से उतरकर नीचे पहुँच गया। रसोईघर से आमलेट भूनने की महक आ रही थी।

चार दिन बीत गये।

वह रविवार था। सुबह को म्युनिसिपल ग्रन्थालय में बैठकर 'वाइड वर्ल्ड' मासिक पढ़ा। बाहर आते-आते बारह बज गये थे। 'महालक्ष्मी विलास' होटल के सामने पहुँचने पर भावी उपन्यासकार गोविन्द कुरुप का स्मरण हो आया।

क्या वह उपन्यास को पूरा लिखकर चला गया? उस दिन की घटना के बाद उधर नहीं गया था। ज़रा उसका पता लगाने की इच्छा हुई।

सीढ़ी चढ़कर पहले नम्बर के कमरे के सामने गया। एक बार झांककर देखा। लगा कि भीतर एक ट्यूटोरियल क्लास चल रही है।

दीवार के नज़दीक एक मेज के पीछे बैठकर कुंजन नायर उपन्यास पढ़ रहा था। कुर्सी, पलंग और जमीन की चटाई पर कई पोज़ों में बैठे चार-पांच आदमियों का ध्यान उस ओर लगा हुआ था। शायद वे ध्यान देने का ढोंग कर रहे थे। भविष्य का नॉवलिस्ट पश्चिम का कायल पुलिक्कल गोविन्द कुरुप ताड़ी पीकर उन्मत्त होनेवाले जंगली जानवर की तरह मेज पर सिर रखकर लेटा हुआ था।

बीड़ी और सिगरेट के टुकड़े ज़मीन पर बिखरे पड़े थे।

श्रोतागण अर्ध बेहोशी की हालत में थे। कुछ लोग आँखें खोले बिना, बीच-

बीच में 'हाँ-हाँ' कह रहे थे। कुछ-एक 'वाह वाह !' कह उठते थे।

कुंजन नायर 'नन्दिनी' के 'दिन' का वर्णन दुहराने लगा।

'मेज़बान बेहोशी की हालत में हैं। सभी सदस्य अजनबी हैं ! फिर यहाँ मैं क्यों खड़ा होऊँ ?' श्रीधरन शंकालु बना खड़ा रहा। 'कर्मसाक्षी धर्मरश्मि' बिखरनेवाले निर्मल वासर में नाचनेवाली कुंजन नायर की आँखों ने श्रीधरन पर ध्यान नहीं दिया।

कमरे से अटैच बाथरूम को देखने पर वहाँ जाने की इच्छा हुई। उसका दरवाज़ा खोला। अन्दर पैर रखने पर दीवार पर लगे बेसिन का दृश्य देखा। बेसिन में पान सुपारी के थूक पर किसी ने उलटी कर दी थी। रूक्ष गन्ध नाक में घुस गयी।

सिर्फ एक बार ही देखा। नाक-मुंह दबाकर चेहरे को झट मोड़ लिया। लगा कि उसे भी उलटी हो जायेगी। वह झट सिर और छाती को सहलाते हुए पढ़ने के कमरे में गया।

"कौन है ? अरे श्रीधरनजी ! आइए पधारिए······।" गले की रुद्राक्षमाला पकड़कर उसे ज़रा सहलाते हुए कुंजन नायर ने श्रीधरन की अगवानी की।

एक खाली कुर्सी पर श्रीधरन बैठ गया। कितनी अधिक कोशिश करने पर भी वाशबेसिन की उलटी का दृश्य मस्तिष्क में उभरकर आ ही गया। शराब की उलटी की बदबू भी नाक से हटती न थी।

"श्रीधरन, यहाँ की सारी चीज़ें खतम हो गयी हैं, फिर भी तुम्हें खाली हाथ कैसे लौटा सकूँगा···"

कुंजन नायर ने दीवारवाली अलमारी को देखा।

ऊपरी भाग में स्टार्स से चिह्नित विदेशी शराब की बोतलें सेवा से निवृत्त सिपाहियों की तरह दिखाई दे रही थीं। सब की सब खाली हो चुकी थीं। कुंजन नायर ने एक कोने में छिपी एक सफेद बोतल बाहर निकाली। देहाती शराब थी। उसने उसे एक गिलास में उड़ेलकर श्रीधरन के हाथ में थमा दी।

उबकाई दूर करने के लिए ज़हर पीने को भी श्रीधरन तैयार था। शराब में सोड़ा या पानी मिलाने का ख्याल न रहा। पूरी की पूरी गटागट पी गया।

"आदमी तो बड़ा होशियार है।" कुंजन नायर ने राय प्रकट की।

सभासदों में दो-एक ने आँखें फाड़कर श्रीधरन की तरफ़ देखा। हलकी प्रतीक्षा के साथ कुंजन को भी निहारा।

"छिपकली के पेशाब के सामान एक बूंद ही बोतल में है।" कुंजन नायर फुसफुसाया। खाली गिलास और बोतल अलमारी में रख दिये। पढ़ाई जारी रखी।

"अप्पुण्णि नायर दूर की ससुराल को दिन ढलने के पूर्व ही निकल पड़ा···"

श्रीधरन ने सिर हिलाया। इतना उसने पहले भी सुन रखा था। फिर क्या

घटित हुआ ?

कुंजन नायर ने पढ़ना बन्द कर दिया। "इतना ही लिखा था।" फिर गले की रुद्राक्षमाला सहलाते हुए पूछा, "यह प्रयोग कैसा लगा ?"

"किसी ने भी जवाब नहीं दिया। शराब नहीं तो बहस का भी भला कोई प्रयोजन ? एक-एक होकर सभी धीरे से उठकर खिसक गये। सिर्फ श्रीधरन ही वहां बैठा रहा।

भावी नॉवलिस्ट गोविन्द कुरुप भी तब योग-निद्रा में था।

बेचारा अप्पुण्णि नायर ! श्रीधरन ने स्मरण किया। दूर की ससुराल में कई दिन-रात गुजर गये। पर वहां से एक कदम भी आगे नहीं जा सका ! क्योंकि नॉवलिस्ट गोविन्द कुरुप को आज तक अवकाश ही नहीं मिला। आराधकों की इतनी अधिक भीड़-भाड़ जो थी।

"कितने दिन यहां ठहरेंगे ?" श्रीधरन ने अन्वेषण किया।

"कल सुबह हम चले जायेंगे।" कुंजन नायर ने औपन्यासिक कृति संदूक में रखी। "आज रवाना होने का विचार था। नहीं जा सके। 'नन्दिनी' सुनने की आकांक्षा से कई आराधक इधर आ गये। फिर हम क्या करते ? कैसे हम उन्हें निराश लौटाते ?"

"वह तो एहसान-फरामोश होना होगा।" श्रीधरन ने कहा होगा।

वहां उपस्थित महाशयों में अधिकांश उपन्यास सुनने के लिए नहीं, बल्कि 'महालक्ष्मी विलास' के प्रथम कमरे में जाकर मुफ़्त शराब पीने के साध से ही आये थे। यह बात कुंजन नायर जानता था, लेकिन दोनों ने यह बात आपस में नहीं कही।

श्रीधरन उठ खड़ा हुआ।

"मिस्टर गोविन्द कुरुप के जाग जाने पर मैं इधर आऊँगा। मेरे यहां आने का समाचार बताने की मेहरबानी करें। अच्छा फिर मिलेंगे—।"

"श्रीधरन को जरूर आना चाहिए।" चेनक्कोत्तु श्रीधरन की साहित्यिक रचनाओं के बारे में गोविन्द कुरुप हर रोज कहा करते थे।

"वेरि गुड !" कुंजन नायर ने पान की तश्तरी सामने रख दी। उसने एक पान उठाकर सूंघा।

रागी पान होगा। बीटल लीव्ज प्रिजर्व्ड इन रागी···

'महालक्ष्मी विलास' होटल से उतरा। अब कहाँ जाना है ? थोड़ी देर तक सोचा। इस तरह घर नहीं जा सकूंगा। म्युनिसिपल पार्क में जा बैठना चाहिए।

सीधे पार्क की तरफ़ चल दिया।

पार्क के नज़दीक के तालाब से मुस्लिम मजदूर तांबे के बर्तन में पानी भरकर उसे फिर पीपों में भर रहे थे। दूसरे एक कोने में, कौवे नहा रहा थे। बाग सुन-

सान था ।

पहरेदार के कमरे में कोई लेटा हुआ था । माली पोक्कन मिस्तरी ही होंगे ।

फूलों के पौधे सिर झुकाकर बिना हिले-डुले खड़े हैं । शायद ये सोते होंगे। पौधे दोपहर को ही सोते हैं ।

सूर्यमुखी-फूले नहीं समाते हैं । वे रात को ही सोते हैं ।

अदालती कवि पप्पु भैया के कोने में एक आवारा कुत्ता चैन से सो रहा था। पप्पु भैया की सुप्रसिद्ध कविता 'ऑडिटर' का स्मरण कर हँसी आ गयी ।

"भादों महीने का कुत्ता···" निशागन्धी के झुण्ड के बीच से एक गोधिक चल रही है । वह मुनि शाप से अभिशप्त एक कन्या थी । पुराने ज़माने में एक युवती शरीर में तेल लगाकर एक तौलिया पहनकर नहाने के लिए नदी-तट पर जा रही थी । उस समय एक मुनि ने उस खूबसूरत युवती को देखा । मुनि की आँखें चार हो गयीं । लेकिन युवती ने मुनि की बातें नहीं मानी । तपस्वी ने जबर्दस्ती उसके वस्त्र उतार दिये । बेचारी नग्न देह लिये वन में भाग गयी । उस समय कामांध मुनि ने उसे शाप दे दिया । वह एक गोधिक हो गयी !···किसने मुझे यह कहानी सुनायी थी ? हाँ दिवंगत चात्तुण्णि ने ही तो ···।"

निशागंधी एक अभिसारिका है । वह दिन भर सोती है। साँझ होते ही सज-धजकर सुगन्ध लगाकर लोगों को आकृष्ट करती है ।

निशागंधी के नजदीक से अशोक वृक्ष के फूलने-फलने का दृश्य कितना सुहावना है । कन्निप्परंपु के बाग में एक अशोक वृक्ष के पौधे को लगाना चाहिए ।

अशोक की छाया में बैठकर उद्यान की शोभा निरख सकते हैं···जाती और मालती आपस में इस निकुंज में गले मिलते हैं ।

गेट को पारकर कौन आ रहा है ? उपदेशी है । वह वाटर टैंक के नीचे से प्रार्थना करने आया है । दोपहर को वाटर टैंक के नीचे ठण्डापन रहता होगा। अरे, उपदेशी तुम प्रार्थना करो । ईसा मसीह की प्रार्थना करो—स्वर्ग मिलेगा ।

झुलसानेवाली इस दोपहर में, पार्क में कितने आदमी हैं ? एक, पहरेदार के कमरे के बरामदे में वातरोग से पीड़ित अपने पैरों को मोड़कर लेटनेवाला माली पोक्कन मिस्तरी । दो, वाटर टैंक के नीचे हाथ जोड़कर, सिर झुकाये हुए, ईसा मसीह की प्रार्थना करनेवाला उपदेशी । तीन, जाती के पेड़ और मालती की लताओं के मंजुल निकुंज की शीतल छाया में विश्राम लेनेवाला महाकवि चेनक्कोत्तु श्रीधरन···

श्रीधरन, तूने पी है । अच्छी देहाती शराब पी है । शराब सच ही बोलती है । जी हाँ, लिकर ऑलवेज स्पीक्स दी ट्रूथ । अपराध को प्रमाणित करने के लिए पुलिस अधिकारियों को परेशान होने की ज़रूरत नहीं है । अपराधियों को शराब पिलानी चाहिए । मद्य भीतर घुसता तो सत्य ही बाहर निकलता । लिकर गोज इन एण्ड आउट कम्स दि ट्रूथ···

अरे, शराब तेरा भी एक व्यक्तित्व है। चोरी, व्यभिचार आदि पापों को रंगे हाथों नहीं पकड़ा जाय, तो फिर उन्हें छिपाया जा सकता है। पर शराब, तू ऐसी नहीं है। शब्दों से, बदबू से, बर्ताव से नहीं तो उलटी से, तू अपनी शक्ति और ऐश्वर्य को बाहर प्रकट किये बिना नहीं रहती···

तभी गोविन्द कुरुप के होटल-बाथरूम के वाश बेसिन के मध्य की उलटी का स्मरण हो आता। उसका भी बदबूदार मलिनता का अपना व्यक्तित्व है।

माइनर अपराध क्या-क्या हैं? झूठ, व्यभिचार, मद्यपान—क्या शराब पीना एक अपराध है? इज ड्रिंकिंग ए क्राइम? नहीं मालूम—इज इट टु बी पनिश्ड? डांण्ट नो——क्राइम एण्ड पनिश्मेन्ट? हू रोट इट?—दि ग्रेट दोस्तोविस्की —ह्विस्की—ह्विस्की—ह ह ह!

नदी में नहाने के बाद आनेवाले मन्द पवन के चुम्बन का ठण्डा आश्लेष—कितनी खुशी है! एक गीत गाने की साध होती है। बचपन में, ओनम के दिनों मे, इलंजिपोयिल के जंगलों में साथियों के साथ फूल तोड़ने के लिए जाने पर सुने हुए एक गीत का स्मरण हो आया :

> छोटे ओनम की रात को—
> छोटे ओनम की रात को—
> चेरियम्मु युवती के
> दोनों स्तन देखे नहीं
> बाबूजी रोते हैं
> माताजी रोती हैं—
> मामा का लड़का तो
>         रोता है फफक-फफक
> बड़े ओनम के आगामी दिन—
> तड़के में देखते हैं
> दोनों स्तन, आँगन की
> इमली की डाली पर।
> बाबू जी हँसते हैं
> माता जी हँसती हैं
> मामा का बेटा तो
> झट कूद पकड़ लेता है···

सड़क पर क्यों हल्ला-गुल्ला हो रहा है? पार्क के कोने में जाकर देखा। सड़क से एक इक्कावान खाली ग़ाड़ी खींचता हुआ आगे बढ़ रहा था। तीन-चार आदमी उस दृश्य को देखकर हंस रहे थे।

पहले वह तमाशा मालूम नहीं हुआ। तब एक युवक ने उत्सुकतावश पूछा,

"अभी यहाँ क्या हुआ था ?"

श्रीधरन ने उनकी बातचीत पर ध्यान दिया।

"इक्कागाड़ी में चढ़ने पर पैसा नहीं देगा तो वे कैसे चढ़ाएंगे ?"

"किसके बारे में कह रहे हैं ?"

"वहाँ खड़ा है मशहूर कुंजिक्केलु मेलान—'

श्रीधरन ने देखा। मैली शर्ट और धोती पहने एक व्यक्ति। हाथ ऊपर उठाकर एक पत्थर की प्रतिमा की तरह कुंजिक्केलु मेलान सड़क पर खड़ा था।

"इक्केवालों को देने के लिए क्या मेलान के हाथों में पैसे नहीं हैं ?"

"जो पैसा मिलता है वह शराब की दूकान में दे देता है। फिर इक्के में चढ़ने के लिए पैसे कहां से बचेंगे ?"

"इक्के में चढ़ने का विचार छोड़ना ही होगा।"

"हाँ, लेकिन वह कैसे सम्भव होगा ?" बारह लाइट की कार में उड़नेवाला मेलान पैदल कैसे चल सकता है। पीलपा भी है। फिर कैसे वह चलेगा ?"

ठट्ठा मार हँसने की आवाज गूंज उठी।

मेलान अकड़ के साथ तब भी खड़ा था। बायें पीलपा पैर को ढककर एक पुरानी धोती पहन रखी थी। चेचक के धब्बों से भरे चेहरे में मुर्दा आँख को ढकने वाला चश्मा कहाँ गया ?

मेलान थोड़ी देर उधेड़बुन में खड़ा रहा। फिर पीलपा को धीरे-धीरे रख कर चलने लगा। पार्क के कोने से उत्तर की ओर चला गया।

मेलान के चले जाने पर उस कोने में खड़े एक आदमी ने कहा, "समुद्र की तरह विशाल घराने को पीनेवाला मद्य-पिशाच ही जा रहा है।"

श्रीधरन ने उस राय को प्रकट करनेवाले आदमी की ओर दृष्टि डाली। दाहिनी ओर चोटी और बायें कन्धे पर तौलिया डाले एक बुजुर्ग था।

उस बुजुर्ग की बातें श्रीधरन के मस्तिष्क में तीर की तरह चुभ गयीं। 'समुद्र की तरह विस्तृत घराने को पीनेवाला मद्य-पिशाच !'···

## 26. वनवास

इण्टर के इम्तहान का नतीजा मालूम हुआ।

श्रीधरन तीसरी बार फेल हो गया है। (बाद में मालूम हुआ कि अब की बार फिजिक्स ने ही धोखा दिया था।)

मन को बेधनेवाली निराशा और आत्मनिन्दा की कटुता अब नहीं थी। लगता है, हार के काँटों की धार उतनी तेज नहीं रही।

पर, श्रीधरन के दिल को गहराई से चोट करने की एक घटना अगले दिन ही

हुई। 'छतरी की छड़ी' बालन का निधन।

बालन अपने शरीर के बाकी खून को बाहर पंप करने के बाद चल बसा।

इम्तान में फेल होने के बाद फिर बैठने और शायद पास हो जाने की क्षमता अब भी है। लेकिन कितनी भी कोशिस क्यों न करें, स्वर्गस्थ बालन को इस दुनिया में वापस नहीं लाया जा सकता। अज्ञात अनन्तता की ओर मनुष्य-कोटि के महा-प्रयाण में बालन भी ओझल हो गया···

जब बाबूजी को मालूम हुआ कि श्रीधरन भी फेल हो गया है तब उन्होंने कुछ नहीं कहा। श्रीधरन ने बड़ी लगन से अध्ययन कार्य किया था—यह बात बाबूजी को मालूम थी। पट्टर की ट्यूशन भी लगायी थी। दुर्भाग्य से ही हार गया। मास्टर को भय था कि परीक्षा में फेल होने की निराशा में श्रीधरन कुछ-न-कुछ कर बैठेगा! इसलिए श्रीधरन को पास बुलाकर यों समझाया:

"जन्मपत्री के अनुसार, तुम्हारा समय बुरा है। उण्णिप्पणिक्कर से मैंने तुम्हारी जन्मपत्री की जाँच करायी थी। उसने कहा था कि इस बार परीक्षा में पास होना मुश्किल होगा। इसलिए तुम्हें घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है—"

ज्योतिषी पर पिताजी के विश्वास ने श्रीधरन को बचाया। अगर उण्णिप्प-णिक्कर के वचन के विरुद्ध श्रीधरन परीक्षा में पास हो जाता तो कृष्णन मास्टर ज़रूर घबराते। कृष्णन मास्टर को ज्योतिष में इतना अधिक भरोसा है।

"बाबूजी, क्या मैं कुछ दिन के लिए इलंजिपोयिल में जा कर रहूँ?" श्रीधरन ने पिता की अनुमति माँगी तो उन्होंने कोई विरोध प्रकट नहीं किया।

मन की शांति के लिए कहीं कुछ दिन रहने की श्रीधरन की इच्छा थी। उसके लिए अनुकूल जगह इलंजिपोयिल ही थी।

अतिराणिप्पाटं से अचानक चल देने की प्रेरणा देनेवाली बातों में परीक्षा में फेल हो जाने की शर्म से सरस्वती अम्माल से मिलने की विमुखता भी एक वजह थी।

सरस्वती अम्माल और श्रीधरन में एक तरह का गुरु-शिष्य सम्बन्ध हो गया था।

भावी नॉवलिस्ट गोविन्द कुरुप ने जो विह्स्की भेंट की थी उसकी बदबू श्रीधरन के मुँह से सरस्वती अम्माल की नाक में घुस गयी थी। उस दिन से थोड़े दिनों के लिए श्रीधरन उस अय्यंगर महिला की आँखें बचाकर दिन काट रहा था। पूजा के फूलों को तोड़कर दोने में भरकर बरामदे में रखने के बाद वह चुपचाप गायब हो जाता। वह धर्मराज अय्यंगर के ट्यूशन के लिए भी नहीं जाता। वह बातें बना देता कि उसने सब कुछ स्वयं पढ़-समझ लिया है।

यों एक-दो हफ्ते बीत गये।

एक दिन फूलों की टोकरी ले जाने के समय अय्यंगर नहाने के लिए तैयार

होकर बरामदे में खड़े थे। श्रीधरन को देखने पर उन्होंने बहन को पुकारा। 'सरस्वती, श्रीधरन वान्दिरिक्कु' (सरस्वती, श्रीधरन आया है।)

सीढ़ियों के निकट से सरस्वती अम्माल की पदचाप सुनी। श्रीधरन का दिल अचानक काँप उठा।

सरस्वती अम्माल दरवाजे पर खड़ी थी।

"श्रीधरन, सरस्वती सेज़ शी वांट्स टु लर्न मलयालम। यू मस्ट टीच हर टु रीड एण्ड राइट मलयालम···"

गुरु अय्यंगर का आदेश—अपनी बहन को मलयालम सिखाने का!

श्रीधरन ने सरस्वती अम्माल के चेहरे की तरफ़ उत्सुकता से देखा। सरस्वती अम्माल के चेहरे पर मुस्कान थिरक रही थी।

श्रीधरन का हृदय खुशी के मारे धड़कने लगा।

(ऐसी हालत से उस पवित्र विधवा को उस दिन मुझ से जो घृणा हुई थी वह अब विलुप्त हो गयी है। बहन को मलयालम सिखाने के लिए अय्यंगर ने अपने आप नहीं कहा होगा। उसने जरूर कहलाया होगा···)

"हाँ, मैं तैयार हूँ।" श्रीधरन ने उसकी बात मान ली। फिर बेवकूफ़ की तरह हँसते हुए कहा, "आइ वाण्ट टु लर्न तमिल—दिस विल बी ए गुड अपॉरचु-निटी···"

"वेरि गुड!" अय्यंगर ने अपने मुंह के चाँदी की पतीली-से बड़े दाँतों को बाहर निकालते हुए कहा, "देन बोथ ऑफ यू केन गिव म्यूच्वल लेसन्स।"

इस प्रकार मलयालम पढ़ने में सरस्वती अम्माल श्रीधरन की शिष्या बन गयी—इधर तमिल पढ़ने में श्रीधरन सरस्वती अम्माल का शिष्य बन गया।

उस तमिलवाली से 'प' और 'ना' का ठीक तरह से उच्चारण कराने में कुछ कठिनाई महसूस हुई। कुछ विकृत वाक्यों को बनाकर सरस्वती अम्माल की जीभ और गले में एक लुब्रिकेशन बना दिया।

सरस्वती अम्माल का तमिल-शिक्षण दार्शनिक बातों से भरा था। 'तिरुक्कुरल' और 'पुरनारुरु' आदि से वह उद्धरण प्रस्तुत करती।

श्रीधरन को तमिल की दो पंक्तियाँ मालूम थीं। कुछ दिनों पहले देहात के कोने से रावुत्तर मौलवी ने 'आट्टेयुं काट्टेयुं नंपलाम् अन्त···' नामक एक गीत गाया था। वह गाकर अपने तमिल ज्ञान को सरस्वती अम्माल के सामने प्रकट करना चाहा। पर, श्रीधरन को लगा कि उस पद्य की आख़िरी पंक्ति कुछ खतरनाक है।

श्रीधरन पहले-पहल ही एक युवती से यों निकट का वर्ताव कर रहा था।

एक बार श्रीधरन ने 'ई' नामक तमिल लिपि को गलती से 'ऊ' लिख डाला तो सरस्वती अम्माल ने पेन्सिल से श्रीधरन के अँगूठे को जरा दबा दिया। गुरु का दण्ड! उस मृदुल दण्ड ने श्रीधरन के हृदय में नयी गदगुदी पैदा कर दी।

उसने प्रार्थना की कि सरस्वती अम्माल पेन्सिल से उँगली दबाने की जगह बेंत से पीठ पर मारती तो कितना अच्छा होता !

मलयालम में पेन्सिल से नकल करने के लिए सरस्वती ने कुछ लिखा। अँगुलियाँ पतली अग्निज्वाला-सी कागज़ पर हिल रही थीं। लगा कि छूने पर जल जाएगा। उस चेहरे में पूर्ण-चन्द्र की तरह प्रशान्त ज्योति छिटक रही थी…उस पुण्य लावण्य में नयन पूजा कर वह निवृति पा रहा था…

इस प्रकार सरस्वती अम्माल के सान्निध्य को हृदय में दिव्य ज्योति के रूप में प्रकट होने के दिनों में ही श्रीधरन वनवास के लिए इलंजिपोयिल रवाना हुआ। इलंजिपोयिल के आकार-विस्तार में समय कई ज्यादतियाँ कर चुका था। पुराने ज़माने में दो टीलों के बीच फैला हुआ वह कृषक-साम्राज्य आज तबाही की हालत में था। पूर्व दिशा के खेत दूसरों के अधिकार में थे। विदेशी पक्षी पहले जिस झील में आकर विहार करते थे, उसे पाट दिया गया था और वहाँ चावल की खेती की शुरुआत की गयी थी।

छठे खेत के ऊपर के जंगल का एक हिस्सा काजू के बाग में परिवर्तित हो गया था।

इलंजिपोयिल घराने की जमीन सिर्फ़ चार खेतों में सीमित रह गयी थी।

जिस चारागाह में गाय-बैल पागुर करते थे, वह भी दिखाई नहीं दिया। उस जगह अब घास-फूस बढ़ रहा था।

लेकिन आँगन के मौलसिरी पहले की तरह ही अब भी पुष्प-वृष्टि करते हुए वहीं खड़े थे !

दोपहर को श्रीधरन छठे खेत की ओर घूमने निकला।

छठे खेत के उस पार नये काजू का बाग है। बाग की सीमा में उसके मालिक ने काँटेदार बाड़ से रास्ता रोक लिया है।

चन्दोमन के कोने की तरफ़ निगाहें घुमायीं। चन्दोमन और तिरुमाला की दास्तान स्मृति में नाच उठी।

प्रेम की दास्तान कभी पुरानी नहीं होती। (पुरानी होने पर प्रेम-कथाएँ सुनने पर ताज़ी ही लगती हैं। किसने ऐसा विचार प्रकट किया था ? लगता है, जर्मन कवि हेरिचुहीन का ऐसा कथन था।) नये बाँसों के झुरमुट ने उस कोने को ढक लिया है। करुणामयी प्रकृति ने अपने हरे रेशम से युक्त एक पंडाल चन्दोमन के गड्ढे के ऊपर लगा दिया था।

बाँस के जंगल से एक मधुर कूजन सुनाई दिया। शायद मैनाओं का प्रेम-गीत होगा।

वाड़ी के नज़दीक की सूखी घास पर एक हरकत महसूस हुई। एक साँप सरक रहा था—बड़ा काला नाग। वह चन्दोमन के कोने के बाँस के जंगलों में ही सरकते

हुए चला जा रहा था। शायद वहीं उसका बिल होगा। चन्दोमन और काला नाग एक ही छत के नीचे निवास कर रहे हैं। उण्णिक्कुट्टि भी साथ होगा। मुस्लिम दंगे में शरणार्थिनी होकर इलंजिपोयिल रहनेवाली अम्मान्न अम्मा का लाडला लड़का उण्णिक्कुट्टि। अब तो काला नाग उण्णिक्कुट्टि का खिलौना बन गया होगा।

फुलवाड़ी के नज़दीक के कुछ पौधों में फूल खिले थे। एक मधुमक्खी फूल से शहद संचित कर रही थी। श्रीधरन उत्सुकता से देखता रहा। मक्खियों का मधु-शोषण देखने में आनन्द आता है। एक मधुमक्खी अपने शरीर से दस गुना अधिक शहद हर रोज़ कमाती है। आधा किलो शहद संचित करने के लिए फूलों और शहद के छत्तों में सैंतीस हज़ार बार उड़ती है —इस हिसाब की याद मन में ताजा रहने का क्या कारण है। वह एक रोचक बात है। रोचक बात कभी नहीं भुलायी जाती। दुखद बातों को भूलने की चेष्टा करनी चाहिए। लेकिन 'छतरी की छड़ी' बालन की मृत्यु की घटना भूलने की कितनी ही कोशिश करने पर भी वह भूल नहीं पाता। पुलिस की मार से ही बालन चल बसा था, ऐसा विचार आते ही छाती में साँप डसने की-सी पीड़ा महसूस होती है।

तभी आम के बगीचे से कल-कल नाद सुन पड़ा। वह चिड़ियों की चहचहाहट नहीं थी।

श्रीधरन ने बाड़ के नज़दीक से छिपकर देखा : एक बड़े आम के पेड़ के पत्तों के झुरमुट से एक यक्षी प्रकट हुई ! एक मोटी मध्य वयस्क मुस्लिम महिला ! वह पर्दे को अपने सिर पर डालकर कुछ न कुछ बकते हुए बाग से पूर्व दिशा की ओर चली गयी।

हरे पत्तों के शामियाने में उसका गन्धर्व विश्राम करता होगा।

दोपहर को काजू के बाग में ठण्डी छायाओं की दौड़-धूप होती है। आम्र-वृक्ष से सूखे पत्ते झड़कर ज़मीन पर प्रेमी-प्रेमीकाओं के लिए अच्छी सेज बिछा देते हैं। प्रेमियों के गुप्त मिलने के लिए यह जगह काफ़ी अनुकूल है।

इस खोल से वह हल्का धुआं उड़ रहा है। शायद गन्धर्व बैठकर चैन से धूम्र-पान करता होगा। उसे एक दफा देखना चाहिए। लेकिन क्यों ?···बस यों ही सिर्फ़ एक बार देखने भर के लिए। शायद परिचय नहीं होगा। नयी पीढ़ी का प्रति-निधि जो होगा।

बड़ी देर तक इंतजार करने पर भी वह बाहर आता नजर नहीं आया। फिर मालूम हुआ कि काजू की झाड़ियों की ओट से वह उत्तर दिशा की ओर बढ़कर उस पार जंगल में अप्रत्यक्ष हो गया है।

वह तो गन्धर्व ही है।

'ठगन-ठगठन-ठगठन' गिरिजाघर से घण्टी बजने की-सी आवाज़ सुनायी दी। गर्दन उठाकर देखा; छठे खेत के दक्षिण पूर्वी कोने में अकेले खड़े नारियल के ऊँचे

छोर से ही वह घण्टानाद सुनाई दे रहा है। काले रेशमी फीते-सा एक मस्सा। एक फुट लम्बी लटकती पूंछ। देखने पर मालूम हुआ—'कौआ काका' था।

एक अर्से पहले अप्पु ने कहा था, 'कौवे काका' को देखने पर शोरगुल मचाना चाहिए। 'कौवा काका' क्यों अपमानित हुआ, इस सम्बन्ध में एक कहानी भी उसने कही थी।

अन्तर्जनं अपने पति के शाप से ही एक काली चिड़िया के रूप में बदल गयी थी। शाप देने का कारण यह था कि अन्तर्जनं (नंपूदिरि की औरत) का एक हरिजन युवक के साथ शयन करने का दृश्य नंपूदिरि ने अपनी आँखों से देख लिया था। (अप्पु की कहानियों में इस दुनिया की सभी चिड़ियाँ शापग्रस्त मानवियाँ ही हैं।)

पर, अब अप्पु को देखने पर जोर से पुकार कर उसका मज़ाक उड़ाना है क्योंकि अब वह अपने मोहल्ले को छोड़कर वयनाटु में रहता है। अप्पु के पिता बैलगाड़ीवान शराबी तय्यन को मरे दो साल हो गये। उसे वयनाटु में एक जंगली हाथी ने कुचलकर मार डाला था। पिता की मृत्यु के बाद अप्पु ने अपना घर और अहाता एक मुसलमान को बेच डाला और स्वयं वयनाटु में चला गया। पिता ने जिस औरत को रखैल बनाया था उस विधवा चेट्टिच्चि के यहाँ वह अपने दिन गुज़ार रहा है।

पूंछ पसारकर विश्राम करने वाले 'कौआ काका' के नारियल की खूबी की झट याद आ गयी। श्रीधरन ने ही उस नारियल के पौधे को लगाया था। दादाजी ने तिरुवातिरा के शुभ सन्दर्भ में छठे खेत के एक गड्ढे में छोटे मुन्ने के हाथ से द्वीप के नारियल का पौधा लगाया था। उस पेड़ के फलने के पूर्व दादाजी चल बसे। नारियल के गुच्छों में कई फल थे। उन्हें देखने पर श्रीधरन को बेहद खुशी हुई। श्रीधरन ने निश्चय किया कि घण्टी बजाकर उस नारियल पर अपना ध्यान आकृष्ट करने वाले 'कौआ काका' की प्रशंसा में एक गीत की रचना करनी होगी।

छठे खेत की पश्चिम सीमा की पुरानी दीवार और वहाँ की बाड़ की तबाही हो गयी थी। दीवार को लाँघकर चारों ओर का मुआइना किया। पुराने जंगल का मध्य भाग उसी प्रकार खड़ा था। जाती और जामुन अब भी खड़े हैं। जाती का एक फल तोड़कर खाया। पर, वैसा स्वाद नहीं लगा।

श्रीधरन अकेले ही जंगल में घूमने लगा। चट्टानों के सफेद पत्थर दोपहर की धूप से रत्न-प्रभा का प्रसार करने लगे थे। इस प्रकार चलते-चलते टीले की ओर एक तराई में पहुँच गया। एक कोने से एक बाँस ने दृष्टि को रोक लिया। अनेक वर्षों के बाद भी वह दुबला-पतला बाँस एक मार्गदर्शक की तरह वहीं खड़ा है—अप्पु के अहाते में इधर से ही जाया जा सकता है।

तभी नारायणी की याद आ गयी।

सब लोग नारायणी को छोड़कर चले गये हैं। वह अहाते के एक कोने में नित्यकन्यका होकर लेटी है। अमरूद के फलों को हड़प लेनेवाले चमगादड़ को दूर भगाने के लिए अब उसको पहरा देने की जरूरत नहीं है। वह अहाता अब दूसरों का हो गया है।

नारायणी की कब्र को देखने की इच्छा को वह संवरण नहीं कर सका।

नज़दीक की चट्टान के निकट लटकते कुछ फलों के गुच्छों को देखा। तुरई नारायणी को अत्यन्त प्रिय था। तुरई के फलों को तोड़ उन्हें एक बड़े पत्ते के दोने में रख लिया।

चट्टानों और कंटीले पौधों से भरी जगहों से आगे बढ़ा। एक तंग पगडंडी के सामने पहुँच गया। कंटीले पौधों, घास, छुई-मुई, आदि के भर जाने की वजह से पगडंडी का मुँह बन्द हो गया था। लम्बे अर्से से लोग इधर से नहीं गये होंगे। उधर पैर रखने में डर महसूस हुआ। लेकिन मन में फुसफुसाया : नारायणी की कब्र को जरूर देखना है। थोड़ी देर के बाद उस तंग पगडंडी में उतरने का निश्चय किया।

दीवार की कंटीली डालियों को हटाकर पत्थर और गड्ढ़ों से भरी राह से दस-बीस फुट दूर जाने पर दीवार के एक हिस्से की छोटी गुफा के सामने वह पहुँचा। श्रीधरन ने अचानक उस गुफा में एक राक्षस को बैठे देखा। वह एकदम सिहर उठा। पर श्रीधरन को देखते ही वह राक्षस झट उठकर पगडंडी के नीचे की तरफ दौड़ गया।

श्रीधरन हक्का-बक्का रह गया। काला-कलूटा अर्धनग्न एक आदमी ही वहाँ से खिसक गया था।

उस गुफा में पत्थरों का एक चूल्हा, चूल्हे के ऊपर तांबे का एक बड़ा बर्तन और ताँबे के बर्तन में लगी हुई एक बड़ी नली देखने पर बात पकड़ में आयी—नकली शराब बनाने का कारोबार है।

उस मोटे आदमी ने अजनबी इन्सान को देखने पर समझा होगा कि एक्साइज का कोई नौकर है। छुपकर मद्य को कब्जे में करने के लिए ही आया होगा। इसी-लिए वह उधर से भाग गया था।

श्रीधरन हँस पड़ा। फिर उस पर विचार करने पर कुछ डर-सा महसूस हुआ। अगर उस राक्षस को मालूम हो जाता कि अजनबी व्यक्ति अकेला ही है तो एक बड़ा संकट खड़ा हो जाता। अगर वह मेरा कत्ल कर लाश वहीं छोड़ देता तो भला किसे पता चलता! अचानक घबराहट होने के कारण ही उस बेवकूफ ने वहाँ से भाग जाने की बात सोची होगी। श्रीधरन का यह सौभाग्य ही था।

श्रीधरन को लगा कि अब वहाँ खड़ा होना उचित नहीं है। नुकीले पत्थर, काँटे और गड्ढों की परवाह किये बिना हड़बड़ी में नीचे उतर गया। अन्त में, वह

अप्पु के पुराने अहाते के कोने में जा पहुँचा।

अप्पु के घर के बरामदे में एक मुसलियार कोई किताब पढ़ रहा था। फाटक के नजदीक के जासौन के पौधे की जगह नारियलों का ढेर दिखाई पड़ा। मौलसिरी के पेड़ से झड़े फूल नीचे जमीन पर बिखरे पड़े थे।

श्रीधरन शंकित-सा खड़ा रहा। क्या उस अहाते में जाना है? अहाते के दक्षिण कोने में ही नारायणी की कब्र है। नारायणी को किस जगह दफनाया गया था, उसे देखने के लिए ही इधर आया था। पर, बूढ़े मुसलियार से वह कैसे यह बात कहे? फिर भी वापस जाने की इच्छा नहीं हुई।

आखिर उस अहाते के भीतर घुस ही गया। उसने तुरई के फल से भरे दोने को कमीज़ के अन्दर छिपा रखा था।

मुसलियार ने किताब रख दी। उसने नाक का चश्मा माथे पर चढ़ाकर आँगन की तरफ आँखें फाड़कर देखा।

"मुसलियार, मुझे नहीं जानते क्या? मैं इलंजिपोयिल मामा के घर आया था···" श्रीधरन ने हँसते हुए कहा।

मुसलियार को आगन्तुक की पहचान हुई।

"तुझे बचपन में देखा था। अब तो तू इतना बड़ा हो गया! आ इधर आ, ज़रा बैठ···तेरा नाम क्या था···?"

"श्रीधरन।"

"हाँ—चीतरन—चीतरन"

"तू इधर क्यों आया है?"

"इस अहाते के अमरूद खाने की इच्छा हुई। पहले जब अप्पु इधर रहता था तब अमरूद खाने आया करता था। इसी की याद कर इधर आ गया।"

मुसलियार मसूड़े दिखाकर हँस पड़ा।

"अमरूद में अब फल कम ही लगते हैं—फल लगते ही चमगादड़ इन्हें खा लेता है—तू ज़रा जाकर देख—पेड़ में जो कुछ है तोड़कर खाले···।"

श्रीधरन दक्षिण के अहाते में जाकर खड़ा हो गया।

नारायणी की कब्र बिलकुल लुप्त हो गयी थी। उस जगह को पाट कर वहाँ मूँग बोयी गई थी। मूँग के किसी मोड़ के अन्दर ही नारायणी लेटी होगी।

मूँग के फूलों से क्या नारायणी ही हँस रही है?

अमरूद के पेड़ पर नजर डाली। उसकी एक डाल पर एक स्वर्ण-गोल के रूप में एक फल लटक रहा था (क्या वह नारायणी की कब्र की तरफ ही लटक रहा है!)

कमीज़ के अन्दर से तुरई फल का दोना लेकर उस कब्र पर समर्पित किया··· अनजाने में ही आँखें गीली हो आयीं।

निज-निज कर्मों के चक्कर में पड़
फिरते रहते जीव करोड़ों सीमाहीन
बीच-बचाव की गति में आपस में
मिलनेवाले अणुगण हैं हम।

## 27. ज़माने का व्यंग्य

"अरे, रुक जा•••रुक जा•••"

रिक्शेवाला नहीं रुका। वह गाड़ी लेकर अचानक चला गया।

वह आदमी और कोई नहीं था। केलंचेरी मेलान ही था। रिक्शे का भाड़ा उस दिन भी उधार ही था।

कुंजिक्केलु मेलान घमण्ड से वहाँ खड़ा रहा। हाँ, यहाँ तो और रिक्शेवाले हैं न ?

लेकिन उस वर्ग में कोई भी उस रास्ते पर नहीं आया। जहाज़ का पुराना मालिक मेलान उस कोने में है—रिक्शेवाले ने अपने सहजीवियों को इसकी चेतावनी दे दी थी।

मेलान का लक्ष्य नज़दीक की शराब की दुकान था।

तभी बुजुर्ग कुंजुण्णि नायर आता हुआ दिखाई दिया। वह मेलान को देखकर बड़े अदब से खड़ा हो गया।

"छह आने दे दो।" मेलान ने खुसुरफुसुर की।

कुंजुण्णि ने जेब से एक रुपया लेकर बड़े अदब के साथ दिया। मेलान ने रुपया अपनी जेब में डाला। "ऊँ—जाओ—हाँ एक बात ! वहाँ किसी रिक्शेवाले को देखो तो इधर भेज देना। सुना !"

वह 'हाँ' कहकर धीरे-धीरे चला गया।

पहले मेलान एक जहाज़ का मालिक था। वही आज छह आने की भीख माँग रहा है। छह आने यानी एक गिलास शराब का पैसा—हाय भगवान ! यह तेरी कैसी माया है ! कुंजुण्णि नायर ने अपनी आँखें ऊपर की ओर उठायीं। वह अपने आप फुसफुसाया।

"अरे, रुक जा।"

रिक्शेवाले ने अदब के साथ रिक्शागाड़ी रोक दी। मेलान ने गाड़ी में फुर्ती से चढ़कर आज्ञा दी : "शराब की दुकान की तरफ।"

हुक्म के अनुसार रिक्शेवाले ने मेलान को शराब की दुकान तक पहुँचा दिया। मेलान नीचे उतरकर शराबखाने की तरफ चल पड़ा। "मजूरी का हिसाब रखना।" मेलान रिक्शेवाले से कहना नहीं भूला।

रिक्शेवाला हँसता हुआ वहाँ से चला गया।

उस बूढ़े नायर ने रिक्शे का मेहनताना आठ आने पेशगी के दिये थे। नहीं तो इस गाड़ी में चढ़ने की किस्मत मेलान को कैसे मिलती ?

"एक गिलास" मेलान ने आर्डर दिया। "एक अण्डा भी ले आ।"

कुटुंगॉन ने हाँडी से एक गिलास भरकर मेलान के हाथ में थमा दिया। फिर एक कटोरे में उबला हुआ अण्डा भी वहाँ रख दिया।

मेलान ने तुरन्त गिलास खाली कर दिया। फिर अण्डा खाते हुए वहीं बैठ गया।

कुटुंगॉन ने और एक आधा गिलास हाँडी से लेकर मेलान के हाथ में थमाने के बाद कहा, "यह मेरी ओर से। इसे पीकर जल्दी यहाँ से उतर जाना।"

कुटुंगॉन की बात सुनकर मेलान नाराज़ हो गया : वह कहता है कि मेरी तरफ से पीलो और चलते बनो ! मेलान के अभियान को भारी चोट लगी। एक पल उसने उस पर विचार किया। शराब पीकर ओठों को पोंछते हुए कुटुंगॉन की ओर आँखें तरेरकर देखा, "अरे, केलंचेरी कुंजिक्केलु मेलान को तेरी फ्री की जरूरत नहीं है। समझा !" एक रुपये का सिक्का कुटुंगॉन के सामने फेंककर शान से छाती फुलाते हुए वह जल्दी-जल्दी चलने की कोशिश करने लगा।

शराबखाने के मालिक कुटुंगॉन ने लाचार होकर ही मेलान से ऐसी बातें कही थीं। अपने व्यापार पर जाँच आने की बात थी। नगद पैसा देकर आधा या एक गिलास पीने के बाद मेलान फिर वहीं बैठता। वहाँ पीने के लिए आनेवाले अन्य ग्राहक मेलान को देखकर आधा गिलास खरीद देते। अगर वे उस पर आनाकानी करते तो मेलान आदेश देता, "अरे, मेरे लिए एक का आर्डर दो !" केलंचेरी घराने की महिमा पर विचार कर अधिकांश लोग मेलान को हताश नहीं करते। मेलान इस तरह एक लालची प्रेत की तरह वहीं बैठता। अगर शराबखाने में मेलान बैठा होता तो ग्राहक उधर मुड़कर भी नहीं देखते। यों कुटुंगॉन के व्यापार में आँच आने लगी। कुडंगॉन मन में कोसता, पर केलंचेरी मेलान से उठकर चले जाने को कहने के लिए उसकी जीभ नहीं हिलती। आज उसने खुल्लम-खुल्ला कह दिया : मेरी तरफ से यह पी लो और चलते बनो।

मेलान रिक्शे की प्रतीक्षा में सड़क के नजदीक खड़ा रहा। तभी किट्टन मुँशी वहाँ आ पहुँचा। वह सुंघनी खरीदने आया था। पर दुर्भाग्य से मेलान के सामने ही पड़ गया।

"छह आने दो" मेलान ने हाथ पसारा।

"मेलान, अभी हाथ में छह आने नहीं हैं।"

"जेब में साढ़े तीन आने तो होंगे ?"

"जेब में कुल साढ़े तीन आने ही हैं।" किट्टन मुँशी ने रोनी सूरत से कहा।

"नहीं चाहिए—जाओ···"

किट्टन मुंशी को मालूम था कि आधे गिलास से कम पैसा वह स्वीकार नहीं करता। उसे केलंचेरी घराने की शान पर भी तो ध्यान रखना है। कभी-कभी मेलान भी कुछ दार्शनिक विचार प्रकट करता।

छाती के पके बालों को सहलाते हुए मेलान वहाँ खड़ा रहा। कोई अमीर ज़रूर आता होगा। मुझे तो सब लोग जानते हैं।

"उग्रव्रतन मुनि वसिक्कुमोरुरिल···" दोपहर को इंलजिपोयिल के छठे खेत के नज़दीक के जंगल के एक कोने में एक वृक्ष की डाल पर बैठकर श्रीधरन कुमारनाशान के 'कुयिल' (कोयल) के छन्दों को कंठस्थ कर रहा था। तब मन अकारण ही अतिराणिप्पाटं में भ्रमण करने लगा और सरस्वती अम्माल तक जा पहुँचा।

क्या सरस्वती अम्माल मेरे बारे में सोचती होगी? उस ब्राह्मण विधवा के मनोभाव के बारे में कुछ भी अन्दाज नहीं लगा सकता। उसके मलयालम गुरु बनने में नहीं, बल्कि उसके विनीत शिष्य बनकर व्यवहार करने में ही गहरे आनन्द का अनुभव हुआ है। व्रत में बैठी एक संन्यासिनी का चेला बनने में खास खुशी महसूस होती है। सरस्वती अम्माल के सौन्दर्य, विशुद्धि और विचित्र स्वभाव में से किसने मुझे आकृष्ट किया था? शायद इन सभी की खूबियाँ होंगी। उस दिन ह्विस्की की बदबू मेरे मुँह से निकलने पर उसने जो नजर फेंकी थी वह क्षुब्ध काली माता की थी, लेकिन फिर उसके बारे में उसने न तो मुझसे कुछ पूछा, न कुछ कहा। इस घटना के बारे में उसने हल्की सूचना तक नहीं दी। उसके बाद जब उसने पहले-पहल मुझे देखा तो वह मुस्करायी थी। अपूर्व ही थी वह मुस्कान! उसने मेरे परीक्षा में फेल हो जाने की बात अपने बड़े भाई से जान ली होगी। लेकिन वह मुझसे इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहती, कुछ नहीं पूछती। उसका चरित्र उसी तरह था। सरस्वती अम्माल का स्मरण आने पर बुरे विचार मन में नहीं उठते। अम्माल को वह एक महिला ही नहीं, एक शक्ति के रूप में भी देखता है। उस देवी के सामने स्वयं को निछावर देने की इच्छा होती है···

काँच के दरवाज़े के बरामदेवाले एक खूबसूरत बंगले के सामने ही रिक्शा-वाला वेलु कुंजिक्केलु मेलान को उतारकर चला गया था। तब तक साँझ की धुँध छा गयी थी।

वेलु ने बड़ी चालाकी से ही वह काम लिया था। "मेलान, ज़रा उतरकर खड़े रहो। ज़रा दीपक जलाने दो। मोमबत्ती और माचिस नीचे की संदूकची में हैं।" वेलु ने अदब से कहा।

शराब पीकर बेहोशी की हालत में होने पर भी मेलान अपना पीलपा उठाये सड़क पर खड़ा रहा। तभी अवसर देख वेलु गाड़ी लेकर वहाँ से खिसक गया।

बेचारा वेलु। उस दिन दोपहर को दुर्भाग्य से मेलान के जाल में फँस गया।

पहले उसने मुड़कर भागने की चेष्टा की।-फिर अचानक मेलान की रेशमी क़मीज की जेब में दस रुपये का नोट सिर उठाकर देखा। पैसा हाथ आने पर मेलान कंजूसी के बिना मेहनताना देता है। महीने की पाँचवीं तारीख थी। रिसीवर से (केलंचेरी रिसीवर के शासन में थी) मेलान को प्रति मास एक-सौ रुपये एलाउन्स मिलता है। वेलु को प्रसन्नता हुई कि एलाउन्स मिलने का समय है। मेलान को रिक्शे में चढ़ाया। उसका लक्ष्य नजदीक की शराब की दूकान ही था। रास्ते में एक स्टेशनरी दूकान के निकट पहुँचने पर मेलान ने वेलु से कहा, "अरे, एक पैकेट गोल्ड फ्लेक ले लो। चिल्लर हो तो दे देना—"

वेलु ने अपने हाथ से दस आने देकर गोल्ड फ्लेक सिगरेट खरीदी और उसे मेलान के हाथ में थमा दिया।

शराबखाने में पहुँचने पर मेलान ने गाड़ी से उतरकर कहा, "तुम मत जाओ। यहीं खड़े रहो।" वेलु भी यही चाहता था। पन्द्रह मिनट बीत गये। शराब पीने के बाद ओंठ पोंछकर मेलान वापस आकर रिक्शे में बैठ गया।

"अब कहाँ चलना है ?" वेलु ने पूछा।

"मून्निलंजिकल।" मेलान ने सिगरेट का कश छोड़ते हुए हुक्म दिया।

मून्निलंजिकल शराबखाने से भी आखिर वापिस आ गया।

"अब अटक्का मोहल्ले में · "

वेलु मन में फुसफुसाया कि मेलान को क्या एक ही शराबखाने से पीना काफी न था। पर, यह तो मेलान का व्यसन था। हर शराबखाने में जाते समय उसको नया जोश मिलता। वेलु को भी इस बात की खुशी थी कि अधिक दूर जाने पर उसको अधिक किराया नसीब होगा।

अटक्का मोहल्ले के मदिरालय से भी वापस आ गया। फिर कूनंमुक्कु की ओर जाने का आदेश दिया गया।

कूनंमुक्कु के मदिरालय से उतरने पर भीतर गाली बकने की आवाज़ सुनाई दी—"भिखारी ! शराब का पैसा पूरा चुकाये बिना ही उतरकर चला जाता है···।"

मेलान बड़े गौरव-भाव से रिक्शे में जाकर बैठ गया। तब वेलु ने नग्न सत्य समझ लिया। मेलान की कमीज़ की जेब खाली है ! उसने फिर नहीं पूछा कि किधर जाना है। रिक्शे का भाड़ा तो हमेशा की तरह नहीं मिलेगा। इसके अलावा सिगरेट के दस आने भी हाथ से निकल गये। परिवार को आज भूखों रहना पड़ेगा। उस बंगले के सामने पहुँचने पर वेलु ने अक्ल से काम लिया। मेलान को मोहल्ले में मारा-मारा फिरने को छोड़ते हुए उसने अपना रास्ता नाप लिया। उसे उस दिन के भोजन का पैसा कमाने के लिए अब और दौड़-धूप करनी होगी।

क्या वेलु ने जान-बूझकर ही उस बंगले के सामने मेलान को उतार दिया था ?

बारह साल पहले कुंजिक्केलु मेलान ने भूलोक रंभा ककड़ी कल्याणी को उसी महल में रखा था।

मेलान ने अर्धबेहोशी की हालत में उस महल की तरफ निगाहें घुमायीं। झट उसके अन्दर एक नीली रोशनी की चमक हुई।

कल्याणी का सोने का-सा शरीर, ताड़ के गुच्छे-से बाल और मधु मुस्कान मेलान की खोपड़ी में सुन्दर स्वप्न की तरह रेंग आये।

अब वहाँ एक गुजराती मुस्लिम सेठ रहता है। भीतर से ग्रामोफ़ोन पर गीत गूँज रहा था :

"तुम ने मुझ को प्रेम सिखाया—
तुमने मुझको······ ·····"

पहले कुंजिक्केलु मेलान ने प्रणय-कलह का प्रदर्शन करनेवाली ककड़ी कल्याणी के सामने एक सौ रुपये का हरा नोट मेज की बत्ती की ज्वाला में दिखाकर उसे गोल्ड फ्लेक सिगरेट से सुलगा दिया था। क्या मेलान के मन में इसकी याद अब भी ताजा है ? कौन जाने ?

मेलान ने जेब से सोने के रंग का गोल्ड फ्लेक सिगरेट पैकेट बाहर निकाला। देखा, खाली था। उसे दूर नाले में फेंक दिया। फिर बंगले के पत्थर की सीढ़ी पर पीलपा रख थोड़ी देर तक विचार किया। फिर हौसले के साथ सीढ़ियाँ चढ़ा। बन्द दरवाज़े को उसने बार-बार खटखटाया।

एक भारी भरकम देहवाले मुसलमान ने आकर दरवाजे से देखा। हल्के अँधेरे में आदमी को नहीं पहचाना गया।

"कौन है वहाँ ?"

"यह मैं···मैं···मैं हूँ—केलंचेरी का कुंजिक्केलु मेलान।"

सुनकर मुसलमान एकदम चौंक उठा।

"मेलान को अब क्या चाहिए ?"

"मुझे उस कमरे में बैठना है।"

"किस कमरे में ?"

"अपनी कल्याणी के कमरे में—"

"अरे बीरान, कौन है वह ?" अन्दर से सेठ ने पुकारकर पूछा।

"एक शराबी है, मालिक।

"उस शैतान को दो थप्पड़ लगाकर भगा दो।"

बीरान असमंजस में पड़ गया। कुंजिक्केलु मेलान को उस हालत में देखने पर बीरान को हमदर्दी हुई। मेलान की धोती कमर से खिसकने लगी थी। सिर बोझ से छाती पर लटकने लगा था। फिर भी मेलान अपनी शान-शौकत को नहीं छोड़ सका था।

"अरे, दरवाज़ा खोलो" मेलान ने दरवाज़े को पीटते हुए कहा।

महल के भीतर से एक ग्रॉमोफोन पर वही गीत चल रहा था :

"तुमने मुझ को प्रेम सिखाया—तुमने मुझ को···"

बीरान फिर भी सकपकाकर खड़ा रहा। केलंचेरी घराने का बीरान पर एहसान था। कुंजिक्केलु मेलान के अंगरक्षक लौहपुरुष पोक्कर का बहनोई है बीरान। (लौहपुरुष पोक्कर अब पक्षाघात से पड़ा हुआ है। दाहिना हिस्सा पूर्णरूप से सुन्न हो गया है।) केलंचेरी के यहाँ से पोक्कर द्वारा चोरी से लाये गये सामान को बीरान ही गुप्त रूप से बेचता था। केलंचेरी की एक बड़ी कड़ाही बीरान के घर में अब भी पड़ी है। पहले केलंचेरी में हर साल संपन्न होनेवाली दावतों में आम लोगों के भोजन की सब्जियों को संचित करनेवाली दो बड़ी नावों को काटकर काठ के मूल्य पर बेचते समय बीरान ने ही उसे खरीदा था।

"अरे, जल्दी दरवाज़ा खोलो !" मेलान गरज उठा।

बीरान हौले से दरवाज़ा खोलकर बाहर आया। मेलान को धोती पहनाकर उसका हाथ पकड़कर वह कान में फुसफुसाया :

"मेलान, अब जाओ···जिस कमरे में ककड़ी 'कल्याणी' पहले सोती थी उस कमरे में अब सेठानी ही सोती हैं···"

"अरे हरामजादे, मुझे आज्ञा देनेवाला तू कौन है ?" मेलान ने हाथ को झिड़ककर महल में घुसने की कोशिश की। बीरान ने फिर आव देखा न ताव, मेलान को उठाकर सड़क के एक कोने में लकड़ी के गट्ठे की तरह पटक दिया।

"किणी—कीणींग—किणी—कीणींग"···घण्टी बजाती हुई एक इक्कागाड़ी तेज़ी से आयी। गाड़ीवान ने फौरन घोड़े की लगाम खींच ली। गाड़ी ज़रा हिली-डुली और ऊपर उठी। सफेद घोड़ा मुँह फैलाकर पैरों को उठाकर नाचा।

इक्का-गाड़ी के सामने एक इन्सान बिना कपड़े-लत्ते के लेटा था।

"किस हरामी को इधर लिटा दिया है ?" चोयी शाप देते हुए नीचे उतरा।

"कल्याणी, कल्याणी—मेरी दुलारी···।"

श्रीधरन एक आम्रवृक्ष की डाल पर बैठकर 'तिरुक्कुरल' का पारायण कर रहा था। दोपहर का समय था।

गेरुआ कपड़े से सिर ढके कोई दूर से आता दिखायी दिया। श्रीधरन ने 'तिरुक्कुरल' पढ़ना बन्द कर उस आकृति को ध्यान से देखा। वह पुरुष है या महिला ? ठीक से पहचान न सका। श्रीधरन के बैठनेवाले आम के पेड़ की तरफ ही चला आ रहा था वह। शुभ्र अग्निशिखा की तरह आलोकित एक गोलाकार चेहरा। घुटनों तक लटकानेवाला गेरुआ कपड़ा पहना हुआ था। कुम्हड़े की कली-सा पैर का निचला भाग बाहर दिखाई देता था। एक हाथ में कमंडलु, दूसरे में बेंत की

लाठी। उस आकृति के आम के पेड़ के नीचे पहुँचने पर श्रीधरन के मन में आश्चर्य, प्रसन्नता और भय का समूहनृत्य होने लगा—सरस्वती अम्माल! सरस्वती अम्माल एक योगिनी बन गयी है। लुक-छिपकर खिसक आये शिष्य को ढूँढती हुई जंगल के आम के पेड़ के नीचे आ पहुँची है।

उसने पेड़ के नीचे से श्रीधरन को देखा—उन आँखों से आग की चिनगारियाँ निकल रही थीं। वह चेहरा दुर्गा के भयंकर चेहरे में परिवर्तित हो गया था।

बेंत की छड़ी उठाकर उसने श्रीधरन से आम की डाल से नीचे उतरने के लिए संकेत किया।

श्रीधरन उसका आदेश मानता हुआ नीचे उतरा।

"देवी मुझे सजा दो—मुझे दण्ड दो।" श्रीधरन प्रार्थना कर अपनी कमीज को उतारकर सरस्वती योगिनी के सामने पीछे मुड़कर घुटने टेककर खड़ा हो गया।

"ठे · ठे···ठे···" पीठ पर जबर्दस्त बेंत की मार पड़ी। मार खाने पर शिष्य खुशी से नाच उठा। छड़ी की मार जोर से कमर और जाघों पर भी पड़ी थी। आनन्द के उन्माद का आरोहण! खाल उधड़ रही है···लगा, प्राणरक्त का संचार हो रहा है···वह संचार से रोमांचित हो किसी प्रलय में डूब रहा है···

श्रीधरन जाग उठा। आँखें खोलीं। चारों ओर अँधेरा! आम्रवृक्ष कहाँ है? सरस्वती योगिनी और उसकी बेंत की छड़ी कहाँ है?

इलंजिपोयिल के घर के दक्षिण कोने में, पलंग के ऊपर एक चटाई पर ही वह लेटा हुआ है। आधी रात बीत गयी होगी। किसी चिड़िया की आवाज़ सुनाई दे रही है। चौथे खेत के आँवले के पेड़ के ऊपर से आयी होगी!

अगले दिन दोपहर के बाद, श्रीधरन अतिराणिप्पाटं लौट गया। एक महीने का वनवास पूरा हो गया था।

कन्निप्परंप्पु में पहुँचा। दस मिनट धीरज और शान्त मन से बैठा रहा। फिर अय्यंगर के घर की तरफ निकल गया।

"अरे, तू किधर हड़बड़ी में जा रहा है?" माँ ने पूछा।

"अय्यंगर मास्टर को देखने के लिए।"

(सरस्वती अम्माल का पूर्णिमा के चाँद-सा चेहरा हृदय में उदित हुआ।)

"वहाँ कोई नहीं है—पट्टर का त्रिचिनापल्लि में तबादला हो गया। पट्टर माँ और बहन घर छोड़कर आज की रेलगाड़ी से चले गये हैं—"

उस फाटक की तरफ अनजाने में ही मुड़ गया। मकान बन्द पड़ा था। उस ओर कुछ क्षणों तक देखता हुआ वहीं खड़ा रहा—

"आप जा सकते यहाँ से अब
भवन यह शोकार्द्र नहीं,
मुत्ति ने छोड़ दिया इसको।"

## 28. परलोक से

अस्वस्थता, उत्साह, विषाद की चुप्पी, छोटी-सी विजय और स्वप्न-संकल्पों के दवाव में श्रीधरन के दिन बीत रहे थे। ज़िन्दगी तो समय की नदी में नौका-विहार है। सफर के अन्त तक—या फिर नाव के डूबने तक लगातार कुछ न कुछ करना पड़ता है। नाव की गति कभी धीमी होती, कभी भंवर में फँसकर घूमती। कभी हवा और लहरों में फँसकर नीचे डूबती, कभी ऊपर उठकर हिलती-डुलती। वहाव के विपरीत भी थोड़ी दूर तक आगे बढ़ा जा सकता है, लेकिन यह नाव एक पल भी निश्चल नहीं रह सकती।

टंकण लिपि की उच्च परीक्षा पास होना छोटी-सी विजयों में एक है। एक मिनट में विना गलती के पैंतालीस शब्द टाइप करने की क्षमता प्रभावित करने-वाला एक प्रमाण-पत्र उसने हासिल किया।

अतिराणिप्पाट में कोई साथी न था। कितावें ही अव उसकी मित्र थीं। नगर-निगम पुस्तकालय से कितावें लाकर वह आधी रात तक पढ़ता। ढेर सारी क्लासिक कृतियाँ और संचार साहित्य ग्रन्थ पढ़ डाले। मनोविज्ञान की कितावों में रुचि हो गयी। तभी हवलॉक एलिस का 'साइकालॉजी ऑफ सेक्स' हाथ लग गया। उसका पहला खण्ड एक सप्ताह में पढ़ डाला। नोट्स लिये। दो-तीन खण्ड ग्रन्थमाला में दिखाई नहीं पड़े। लाइब्रेरियन ने कहा कि वह किताव वाहर गयी है। पर, उसका चौथा खण्ड वहीं था। उसे ले आया।

रात को पढ़ने के लिए वैठ गया। हवलॉक एलिस खोला। पहला अध्याय पढ़ने पर कुछ चकित हुआ। पृष्ठ उलट डाले। दक्षिण अफ्रीका की गन्ना-खेती से संवंधित वातें ही उन पर लिखी हुई थीं।

समझ गया कि लाइब्रेरियन के वारे में जो शिकायतें सुनी जाती थीं उनमें सच्चाई है। नया लाइब्रेरियन एक मुसलमान युवक है। वह नौजवान हवलॉक एलिस के मनोविज्ञान की खोज के लिए सर्वथा योग्य एक होमोसेक्चुअल (समलिंग कामी) था। लाइब्रेरियन के पिट्ठू खूवसूरत लड़के रात को पुस्तकालय वन्द होने पर वहाँ आते। वे मासिक की अच्छी तस्वीरों, पुस्तकों के रोचक भागों के पृष्ठों, कभी-कभी पूरी कितावों की चोरी करके चले जाते। कथानायक अपने दुलारे लड़कों की चोरी को अनदेखी करता। के० सुकुमारन की 'वह भयानक नज़र' नामक पुस्तक 'मच्छर और पीलपा' में वदल जाने की वात एक सदस्य ने हाल ही में लाइब्रेरियन के सामने आक्षेपपूर्वक कही थी। श्रीधरन इस घटना का गवाह था।

गन्ना-खेती में रुचि न होने के कारण पुस्तक वहीं रख दी। कुछ न कुछ पढ़ने

के लिए शेल्फ में ढूँढ़ने पर शेले का एक काव्य-संग्रह दिखाई पड़ा। उसे लिया। पुस्तक खोलते ही 'लव' शीर्षक की एक प्रेम-कविता पर निगाह पड़ी। उसने उस प्रेम-कविता की मिठास का ठीक तरह से रस लिया। इन पंक्तियों को उसने कंठस्थ भी कर लिया :

"आई कैन गिव नाट व्हाट मेन काल लव
बट विल्ट दाउ एक्सेप्ट नाट
द वारशिप द हर्ट लिफ्ट्स एबव
एण्ड द हेवन्स रिजेक्ट नाट
द डिजायर आफ़ द मांथ फ़ार द स्टार
आफ़ द नाइट फ़ार द मारो
द डिवोशन टु समथिंग आफ़र
फ्राम द स्फियर आफ़ अवर सारो."

अगले दिन शुक्रवार था। हैवलाक एलिस की गल्प-रेखा को साथ ले दोपहर बाद श्रीधरन नगर-निगम पुस्तकालय की ओर गया।

पगडंडी से सड़क की तरफ जो पत्थर की सीढ़ियाँ थी उनके सामने की दिशा से एक लड़के को आते देखा। उसने नीले रंग की कमीज और फटा हुआ पाजामा पहन रखा था। दस-बारह वर्ष का रहा होगा। उसका चेहरा देखने पर कोई पुरानी स्मृति आँखों में चमक उठी और फिर ओझल भी हो गयी।

वह लड़का पत्थर की सीढ़ी पर ही खड़ा रहा।

"मैं आपके ही घर आ रहा था···।" श्रीधरन के चेहरे की तरफ दयनीय दृष्टि से निहारते हुए उस लड़के ने कहा।

उसका चेहरा काजू के आकार जैसा था।

"मेरे घर ?"

"हाँ—कन्निप्परंप्पु···"

"क्यों ?"

"आपसे मिलने के लिए।"

"तुम कहाँ से आ रहे हो ?"

उसने एक मोहल्ले का नाम बताया।

(जो मन में सोचा था, वही हुआ।)

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

'उण्णि"

"उण्णि, कहो क्या काम है ?"

उण्णि ने पाजामें की जेब से एक नोट-बुक बाहर निकाल कर श्रीधरन के हाथ में थमा दी।

"अम्मुक्कुट्टि दीदी ने इसे आपको सौंपने के लिए मुझ से कहा था।"

श्रीधरन ने नोट-बुक देखी। चर्खे पर सूत कातती औरत की तस्वीर छपी एक पुरानी कापी। खोलकर देखा। कविताएँ थीं। पृष्ठ उलट डाले। (सोचा, कोई चिट्ठी अन्दर रखी होगी—निराशा हुई) लिखावट की जाँच की। ज़रा बायीं ओर घुमा कर लिखे हुए छोटे अक्षर। भूरी स्याही से ही लिखा था। कुछ पंक्तियों के नीचे मोटी लकीरें खींची गई थीं। कविताओं का शीर्षक नहीं दिया था। कुछ पंक्तियाँ अधूरी थीं। वहाँ नक्षत्र-चिह्न लगा दिया गया था।

समझ गया – अम्मुक्कुट्टि एक कवयित्री है। शायद कविताओं की गलतियाँ सुधारने के लिए इस लड़के को भेजा होगा। तीन साल पहले कोयले के ढेर के नज़दीक आमने-सामने खड़े होकर हमने कुछ बातें की थीं। फिर कभी मुलाकात नहीं हुई। रेलगाड़ी के इंजिन से मरी ग्वालिनी की लाश ने रास्ता रोक लिया। रोज के कटाक्ष-विक्षेप के बिना, मुस्कान के आलोक और संदेश की मंद पवन के बिना, वह प्रेम वल्लरी रेल-यार्ड के कोयले के ढेर में मुरझाकर मिट्टी में मिल गयी थी। वही प्रेम-बेल आकस्मात् कविताओं के जल में सींची जाने पर पल्लवित हो गयी है। वह प्रशिक्षण पूरा कर किसी सहायता-प्राप्त स्कूल की अध्यापिका होकर दिन बिताती होगी।

"उण्णिक्कुट्टि की अम्मु दीदी अब किस स्कूल में काम करती है?"

उस लड़के का चेहरा एकदम मुरझा गया। आँखें गीली हो आयीं···

"अम्मुक्कुट्टि दीदी की मृत्यु हो गयी···"

मृ···त्यु···हो···गयी!

आरे की दाँतों की तरह ये पाँच अक्षर कलेजे में चुभ गये।

आँखों में धूंधलका छा रहा था। पैर काँपने लगे थे···किसी-न-किसी तरह सीढ़ियाँ चढ़कर तार की बाड़ के नजदीक जाकर उसे पकड़कर खड़ा हो गया। पीछे उण्णि भी चला आया।

अम्मुक्कुट्टि के अंतिम दिनों की कहानी न सुनना ही शायद ठीक होगा। पर, उण्णि ने विस्तार से सारी बातें सुना दीं। लगा, उसे सुनाने में उसे चरितार्थता का अनुभव हुआ।

राजयक्ष्मा से ही उसकी मृत्यु हो गयी थी। मृत्यु के तीन दिन पहले कविताएँ पेटी से निकालकर उसने अपने छोटे भाई के हाथ में दी थीं: अगर मेरी मृत्यु हो जाय तो तुझे ये अतिराणिप्पाटं के कन्निप्परंप्पु के कवि के हाथों में सौंप आना है।

उण्णि ने तब सख्ती से जवाब दिया था: "मैं हर्गिज नहीं दूंगा।"

"उण्णि, इस तरह हठ क्यों करता है?"

अम्मुक्कुट्टि दीदी की मौत नहीं होगी—इसी वजह से—

अम्मुक्कुट्टि ने धोखा दिया···मेरी अम्मुक्कुट्टि दीदी चल बसी···

उण्णि फूट-फूट कर रोया···

श्रीधरन प्रेतछाया की तरह नगर-निगम पुस्तकालय की तरफ चला। रेल के यार्ड से होकर ही गया। कोयले के ढेर के नजदीक पहुँचा पर रोमांच की गर्मी से शरीर से पसीना छूटने लगा। क्या कोयले का वह ढेर एक साथ जल रहा है?

पुस्तकालय में जाकर हैवलॉक एलिस की गन्ना-गेर्ता की किताब लौटा दी और चुपचाप उतर आया।

एकान्त में बैठकर एक-एक कर सारी कविताएँ पढ़नी हैं। म्यूनिसिपल पार्क की तरफ दृष्टि डाली। पार्क में रोज से अधिक लोग थे। (वाटर टैंक के नीचे से नियमित रूप से आनेवाला प्रचारक, मोहल्ले के एक मोड़ से बाइबिल खोलते हुए चार-पांच पापी इन्सानों को भाषण देता हुआ दिखाई दिया।)

अदालत के कवि पप्पु भैया की साहित्य-सभा से हो-हल्ला और वाहवाही का शोर उठ रहा था।

वह सीधे समुद्र-तट की ओर चल पड़ा। दक्षिण की ओर समुद्र-तट के नजदीक एक महल के रेतीले प्रांगण में वह बैठ गया।

सुनसान वातावरण। लहरें सागर की ठण्डी सांसों में बदल गयी हैं। समुद्र में दूर एक मछली पकड़नेवाली नाव आगे बढ़ रही है। जाल बिछाते समय वह नौका पंखवाली पतंग-सी लगती है···

पूर्व में चारों तरफ़ दीवारों से ढके कोने की तरफ दृष्टि दौड़ायी : गुजरातियों का पुराना श्मशान है। उसकी दीवारों का गोरा रंग भूरे बदसूरत रंग में बदल गया है। एक ओर गन्दगी ने दीवारों पर कुछ भद्दे चित्रों को रच डाला है। किसी ने लकड़ी के कोयले से दीवार के कोने में मैथुन के लिए तैयार खड़े नंगे आदमी और नंगी औरत का चित्र खींच दिया था।

जन्म और मृत्यु की याद दिलाते दीवारों के चित्र!

श्मशान सुनसान है। ··लाशों को खानेवाले श्मशान से भी अधिक सुनसान श्मशान खौफनाक लगा।

उसने कविताओं की नोटबुक खोलकर गोद में रख ली।

प्रथम पृष्ठ के एक कोने में जरा तेल लग गया था। उसके बालों से ही वह लग गया होगा।

पढ़ने लगा :

**1**

प्रेमी मधुप! कब खिली हूँ
छोटे लताकुंज में मैं!
जब थी कली तभी से
···सुन तुम्हारे गान

रीझ-रीझ खिली हूँ मैं
तुम्हारे ही ध्यान में डूबी मुझे—
क्या अब भी न देख पाये तुम ?
अकिंचनता की काली छाया में खड़ी
सूखी डाली पर खिली हूँ मैं
दबंग मूर्ख समाज की
नीतियों की मर्यादा मुझे
दबाती रहती नित्य
मैं हूँ एक अवर्ण कुसुम,
इस कोने में पड़ी
करती रुदन।

**2**

कल रात कैसा अद्भुत
सुन्दर सपना देखा मैंने
प्राणेश्वर की बाट जोहती निराश
अधखुले द्वार पर टिकाये पैर
बिताते-बिताते आधी रात
चाँदनी की बाढ़ में डूबी
विपिन-भूमि के सामने
महातरुओं के बीचों-बीच
देखा मैंने एक तालाव कमलों से भरा।
जाग उठी मैं—कहाँ नाथ ?
कहाँ गया वह तालाब ?
मेरे हृदय को शीतल कर
हो गया वह सपना भी ओझल
कमलिनी के तट पर कोई
मरकत का शाद्वल मनोहर।
उसी क्षण लगा मेरी आँखों को—
पेड़ के पीछे खड़ा कोई
कंचन छत्र लिये हाथ में
मुझ कामिनी को बुला रहा है।
मुझे ढूँढते मेरे स्वप्न के प्रिय
मनोहर आ गये हैं।
अपने देवता का मैं

किन शब्दों से करूँ सत्कार ?
अपने देवता का मैं
क्या अर्पण कर करूँ स्वागत ?

अपना आश्रम छोड़ चाँदनी में
उतर पड़ी मैं मन्द-मन्द।
पल्लव के तट की हरी
घास पर चलने लगी पग बढ़ाते।
पीछे से सहमे-से आकर
मीचेंगे मेरी आँखें मेरे नाथ;
मेरे सामने आ खड़े हो रोकेंगे मुझे मेरे प्रियतम
आ गया है मुहूर्त वह पास—
(मनौतियाँ मेरे हृदय की)
कदम पर कदम रख
वन अतीत कातर मैं
देखती नीचे की ओर
बढ़ी, स्वप्न के माया-पथ में।
परिक्रमा की मैंने एक बार
उस तालाब की,
पर नहीं आये मेरे प्रिय
रोकने-टोकने मुझे
पीड़ित मैंने मुँह उठा देखा चारों ओर;
पर न दिखे मेरे नाथ,
न दिखे मेरे मदन
खिन्न मेरी आँखों को दिखा
उस तालाब में उसी क्षण
सिहरता खड़ा मनोहर
कंचन छत्र का मण्डल एक।
उतरी मैं तालाब में
उतार कपड़े सारे
छत्र- मण्डल को लक्ष्य कर
कुछ दूर तैरते-तैरते

वह स्वर्ण छतरी

घुल गयी तालाब की
छाती पर नीली
सौ-सौ तरंगें देख—
लगीं हँसने !
निन्दित मैं लौट पड़ी तैरती
कौन-सी है माया यह सब ?

किनारे पर पहुँच ढूंढ़ी मैंने
अपनी साड़ी और फटी चोली।
अपने कपड़ों का एक टुकड़ा भी
न दिखा वहाँ कहीं।
अपने को कोसती मैं खड़ी रही
एक चंदन की छाया में।
उस पेड़ के पीछे से मैंने
सुना यह मर्मर स्वर—
आँखें मूंदकर खड़ी रह
इस वेला में पावन हे कन्या, मैं
आ रहा हूँ देने के लिए वसन
प्रिये ! तेरे पास।
(प्राणनाथ ! तुम्हारी आज्ञा पालन करनी है न मुझे ?)
निर्मल प्रेम-सागर की
ऊर्मि का-सा आलिंगन···

3

प्रत्याशा प्यारी कर देती
फिर और
इन नयनों को उन्निद्र।
काश कि
मेरी झोंपड़ी के द्वार पर आ
एक बार, सिर्फ एक बार—
मेरी पूजाएँ ले लेते तुम
काश कि तुम आते
अधजले इस दिये को
फूंक जाने के लिए सही।
ओस भरी घास पर भीगे

तुम्हारे सुन्दर चरणों को
नमन मुद्रा में बैठ
प्राणनाथ ! हे युवा गायक !
अपने बालों से पोंछ-पोंछ चूम-चूम
चाहती आत्म-निर्वृत होना
हृदय मेरा अधीर।

4

अकेली हाय !
प्रेम की मूक मैंने
तारा-बाट जोहती
बितायी रातें अनेक।
तुम नहीं आये
मेरा लेने उपहार।
आज लो, यह मैं
सपना बन
चली आ रही हूँ तुम्हें ढूंढ
निगूढ़ रागिनी हो पीछे
ढूंढ सूरज को चलती
मूक-संध्या-सी विमूढ़ हूँ मैं।
किन्तु देव !
तुम्हारे प्रेम की हल्की-सी छाया पर भी
प्राणों की बलि देने की प्रतीक्षा में बैठी हूँ
अर्पित करूँ अपना प्रेम
हे प्रभु !
तुम्हारे श्रीचरणों में सुन्दर
साथ प्राणों के अपने
ले लो स्वामी ! कोई एक—
स्नेह-हीन दीपक-सा जलना चाहता है।

5

हे करुणामय !
चारों ओर घना है अन्धकार
बन्द झोंपड़ी में बैठी हूँ मैं अकेली।
सड़क-किनारे के आम से, लो
आधी रात कोयल भी उड़ गयी

मेरे साथ ही वह एकान्त भी जिसमें
सारी दुनिया जम गई है
ऊँघती-ऊँघती :
मेरी करुणाक्रान्त भावनाएँ मानो
प्रतिध्वनित हो रही हों अन्धकार में।
पूजनीय प्रिय, तुम्हारी प्रतीक्षा में मैंने
इतनी रात काट ली।
तुम नहीं आओगे, नहीं ही आओगे—
नीहार सिंचित दूब के बिछे
पथ में मन्द-मन्द।
तुम नहीं आओगे, नहीं ही आओगे
नारियल के पत्तों के बने द्वार पर
खटखटाकर पुकारने के लिए मेरा नाम
तुम नहीं आओगे, नहीं ही आओगे—
मेरे जूड़े की मल्लिकाओं की सारी
सुगंधी ही रिस गई।
नहीं, तुम मुझे पुकारोगे नहीं 'प्रिये'!
प्रेम से आर्द्र मेरी संवेदनाएँ हैं व्यामोह,
मेरे मूक प्रणय की आशाएँ हैं व्यर्थ,
यह मैं जान चुकी हूँ।
फिर भी, हे देव!
किसी न किसी दिन तुम्हारा प्रेम
मेरी झोंपड़ी को बना देगा स्वर्णमहल
उस दिन आँसुओं से धोकर पूरे
पद-चिह्न तुम्हारे कहूँगी मैं—
"धन्य हुई मैं आज,
सफल हुआ जीवन,
भोर के सोनिल तारे से भी वह
हो गया ऊँचा।"
हे नाथ! चूम लो यह जीवन-लौ
ताकि निराशा न छू पाए उसे।...

सूरज समुद्र में डूब चुका है। चाँद पश्चिम के क्षितिज में साफ दिखाई दे रहा है। आसमान में बहनेवाले लाल रंग में पंचमी का चाँद भी अलौकिक कालिमा में बदल रहा है।

गले के दमकते नग को उतारकर आसमान ने हरे पत्थरों से जड़ा बाघ-नख का तमगा पहन लिया है।

शाम में कितनी खूबसूरती है!

(जा रही संध्या देवी अँधेरे को गले लगाने
इन अनेक द्युतियों को दिया क्यों विश्वम्भर ने!)

शाम का सौन्दर्य सिर्फ़ आसमान में ही रहता है। नीचे धरती पर जहाँ देखो, वहाँ अज्ञात भय की परछाइयाँ ही दिखाई देती हैं···श्मशान के कोने से नदी में लटके नारियल के पेड़ का सूखा हुआ छोर शाम की खुमारी में एक बड़ी मकड़ी में बदल जाता है। नारियल की परछाइँ नदी के पानी में सरकते हुए नाग में बदल जाती है···

नोट-बुक की आखिरी कविता धुँधली रोशनी में ही पढ़ी थी। लगा, भूरे शब्दों को एक उज्ज्वल हरा रंग मिल गया है—

अस्त हुए धीरे-धीरे
मेरा विवेक और हेमन्त की रात।
चाँद हुआ ओझल,
ओझल हुए प्रेम में अन्धे मेरे सपने
मेरी निराशा की उसाँसें लग
इस घृत-दीप की लौ बढ़ गयी।
मेरे हृदय के घुलकर बहे आँसू—
टपक-टपक भीग कर
प्रेम की अर्चना के लिए सजाये
धूम-पात्र का अंगूर भी बुझ गया!
यथार्थ! तेरा आलोक मेरे—
द्वार पर आ उड़ाता है हँसी मेरी
मैं थी कीड़ा, मगर तप कर
बनी तितली मैं।
वैसी मैं नये दिन
शिखा के आंचल का कर परस
पंख जलकर जाऊँ मर।
तुषार में जमे जगत से
लेती मैं विदा अन्तिम।

रेशमी अन्धकार ओढ़कर वातावरण वेहोश होकर लेट रहा है।
क्षितिज से नीचे उतरने वाला चाँद समुद्र को चाँदी का कटक भेंट करता है।
आसमान सागर के लिए मोतियों का छाता पकड़े खड़ा है।

करोड़ों तारों के झिलमिलाते अनन्त आसमान को देखते हुए श्रीधरन रात की तराई में लेट गया···

भद्रे, तू सीप की तरह
इन मोतियों को समर्पित कर मुझको,
शुद्धानुराग को छिपाकर
चली गयी मृत्यु के माया-भवन में !
हा ! वर लिया तूने मुझे
चितावह्नि साक्षी बनाकर,
(इस धरती पर मुझे तू धोखा न देगी
विचरने वाली सुन्दरी नहीं है तू !)
कोई कामुक मृत्यु दीवार के उस पार
छूता नहीं तेरे मानस को अब भी ।
इस माया प्रपंच में मेरी
रही तू ही मेरी नित्यप्रणयिनी
निरखता मैं आज तेरी नासामणि को
आसमान में झिलमिलाते हर नक्षत्र में भी
जगमगाते मोतियों को भीतर छिपा
रत्नाकर-सा तेरे मानस को देखता
काल और दूरी से परे
आत्मा के गृह में हम दोनों ही रहते ।
सौर मण्डल के भी उस पार
हज़ारों करोड़ युगों के उस पार
शब्द प्रकाश शून्य अद्भुत—
स्तब्धता में यों बैठकर
हम खुशी मनायें तेरे
प्रेम के नित्य निस्वन के साथ ही
मैं इस समुद्री हवा में निर्मल तेरे
प्राणों को लगा रहा हूँ छाती से ।

## 29. समस्याएँ

"अरे रामन, उसके लिए मुझे क्या करना होगा ?"

"माट्टर, चिरुता को बुलवाकर ज़रा पूछ लीजिए। माट्टर के पूछने पर वह सच कहे विना नहीं रहेगी। उस व्यक्ति का ज़रूर पता लगाना है···"

कृष्णन मास्टर आँखें मूँद गंजे सिर को अपनी हथेली से सहलाते हुए ध्यान-मग्न हो गये। (मानो उण्णिप्पणिक्कर ज्योतिष की बातें कहने जा रहे हों।)

एक विकट समस्या ही है…

उस इलाके की कई जटिल समस्याओं का परिहार ढूँढ़ने लोग कृष्णन मास्टर की शरण में ही आते। पिता और पुत्र के बीच की अनवन, पति-पत्नी के बीच का झगड़ा, सास और बहू के बीच का फसाद, भाइयों के बीच धक्का-मुक्की, पुराना वैर, विश्वासघात आदि विवादों को सुलझाने के लिए लोग कन्निप्परंप्पु में पहुँचते। कृष्णन मास्टर सचाई, सदाचार-बोध और शान्ति के प्रतीक हैं। कृष्णन मास्टर के निर्णय के आगे फिर कोई अपील नहीं रह जाती।

तीन-चार महीने बाद कृष्णन मास्टर ने तवाही के कगार तक पहुँचे एक दम्पती के रिश्ते को अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से बचाया था। कलाल नारायणन की वेटी मातु की शादी साईकल दूकानवाले रारिच्चन से हुई थी। रारिच्चन हृष्ट-पुष्ट और खूबसूरत युवक है। वह कभी-कभी शराब पी लेता है। शराब पीकर अपनी बीवी को पीटता है। और किसी को मारने-पीटने में उसे खुशी नहीं होती। पत्नी को पीटे विना उसे चैन नहीं मिलता। एक-दो तमाचे देने पर वह संतुष्ट नहीं होता। उसे अच्छी तरह मारना-पीटना चाहिए, इसके लिए वह कोई न कोई कारण ढूँढ़ लेता। अन्य मौकों पर एक स्नेही पति की तरह ही वह वर्ताव करता।

अपने पति की मार-पीट बर्दाश्त के बाहर हो जाने पर मातु अपने पिता के घर लुक-छिपकर आ पहुँची। नारायणन ने अपनी वेटी और रारिच्चन का सम्बन्ध-विच्छेद करने का निर्णय लिया है। एक निर्धारित दिन को रात में रारिच्चन अपने एक-दो बदमाश मित्रों के साथ शराब के नशे में चूर होकर एक इक्कागाड़ी में ससुराल आ पहुँचा। वह विवाह-सम्बन्ध तोड़ने नहीं आया था बल्कि मातु को जबर्दस्ती ले-चलने के लिए ही आया था।

नारायणन झट कन्निप्परंप्पु में दौड़ा आया। मास्टर को अपने दुःख की बात बतायी। "मास्टरजी, जल्दी ही आप मेरे साथ वहाँ चलिए। आपके आने पर ही हम बच पायेंगे।"

कृष्णन मास्टर हक्का-वक्का रह गये। सीधे नारायण के घर पहुँचे।

वहाँ धक्का-मुक्की, खींचातानी और मार-पीट का शोर और हाहाकार गूँज रहा था। कृष्णन मास्टर को देखते ही रारिच्चन शर्मिन्दा हो, भागकर अहाते के एक कोने में जाकर छिप गया। उसके साथी असमंजस में पड़ गये।

मास्टर किसी ने भी कुछ कहे विना 'आओ वेटी!' कह मातु को बुलाकर कन्निप्परंप्पु में ले गये।

अगले दिन एक आदमी भेजकर रारिच्चन को बुलाया गया।

रारिच्चन कृष्णन मास्टर का पुराना छात्र है। मास्टर के वैंत की सज़ा गुरु-

भक्ति के साथ उसके दिल में ताजा थी।

"अव तुम शराव पीकर इसे पीटोगे ?"

"नहीं जी..."

"मेरे पैर छूकर कसम खाओ।"

रारिच्चन ने गुरुदेव के पैरों को छूकर कसम खायी।

"वेटी, अव तुम रारिच्चन के साथ जाओ।" मास्टर ने मातु के सिर पर हाथ रखकर उसे आशीर्वाद दिया।

इस प्रकार उस दाम्पत्य को नया जीवन मिला। रारिच्चन कभी-कभी अब भी पी लेता है। मातु को कभी पीटता भी। पर, शराव पीकर वापस आने पर मातु को हाथ नहीं लगाता। कृष्णन मास्टर ने भी इतना ही सोचा था।

मर्द का जव कभी शराव पी लेना तो गलत नहीं है। फिर दाम्पत्य के रिश्तों को मज़वूत वनाने के लिए कभी-कभी औरत को पीटना भी अच्छा है—मास्टर हँसी में ऐसा कहते।

अव कृष्णन मास्टर के सामने समस्या कुछ अधिक जटिल है। पेन्टर रामन की वेटी चिरुता गर्भवती थी। मर्दों के देखने या न देखने पर भी उन्हें खरी-खोटी सुनानेवाली सच्चरित्रा चिरुता पर ही यह वला आ गयी है।

शराव के लक्षण की तरह गर्भ का लक्षण भी फौरन बाहर दिखाई देता है। चिरुता को असहनीय मिचली और कै होने पर एक दफा उसकी सौतेली माँ—रामन की दूसरी वीवी—कुंजिप्पेण्णु ने अहाते के एक कोने में केले के नीचे से उसको पकड़ कर जाँच की। चिरुता ने चुप्पी साध ली। 'अरी, कौन है वह ? वता।' चिरुता गुमसुम रही। कुंजिप्पेण्णु ने अपने पति को यह बात बतायी। रामन ने चिरुता को वुलाकर पूछा। चिरुता चुप रही। छड़ी से उसको वेरहमी से मारा-पीटा। चिरुता गले में तिनका फँस जानेवाली वतख़ की तरह सिर हिलाती रही पर, वताया कुछ नहीं।

आखिर रामन को लोहा मानना ही पड़ा।

चिरुता के पैर भारी होने के अपमान से भी अधिक उसके जिम्मेदार व्यक्ति को जानने की इच्छा रामन के मन में मज़वूत हो गयी थी। चिरुता उकड़ूँ बैठकर इस तरह ताकती कि वह मरने पर भी किसी को नहीं बतायेगी।

इस तरह आखिर कृष्णन मास्टर की शरण लेनी पड़ी।

दरअसल रामन का कृष्णन मास्टर से कोई निकट सम्बन्ध नहीं था। कृष्णन मास्टर से ही नहीं अलिराणिप्पाट के दूसरे लोगों से भी रामन का कोई सम्पर्क नहीं है। रामन सुवह उठकर पेण्टरों के एक कोने में खड़ा होकर हाजिरी देता। ज़रूरत-मन्द लोग उसे ले जाते। काम करने के बाद जो मजदूरी मिलती, उसे लिये वह ताड़ी शाप में घुसता। वहाँ से वह आधी रात के बाद ही घर पहुँचता। कभी कोई

काम नहीं मिलता तो रामन अपना ब्रुश लेकर एक खास जगह पर बारह बजे तक इन्तज़ार करता। फिर प्रतीक्षा करने से कोई फायदा नहीं होता। वह घर लौटने के बजाय नदी के किनारे चला जाता। वहाँ से बाँसी से मछली पकड़ता। बाँसी और धागे को अपने पास सदैव रखा करता। पर तम्बाकू का एक टुकड़ा दाँतों तले हमेशा दबाये रखता। अगर तम्बाकू नहीं मिलती तो नारियल की एक जड़ लेकर उसे ही चबाने लगता। कभी-कभी केकड़ों को पकड़ने जाता। नारियल के पत्ते की खाल के छोर पर किसी खाद्य सामग्री को बाँधकर पानी में डालता और केकड़ों को निमन्त्रण देता। उसे नदी से बड़े केकड़े मिलते। पकड़े हुए केकड़े और मछलियाँ बेचकर जितना पैसा मिलता, सबका-सब वह ताड़ी की दूकान को भेंट करता। यों मोहल्ले के मोड़, दूसरों की दीवारें, नदी-तट, ताड़ी की दूकान आदि से दिन काटनेवाले रामन को अतिराणिप्पाटं के लोग नहीं जानते थे। वही रामन अब चिरुता की समस्या को लेकर मास्टर का मुँह ताक रहा था। मास्टर पर ज़ोर दे रहा था कि चिरुता को वहीं बुलाकर मास्टर जी उससे पूछताछ करें।

कृष्णन मास्टर अपना सिर सहला रहे थे कि तभी एक आदमी फाटक से आता दिखाई दिया। पैर की उँगली तक धोती और बायें कन्धे पर एक तौलिया डाले मुँह में तीन-चार दाँतों के साथ मुस्कराते हुए आँगन में आने वाले लम्बे कद के इस आदमी को देखने पर कृष्णन मास्टर ने नाक-भौं सिकोड़ी : एक बला और आ रही है।

इस तरफ आता वह आदमी और कोई न था! नारदन कुण्टु था।

कुण्टु अवकाश-प्राप्त कलाल है। उसकी उम्र अस्सी वर्ष की होने पर भी उसकी खाल में कोई शिकन न थी। रीढ़ में भी कोई गड़बड़ी न थी। उसके सिर का गंजापन वार्निश की तरह चमकता था।

कुण्टु के आठ लड़के थे। उन्हें नारियल पर चढ़ने का जिम्मा सौंपकर वह घर में चुपचाप बैठता। उसकी आदत है - झगड़ा कराना और लोगों के कान भरना। इधर-उधर से सुनी-सुनायी बातें और छोटे बच्चों और नौकरानियों से भेद-भरी बातें लेकर वह मूलिप्परंबिल गोविन्दन मास्टर के पास बैठता। कुण्टु के लाये सामानों को केकड़ा अपने बिल में सुरक्षित रखता। केकड़ा गोविन्दन की मृत्यु के बाद कुण्टु बिना डेरे के इधर-उधर घूमता फिरता है।

अतिराणिप्पाटं और उसके समीप रहनेवालों को कुण्टु बिलकुल नहीं सुहाता है। क्योंकि चुगलखोर के अतिरिक्त वह अपशकुनी भी है। कुण्टु की जीभ के मध्य में एक काला धब्बा है—साँप के ज़हर की थैली की तरह वह किसी वस्तु को देखकर मुँह से कुछ बताता तो निशाना ठीक जगह पर लगता। कुण्टु को दूर से आते देखकर माताएँ बच्चों को कहतीं, 'अरे बच्चो, जल्दी अन्दर भाग जाओ। एक बन्दूकधारी आ रहा है।'

श्रीधरन की माँ को उसे देखकर भय और जुगुप्सा होती। उसकी धारणा है कि कुण्टु के आने पर कोई अनर्थ हो जाएगा। उसका यही अनुभव था। एक बार घर के दाहिनी ओर एक टोकरी में कुछ मुर्गे एक जुट होकर शोर मचा रहे थे तभी बन्दूकधारी आ गया। कुण्टु बरामदे में कान उठाकर खड़ा हो गया : "उस पार कौन छुरी रगड़ रहा है?"

अगले दिन से मुर्गी के बच्चे ऊँघने लगे। एक-एक होकर मरने भी लगे। तीन दिन बाद नौ बच्चों में से सिर्फ दो ही बचे। इनमें से एक चील उड़ा ले गयी।

कुण्टु से कृष्णन मास्टर भी डरते थे। कुण्टु की बुरी नजर का प्रतीक सुपारी का एक पेड़ कन्निप्परंप्पु में अब भी है। सुपारी के पेड़ का मोटा तना देखकर कुण्टु ने कहा था, "हाथी-जैसा सुपारी का पेड़।"

सुपारी का पेड़ हाथी जैसा तो बन गया, लेकिन अब तक उसमें कोई सुपारी न हुई!

'उर्वशी शाप उसका' की कहावत के अनुसार कुण्टु की बुरी नज़र को एक बार किसी कार्यसिद्धि में लगाने की बात आराकश वेलु ने कही थी। आठ-नौ वर्ष पुरानी बात है। कुटकु में कुट्टायी वेलु का सहयोगी बनकर चिराई का काम करने वाला समय था वह। एक लकड़ी के पौन हिस्से की चिराई हो चुकी थी। उसमें किसी तरह काठ का एक टुकड़ा लटक गया। कितनी ही कोशिश करने पर भी उसे अलग नहीं कर सका। तब कुण्टु नारियल के गुच्छों को छेदने के लिए वहाँ गया। कुट्टायी को अचानक एक तरकीब सूझ गयी : कुण्टु से एक गोली लगवाकर देख लें।

"कुण्टु मामा, ज़रा ये फँस गया है"—कुट्टायी ने निस्सहाय भाव से इशारा कर बताया।

कुण्टु ने उसे देखा : "अरे, हरामज़ादे दरवाजा खोल!" फिर एक ठोकर—काठ के दो टुकड़े हो गये!

एक बार कृष्णन मास्टर से बातचीत करते समय कुण्टु ने मास्टर की स्वर्ण-रंग-सी विशाल पीठ को बड़े प्रेम-आदर से सहलाया। वह कुछ कहने ही वाला था तभी "अरे, गोली मत मार!" ठीक मुहूर्त में ही मास्टर ने रोक दिया। गोली छूटे बिना कुण्टु के मुँह में ही धुआँ हो गया!

उसके बाद कुण्टु कन्निप्परंपु में आते समय बड़े ध्यान से ही बातचीत करता। बातचीत में वह उपमा-अलंकारों का प्रयोग नहीं करता।

कुण्टु को मालूम था कि आम-लोग भय और घृणा से ही उसे देखते हैं। काली जीभ की बैटरी की शक्ति कम होने के कारण भी ऐसा होगा, वह अब पहले की तरह अधिक गोलियाँ नहीं मारता। अपनी जीभ में जो जहर लगा था उसे वह फिलहाल प्रदूषण में इस्तेमाल कर रहा था।

में पहुँच गया है। हमारे इस इलाके में कोई बरकत नहीं होती। यहाँ से जानेवाले लोग अच्छी हालत में पहुँच गये हैं। कुटकु में गए उस कुट्टायी की हालत देखो। अब कुटकु में उसका अपना कॉफी का बाग, एक अच्छा मकान है और सुअरों के झुंड हैं। यह सूचना हाल ही में वहाँ जाकर लौटे कोरप्पन ठेकेदार के मुंशी फाल्गुन ने दी थी। उस दिन कुट्टायी अपने मौहल्ले को छोड़कर नहीं गया होता तो रात को शराब पीकर गाली-गलौज का नगमा गाकर अतिराणिप्पाटं से चला जाता—"

"मोहल्ला छोड़कर जाने मात्र से कोई फायदा नहीं होगा। माथे की लिखावट भी अच्छी होनी चाहिए।" कुण्टु ने गंजे सिर को सहलाते हुए कहा, "कोलंबु मे गये उस किट्टुण्णि की हालत भी ज़रा देखो···"

"कोलंबो के मामा की ताड़ी की दूकान और जायदाद की देखभाल के लिए किट्टुण्णि को तार भेजकर बुलाया नहीं था क्या?"

"बात तो ऐसी ही थी। मृत्यु के पहले पंगन ने भतीजे किट्टुण्णि को तार भेज कर-बुलवाया। किट्टुण्णि को कोलंबो पहुँचे दो दिन हुए थे। बस इतने मे पंगन की मृत्यु हो गयी। फिर एक हफ्ते के बाद किट्टुण्णि की भी···"

"अरे, किट्टुण्णि को क्या हुआ?" मास्टर ने उत्कंठा के साथ पूछा।

उसने इशारा किया कि किट्टुण्णि का किस्सा खतम हो गया है।

कृष्णन मास्टर अचानक इस बात पर यकीन नहीं कर सके।

"मर गया, मास्टरजी, वह मर गया," कुण्टु ने बीच में ही टोक दिया। "उसकी स्वाभाविक मौत नहीं थी। उसका कत्ल किया गया था। पंगन की औरत के एक तमिलभाषी प्रेमी ने उसे मरवा डाला। किट्टुण्णि के भैया परंगोटन को कोलंबो से एक मित्र ने एक गुप्त पत्र लिखकर इसकी सूचना दी थी··"

"देखो कैसा लगता है? कोलंबो में मामा की ताड़ी की दूकान और जायदाद के लिए ललचाकर जानेवाले उस गपिया छोकरे की गर्दन को एक छुरी ही हासिल हुई···" कुण्टु ने गर्दन छूकर दिखायी।

यह कहानी सुनकर कृष्णन मास्टर सिहर उठे।

कुण्टु ने सिर उठाकर देखा: पगडंडी से मूँछ कणारन जा रहा था। कुण्टु ने कणारन को ताली बजाकर पुकारा। कणारन ने ज़रा मुड़कर देखा।

"कणारन, मैंने कल तुमसे जो कहा था, उसे गाँठ में बाँध लेना। भूलना मत। अरे सुना, इस अमावस को जाकर उसकी व्यवस्था करो।"

कणारन कुछ कहे बगैर सिर हिलाता हुआ आगे बढ़ गया।

"इस देश में एक ऐसा उत्पात भी है।" कुण्टु ने कोसते हुए कहा।

"कुण्टु, क्या बात है?" मास्टर ने पूछा।

"कणारन का बाप पलनि पुजारी वेलु हर कहीं जाकर लोगों को डराने-धमकाने लगा है···"

पेण्टर रामन की बेटी चिरुता के 'गर्भ' के रहस्य की गांठ खोलने के मुहूर्त में ही नारदमुनि कुण्टु इधर आ पहुँचा था। उस समाचार का एक अंश भी वह सुन ले तो देशभर में बदबू फैलाता घूमे कि पेण्टर रामन की बेटी चिरुता ने एक अवैध सन्तान को जन्म दिया है···

रामन मुँह फैलाकर बैठ गया। कुण्टु बरामदे में चढ़कर वहाँ की बेंच पर जा बैठा। मोटे ओठ को फैलाकर जँभाई लेते हुए एक कोने में बैठे रामन को आँखें फाड़कर देखता हुआ वह फिर मास्टर की ओर मुड़ गया।

"अर्जीनवीस आण्डि को खोजने गया था।"

(वह दूसरी किसी बात के लिए गया था तो मैं इधर चला आया। यह सूचित करने के लिए ही वह भूमिका थी।)

"फिर क्या आण्डि नहीं मिला" ? मास्टर ने पूछा।

"मिला। लेकिन उसने कहा कि दो दिन के लिए उसके पास समय नहीं है। भारत-माता कुमारन के रजिस्ट्री करने के दस्तावेज़ तैयार कर रहा था···"

"कुमारन को किस दस्तावेज़ की रजिस्ट्री करनी है।"

"क्या मास्टर ने नहीं सुना ?" कुण्टु उधर बैठ गया। "स्वर्गीय कुबड़े वेलु का घर और अहाता कुमारन खरीदनेवाला है।"

"बहुत अच्छा !" मास्टर ने कुमारन को बधाई दी। कुण्टु को यह अच्छा नहीं लगा। "माप्पिला बाज़ार में फेंकी हुई हड्डी और खाल को लेकर खिलौने तैयार कर बेचनेवाले कण्णन का बेटा अब तो बड़ा मालिक हो गया है न ?··· महल बनाने जा रहा है !" कुण्टु ने दाहिने हाथ के घुटनों के नीचे के निशान के नज़दीक के फोड़े को तोड़ते हुए जरा हँसी की मुद्रा में कहा।

"तब वेलु की पत्नी कुट्टिपेण्णु और उसका बेटा अप्पुट्टि कहाँ जाएँगे ?" मास्टर ने पूछा।

"वह तो दूसरी बात है।" कुण्टु ने हाथ को खुजाते हुए कहा।

"ठेकेदार केलुक्कुट्टि उस शैतान लड़के को तमिलनाडु में धन्धा करने के लिए ले गया। वह उस काली माँ को भी मजदूरों के लिए काँजी तैयार करने के लिए ले जायगा···"

"वे वहाँ सकुशल रहें !" मास्टर ने आशीर्वाद दिया।

कुण्टु ने चेहरा सिकोड़ लिया।

"अब उस केलुक्कुट्टि की क्या हालत है ? एक दिन उसे रेलवे स्टेशन से आते हुए देखा था। इक्के-गाड़ी में रेशमी कमीज़, धारीदार धोती, हाथ में सोने की घड़ी —फिर कहना ही क्या—पहले पत्थर तोड़कर मिट्टी में घिसटनेवाला लड़का···!"

"कुण्टु, क्यों तुम ऐसी बातें कह रहे हो ?" मास्टर ने दाढ़ी के पके बालों को सहलाते हुए कहा, "केलुक्कुट्टि हमारे इलाके से जाने के बाद आज अच्छी हालत

में पहुँच गया है। हमारे इस इलाके में कोई बरकत नहीं होती। यहाँ से जानेवाले लोग अच्छी हालत में पहुँच गये हैं। कुटकु में गए उस कुट्टायी की हालत देखो। अब कुटकु में उसका अपना कॉफी का बाग, एक अच्छा मकान है और सुअरों के झुंड हैं। यह सूचना हाल ही में वहाँ जाकर लौटे कोरप्पन ठेकेदार के मुंशी फाल्गुन ने दी थी। उस दिन कुट्टायी अपने मौहल्ले को छोड़कर नहीं गया होता तो रात को शराब पीकर गाली-गलौज का नगमा गाकर अतिराणिप्पाटं से चला जाता—"

"मोहल्ला छोड़कर जाने मात्र से कोई फायदा नहीं होगा। माथे की लिखावट भी अच्छी होनी चाहिए।" कुण्टु ने गंजे सिर को सहलाते हुए कहा, "कोलंबु में गये उस किट्टुण्णि की हालत भी जरा देखो···"

"कोलंबो के मामा की ताड़ी की दूकान और जायदाद की देखभाल के लिए किट्टुण्णि को तार भेजकर बुलाया नहीं था क्या ?"

"बात तो ऐसी ही थी। मृत्यु के पहले पंगन ने भतीजे किट्टुण्णि को तार भेज कर-बुलवाया। किट्टुण्णि को कोलंबो पहुँचे दो दिन हुए थे। बस इतने में पंगन की मृत्यु हो गयी। फिर एक हफ्ते के बाद किट्टुण्णि की भी···"

"अरे, किट्टुण्णि को क्या हुआ ?" मास्टर ने उत्कंठा के साथ पूछा।

उसने इशारा किया कि किट्टुण्णि का किस्सा खतम हो गया है।

कृष्णन मास्टर अचानक इस बात पर यकीन नहीं कर सके।

"मर गया, मास्टरजी, वह मर गया," कुण्टु ने बीच में ही टोक दिया। "उसकी स्वाभाविक मौत नहीं थी। उसका कत्ल किया गया था। पंगन की औरत के एक तमिलभाषी प्रेमी ने उसे मरवा डाला। किट्टुण्णि के भैया परंगोटन को कोलंबो से एक मित्र ने एक गुप्त पत्र लिखकर इसकी सूचना दी थी···"

"देखो कैसा लगता है ? कोलंबो में मामा की ताड़ी की दूकान और जायदाद के लिए ललचाकर जानेवाले उस गपिया छोकरे की गर्दन को एक छुरी ही हासिल हुई···"कुण्टु ने गर्दन छूकर दिखायी।

यह कहानी सुनकर कृष्णन मास्टर सिहर उठे।

कुण्टु ने सिर उठाकर देखा : पगडंडी से मूँछ कणारन जा रहा था। कुण्टु ने कणारन को ताली बजाकर पुकारा। कणारन ने ज़रा मुड़कर देखा।

"कणारन, मैंने कल तुमसे जो कहा था, उसे गाँठ में बाँध लेना। भूलना मत। अरे सुना, इस अमावस को जाकर उसकी व्यवस्था करो।"

कणारन कुछ कहे बगैर सिर हिलाता हुआ आगे बढ़ गया।

"इस देश में एक ऐसा उत्पात भी है।" कुण्टु ने कोसते हुए कहा।

"कुण्टु, क्या बात है ?" मास्टर ने पूछा।

"कणारन का बाप पलनि पुजारी वेलु हर कहीं जाकर लोगों को डराने-धमकाने लगा है···"

"क्या कहा ? पुजारी वेलु आठ साल पहले लटककर नहीं मर गया था ?"

"हाँ, उसी महापापी की करतूत है।" कुण्टु ने आंखें फाड़कर बताया। "अब वह अतिराणिप्पाटं में रात को घूमने-फिरने लगा है। पिछले शुक्रवार को मेरे सामने खड़ा होकर ज़रा डराया···मैं 'कावु' का उत्सव देखकर आधी रात लौट रहा था। हल्की-सी चाँदनी थी। काठ के गोदाम के मालिक भास्करन के घर के सामने की पगडंडी की ओर मुड़ने पर एक आकृति वहाँ खड़ी थी। उसकी दाढ़ी और जटाएँ थीं और कंधे पर मोर पंख की बहंगी भी। मैंने उसके चेहरे की ओर देखा : गर्दन झुकी हुई थी। जीभ तो आधा गज बाहर लटक रही थी! लटककर मरने वाला पुजारी ! एक ही नज़र देख सका। अचानक धुएँ की तरह अप्रत्यक्ष हो गया···कल मैंने कणारन को बताया, "कणारन, तुम्हारा पुजारी बाप मारा-मारा फिरने लगा है। उससे तुम्हारे और इस इलाके का अनर्थ हो सकता है। पेरुर या तिरुनेल्ली में जाकर पिंड रखकर पिता की सद्गति का द्वार खोल दो।" मैंने कणारन को यही बात याद करायी थी।

लटककर मर जानेवाले पुजारी का प्रेत—इस इलाके की एक और समस्या है। कृष्णन मास्टर उकड़ूँ बैठकर अपने गंजे सिर को सहलाने लगे।

तब भी रामन आधा मुँह खोले एक कोने में चुपचाप बैठा था।

कुण्टु ने रामन की तरह आँखें तरेरकर देखा। "अरे, तू क्यों मुँह खोलकर चुपचाप यों डाक-पेटी की तरह एक कोने में उकड़ूँ बैठा है।"

रामन का मुँह कुछ अधिक खुल गया।

## 30. पिता का निधन

बाहर के नियन्त्रण की धमकी के बिना स्वेच्छापूर्वक ज़िन्दगी गुज़ारने की इच्छा पहले कभी-कभी मन को अस्वस्थ बनाती थी। हालाँकि जिस आज़ादी की कामना की थी, एकाएक प्राप्त होते ही श्रीधरन को नया भय महसूस हुआ। अकेलेपन की लाचारी के बोध ने उसे घेर लिया। नये कर्तव्यों के अनुष्ठान और यौवन की इच्छाओं में ताल-मेल न ला सकने की विवशता थी। आज्ञा देनेवाला और स्वयं करनेवाला होने पर एक तरह का निष्क्रिय मनोभाव जागृत हुआ··· सलाह देने, प्रोत्साहन देने और रोकने के अधिकारी और महान व्यक्ति का अभाव···

कन्निप्परंप्पु के कृष्णन मास्टर का देहान्त अचानक ही हुआ था।

बगीचे के एक आम के पौधे को सुबह पानी देते समय वह एक बार खाँसे। फिर खाँसी बढ़ गयी, बेकाबू हो गयी। छाती सहलाते—खाँसते हुए अपने कमरे के पलंग पर लेटकर उन्होंने अन्तिम साँस छोड़ दी।

पिताजी ने पहले एक वार जो कहा था, उसकी याद अव ताजा हो आयी : "ईश्वर की सृष्टि पर इन्सान धूल-मिट्टी की सृष्टि भी नहीं कर सका है। ईश्वर के सर्जित मिट्टी के एक कण को भी आदमी विनष्ट नहीं कर सका है। वह ऐसा कर भी नहीं सकेगा। ईश्वर की सृष्टि में जो कुछ है, इन्सान उससे ही कुछ खेल खेलने लगता – उसी खेल को हम जिन्दगी के नाम से पुकारते हैं।"

यों पिताजी का भौतिक शरीर पंचभूतों में ही समा गया है। दार्शनिक स्तर पर हम ऐसा समाधान कर सकते हैं, लेकिन एक सच्चाई फन फैलाये खड़ी है। कन्निप्परंप्पु के कृष्णन मास्टर का निधन हो गया। श्रीधरन के पिता इस दुनिया से हमेशा के लिए चले गए हैं। वावू जी को अव वह कभी नहीं देख सकेगा। कोट, टोपी, चश्मा, ललाट में चन्दन का टीका, हाथ में छतरी, पैर में चप्पल पहनकर सफेद नाटे कद के उस मान्य व्यक्ति को सिर ऊँचा कर कन्निप्परंप्पु के फाटक में उतरकर आते हुए अव कोई नहीं देख सकेगा। वह पार्थिव शरीर पिछले हफ्ते नगर निगम के श्मशान में राख हो गया है······वे अपने जीवन में वड़े ईमानदार थे—यह अव अतिराणिप्पाटं की दन्त कथा हो गयी है।

एकाएक वीते हुए समय की स्मृतियाँ सामने उभर आयीं।

—श्रीधरन एक लंगोटी पहनकर कन्निप्परंप्पु के दक्षिण आंगन के रेत में अकेले खेल रहा है। आँगन के मोड़ पर लाल रंग के फूल खिले हैं। उस समय अम्मालु अम्मा नारियल के कच्चे छिलके से एक वैल वनाकर उसके एक सींग में रस्सी बाँध देती है।

"श्रीधरन···।" तभी वरामदे से पिताजी पुकारते हैं। पिताजी की पुकार अच्छी नहीं लगी। वहुत देर तक दौड़ने से वैल विलकुल थक गया है। उसे चारा और जल देना है। उसी समय वावू जी पुकार रहे हैं—श्रीधरन चुपचाप आता है।

"श्रीधरन, अरे वेटा !"—फिर पुकारने लगते हैं।

झट मन में विचार उठता : पिताजी मिठायी लाये होंगे।

"अरे कण्डप्पन, कहीं मत जाना। यहीं चुपचाप रहना—अरे, सुना—मैं अभी आता हूँ।" वह वैल की पीठ पर थपकी देता है। उसके कान में कुछ फुसफुसाकर तसल्ली भी देता। पिताजी कोट और टोपी उतारे विना वरामदे में ही खड़े हुए हैं। हाथ में कोई दोना दिखाई नहीं पड़ता। निराशा से वावूजी के चेहरे की तरफ देखता है।

पिताजी मुस्कराते हुए वरामदे के कोने में इशारा करते हैं।

पानी से भरे एक वड़े कटोरे में एक वतख तैर रही होती है।

लाल फूल के रंग की चोंच, सफेद कपड़े के रंग की गर्दन, पंखों को फैलाए कटोरे के जल में तैरनेवाली वतख देखकर श्रीधरन को वड़ा अचम्भा होता है।

बेटे के चेहरे के अद्भुत आह्लाद का रस लेने के बहाने पिताजी अपनी दाढ़ी सहलाते हुए मुस्कराते हुए देखते रहते हैं।

रेशमी लंगोटी पहने बीते बचपन की स्मृतियाँ जमाने के कोहरे में ओझल हो गयी हैं।

लेकिन कटोरे के पानी में तैरकर नाचनेवाली रंगबिरंगी बतख और मुस्कानभरी पिताजी की वह दृष्टि मन में आज भी पैठी हुई है।

ओनम का ज़माना :

रात को कन्निपरंप्पु के पुराने घर के बरामदे की चटाई पर पालथी मारकर दीपक की रोशनी में वह चौथी कक्षा के 'श्रीकृष्ण चरित' मणिप्रवाह श्लोकों को दोहरा रहा था—

"आया शकटासुर छद्मवेश में
अपने हो तैयार मुकुन्द गात्र में।"

"डणुगं-घुण्ड्-डणुगं-घुँ-घुँ-घुँ······"

एक अद्भुत नाद ने कानों को जगाया। शकटासुर को वहीं झपटने के लिए छोड़कर उत्सुकता से सिर उठाकर देखा।

"डणुगं-घुण्डू-डणुगं-घुँ-घुँ-घुँ······"

यह मोहक स्वर कानों के लिए अत्यन्त प्रिय लगा।

अहाते से, दीवार के कोने से वह आ रहा है। क्या वह किसी पक्षी का गीत है ? किसकी झंकार है ?······

चिड़िया इस तरह ताल-क्रम में लगातार नहीं चहचहाती। फिर मैं यह क्या सुन रहा हूँ ?

"डगुँग-ठणॅग-ठणुँग-घुँ-घुँ-घुँ······

उस केले के बीच से एक काली आकृति निकल रही है। क्या वह शकटासुर है ?

वह आकृति आँगन में पहुँच गयी। ओह, काला कोट और टोपी पहने पिताजी ! छाती पर किसी चीज़ को ढक रखा है।

पिताजी ने मुस्कराते हुए श्रीधरन के सामने आँगन में खड़े होकर एक अचरज प्रकट किया। उन्होंने ओणम धनुष को बजा दिया।

कृष्णन मास्टर ने बाज़ार से ही यह धनुष खरीदा था। श्रीधरन को हैरान करने के लिए उन्होंने इसे केलों के बीच एक बार बजाकर सुनाया था।

ओणम धनुष नाम के देहाती बाजे को श्रीधरन पहली बार देख रहा है। बेंत की छड़ और नारियल के पत्ते की खाल से बनाये गये इस बाजे के मधुर स्वर ने श्रीधरन को चकित कर दिया।

उस दिन, रात को माँ ने भोजन करने को कहा तो श्रीधरन ने आनाकानी की। ओणम धनुष को बजाता वह घण्टों बैठा रहा। उसे एक तौलिये से ढककर सिर-हाने रखकर ही उस दिन सोया था······

फिर कई ओणम गुज़र गये। बचपन और कौमार्य बीत गये। अहाते के केलों के बीच से ओड़त्तप्पन की तरह पिताजी का टोपी और चश्मा पहनकर सिर घुमाते हुए आँगन में आना, जल्दी से ओणम धनुष बजाने का वह दृश्य मन में अब भी ताज़ा है। उसका मंत्र-मधुर क्वाण अब भी कानों में गूंज रहा है—पुत्र वात्सल्य के नए गीत की तरह······

चेटी भवन्निखिलघेटीकदंबवन···
वाटीषु नाकि पटली
कोटीरचारुतरकोटी मणिकिरण—
कोटी करंबित पदा
पाटीरगन्धिकुचशाटी कवित्वपरि·—
पाटीमगाधिपसुता
घोटीकुलादधिक घाटीमुदार मुख
वीटीरसेन तनुताम्······

सुबह बिस्तर पर खुमारी में लेटा हुआ नीचे से आता, भक्ति-रस से ओतप्रोत, देवी-स्रोत अब नहीं सुनेगा। सुन-सुनकर कंठस्थ हो गया वह मधुर कीर्तन अब एक सपना मात्र रह गया है।

पश्चाताप के साथ ही उसे याद करना है।

—कुछ शामों में वह अकेला समुद्र-तट पर बैठकर जिन्दगी की चिन्तना में लीन हो समय काटता था। पिताजी रात को आठ बजे से पहले ही घर वापस आने का आदेश देते। देर से घर पहुँचने पर दिल जोर से धड़कने लगता। पिताजी बरामदे की आराम-कुर्सी पर बैठकर पढ़ते होंगे। (अंग्रेजी व्याकरण, मुहावरे और संस्कृत श्लोक ही उनके प्रिय विषय थे।) मेज के दीपक की रोशनी में चश्मे का कांच बीच-बीच में झिलमिलाता।

चोर की तरह सिर झुकाकर लुक-छिपकर बरामदे में चढ़ते श्रीधरन को वे चश्मे से आँखें फाड़े हुए देखते। उनकी वह दृष्टि मौन दण्ड देती थी।

अब वह वही दृष्टि देखने के लिए ललचा रहा है। रात को, कन्निप्परंपु का फाटक चढ़ने पर बरामदे के कोने की आराम-कुर्सी की तरह कुछ याद किये बिना धड़कते दिल से देखने लगता···चश्मे के कांच की झिलमिलाहट नहीं थी। वहां सिर्फ शून्यता थी।

खाली कुर्सी देखने पर उसकी आँखें भर आती थीं।

पिताजी कभी-कभी खरी-खोटी सुनाते, मारते-पीटते या दण्ड देते, तब उनने

क्या पिताजी को कोसा न था ? बाबूजी के बाद स्वेच्छापूर्वक घूमने-फिरने का विचार क्या मन में छिपाकर नहीं रखा था ? क्या ऐसा विचार न था ? अपनी अन्तरात्मा से ही पूछे·· उस अपराध-बोध के जागते समय के दर्द को महसूस करे···

कॉलेज में सीनियर इण्टरमीडियेट पढ़ने के दिन थे वे। एक इतवार की सुबह पिताजी ने पास बुलाकर कहा : "श्रीधरन, तुम जल्दी नहाकर तैयार हो जाओ। एक जगह जाना होगा। तुम भी साथ चलोगे।"

'कहाँ', 'क्यों'—कुछ नहीं पूछा। उनसे इस तरह कुछ नहीं पूछता था वह। उनकी बात मान लेता। बस इतना ही।

तौलिया और साबुनदानी लेकर कुएँ के करीब गुसलखाने में जाते समय माँ से पूछा, "पिताजी मुझे कहाँ ले जा रहे हैं ?"

माँ ने कहा, "तबादला होकर एक जिला मुनसिफ आये हैं। वे बाबूजी के पुराने शिष्य हैं। उनसे मिलने जा रहे हैं।"

"इसके लिए मैं साथ क्यों जाऊँ ?"

"मैं क्या जानूँ ? तुझे मजिस्ट्रेट से ज़रा मिलाना होगा—शायद नौकरी के लिए।" माँ ने गर्व से कहा।

चल पड़ा पिताजी के साथ। रास्ते में उन्होंने सलाह दी, "हम मुनसिफ के पास जा रहे हैं। वहाँ जाने पर अनुशासन से पेश आना। वैसे कुंजिरामन मेरा पुराना छात्र है। लेकिन वह अब एक ऊँचे ओहदे पर है। याद रखो, जवाब देते समय 'जी' मिलाकर ही बोलना। बैठने के लिए कहने पर भी नहीं बैठना। समझे। वहाँ खड़े होते समय नाखून मत काटना। मुनसिफ के अंग्रेज़ी में कुछ पूछने पर घबराहट से आँखें फाड़कर चुपचाप नहीं रहना। व्याकरण की गलती होने पर भी कोई परवाह नहीं—अच्छे उच्चारण के साथ झट जवाब देना। अगर सवाल नहीं समझा तो बड़े अदब से इतना ही कहना "आइ बेग योर पार्डन सर !"

अजीब झंझट में फँस गया वह।

यों बाबूजी और श्रीधरन कुंजिरामन मुनसिफ के घर पहुँच गये।

नौकर ने अन्दर से झाँककर पूछा, "आप कौन हैं ? उनसे क्या कहना है ?"

पिताजी ने एक कागज के टुकड़े पर नाम लिखकर उसके हाथ में थमा दिया।

नौकर ने वापस आकर कहा, "भीतर आने को कहा है।"

मुनासिफ एक कपड़े की कुर्सी पर लेटा 'हिन्दू' अखबार पढ़ रहा था। धोती और कमीज़ पहने एक दुबला-पतला मध्यवयस्क युवक।

कृष्णन मास्टर को देखते ही उस पुराने शिष्य ने खड़े होकर प्रणाम किया।

"यू सिट डाउन, सिट डाउन" मास्टर ने इशारा करके कहा। फिर वे नज़दीक की एक कुर्सी पर बैठ गये।

मुनसिफ ने अपनी खाली कुर्सी की ओर इशारा करते हुए अदब से कहा, "मास्टर जी, इधर बैठिए।"

मास्टर को जरा शंका हुई। फिर "आल राइट" कहकर मुनसिफ की आराम कुर्सी पर आसीन हो गये। उन्होंने श्रीधरन की ओर अर्थपूर्ण ढंग से इस तरह देखा मानो कहना चाहते हों कि गुरुभक्ति इनसे सीख लो।

मुनसिफ दूसरी कुर्सी पर बैठ गया।

"दिस इज़ माइ सन। ही इज़ स्टडीइंग इन सीनियर इण्टरमीडियेट"—बेटे का मुनसिफ से परिचय कराया। (मुनसिफ-जैसे शिष्य पर अभिमान था तो इण्टरमीडियेट में पढ़ते होनहार बेटे पर भी गर्व था। ऐसा भाव परिचय कराते समय अभिव्यक्त हुआ था।)

"नाम क्या है ?" मुनसिफ ने श्रीधरन की तरफ देखकर बड़े सौभाग्य भाव से मलयालम में पूछा।

"श्रीधरन, सर" (शक हुआ कि "सर" पहले जोड़ना था या बाद में।)

मास्टर और पुराने शिष्य ने लम्बी बातचीत की। उन्होंने कई पुरानी बातें भी याद कीं।

"नाव लेट मी हियर, यू से अलक्जाण्डर" मास्टर ने चेहरे पर बनावटी बड़प्पन प्रकट करते हुए पुराने शिष्य को आदेश दिया।

सुनकर मुनसिफ आँखें मींचकर बड़ी देर तक हँसता रहा।

"सर, वेन्नेवर आई कम एक्रॉस अलक्जाण्डर, योर वाशरमेन एपियर्स बिफोर मी।"

सुनकर कृष्णन मास्टर ठट्ठा मारकर हँस पड़े।

श्रीधरन को उनके हँसने का कारण मालूम नहीं हुआ।

पर्दे लटकते दरवाज़े के ऊपर दीवार पर लगे फोटो पर श्रीधरन की निगाह गयी। चोटी को एक हिस्से में बांधकर, कान में कुण्डल पहन काला-कलूटा, दुबला एक अर्धनग्न बूढ़ा सिंहासन-जैसी एक भव्य कुर्सी पर बैठा आँखें फाड़कर देख रहा था। मुनसिफ के बाबूजी होंगे, श्रीधरन ने अन्दाज़ लगाया।

"श्रीधरन, नाव यू गो आउट एण्ड हेव ए लुक एट द ब्यूटिफुल फ्लावर गार्डन", पिताजी ने श्रीधरन की ओर देखकर कहा।

श्रीधरन बाहर की तरफ चला गया। लगा, पिताजी को अपने मुनसिफ शिष्य से कुछ गुप्त बातचीत करनी है—शायद बेटे के बारे में ही।

श्रीधरन बाग में गुलाब के फूलों के रंग और सौन्दर्य को देखता रहा।

मुनसिफ के घर से लौटने पर रास्ते में पिताजी ने कहा, "श्रीधरन, कुन्हिरामन सिर्फ बी० ए० है। अदालत में एक मुंशी की हैसियत से भर्ती हुआ। अपनी बुद्धि, लगन और सेवा से उसने उच्च अधिकारी गोरों का मन लुभा लिया और

एक ऊँचे ओहदे पर पहुँच गया। भाग्य में हुआ तो तुम्हें भी···"

पिताजी ने अपने वाक्य की पूर्ति नहीं की।

श्रीधरन ने मन में उसे पूरा कर लिया : "श्रीधरन मुनसिफ" (लगा कि बीच में या अन्त में बी० ए० जोड़ना चाहिए।)

"धूप में मत चलो। छतरी की छाया में आ जाओ।" पीछे चलते बेटे को पास आने का इशारा करते हुए कृष्णन मास्टर ने कहा।

यों कुछ दूर आगे बढ़ने के बाद श्रीधरन ने पूछा, "पिताजी, आप और मुनसिफ अलक्जाण्डर की बात कहकर क्यों हँस पड़े थे ?"

"वह एक पुरानी घटना है।" बाबूजी ने हँसते हुए बताया, "कुंजिरामन मुनसिफ मेरी कक्षा का एक होनहार लड़का था। लेकिन उसका अँग्रेज़ी उच्चारण खराब था।" "अलक्जाण्डर सेलकर्क" नाम की अंग्रेज़ी कविता के अलक्ज़ाण्डर को 'अलस्काण्डर' कहकर ही कुंजिरामन उच्चारण करता। कितनी बार पढ़ाने पर भी उसके मुँह से अलस्काण्डर ही निकलता। आखिर मैंने एक तरकीब बतायी, 'अलकुक़ार' धोबी का स्मरण कर उच्चारण करने को कहा। 'अलकु-जाण्डर' कुंजिरामन ने ठीक किया। उस बात को याद दिलाकर ही मुनसिफ ने कहा था : अलक्जाण्डर के कारण ही मास्टर का धोबी सामने हाज़िर हो जाता है···"

यों शिष्य अलक्जाण्डर कुंजिरामन मुनसिफ हो गया—एक लम्बी प्रतीक्षा के बाद। समझे बेटा !

श्रीधरन कुछ-भी नहीं हुआ—इन्टर परीक्षा भी वह पूरी न कर सका।

उस विचार ने पिताजी के मन पर जो विषाद का बोझ रख छोड़ा था उसे बाहर प्रकट किये बिना मन-ही-मन दबाये वे चुपचाप चल बसे।

श्रीधरन का सिर्फ 'कन्निप्परंप्पु के कृष्णनमास्टर के बेटे' नाम से ही पता है।

दूसरी एक घटना :

कॉलेज़ में पढ़ते समय ही यह घटना हुई थी। अतिराणिप्पाट के बढ़ई वेलायुधन की बड़ी बीवी मालुक्कुट्टि हिस्टीरिया रोग से परेशान थी। घर में एक औरत चेरियम्मु ही थी। वेलायुधनरेल वे के ठेकेदार कृष्णन कुट्टि के नये मकान के पूजा-कर्म में भाग लेने गया था। रस्म खतम होने के बाद ही वह घर वापस आ पाया।

उस बीच बढ़ई की पत्नी चेरियम्मु ने कन्निप्परंप्पु में आकर विनती की, "मालुक्कुट्टि दीदी रोग से तड़प रही है···उनसे जाकर कहने के लिए वहाँ कोई नहीं है—"

कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन को पुकारा। श्रीधरन ऊपर की मंजिल के कमरे में पढ़ रहा था। आठ बजे होंगे।

"बेटा, वेलायुधन बढ़ई की बीवी हिस्टीरिया का शिकार होकर तड़प रही है। वह ठेकेदार कृष्णनकुट्टि के घर पूजा-कर्म के लिए गया हुआ है। तुम जल्दी

वहाँ जाकर बढ़ई को समाचार दो। बेचारी औरत···"

पूजाकर्म करनेवाले उस नये घर पर—कृष्णनकुट्टि के घर पर—जाने में श्रीधरन को थोड़ा वैमनस्य है। पर, पिताजी का आदेश था। तिस पर उस बेचारी औरत की दुरवस्था।

अतिराणिप्पाटं से दो मील दूर रेलवे की पटरियों के नज़दीक ही ठेकेदार कृष्णनकुट्टि का ऊँचा मकान था। कृष्णनकुट्टि के ससुर तोंदवाले चाप्पुण्णि अधिकारी के तत्वावधान में पूजाकर्म धूम-धाम से हो रहा था। उस घर के लिए काम करनेवाले बढ़इयों में हर-एक को साधारण दान-दक्षिणा के अलावा चाँदी की एक-एक गज़ की छड़ी भी भेंट की गयी थी। यह भेंट देते समय ही श्रीधरन वहाँ पहुँचा था। उसने फाटक पर इन्तज़ार किया। थोड़ी देर बाद भीड़ के बीच वेलायुधन बढ़ई को पुकारकर उसे समाचार दिया।

चाँदी के गज की छड़ी को कन्धे पर रखकर बढ़ई हिस्टीरिया के वैद्य पणिक्कर के घर की तरफ दौड़ा गया। श्रीधरन अतिराणिप्पाटं वापस आ गया। सड़क से कन्निप्परंप्पु की पगडंडी पर अँधेरे में एक आदमी चुपचाप खड़ा था।

"श्रीधरन !"

"बाबूजी !"

वे श्रीधरन के लौट आने का इन्तज़ार करते खड़े थे।

"मुझे मालूम था कि कोई टॉर्च या रोशनी के बिना ही तुम पगडंडियों से जाओगे। तुम्हारे जाने के बाद मेरे ध्यान में यह बात आयी। सुबह मैंने इस पगडंडी पर कोई जीव सरकता हुआ देखा था। ज़रा सावधान रहा करो···" पिताजी ने टार्च से रोशनी की।

पिताजी श्रीधरन के आगे-आगे चलने लगे। वे झुककर मार्ग को बड़े ध्यान से देखते हुए धीरे-धीरे कन्निप्परंप्पु पहुँच गये।

इस तरह की छोटी घटनाएँ अब स्मृतियों में जलती हुई क्यों दिखाई देती हैं? अब ज़िन्दगी के अज्ञात अँधेरे में संकटों के आ पड़ने पर रोशनी करनेवाला कौन है?···

तभी ढेर सारी पुस्तकों को ढोकर एक आदमी को फाटक से आते देखा। ध्यान से देखने पर मालूम हुआ कि म्युनिसिपल बिल कलक्टर है। नया आदमी है—पुराने शंकुण्णि मेनोन के बदले आया एक मुस्लिम युवक।

उसे याद आया कि आकृति, पोशाक, आचरण और चरित्र में भी शंकुण्णि मेनोन कृष्णन मास्टर का ही प्रतिरूप था। वह भी आज इस दुनिया में नहीं है। वह भला आदमी फाँसी लगाकर मर गया।

म्युनिसिपल दफ्तर के एक सहयोगी के आर्थिक संकट में पड़ने पर शंकुण्णि मेनोन ने उस पर भरोसा कर लगान का पैसा देकर उसकी मदद की थी। उस

मित्र ने उसे धोखा दिया। पैसे की चोरी, विश्वासघात आदि
शंकुण्णि मेनोन के खिलाफ मुकदमा दायर किया गया···नौकरी
पड़ेगा और जेलखाने में सड़ना भी होगा—यह सोचकर उसने
से अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली।

श्रीधरन ने उस नोटिस पर निगाह घुमायी।

कन्निप्परंप्पु के खपरैल मकान के लिए लगान की विज्ञ
कृष्णन को।

चेनक्कोतु कृष्णन मास्टर म्युनिसिपल लगान के कागज़
हैं!

## 31. अतिराणिप्पाटं अलविदा!

श्रीधरन अतिराणिप्पाटं के दक्षिण मोड़ के सेमल के पे
का मधु-पान करते देखता खड़ा रहा। कल आखिरीवार
खानेवाला एक कौवा ही पंख फैलाकर सेमल की डालियों
पान कर रहा है। कृष्णन मास्टर के शुद्धि स्नान की रस्म

आदमियों की तरह पेड़ों में भी कुछ विशिष्ट पेड़ हो
व्यक्तित्व प्रदर्शित करनेवाला एक पेड़ है—दीर्घायु सेमल
डालियाँ कलात्मक हैं और भी उनकी एक विशिष्टता है।
उसकी डालें नहीं जातीं। प्रायः धरती के समानान्तर ही फै
की हस्तमुद्रा की तरह, उसकी जिन्दगी वर्ण वैविध्यपूर्ण है
बदलकर नया रूप धारण करता है। पहली बारिश के
फूटती हैं। उसके मुलायम पत्ते शरत् काल की हवा में न
पत्ते झड़कर मोती के थालों की तरह पगडंडियों के साथ व
हैं। सर्दी और कोहरे से ढके शिशिर की सुबहों में सेमल व
कौवे बैठते हैं। मोतियों के थालों से शहद पीने का वह
होता है। दो महीने बाद वसन्त ऋतु आने पर शिशिर
कर लटकते दिखाई देते हैं। गर्मी के मौसम में ये फूल र
की मुस्कान बिखेरते हैं···

'मगेये···ऊँ···' एक दयनीय रुदन पर ध्यान ग
आवाज़ आ रही है। कुट्टाप्पु के पुराने चबूतरे के कोने से—
मेंढक का प्राण रुदन है···कुट्टाप्पु के अभिशप्त घर का च
बीत जाने पर भी उसी तरह खड़ा और अ
ढक गया है।

है ? क्या वह भी राजयक्ष्मा से अस्वस्थ है या उसकी मौत हो गयी है ?

'मड्या'···मेंढक के चीत्कार कम होने लगा है। साँप मेंढक को आधा निगल गया होगा···

कुट्टप्पु के अहाते के कोने में घास के बीच कुछ पौधों में फूल खिले हैं।

"पुथुं—कू पुथुं—कू—पुथुंकू···" नाले की उत्तर दिशा में आराकश वेलु के घर के आँगन से ही शोरगुल और कुछ पीटने की आवाज़ सुनाई पड़ रही है। थोड़ी देर बाद बात मालूम हुई। वेलु के बेटे दामोदरन की पत्नी माणिक्य को दस महीने का पेट लिये चलते देखा था। माणिक्य ने एक बच्चे को जन्म दिया है। एक बड़ी छड़ी से ज़मीन पर पीटने और लोगों के शोरगुल की आवाज़ सुनी थी। लड़का हुआ है। शोरगुल इसी की सूचना है। लड़की पैदा होती तो पुकार नहीं होती। ऐसी दशा में ज़मीन को सिर्फ तीन बार पीटना ही काफी होता।

इस प्रकार आराकश वेलु अब दादा हो गया है। झगड़ालू उण्णूलिअम्मा दादी बन गयी है।

उण्णूलिअम्मा ने सात बच्चों को जन्म दिया था। उनमें सिर्फ दो ही बच्चों ने कुमारावस्था को पार किया था—बालन और दामोदरन। इनमें से भी बालन इलाका छोड़कर चला गया। उसका कोई पता नहीं लगा। दामोदरन गोरों के बैंक का चपरासी है। उसकी खाकी पोशाक और हरे रंग की साइकिल है। अतिराणिप्पाटं में सिर्फ़ दामोदरन को ही यह सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

तभी किसी को कन्निप्परंप्पु के फाटक से आते देखा। उस पर ध्यान दिया। शंकुण्णि कंपाउडर हैं। मोटे और छोटे कद के शंकुण्णि की वेशभूषा में पहले से कोई परिवर्तन नहीं आया है। तोंद और कमीज के साथ एक धोती पहनकर दोनों हाथों को ज़रा ऊपर उठाते हुए हिलता-डुलता ही वह आँगन में आ पहुँचा। लेकिन कंपाउण्डर के भरे फूले चेहरे का रंग ज़रा बदल गया है। दोनों गालों पर और आँखों की पलकों के नीचे कुछ कालिमा छा गयी है।

शंकुण्णि कंपाउण्डर ने कल पिताजी की आखिरी रस्म से सम्बन्धित दावत में सिर्फ़ भाग ही नहीं लिया था, तोंद के ऊपर तौलिया बाँधकर दावत में परोसने में मदद भी की थी। उसके यहाँ आने का क्या उद्देश्य होगा ?

आँगन में आकर कंपाउण्डर की बड़े आदर के साथ अगवानी की और उसे बरामदे में बैठने का निमन्त्रण दिया।

कंपाउण्डर आरामकुर्सी पर बैठ गया।

"श्रीधरन यहाँ तुम्हारा बड़ा भाई है न ?" नाक और मूँछ को सिकोड़ते हुए कंपाउण्डर ने पूछा।

"बड़े भाई यहाँ नहीं हैं। सुबह कहीं बाहर चले गये थे।"

(पिताजी की मृत्यु की सूचना का तार मिलने पर उस दिन कुंजप्पु तमिल-

मित्र ने उसे धोखा दिया। पैसे की चोरी, विश्वासघात आदि इलजाम लगाकर शंकुण्णि मेनोन के खिलाफ मुकदमा दायर किया गया···नौकरी से हाथ भी धोना पड़ेगा और जेलखाने में सड़ना भी होगा—यह सोचकर उसने छह फुट की रस्सी से अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली।

श्रीधरन ने उस नोटिस पर निगाह घुमायी।

कन्निप्परंप्पु के खपरैल मकान' के लिए लगान की विज्ञप्ति···श्री चेनक्कोतु कृष्णन को।

चेनक्कोतु कृष्णन मास्टर म्युनिसिपल लगान के कागज़ में आज भी ज़िन्दा हैं!

## 31. अतिराणिप्पाटं अलविदा !

श्रीधरन अतिराणिप्पाटं के दक्षिण मोड़ के सेमल के पेड़ पर कौवों को फूलों का मधु-पान करते देखता खड़ा रहा। कल आखिरीवार पिताजी का बलिपिण्ड खानेवाला एक कौवा ही पंख फैलाकर सेमल की डालियों पर नाचता हुआ मधु-पान कर रहा है। कृष्णन मास्टर के शुद्धि स्नान की रस्म अगले दिन है।

आदमियों की तरह पेड़ों में भी कुछ विशिष्ट पेड़ होते हैं। इस प्रकार का व्यक्तित्व प्रदर्शित करनेवाला एक पेड़ है—दीर्घायु सेमल का पेड़। सेमल की डालियाँ कलात्मक हैं और भी उनकी एक विशिष्टता है। ऊँचाई और लम्बाई में उसकी डालें नहीं जातीं। प्रायः धरती के समानान्तर ही फैल जाती हैं। एक नर्तक की हस्तमुद्रा की तरह, उसकी ज़िन्दगी वर्ण वैविध्यपूर्ण है। सेमल हर ऋतु में वेश बदलकर नया रूप धारण करता है। पहली बारिश के बाद पूरी तरह कोंपलें फूटती हैं। उसके मुलायम पत्ते शरत् काल की हवा में नाचने लगते हैं। हेमंत में पत्ते झड़कर मोती के थालों की तरह पगडंडियों के साथ बड़े फूलों को प्रदर्शित करते हैं। सर्दी और कोहरे से ढके शिशिर की सुबहों में सेमल की नंगी पकी डालियों पर कौवे बैठते हैं। मोतियों के थालों से शहद पीने का वह दृश्य अत्यधिक मनमोहक होता है। दो महीने बाद वसन्त ऋतु आने पर शिशिर के मरकत-जैसे फूल फूट कर लटकते दिखाई देते हैं। गर्मी के मौसम में ये फूल सूखकर वातावरण में रुई की मुस्कान बिखेरते हैं···

'मगेये···ऊँ···' एक दयनीय रुदन पर ध्यान गया, पश्चिम के अहाते से आवाज़ आ रही है। कुट्टाप्पु के पुराने चबूतरे के कोने से—साँप के मुँह में फंसनेवाले मेंढक का प्राण रुदन है···कुट्टाप्पु के अभिशप्त घर का चबूतरा और अहाता बरसों बीत जाने पर भी उसी तरह खड़ा है। ज़मीन और आसपास का अहाता घास से ढक गया है। कुट्टाप्पु को अहाते की ओर आये महीनों बीत गये। उसको क्या हुआ

"मैं अपनी बातों को सोचने-समझने लायक बन गया हूँ । कंपाउण्डर, अब इतना ही कहना बहुत है···" दृढ़ स्वर में श्रीधरन ने कहा।

कंपाउण्डर ने आराम कुर्सी से उठते हुए तथा तिरछी भौंहें कर श्रीधरन की ओर देखकर मन्त्र-जाप किया, "माँ-बेटे को यहाँ से निकालना होगा।"

"पिताजी तो हमेशा के लिए यहाँ से चले गये हैं। फिर यहाँ से उतरकर चले जाने में माँ-बेटे को क्यों अफसोस होगा ?"

श्रीधरन की बातें सुनकर कंपाउण्डर घृणा भरे लहजे में ओठों को सिकोड़-कर हँस पड़ा—"हाँ—हाँ। हम देखेंगे।"

दोनों हाथों और तोंद को हिलाते हुए कंपाउण्डर चला गया।

दूसरे दिन श्रीधरन पिताजी की डायरियाँ लेकर पढ़ रहा था।

कृष्णन मास्टर हर रोज डायरी लिखते थे। नगण्य घटना भी डायरी में वे लिखते। सालों से यह नियम चला आ रहा था। मृत्यु के एक दिन पहले भी उन्होंने डायरी लिखी थी। अंग्रेज़ी में ही डायरी लिखते। पुराने मित्रों से मिलने, बारिश होने एवं कुट्टिमालु के रजस्वला होने की बात भी डायरी में लिखते। जूते की मरम्मत करने की बात भी डायरी में लिखी गई थी। डायरी के अन्तिम पृष्ठ में श्रीधरन से सम्बन्धित एक बात थी : "गेव श्रीधरन फोर आनाज़ फॉर हेयर कट"

तभी कुंजप्पु को सामने कर शंकुण्णि कंपाउण्डर और उसके पीछे अर्ज़ीनवीस आण्डि कन्निप्पुरंप्पु में आते दिखाई दिये।

डायरी वहीं रख दी।

अर्ज़ीनवीस आण्डि को उनके साथ देखने पर श्रीधरन को बात पकड़ने में देर नहीं लगी।

बड़ा भाई सिर झुकाये अन्दर घुस गया। कंपाउण्डर को बरामदे में चढ़ने में ज़रा हिचकिचाहट हुई। आण्डि ने कन्निप्परंप्पु के नारियल के पेड़ों के ऊपरी हिस्से की तरफ निगाहें घुमायीं।

"कंपाउण्डर, इधर बैठिए।"—बरामदे की कुर्सी की ओर इशारा करते हुए श्रीधरन ने कहा।

कंपाउण्डर बरामदे में चढ़कर कुर्सी पर तोंद लटकाकर बैठ गया।

"आण्डि, यों खड़े क्यों हो गये ?" बरामदे की बेंच पर इशारा करते हुए श्रीधरन ने दस्तावेज का स्वागत किया।

"नहीं बेटा—मैं इधर ही खड़ा रहूँगा।" आण्डि ने मुस्कराते हुए कहा। (उसके मुँह में दाँत नहीं थे) आण्डि के यों कहने का कारण श्रीधरन को मालूम है। आण्डि पुट्ठों के बल बैठ नहीं सकता। वह बवासीर के रोग से परेशान है। उसकी धोती में पुट्ठों के स्थान पर गंदे खून का धब्बा एक सिक्के की आकृति के बराबर दिखाई दिया।

नाडु से रवाना नहीं हो सका था। गाड़ी नहीं मिली थी। तीसरे दिन ही वह कन्नि-प्परंपु पहुँचा था।)

"कृष्णन मास्टर की अन्तिम क्रिया के उपलक्ष्य में एक अच्छी दावत दी, अच्छा ही हुआ।" कंपाउण्डर ने श्रीधरन को वधाई दी।

"पिताजी के लिए आगे कुछ भी नहीं करना होगा।" श्रीधरन ने वड़े दुःख से कहा।

कंपाउण्डर थोड़ी देर तक चुप रहा। फिर कुछ गम्भीर वात कहने की मुद्रा में श्रीधरन को इशारे से नज़दीक वैठने को कहा।

"क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे वड़े भाई की क्या योज़ना है?" कंपाउण्डर ने दो-तीन वार अपनी नाक और मूँछ को सहलाया।

"मुझे कुछ भी नहीं मालूम।"

"घराने की संपत्ति का वँटवारा कर अपना हिस्सा लेकर तमिल औरत और वच्चे के साथ पिनांक जाने का उसका विचार है, समझे?"

श्रीधरन चुप रहा आया।

"घराने की सम्पत्ति के नाम पर आप लोगों के पास क्या रखा है? सिवा इस अहाते और घर के। यह वेचने पर तुम और माँ कहाँ जाओगे? इसलिए तुम्हें हरगिज़ मंजूरी नहीं देनी चाहिए—"

श्रीधरन ने सोचा, शंकुण्णि कंपाउण्डर ने अव तक कोई भी कार्य अच्छे उद्देश्य से नहीं किया था। फिर मुझे यों उपदेश देने का मतलव?

"तुम चुप क्यों हो?"

श्रीधरन फिर भी चुप रहा। कंपाउण्डर ने अपनी सलाह जारी रखी: "अगर कुंजप्पु वँटवारा करने की हठ करे तो यह घर और अहाता किसी के नाम गिरवी रखकर कुंजप्पु के हिस्से को चुकाकर उसको वाहर निकालना ही ठीक है। समझ गये?"

श्रीधरन समझ गया था। कंपाउण्डर की बुद्धि कन्निप्परंप्पु को पहले गिरवी रखकर फिर मौका देखकर उसे छीन लेने की है। उसकी यही योजना है।

"तुम्हें सलाह देने के लिए और कोई नहीं है। लेकिन मैं तुम्हारी मदद करूँगा। मैं कृष्णन मास्टर का ध्यान करके ही यह वात कह रहा हूँ, समझे?"

श्रीधरन मुस्कराया। फिर शान्ति से जवाब दिया, "कंपाउण्डर, आप अन्यथा न समझें। मेरी ओर से वकालत के लिए किसी की ज़रूरत नहीं है। अपना काम मुझे ही देखने दो।"

कंपाउण्डर का चेहरा एकदम काली हाँडी की तरह फक हो गया। उसने श्रीधरन की ओर आँखें तरेरकर देखा: "अरे, तू इतना बड़ा हो गया है?" उसकी नज़रों में जैसे धमकी भरी हुई थी।

"मैं अपनी बातों को सोचने-समझने लायक बन गया हूँ। कंपाउण्डर, अव इतना ही कहना बहुत है···" दृढ़ स्वर में श्रीधरन ने कहा।

कंपाउण्डर ने आराम कुर्सी से उठते हुए तथा तिरछी भौंहें कर श्रीधरन की ओर देखकर मन्त्र-जाप किया, "माँ-बेटे को यहाँ से निकालना होगा।"

"पिताजी तो हमेशा के लिए यहाँ से चले गये हैं। फिर यहाँ से उतरकर चले जाने में माँ-वेटे को क्यों अफसोस होगा ?"

श्रीधरन की बातें सुनकर कंपाउण्डर घृणा भरे लहजे में ओठों को सिकोड़कर हँस पड़ा—"हाँ—हाँ। हम देखेंगे।"

दोनों हाथों और तोंद को हिलाते हुए कंपाउण्डर चला गया।

दूसरे दिन श्रीधरन पिताजी की डायरियाँ लेकर पढ़ रहा था।

कृष्णन मास्टर हर रोज डायरी लिखते थे। नगण्य घटना भी डायरी में वे लिखते। सालों से यह नियम चला आ रहा था। मृत्यु के एक दिन पहले भी उन्होंने डायरी लिखी थी। अंग्रेज़ी में ही डायरी लिखते। पुराने मित्रों से मिलने, वारिश होने एवं कुट्टिमालु के रजस्वला होने की बात भी डायरी में लिखते। जूते की मरम्मत करने की बात भी डायरी में लिखी गई थी। डायरी के अन्तिम पृष्ठ में श्रीधरन से सम्वन्धित एक बात थी : "गेव श्रीधरन फोर आनाज़ फॉर हेयर कट"

तभी कुंजप्पु को सामने कर शंकुण्णि कंपाउण्डर और उसके पीछे अर्जीनवीस आण्डि कन्निप्पुरंप्पु में आते दिखाई दिये।

डायरी वहीं रख दी।

अर्जीनवीस आण्डि को उनके साथ देखने पर श्रीधरन को वात पकड़ने में देर नहीं लगी।

वड़ा भाई सिर झुकाये अन्दर घुस गया। कंपाउण्डर को वरामदे में चढ़ने में ज़रा हिचकिचाहट हुई। आण्डि ने कन्निप्परंप्पु के नारियल के पेड़ों के ऊपरी हिस्से की तरफ निगाहें घुमायीं।

"कंपाउण्डर, इधर वैठिए।"—वरामदे की कुर्सी की ओर इशारा करते हुए श्रीधरन ने कहा।

कंपाउण्डर वरामदे में चढ़कर कुर्सी पर तोंद लटकाकर वैठ गया।

"आण्डि, यों खड़े क्यों हो गये ?" वरामदे की वैंच पर इशारा करते हुए श्रीधरन ने दस्तावेज का स्वागत किया।

"नहीं वेटा—मैं इधर ही खड़ा रहूँगा।" आण्डि ने मुस्कराते हुए कहा। (उसके मुँह में दाँत नहीं थे) आण्डि के यों कहने का कारण श्रीधरन को मालूम है। आण्डि पुट्ठों के वल वैठ नहीं सकता। वह ववासीर के रोग से परेशान है। उसकी धोती में पुट्ठों के स्थान पर गंदे खून का धव्वा एक सिक्के की आकृति के वरावर दिखाई दिया।

नाडु से रवाना नहीं हो सका था। गाड़ी नहीं मिली थी। तीसरे दिन ही वह कन्नि-प्परंपु पहुँचा था।)

"कृष्णन मास्टर की अन्तिम क्रिया के उपलक्ष्य में एक अच्छी दावत दी, अच्छा ही हुआ।" कंपाउण्डर ने श्रीधरन को बधाई दी।

"पिताजी के लिए आगे कुछ भी नहीं करना होगा।" श्रीधरन ने बड़े दुःख से कहा।

कंपाउण्डर थोड़ी देर तक चुप रहा। फिर कुछ गम्भीर बात कहने की मुद्रा में श्रीधरन को इशारे से नजदीक बैठने को कहा।

"क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे बड़े भाई की क्या योजना है?" कंपाउण्डर ने दो-तीन बार अपनी नाक और मूँछ को सहलाया।

"मुझे कुछ भी नहीं मालूम।"

"घराने की संपत्ति का बँटवारा कर अपना हिस्सा लेकर तमिल औरत और बच्चे के साथ पिनांक जाने का उसका विचार है, समझे?"

श्रीधरन चुप रहा आया।

"घराने की सम्पत्ति के नाम पर आप लोगों के पास क्या रखा है ? सिवा इस अहाते और घर के। यह बेचने पर तुम और माँ कहाँ जाओगे? इसलिए तुम्हें हरगिज़ मंजूरी नहीं देनी चाहिए—"

श्रीधरन ने सोचा, शंकुण्णि कंपाउण्डर ने अब तक कोई भी कार्य अच्छे उद्देश्य से नहीं किया था। फिर मुझे यों उपदेश देने का मतलब?

"तुम चुप क्यों हो?"

श्रीधरन फिर भी चुप रहा। कंपाउण्डर ने अपनी सलाह जारी रखी: "अगर कुंजप्पु बँटवारा करने की हठ करे तो यह घर और अहाता किसी के नाम गिरवी रखकर कुंजप्पु के हिस्से को चुकाकर उसको बाहर निकालना ही ठीक है। समझ गये?"

श्रीधरन समझ गया था। कंपाउण्डर की बुद्धि कन्निप्परंप्पु को पहले गिरवी रखकर फिर मौका देखकर उसे छीन लेने की है। उसकी यही योजना है।

"तुम्हें सलाह देने के लिए और कोई नहीं है। लेकिन मैं तुम्हारी मदद करूँगा। मैं कृष्णन मास्टर का ध्यान करके ही यह बात कह रहा हूँ, समझे?"

श्रीधरन मुस्कराया। फिर शान्ति से जवाब दिया, "कंपाउण्डर, आप अन्यथा न समझें। मेरी ओर से वकालत के लिए किसी की ज़रूरत नहीं है। अपना काम मुझे ही देखने दो।"

कंपाउण्डर का चेहरा एकदम काली हाँडी की तरह फक हो गया। उसने श्रीधरन की ओर आँखें तरेरकर देखा: "अरे, तू इतना बड़ा हो गया है?" उसकी नजरों में जैसे धमकी भरी हुई थी।

"मैं अपनी बातों को सोचने-समझने लायक बन गया हूँ। कंपाउण्डर, अब इतना ही कहना बहुत है···" दृढ़ स्वर में श्रीधरन ने कहा।

कंपाउण्डर ने आराम कुर्सी से उठते हुए तथा तिरछी भौंहें कर श्रीधरन की ओर देखकर मन्त्र-जाप किया, "माँ-बेटे को यहाँ से निकालना होगा।"

"पिताजी तो हमेशा के लिए यहाँ से चले गये हैं। फिर यहाँ से उतरकर चले जाने में माँ-बेटे को क्यों अफसोस होगा ?"

श्रीधरन की बातें सुनकर कंपाउण्डर घृणा भरे लहजे में ओठों को सिकोड़-कर हँस पड़ा—"हाँ—हाँ। हम देखेंगे।"

दोनों हाथों और तोंद को हिलाते हुए कंपाउण्डर चला गया।

दूसरे दिन श्रीधरन पिताजी की डायरियाँ लेकर पढ़ रहा था।

कृष्णन मास्टर हर रोज डायरी लिखते थे। नगण्य घटना भी डायरी में वे लिखते। सालों से यह नियम चला आ रहा था। मृत्यु के एक दिन पहले भी उन्होंने डायरी लिखी थी। अंग्रेज़ी में ही डायरी लिखते। पुराने मित्रों से मिलने, बारिश होने एवं कुट्टिमालु के रजस्वला होने की बात भी डायरी में लिखते। जूते की मरम्मत करने की बात भी डायरी में लिखी गई थी। डायरी के अन्तिम पृष्ठ में श्रीधरन से सम्बन्धित एक बात थी : "गेव श्रीधरन फोर आनाज़ फॉर हेयर कट"

तभी कुंजप्पु को सामने कर शंकुण्णि कंपाउण्डर और उसके पीछे अर्ज़ीनवीस आण्डि कन्निप्पुरंप्पु में आते दिखाई दिये।

डायरी वहीं रख दी।

अर्ज़ीनवीस आण्डि को उनके साथ देखने पर श्रीधरन को बात पकड़ने में देर नहीं लगी।

बड़ा भाई सिर झुकाये अन्दर घुस गया। कंपाउण्डर को बरामदे में चढ़ने में ज़रा हिचकिचाहट हुई। आण्डि ने कन्निप्परंप्पु के नारियल के पेड़ों के ऊपरी हिस्से की तरफ निगाहें घुमायीं।

"कंपाउण्डर, इधर बैठिए।"—बरामदे की कुर्सी की ओर इशारा करते हुए श्रीधरन ने कहा।

कंपाउण्डर बरामदे में चढ़कर कुर्सी पर तोंद लटकाकर बैठ गया।

"आण्डि, यों खड़े क्यों हो गये ?" बरामदे की बैंच पर इशारा करते हुए श्रीधरन ने दस्तावेज का स्वागत किया।

"नहीं बेटा—मैं इधर ही खड़ा रहूँगा।" आण्डि ने मुस्कराते हुए कहा। (उसके मुँह में दाँत नहीं थे) आण्डि के यों कहने का कारण श्रीधरन को मालूम है। आण्डि पुट्ठों के बल बैठ नहीं सकता। वह बवासीर के रोग से परेशान है। उसकी धोती में पुट्ठों के स्थान पर गंदे खून का धब्बा एक सिक्के की आकृति के बराबर दिखाई दिया।

कंपाउण्डर ने अन्दर झाँककर पुकारा, "कुंजप्पु, अरे कुंजप्पु इधर आओ। बरामदे में आकर बैठो।"

बड़ा भाई असमंजस में बाहर आया। बरामदे के खम्भे के पास उकड़ूँ बैठकर उसने एक बीड़ी सुलगायी।

कंपाउण्डर ने काम की बात शुरू करते हुए कहा, "श्रीधरन, तुम क्या सोचते हो?"

(वह मूँछ और नाक हिलाने लगा।)

"कंपाउण्डर के पूछने का मतलब मैं नहीं समझ सका," श्रीधरन ने कहा।

"कल मैंने जो बात बतायी थी, वही। कुंजप्पु घराने की जायजाद का बँटवारा करके उसका हिस्सा शीघ्र चाहता है।" कुंजप्पु की वकालत लेकर ही कंपाउण्डर अब बातचीत कर रहा था। "बँटवारा तो करना ही है। हाँ, तुरन्त इसे करना होगा।" श्रीधरन ने बड़प्पन-सा दिखाते हुए कहा।

कंपाउण्डर ने जवाब की प्रतीक्षा नहीं की। मारकर गिराने के लिए पत्थर और बाँधने के लिए रस्सी लेकर ही वह आया था। अब ये सब बेकार हो गये।

(अर्जीनवीस आण्डि चेहरा सिकोड़कर चुपचाप खड़ा था। बवासीर की जलन से या पाणिक्कर के स्कूल में 'अम्मालु परिणयं' नाटक के अभिनय के बीच मिले खराब अण्डे की बदबू की याद करके ही शायद वह यों चुपचाप खड़ा होगा।)

थोड़ी देर की खामोशी के बाद कंपाउण्डर ने तोंद सहलाते हुए पूछा, "ठीक है। तुम्हारी तरफ से पूछताछ करनेवाला कौन है?"

"इसमें और पूछताछ की क्या ज़रूरत है? घराने की सम्पत्ति का बँटवारा करना है। बस इतनी-सी ही बात है।"

"ठीक है।" कंपाउण्डर ने तीन उँगलियों को ज़रा आगे उठाकर कहा, "घर और अहाते को तीन हिस्सों में बाँटा जाएगा। मास्टर की पत्नी और दो सन्तानों के लिए क्या तुम सहमत हो?"

"कानून क अनुसार वही ठीक है।"

"अच्छा।"

कंपाउण्डर ने आण्डि को बुलाकर उससे नापने के लिए बाँस की एक छड़ी लाने को कहा।

"नापने की ज़रूरत क्या है?" श्रीधरन ने बात काटकर पूछा।

"घर का एक तिहाई हिस्सा और अहाते का एक तिहाई हिस्सा नापकर कुंजप्पु का हक तय करना है।"

"आपके आदमी को घर और अहाते का टुकड़ा चाहिए या पैसे?" श्रीधरन ने गौरव के साथ पूछा।

कंपाउण्डर ने जरा सोच-विचार किया। उसने मूंछ और नाक हिलाते हुए कहा, "पैसे चाहिए। क्या तुम्हारे हाथ में देने के लिए पैसे हैं ?"

"अभी तो नहीं हैं।"

"फिर यह घर और अहाता गिरवी रखना होगा। अरे, कल मैंने वही बात तुमसे नहीं कही थी ?" कंपाउण्डर ने विजय भाव में अपनी तोंद को जरा सहलाया।

"पैसे मिलने के लिए और भी उपाय हैं।"

"और क्या उपाय ?"

"घर और अहाते को बेचना होगा।"

कंपाउण्डर अपने काले चेहरे को थामकर कुछ सोचने लगा।

श्रीधरन ने दुख के साथ कन्निप्परंप्पु के बाड़े की ओर एक नजर डाली। एक छोटी काँटेदार डाली को अपनी चोंच में लेकर एक कौवा उत्तर के अहाते के कटहल वृक्ष के ऊपर उड़ गया।

बाबूजी के बलिपिंड को निगलनेवाला कौवा ही बाड़ से उस डाली के टुकड़े को चोंच में लेकर उड़ा था। वह कटहल के ऊपर नया घोंसला बना रहा है। इधर भी एक घराने की तबाही हो रही है।

"क्या कुंजप्पु को कुछ कहना है ?" कंपाउण्डर के प्रश्न ने श्रीधरन को जैसे जगा दिया।

कुंजप्पु के कहने के लिए कुछ नहीं था।

यों उस दिन बात पूरी हो गयी। कन्निप्परंप्पु और घर बेचने का निर्णय लिया गया।

अर्जीनवीस आण्डि कन्निप्परंप्पु के कई पेड़-पौधों का हिसाब लगाते हुए बगीचे में घूमने लगा। श्रीधरन भी उसके निकट खड़ा हो गया। हिसाब की जांच करने लिए नहीं, बल्कि सूची तैयार करने के ढंग को समझने के लिए ही वह वहाँ खड़ा था।

नारियलों का हिसाब लगाया जा रहा था। नारियलों को उम्र और अवस्था के अनुसार अलग-अलग सूची में रखा गया।

फिर और पेड़ों का भी हिसाब लगाया गया। फलदार वृक्षों की ही गिनती होती है। कन्निप्परंप्पु में अमरूद का एक बड़ा पेड़ था। (श्रीधरन बचपन में अमरूद तोड़कर खाता था। या उसकी डाल पर घोड़े की सवारी करता था।) वह पेड़ नष्ट हो गया। उसकी जगह एक अमरूद का छोटा-सा पौधा पल रहा था। हल्के-से पीले रंग के पत्ते कलात्मक ढंग से शोभायमान थे। उसकी डालियाँ अभी नहीं आयी थीं। लेकिन आण्डि उसके लिए झाड़ू का मूल्य देने को भी तैयार न था।

गुलाब, नारंगी का पौधा—इनके लिए इस सूची में कोई स्थान नहीं है। अशोक

पारिजात और जासौन का भी कोई मूल्य नहीं है।

बाग के जासौन के पौधे में नीले रंग के तीन अढउल खिले थे । नारंगी के पौधे में भी कई कलियाँ उग आयी थीं ।

कुएँ के किनारे की वाड़ में पली लताओं में फूलों के गुच्छे भर आए थे। (नारंगी के वीज और 'मणि' पुष्पों का एक ही रंग है—पद्मराग के पत्थर का रंग ।)

कन्निप्परंप्पु का कल का मालिक इन फूलों के पौधों को जड़ से उखाड़ फेंक-कर जमीन खोदकर गड्ढे में नारियल या सुपारी का पौधा लगाएगा । वाड़ में करेले की लता को बढ़ाएगा । इन बातों का ख्याल कर श्रीधरन का मन मसोसने लगा । हर रोज सुबह और शाम अपने हाथ से पानी देकर बड़े प्यार से पाले गये पौधे । वह उनमें कोपलें आने और फूलने-फलने के सौंदर्य को कितनी उत्सुकता से देखा करता था ।

अचानक उसे अंग्रेजी कवि वर्ड्सवर्थ की एक कविता की कुछ पंक्तियाँ याद आयीं, जिनका तात्पर्य है :

> "शान्तिदायक रात और आह्लादकारी
> दिवा काल भी
> मातृभूमि की मिट्टी में उगनेवाले सत्यजाल भी
> जगाते प्रेम मुझमें प्रकृति पर ।
> इसके सब कुछ को मैं प्यार करता हूँ
> पृथ्वी के आँसू और आनन्द
> काफी हैं मेरा अंतस् भरने को······"

अर्जीनवीस आण्डि अहाते के आम के पेड़ों का हिसाब लगा रहा था । उसने कुछेक पीले पत्तोंवाले एक आम के पेड़ की जाँच की । उसे सूची में रखने या छोड़ने का विचार वह कर रहा था ।

श्रीधरन की आँखों से एक बूंद आँसू उस आम के पौधे के नीचे टपक पड़ी । पर आण्डि ने उसे नहीं देखा । मृत्यु से कुछ देर पहले पिताजी ने उसे सींचा था ।

कन्निप्परंप्पु और उसका खपरैल का मकान एक हज़ार एक सौ रुपये में वेचने का प्रबन्ध पूरा हुआ ।

दस्तावेज़ तैयार करने के लिए निर्धारित तिथि के एक दिन पहले दोपहर को शंकुण्णि कंपाउण्डर और अर्जीनवीस आण्डि कन्निप्परंप्पु में आ पहुँचे ।

श्रीधरन ने समझा कि कल की रजिस्ट्री करने के वारे में वातचीत करने के लिए ही आये होंगे ।

कुंजप्पु भैया अन्दर कमरे में सो रहे थे ।

कंपाउण्डर बरामदे की आराम कुर्सी में बैठ गया ।

"कल रजिस्ट्री करने के बाद समय नहीं मिलेगा —वह काम हम अभी निबटा दें।" कंपाउण्डर तोंद को सहलाते हुए बोला।

श्रीधरन को बात का पता नहीं चला। दस्तावेज़ लिखा जा चुका है। फिर और क्या बाकी है ? श्रीधरन ने कंपाउण्डर के चेहरे की ओर देखा।

"घर के सामान का बँटवारा करना चाहिए।" कंपाउण्डर ने अपनी नाक-मूँछ को ज़ोर से हिलाया। श्रीधरन ने अपनी नादानी की वजह से उस पर विचार नहीं किया था। बस, यों ही हँस पड़ा।

"कुंजप्पु, अरे कुंजप्पु !" कंपाउण्डर ने अन्दर झाँककर ज़ोर से बुलाया। "तू इधर बैठ।"

अर्ज़ीनवीस आण्डि एक पेन्सिल पकड़कर खड़ा था।

बड़ा भाई कुंजप्पु आँखें मलते हुए बरामदे में आया। हमेशा की तरह बरामदे के छोर के खंभे के निकट उकड़ूँ बैठकर उसने एक बीड़ी सुलगायी।

श्रीधरन का विचार था कि घर के सामान की ज़रूरत उसे नहीं है। सब कुछ बड़ा भाई ही ले ले। फिर उन्हें बाँट देने की ज़रूरत ही क्या है ?···लेकिन अचानक उसे लगा कि सब कुछ कंपाउण्डर और अर्ज़ीनवीस आण्डि छीन लेंगे। भैया को कुछ भी नहीं मिलेगा। ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। अपने हिस्से के सामान को अतिराणिप्पाटं के गरीब लोगों में बाँटना चाहिए···

कंपाउण्डर ने आण्डि को देखकर इशारा किया। आण्डि ने भीतर जाकर पलंग, कुर्सियाँ, पेटियाँ आदि सभी सामान की सूची तैयार की। उसके बाद छोटे सामान को ले जाकर वह बरामदे में रखने लगा। ओखली और चक्की उस सूची में शामिल न थे। हिलनेवाली सभी चीज़ों को ले आया। खुरचनी, ताँबे के बर्तन, कटोरा, पीकदान, रस्सी कुछ भी नहीं छोड़ा।

श्रीधरन को दुख, बेचैनी और शर्म-सी महसूस हुई लेकिन सब कुछ मन में ही रखा।

आण्डि ने सारे सामान का मूल्य निर्धारित किया। हर-एक को गिनकर आखिर तीन हिस्सों में बाँट दिया।

बड़ा भाई कुंजप्पु घुटनों के बीच चेहरा झुकाकर चुपचाप बैठा रहा।

वे जैसी मर्ज़ी आए, करें। श्रीधरन ने अपने मन में कहा। सबके लिए हिसाब लगाना चाहिए। नदी में फेंकने पर भी तोलकर ही फेंकना चाहिए। अचानक पिताजी की सुनायी एक कहानी की याद आयी।

काबा में गये पेरुमाल के बारे में एक दन्त-कथा है। चेरमान पेरुमाल की पत्नी को कोविलकस के मुख्तार से प्रेम हो गया। चरित्रवान राजभक्त मुख्तार ने अपने को उसकी काम-पिपासा का शिकार बनने से अलग रखा। पेरुमाल की पत्नी कामाग्नि प्रतिकार में बदल गयी। वह नारियल के छिलके से अपने स्तनों

को चोट पहुँचाकर खून बहाते हुए अपने पति के सामने रोती हुई खड़ी हो गयी।

"यह क्या है ?" राजा ने घबराकर पूछा।

"अपने मुख्तार से ही पूछ लें।"

क्रोध से अँधे होकर राजा ने मुख्तार को बुलवाया। उन्होंने उससे पूछताछ किये बगैर मृत्युदण्ड की घोषणा कर दी। अपने आदेश को क्रियान्वित करने के लिए मन्त्री को हुक्म दिया।

जल्लाद ने अपराधी का गला काटने के लिए उसे नदी किनारे की एक चट्टान पर खड़ा कर दिया।

"क्या तुम्हारी कोई अन्तिम इच्छा है ?" मंत्री ने पूछा।

"मेरा आज तक का पूरा वेतन यहीं ले आना।" मुख्तार ने अपना आग्रह व्यक्त किया।

वेतन अनाज के हिसाब में था। मुख्तार ने वेतन के हिसाब में प्राप्त चावल को चट्टान पर ढेर बनाने की इच्छा प्रकट की। फिर वह उसे नापने लगा। नापने के बाद वह उसे नदी में फेंकने लगा। इस प्रकार नापकर फेंकते समय मुख्तार ने वहाँ एकत्रित हुए लोगों को बताया, "नदी में फेंकने पर भी नापकर ही फेंकना चाहिए।"

फिर जल्लाद की तलवार के आगे गर्दन रखने से पहले उसने राजमहल की तरफ देखकर कहा, "औरतों के इशारों पर नाचनेवाले पेरुमाल आप काबा मसजिद में जाकर टोपी पहनें।"

इस प्रकार औरत की बात पर भरोसा कर निरपराधी मुख्तार को तलवार केघाट उतारने के प्रायश्चित में चेरमान पेरुमाल केरल से जहाज़ के रास्ते काबा जाकर सिर का मुँडन कराने के बाद सुन्नत करवा टोपी पहनकर मुस्लिम हो गये...

आण्डि इस समय भी घर के सामान को तीन भागों में बाँटने में लगा हुआ था। कंपाउण्डर तोंद को सहलाते हुए जब कभी अपनी स्वीकृति देता जाता था।

श्रीधरन की माँ अर्ध-बेहोशी की हालत में कमरे की ज़मीन पर उस जगह पड़ी थी, जहाँ पहले पिताजी की लाश के सामने एक दीपक जलाकर रखा गया था।

बड़ा भाई कुंजप्पु पीठ झुकाए पैरों के बीच सिर छिपाकर गर्भस्थ शिशु की तरह बैठा था।

कन्निप्परंपु के घर के सामान का बँटवारा हो रहा था। पड़ौस के कुछ लोग आँगन और बाड़ के नज़दीक खड़े रहे। वे खुसुर-पुसुर भी करने लगते। पर, जोर से अपनी राय प्रकट नहीं करते। कंपाउण्डर और आण्डि के तत्वावधान में होने वाले बँटवारे में हस्तक्षेप करने का उन्हें कोई हक नहीं था। कृष्णन मास्टर चल बसे। माँ और बेटा कल घर छोड़कर चले जाएँगे। कुंजप्पु भी वापस जाएगा। इस इलाके में कल कंपाउण्डर और आण्डि ही होंगे। उनके विरुद्ध कुछ कहना ठीक नहीं,

ऐसा मनोभाव ही अधिकांश दर्शकों में था।

"भिखमंगा। रसोईघर की हँडियों और बर्तनों का बँटवारा करता है। वह भी एक तमिल हरामजादी औरत को देने के लिए? शैतान! पापी···उस भले मनुष्य के शरीर की मिट्टी अभी सूखी भी नहीं है। इतने में बेचारी माँ और बेटे को घर से निकाल देने की सोच रहा है। कौन कहता है कि भले मास्टर का बेटा है यह बदमाश? थू, धिक···लानत है···।"

आतिशबाजी के विस्फोट की तरह के ये शब्द कन्निप्परंप्पु में गूंज उठे। कुट्टाप्पु के अहाते से ही सुनाई पड़े थे ये शब्द। आराकश वेलु की पत्नी झगड़ालू उण्णूलियम्मा! मोटी और ऊँचे कद की उस माँ ने पके बालों को खोलकर छोड़ दिया है। हाथ में एक बसूला है। बहू माणिक्य के नहाने के पानी में किसी औषधि के पत्तों को तोड़ने के लिए ही वह कुट्टाप्पु के अहाते में आई थी। पत्ते तोड़ती जाती और कुंजप्पु पर गालियों की बौछार भी करती जाती···

श्रीधरन को ध्यान आया, रसोईघर के सामान को बाँटने के बाद···? अब पुस्तकों का नम्बर है। पर, ये पुस्तकें तो मेरी हैं। लेकिन पिताजी ने उसके लिए पैसे दिये थे। वह कृष्णन मास्टर की सम्पत्ति हैं। अगर अर्जीनवीस आण्डि और कंपाउण्डर इनका बँटवारा करने को कहेंगे तो मैं क्या कहूँगा?

"यह महापापी बाद में याद करेगा। सब कुछ पेट के चूल्हे में डालने के बाद वह हरामजादी तमिल औरत इसे झाड़ू मारकर निकाल देगी। यह महापापी सड़क पर सड़कर मरेगा।" उण्णूलि अम्मा के मुख से शाप की बातें आतिशबाजी की तरह फूटने लगीं।

अर्जीनवीस आण्डि बाँटने का काम छोड़कर एकाएक पाखाने की तरफ दौड़ गया। उण्णूलिअम्मा ने आण्डि को दौड़ते हुए देखा।

"यह शैतान दौड़ रहा है—अब मल का भी बँटवारा करना होगा। अरे, आण्डि मायिग्रेट (मजिस्ट्रेट) पाखाना तीन हिस्सों में बाँट लो। उनमें निचले का भाग इस नासमिटे कुंजप्पु को दे दो।"

आधे घंटे तक पाखाने में रहने के बाद ही आण्डि वापस आया।

घर के सामान का बँटवारा करने के बाद संतुष्ट होकर आण्डि ने जेब से सिगार का एक टुकड़ा लेकर कुंजप्पु के हाथ की माचिस से उसे सुलगाया। फिर कुंजप्पु से उसने कुछ खुसुर-पुसुर की।

"आण्डि क्या सब कुछ निबट गया है?" श्रीधरन ने पूछा।

आण्डि ने अपने हाथों से इशारा किया कि सब कुछ हो गया है।

किताबें बच गयीं। सम्पत्ति की सूची में गुलाब, चमेली आदि के लिए घास ही मूल्य है। घर के सामान के बीच में शेक्सपियर, कालिदास, कुमारनाशान और शंकराचार्य की कृतियों के लिए चूल्हे के पत्थर का भी मूल्य नहीं था।

आण्डि के वरामदे में लटकता भस्म का तख्ता नहीं देखा था। उसकी ओर इशारा करके श्रीधरन ने पूछा, "आण्डि गुमाश्ता, यह कैसे बाँटोगे ?"

आण्डि मसूड़े दिखाकर बेवकूफ-सा हँस पड़ा।

"पिताजी की जो भस्म है वह माँ और मेरे लिए रहे। उसका तख्ता बड़े भाई ले लें।" श्रीधरन ने जोर से कहा, "भैया, चुपचाप क्यों बैठे हैं ?"

पैरों के घुटनों के भीतर से कुंजप्पु ने होले से अपना चेहरा ऊपर उठाया। वरामदे के भस्म के तख्ते पर और फिर श्रीधरन के चेहरे पर उसने निगाह डाली। दोनों की आँखें आपस में उलझ गयीं।

बड़े भाई की लाल आँखें गीली होने लगीं। निचले ओठ को काटकर वे अपने विकारों को दवाने लगे। श्रीधरन ने ध्यान से देखा।

एकाएक सिसकते भैया ने अपने हाथों से चेहरा ढक लिया···

बड़ा भाई क्यों रोने लगा ?

क्या उसने भस्म के तख्ते से पिताजी का हाथ उठते देखा था ?

छोटे भाई की आँखों में पिताजी की आँखों की झलक देखी है ? चाहे जो भी हो, श्रीधरन क्या पिताजी का खून नहीं है ?

"कंपाउण्डर, किसी का भी बँटवारा न करो—मुझे कुछ नहीं चाहिए। अहाता और घर कुछ नहीं चाहिए—मैं अपना रास्ता नाप लूंगा··" कुंजप्पु ने आँगन की ओर देखते हुए रुँधे गले से कहा।

झट शंकुण्णि कंपाउण्डर कुर्सी से उठ खड़ा हुआ, "क्या कहा ? सब कुछ रजिस्ट्री दफ्तर के अन्दर पहुँचाने के बाद यह नालायक क्या बक रहा है ?···अरे, तुझे कुछ नहीं चाहिए तो न सही—तू इधर चुपचाप बैठ···"

कुंजप्पु ने फिर अपना सिर घुटनों में दबा लिया। उसने चुप्पी साध ली। बीच-बीच में वह फूट-फूटकर रोता रहा।

श्रीधरन कुछ नहीं बोला।

कुंजप्पु में—इन्सान का छिपा हुआ सात्विक भाव जाग उठा था। वह क्षणिक था इसलिए झट बुझ भी गया।

बड़ा भाई कुंजप्पु विद्रोह-भाव रखनेवाला आदमी नहीं था। मनोरंजन के तौर पर कुछ शरारतें करता हुआ वह अपने बड़प्पन को प्रदर्शित करता रहता। एक बन्दर की तरह—ऐसे बन्दर जिसके गले में शंकुण्णि कंपाउण्डर और आण्डि ने एक रस्सी बाँधकर उसे सख्ती से पकड़ लिया था। उस रस्सी को तोड़कर बाहर उछलने-कूदने की क्षमता उसमें नहीं थी।

रजिस्ट्री ऑफिस में दोपहर बारह बजे हस्ताक्षर कर अपने हिस्से का पैसा लेने के बाद, कुंजप्पु किसी से कुछ कहे बिना एक घंटे बाद मेल गाड़ी से चला गया। वह तमिल भाषी पत्नी और अपने एक बेटे को लेकर पिनांग(श्रीलंका) के लिए तैयारी

करके ही गया था।

दस्तावेज़ लिखने का पारिश्रमिक कमीशन आदि का हिसाब लगाते हुए आण्डि ने उसका इन्तजार किया। रात तक कुंजप्पु की छाया तक नहीं दिखाई दी···यों आण्डि सब कुछ खोये इन्सान की तरह शून्य में ताककर बैठा रहा।

दलाल का मेहनताना, कमीशन फीस आदि के अतिरिक्त मुफ्त एक मोटी रकम हड़प लेने के ख्याल से बैठे शंकुण्णि कंपाउण्डर को भी मालूम हुआ कि कुंजप्पु चालाक आँखों में धूल झोंककर चला गया है।

कुंजप्पु को पकड़ने के लिए तमिलनाडु जाने की वात कंपाउण्डर ने एक वार सोची। फिर सोचा, उधर न जाना ही भला है। वह अपनी वीवी और संतान के साथ जहाज़ पर चढ़कर मुलक छोड़कर चला गया होगा।

यों कन्निप्परंप्पु के बँटवारे के पारिश्रमिक के तौर पर अतिराणिप्पाटं के शंकुण्णि एण्ड आण्डि अट्ओर्णी कम्पनी को कुंजप्पु के हिस्से में मिले हाँडी-ताँवे के वर्तन और पीकदान से संतुष्ट होना पड़ा।

श्रीधरन रवाना हो रहा था। हाथ में एक छोटी-सी चमड़े की थैली थी। उसे खोलकर उसने चीज़ों की दोवारा जाँच की :

एक चश्मा—पिताजी का पुराना चश्मा। सत्य और भलाई को देखनेवाली आँखों के लिए उसका काँच गवाह था।

एक पंख। मोहल्ले के ही अर्जी लिखनेवाले हाशिम मुंशी ने उसे भेंट में दिया था।

(हाशिम मुंशी आज समुद्रतट के पास कब्रिस्तान की कब्र में है। मोहल्ले में, दूकान के वीच, मुंशी के कमरे के दरवाज़े के पास एक नया वोर्ड लटक रहा था :

"श्री ज्योतिषालय
ज्योतिषी : पनच्चिक्काट्टु कुट्टन पणिक्कर"

उसने जो पंख भेंट किया था वह श्रीधरन की ज़िन्दगी के पेशे का चिह्न हो गया।

एक नोट-वुक। अम्मुकुट्टि की कविता की नोट-वुक। श्रीधरन को प्यार करने-वाली एक वेचारी लड़की के पवित्र हाथों के स्पर्श से युक्त कागज़।

श्रीधरन की अपनी कविताओं की हस्तलिपि की प्रतियाँ।···एक गट्ठर कागज़।

इस तरह पिताजी का पुराना चश्मा, हाशिम मुंशी का पंख, अम्मुकुट्टि की कविता की नोट-वुक और अपनी कविताओं की हस्तलिखित प्रतियाँ—सवको चमड़े के एक थैले में रखकर वह विधवा माँ के साथ कन्निप्परंप्पु के फाटक से निकला।

सूखे पत्तों, फूलों, वाड़ से गिरनेवाले काँटों और सफेद रेतवाली पगडंडी से सिर उठाए वे आगे वढ़े।

माँ को लेकर पहले इलंजिपोयिल में···

फिर माँ को इलंजिपोयिल में छोड़कर अकेले वम्वई की ओर···फिर···फिर और वड़ी दुनिया की ओर··

●

## खण्ड : चार

## मर्मर : एक

दस हज़ार गैलन की शक्तिवाले उस दीर्घकाल पेट्रोल टैंक की तरफ श्रीधरन ने फिर एक बार निगाहें घुमायीं।

इन पेट्रोल टैंकों के कारण ही दूर-दूर तक दौड़नेवाले हज़ारों वाहनों की तस्वीर मन में उभर आती है।

अतिराणिप्पाटं की स्मृतियाँ भी गैलन के हिसाब में हैं। तीन-चार दशाब्दियों पीछे विकार शक्ति के साथ मन को ले चलनेवाली हज़ारों यादें।

विधवा माँ को लेकर कन्निप्परंप्पु के फाटक से उतरकर, अतिराणिप्पाटं से विदा लिये तीन दशाब्दियाँ बीत गयीं। फिर कभी उधर मुड़कर नहीं देखा—जानबूझकर। दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ कह सकता है—वह इधर नहीं आया।

तीन-चार दशाब्दियों के पूर्व के अतिराणिप्पाटं की मौत हो गयी है। सामने जो देख रहा है वह एक नयी दुनिया है।

पिताजी कहा करते थे, यह दुनिया एक महा-श्मशान है। हम पीढ़ियों से दिवंगत और मिट्टी में समाये हुए आदमियों के ऊपर ही बसते हैं। हमारे बाद पीछे की पीढ़ी हमारे ऊपर अपनी दुनिया की नींव डालेगी···श्मशान के ऊपर श्मशान !

क्या श्मशान को खड़ा करने के लिए ही इस दुनिया में इन्सान पैदा होता है ?

श्रीधरन हौले से अतिराणिप्पाटं के नज़दीक से आगे बढ़ा। जगह के सम्बन्ध में कोई पता न लगा। पुराना कोना ढक गया है। नाले और पगडंडियाँ पाट दिए गये हैं। उन्हें अहातों के साथ मिला कर नये मंडल बना दिये गये हैं !

'मणि' पुष्पों के रंग जैसे ही मनोहर फूलों को प्रदर्शित करते हुए नये किस्म के पौधे बाड़ के नज़दीक सिर उठाकर खड़े हैं। वह एक विदेशी मेहमान 'शीमकोन्ना' है। खूबसूरती के लिए नहीं, बल्कि हरे पत्तों के उर्वरण के लिए ही इन विदेशी पौधों का पालन होता है। खैर···

हरे और लाल रंगों में पुते दरवाज़ोंवाले एक घर से रेडियो-संगीत सुनाई दे रहा है। लगता है कि वह किसी मुसलमान का घर है (पहले अतिराणिप्पाटं में एक भी मुस्लिम घर नहीं था।)

यहाँ के पूर्वज आराकश कुट्टायी के रात के गीतों और अपूर्व ग्रामोफोन गीतों

को सुनकर आनन्दित होते थे। पीकदान नाली की तरह सिर घुमाकर 'मालिक के स्वर' को ध्यान देनेवाले ग्रामोफोन-पेटी के कुत्ते की तस्वीर उन दिनों आज के पिकासो के शान्तिदूत कबूतर की तरह मशहूर थी।

पहले के घरो और रास्तों के मूल स्थान की पहचान करने के लिए आँखें मूंद कर थोड़ी देर तक सोचना पड़ रहा है···

एक पुराना घर दिखाई पड़ा, जिसके निचले भाग में ही खपरेल डाल दिया है। वह आराकश वेलु का घर होगा। उस अहाते की दिशा के पुराने नाले का कोई पता नहीं। सीमेण्ट लगे पत्थर की एक दीवार वहीं खड़ी होगी -- वहीं नज़दीक के अहाते की सीमारेखा है।

वह वेलु मूप्पर के आँगन की तरफ मुड़ा।

गोबर से लिपा हुआ आँगन—मोड़ों पर हल्के लाल रंग की मिट्टी डाली गयी है। आँगन के कोने के एक जासौन के पौधे में ढेरों फूल खिले हैं···उस घर और अहाते में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं आया है।

बरामदे की एक कुर्सी में आँगन की तरफ आँखें फाड़कर देखनेवाला अर्धनग्न बूढ़ा क्या वेलू मूप्पर ही है? बड़े ताज्जुब की बात है! वेलु अब भी ज़िन्दा है!

बरामदे में लटके एक झूले के नज़दीक वह बूढ़ा इतनी ही दूर बैठा है कि झूला हिला सके।

झूले को देखने पर इंगरसोल की कविता का आशय मन में जाग उठा :

> हर झूले के हिलते वक्त दिल के भीतर
> पूछ रहा था—किधर से?
> हर चिता धधकते हुए
> खोज रही है—कहाँ है?···

हौले से आँगन की तरफ आगे बढ़ा। वेलु मुखिया ने आँखे फाड़कर देखा। श्रीधरन परिचय भाव से मुस्कराया।

वेलु मूप्पर के चेहरे पर कोई परिवर्तन दिखाई नहीं पड़ा। वह शायद पहचान नहीं सका होगा। पहचानता भी कैसे? क्या पैंतीस वर्ष पूर्व देखा नहीं था?

अभी भी आँखें फाड़-फाड़कर उसी प्रकार देख रहा है।

"क्या आपको मेरी याद नहीं है?" श्रीधरन ने बड़े अदब से पूछा।

बूढ़ा कुर्सी से ज़रा हिल गया।

"बेटी, बेटी—देखो कौन बाहर आया है। ज़रा जाकर देख!" बाहर की तरफ आँखें फाड़कर देखते हुए बूढ़े ने पुकारकर कहा।

तब दर्द भरी एक सच्चाई का पता लगा—वेलु मूप्पर अब अन्धा है।

साड़ी पहने एक युवती ने दरवाज़े पर खड़े होकर बड़े गौर से देखा : "दादा, मुझे नहीं मालूम। कोई नया आदमी है।" कहते हुए वह दरवाज़े में खड़ी होकर

आँखें फाड़े देखने लगी।

श्रीधरन सकपकाकर खड़ा रहा।

"मैं-मैं यहाँ बहुत पहले कन्निप्परंप्पु में रहनेवाले कृष्णन मास्टर का बेटा हूँ।" श्रीधरन ने गदगद कण्ठ से अपना परिचय दिया।

बूढ़ा अपनी मुर्दा आँखों के उस पार की पुरानी यादों की थैली को तलाशने लगा।

"कृष्णन मास्टर का बेटा -- कौन-कौन---श्रीधरन बेटा···?"

"हाँ---श्राधरन ही हूँ···?"

"अरे मेरे बेटे, इधर आ···आ···आ। इधर बरामदे में आकर बैठ। तुझे यहाँ से गये कितने साल बीत गये! बेटी वह चटाई ज़रा इधर ले आना···"

युवती ने एक चटाई लेकर बरामदे में बिछायी। मुँह खोलकर खड़े एक बाघ की तस्वीर उस नयी चटाई में है। बाघ के मुँह पर ही बैठ गया।

"बेटे, मुझे दिखाई नहीं देता। चार-पाँच सालों से मैं अँधेरे में हूँ। तू ज़रा इधर आकर बैठ---मैं ज़रा तुझे देखूँ···"

वेलु मूप्पर ने दोनों हाथों से हवा में टटोला। श्रीधरन ने अदब से अपना चेहरा कुर्सी के नज़दीक कर दिया।

वेलु मूप्पर के हाथ श्रीधरन के उभरते गालों, दाढ़ी की हड्डियों, ओठ के ऊपर की मूँछ और लम्बे ललाट पर और समृद्ध बालों में वात्सल्यपूर्वक आगे बढ़े।

वेलु मूप्पर प्रसन्न दीख पड़ा। फिर थोड़ी देर कुछ सोच-विचारने के बाद उसने ठण्डी साँस खींची।

उसके नयन-दर्पण में प्रतिफलित होनेवाले दृश्य क्या-क्या होंगे?

"अरे बेटे, मैं एक पापी हूँ।" प्रकाशहीन नेत्रों को फाड़ते हुए वेलु मूप्पर अपनी ज़िन्दगी की दास्तान कहने लगा।

उण्णूलिअम्मा ने सात सन्तानों को जन्म दिया था। सातों लड़के थे। दो बच्चों के अलावा बाकी सब बचपन में ही चल बसे। बड़ा लड़का बालन घर छोड़कर कहीं चला गया। अब वह कहीं जीवित भी है या नहीं, कौन जाने। फिर एक दामोदरन था। आठवें दर्जे तक उसने पढ़ा था। उसको गोरों के बैंक में चपरासी की नौकरी मिली। शादी की। एक मुन्ना हुआ वेलुक्कुट्टि। जब वेलुक्कुट्टि छह महीने का था, तब दामोदरन की अकाल-मृत्यु एक साईकिल दुर्घटना में हो गयी। बैंक वालों ने एक अच्छी रकम दामोदरन की विधवा और बेटे को भेंट की थी। वेलुक्कुट्टि पढ़कर दसवीं कक्षा पास हो गया। उसको पिताजी के पुराने बैंक में एक क्लर्क की नौकरी मिल गयी। तब नानी उण्णूलिअम्मा वेलुक्कुट्टि की शादी देखने का मोह संवरण नहीं कर सकी।

उसके मामा की बेटी थी। यों आठारह का होने पर वेलुक्कुट्टि ने मामा की बेटी

शारदा से विवाह कर लिया। लगा जैसे, उण्णूलिअम्मा यह ब्याह देखने को ही जीवित थी। एक महीने के बाद उण्णूलिअम्मा की मृत्यु हो गयी। शारदा ने एक बच्ची को जन्म दिया और स्वयं प्रसव में ही चल बसी। बालिका सुभद्रा पलने लगी। सुभद्रा दो वर्ष की थी कि वेलुक्कुट्टि की मृत्यु एक सांप के डँसने से हो गयी। वेलुक्कुट्टि ने पांच हजार रुपये का जीवन बीमा कराया था। इस रक़म से वेलु मूप्पर लकड़ी का व्यापार करने लग गया। तभी उसकी दर्शन शक्ति नष्ट हो गयी। आँखों के इलाज के लिए पैसा पानी की तरह बहाया। आखिर लकड़ी का कारोबार भी बन्द करना पड़ा। उत्तर से आया कंजबु नाम का एक बुनकर रोजी-रोटी के लिए इधर ही रहता है। पिछले साल ही उसने सुभद्रा से ब्याह रचाया है। दो हफ्ते पहले सुभद्रा ने एक लड़की को जन्म दिया। वही लड़की बिन्दु इस झूले में सो रही है। चौथी पीढ़ी को झूले में झुलाते हुए परदादा वेलु मूप्पर बरामदे में बैठा था।

वंश-परम्परा में लड़के न थे। वेलु मूप्पर की मृत्यु के साथ उस वंश-वृक्ष की कड़ी टूट जाएगी। नब्बे के आसपास के बूढ़े वेलु मूप्पर की मनोव्यथा का यही कारण है।

कुम्हड़ा-सा सिर, बिखरी हुई चीनी-सा सफेद रोम भरा चेहरा, तम्बाकू-जैसी त्वचा वाले वेलु मूप्पर को देखने पर श्रीधरन के मन में हठात् एक और रूप का स्मरण हो आया। कन्निप्परंपु के पश्चिम के अहाते में कुट्टाप्पु का चबूतरा उठने के पहले—गुफा के नज़दीक की झोपड़ी में पेट तक लटकी हुई पकी दाढ़ी के साथ उन्नीसवीं सदी का आखिरी बुजुर्ग बैठा था। वह दाढ़ीवाला बुजुर्ग भी मिट्टी में समा गया। इधर और एक इन्सान बैठा है जिसने नब्बे वर्ष की जिन्दगी को देखा और भोगा है। कल या परसों पनमूट्टु घराने के नाम के साथ उसका भी अन्तिम संस्कार कर दिया जाएगा।

झूले में लेटी बिन्दु जागकर रोने लग गयी।

रूखे-सूखे बालोंवाली एक माँ बरामदे में आया। वह झूले से मुन्नी को ले गयी। वह बिन्दु की परनानी—दामोदरन की विधवा माणिक्य थी।

वेलु मूप्पर पुराने ख्वाबों से अचानक चौंक उठा।

"सुना था कि तू किसी पुराने मुलक में था।···तू अब कहाँ है?"

"अब दिल्ली में हूँ।" श्रीधरन ने अदब से जवाब दिया।

"वह कहाँ है?"

"बहुत ही दूर उत्तर दिशा में।"

'क्या काशी से भी दूर है?"

"हाँ, बहुत दूर।"

"क्या गोसाइयों का देश है?"

(श्रीधरन भी गोसांइयों के वेश में है। वेलु मूप्पर यों सोचता होगा।)

"हाँ, वहाँ गोसांई भी होंगे। हिंदुस्तानीवालों का मुल्क है। भारत की राजधानी।"

"तू वहाँ क्या करता है?"

श्रीधरन जरा सकपकाया। उससे क्या कहना है?

कुछ कहने पर भी क्या उसे मालूम होगा? कहने की जरूरत ही क्या है? झूठ कहने को भी मन नहीं चाहता···

एक बात सूझ गयी। झूठ बोलना और बातें छिपाना अलग-अलग है···

(श्रीधरन अब एम० पी० है—संसद सदस्य।)

अप्रिय न लगनेवाली सच्चाई वेलु मूप्पर के सामने प्रस्तुत की: "वहाँ तो खास कोई पेशा नहीं है···"

## मर्मर : दो

हाँ, एम० पी० है।

भारत की चालीस करोड़ जनता में दिल्ली की उच्चतम सभा संसद के लिए चुने गये लगभग पाँच सौ सदस्यों में एक है। पाँच लाख नागरिकों से चुना गया जन-प्रतिनिधि है—प्रधानमन्त्री की तरह के हक प्राप्त न होने पर भी प्रधानमन्त्री से भी सवाल करने का अधिकार रखनेवाला एक एम० पी०। (संसद में एम० पी० प्रधानमन्त्री से कैफियत तलब कर सकता है। पर मन्त्री के सवालों का जवाब देने को एम० पी० मजबूर नहीं है।)

एम० पी० के ऊपर दो ही हैं—ईश्वर और स्पीकर।

ये सब बातें बिना किसी घमण्ड के श्रीधरन ने सोची थीं। वेलु मूप्पर का मजाक उड़ाने के लिए एम० पी० का पास जेब में छिपाकर नहीं रखा था। दर-असल नब्बे वर्ष के उस सामान्य बुज़ुर्ग के सामने एक छोटे लड़के की तरह ही अपने को माना। मुझे तो ख्याति और इज्जत मिली होगी। पर, नब्बे वर्ष की उम्र मैं यों ही नहीं पा सकता। वह इन इलाके के पानी, [illegible] की वजह से इस वातावरण के अँधेरे, उजाले, गर्मी, शब्द और गन्ध के परे एक मनुष्य-वृक्ष के सामने है। (बहुत पहले के कन्निप्परंपु के उत्तरी दिशा के कटहल की तरह।)

इस बड़े पेड़ से निसृत मर्मर स्वर सार्थक ही है। उनके ये शब्द अनुभव-ज्ञान के अमूल्य मंत्र होंगे···

काँच का मुकुट पहने, बहुत ऊँचे संसद भवन के गर्भगृह की [illegible] सीट पर गर्व से बैठने से भी अधिक अभिमान और शान इस मानव वृक्ष के तले—ककड़ी और धान की बालियोंवाले बरामदे के नीचे एक धान की चटाई पर

पालथी मारकर बैठते समय महसूस होता है।

'पॉइण्ट ऑफ ऑर्डर' से डरने की ज़रूरत नहीं। सवाल पूछने के लिए रूल और धारा का उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं। समय के नियंत्रण के लिए घंटी की टन-टन का ध्यान नहीं करना होगा···

"कोई काम-काज के विना कैसे गुज़र-वसर करता होगा?" कुर्सी से एक सवाल उठा।

(श्रीधरन गोसाईं है। ऐसा एक शक उसके भीतर रहा होगा।)

"अर्ज़ी टाइप करता हूँ···।" झट वचने की एक तरकीव मिली।

"हाँ, हाँ, वह तो ठीक है। तूने पहले टाइप करना सीखा था न! पास भी हुआ था!" वेलु मुप्पर ने सिर हिलाते हुए उसे ठीक माना।

(वात तो सच है। वम्बई में पहले गुज़र-वसर करने के लिए टाइपिस्ट का पेशा ही तो करता था वह।)

"तेरी माँ तो अभी ज़िन्दा है न?"

"नहीं तो। माँ की मृत्यु ग्यारह साल पहले हो गयी थी।"

यह सुनकर वेलु मूप्पर ने सहानुभूति के साथ सिर हिलाया···"तेरी माँ कुट्टिमालु की इस इलाके वालों को बड़ी छत्र-छाया थी। उसके हाथ का हमने जो चावल का पानी पिया था, उसे कभी न भूलेंगे···"

(अतिराणिप्पाटं के लोग दान-दक्षिणा देनेवाली माँ का 'चावल के पानी' से ही उसका स्मरण करते रहे हैं)

"क्या तेरी शादी हो गयी है?"

"हो गयी।"

"कितनी सन्तानें हैं?"

"चार।"

"लड़के कितने हैं?"

"दो लड़के और दो लड़कियाँ?"

वेलु मूम्प्पर ने मुस्कराकर खुशी ज़ाहिर की।

"वेटी···" दरवाज़े की तरफ चेहरा मोड़ते हुए पुकारा, "ज़रा कॉफी तैयार कर ला।"

"मुझे अब कॉफी नहीं चाहिए।"

"क्या वात है? क्या गरीबों की कॉफी न पियेगा?"

"मुझे यहीं भोजन करना है, इसलिए अब कॉफी की ज़रूरत नहीं।" श्रीधरन ने वताया।

स्नेहपूर्वक आतिथ्य माँगते देखकर वेलु मूप्पर का बूढ़ा चेहरा खिल उठा।

वह परिवार सम्पन्न नहीं था। पर गरीव भी नहीं। एक वार का भोजन वे

ज़रूर दे सकते थे। शाम तक इस घर में ही बैठूँगा। कई बातें जाननी हैं। संसद में पूछे जानेवाले सवालों से भी प्रमुख सवाल पूछना है। जीवित मर्मस्पर्शी सवाल।

"ज़रूर, अपने भोजन का सहभागी तुझे भी बनाऊँगा।" वेलु मूप्पर ने हँसते हुए कहा।

"वही काफी है। मैं मेहमान तो हूँ नहीं। पहले कितनी बार इसी घर से उण्णूलिअम्मा के हाथ से मैंने भात खाया था"

वेलु मूप्पर की निर्जीव आँखे खुलीं। उसने एक ठण्डी साँस छोड़ी।

"मेरी उण्णूलि·· उसके जाने पर मेरे अन्दर की रोशनी बुझ ही गयी···" कहता हुआ वह श्वेत सिर हिलाने लगा। शब्दों में सिहरन हुई। फिर कुर्सी को हाथ से छूते हुए वेलु मूप्पर विषाद के कारण देर तक चुप रहा आया। चौदह साल पहले हमेशा के लिए विछुड़कर चली गयी अपनी पत्नी के लिए नब्बे वर्ष क. बुजुर्ग स्मरण-पूजा कर रहा था।

श्रीधरन भी मोटी और ऊँचे कदवाली उस माँ के बारे में सोच रहा था। लम्बे-लम्बे बालों को वह जब कभी खुला छोड़ देती थी तो कभी बाँध लेती थी। एक तौलिया से छाती ढककर बाहर आ जाती और झगड़े के लिए तैयार होकर चलने का उसका भाव कभी नहीं भुलाया जा सकता। 'झगड़ालू उण्णूलि' उपनाम पा जाने पर भी दरअसल वह भोली-भाली और सात्विक प्रकृति की थी। उसका हृदय मृदु था। अनीति और जुल्म देखने पर वह तीखी आलोचना करने से नहीं चूकती थी। उस समय वह आदमी और संदर्भ को भी नहीं देखती थी। एक ओर उसकी जीभ अपनी बातों की नोकों से छेदने लगती और दूसरी ओर मुलायम करने लगती थी।

अतिराणिप्पाटं की उस वीर महिला को आखिरी बार देखने की याद मन में ताज़ा हो गयी।

शंकुण्णि कंपाउण्डर और अर्जीनवीस आण्डि बड़े भाई कुंजप्पु की वकालत लेकर कन्निपरंप्पु के घर के सामान का बँटवारा करने की उधेड़बुन में थे। पड़ोस-वाले यह सब देख जब हँस रहे थे तब परिवार के सम्बन्धों में बिखराव पैदा करने-वाली इस नृशंसता के खिलाफ केवल उण्णूलि ने ही आवाज़ उठायी थी: "यह महापापी इसका अनुभव करेगा·· यह पापी सड़क पर सड़-सड़कर मरेगा" का जो शाप उस माँ ने दिया था, वह कुछ निर्मम कहा जा सकता था।

उण्णूलि के शाप का फल न होने पर भी बड़े भाई कुंजप्पु की ज़िन्दगी का अन्त दयनीय था। अपनी तमिल बीवी और मुन्ने को लेकर वह जहाज़ पर चढ़ गया। जहाज़ में मुन्ना बीमार हो गया। वह उलटी करते-करते चल बसा। लाश को समुद्र में ही फेंक देना पड़ा। आखिर पिनांग (श्रीलंका) पहुँच गये। छह महीने के बाद आबहवा के कारण या दुर्दशाग्रस्त होने के कारण कुंजप्पु भी बीमारी का

शिकार हो गया। आखिर वापस भारत आने का निश्चय किया। बचा हुआ सब कुछ जहाजवालों को देकर भिखारियों की तरह ही वह तमिलनाडु में वापस आया था। फिर दो साल के बाद गरीबी और बीमारी से पीड़ित होकर तमिलनाडु में ही उसकी मृत्यु हो गयी।

बड़े भाई कुंजप्पु की मृत्यु का समाचार चार महीने बाद श्रीधरन को मिल सका था।

"प्रिय श्रीधरन,

मैं रोग शय्या पर हूं। तुझे एक बार देखने की इच्छा है।

तेरा बड़ा भाई<br>(हस्ताक्षर)

बड़े भाई की विकृत लिखावट का पत्र और एक अज्ञातनामा मलयाली का खत एक साथ ही श्रीधरन को मिले थे। अज्ञातनामा के पत्र में लिखा था कि कल रात को मिस्टर फिटर कुंजप्पु की मृत्यु हो गयी। यह सूचना हम बड़े दुख के साथ दे रहे हैं। लेकिन दोनों पत्र चार महीने बाद ही श्रीधरन को प्राप्त हुए थे।

उन दिनों श्रीधरन उत्तर भारत में था। आर्ष भारत की आत्मा का अन्वेषण करके हिमालय के तपोवनों, गंगा-जमुना के किनारों और कई पुण्य मन्दिरों के वातावरण में अलक्ष्य होकर घूम रहा था।

बड़े भाई की मृत्यु होने के दिन वह कहाँ था—यह जानने की इच्छा से डायरी खोलकर देखी। बड़ा अचरज हुआ: उस दिन रात को मैं प्रेतलोक में था। हाँ, प्रेतलोक में ही!

ज़िन्दगी में यह अनुभव वह कभी नहीं भूल सकता।

बनारस की एक धर्मशाला में कमरा लेकर ठहरा था। एक सप्ताह बिताने की इच्छा से ही कमरा लिया था। उस दिन साँझ के बाद धर्मशाला से बाहर निकला। एक भैया की दूकान से पूरी, भाजी ली और गरम दूध पी लिया, और फिर टहलने के लिए नदी तट की तरफ चला गया।

गंगा-तट के मन्दिरों से पूजा का वाद्य-संगीत, घंटानाद और कीर्तन गूंज रहा था। चलते-फिरते हरिश्चन्द्र-घाट पहुंचा।

हरिश्चन्द्र घाट दुनिया का सबसे भीड़ भरा एक श्मशान है। सत्य का पालन करनेवाले पुराण-प्रसिद्ध राजा हरिश्चन्द्र के नाम पर जगत्-विख्यात है यह पुण्य-भूमि। काशी से तीन-चार मील दूर तक की, हिन्दुओं की लाशें गंगा-तट के हरिश्चन्द्र घाट पर पहुँचती हैं। लकड़ी खरीदने और पुण्यघाट का भाड़ा देने का पैसा न होने पर कुछेक गरीब पार्थिव देह के पैरों और गर्दन में बड़ा-सा पत्थर बाँधकर गंगा के बीच ले जाकर डुबो देते हैं।

हरिश्चन्द्र घाट की श्मशान भूमि एक खलिहान के विस्तार में ही है। इस

कारण चिताएँ पास-पास ही जलाकर शव-दाह करना पड़ता है।

उस समय वहाँ कई कोनों से पाँच चिताएँ एक साथ धू-धू कर जल रही थीं। लम्बे कद का एक व्यक्ति साथ में लम्बी लकड़ी से चिताओं की लाशों को कभी-कभी हिलाता। श्वेत कपड़ों से ढकी हुई कई लाशें प्रतीक्षा-सूची में होने के कारण एक ओर रखी हुई थीं।

वह उस 'अध्यात्म विद्यालय' की तरफ देखकर खड़ा हो गया।

श्मशान से नदी की ओर की सीढ़ियों के नज़दीक खड़ी की गयी दीवार के एक कोने में बैठकर वह श्मशान में अग्नि और वायु के नृत्य को देखता रहा।

चिता में जलनेवाली लाशें और एक कोने में एकत्र की गई वे अर्थियाँ कल तक इन्सान ही तो थीं--खाते-पीते, सोते-जागते और शादी करके संतानों को पैदा कर सुख और दुख का अनुभव करते इन्सान। स्नेह प्रेम के बदले में दर्द पानेवाले लोग भी उनमें होंगे ! जिन्दगी का आनन्द लूटनेवाले युवक और युवती, विरले बुज़ुर्ग, कन्या, विधवा, गर्भिणी, भोले-भोले, धोखेबाज, पण्डित, मूर्ख—ऐसे कितने ही उनमें होंगे। इन सबों पर एक ही लेबल चिपकाकर परलोक के पार्सलों की तरह इन्हें एक ओर एकत्रित किया गया था।

गंगा की तरफ देखा। वहाँ भभकती चिताओं के उज्ज्वल प्रतिबिम्ब पड़ रहे थे। लगता था कि मृत्यु को प्रज्ज्वलित दीपों की भेंट चढ़ायी गयी है।

नदी की ठण्डी वायु बज रही थी। बरामदे में लेटे-लेटे कई बातें मन में आयी गयीं। पौराणिक काल से लेकर आज तक कितनी करोड़ लाशें इस श्मशान में जलकर राख हो गयी होंगी !···और अब कितनी करोड़ आनेवाली हैं !···एक तरह की खुमारी से आँखें बन्द हो गयीं। न जाने कब नींद आ गई।

आँखें खोलने पर वातावरण के बारे में झट कोई बोध नहीं हुआ। स्मरण किया कि काशी के हरिश्चन्द्र-घाट श्मशान की दीवार के नज़दीक के बरामदे में लेटा हुआ हूँ।

समय के बारे में कुछ नहीं कह सकता। शायद दस बजे होंगे—हो सकता, बारह बज गये हों—सुबह भी होगी···

एक ओर पड़ी लाशों की संख्या कुछ कम हो गयी है। चारों चूल्हे ज़ोर से जल रहे थे। लेकिन जलानेवाले कोई नहीं दिखाई पड़े।

ध्यान से देखने पर एक भैया दीख पड़ा। वह बेचारा जी-तोड़ कोशिश करने के कारण थककर सो रहा है—लाशों के ढेर के नज़दीक ही। वहाँ एक फानूस भी चमक रहा था···

किसी प्यासे की, पानी पीने की-सी आवाज़ आती है। समझ गया कि गंगा की लहरें श्मशान से टकराकर आवाज़ पैदा कर रही हैं।

ठहरने की धर्मशाला तो दो-तीन मील दूर पर है। रात को अकेले चलना

खतरनाक है। यहाँ तो लाशें इन्सान का उपद्रव नहीं करेंगी। रास्ते में जरूर शैतान होंगे—इन्सान रूपी शैतान। गेरुआ कपड़ा न पहननेवाले को देखनें पर वे यों ही नहीं छोड़ देते। जब तक उसको मार न डालें, तब तक उन्हें यह बात कैसे मालूम हो कि आगंतुक की जेब में सिर्फ छह आने ही थे। गंगा के अगाध हृदय में एक और लाश थी···बरामदे में ही आँखें खोलकर लेट गया। कितनी देर तक वहाँ ठहरेगा, कोई पता नहीं है।

पल युगों की तरह लगते हैं।

लेटकर ऊपर की तरफ देखा···

स्वच्छ आकाश—करोड़ों नक्षत्रों के साथ टिमटिमानेवाला विशाल नीलाकाश।

सृष्टि के अनन्त विस्तार का अंदाज़ लगाने पर अलंघ्य ऊँचाई की माया की सतहों पर क्या-क्या घट रहा है?

पराशक्ति के बड़े वर्कशाप की ओर निगाहें फैलाकर लेटकर सोचने लगा।

करोड़ों नक्षत्र। वे आसमान में एक ही सतह में नहीं रहते। ऊँचे-ऊँचे-ऊँचे··· अनेक सतहों में अनन्तता में फैले अद्भुत कर्मक्षेत्र हैं। वहाँ की दूरी? आधुनिक ज्योतिषशास्त्र की रोशनी में मैं उसे ज़रा नाप लूँ—काल और दूरी के साथ यों ही एक साथ खेलूँ। समय तो कट जायेगा।

एक सेकेण्ड में एक लाख सतासी हज़ार से भी अधिक मील यात्रा करनेवाली प्रकाशरश्मि को हम मापक मान लें। उस रश्मि को चन्द्रगोल में पहुँचने के लिए एक सेकेण्ड से ज़रा अधिक समय ही चाहिए। फिर पाँच घण्टों में वह सौरमण्डल को पार कर सकती है। सौरमण्डल के उस पार पहले के नक्षत्र-वितान के सबसे नीचे के नक्षत्र में पहुँचने के लिए चार सालों की जरूरत है। उस नक्षत्र प्रांत के एक छोर से दूसरे छोर में पहुँचने के लिए अस्सी हज़ार वर्ष तक यात्रा करनी होगी। फिर एक शून्य मंडल। उसके पार—बीस लाख वर्ष पहले—आन्द्रेमिदा नाम का नक्षत्र-देश। आन्द्रेमिदा के उस पार करोड़ों नक्षत्र-जाल। उनमें सबसे बड़े, एक-एक पेटी में करोड़ों नक्षत्र—प्रकाशित होनेवाले दस हज़ार हेर्कुलिस नाम के नक्षत्र-साम्राज्य! वे नक्षत्र साम्राज्य तीस करोड़ प्रकाश वर्ष के उस पार! यही नहीं, उसके भी उस पार हैं सिर चक्कर खा रहा है।...

मैं जिस नक्षत्र की रश्मियाँ देख रहा हूँ, वे अठारह हज़ार से एक लाख चौरासी हज़ार वर्ष पहले हा भूमि पर पहुँच गयी थीं। बाह्याकाश में एक गोरे दाग की तरह दिखाई देने वाली आकाश-गंगा दस हज़ार करोड़ तारों के प्रकाश पुंज की द्योतक है। आकाश-गंगा से धरती की दूरी? पचास हज़ार प्रकाश वर्ष!

मैं जिन तारों को देख रहा हूँ उनमें से कई लाखों-करोड़ों वर्ष पूर्व बुझ गये होंगे। दस हज़ार, लाखों-करोड़ों वर्षों के पूर्व रूप लेनेवाली नक्षत्रों की राशियों को धरती पर पहुँचने के लिए लाखों-करोड़ों वर्ष लेने होंगे। यानी मैं जिन नक्षत्रों

को देख रहा हूँ उनमें अधिकांश आज नहीं हैं। एक के बाद एक रूपाकार होते रहने वाले तारों को मैं नहीं देख पाता। जो अब नहीं है उसे मैं देखता हूँ। जो है उसे भी देखता हूँ। आर्ष भारत के दार्शनिक क्या इसी को माया प्रपंच नहीं कहते ?···

चिता से कुछ विस्फोट की-सी आवाज़ सुनी। खोपड़ी जलकर टूटी होगी! गर्भिणी का फूला पेट बच्चे सहित जल रहा होगा···

एक-एक पल युगों की तरह लग रहा है···काल स्तब्ध हो गया है क्या ? कुछ भी तो नहीं मालूम होता··· लेकिन ज़िन्दगी की कुछ घटनाओं की याद कर सकता हूँ। आपस के सम्बन्ध के बिना कुछ सपनों की तरह ये मन में रेंग रही हैं।

(उस समय हज़ारों मील दूर पर तमिलनाडु के एक शहर के कोने में बड़ा भाई कुंजप्पु भौतिक शरीर को छोड़कर प्रेत-लोक का प्रयाण आरम्भ कर चुक था।)

युग-युग-युग···

प्रार्थना की कि ये चिताएँ न बुझें।

—लाशों की मशालों की रोशनी ही इधर आश्वास दे रही हैं। वे बुझ जातीं तो अँधेरा रेंग आता। करोड़ों आत्माओं से मिला-जुला अन्धकार···

आसमान की अगाधता में पुनः निगाहें फैलायीं। इन नक्षत्रों के हिलने की दूरी करोड़ों मील की होगी···आइन्स्टीन की फोर्थ डायमेन्सन थ्योरी ठीक तरह समझ सका··· ऐहिक पारत्रिक समरेखाएँ आपस में टकरा रही हैं···अनन्तता के साथ उसका अपना निकट सम्बन्ध बना हुआ है। प्रेतलोक में विहार कर रहा है···

"गंगा माई की जय···"

दूर से एक आवाज़ सुनी। इन्सान का ही शब्द है! हाँ! इन्सान का शब्द कितना मीठा है!

ब्रह्ममुहूर्त में गंगा को जगाने के लिए पंडो का आगमन हुआ है। फूलों से सजे कुंभों को लेकर 'गंगा माई की जय' की पुकारों के साथ···

दीवार के बरामदे से हौले से उठकर गंगा में उतर चेहरे पर पानी छिटककर सीधा धर्मशाला की तरफ चला···

"मेरी उण्णूलि—मेरी उण्णूलि—ठीक तो है—उसके मुँह में काँटे थे—लेकिन, उसके हृदय में एक शहद का छत्ता भी था···"

वेलु मूप्पर के उण्णूलि-मंत्र ने श्रीधरन को काशी से वेलु मूप्पर के बरामदे में पहुँचा दिया।

## मर्मर : तीन

"लगता है कि कन्निप्परंप्पु के घर की सम्पत्ति का बँटवारा कल ही हुआ था।"

वेलु मूप्पर ने सिर हिलाये हुए कहा ।

श्रीधरन भी याद कर रहा था। चौंतीस साल पहले के बँटवारे के समय की याद उसके मन में आज भी ताजा है।

"उस बदमाश शंकुण्णि कंपाउण्डर और अर्जिनवीस आण्डि ने ही कुंजप्पु को अपने इशारे पर नचाया था।"

वेलु मूप्पर यों कहकर श्रीधरन के मन की बातें प्रतिफलित कर रहा था।

"फिर वे अब कहाँ हैं?" वेलु मूप्पर ने हाथ और सिर हिलाकर स्वयं पूछा, "शंकुण्णि को क्या गति मिली? सभी देहातियों ने उससे घृणा की। आँखों में धूल झोंकने के लिए उसे कोई आदमी नहीं मिलता था। जब पति संरक्षण करने की हालत में नहीं रहा, तो उसकी बीवी मैथिली भी किसी मर्द के पीछे चली गयी। अपनी बीवी को छीन लेनेवाले बदमाश से बदला लेने की क्षमता न होने के कारण कंपाउण्डर अपनी मूँछ और तोंद को सहलाते हुए चुपचाप रहा। आखिर उसको रेलवे फाटक-घर के नजदीक कुत्ते की मौत मरना पड़ा। किसीने मुड़कर देखा तक नहीं।"

श्रीधरन ने सब कुछ सुना पर, कुछ भी नहीं कहा।

"आखिर आण्डि की क्या दशा हुई? क्षयरोग का शिकार होकर खाँसते-खाँसते खून की उलटी कर वह भी चला बसा..."

अर्जीनवीस आण्डि के अन्तिम पलों के बारे में सुनने पर श्रीधरन को उस पर ज़रा हमदर्दी ही हुई। कंपाउण्डर की तरह आण्डि उतना अधिक बदमाश नहीं था। शंकुण्णि कंपाउण्डर लोगों पर पीछे से झपटकर चोट पहुँचानेवाला एक भेड़िया था पर, आण्डि अपनी आजीविका चलाने के लिए कुछ तरकीबें निकाल लेता। वह कंपाउण्डर की तरह कोई पेशा किये बिना दूसरों का खून पीनेवाला व्यक्ति नहीं था। आण्डि शिकार को पकड़ने के लिए सामर्थ्य रखनेवाला एक सियार था—उसके अलावा कई झूठे दस्तावेजों को बनाने और कई रागों में गाने की सामर्थ्य रखनेवाला कलाकार भी था। उस कलाकार के दयनीय निधन की याद आने पर श्रीधरन सहानुभूति किये बिना नहीं रह सका।

अर्जीनवीस आण्डि के बारे में सोचने पर पाणिक्कर के स्कूल में अभिनीत 'अम्मालु परिणयं' नाटक मंच के पर्दे को हटाकर बाहर आता दिखाई पड़ा। कृष्णन मास्टर का वेश पहनकर रंगमंच पर आनेवाले बढ़ई माधवन की भी याद आ गयी।

"वह माधवन बढ़ई अब कहाँ है?"

वेलु मूप्पर ने थोड़ी देर तक सोचा।

"कौन माधवन बढ़ई? फलगुनन मालिक के यहाँ काम करनेवाला माधवन बढ़ई न?"

(समझ गया कि कोरप्पन ठेकेदार का मुंशी फलगुनन फिर एक मालिक हो गया है और यों अतिराणिप्पाटं में दूसरा एक बढ़ई आ गया है।)

"मैं भास्करन मालिक की फर्नीचर दूकान में काम करनेवाले बढ़ई माधवन क बारे में ही पूछ रहा हूँ।" श्रीधरन ने स्पष्टीकरण दिया।

"ओह! वह चालाक माधवन न?" वेलु मूप्पर ने स्वयं हँसते हुए उसका किस्सा सुनाया।

काठ के गोदाम के मालिक भास्करन के 'फर्नीचर शॉप' का सामान अतिराणिप्पाटं के दूसरे एक कोने में मायाजाल की तरह अप्रत्यक्ष हो जाने की बात भास्करन को मालूम न थी। फर्नीचर निर्माण में नुकसान होने से भास्करन मालिक ने उसे बन्द कर दिया। बढ़ई माधवन को बर्खास्त कर दिया गया। माधवन एक महीने तक चुप रहा। फिर कुंजिरामन मालिक को हिस्सेदार बनाकर 'नेशनल फर्नीचर वर्क्स' नाम से एक दूकान खोलकर दक्षिण से आठ-दस बढ़ईयों को भी ले आया। उसने अचानक एक बड़ी फर्नीचर दूकान खोली। नये मॉडल की बेंत की कुर्सियाँ, दर्पण लगी अलमारी, मेज, पलंग आदि कई गृहोपकरण बनाने लगा। यों धीरे-धीरे पुराना बढ़ई माधवन एक नया माधवन मालिक हो गया। एक साल के बाद उसने एक फर्नीचर की इनामी योजना आरम्भ की। पर्ची आने पर फिर पैसा नहीं अदा करना होगा। पहली पर्ची पाणन अप्पु की ही निकली थी। तीन रुपये अदा करनेवाले पाणन अप्पु को साठ रुपये मूल्य का एक बड़ा पलंग हासिल हुआ। वह पलंग दो मुस्लिमों के सिरों पर ढोते हुए अतिराणिप्पाटं की प्रदक्षिणा के बाद ही, अन्त में माधवन मालिक ने पाणन की झोंपड़ी में पहुँचाया था। मासिक इनामी योजना के अलावा एक साप्ताहिक इनामी योजना की भी शुरूआत की। अनेक भागों से लोग माधवन की फर्नीचर इनामी योजना में शमिल होने लगे। छह महीने तक इस प्रकार कारोबार और इनामी योजना ठीक तरह से चलती रही। फिर इनाम की अंतिम तिथि से एक दिन पूर्व फर्नीचर दूकान नहीं खुली। माधवन मालिक और कामगारों का कोई पता ही न लगा। ग्राहकों ने दो दिन तक इन्तज़ार किया। फिर दूकान खोली गयी। उसके अन्दर दो-तीन काठ के टुकड़े, चार-पाँच चटाई के टुकड़े और दो-तीन कीलों के अलावा कुछ दिखाई नहीं पड़ा।

"क्या माधवन बढ़ई को फिर किसी ने नहीं देखा?" श्रीधरन ने पूछा।

"फिर कैसे वह पकड़ में आता?" वेलु मूप्पर ने हाथ हिलाते हुए कहा, "वह उस जगह चला गया था जहाँ से उसे कोई भी नहीं पकड़ सकता था।"

"क्या कहा? हाय, दुख की बात है!" श्रीधरन ने सहानुभूति के साथ कहा। श्रीधरन ने समझा था कि उसने आत्महत्या कर ली होगी।

"वह चालाक बढ़ई माधवन फौज में भर्ती हो गया।" वेलु मूप्पर स्पष्ट करते हुए हँसने लगा।

खाकी यूनिफॉर्म पहने हाथों में बन्दूक लिये बढ़ई माधवन का कल्पित चित्र सामने उभरते ही श्रीधरन हँस पड़ा।

इसी बीच एक नवयुवक उधर आ गया। खाकी रंग का पेण्ट, सफेद कमीज पहने एक सफेद दुवला-पतला व्यक्ति। हाथ में कागज का एक छोटा-सा बंडल था। वेलु मूप्पर को पदचाप से मालूम हुआ कि कोई अभी आया है। "कौन है?"

"मैं हूँ कुंजिरामन।"

"ऊँ"···फिर कुछ नहीं बताया।

कुंजिरामन अन्दर घुस गया। पाँच मिनट के बाद वह फिर बाहर आया।

"दादाजी क्या मैं जाऊँ?"

"ऊँ" वेलू मूप्पर ने गौरव भाव से कहा।

कुंजिरामन ने श्रीधरन की तरफ निगाहें घूमायीं— नायलोन वुशर्ट, रेशमी धोती पहनकर चटाई पर पालथी मारकर बैठनेवाले यह सज्जन किधर से पधारे हैं? उसकी नजर का मतलब यही था।

कुंजिरामन चला गया।

(श्रीधरन को मालूम हुआ कि कुंजिरामन के हाथ की घड़ी स्मग्लिंग की है।)

"क्या वह चला गया?" वेलु मूप्पर ने श्रीधरन से पूछा।

"गया। था कौन?"

"नटखट लड़का। उसके इधर आने पर बैल के माँस की वदबू आयी होगी।" वेलु मुखिया अपनी नाक को मिकोड़ते हुए बोला।

"कौन था वह नौजवान?"

"अपनी सुभद्रा का मामा है। आठवीं कक्षा तक पढ़ा है। उसका पेशा तो मालूम हो गया? वह कम्पनी के साहव के बंगले का रसोईया है। बैल और सुअर का माँस पकाने का पेशा है। उसे छूने पर नहाना चाहिए। हड्डी चाटने वाला···"

वेलु मुखिया बिलकुल पुराणपंथी था। उसका विचार था कि पुरुष को दूसरों के यहाँ रसोइये का काम नहीं करना चाहिए। खासकर बैल और सुअर का माँस पकाना निकृष्ट काम है। सुभद्रा का मामा है। नहीं तो साव के इस छोकरे को वह अन्दर घुसने नहीं देता।

"क्या रसोइया का काम करना बुरा है?" श्रीधरन ने पूछा। "किसी काम के विना यों घूमने से ही अच्छा है कोई न कोई काम करना।"

श्रीधरन की वातों का कोई असर नहीं हुआ। उसने पूछा कि पेट में चूहे कूदते वक्त क्या कोई मल खाने लगता है?

श्रीधरन ने अपने पिताजी के उपदेश का स्मरण किया: "कोई भी काम अदना नहीं है। इन्सान का पेशा चाहे कोई भी हो, उसका अपना महत्व है। भंगी के काम का भी! कोई पेशा किये विना जो चुप रहता है उसी को नीच कहना चाहिए।

राह खर्च निकालने के लिए बंगाल की खाड़ी की चिलचिलाती धूप में काम करने की बात भी श्रीधरन के स्मृति-पटल पर उतर आयी।

गाड़ी में यात्रा करते हुए कई जगहों पर उतरा था। आर्य भारत की आत्मा की खोज करनेवाली प्रथम यात्रा थी वह। काशी से यात्रा शुरू की, कलकत्ता जाने का इरादा था। यों बर्दवान पहुँच गया। बटुवे में पाँच-छह आने ही थे। बर्दवान में कलकत्ता तक की ट्रेन-यात्रा के लिए पैसा नहीं था। कलकत्ता में पहुँचने पर कई पत्रिकाओं से पारिश्रमिक मिल जाता।

बर्दवान से कलकत्ता तक साठ मील पैदल यात्रा करने का निश्चय किया। एक बैग को लटकाया और चल दिया। आधे आने के भुने चने लेकर खा लिये और ऊपर से ठण्डा पानी, बस। दोपहर को मन्द पवन के झोकों में एक पेड़ की छाया में सो गया। यों शाम को किसी गाँव में आ पहुँचा।

"क्या इधर कहीं धर्मशाला है?" सड़क से जानेवाले एक बंगाली युवक से पूछा।

पेण्ट, शर्ट और शूज़ पहने, हाथ में एक बैग लिये यात्रा करनेवाले इस अजनबी के अँग्रेज़ी सवाल का जवाव उस बंगाली ने बंग भाषा में ही दिया। शायद शक्ल-सूरत देखकर उसने इसे एक बंगाली ही समझा होगा।

"मैं बंग भाषा नहीं जानता—क्या इधर नज़दीक कोई धर्मशाला है? मेहर-बानी करके बताइए।" श्रीधरन ने पुनः अँग्रेजी में ही निवेदन किया।

उस बंगाली युवक ने श्रीधरन को एड़ी से लेकर चोटी तक निहारा। "एक फर्लांग दूर पर एक टी० बी० है।" इस बार उसने भी अँग्रेजी में उत्तर दिया।

"टी० बी० में रहने के लिए क्या भाड़ा नहीं देना पड़ेगा?"

"हाँ, देना तो होगा।"

"मेरे पास पैसे नहीं हैं। मुझे यही जानना था कि क्या इधर कोई धर्मशाला है?"

"आप कहाँ जा रहे हैं?"

"कलकत्ता।"

"क्या पैदल ही जा रहे हैं?"

"हाँ"

"कोई नौकरी तलाश करने के लिए ही कलकत्ता जा रहे हैं?"

"नहीं, फिर भी इस समय कुछ पैसे की ज़रूरत है ताकि मैं कलकत्ता जा सकूँ। इसके लिए कोई भी काम करने को मैं तैयार हूँ।"

"आप क्या काम करना जानते हैं?"

"स्टेनोग्राफर, क्लर्क, टाइपिस्ट का काम कर सकता हूँ। चपरासी का काम भी कर सकूँगा। ज़रूरत पड़े तो घर का काम-काज भी कर सकता हूँ, दो-तीन

दिनों के लिए ही।"

"इस तरह दो-तीन दिनों के लिए क्लर्क या चपरासी का काम मिलना मुश्किल है। हाँ, मजदूरी करने के लिए आदमियों की जरूरत है।"

"मजदूर का काम करने के लिए भी तैयार हूं।" श्रीधरन शान के साथ बोला।

यह सुनकर वह बंगाली स्वयं हँसने लगा। परिहास था या सिर्फ अनुकंपा?

वह थोड़ी देर तक कुछ सोचता रहा। "मैं कोशिश करूँगा। आ आ मेरे साथ।"

वह बंग बाबू श्रीधरन को एक फर्लांग दूर स्थित टी० बी० में ही ले गया था।

टी० बी० के बरामदे में पाइप पीता तोंदवाला एक बंगाली बाबू बैठा था।

श्रीधरन को ले चलनेवाले युवक और उस महाशय के बीच बंगाली में कुछ बातचीत हुई।

बंगाली बाबू ने श्रीधरन को गौर से देखा। फिर अँग्रेजी में कहा, "मैं तुम्हें एक नौकरी दूँगा। ज़मीन नापने का काम है। तुम्हें जंजीर पकड़कर उनकी मदद करनी होगी। दिन में दो रुपये पारिश्रमिक मिलेगा। तुम्हें मंजूर है?"

बंगाली युवक ने टी० बी० बाबू का परिचय दिया: "सर्वे के अधिकारी हैं। आसपास के झुरमुटों की पैमाइश करने आये हैं।"

"तैयार।" श्रीधरन ने अपनी स्वीकृति प्रकट की।

"ऐसी बात है तो तुम आज मेरे साथ ही रहो। कल सुबह सात बजे काम के लिए हाजिर होना है।"

"थैंक यू सर।"

रात बिताने के लिए मुफ्त एक जगह तो मिल ही गयी। कलकत्ता के मार्ग व्यय दिलानेवाले एक छोटे से काम का आश्वासन भी मिला।

श्रीधरन चैन के साथ लेट गया। अगले दिन सुबह डेढ़ मील दूर की झाड़ियों की तरफ पैमाइश करनेवालों के साथ रवाना हुआ।

मज़दूर उतरे। श्रीधरन ने नापने की जंजीर पकड़ ली। कड़ी धूप में पत्थरों, काँटों और साँपों से भरी जगहों से चलने लगा। मार्क करने की जगहों में पत्थर और लकड़ी रोप दिये। पसीने से तर हो गया इसलिए बहुत अधिक पानी पी गया।

एक जगह फिसलकर गिर जाने से कुछ चोट भी लग गयी। लेकिन ईमानदारी से काम करने की खुशी भी हुई...

शाम को काम पूरा कर टी० बी० में वापस आया। सर्वे बाबू ने पैकेट से पाँच रुपये का नोट श्रीधरन की तरफ बढ़ाया।

दिन का मेहनताना दो रुपये है, फिर पाँच रुपये क्यों? मुझे किसी का भी अहसान नहीं चाहिए—श्रीधरन पैसे लिये बगैर शंकित-सा खड़ा रहा।

"तुम्हारा वेजेज़ !" बंगाली बाबू ने पाँच रुपये का नोट श्रीधरन की तरफ फिर बढ़ा दिया।

"दिन का पारिश्रमिक है न ! बाकी देने के लिए मेरे पास पैसे नहीं है।"

सर्वेयर बाबू हँस पड़ा : "मेहनताना का निश्चय करनेवाला मैं ही हूँ। इसे एक दिन के या दो दिन के वेतन के रूप में जैसा चाहो मान सकते हो। कल सुबह तुम कलकत्ता रवाना हो सकते हो—"

श्रीधरन ने फिर कुछ नहीं कहा। पारिश्रमिक लेकर जेब में डाल लिया।

"अब तुम नौकर नहीं बल्कि मेहमान हो।" बंगाली बाबू ने हँसते हुए श्रीधरन का हाथ पकड़कर अपने नज़दीक बिठाया।

उस दिन रात को उस बंगाली बाबू के साथ ही भोजन किया था।

सर्वेयर घोष साहब साहित्य का रसिक था। भोजन करने के बाद वह कविता गाने लगा। रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताएँ मौलिक बंग भाषा में सबसे पहले घोष बाबू के कण्ठ से ही मैंने सुनी थीं।

अगले दिन एक बैलगाड़ी में चढ़कर नज़दीक के रेलवे स्टेशन पर पहुँच गया। वहाँ से कलकत्ता जानेवाली गाड़ी में चढ़ा। बटुवे में एक रुपये के साथ ही हावड़ा स्टेशन पहुँच गया था···

"यद्यपि वह बढ़ई माधवन लोगों को धोखा देकर गया है तो भी मैं एक बात में उसको पसन्द करता हूँ।" वेलु मूप्पर की इस आवाज़ ने श्रीधरन को कलकत्ता से वेलु मूप्पर के बरामदे में पहुँचा दिया।

"बढ़ई माधवन ने क्या अच्छा काम किया था ?"

वेलु मूप्पर कुछ विचार कर हँसते हुए बोला, "इस इलाके के सबसे कंजूस व्यक्ति भास्करन मालिक को धोखा देने में एक बढ़ई माधवन ही समर्थ हुआ था। इसी वजह से मुझे वह अच्छा लगा।"

"क्या भास्करन मालिक अब भी है ?" श्रीधरन ने पूछा। (भास्करन मालिक का स्मरण होने पर, उसके साथ घोड़ागाड़ी में सफर करनेवाले सिर पर सफ़ेद पगड़ीवाला ऊँचे कद का हृष्ट-पुष्ट अरबी भी स्मृति में उभर आया।)

"भास्करन मालिक को मरे अठारह साल बीत गये।" वेलु मूप्पर ने उँगली से हिसाब लगाकर बताया।

## मर्मर : चार

श्रीधरन को पहले ही मालूम था कि सुन्दर और सुचारु ढंग से पोशाक पहननेवाला शौकीन भास्करन मालिक अमीर और विकृत नैतिक स्वभाववाला व्यक्ति

है। 'छतरी की छड़ी' बालन की मृत्यु के पीछे भास्करन मालिक के गुप्त योगदान की सच्ची बात भी श्रीधरन के मन में अंकित थी। चाहे गलतफहमी से हो, चाहे बढ़ई माधवन के प्रोत्साहन से हो, चाहे किसी भी ढंग से क्यों न हो, भास्करन मालिकको एक घातक के रूप में ही श्रीधरन स्मरण कर सकता है।

भास्करन मालिक की मृत्यु के सम्बन्ध में वेलु मूप्पन ने जो कहा उसे जरा ताज्जुब के साथ ही श्रीधरन ने सुना था। भास्करन मालिक की तरह लैंगिक आसक्ति रखनेवाले एक मुस्लिम मालिक ने उस खूबसूरत नायर लड़के को छीनने की कोशिश की जिसको भास्करन मालिक ने अपने कब्जे में कर रखा था। चेंगरा की एक दुकान की छत पर चलते क्लब में दोनों मालिकों की 'गरमागरम' बहसें हुईं। उस दिन रात को भास्करन मालिक घर नहीं पहुँचा। रास्ते में मुस्लिम मालिक के एक बदमाश सेवक ने भास्करन को छुरा भोंककर मार डाला। पुलिस ने मुकदमा दायर कर दिया। पर अदालत ने प्रमाण न होने की वजह से मुजरिम को छोड़ दिया। मुद्दालह को पीछे से मदद करने के लिए कई अमीर मुस्लिम मालिक तैयार थे। मारे गये भास्करन के पक्ष में कोई नहीं था। क्योंकि वह निपट स्वार्थी था। वह अपनी बीबी को एक नौकरानी की तरह ही मानता था। बाहर देखने में अमीर था लेकिन घर में दिन के खर्च के सिर्फ़ बारह आने पत्नी के हाथ में थमाकर एक पैसा भी अधिक खर्च न करने के लिए कहता। भास्करन मालिक के गोदाम में दफ्तर में दो मुंशी काम करते थे। मालिक की मेज़ पर एक रिवॉलविंग पंखा था। गर्मी से मुंशी पसीने से तर हो जाते लेकिन वह पंखे की हवा को अपने सामने ही रखता। एक भी पैसा किसी को भीख नहीं देता। उसका ख्याल था कि भिखमंगे तो भगवान से अभिशप्त होते हैं। ऐसे लोगों को कुछ देना तो ईश्वर की इच्छा का विरोध करना है। लेकिन अपनी विकृत लैंगिक वासना की पूर्ति के लिए वह कितना भी पैसा खर्च करने के लिए तैयार था। आखिर वह जिन्दगी से कैसे हाथ धो बैठा? एक नाले के किनारे किसी ने छुरा मारकर उसकी इहलीला समाप्त कर दी!

भास्करन मालिक की मृत्यु पर श्रीधरन को गम नहीं हुआ, खुशी भी नहीं हुई। हर आदमी का जीवन-यापन का ढंग अपना अलग ही होता है। अधिक विचार करें तो हम सभी तो स्वार्थी हैं। स्वार्थ और त्याग एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक व्यक्ति का जो जीवन दर्शन है वह दूसरों को स्वीकार नहीं होता। सब लोग अपनी मन की संतृप्ति को लक्ष्य कर जीवन-यापन करते हैं। स्वार्थी और कंजूस कहकर हम जिन लोगों की अवज्ञा करते हैं वे हमसे भी अधिक संतृप्ति और सुख का अनुभव करनेवाले हैं। तृप्ति और आनन्द महज सापेक्षिक भाव हैं।

स्वार्थी भास्करन मालिक के बारे में सुनने पर सत्रह वर्ष पहले मध्य अफ्रीका के डम्मानी की याद ताज़ा हो आयी। डम्मानी न्यासालैंड का एक अमीर भारतीय

व्यापारी था। वह सिंधी था। ब्लाण्टियर में उसकी कपड़े की एक बड़ी दुकान थी। न्यासालैण्ड के कई शहरों और गाँवों में उसकी कई शाखाएँ थीं।

उस पूंजीपति के सम्बन्ध में कई कहानियाँ सुनी थीं। पहले सोचा कि ये दन्त-कथाएँ हैं। एक दिन दोपहर उस व्यक्ति को सड़क पर सम्मुख देख लिया। एक दुबला-पतला और पाँच फुट लम्बे कद का आदमी। एक पुरानी धोती और कमीज़ पहने था। हाथ में एक मैला-सा झोला लटका रखा था। शायद सब्जी-मण्डी से लौट रहा था। दोपहर के बाद मार्केट से सूखी-सड़ी बची-खुची तरकारियाँ कम पैसे में मिल जातीं। उन्हें खरीदकर वह डम्मानी घर लौट रहा था।

अतिराणिप्पाटं का भास्करन मालिक दिन के खर्च का पैसा—बारह आना ही सही—पत्नी के हाथ में सौंपता था लेकिन ब्लाण्टियर के डम्मानी को तो अपनी बीवी पर उतना भरोसा ही नहीं था। खराब गेहूँ और नाले में फेंक देने लायक तरकारियाँ वह अकेला ही बाजार जाकर खरीद लाता…

थोक व्यापार की उसकी दुकान में कपड़े की गाँठों पर लगे जितने भी कागज आते थे, उनमें एक टुकड़ा भी डम्मानी व्यर्थ नहीं जाने देता था। सप्ताह में एक बार इन कागज़ों को उठाकर स्वयं मोहल्ले में ले जाकर बेच आता।

भारतीय व्यापारियों से बातचीत करने के लिए डम्मानी शाम को चार बजे ही जाता था। शाम की चाय वह इस तरह दूसरे की दूकान पर पी लेता। वह अपने मन में हिसाब लगाता कि चाय के मूल्य के रूप में तीन पैसे का मुनाफा आज मिला है। कपड़े के व्यापार से हर रोज एक सौ अशर्फियों का मुनाफा मिलने पर भी इस तरह के खराब अण्डे और सड़ी तरकारियाँ खरीदकर, पुराने कागज़ों को बेचकर और मुफ्त की चाय पीकर जो पैसा वह बचाता, उसी से उसे बहुत संतृप्ति और खुशी मिलती थी।

डम्मानी का एक ही पुत्र था। लोगों ने समझा था कि उसी सन्तान के लिए वह इतनी अधिक तकलीफ झेलकर पैसे इकट्ठे कर रहा है। लेकिन एक दिन एक मोटर-दुर्घटना में वह बालक चल बसा। इससे डम्मानी के चरित्र में कोई परिवर्तन नहीं आया। वह और भी निकृष्ट कंजूसी का काम करने के लिए तैयार हो गया।

इस ढंग का था डम्मानी का आत्मसन्तोष।

(चार-पाँच साल पहले ही डम्मानी की मृत्यु हो गयी। उसका मोटा बैंक बेलेन्स और सम्पत्ति मृत्युकर के रूप में सरकार के खजाने में चली गयी)

क्या डम्मानी की ज़िन्दगी एक पराजय थी? उस बुजुर्ग ने अपनी ज़िन्दगी के लक्ष्य की पूर्ति करने संतृप्ति के साथ ही अन्तिम साँसें छोड़ी थीं।

डम्मानी का स्मरण करने पर ब्लांटिण्यर के दूसरे एक विचित्र व्यक्ति मि० सोमन की याद ताज़ा हो आयी। छह फुट लम्बा, मोटा-ताजा ऊँचे कद का व्यक्ति। काला-कलूटा, लाल-लाल आँखें, उग्र स्वभाव। उसकी आँखें देख बदमाशों

को भी पसीना आ जाता। इस तरह की आज्ञा-शक्ति थी उस गम्भीर व्यक्ति में।

सोमन मलयाली था। इतना साहसी कि पच्चीस वर्ष पहले हाथ में कुछ फुटकर लेकर ही अफ्रीका में जहाज़ से उतरा था। जी-तोड़ मेहनत और कार्य-कुशलता से वह कुछ ही वर्षों में प्लाण्टियर का मुखिया हो गया। अब उसके अपने चाय के बाग हैं। सरकार द्वारा नीलाम में बेचा जानेवाला तंबाकू खरीदकर उसका वह थोक व्यापार करता है। न्यासा झील के किनारे एक बड़ा बंगला है। चिड़ियों का शिकार करने के लिए उसका अपना एक बगीचा है। लेकिन समाज में वह अकेला है। उसने समाज से नफरत की थी या समाज ने उसकी अवहेलना की थी, इसका कोई पता नहीं है। इस जगह के भारतीय व्यापारियों ने उसको छोड़ दिया (ईर्ष्या से छोड़ा होगा)। गोरे लोगों ने हृदय से उसकी अवज्ञा की। (काला इन्सान होने के नाते की होगी।)

अफ्रीका के उस शहर के कुछ मलयालियों ने भी उस व्यक्ति से निकट सम्बन्ध नहीं रखना चाहा।

देशवासी हब्शी भी उससे दूर रहते थे।

सोमन ने किसी की परवाह किये बिना अपनी इच्छानुसार शान से जिन्दगी गुजारी। मि०सोमन का मेहमान बनकर न्यासा झील के किनारे के उनके बंगले में एक रात बिताने की और उस अकेले इन्सान के मुंह से उसके दर्शन की व्याख्या सुनने की बात को भी श्रीधरन नहीं भूल पाया था।

थोड़ी-थोड़ी गर्मी और हल्की चाँदनी की एक रात। झील की छोटी-छोटी लहरें चाँदनी का घूंघट पहनकर नाच रही थीं। सफेद बालू-तट पर ताड़-वृक्षों की काली छायाएँ पंक्तिबद्ध हो रही थीं। बंगले के पीछे से कोई पैशाचिक स्वर उठ रहा था। न्यासा झील के हिप्पो (दरियाई घोड़ा) की आवाज़ें थीं। यह उन जानवरों की रति-क्रीड़ा का मौसम है।

बंगले के बरामदे की बेंत की कुर्सी पर बैठकर दोनों ह्विस्की पी रहे थे। अफ्रीका के सम्बन्ध में थोड़ी-बहुत बातें सुनाने के बाद सोमन ने अपना विषय बदल दिया।

"मि० श्रीधरन, यहाँ के लोगों से, विशेषकर मलयालियों से, आपने मेरे बारे में कई बातें सुनी होंगी···"

(बात तो ठीक है, फिर सोमन की अपनी निजी जिन्दगी की भेदभरी बातें। सोमन ने दस वर्ष पहले एक खूबसूरत विधवा से शादी की थी। उस विधवा की तब सात-आठ वर्ष की एक लड़की थी। नौ साल यों ही बीत गये। माँ की चमक-दमक ज़रा पीली हो गयी तो उसने उसको छोड़ दिया। (उसे आजीवन अपेक्षित आर्थिक सहायता देने का प्रबन्ध कर दिया गया था।) उसके बाद सोलह-सत्रह की उस यौवन-सम्पन्न लड़की को ही स्वीकार कर लिया। गोरों का खून छलकाती वह

लड़की दिन में सोमन को 'डैडी, डैडी' पुकारकर आइस्क्रीम खाती। रात को वही नाइट गाउन पहनकर डैडी के साथ लेटती भी।)

ह्विस्की की चुस्की लेते हुए सोमन ने जारी रखा :

"मैंने दूसरों का पैसा छीना नहीं हैं। दूसरों की बीवी नहीं छीनी है। ज़बर्दस्ती से एक भी औरत का उपभोग मैंने नहीं किया हैं। समाज की सलाह या सहयोग से मैं इस हालत में नहीं पहुँचा हूँ। मैंने मेहनत कर जो पैसा कमाया, उससे मैं अपनी इच्छा के अनुसार जिन्दगी गुजार रहा हूँ। मैंने समाज का क्या अपराध किया है? ···वे क्यों मुझसे नफरत करते हैं? मैंने किसी का भी मुँह नहीं ताका है। मेरी सम्पत्ति और क्षमता के विनाश हो जाने पर, दूसरों की मदद के बगैर जिन्दा न रहने का अवसर आने पर···?"

मिस्टर सोमन ने एक पेग ह्विस्की और ले ली। गिलास को मेज पर जोर से पटकते हुए कन्धे से रिवाल्वर खींचकर बाहर निकाली। "सब कुछ बेचने पर भी मैं इसको नहीं छोड़ूंगा। दूसरों का मोहताज होने के उस अन्तिम अवसर पर यह मेरी रक्षा करेगी। मेरी लाश के निकट यह भी बनी रहेगी···"

"पत्राचार और आपस में प्रेम होने के बाद ही क्या तुम्हारी शादी हुई है?···"

चेयर से आये सवाल ने श्रीधरन को जगा दिया।

श्रीधरन की शादी क्या 'लव मेरेज' थी, यही वेलु मूप्पर पूछ रहा है। (इस सवाल के साथ उसके चेहरे पर मुस्कान थिरक गयी थी।)

श्रीधरन समझ गया।

नायिका को स्कूल में पत्र भेजा था, उस पत्र को लेकर पिताजी का कैफियत तलब करना आदि पुरानी घटनाओं को छेड़ रहा है बूढ़े का यह सवाल और यह मुस्कान!

कन्निप्परंपु के श्रीधरन का स्कूल की एक लड़की को प्रेम-पत्र भेजने, तथा लड़की के पिता और ट्यूशन मास्टर का कृष्णन मास्टर के यहाँ आकर गाली बकने की बात की चर्चा अतिराणिप्पाट में फैल गयी थी। नारदन कुण्टु की जीभ को तेज करने के लिए अच्छी सामग्री मिली थी। कुण्टु ने ही इस रोचक खबर को अतिराणिप्पाट के उस पार प्रचारित किया था।

"यों प्रेम-वेम से शादी नहीं हुई है।" श्रीधरन ने सच्ची बात कही।

लेकिन नायिका को भेजे प्रेम-पत्र की तड़पन और आवेग का रहस्य वेलु मूप्पर को मालूम न था। बारह साल बाद श्रीधरन ने नायिका की सहपाठिनी के भाई से उसके बारे में जाना था।

श्रीधरन ने डाक से जो प्रेम-पत्र भेजा था वह नायिका की कक्षा अध्यापिका हाथ में डाकिये ने दे दिया। क्लास टीचर एक वृद्धा बेचुलर् थी। उसने नायिका को बुलाकर पत्र सौंप दिया। नायिका ने पत्र खोला। प्रेम-पत्र! जिन्दगी में पहली

बार ही यह एक पत्र मिला था। (अभिमान, आह्लाद और उसके साथ ही अज्ञात भय और घबराहट महसूस हुई थी) भोली-भाली उस लड़की ने उस अमूल्य निधि को दूसरों के न देखने की इच्छा से खादी के ब्लाउज में छिपाने की कोशिश की···

क्लास की बूढ़ी अध्यापिका की हिरणी-जैसी आंखें उस ओर टिकी हुई थीं। उसे शक हुआ। नायिका को पास बुलाकर पत्र हठपूर्वक वापस लिया। उसने पढ़ा—लव लैटर !

वृद्धा कुमारी ने नायिका के ट्यूशन मास्टर अष्टवक्रन उण्णीरि नायर के हाथ में पत्र को आगे की कार्यवाही के लिए सौंप दिया···

श्रीधरन के प्रथम प्रेम-पत्र का उलट फेर इसी प्रकार था।···नायिका ने फिर शिक्षा समाप्त की। उसकी शादी हुई। वह माँ बनी। फिर नानी बनी! वह मलाया में कहीं अपने पति के साथ रहती है। (मंगल कामनाएँ !)

अगर उस दिन ऐसा घटित नहीं होता तो ?···

श्रीधरन के उस प्रेम-पत्र को नायिका द्वारा अपने ब्लाउज के नीचे छाती में छिपाने के उस निर्णायक क्षण में वृद्धा कुमारी उस क्लास टीचर की आँखें कहीं और होतीं तो ?

जमाने के व्यंग्य ने ही उस कौवे की दृष्टि को नायिका की छाती की तरफ मोड़ दिया था न !

जिन्दगी संयोगों के ताने और मोह के बाने से बुना हुआ एक घूँघट है न।

## मर्मर : पाँच

उस प्रेम-पत्र के बारे में इलाके भर में अफवाहें फैलाने वाले नारदन कुण्टु के बारे में वेलु मूप्पर से फिर पूछा।

वेलु मूप्पर ने सब कुछ विस्तार से बताया।

बुढ़ापे ने नारदन कुण्टु के स्वास्थ्य को हानि नहीं पहुँचायी थी। मुँह से अवश्य ही दो-तीन दाँत निकल गये थे, बस। वह अच्छी तरह खा-पी सकता था। उसके आठों लड़के बिना किसी तकलीफ के पिता की देख-भाल करते थे। छोटे बच्चों को दुलारते हुए वह घर में खा-पीकर रह सकता था, लेकिन उसे घर में चुपचाप पड़े रहना नहीं सुहाता था। सुबह को काँजी पीकर, एक सफेद धोती ओढ़ कर कन्धे पर एक अंगोछा डालकर बाहर फिरता रहता। उसने अपने कर्मक्षेत्र को अतिराणिप्पाटं से दूर के मोहल्ले में भी फैलाया था।

कहीं कोई दावत या शादी हुई तो वह औरों से पूछकर उसका पता लगा लेता और सीधे वहाँ चला जाता। साफ पोशाक पहनकर बिना झिझक के वहाँ चढ़ जानेवाले मेहमान की अगवानी गृहस्वामी तो करेगा ही। उसको पहली पंक्ति में

जगह मिलती। शादी की दावत है तो कोई दिक्कत ही नहीं। वर पक्ष के लोग समझेंगे कि वधु के घरवालों द्वारा न्योता देकर आनेवाला मेहमान होगा। वधू-पक्ष के लोग भी ऐसा ही समझ लेंगे।

लेकिन एक दावत में कुण्टु को हाथों-हाथ पकड़ लिया गया। रामुण्णि मास्टर की बेटी की शादी में जानबूझ कर काली-जबान कुण्टु को निमन्त्रण नहीं दिया गया था। (वर-पक्ष के लोग दूर स्थित मुक्कलशेरिवाले थे।) भोजन परोसते समय कुण्टु शान से प्रथम पंक्ति में पत्ते के सामने बैठा था। रामुण्णि मास्टर आपे से बाहर हो गया। वह मान-मर्यादा का ख्याल किये बिना कुण्टु के नज़दीक गया : "ए, तुमको किसने निमन्त्रण दिया है ? जल्दी जगह खाली करो !"

कुण्टु ने वहीं बैठे-बैठे गौरव से जवाब दिया : "तुमने मुझे निमत्रण नहीं दिया तो क्या यह मेरी गलती है ?"

साँप के मुँह के जहर की तरह कुण्टु की काली जीभ चल पड़ी थी। महीने में कम से कम एक बार वह इस ज़हर को बाहर निकाले बिना नहीं रह सकता था।

यों ज़हर के आधिक्य के संदर्भ में ही उसकी मृत्यु हो गयी थी।

एक दिन सुबह कुण्टु काँजी पीकर पोशाक पहन बाहर जाने को तैयार हो खड़ा था। कुण्टु के सबसे छोटे बेटे अय्यपुट्टी के छह महीने के शिशु को बरामदे की एक चटाई पर लिटाया हुआ था। बिना कपड़े-लत्तों का वह शिशु ऊपर की तरफ तीर की नाई पेशाब करने लगा। यह देख कुण्टु से नहीं रहा गया। यों ही उसकी जीभ से चिनगारी फूट निकलीं।

"मर जा साले, दिन में ही आतिशबाजी कर रहा है।" गोली थी सो छूट गयी।

'ठप्प—' पीछे से गर्दन पर एक मुक्का पड़ा। मुड़कर देखा।

अय्ययपुट्टी !

(अपने प्यारे मुन्ने के काम को देखकर जब बाप ने गोली छोड़ी तो नज़दीक खड़ा अय्यपुट्टी उसे सहन नहीं कर सका। झट उसकी गरदन पर एक झापड़ जड़ दिया। अपने अविवेक पर तुरन्त ही वह पछताया।)

बच्चा तब तक गला फाड़कर रोने लगा था।

कुण्टु उस दिन बाहर नहीं गया। उसी वेश में कमरे में घुसकर चटाई पर लेट गया। तीन दिन तक नहीं उठा। चौथे दिन वह चल बसा।

कुण्टु को क्या हुआ ?

पश्चात्ताप और आत्मनिन्दा की मूर्च्छा में क्या आदमी की मृत्यु हो जाती है ?

कुण्टु मामा की मृत्यु के कारण पर वेलु मूप्पर की राय इस प्रकार है : "विष-चिकित्सक काटनेवाले साँप से ही जहर निकाल लेते है न ? यदि साँप का ज़हर

निकल जाता तो काट लिये व्यक्ति का ज़हर भी उतर जाता। काटनेवाला साँप वहीं पड़ा-पड़ा मर जाता। इसी तरह कुण्टु मामा ने कुछ विचार किये बगैर अपने ही पोते को ज़रा काट लिया था। बच्चे की रुलाई थम गयी। साथ ही, कुण्टु मामा की मृत्यु हो गयी।…"

वेलु मूप्पर की बातों का क्या कोई अर्थ है?

अपने ही पोते को कोसने से जो मनोवेदना हुई और अपने ही पुत्र की मार खाने से जो भारी अपमान हो गया—इन दोनों ने बूढ़े को बहुत परेशान कर दिया होगा। वह अपनी प्रत्याह्वयन शक्ति से खुद को शाप देकर मर गया होगा?

जीभ में ज़हर रखनेवाले नारदन कुण्टु की कहानी पूरी हुई, तभी देह में चुम्बकीय शक्ति रखनेवाला एक और इन्सान श्रीधरन के स्मृतिप्रवाह में बह आया।

खारतूम से शेलाल की—सूडान से मिस्र की—यात्रा करते समय ही उस व्यक्ति को देखा था। वाड़ीहल्फ से शेलाल की तरफ नील नदी में जहाज़ की यात्रा के बीच ही उससे भेंट हुई थी :

'एस० एस० तीब्स' नील जहाज के प्रथम श्रेणी केबिन के दो बर्थों में निचला बर्थ श्रीधरन के नाम और ऊपर का बर्थ मि० सेल के नाम पर रिजर्व था।

यह सेल कौन है? अरबी है या एशियाई?—श्रीधरन को सन्देह था।

संदूकों के साथ केबिन में आनेवाले सहयात्री को श्रीधरन ने ध्यान से देखा। गोरा साहब है। दृढ़ मांस-पेशियोंवाला दुबला-पतला ऊँचे कद का प्रौढ़ व्यक्ति (अब स्मरण करने पर लगता है कि नारदन कुण्टु का ही अंग्रेज़ी प्रतिरूप है)। उससे परिचय हुआ। सूयस नहर के नज़दीक ब्रिटिश फ़ौजी अड्डे फैदिल का एक अफसर है। एक महीने की छुट्टी में सूडान की एक मनोरंजक यात्रा के बाद वह अपने अड्डे की तरफ वापस जा रहा है। उसका नाम है मि० सेल।

शेलाल पहुँचने के लिए जहाज़ में दो दिन का सफ़र करना है। मि० सेल अपने ऊपर की बर्थ पर लेटकर किताब पढ़ते हुए ही समय बिता रहा था। उसने ढेर सारे जासूसी उपन्यास पढ़ डाले थे।

श्रीधरन ने नील के किनारे की तरफ देखकर ही समय काट लिया। लगा कि किसी दूसरे लोक का विचित्र स्थल है वह। आस-पास के वातावरण में न तो घास दिखाई देती थी, न कोई पेड़-पौधा। जहाँ देखो वहाँ ऊसर ही ऊसर। कभी-कभी काला टीला दिखाई दे जाता। कुछ टीलों की तराई में कुछ-एक झोपड़ियाँ दिखाई दे जातीं। रेगिस्तान के नीरस जनपद थे वे।

जासूसी उपन्यास पढ़ने में तल्लीन सेल कई बार बीच में अपनी ऊपर की बर्थ से उतरा। नीचे सुरक्षित अपने बड़े संदूक को खोला। फिर जाँच करने के बाद

उसे बन्द किया और फिर ऊपर बर्थ पर चला गया।

इस प्रकार दो-तीन बार वह नीचे और ऊपर आता-जाता रहा।

श्रीधरन यह सब बड़े ध्यान से देख रहा था। उसकी जिज्ञासा जाग उठी। यह आदमी क्या कर रहा है? एक दफा जब वह नीचे पेटी की जाँच कर रहा था तभी श्रीधरन ने लुक-छिपकर देख लिया। पेटी में रखी टाइमपीस में वह समय देख रहा था।

क्या इस आदमी को एक रिस्टवाच खरीदने में आपत्ति है? एक टाइमपीस पेटी में बन्द कर यों समय देखने के लिए उतरने-चढ़ने और झाँकने की क्या जरूरत है? समय जानने के लिए अपने सहयात्री भारतीय से पूछना भी काफी था। अपनी अमूल्य टाइमपीस के समय पर ही क्या इस गोरे को विश्वास है?

थोड़ी देर विचार करने पर श्रीधरन को उस अँग्रेज़ के आचरण पर अचम्भा नहीं हुआ। पुराण-पन्थी अँग्रेज़ों का स्वभाव ही ऐसा होता है। अपरिचित लोगों से, खासकर दूसरे वर्ग के लोगों से, थोडा-सा 'आब्लिगेशन' भी वे नहीं माँगते। वे इसी तरह अपनी शान को बनाये रखते हैं। यह बात तो समझी जा सकती है, लेकिन समय जानने के लिए सुविधानुसार एक घड़ी खरीदकर हाथ में बाँधने के बजाय एक पुरानी टाइमपीस अपने संदूक में रखने का रहस्य बहुत विचार करने पर भी उसे मालूम नहीं हो सका। अवसर मिलते ही उससे पूछने की इच्छा हुई।

जहाज़ के डाइनिंग सैलून से भोजन कर केबिन में लौटते समय मि० सेल से खुल्लम-खुल्ला ही पूछ लिया, "माफ़ कीजिए मि०सेल, एक बात पूछ लेने दीजिए। आपको संदूक में रखी हुई एक टाइमपीस से बार-बार समय देखते हुए मैंने देखा है। क्या आप एक रिस्टवॉच का इस्तेमाल नहीं कर सकते?···अधिक सुविधा-जनक होगा न?"

मि० सेल अपने गन्दे दाँतों को दिखाता मुस्कराया। फिर वह दबी ज़बान में बोला, "पता नहीं मेरी बातों पर आप विश्वास करेंगे या नहीं। मेरा शरीर तो चुंबकीय शक्ति रखनेवाला है। अगर मैं घड़ी हाथ में बाँध लूं तो वह फिर नहीं चलेगी इसीलिए मैंने टाइमपीस खरीदकर एक पेटी में रखी है···"

शरीर में चुंबक शक्ति रखनेवाला इन्सान! श्रीधरन इस पर यकीन नहीं कर सका।

इस तथ्य को प्रमाणित करने की उत्कट इच्छा से श्रीधरन ने अपनी रिस्ट-वॉच उतारकर उस गोरे के हाथ में बाँधने की कोशिश की तो उसने रोक दिया:

"नहीं मिस्टर, तुम क्यों अपनी घड़ी को खराब करते हो। मैं दिखा दूंगा···"

उसने अपनी बड़ी पेटी खोलकर (खोलने पर टाइमपीस का समय एक बार देखा) एक कोने से एक कुतुबनुमा बाहर निकाल लिया। मि० सेल के कर-स्पर्श होते ही कुतुबनुमे की सुई घबड़ाकर इधर-उधर दौड़ने लगी।···चुम्बकीय इन्सान

ही है।

काली ज़बानवाले नारदन कुण्टु की मृत्यु हो गयी। अतिराणिप्पाटं का कुण्टु अज्ञात कारण से मर गया। पन्द्रह वर्ष पहले सूडान के जहाज़ पर उस चुंबकीय इन्सान मि० सेल से मिला था वह। मि० सेल क्या अब भी जिन्दा है या खुद शोक से मर गया है?

वेलु मूप्पर ने कुछ विचार कर चुप्पी साध ली। वेलु मूप्पर के ओठों पर एक नटखट मुस्कान थिरक रही थी। स्कूल में पढ़नेवाली लड़की को पत्र लिखकर इलाके में दुर्गन्ध फैलानेवाला छोकरा ही इधर बैठा है। बूढ़े की हँसी का कारण वही होगा।

एक दूसरी बात का विचार आते ही श्रीधरन के ओठों पर भी मुस्कराहट छा गयी।

मन में कहा: वेलू मूप्पर, उस शरारती चिट्ठी से भी रोचक एक करतूत श्रीधरन कुट्टि ने की थी लेकिन वह आपको मालूम नहीं है। आप उसे कभी नहीं जान सकते। यौवन की शुरुआत में इस अतिराणिप्पाटं में श्रीधरन ने एक लड़की को चूम लिया था। जानु नाम की उस लड़की को भी आप जानते हैं।

आपने कहा कि ताड़ी लेने के लिए जिन दक्षिणात्यों ने अतिराणिप्पाटं में डेरा डाल दिया था, उनमें अधिकांश लोग मद्य-निषेध का कानून जारी रखने के कारण अपने पुश्तैनी पेशों के बगैर अपने ही इलाकों में चले गये। कुछ लोग इधर ही रहते आये। लेकिन फिर वे भी इधर-उधर चले गये (उनमें जानु भी थी।)

वह अब कहाँ होगी?

मैं क्या जानूं?

बचपन में सबसे पहले ध्यान से देखनेवाला सूर्योदय और यौवन की शुरुआत में पहले-पहल चुम्बन ली जानेवाली लड़की का चेहरा जिन्दगी में कभी नहीं भूलेगा।

उन पवित्र तस्वीरों में धब्बा लगानेवाले विचारों को मैं क्यों निमन्त्रण दे रहा हूँ?

वह दूसरे की बीवी हो गयी होगी।

वह माँ हो गयी होगी···नानी हो गयी होगी—

संभव है कि प्रेमजाल में फँसकर किसी मर्द के पीछे लुक-छिपकर भाग गयी होगी। हो सकता है, प्रेम नैराश्य से आत्महत्या कर ली हो।

वह विधवा हो गयी होगी···अथवा बूढ़ी कुमारी की तरह जीवन-यापन कर रही होगी···

हो सकता है, मरकर मिट्टी में समा गयी होगी···

नारी की ज़िन्दगी फूलों की बेल है। वह बेल पलकर, थककर कई पौधों में

फैलकर लहलहाते हुए फूलती-फलती आखिरी पत्तों के झड़ने पर कहाँ गिरकर मिट्टी में समा जाती है, यह कौन कह सकता है ?

अगर वह जिन्दा होती तो !

मुह की पहली पंक्ति के एक-दो दाँत तबाह होकर गाल चिपटकर, सिर के बाल पककर, ज़रा झुककर खड़ी होती।

उसको क्या देखना ?

शहद में डुबाया हुआ मिर्च-सा ओठ, सुन्दर दाँत, प्रणय की गुदगुदी से तड़पकर नाचनेवाली चूड़ियों से भरे हाथ—उसी तरह हृदय में क्रीड़ा करते रहें।

(आम्रवृक्ष की कोपलों-सी देहवाली—सोलह वर्ष की दुलारी जानु, तुमको एक फ्लाइंग किस !)

## मर्मर : छः

अतिराणिप्पाटं का निवासी न होने पर भी इस इलाके के लोगों के मनपसन्द व्यक्ति किट्टन मुंशी की मृत्यु हुए इक्कीस बरस बीत गये हैं। वेलु मूप्पर से इस बात का पता चला।

पैंतालीस वर्ष की उम्र तक कोई पेशा किये वगैर किट्टन मुंशी ने रेशमी कमीज़, सुँघनी की डिबिया, हल्के से विनोद और मसखरी के साथ अविवाहित रहकर मान्य महाजनों की छाया में दिन बिताये। फिर एकाएक मुंशी में कुछ परिवर्तन हुए। वह एक मुहब्बत में फँस गया। नायिका दो छोटे बच्चों की एक विधवा माँ और हिन्दी की अध्यापिका थी। रेडिमेड सन्तानोंवाली उस हिन्दी अध्यापिका से उसने शादी कर ली। (शादी करनी पड़ी।) हिन्दी अध्यापिका अपने पति में कुछ बाह्य परिवर्तन लायी। किट्टन मुंशी ने रेशमी कपड़ा छोड़ दिया। वह खादी पहिनने लगा—खादी का कुरता, खादी की धोती, और एक गेरुए रंग का खादी का शाल भी।

हिन्दी अध्यापिका ने तीन साल के अन्दर चार लड़कियों को जन्म दिया। (एक प्रसव में दो सन्तानें थीं।)

दूसरे विश्वयुद्ध के समय किट्टन मुंशी को बड़ा मुनाफा हुआ। वह उस समय मिलिटरी टिम्बर सप्लाई का ठेकेदार था। लम्बे-मोटे किसी भी पेड़ के लिए अच्छी माँग थी। सागवान, शीशम आदि अच्छी लकड़ी के लिए सोने का मूल्य मिलता था। उस दौरान किट्टन मुंशी को 'पप्पया ठेकेदार' यह एक नया नाम हासिल हुआ। कहते हैं, उसने मिलिटरी को सप्लाई की गयी लकड़ी के दोनों हिस्सों में शीशम के टुकड़ों को बड़ी सावधानी से चिपकाकर एक मोटे पप्पया पेड़ को शीशम के रूप में बेचकर उसका मूल्य हासिल किया था।

टिम्बर सप्लाई के अलावा वह ताड़ के फलों के बीजों को भी संचित किया

करता। अहातों और जंगलों में नीचे गिरकर सड़नेवाले ताड़ के फलों के बीजों को लड़के इकट्ठा करके एक बोरे में भरकर ठेकेदार मालिक के टिम्बर डिपो में ले जाते। वह एक बीज का एक पैसा दे देता भले ही वह सियार के पाखाने का बीज क्यों न हो। किट्टन मुंशी ताड़ के बीजों को पेटी में भरकर मिलिटरी डिपो को निर्यात करता।

(ताड़ का बीज मिलिटरी पोशाकों में बटन के लगाने लिए काम आता था।)

इन व्यापारों के अलावा कुछ-न-कुछ समाज सेवा भी वह किया करता।

'मिस्र विवाह प्रचार सभा' के खजांची के तौर पर किट्टन मुंशी को चुना गया।

इस प्रकार पैंतालीस बरस तक की निष्क्रिय ओर निष्प्रभ ज़िन्दगी चार-पांच सालों में एकदम बदल गयी।

एक दिन किट्टन मुंशी ने अपने परम मित्रों को प्रीति-भोज के लिए घर पर निमन्त्रण दिया।

दूसरों का खाना और चाय कबूल कर चलनेवाले मुंशी ने अब तक किसी को भी एक चाय तक नहीं पिलायी थी। ऐसे मुंशी ने जब दावत का इन्तज़ाम किया तो मित्रों को भी ताज्जुब हुआ। कुछ लोगों का अनुमान था कि शायद मिलिटरी ठेकों से अच्छी रक़म हासिल हुई होगी। किट्टन मुंशी को भली भाँति जानने वाले मित्रों को शक था कि घर में न्योता देकर नारंगी का एक गिलास पानी पिलाकर वह सबको वापस कर देगा।

पर, मित्रों के शक और भय निराधार निकले। एक अच्छी दावत की ही व्यवस्था की गयी थी। 'ओलेन' 'कालन', 'अवील', 'एरिशेरि' 'पुलिशेरि', पूवन केला, बड़ा-पापड़, दूध-खीर और जाने क्या-क्या···

मेहमानों ने किट्टन मुंशी को मन-ही-मन हार्दिक बधाई देते हुए खूब छका।

दावत के बाद अतिथि जब विश्राम करने बैठे तो एक गोल्ड फ्लेक सिगरेट पीते हुए रामुण्णि मास्टर ने पूछा, "किट्टन मुंशी, दावत तो बहुत अच्छी थी। शुक्रिया और बधाई। पर, एक सन्देह बाकी है। क्या हमें इतना बढ़िया भोजन देने के पीछे कोई खास वजह तो नहीं है?..."

"मास्टर, इसका एक खास कारण है!" किट्टन मुंशी ने डिबिया से चुटकी भर सुँघनी लेकर उसे नाक में सुटकने के बाद मेहमानों को सुनाने के लिए ज़रा मज़ाक-भरे लहजे में फर्माया :

"मेरी बूढ़ी माँ बीमारी से शय्याग्रस्त है। मैंने कोरुप्पणिक्कर के पास जाकर उपचार कराया। 'हालत अच्छी नहीं है, कुछ अधिक ध्यान देना चाहिए।' पाणिक्कर का कहना था। एक उपाय भी बताया, 'भूखे गरीबों को अन्नदान'। अब वही हुआ—माँ की बीमारी दूर होने के लिए अब आपलोगों को मिलकर प्रार्थना करनी

चाहिए…"

एक दिन मिलिटरी ठेकेदार मिस्टर पी० पी० कृष्णन की मद्रास के एक होटल के कमरे में सोते वक्त मृत्यु हो गयी। हृदयगति रुक जाने से ही मृत्यु हुई थी। एक नये ठेके के लिए टेन्डर देने के लिए किट्टन मुंशी पिछले दिन मद्रास गया था।

इस तरह अपूर्व सिद्धि रखनेवाला एक रसिक काल की यवनिका में अप्रत्यक्ष हो गया…"

भीतर से एक शिशु की रुलाई सुनाई पड़ी।

श्रीधरन स्मरण कर रहा था माणिक्य के प्रथम प्रसव की सूचना : ज़मीन पर नारियल के मोटे डण्ठल को पटककर चिल्लाते हुए पुकारने की-सी आवाज़—चौंतीस साल के उस पार से आ रही है। अब तो उस सन्तान के शिशु की रुलाई कानों में गूँजती है।

ज़माने की तुरही की पुकार…

उसी समय श्रीधरन ने एक विचित्र वेशधारी को फाटक से आते हुए देखा। आँगन में पहुँच गया था वह। ललाट पर भस्म की तीन लकीरें और उनके बीच चन्दन का बड़ा तिलक (तिलक में सिन्दूर का टीका भी) लगाये, दाहिने हाथ में सुब्रह्मण्य स्वामी की छोटी तस्वीरवाला भस्म का थाल, बगल में कपड़े की एक थैली और मयूरपंखों की छड़ी काँख में दबाये, गेरुआ कपड़े पहने एक युवक था। उसने सुब्रह्मण्य का थाल बरामदे के छोर पर रख दिया। मयूरपंखों की छड़ी भी उसके नज़दीक लिटा दी, फिर थैली से एक पंख लेकर फूंकने लगा :

'फभूहूह…फभूहूह…फभूहूह…' दिशाओं को गुँजाते हुए तीन ध्वनियाँ।

वेलु मूप्पर कुर्सी से झटपट उठा और शंखनाद की ओर चेहरे को मोड़ते हुए श्रद्धा-भाव से अंजलिबद्ध होकर खड़ा हो गया। फिर अन्दर की ओर मुँह कर ज़ोर से कहा, "बेटी, स्वामी को कुछ दे दो…"

श्रीधरन ने स्वामी की ओर ध्यान से देखा। सफेद मोटा युवक। वह स्वयं अपनी आँखें घुमा रहा था—नशे में डूबी हुई-सी आँखें।

वह इस तरह से आँख की पुतली क्यों हिला रहा है ?

माणिक्य बाहर आयी। उसके सिर में थोड़े से ही बाल रह गये थे। पाँच पैसे का सिक्का सुब्रह्मण्य स्वामी के थाल में डाल दिया। फिर उसने अपनी हथेली को फैलाया। स्वामी ने थाल से कुछ भस्म उसकी हथेली पर रख दी। माणिक्य ने भक्ति के साथ भस्म ललाट में लगायी। फिर वह रसोईघर में चली गयी।

स्वामी आँखों की पुतलियों को घुमाते हुए मयूरपंखों को काँख में दबाकर थाल उठाकर कुछ कहे बगैर मुड़कर चला गया।

"वह रामन छोकरा चला गया ?" वेलु मूप्पर ने धीमी आवाज़ में बताया।

"कौन रामन ?" (श्रीधरन ने आश्चर्य से देखा।)

"सुब्रह्मण्य स्वामी की तस्वीर लेकर चलनेवाला वह छोकरा !" वेलु मूप्पर ने स्पष्टीकरण दिया।

"हाँ गया।" मयूरपंख को ओझल होते देखकर श्रीधरन ने कहा।

वेलु मूप्पर का 'स्वामी' कैसे झट 'रामन छोकरा' में बदल गया, यह समझ में नहीं आया।

"जानते हो वह कौन है ?" वेलु मूप्पर ने चेहरे को टेढ़ा करते हुए पूछा।

"समझा नहीं। क्या अतिराणिप्पाटं वाला है ?"

"हाँ, अतिराणिप्पाटं में ही उसका जन्म हुआ था। अब वह दूर कहीं रहता है। महीने में एक बार सुब्रह्मण्य स्वामी को लेकर इधर आता है।"

"किसका बेटा है वह ?" अतिराणिप्पाटं के कुछ पुराने व्यक्तियों का स्मरण कर श्रीधरन ने अन्वेषण किया।

"वह जारज सन्तान है ?"

श्रीधरन को कुछ नहीं मालूम हुआ।

"श्रीधरन बेटे, तुम्हें उस शराबी पेण्टर रामन और उसकी बेटी चिरुता की याद नहीं है क्या ?···

(चिरुता ! पतिव्रता का बहाना कर घूमती-फिरती सुअर-जैसे चेहरेवाली चिरुता !···)

"उस चिरुता का बेटा है। जारज सन्तान है। वह हरिजन सफेद अय्यप्पन का बीज है। यह बात इस इलाकेवालों को अच्छी तरह मालूम है। पर, क्या वह बाहर किसी से कह सकता है ? आखिर चस्तु का नाम बताया गया। चिरुता का प्रसव और उससे सम्बन्धित रस्में की गयीं। वह बालक को लिये मारी-मारी फिरने लगी थी। अभी पाँच-छह साल पहले ही उसकी मृत्यु हो गयी थी। अब अकेला रामन सुब्रह्मण्य स्वामी की तस्वीर लेकर शंख फूँककर भीख माँग रहा है···"

श्रीधरन ने सोचा : थोड़ी देर पहले फाटक उतरकर जाता गेरुआ कपड़े पहने वह युवक हरिजन सफेद अय्यप्पन का प्रतिरूप ही है !

पहले सफेद अय्यप्पन कोयलों की राख का ठेकेदार था। अब उसका बेटा प्लनि आण्डवन (सुब्रह्मण्य स्वामी) के एजेन्ट का वेश धारण कर अतिराणिप्पाटं में घूम रहा है !···

"क्या वह गूँगा है ? क्यों वह बिलकुल मूक रहा आया ?" श्रीधरन ने संदेह प्रकट किया।

"वह गूँगा तो नहीं है···" वेलु मूप्पर ने सिर हिलाया। "वह मौन व्रतधारी है—झूठा पुजारी है। जो पैसा मिलता उससे गाँजा खरीदकर पीता है। हमेशा गाँजा पीकर आँखें तरेरकर चलता···"

"ऐसी हालत में उस गाँजा पीने वाले झूठे पुजारी को आपने पैसे क्यों दिये

थे ?" श्रीधरन ने पूछा।

"वह दूसरी बात है।" वेलु मूप्पर ने भक्ति-स्फुरित गौरव स्वर में बताया, "उसके साथ पलनि सुब्रह्मण्य स्वामी हैं न। क्या स्वामी को यों गाली बककर भगाया जा सकता है ?"

वेलु मूप्पर के दर्शन एवं आस्था पर विचार कर श्रीधरन अपने आप हँस पड़ा।

"भोजन तैयार है।" माणिक्य ने दरवाज़े में आकर सूचना दी।

अच्छा !

बरामदे में वेलु मूप्पर के नज़दीक घास की चटाई पर श्रीधरन भोजन करने बैठ गया।

अहाते के केले के पौधे से काटकर लाये हुए मुलायम पत्ते में द्रोणपुष्पी के फूल-सा भात परोस दिया गया।

भोजन के लिए आशा से अधिक सब्जियाँ आने लगीं। श्रीधरन को जरा अचरज हुआ।

वटक्कन पाट्टु में कहे अनुसार माणिक्य

"सब्जियाँ सोने-सी चार परोस गयी

बारिश के पानी-सा घी भी डाल गयी।"

(बोतल का शुद्ध घी, लगता है वेलु मूप्पर के रोज़ का आहार ही है।)

दाल का एक व्यंजन, कटहल के बीज और मुनगे की एक सब्जी, कंदमूल की गाढ़ी सब्जी, अलावा इसके भुनी मछली, पापड़ मट्ठा आदि ढेर सारी खाद्य सामग्री।

चटाई पर पालथी मारकर भोजन करते समय श्रीधरन को दिल्ली में प्रायः हर रोज होने वाले प्रीति-भोज का स्मरण हो आया। विदेशी 'दूतावासों' की दावतें। मंत्रियों, उद्योगपतियों, सरकारी ठेकेदारों, अमीरों के महलों की दावतें। दरअसल ये प्रीति-भोज भूख मिटाने के लिए नहीं, मेजबान के बड़प्पन को प्रदर्शित करने प्रबन्ध मात्र हैं। बड़े होटलों के डिनरों में विशिष्ट खाद्यों से मनोरंजन का कार्यक्रम ही चलता। बेचारे मेहमान को 'एटिक्वेट' के आदर्श में दबना पड़ता। वह जी भरकर नहीं चबा सकता। छककर खाने से संतृप्ति की जय-जयकार रूपी डकार नहीं निकाल सकता, क्योंकि यह सभ्यता के विपरीत है। ऊँची आवाज में बातचीत भी नहीं कर सकते। पेट के ऊपर नैपकिन का कवच बाँधकर, काँटा-छुरी, चम्मच आदि हथियारों को उठाकर प्लेट की चीजों का एक-एक कर वध करना पड़ता है।

इधर वेलु मूप्पर के बरामदे में बैठकर मोहल्ले की सब्जियों और भात को मिलाकर खाते समय विशिष्ट भोज्यों में निर्वाण प्राप्त करनेवाली भूख को श्रीधरन महसूस करने लगा।

वेलु मूप्पर के खाने का ढंग उत्सुकता से देखा। पत्तों में परोसी सब्जियों को माणिक्य पहले बताती, तब बुजुर्ग एक-एक चीज़ को टटोलते हुए उसे मुँह में डालकर 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' का उच्चारण करने के समान चबाते हुए सिर हिलाकर आँखें घुमाते हुए खूब मज़ा लेकर खाता। नब्बे वर्ष का होने पर भी वेलु मूप्पर का पेट और मुँह सही सलामत थे। अच्छे भोजन के कारण ही वह अपने स्वास्थ्य को बनाये रखता।

भोजन कर चुका। नीचे के बरामदे के छोर पर रखे हुए लोटे से हाथ धोये।

श्रीधरन एक सिगरेट पीने के लिए अहाते में चला गया। (वेलु मूप्पर के सामने बैठकर धूम्रपान करने में संकोच हुआ।) सिगरेट पीने के बाद बरामदे में वापस आने पर देखा : वेलु मूप्पर पान की तश्तरी सामने रखकर छोटे से ऊखल में सुपारी डालकर कूट रहा था।

"भोजन बढ़िया था। इतने व्यंजनों की जरूरत न थी।" श्रीधरन ने अपना धन्यवाद संक्षेप में इन शब्दों में प्रकट किया।

"बेटे, तेरे लिए कुछ नहीं बनाया था। ये सब यहाँ हमेशा होते हैं।" वेलु मूप्पर अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बननेवाला न था।

"अक्सर कहा जाता है कि खा-पीकर घराने की तबाही हो गयी—पर उसमें ज़रा भी सच्चाई नहीं है। खाने-पीने से किसी भी घराने की तबाही नहीं हुई है।"

सुपारी को ऊखल में कूटते हुए वेलु मूप्पर ने फिर अपनी बातें जारी रखीं—"लेकिन हम लोगों का खास स्वभाव है। बिना खाये-पिये दिन बिताते हैं। जो कुछ है बच्चों के कल के लिए रख लेते हैं। ये छोटे बच्चे जब बड़े होते हैं तब ये भी अपने बच्चों के लिए पेट काटकर दिन काटते हैं। इस तरह जान-बूझकर कंजूस बनकर दिन बिताते हैं। ये कठिनाइयाँ पीढ़ियों तक चली जातीं—अच्छा खाने-पीने और ओढ़ने की किस्मत उन्हें हर्गिज नहीं मिलती। पट्टर के पान खाने की कहानी की तरह..."

श्रीधरन को ज़रा मज़ा आया : "पट्टर के पान खाने का किस्सा क्या है?"

वेलु मूप्पर ने तश्तरी में टटोला। एक पान उठाकर मुँह की तरफ ले जाकर सूँघकर उसकी शुद्धि की जाँच की। फिर उसके दोनों छोरों को तोड़ा। उसके डंठल को हटाते हुए उसने कहानी सुनायी :

एक पट्टर ने कुछ पान खरीदे। सुबह-सुबह पान खाने के लिए जब पानों का पैकेट खोला तो देखा कि उसमें नीचे का पान थोड़ा सड़ा हुआ था। उस दिन उसे खा डाला। अगले दिन पान खाने बैठे तो निचले का एक और पान ज़रा पका हुआ दिखाई पड़ा। उस दिन उसे खाने का निश्चय किया। हर रोज़ यही हालत रही कि उसको सड़े, सूखे और पके पान ही खाने पड़े। पट्टर को मालूम नहीं था कि गाँठ का आखिरी पान ही पहले खराब होता। इसे पट्टर का नसीब ही समझना।

चाहिए कि एक गाँठ ताजा पान खरीदने पर भी उसे महीने भर सड़े पान ही खाने पड़े···

वह कहानी भी उस दिन की दावत की ही तरह रोचक थी।

## मर्मर : सात

भोजन के लिए मट्ठा भरकर रखी एक चित्रित चीनी तश्तरी पर श्रीधरन का ध्यान आकृष्ट हुआ। ज्ञात हुआ कि वह एक पुराना चीनी फलदान है—एक अद्भुत कलावस्तु। उसकी प्राचीन महिमा और कला-मूल्य जाने बिना वेलु मूप्पर के घरवालों ने उसे रसोईघर की एक तश्तरी बना दिया था।

यह पुराना चाइना आर्टपीस यहाँ कैसे आ पहुँचा ? वेलु मूप्पर से ही पूछूंगा।

"यहाँ भोजन में मट्ठे भरी वह तश्तरी देखने में सुन्दर थी···वह आप को कहाँ से मिली थी ?"

वेलु मूप्पर ने अपनी मृत आँखों को हिलाकर थोड़ी देर सोचा।

"क्या तू उस तश्तरी के बारे में कह रहा है जिसमें फण फैलाये नाग बना हुआ है ?"

"हाँ, उसी बर्तन के बारे में।"

"वह···उसे तो बहुत पहले मेरे स्वर्गीय बेटे दामोदरन ने एक मुस्लिम से एक रुपया देकर खरीदा था। केलंचेरी के भण्डार से कोई उसकी चोरी कर लाया था···।"

अनुमान सही निकला।

शताब्दियों पूर्व चीन के एक अज्ञात कलाकार ने उस कौतुक वस्तु का निर्माण किया था। जहाज़ पर चढ़कर वह केरल में पहुँची थी। फिर वह केलंचेरी के भण्डार में आ पहुँची। लम्बे अर्से तक वहीं रही···अब तो वह तश्तरी वेलु मूप्पर के रसोई घर में मट्ठा भरने के बर्तन का काम दे रही है···उस कलावस्तु के भाग्य में यही लिखा होगा।

"केलंचेरी में पहले कितनी विचित्र चीजें थीं !" वेलु मूप्पर पिछले जमाने की ओर अपने मन की आँखों से देख रहा था : "बेटा, मैंने अपनी आँखों से देखा था—केलंचेरी के पश्चिम के कमरे के सामने लटकती सोने की ककड़ी और धान की बालियाँ···"

वेलु मूप्पर ने अपना वर्णन जारी रखा : "सात समुद्र पारकर यहाँ पहुँचे फानूस और रसमणी छत में लटक रहे थे। भण्डार में सोने की चक्की, मरकत रत्न का पानदान, माणिक्य की सुपारी आदि भी थे। लुक-छिपकर-चोरी में सब कई राहों से गायब हो गये। रसमणी की जगह अब बर्रों का छत्ता है। फानूस की जगह

मकड़ियों का जाल। भण्डार में चूहे और बिच्छू हैं।···और कुंजिक्केलु मेलान मिट्टी के भीतर···"

कुंजिक्केलु मेलान के अन्तिम दिन के बारे में वेलु मूप्पर ने विस्तार से कह सुनाया :

"पीलपा और काना होकर मान्य लोगों से भीख माँगते चलने लगा था वह। फिर आदमी और समय को देखे विना वह सभी लोगों से पैसे माँगता सड़क पर मारा-मारा फिरने लगा। फटे-पुराने मैले चिथड़े पहने छह सालों तक भीख माँग-कर ज़िन्दगी वितायी थी उसने। जीवन के अंतिम दिनों में तो उठकर चलना भी उसको दूभर हो गया था।

केलंचेरी घराना तो अब भी है। सुना था कि उसे कोई बेच नहीं सकता। मेलान का स्वास्थ्य ही बिगड़ गया था। पर, उसकी बुद्धि तीव्र थी। घराने में अपने हक को बेचने में उसको कौन रोक सकता था? अपने हक को खरीदनेवाले की वह खोज में था। शहर के एक अमीर मालिक की आँखें केलंचेरी अहाते पर लगी थीं। उसके हक को लिखित रूप में ले लें तो जायदाद को कब्जे में करने के लिए कुंजिमेलान की मृत्यु तक इंतजार करना पड़ेगा। अमीर ने सोचा कि मेलान गड्ढे में पाँव पसारे बैठा है। जोखिम उठाने को वह तैयार हो गया।

उस अमीर को मेलान का स्वभाव अच्छी तरह मालूम था। अपनी संपत्ति को बेच डालने की बात कहकर कई लोगों से मेलान ने पेशगी रकम वसूल की थी। लेकिन उसने किसी को भी लिखित रूप में कुछ नहीं दिया था। इसलिए जब मेलान ने पेशगी के लिए कहा तो उसने एक पैसा भी नहीं दिया। सभी दस्तावेज़ों को तैयार कर आगामी दिन रजिस्ट्री-फीस से दस्तावेज़ों को रजिस्टर कराते समय पूरी रक़म अदा करने का वादा करके उसको वापस भेज दिया गया।

किसी तरह रात काटने के ख्याल से, गर्दन को गीला करने के लिए एक बूँद शराब न मिलने की लाचारी से मेलान रात को केलंचेरी लौट रहा था। फाटक के सामने की पगडण्डी पर पहुँचा। भीतर नहीं गया। एक चीत्कार के साथ मुड़कर दौड़ लगा दी। नज़दीक ही धाय पारु के घर की ओर ही दौड़ गया था वह। बरामदे में चढ़ा, फिर वहाँ गिर पड़ा···और फिर वहीं ढेर हो गया।

यों पहले जहाजों का व्यापार कर मशहूर होनेवाले केलंचेरी घराने के कुंजिक्केलु मेलान ने बीस सालों तक मौहल्ले में भीख माँगकर दर-दर फिरने के बाद आखिर एक पारुधाय की भाड़े की झोंपड़ी के बरामदे में अपनी जीवन-लीला समाप्त कर ली।

केलंचेरी फाटक से केलु बदहवास होकर क्यों भागा था?

"साँप,' 'साँप' पुकारकर ही मेलान पारु की झोंपड़ी की ओर भागा था।

अपने हक को दूसरे एक मजहब के व्यक्ति को बेचकर केलंचेरी घराने में चढ़

आनेवाले मेलान की फाटक में चिनगारियाँ बरसानेवाली आँखों से फण फैलाये पूँछ के बल खड़े एक नाग ने ही अगवानी की थी। घराने की तबाही करने वाले धोखेबाज़ के सामने नाग ने फूत्कार किया था।

केलंचेरी के नाग को मेलान ने पहले-पहल ही देखा था। एक आदमी की ऊँचाई में फण फैलाकर खड़े उसके उग्र फुफकार ने मेलान के प्राणों के पौन भाग को तभी उड़ा दिया था। फिर उसे विचार करने पर जो भय हुआ, उससे उसके बाकी प्राण भी चल दिये ···

कुंजिक्केलु मेलान।

बारह बत्तियों की प्रकाशधारा में बिगुल बजाकर मशाल उठानेवाली फौज़ की तरह मेलान की मोटरकार जब आगे बढ़ती थी तब सड़क से लोग अपने को बचाने अनजाने ही दूर तक हट जाते थे···बरसों के बाद उसी सड़क से फटा-पुराना चीनी रेशम का कुर्ता और मैली-फटी मांचेस्टर धोती पहनकर, पीलपा सरकाते हुए एक आँख को चमकाकर पैसे की याचना करके घूमनेवाले मेलान से बचाने के लिए लोग मुख मोड़कर हट जाते।

"ऑल द वर्ल्ड इज़ ए स्टेज़ एण्ड आल द मैन एण्ड वीमेन मियरली प्लेयर्स।"

सारा जगत् ही है इक रंगमंच इसमें
पुरुष-नारी तो मात्र अभिनेता हैं।

शेक्सपियर महाकवि ने लिखा था। पर, करोड़पति और भिखारी के रूप में उसी जिन्दगी की वेदी पर एक ही इन्सान को यों अभिनय करना पड़ा। शेक्सपियर ने भी इस तरह की बात का अन्दाज़ नहीं लगाया होगा।

"अब एक दूसरी दास्तान"—वेलु मुखिया ने फिर पान खाने की तैयारी में पान को टटोलते हुए कहा :

"सुना है कि केलंचेरी के पुराने फाटक के बरामदे में चिथड़ों को बिछाकर रात को सोने के लिए एक भिखारी आ गया है। जानते हो वह कौन है ? केलंचेरी केलु मेलान का बहनोई कुट्टप्पन—बैंक मालिक रामन का इकलौता बेटा—कुंजिक्केलु बहनोई की परम्परा को बनाये रखने के लिए उस फाटक के बरामदे में रह रहा है···

श्रीधरन ने अतिराणिप्पाट में आते समय मार्ग में शहर की गली में एक इन्सान रूपी गिद्ध को देखा था।

"देखो, गोरी औरत से शादी करनेवाला वह कुट्टप्पन ही जा रहा है।"—किसी ने जब ऐसी बात कही थी तो पुरानी स्मृतियों के साथ उस इन्सान को पुनः झाँककर देखा था। गिद्ध की-सी आँखें, गिद्ध की नाक और गिद्ध के पंजे, सिरवाले एक इन्सान का पुतला वातरोग-ग्रस्त पैरों को ज़मीन पर रखकर काँपते हाथों को हवा में लहराते हुए धीरे-धीरे बढ़ रहा था।

ज़िन्दगी की वेदी पर दोहरा वेश धारण करनेवाला एक और अभिनेता !

एक-एक घटना की याद आ रही है :

बैंकर रामन एक मशहूर घराने का आदमी था। वह नामी व्यवसायी था। वह कानून का पंडित, आदर्शवादी और समाज सुधारक ही नहीं, एक अखबार का मालिक और अँग्रेज़ों का वैतालिक भी था।

मधुमेह और अंधा पुत्र-वात्सल्य—ये रामन की दो बीमारियाँ थीं। रामन ने अपने लड़कों को अधिक दुलार और प्यार किया। उसे पूरा भरोसा था कि उसकी औलाद उससे भी अधिक होनहार है। उसकी इस मनोवृत्ति ने पुत्रों के काले कारनामों को छिपा दिया। बेटों की फिजूलखर्ची और धूर्तता में रामन ने महिमा के दर्शन किये थे।

रामन मितव्ययी था। न तो वह शराब पीता था, न ही बीड़ी-सिगरेट। सदाचार के विरुद्ध कोई काम वह नहीं करता, लेकिन उसके बेटे—खासकर दोनों बड़े पुत्र नशीली चीज़ों का इस्तेमाल करते थे।

रामन अपनी बातों का पक्का हिमायती था। वह तिल को काट कर भी हिसाब बताता। एक दफा एक संभ्रांत व्यक्ति के हिसाब में रामन एक पैसे के लिए अड़ गया तो उस मान्य व्यक्ति ने पूछा, "मिस्टर रामन, आप इस प्रकार एक पैसे के लिए हठ कर रहे हैं। आपका बेटा कुट्टिरामन पैसे पानी की तरह बहा रहा है लेकिन आप इस पर आँखें मूंद लेते हैं। यह कैसी मर्यादा है ?..."

उस संभ्रांत व्यक्ति की बातें रामन को अच्छी नहीं लगीं। ज़रा गौरव के साथ झट उसने करारा जवाब दिया, "कुट्टिरामन का बाप अमीर है, इसलिए वह अपनी मर्ज़ी के अनुसार सब कुछ कर सकता है, जबकि मेरी हालत ऐसी नहीं है.."

रामन के ज्येष्ठ पुत्र कुट्टप्पन का ब्याह सम्पन्न हुआ। वधू केलंचेरी कुंजिक्केलु मेलान की एक मात्र बहिन माधवी थी। बैण्ड-बाजों के साथ ही शादी का वह जुलूस शहर की गलियों से निकला था। रात को संगीत का भी आयोजन हुआ। रंगीन आतिशबाजियाँ भी हुईं।

कुट्टप्पन की शादी हुए तीन महीने बीत गये। वह उच्च शिक्षा हासिल करने विदेश रवाना हुआ। रामन और परिवार के सदस्य, रिश्तेदार और उस इलाके के मुखियों ने मिलकर रेलवे स्टेशन से कुट्टप्पन को विदा किया।

यूरोप में दो वर्ष की पढ़ाई पूरी करने के पहले ही उसने वहाँ एक गोरी महिला से शादी कर ली। उसने अपने बाबूजी को पत्र लिखकर यह सूचना भी दी।

बैंकर रामन ने अपने अखबार में उसे एक प्रमुख समाचार के रूप में प्रकाशित किया। वह गोरी महिला से शादी करनेवाला साहसी था न !

बेटे को एक गोरी रूपसी की भी देखभाल करनी है—इस कारण रामन प्रति मास उसे मोटी रक़म भेजने लगा।

कुट्टप्पन गोरी बीवी के संग भारत वापस लौट आया। भारत में जहाज़ से

उतरने के बाद रेलगाड़ी से वे रेलवे स्टेशन पहुँच गये। वहाँ दंपती की अगवानी के लिए मिस्टर रामन के अलावा कई रिश्तेदार, मुखिया और मित्र हाज़िर थे। फूलों की मालाओं और पुष्प गुच्छों से वे दंपती लद गये।

रामन ने गोरी बहू से हाथ मिलाया, "हाउ डु यू डू ?"

कुछ अर्से बाद गोरी बीवी ने एक लड़के को जन्म दिया। यों बैंकर रामन एक गोरे बच्चे का दादा हो गया। ग्राण्ड पा।

तीन साल बीत गये।

गोरी साहिबा कुट्टप्पन से मनमुटाव होने के कारण बेटे को लेकर इंग्लैंड वापस चली गयी।

कुट्टप्पन को इस पर विशेष चिन्ता नहीं हुई। वह साढ़े सात बरस तक परित्यक्ता अपनी प्रथम पत्नी माधवी को पुनः ले आया और मज़े के साथ दांपत्य जीवन बिताने लगा।

रामन ने कुट्टप्पन को बधाई देकर कहा : "माइ गुड बाय।"

दूसरा बेटा कुट्टिरामन एक यूरोपियन बैंक का खंजाँची बन गया। रामन ने अपनी सारी जायदाद की जमानत पर पुत्र को अंग्रेजों के बैंक में नौकरी दिला दी थी। एक साल बीतने पर कुट्टिरामन ने उसी बैंक में अधिक वेतन वाली एक कमीशन ब्रोकर की नौकरी हासिल की। सोने के आभूषणों को रेहन रखकर बैंक से मोटी रकम कर्ज देने के लिए ग्राहकों को तैयार करने का काम कुट्टिरामन का था। यह एक ऐसी योजना थी जिससे बैंक को बड़ी आमदनी की आशा थी। शहर के कई भागों से सोने के आभूषण बैंक में आने लगे। स्थानीय लोगों के सोने के आभूषणों का रहस्य गोरे बैंक अधिकारियों को मालूम न था। इस दिशा में उनका एकमात्र सलाहकार ब्रोकर कुट्टिरामन था। कुट्टिरामन के प्रभाव होशियारी और कर्तव्य-निष्ठा पर गोरों को पूरा भरोसा था। बड़े ज़मींदारों, मुखियों को बैंक के ग्राहक बनाने में कुट्टिरामन को पूरी सफलता मिली। इस तरह लाखों का लेन-देन हुआ। रेहन की रकम ज्यों-ज्यों बढ़ती त्यों-त्यों कुट्टिरामन का कमीशन भी बढ़ता।

हालाँकि अपनी नाक के नीचे कुट्टिरामन जो धोखाबाजी कर रहा था उसे समझने-बूझने में बैंक-अधिकारी बुरी तरह हार गये। कुट्टिरामन के पीछे एक गूढ़ दल था। लगातार गबन होने की राशि आठ साल में दस लाख रुपये से अधिक हो गयी। कुट्टिरामन और उसके साथियों ने समझा कि बस इतनी ही जरूरत है। वे चोरी की गयी रकम वापस चुका देने में असमर्थ थे। फिर भी किसी न किसी तरह रकम को वापस चुका देने का ख्याल करने लगे। होशियार कुट्टिरामन ने एक कार्यक्रम की शुरुआत की। जर्मनी में जाकर वहाँ के कुछ मित्रों की मदद से भारत के करेन्सी नोटों को बनाने की एक योजना बनायी। छपे हुए जाली नोटों को नये मोटर-टायरों में बंद कर भारत में आयात करने का उसका ख्याल था।

मित्रों ने उसको सलाह दी कि बैंक के दस लाख रुपये के अतिरिक्त दस लाख रुपये और कमाने हैं।

कुट्टिरामन ने विदेश पर्यटन के लिए बैंक से तीन महीने की छुट्टी ले ली।

रेलवे स्टेशन से रामन, रामन के परिवार के सदस्य, रिश्तेदार, मुखिया आदि ने धूमधाम से उसे विदा किया।

अगर दो महीने का अतिरिक्त समय मिलता तो कुट्टिरामन का कार्यक्रम सफल हो गया होता, लेकिन दुर्भाग्य से वह धोखा खा गया।

कुट्टिरामन के विदेश रवाना होने के तुरन्त बाद बैंक में जाँच-पड़ताल हुई। शुद्ध सोने के रूप में सेफ में रखी हुई चीज़ों का भेद खुल गया। अधिकांश नकली थीं। हाथी के झालर के लिए ढाई लाख रुपये नकद दिये गये थे'''।

लंदन में जहाज से उतरने पर कुट्टिरामन की अगवानी के लिए पुलिस तैनात थी।

कुट्टिरामन को गिरफ़्तार कर भारत लाया गया। उसके हाथों में लोहे की हथकड़ियाँ पहना दी गयीं—यूनिफार्म पहने अपने साथियों के साथ। जब 'लन्दन कुट्टिरामन' स्टेशन पर उतरा तब उसकी अगवानी करने के लिए स्टेशन पर एक कुत्ता भी नहीं था।

उस दिन कुट्टिरामन टाउन पुलिस-स्टेशन के लॉकअप रूम में ही सोया था। कुट्टिरामन पर मुकदमा दायर किया गया। धोखा-धड़ी, पैसे की चोरी, आदि कई चार्ज हुए। बैंक से चोरी की गयी रकम कुल पन्द्रह लाख रुपये थी।

मुकदमा शुरू होते ही बैंकर रामन का स्वास्थ्य बिगड़ गया। बेचारा बिस्तर से भी नहीं उठ सकता था।

(शासन करनेवाले गोरों की एक संस्था से वहाँ एक नौकर होकर, पन्द्रह लाख रुपये हड़प लेनेवाला भारतीय और कौन होगा? नहीं मालूम कि रामन ने अपने पुत्र की अक्लमंदी पर गर्व महसूस किया था या नहीं।)

आखिर मुकदमे का फैसला सुना दिया गया। कुट्टिरामन को ढाई वर्ष की सख्त कारावास की सजा मिली। तूफान में कागज़ की झोंपड़ी की तरह रामन के बैंक की तबाही हो गयी। कुट्टिरामन ने नौकरी के लिए जिन जायदादों को जमानत पर रखा था उनको जब्त कर नीलाम में बेच दिया गया। सौभाग्य से यह सब देखे बगैर 'कुट्टिरामन के अमीर पिता' के रूप में उस मान्य बुजुर्ग ने हमेशा के लिए अपनी आँखें मूँद ली थीं।

पिताजी के पैसे खर्च कर सूट-टाई पहनकर लंच और डिनर के साथ यूरोपियन ढंग से जीवन-यापन करनेवाले कुट्टप्पन को बड़ी झंझटें उठानी पड़ीं।

कुट्टप्पन ने माधवी को पुनः छोड़ दिया। (अफवाह थी कि माधवी कुट्टप्पन को छोड़कर चली गयी थी) वह गाँव के घराने के मकान में अकेला रहने लगा।

ह्विस्की और ब्रांडी पीने के लिए पैसे नहीं। मोहल्ले की शरण ली। धोती पहनी। कोई आमदनी न थी तो अहाते के पेड़ों को काटकर बेचने लगा। पेड़ न रहे तो घर के लकड़ी के सामानों पर हाथ रखा। भण्डारा बेच डाला। अलमारी भी बेच दी। पेटियाँ, कुर्सियाँ और पलंग भी बेच डाले। कुछ दिनों के लिए ताड़ी पीकर दिन काटे। फिर उसे लगा कि घर के लिए दरवाजों की जरूरत ही क्या है? घर में तो कुछ है ही नहीं। दरवाज़ों को अलग कर दिया गया। आखिर उन्हें भी बेच दिया। उसके बाद छत पर लेटने का विचार हुआ। पर, छत पर इतने अधिक शहतीरों की क्या जरूरत है? खपरैल हटाकर शहतीरों को अलग कर दिया गया और उन्हें भी बेच डाला गया। दस दिन चैन से बिताये। आखिर सभी चीजों के हट जाने पर दीवार ही बाकी रहीं। उस मकान में जमीन पर लेटने लगा। पैरों में वातरोग का आक्रमण हुआ···बारिश के दिनों में उसे वहाँ से भागकर कहीं और आश्रय लेना पड़ा···

कुट्टप्पन शहर में पहुँच गया। उसने नया धंधा शुरू किया। उसके लिए प्रशिक्षण की ज़रूरत थी। वह पेशा भीख माँगने के सिवा और कुछ नहीं था।

गंजे सिर को उठाकर आँखें खोलकर, किसी को पकड़ने की मुद्रा में हाथों को हिलाकर, वातरोग की शिकार टाँगों को फैलाकर, गलियों में घूमते समय यह गिद्ध दृष्टि पुराने परिचित लोगों को पहचानेगी···मिस्टर गोपी!···मिस्टर जॉर्ज!···मिस्टर कुंजिक्कण्णन!···

पैसा माँगने के लिए बुला रहा है।

कुट्टप्पन को, काँपते हाथ हवा में लेते हुए दाता के नज़दीक पहुँचने में थोड़ी देर लगती। इतने में मिस्टर गोपी, मिस्टर जॉर्ज और मिस्टर कुंजिक्कण्णन भी वहाँ से नदारद हो गये होते।

जिस सड़क से दुल्हिन माधवी को साथ लेकर बैण्ड-बाजों के साथ जुलूस निकाला गया था और मोटरकारों के पीछे गोरी बीवी के साथ श्रीविलास बंगले में जिस सड़क से गया था उसी सड़क की गलियों में गर्दन फैलाकर काँपते हाथों से, वातरोग से ग्रस्त टाँगों को हौले-हौले घसीटते हुए कुट्टप्पन भीख के लिए हाथ पसार रहा था···

"कुट्टप्पन यहाँ माँगकर दर-दर कीठोकरें खा रहा था और उसकी गोरी बीवी अपने मुल्क के एक गोरे से लवमेरिज कर आनन्द ले रही थी।"

वेलु मूप्पर की बातें कुट्टप्पन की भीख माँगनेवाली गलियों से श्रीधरन को इंग्लैण्ड उड़ा ले गयी। यूरोप का स्मरण हो आया। स्विटज़रलैंण्ड—इण्टरलेकन शहर के 'एलमर होटल' की याद ताज़ा हो आयी।···शादी है या नित्य-वियोग? अपनी ज़िन्दगी का वह निर्णायक पल···एम्मा याद आ गयी···

## मर्मर : आठ

भूरे रंग का कोट, लाल नाइट कोट और टाई पहनकर एक भारतीय अटैची हाथ में लटकाकर श्रीधरन इण्टरलेकन के 'एलमर होटल' के रिसेप्शन रूम में घुस गया।

स्वागत कक्ष में ऊँची कुर्सी पर बैठी चश्मा पहने एक मोटी बुढ़िया ने विदेशी मेहमान को उत्सुकता से देखा।

"आई वान्ट एकॉमोडेशन प्लीज़" श्रीधरन ने कहा।

"येस मोस्यू···" चश्मेवाली ने उत्सुकता से निहारने के बाद हॉल के छोर पर तलाश कर एक लड़की को इशारे से बुलाया।

"साउथ अमेरिकन···? चश्मेवाली ने मुस्कराते हुए पूछा।

"नो-नो", श्रीधरन ने इंकार किया और कहा, "इण्डियन"।

(वह अमेरिकन को छोड़ती नहीं। अमेरिकन इण्डियन आर रेड इण्डियन—यही पूछती रही।)

"नो मेडम, रियल इण्डियन—हिन्दू।"

हिन्दू सुनने पर उस औरत ने अपना सिर इस अर्थ में हिलाया मानो उसे सब कुछ मालूम हो गया हो : "योर पासपोर्ट प्लीज़।"

इतने में सेविका नज़दीक आ पहुँची। चश्मेवाली ने उससे जर्मन भाषा में कुछ कहा।

सेविका ने श्रीधरन के हाथ से अटैची ले ली।

श्रीधरन ने कोट के अन्दर की जेब से अपना पासपोर्ट बाहर निकाला।

घने सुनहरे केश, आँवले की-सी आँखोंवाली सेविका वहीं खड़ी थी।

भारतीय रिपब्लिक के नये पासपोर्ट के काले बाहरी पृष्ठ पर सुनहली स्याही में मुद्रित अशोक स्तंभ को वह लड़की आँखें फाड़कर देखने लगी।

चश्मेवाली ने पासपोर्ट लिया। उसने इस तथ्य की जाँच की कि आगन्तुक के स्विस विसा और उसमें अंकित ठहरने की अवधि तो ठीक है। फिर उसी तरह एक मोटी किताब सामने रख दी। होटल रजिस्टर था वह।

मेहमान के विदेशी नागरिक होने के नाते उसमें अधिक खानापूर्ति करनी थी।

सेविका लड़की की निगाहें श्रीधरन के चेहरे पर ही अटकी थीं। हाव-भाव से उसके दिल के उद्भ्रांत विचारों की झलक मिलती थी।

क्या इस काले इन्सान को देखकर वह डर गयी थी ?

रजिस्टर की खानापूर्ति करने के बीच श्रीधरन ने उसकी तरफ निगाहें घुमायीं। लगा कि भभकनेवाला वह चेहरा उसने पहले भी कहीं देखा था···नहीं, यह

हो ही नहीं सकता। उत्तरी स्विटज़रलैण्ड की इस लड़की से पहले कभी कहीं भी मिलने की सम्भावना नहीं बनती…कुछ देर बाद ध्यान आया—फिल्म में इस चेहरे को देखा है…अभिनेत्री ग्रेहागारबा…

क्या यह खूबसूरत लड़की ग्रेहागारबा की बहिन होगी ?

रजिस्टर की खानापूर्ति की।

लड़की एक प्रतिमा की तरह खड़ी थी।

चश्मेवाली ने जर्मन भाषा में उससे ज़ोर से कुछ कहा। शायद खरीखोटी सुनायी होगी।

किसी ख्वाब से चौंक उठने की तरह उस लड़की ने मेहमान की ओर निहारकर मीठी बोली में कहा : "प्लीज़ कम विद मी…"

वह अटैची को लटकाकर ज़रा हटकर खड़ी हो गयी। फिर उसने मेहमान से आगे चलने का इशारा किया।

दोनों चल दिये।

उसने ऊपर की सीढ़ियों की ओर संकेत किया।

कालीन बिछी हुई सीढ़ियाँ चढ़ी।

पहली मंजिल का आठवाँ कमरा ही अतिथि के लिए दिया गया था।

उसने दरवाज़ा खोला। फिर अटैची को स्टेण्ड के ऊपर रख दिया। फिर कुछ कहे और किये बगैर वह सकपकाकर खड़ी रही।

उस सेविका का व्यवहार श्रीधरन को अच्छा न लगा। उसके चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कान भी नहीं थी। यूरोपियन होटल की सेविकाएँ मेहमानों से हमेशा हँसकर आदरभाव से ही आचरण करती हैं। उसे तो इज्जत की कमी नहीं थी। लगता है, वह कुछ सीनियर है—लेकिन खुशमिजाज नहीं है !

"यू इण्डियन ?" आँवले की-सी आँखें फैलाकर ज़रा डरती हुई-सी उसने पूछा।

(कम से कम उसको कुछ कहने का साहस तो हुआ।)

"मिस, आइ एम इण्डियन", श्रीधरन ने ज़रा गौरव से कहा।

"कमिंग फ्रॉम इण्डिया ?" वह फिर गौर से देखने लगी। खुले हुए चेहरे से—काले मुलायम बालों से…काली पुतलियाँ चमकती आँखों से—छोटी नाक और सफेद दाँतों से—इण्डियन !

फिर एक सपने से जागनेवाली की तरह उसने कहा, "ओह, आइ-म दि चेंबर मेड।" (मैं कमरे की सेविका हूँ।)

"वेरि गुड—व्हाट शैल आइ कॉल यू चेंबर मेड ?"

"माइ नेम इज़ एम्मा।"

"वेरि गुड !"

"डिनर इज़ येट एट डाउन इन दि डाइनिंग हॉल—"

सोच-विचारकर बीच-बीच में रुककर ही वह बातचीत करती।

"वेरि गुड !"

वह अदब से सिर झुकाकर कमरे से बाहर चली गयी।

कभी नहीं मुस्कानेवाली सेविका पोशाकें बदलकर विश्राम लेने के लिए दरवाज़े के नज़दीक रखी हुई सिंहासननुमा कुशलकुर्सी पर बैठ गयी।

काँच के दरवाज़ों से हिमगिरियों का उत्तुंग शिखर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। आल्प्स पर्वत। दूर पर बांगर नालप, लाटर ब्रन्नन पहाड़ और ओयगर, मोछ आदि पहाड़ों की चोटियाँ भी चमक रही थीं। उनके बीच में कहीं है जंगफ्रा—सोलह हजार फुट ऊँचा हिममुकुट, जिसे देखने श्रीधरन आया है।

वातावरण के पल-पल परिवर्तित भावों के अनुसार ये हिमश्रेणियाँ भी कभी नज़दीक तो कभी दूर दिखाई देती हैं। कोहरा और बादलों के हिमस्तम्भों से टकराकर गिरते समय उनमें से उठनेवाले सफेद धुएँ की तरह का धूलि-समूह वातावरण से दूर रहनेवाले हिमगिरि समूह में कई तरह के चित्रों को प्रदर्शित करता।··· समुद्र में खड़े जहाज, अपूर्ण महलों, घर बनाने के लिए आसमान के आँगन में इकट्ठा किये चूने के ढेर भी वहाँ दिखाई दिये। साँझ के सूर्य की लाल किरणें किसी पहाड़ के ऊपर नज़र आनेवाले बादल की पर्तों में चमक-दमक करतीं। लगता कि बर्फ़ से ढकी चोटियों पर आग लगी है। पहाड़ के गाल पर एक बड़े हिम का पत्थर झिलमिलाता दिखाई दे रहा था···

आज दिन अधिक सुहावना है। हे प्रभु, कल भी इसी तरह का एक दिन मिल जाय। क्योंकि बारिश और बादलों से ढका हुआ दिन रहा तो जंगफ्रा की यात्रा निराशाजनक होगी। हिमगिरि-गाड़ी में बैठकर दोनों ओर के हिम से ढके खेतों की खूबसूरती और हिम पिरामिडों के गांभीर्य और अधोलोक के माया-विलासों का भी आस्वादन करने का अवसर नहीं मिलेगा···कोहरा, बारिश, और हिम-रेणुओं की पीली यवनिका से प्रपंच को ढक देने का दृश्य देखकर ही हताश होकर लौटना पड़ेगा। पैंसठ फ्रांक और एक दिन यों बेकार हो जाएँगे।

फिर वह हिमगिरयों की ओर देखने लगा। थोड़ी देर पहले हिमगिरि के ऊपर जो भभकनेवाली कल्पित आग देखी थी, वह अब एकदम बुझ गयी। वह हिम की चट्टान एक आँसू की तरह वहाँ दिखाई दी। वह क्या पीछे की ओर खिसक रहा है ? शायद हिम-स्तंभ से टूटकर गिरनेवाली एक मोटी पर्त होगी···

आठ बजे भोजन की बात की याद आयी। कपड़े बदलकर नीचे के डाइनिंग सैलून की तरफ चला।

एलमर होटल में उस दिन मेहमान कम होने के नाते या देर से भोजन करने की वजह से भोजनालय में तब चार-पाँच आदमी ही थे।

एक खाली मेज के पीछे जाकर वह बैठ गया।

बेयरर ने भोजन परोसने के प्रारंभ के तौर पर मेज़ पर जर्मन भाषा में छपा हुआ एक बड़ा मीनुकार्ड रख दिया।

तब सुन्दर पोशाक में सजी-धजी एक सुन्दरी श्रीधरन की मेज़ के विपरीत दिशा में बैठ गयी।

आग की ज्वाला-सी चोटी और आँवले-सी आँखवाली—एम्मा !

वह अपनी ड्यूटी पूरी कर सेविका का यूनिफार्म बदलकर सभ्य पोशाक में आयी थी।

"मे आई हेल्प यू ?"

जर्मन भाषा के मीनु की ओर विस्फारित आँखों से देख रहे भारतीय मेहमान के हाथ से उसने मीनु कार्ड लेकर विनम्र भाव से कहा, "थैंक यू"

वह कार्ड में देखे बगैर बेयरर से कुछ बोली।

बेयरर वापस चला गया। "क्या एम्मा आप भी डिनर के लिए आयी हैं ?" श्रीधरन ने अंग्रेजी में पूछा।

"नहीं, मैं यहाँ मेहमानों के साथ बैठकर नहीं खा सकती ! मैं आपका भोजन करना देखने आयी हूँ।" वह मुस्करायी। उसके चेहरे पर पहली बार मुस्कान थिरकते हुए देखी।(उसकी दंत पंक्तियाँ सुन्दर होने पर भी उसका रंग आकर्षक नहीं लगा। भुने हुए चिल्लिम का हल्का-पीला रंग।)

बेयरर एक बड़ी ट्रे में भोजन लेकर आया।

देखने पर श्रीधरन को अचरज हुआ। एक थाली में चपाती भी थी।

"क्या यहाँ चपाती मिलती है ?" श्रीधरन ने पूछा।

"यह भारतीय पकवान मैंने बनाया था।" उसने आत्मीयता से कहा।

"वेरि गुड।"

श्रीधरन ने अपने मन में कहा, "अरी जर्मन लड़की, भारतीय भोजन नाम का कुछ है ही नहीं ! पंजाबी सिर्फ रोटी ही खाते हैं। बंगाली और केरलीय भात खाते हैं। मध्य भारतीय रोटी और भात खाते हैं। भारतीय पकवान भी भिन्न भिन्न हैं। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के लोगों के आहार की चीजों को समझने के लिए तुझे दो साल के प्रशिक्षण की ज़रूरत होगी !"

भारतीयों की चपाती के अलावा बढ़िया यूरोपियन चीज़ें भी थीं। 'किण्यर' (मछली का अंडा), आस्परागस' आदि स्पेशल भोज्य भी थे। वह एक-एक कर परोसती रही। भोजन के बाद उठ खड़ी हुई।

"घूमने नहीं जायेंगे ?" उसने पूछा। भोजन के बाद श्रीधरन टहलने जाता था। लगा कि उसको यह बात मालूम थी।

"हाँ, टहलने जाता हूँ।" श्रीधरन ने एक सिगरेट सुलगाते हुए कहा।

"मे आई कम विद यू ?"

मैंने कुछ नहीं कहा। इण्टरलेकन की सड़कें, गलियां, पार्क और झील जानने वाला एक गाइड साथ रहे तो अच्छा ही है।

बेरनिस आल्प्स की तराई में तून, ब्रयन्स आदि झीलों के बीच रहनेवाला इण्टरलेकन शहर यूरोप का एक सुख्यात केन्द्र है। वह तो पर्यटकों का स्वर्ग है। वहाँ सब मोहल्ले हमेशा दर्शकों से खचाखच भरे रहते। इण्टरलेकन के मकानों में आधे होटल थे। दुकानों में कौतुक वस्तुएँ बिकती थीं। पहाड़ के ऊपर के पेड़, लोहे और पत्थर में तराशी हुई विचित्र वस्तुएं दर्शकों का ध्यान आकर्षित कर रही थीं। इसके अलावा स्विच वॉच, कुक्कू क्लॉक, बेनाकुलेर्स आदि उपकरणों की प्रदर्शनशालाएँ इधर-उधर दिखाई दे जाती थीं।

गलियों के शोरगुल से अलग होकर, शान्त और चैन से यात्रा करने के लिए श्रीधरन को वह आर नदी के तट पर ही ले गयी।

इण्टरलेकन में इस ऋतु का सूर्योदय दस बजे होता है।

विचित्र आकृति के लकड़ी के पुलों से सजी हुई आर नदी। उस पार पाइन वृक्ष के टीले थे। दूर पर कोहरे से आच्छादित मायिक प्रदर्शन !

वह भारत के बारे में कुछ-न-कुछ सोच रही थी। उसे विश्वास था कि भारत अब भी संन्यासी और महाराजाओं का देश है।

उसका ख्याल था कि लोग हाथी पर चढ़कर ही गलियों में यात्रा करते होंगे। रामायण और कालिदास के जमाने का भारत ही उसकी दृष्टि में भारत था।

श्रीधरन उसके सवालों का सही जवाब देता। कभी-कभी कुछ दार्शनिक बातें भी करता। श्रीधरन का भाषण उसको उपनिषद् सूत्रों की तरह लगता।

तभी अन्धकार और ठण्डी हवा ने वातावरण को अस्तव्यस्त कर दिया··· बर्फ़ गिरने की शुरूआत थी। हम जल्दी ही होटल में वापस आ गये।

उस दिन भयंकर सर्दी थी। वहाँ आबहवा हमेशा बदलती रहती है।

इण्टरलेकन में हिमपात नहीं होगा। अगले दिन मालूम हुआ कि पहाड़ी इलाकों और बरनियन आल्प गिरि की तराइयों में भयंकर हिमपात हुआ था।

अगले दिन धुंधला मौसम था। इस कारण जंगफ्रा के दर्शन नहीं कर सका।

ब्रेकफास्ट के बाद कैमरा बगल में कर अकेले इण्टरलेकन के वातावरण में घूमता फिरा। शाम को वातावरण स्वच्छ हो गया। सूरज ने दर्शन दिये।

भोजन के लिए बैठा तो वह भी उपस्थित हो गयी। बेयरर एक बड़े ट्रे में भोजन ले आया। भोजन के बाद टहलने निकला तो उसने निवेदन किया, "मे आई कम विद यू ?"

उस दिन ब्रयन्स झील के किनारे पर ही गया था।

झील के कोने में ऐपल और पीयर वृक्ष भरे हुए थे—सबके सब फले-फूले हुए।

उनकी खुशबू से भरी पगडंडियों से भारत के पुराणों की कहानियाँ कहता हुआ श्रीधरन और अद्भुत भावविकारों से उन्हें ध्यान से सुनती हुई वह—दोनों घूमते रहे।

पहाड़ों पर चढ़ने के लिए अनुकूल आवहवा नहीं थी। तीसरा दिन भी ऐसे ही वीत गया। दिन में पहाड़ों की तराइयों में घूमने लगा। आर नदी का पुल पार किया। टीलों की तराई में नुकीली छतों से वने लकड़ी के घर और रंग-विरंगे वाग भी देखे। उन झोपड़ियों में औरतें कपड़ों पर वहुरंगी चित्र वुन रही थीं।

दूर से पहाड़ इधर-उधर राँगा की परत से द्वार को पीटता हुआ-सा दिखाई देता।

चौथे दिन भी निराशा ही हाथ लगी थी।

उस दिन भोजन के वाद शहर के पार्क की तरफ गये थे। सड़क के दोनों भागों में छोटे प्लाडन वृक्ष पूरे तौर पर लहलहाते देखकर केरल के जंगलों का स्मरण ताजा हो गया। ऊँचाई पर खड़े हुए सीडार वृक्षों को देखते ही सुपारी के पेड़ों की याद आ गयी।

रंग वदलते फूलों से लदे मग्नोलिया वृक्ष वातावरण में रेशमी साड़ी पकड़े हुए खड़े थे। उनके वीच सफेद फूलों से वैवाहिक घूंघट ओढ़कर शरम के साथ खड़ी पेयन वृक्षों की पंक्तियाँ भी थीं।

एम्मा जर्मन है। जन्मस्थान वासल है। उसका वाप हांगकांग का एक वड़ा होटल-मालिक है। एम्मा उसकी इकलौती वेटी है। वचपन में ही माँ की मृत्यु हो गयी थी। पिताजी ने फिर शादी नहीं की। स्कूल शिक्षा के वाद पिताजी ने एम्मा को स्विटज़रलैण्ड के मोन्त्रु के कुलीनरी (रसोई-शिक्षा) कालेज में भर्ती कराया। वहाँ उसने पाँच वर्ष अध्ययन किया। दुनिया के सभी भोज्य पकाने की कला में वह पारंगत हो गयी। अव डिप्लोमा लेने के लिए किसी एक वड़े होटल में एक वर्ष का अप्रन्टिस कोर्स पूरा करना है। अप्रन्टिस कोर्स के लिए एल्मर होटल में आयी है। कमर में झाड़ू देना, वर्तन माँजना, रसोइया का काम करना, सामानों को इकट्ठा करना, परोसना, मेहमानों की सेवा करना, मीनु तैयार करना, रिसेप्शन काउण्टर और कैश काउण्टर पर काम करना, मैनेजर के प्रतिनिधि के तौर पर काम करना···इस ढंग के एक वड़े होटल से सम्वन्धित सभी विषयों में प्रायोगिक प्रशिक्षण प्राप्त करना ज़रूरी है। उसको इधर भर्ती हुए तीन महीने हो गये। चार दिनों से चेंवर मेड की ड्यूटी है।

आर नदी के किनारे पार्क की पगडंडी से चलते समय श्रीधरन के सवालों के जवाव में ही उसने ये ढेर सारी वातें कही थीं। आशय को अभिव्यक्त करते समय अंग्रेज़ी शब्दों में गलती होने की आशंका से जर्मन उच्चारण से [illegible]-[illegible] वाक्-खंड में रुककर ही वह वातचीत करती। विदेशी भोजन पकाने की तरह अंग्रेज़ी में वात-

पहाड़ के मध्य से सोलह हज़ार फुट ऊँचाई पर खड़े जंगफ्रा हिमपीठ पर—यूरोप की छत पर —हौले से चढ़ती हुई विद्युतगाड़ी की वह रेलयात्रा जंगफ्रा संदर्शन का एक अविस्मरणीय अनुभव है।

रास्ते में हिमप्रदेशों के खरगोश की जाति के मरमोटु नाम के जंतु को वर्फ में विल वनाते देखा। हिम से ढके खेतों में पोलार कुत्तों को और कुत्तों द्वारा खींची जाने वाली बिना पहिये की हल-गाड़ियों को भी देखा। सोलह हज़ार फुट ऊँचाई पर हिम के झंझावात में पंख फड़फड़ाकर नाचनेवाले 'चफ' नामक पहाड़ी कौवों को भी देखा।

दुनिया की सबसे ऊँचाई पर स्थित रेलवे स्टेशन 'जंगफ्रोजोच्चि' के प्लेटफार्म के वरामदे में बैठकर आल्प्स के आसमान की ओर निगाहें डालीं। स्टेशन से तीन-सौ छियालीस फुट ऊँचाई पर जंगफ्रा और मोंछ पहाड़ी की दो चोटियों के बीच प्रकृति के हिम से ढके वरामदे में इलेक्ट्रिक लिफ्ट में चढ़कर पहुँच गया।

चावल के चूरे की तरह वहाँ वर्फ ढकी हुई थी। वहाँ के हिम पर हौले से चला। यूरोप की छत के मूर्धन्य विन्दु से स्विस झण्डा फहरा रहा था। उस झण्डे के नीचे के पासवाले स्थान तक जाने के वाद झट वापस आ गया। स्टेशन के नीचे की ओर एक विशाल भण्डार का निर्माण किया गया था। वहाँ उतर गया। वहाँ हिम के पत्थरों से वनाये हुए हिममहल देखे।

भण्डार की गर्मी शून्य से पन्द्रह डिग्री कम है। थोड़ी देर के वाद वेहद सर्दी से कान-नाक से खून निकलकर जम जाने का भय था। चिन्तित हो वहाँ से तुरन्त ऊपर की तरफ वढ़ गया। फिर स्टेशन पर ही शरण ली। दुनिया की सबसे ऊँचाई पर स्थित स्टेशन के प्रतीक्षालय में वैठकर एम्मा के पकवान की उस छोटी-सी टोकरी को खोला—रोटियाँ, केक, सेन्डविचेज, फल···अधिकांश पकवान मेरे के लिए नये थे। नाम भी नहीं मालूम उनका। केक और आप्पिल मिलाकर जो रोटी वनायी थी सिर्फ उसे ही पहचान पाया। एक वोतल में शराब भी थी।

यूरोप की छत पर वैठकर ये पकवान मजे से खाये। एम्मा को हृदय से धन्यवाद दिया···

जंगफ्रा पर्यटन के वाद शाम को होटल में वापस आने पर रिसेप्शन रूम की चश्मेवाली ने एक खुशखबरी सुनायी: "होटल के नये मेहमान वनकर एक भारतीय दंपती आये हुए हैं। वे कमरा नं० नौ में ही ठहरे हैं।"

भारतीय हैं सुनने पर प्रसन्नता हुई। सीधे कमरा नं० नौ में उनसे मिलने चला गया।

भारतीय नहीं, सिलोन के थे। कोलंबो के एक बड़े रेलवे-अधिकारी मि० एरवट और उनकी पत्नी। वे पवित्र वर्ष के त्योहार के उपलक्ष्य में रोम आये थे।

उसके बाद मध्य यूरोप के पर्यटन के लिए निकल पड़े। भारतीय न होने पर भी भारत के पड़ोसी देश के एलबर्ट दंपती से यूरोप में मिलने पर खुशी हुई।

उस दिन, रात के भोजन के लिए बैठते समय बातचीत का विषय रामायण की कहानी था—सीता-अपहरण। रामायण की लंका श्रीलंका है, सुनकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। राक्षसों का देश श्रीलंका।

(शायद वह समझती होगी कि एलबर्ट दंपती राक्षसों के वर्ग में से हैं।)

हवा और बूंदाबांदी होने से उस दिन टहलने नहीं गया।

अगले दिन लाटर ब्रन्नन के नजदीक के ट्रमल बाच की नर्तकी को देखने निकल पड़ा।

ट्रमल बाच पहाड़ की गोद का एक अद्भुत जल-प्रपात है। इस नर्तकी ने जल-प्रपात को पहाड़ के गर्भ में कई स्थानों पर मोड़कर इधर-उधर रंगीन विद्युत-बत्तियाँ छिपा रखी थी। कई रंगों की रोशनी प्रपातों के मर्मस्थलों में पड़ती। उससे वह जलधारा एक रत्न-विभूषिता नर्तकी या खून की उलटी करनेवाली पिशाचिनी या फिर सफेद कपड़े पहने एक पक्षी के रूप में विविध दृश्यों में नाचते हुए विलाप की तरह कानों में गूंजती रहती।

उस दिन भोजन के लिए बैठते समय उससे कहा, "मैं कल जा रहा हूँ।"

"यू गोइंग ?" उसने लम्बी सांस छोड़कर बड़ी देर के बाद पूछा।

"हाँ, मैं जा रहा हूँ, वापस जेनेवा को। फिर पेरिस, लंदन, लंदन से फिर भारत की तरफ।"

उसने श्रीधरन के यात्रा कार्यक्रम पर ध्यान दिया था या नहीं ?

"यू···गोइंग ?" उसने फिर स्वप्न से जाग उठने की तरह पूछा।

"यस, आई हेव टू गो।"

लगता था कि श्रीधरन की बातें उसके कानों में घुसी ही नहीं।

"यू गोइंग ?···" एक यन्त्र की तरह वह ये शब्द दुहराने लगी।

"होटल का मेरा बिल तैयार रखने को कहना है।"

उसने कुछ नहीं कहा।

"क्या तबीयत ठीक नहीं है ?"

"मेरा सिर चकरा रहा है···मैं—मैं—मुझे जाने दो।"

वह उठकर बाहर चली गयी।

"श्रीधरन अकेला नदी-तट पर टहलने लगा।

बर्फ से ढके पहाड़ों की तरफ देखा। थोड़ी देर इधर-उधर घूमा-फिरा। बर्फीली हवा चलते ही जल्दी होटल में वापस आ गया।

इण्टरलेकन की आखिरी रात थी।

आठ नम्बर के कमरे में श्रीधरन ने अज्ञात विषाद के साथ घण्टों बिताये··· उस जर्मन लड़की के आचरण ने ही श्रीधरन को अस्वस्थ किया था। वह तो एक नया अनुभव था।

बाहर वर्फ पड़ रही थी। श्रीधरन विचानमग्न था—

मुझे इण्टरलेक आये छह दिन हो गये। कुछ शामों को टहलते वक्त, भोजन की मेज़ पर बैठते वक्त उस जर्मन लड़की का सान्निध्य मिला था। कई विषयों पर चर्चा हुई थी। लेकिन हिरण की खाल का थैला लटकाकर कमरे में प्रवेश करने के क्षण से इस क्षण तक उसकी कल्पना मैंने एक प्रेमिका के रूप में नहीं की थी। इन छह दिनों के भीतर उसके साथ मैंने कोई चपलता भी नहीं दिखाई थी। दिखाने का विचार ही नहीं हुआ था।

लगता है, भारतीय युवक का काला रंग उस जर्मन लड़की को बेहद पसंद आया था। एक बार उसने पूछा भी : क्या सभी भारतीय इस प्रकार 'सनबर्ण्ट' धूप से झुलसे हुए रंग के होते हैं? उसने 'ब्लैक' या 'डार्क' शब्द का प्रयोग नहीं किया था। सनबर्ण्ट शब्द का ही इस्तेमाल किया था। उसके और भी कई भोले-भाले सवाल श्रीधरन को तंग कर रहे थे। उनमें एक यही था—चमड़ी का।

चमड़ी के गोरे रंग से यूरोपियन को पहचाना जा सकता है। पीले रंग से चीनी को भी। काप्पिरी तो काले रंग के होते हैं। पर, भारतीयों को पहचाननेवाला रंग क्या है?

यूरोपियन से अधिक एपिल की खाल के रंग के तो पंजाबी होते हैं। चीनियों की तरह के पीले रंग के असामी और बंगाली हैं। खुद श्रीधरन से अधिक काला केरली ही है···

यह तथ्य इस जर्मन युवती को मैं कैसे समझाऊँ?

इसलिए एक बड़े दार्शनिक की तरह, एक उपनिषद् वाक्य का आविष्कार करने की तरह उससे कहा, "सृष्टिकर्ता ने मानव के उन सभी रंगों को देकर सिर्फ़ भारतीयों को ही अनुग्रहीत किया था।"

केवल चमड़ी के रंग की बात ही नहीं, आचार-विचार, विश्वास और अनुष्ठान, भाषा और भोजन, वेश और आचरण में भी भिन्न-भिन्न जनसमूह हिमालय की तराई से लेकर कन्याकुमारी तक विस्तृत भू-भाग में रहते हैं। यह सच्चाई उसे कैसे विस्तार से बताऊँ?

एम्मा, सोलह आने भारतीय कहना परब्रह्म की तरह एक संकल्प मात्र है। भारत में चमड़ी के वर्ण की समस्या नहीं, चमड़ी के मोटेपन की समस्या है। लगा कि कह दूँ, हाथी की चमड़ी पहने एक व्यक्ति ही हिन्दुओं का परब्रह्म है, लेकिन नहीं बताया।

श्रीधरन में भारतीय परब्रह्म को ही उस जर्मन लड़की ने देखा था। आराधना भाव जैसा-ही कुछ उसके मन में था। पर, इस जर्मन लड़की से उसके प्रणय-शुष्क मनो-भाव का कारण क्या है?

श्रीधरन फिर चिन्तन करने लगा :

यूरोप के सभ्य नगरों में तीन-चार महीने घूम-फिरने के बाद ही इण्टरलेक में पहुँचा था। एक साधु होकर उन देशों की सैर नहीं की थी। ब्लाण्टा के सोमन के जीवन-दर्शन का स्मरण कर कहूँ तो, किसी को कोई दोष दिये बिना, दूसरों के माल की चोरी किये बिना, जबर्दस्ती किसी के सुख को छीनने की कोशिश किये बिना, अपने श्रम के पैसे से एक अनुभव के लिए सब कुछ किया था। लेकिन इण्टरलेक की इस जर्मन लड़की के सामने इस तरह संन्यास क्यों ग्रहण किया था? भारतीयों का आत्मीय भाव 'अहं ब्रह्मास्मि' का 'ईगो' क्या इस लड़की के सामने प्रदर्शित करने की अन्तःप्रेरणा ही इसका कारण थी? क्या प्रथम दर्शन में ही उसको एक छोटी बहन—दूसरी एक नारायणी—समझ बैठा था? मेरा यह बर्ताव आगे चलकर उसको एक शिष्या—मेरे हर कहे हुए पर भरोसा करनेवाली एक विनीत शिष्या—बनाने में सहायक हुआ होगा।

अगले दिन सुबह सात बजे उठा।

डायनिंग हॉल में जाकर नाश्ता किया।

सुबह जेनेवा लौट जाने के लिए होटल छोड़ देना है इसलिए बिल तैयार करने की बात पिछले दिन रात को ही होटल मैनेजर से कह दी थी।

एम्मा वहाँ दिखाई नहीं दी।

कमरे में जाकर सूटकेस लेकर नीचे उतरा। चश्मेवाली के काउण्टर के नज़दीक जाकर बिल चुकता किया। बिल की रकम देखने पर उसे अचम्भा हुआ। क्या एलमर होटल का खर्च इतना कम है?

फिर देखा। एम्मा वहाँ भी दिखाई नहीं दी। पता लगाने पर चश्मेवाली ने बताया कि वह ड्यूटी पर नहीं है।

बिल की रकम चुका देने के बाद चश्मेवाली से विदा ली। फिर एक टैक्सी के लिए आदेश दिया। सूटकेश लेकर आगे बढ़ने की कोशिश की तो एक सेविका ने हाँफते हुए आकर बताया, कमरा नं० नौ के भारतीय दम्पती ने मोस्यू से थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के लिए कहा है। मोस्यू को विदा देने वे रेलवे-स्टेशन आ रहे हैं।

ओ, सीलोन दम्पती मि० एलबर्ट और पत्नी। उनसे कल रात भेंट हुई थी—

सीलोन दम्पती के आने की प्रतीक्षा नहीं की। बैग लटकाकर दरवाज़े की तरफ़ चल पड़ा।

एलमर होटल के मकान का प्रवेश सड़क के नज़दीक से है। सड़क से एक लम्बी दहलीज़। दहलीज़ के छोर पर चार दराजों वाला एक दरवाज़ा स्वागत-कक्ष

की तरफ जाता है। स्वागत-कक्ष के दोनों तरफ ऊपर जाने की सीढ़ियाँ हैं। कमरे के बीच, दरवाज़े के सामने ऊँचे से मंच पर चश्मेवाली बैठती है।

दरवाज़ा खोला। दहलीज पर पैर रखा। अकस्मात् दरवाज़ा फिर एक बार खुल गया। अग्निशिखा-सी चोटीवाली···एम्मा!

एक हाथ से हिरन की खाल के बैग को छीनकर, दूसरा हाथ श्रीधरन की छाती की तरफ फैला फूट-फूटकर रोते हुए उसने कहा, "डोण्ट गो···"

वह एक चीत्कार था—विनती थी—एक हुक्म था···!

उसकी आँखों से, ओले की तरह आँसू टपक रहे थे···

एक बार देखा···

ज़िन्दगी का एक निर्णायक पल है—

पूरी ज़िन्दगी आँख की भौहों में प्रतिफलित हो रही है।

सिर उठाया। दो मार्ग थे—दहलीज़ के सामने : स्टेशन रोड···ओस्ट स्टेशन-जेनेवा-पेरिस-लंदन फिर बम्बई-केरल। दरवाज़े के पीछे : एलमर होटल···बासल ···हाँगकाँग?

जंगफ्रा हिमगिरि और सहयात्री—नुकीली छतों से भरे गिरिजाघर और स्वर्ण-शिखरों से सजे मन्दिर···एपिल बाग, काली मिर्चों के बाग···पाइन वृक्षों के जंगल, नारियल के बाग···आर नदी और भारत पुषा भी।

अग्निज्वाल-केशी पीली आँखोंवाली पत्नी—ताँबे के रंग के बाल और त्वचा निकली चिल्लिम के रंग के बच्चे भी—

सारी तस्वीर याद करने पर मन मे सिहरन महसूस हुई। अग्निज्वाल-केशी को हृदय में स्थान नहीं देना है।

फिर भी मन चंचल हो रहा है।

पिताजी के शब्द मस्तिष्क में गूंज उठे : "धोखेबाज़ होकर जीने से एक घातक होकर मरना कहीं अच्छा है।"

अब भी वह बात स्मृति में छायी है। भूरे रंग का सूट और केवड़े के फूल के रंग की टाई भी पहनी थी···

केवड़े के फूल पर रेंगनेवाले स्वर्णनाग की तरह छाती से वह हाथ धीरे से हटा दिया और दूसरे हाथ से मृगचर्म की अटैची भी ले ली···

दरवाज़े पर टैक्सी हॉर्न दे रही थी—वापसी यात्रा का शंखनाद—जेनेवा-पेरिस-लंदन। फिर भारत—केरल।

(तब चार हज़ार मील दूर फ्रेंच माहो में काली-घुंघराली अलकों और काली-कजरारी आँखोंवाली एक मलयाली लड़की नज़दीक के श्रीकृष्ण मन्दिर की तरफ ताककर, अपने भावी पति का सपना देख रही थी।)

दरवाज़े की हलकी-सी आवाज़।

दरवाज़ा खुल गया : मिसेज एलबर्ट।

दरवाज़ा फिर हिल उठा : मिस्टर एलबर्ट।

"वेरी सॉरी, मिस्टर श्रीधरन ! वी वर ए बिट लेट···" मिस्टर एलबर्ट ने गर्दन की काली टाई की गाँठ को ठीक करते हुए क्षमा माँगी।

श्रीधरन ने मन में कहा, "नहीं, मिस्टर एलबर्ट, आप तो ठीक समय पर ही आ पहुँचे हैं।"

सीलोन दम्पती और भारतीय युवक दहलीज से सड़क की ओर पहुँचकर टैक्सी में चढ़ गये···

"इण्टर लेकन ओस्ट" श्रीधरन ने ड्राइवर से कहा।

टैक्सी चल दी। एलमर होटल के दरवाज़े पर खड़ी होटल की उस सेविका पर सीलोन दम्पती ने ध्यान नहीं दिया था।

श्रीधरन ने पीछे झाँककर देखा।

अग्निज्वाला-सी अलकावलियाँ। गालों पर दो हिम के टुकड़े ! भीगी आँखों-वाली निश्चल वह दृष्टि :

"आर्य ! अन्यथा समझ<br>
इस अधीर को छोड़िए मत,<br>
आपकी यह अकिंचन शिष्या<br>
इन चरणों की सेवा कर नित्य<br>
धन्य हो जाएगी।"

···············

गाड़ी इण्टरलेकन ओस्ट स्टेशन से रवाना हुई। सीलोन दम्पती ने बाइ-बाइ कहकर बिदाई दी।

"वी विल मीट इन कोलंबो," मिस्टर एलबर्ट ने पुकारकर कहा।

"वी विल मीट इन केरला," दरवाज़े के बाहर सिर कर प्रत्युत्तर में श्रीधरन ने आवाज़ दी।

गाड़ी दूर पहुँचने पर सीलोन दम्पती ने रूमाल हिलाकर यात्रा के लिए शुभ-कामना की।

ये रूमाल इण्टरलेकन की यादों को पोंछ लेते तो !···

बाहर की तरफ देखता रहा। उसे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि एक पल के लिए ही सही, दुनिया के सबसे अधिक अहसान-फरामोश व्यक्ति की भूमिका उसने कैसे निबाह ली ?

फिर विचारों का प्रवाह एकाएक चंचल हो उठा।

—मैं आज़ाद हूँ। भारत में लौट जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। भारत से रवाना होने पर मैंने अपना दिल किसी के लिए भी गिरवी नहीं रख छोड़ा था।

यूरोप में ही ज़िन्दगी गुज़ारें तो कैसा होगा ?···

बाहर तून झील का मनोहर दृश्य। अब भी इण्टरलेक की सीमा में ही था वह। तून स्टेशन पर उतरा, एलमर स्टेशन वापस जाऊँ तो ? धत् ! वे सीलोन दम्पती देखेंगे तो !···

अचानक लगा कि इण्टरलेकन एक महाश्मशान है। बारह साल पहले काशी के हरिश्चन्द्र घाट का दृश्य मन में रँग गया···वे बर्फ़ीले पहाड़ सफेद कपड़ों से ढके लाशों के ढेर की तरह और अग्निज्वाला-सी वह केशराशि धधकनेवाली चिता की तरह दिखाई पड़ी—उस चिता में मैं भी जिन्दा जल जाता—पर, बच गया।

'नो' स्पष्ट कह देने की दृढ़ता···ज़िन्दगी की विजय के लिए वही है सबसे ज़रूरी हथियार !

इस नीति को प्रकट करनेवाले सिल्ह का स्मरण किया : जेनेवा में उससे भेंट हुई थी। जर्मन हेर सिल्ह···दूसरों का मुँह ताककर ज़िन्दगी गुज़ारनेवाला बुजुर्ग सिल्ह ! हमेशा हाथ में दो छतरियाँ लिये रोनी सूरतवाला सिल्ह ! (बारिश में अचानक फँस गये परिचितों की सहायता करने के लिए ही उसके हाथ की वह दूसरी छतरी होती।) सिल्ह पहले अमीर था। विरासत में प्राप्त धन को जो लोग माँगते, उन्हें उधार देकर, तकलीफ में पड़े हुए दोस्तों की सहायता कर, आखिर वह इस हालत में पहुँच गया था। स्पष्ट रूप से 'नहीं' कहने का हौसला जब हो गया तब तक सिल्ह गरीब हो चुका था।

उसी मनःस्थिति ने श्रीधरन को बचाया था।

एलमर होटल के उस दरवाज़े के नज़दीक अगर उस मुहूर्त में उसने मन को काबू में न रखा होता तो दूसरी दिशा की तरफ ही फिसलना था।

उसने स्मरण किया : केरल से इधर पहुँचे चौदह मास बीत चुके हैं···

रात की अन्तिम घड़ियों में—हल्का धुँधलका, सर्दी और कोहरा ढके वातावरण में नाले के छोर की सागवान मशीन का ताल और लय देता हुआ नाच··· विस्तृत खेत के पीछे बड़ी सुपारी के बाग में तड़के की स्वर्णिम किरणें छा जाते समय मन्दिर में हज़ारों दीपकों के जलने का-सा दर्शन···पुराना भगवती काबु, सूखे तुलसी के पौधे के रंग के पत्थर का दीपक, शताब्दियों से मर्मर रव करनेवाला बरगद का पेड़, टूटा-फूटा चबूतरा, चबूतरे पर पोटली को अपने सिरहाने रखकर लेटनेवाला गेरुआ-वस्त्रधारी संन्यासी, पास के अहाते में घास चरनेवाली गाय, झड़ते पत्तों के सेमल-वृक्ष की डाल पर विश्राम करनेवाली चील; मोहल्ले का मध्याह्न दृश्य··· मन्दिर के तालाब से नहाकर गीले बालों को पीछे की तरफ फैलाकर पगडंडियों में धीरे-धीरे चलनेवाली अल्पवसना देहाती लड़की···

नारियल के मयूरपंखों के बीच से दिखाई देता निर्मल मध्याकाश···धान के झुण्डों की ओट से धीरे से उठनेवाला तिरुवातिरा का चाँद···बचपन से ही मन में

समाये हुए इन केरलीय चित्रों को, जंगफ्रां हिमशृंग भुला सकते हैं ?…उन्हें आर नदी में बहाया जा सकता है ?…ब्रयन्स में डुबाया जा सकता है ?

गाड़ी तून से स्विस राजधानी बेन की तरफ आगे बढ़ रही थी…

छह महीने के भारत पर्यटन के बाद वापस जाते समय केरल की सीमा के एक बड़े स्टेशन के प्लेटफार्म पर जब एक पुकार सुनी थी : "वेल्लं-वेल्लं ।" (पानी, पानी) तो मन प्रफुल्लित हो गया था । (द्रविड़ भाषा के शब्दों में मलयालम की शुद्ध सम्पत्ति है 'वेलु')प्यास न होने पर भी पानी पिया था । मलयालम की मिट्टी के पानी का वह माधुर्य !

(गाड़ी बेन से माण्ट्रयू स्टेशन पहुँच गयी…माण्ट्रयू में कहीं एक कुलिन्यरि कॉलेज है ।) फिर वह झील के किनारे से प्रेम का गला घोंट देनेवाले श्रीधरन को लेकर जेनेवाले की तरफ बढ़ने लगी ।

यूरोप के पर्यटन से वापस आये एक साल बीत गया…एक दिन डाक पहुँचने पर स्विस का टिकट लगा एक नीले रंग का लिफाफा देखा । पत्र का पता देखने पर अचरज हुआ : सिर्फ़ तीन पंक्तियाँ—

मिस्टर श्रीधरन<br>(गाँव के डाकघर का नाम)<br>भारत

लिफाफा खोला । मोटे कागज़ पर सिर्फ़ एक ही पंक्ति : 'स्टिल रिमेम्बरिंग यू—एम्मा' (अब भी स्मरण कर रही हूँ—एम्मा)

जवाब नहीं भेजा ।

इस भारतीय युवक को प्रेम-घातक के रूप में हमेशा याद करना ही भला है ।

फिर एक साल बीत गया ।

ज़िन्दगी में सौम्य और शुद्ध एक नये अध्याय को शुरू करते समय फ्रेंच माही के श्रीकृष्ण मन्दिर के नज़दीक भावी पति का स्वप्न देखकर दिन काटती काले घुँघराले बाल और काली कजरारी आँखोंवाली एक अपरिचित मलयाली लड़की को वधू के रूप में स्वीकार करनेवाले पुण्य दिन…पिछली रात भावी जीवन के लिए अनावश्यक कई चिट्ठियों को आग में हवन कर दिया । उनके बीच स्विस का वह एक पंक्तिवाला पत्र भी था । मोटे-सफेद उस कागज़ को जलते समय अग्नि-ज्वाल-सी उस केशी को आखिरी बार देखा…

ज़िन्दगी एक विचित्र गली है । आपस में मिलने से भी अधिक अलग हो जाने, पीछे हटने की भीड़-भाड़ ही इस गली में होती है…

"श्रीधरन कुट्टि क्या उठकर चला गया ?" वेलु मूप्पर के सवाल ने श्रीधरन

को जगा दिया।

"मैं इधर ही हूँ" पलकों को ज़रा हिलाते हुए श्रीधरन ने जवाब दिया।

"बेटा, अचानक मेरी आँखें लग गयी थीं। दोपहर को भोजन के बाद ज़रा सो लेता हूँ ..."

श्रीधरन जब यूरोप की सैर कर रहा था, तब वेलु मूप्पर कुर्सी पर बैठा-बैठा ऊँघ रहा था।

"वेलु मूप्पर, अन्दर जाकर सो जाइए। तीन बज गये। अब मैं भी चलूं ..." श्रीधरन ने घड़ी देखते हुए कहा।

## मर्मर : दस

अब वेलु मूप्पर से विदा लेनी है।

इस घर का मजेदार और स्वादिष्ट भोजन भर पेट खाया, वेलु मूप्पर से जी-भर कथाएँ भी सुनीं। कितना भी मूल्य देने पर ये और कहीं से भी उपलब्ध नहीं होंगी।

लगा कि वेलु मूप्पर को कुछ न कुछ भेंट किये बगैर इधर से चले जाना उचित नहीं होगा। क्या पैसे देने पर वे स्वीकार करेंगे? ये लोग भोजन के लिए पैसे पाने के सदैव विरोधी हैं। "पनमूट्टु का घराना ऊँचा घराना तो नहीं है, लेकिन वह दाने-दाने लिए के मोहताज भी नहीं। जो भूखा इधर आता उसको एक कौर अन्न देने में अब तक कोई तकलीफ नहीं हुई।" बातचीत के बीच वेलु मूप्पर ने सार्थक ढंग से स्मरण कराया था।

भात परोसने के बाद जिस चीनी तश्तरी में मट्ठा डालकर रखा था, उस पर श्रीधरन का मन ललचाया हुआ था। उस चीनी-तश्तरी का वैशिष्ट्य घरवाले नहीं जानते थे। समझ भी नहीं सकेंगे। कल या परसों वह कलावस्तु नीचे गिरकर टूट जाये तो कूड़े में फेंक दी जाएगी। उस हर टुकड़े का मूल्य मिलता...पर, यों बेच-कर पैसा कमाने का मेरा इरादा नहीं है, उसे लेने की ही तमन्ना है। अफ्रीका, मिस्र, इटली, स्विटज़रलैंड आदि यूरोपियन मुल्कों से मैंने जितनी कलावस्तुओं को जमा किया था, उनमें इस चाइनीज बाँस को प्रथम स्थान मिलता...

श्रीधरन चटाई से उठ बैठा।

फिर ज़रा खँखारकर आवाज़ निकाली: "क्या मैं वेलु मूप्पर से कुछ मांगूं?" बुजुर्ग ने आँखें फ़ैलाकर गर्दन हिलायी, "क्या है बेटा?"

"क्या अपनी वह चीनी तश्तरी आप मुझे देंगे?"

बूढ़ा थोड़ी देर तक सोचता रहा। फिर मुस्काया, "वह पुरानी चीज़ तुझे चाहिएं तो ले ले।"

"मुफ्त नहीं चाहिए। मूल्य दूँगा···" श्रीधरन ने संकोच के साथ कहा।

"पैसा-वैसा नहीं चाहिए, बेटा। अगर तुझको उससे प्यार हो गया तो ले जा··· मुझे खुशी ही होगी ···"

"मेरे कहने का मतलब यह नहीं है···"फिर कुछ कहे बिना श्रीधरन सकपकाने लगा।

"उस तश्तरी को रसोईघर में रखे रहने के कारण ही आज तक उसका कोई ग्राहक नहीं बना। अगर कोई ज़रूरतमन्द उसे देख लेता तो वह किसी भी मूल्य पर उसे खरीद लेता···"

"इस तश्तरी की क्या विशेषता है ?"

चीनी एण्टीक की विशेषता को मैं कैसे वेलु मूप्पर को समझाऊँ ?

"अगर यह दिल्ली या बम्बई पहुँच जाए और किसी अमेरिकी साहब की आँखों में दिखाई पड़ जाये तो वह अच्छी रकम देकरइस को खरीद लेगा क्योंकि इस ढंग की वस्तु अब नहीं मिलती।"

वेलु मूप्पर अच्छा हास्य-व्यंग्य सुनने की तरह हँस पड़ा।

"अगर तू इसे गोसाइयों के देश में बेचकर पैसा कमा सकता है तो अपनी योग्यता दिखाना। पर, मुझे कुछ नहीं चाहिए···मैंने कहा था न कि मेरे बेटे दामोदरन ने उसे एक मुस्लिम से एक रुपया देकर खरीदा था। बैंक के साहब को क्रिसमस की भेंट देने के लिए ही उसे रख लिया था। तभी एक साइकिल दुर्घटना में वह चल बसा। फिर वह तश्तरी भण्डार के कोने में पड़ी रही। तीन-चार महीने पहले ही माणिक्य ने उसे बाहर निकला था···"

वेलु मूप्पर ने अन्दर की तरफ झाँककर पुकारा, "बेटी···"

"क्या है बाबूजी ?"माणिक्य ने पूछा।

"उस नागफणीवाली चीनी तश्तरी को धो-माँजकर इधर ला।"

"बाबूजी,वह क्यों ?"

"हमारे बेटे श्रीधरन की नज़र उस चीनी तश्तरी पर लगी है। यह उसे ले जाना चाहता है।"

(भीतर से हँसी—औरतों की दबी मज़ाक भरी हँसी)

तश्तरी को धो-माँजने के बाद माणिक्य ने उसे पोंछकर बरामदे की घास की चटाई पर—बाघ के चेहरे पर ही—रख दिया।

भारतीय बाघ के मुँह पर चीनी तश्तरी—अच्छा दृश्य है !

वेलु मूप्पर ने जँभाई ली।

"वेलु मूप्पर, ज़रा इधर हाथ फैलाइए !"

"क्या है बेटे, क्या मुझे कुछ देना है ?" वेलु मूप्पर ने हाथ हिलाये बगैर पूछा।

"आप मुझे अब पुरानी चीज़ों को खरीदनेवाला ही समझ लीजिए।" श्रीधरन ने अदब से कहा, "इस तश्तरी के लिए छोटी-सी एक रकम वेलु मूप्पर को मुझसे ग्रहण करनी चाहिए। नहीं तो मुझे इसकी ज़रूरत नहीं···"

वेलु मूप्पर ने थोड़ी देर सोचा।

"तुझे कुछ देने का हक है तो एक रुपया दे दे···"

"एक रुपया—या दो रुपये—कितना भी हो, मैं जो भी दूं उसे स्वीकार करना होगा···"

वेलु मूप्पर ने हाथ फैलाया।

श्रीधरन ने अपना बटुआ खोलकर सौ रुपये का एक नया नोट मोड़कर वेलु मूप्पर के हाथ में थमा दिया।

(बूढ़े ने समझा होगा कि दस रुपये का नोट ही मिला है।)

वेलु मूप्पर ने वह नोट धोती के आँचल में बाँध लिया।

"इस तश्तरी को लपेटने के लिए एक पुराना कागज़ देने की कृपा करेंगे···"

माणिक्य रसोईघर से एक कागज़ का टुकड़ा ले आयी। दूकान से नमक-मिर्च लाया हुआ कागज़ है। दो महीने पहले का एक मलयालम अखबार। अखबार पर सरसरी दृष्टि डालने पर एक कोने में अपना नाम देखा। संसद के प्रश्नोत्तर! लोकसभा में श्रीधरन एम० पी० का पूछा हुआ सवाल था—"केरल से अमरीका को कितने मेंढकों के पैरों का निर्यात किया गया? उनसे कितने डालर का लाभ हुआ?"

(सम्बद्ध मन्त्री का जवाब भी था)

मेंढकों के निर्यात के सम्बन्ध में श्रीधरन ने संसद में जो सवाल पूछा था, उसकी प्रेरणा अतिराणिप्पाटं की यादें थीं। बचपन में कन्निप्परंप्पु के बरसात के मौसम की रातों में, नालों में मेंढकों का संगीत नींद के लिए नया उन्मेष प्रदान करता था। ज़माने का इतना बड़ा परिवर्तन! ये मेंढक गायक बर्फ की कमीज़ पहनकर जहाज़ पर अमेरिका में जाकर डॉलर में बदलकर वापस आ रहे हैं।

"अब मैं जाऊँ।" श्रीधरन ने विदा ली।

"बेटे, अब तुझसे कब भेंट होगी?" वेलु मूप्पर ने श्रीधरन का हाथ पकड़कर दूसरे हाथ से श्रीधरन की पीठ सहलाते हुए भर्राई आवाज़ में कहा, "गड्ढे में पाँव रखे हुए ही तेरा इन्तजार करूंगा···"

श्रीधरन को भी कुछ दुख-सा हुआ।

फिर इधर आने पर शायद बरामदे की यह कुर्सी और नज़दीक का झूला दिखाई नहीं देंगे।

"वेलु मूप्पर, दीर्घकाल तक रहेंगे आप—मैं आपसे मिलने ज़रूर इधर आऊँगा।" श्रीधरन ने अपने विकार को दबाते हुए बड़े विनय-भाव से शुभकामना

प्रकट की।

"मेरा बेटा सकुशल रहे।" वेलु मूप्पर ने श्रीधरन के सिर पर हाथ रखकर आशीष दी।

चीनी तश्तरी को अखबार में लपेटकर उसे कन्धे पर टाँग, पत्थरों की दीवारों और वाड़ से ढके घरों के नज़दीक की तंग पगडंडियों को पारकर वह सड़क की तरफ बढ़ गया।

एक अहाते में एक ओर एक नये किस्म के पौधों को पलते देखा। देहाती लोगों ने इसे 'कम्युनिस्ट पौधा' नाम दिया था। हरे पत्तों और छिपकली के सफेद अण्डों-सा फल देनेवाले इस पौधे को साम्यवादी नाम देने के पीछे यही कारण रहा होगा कि किसी भी देश या प्रदेश की मिट्टी में, किसी भी जलवायु में, किसी भी परिस्थिति में वह पौधा जड़ें पकड़ लेता है।

मिस्टर 'शीमकोन्ना' की तरह यह 'कामरेड अप्पा' भी अतिराणिप्पाटं के लिए विदेशी है।

सड़क पर पहुँच गया।

अनाज पीसनेवाली मिलें, मोटर-वर्कशाप आदि के होहल्ले से भरी सड़क के नज़दीक एक नया रेस्टॉरेण्ट। लाल बोतल के एक बड़े चित्र के साथ एक बड़ा अल्युमिनियम बोर्ड रेस्टॉरेण्ट के दरवाज़े पर लटक रहा था: कोकाकोला का विज्ञापन था।

लगता है, पहले का 'भारत माता' होटल यहीं था। भारत माता भी अब विलीन हो गयी। अब इधर की दूकान पर टाइकण्ट, प्रान्स पुलावर और कोकाकोला ही बिकते हैं।

कोकाकोला का पुराने अतिराणिप्पाटं में अवतरण होने से अचरज नहीं हुआ। मिस्र के पीले रेगिस्तान के एक कोने में अकेली खड़ी एक बड़ी स्फ़िंग्स प्रतिमा के सामने—एक पौधा या घास का एक तिनका भी नहीं उगता था। तब प्यास से पीड़ित दर्शकों को अपने मोहपाश में खींचता एक बड़ा बोर्ड सोलह साल पहले देखा था। यह विज्ञापन भी उस दृश्य की याद दिलाता है।

टाइट पैण्ट, काली-मकड़ियों की तस्वीरों की छपी हुई टेरलिन शर्ट पहनकर, माथे पर पक्षी के घोंसले की तरह बालों की लटों को रखे एक लड़का किसी नयी अमरीकी 'रॉक एण्ड रॉल' ट्यून में सीटी बजाकर सिर हिलाता हुआ विपरीत दिशा से आ रहा था। (शायद वह कोकाकोला पीने के लिए आ रहा होगा।) श्रीधरन को देखकर लड़का वहीं ठिठक गया। सीटी बजाना बन्द कर दिया। पैण्ट की जेब में हाथ डालकर ज़रा सिर झुकाकर ओंठों को हिलाते हुए देखा—हू इज़ दिस? अरे यह कौन है?

मकड़ी की कमीज़वाला छोकरा यदि मुझसे कुछ पूछता तो श्रीधरन पट जवाब देता : "अतिराणिप्पाटं की नयी पीढ़ी के पहरेदार, अतिक्रमण कर यहाँ प्रवेश करने के लिए क्षमा करो। मैं तो पुरानी कौतुक वस्तुओं को ढूंढ़ते हुए चलता-फिरता एक विदेशी हूँ।"

